

बयानुल कुरान

हिस्सा चहारम (चार)
तर्जुमा व मुख्तसर तफ़सीर
सूरह युनुस
से
सूरह कहफ़ तक

अज़
डॉक्टर इसरार अहमद

तरतीब

अर्जे मुरत्तब	3
सूरह युनुस	6
सूरह हूद	48
सूरह युसुफ	98
सूरह रअद	144
सूरह इब्राहीम	164
सूरतुल हिज्र	188
सूरह नहल	217
सूरह बनी इस्राईल	271
सूरतुल कहफ़	329
फुटनोट्स	295

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अर्जे मुरत्तब

बयानुल कुरान के हिस्सा चहारम (चार) की इशाअत (पब्लिकेशन) पर हम अल्लाह रब्बुल इज्जत के हुज़ूर सज्दा-ए-शुक्र बजा लाते हैं। इस काम की रफ्तार के सिलसिले में मुरत्तिबीन व मुअल्लिफ़ीन दो तरफ़ा दबाव में हैं। एक तरफ़ “जलाल-ए-इसरारी” के फ़लक बोस गुम्बद से गूँजती हुई “हुदा रा तेज़ तरमी खवां” की सदाये पेहम है तो दूसरी तरफ़ हज़ार हा शाएकीन के इन्तेज़ार का हँगामा आफ़रीन मदु जज़र! चुनाँचे तमाम मुतल्लिकीन के दरमियान एक ख़ामोश समझौता आप से आप तय पा गया कि हरचे बादा बाद, हर साल रमज़ानुल मुबारक में बयानुल कुरान की नयी जिल्द की रूनुमाई का इल्तज़ाम करना ही होगा। अल्लाह तआला मुरत्तिबीन की टीम को तौफ़ीक़, हिम्मत और मोहलत अता फ़रमाये कि वह इस काम को जल्द-अज़-जल्द पाया-ए-तकमील तक पहुँचा सकें। आमीन!

डॉक्टर साहब (रहि.) के अपने फ़रमान के मुताबिक़, कुरान की तफ़सीर लिखने का कोई मंसूबा कभी भी आपके हाशिया-ए-ख़याल में नहीं था। लेकिन जब मशीयत-ए-ऐज़दी से बयानुल कुरान की पहली जिल्द शाय़ा हुई तो उसकी ग़ैर मामूली मक़बूलियत और पज़ीराई ने डॉक्टर साहब को इसके बक़्रिया काम के बारे में एक खुशगवार इज़्तराब (चिंता) की कैफ़ियत से दो-चार कर दिया। दरअसल डॉक्टर साहब के मिशन और उसकी तरवीज़ में जो मरकज़ियत कुरान करीम हासिल है बैअयनही वही मरकज़ी और इम्तियाज़ी हैसियत अंजुमन और तंज़ीम की दीगर (अन्य) मत्वूआत (प्रकाशन) में बयानुल कुरान रखती है। यही वजह थी कि आप इन्ज़ार व तब्थीर और तशवीक़ व तरगीब के इस कुरानी मिम्बा को जल्द-अज़-जल्द उसके शाएकीन की पहुँच में देखना चाहते थे। बहरहाल डॉक्टर साहब की यह ख्वाहिश आपकी दुनियवी ज़िन्दगी में मतलूबा दर्जे में अपनी तस्कीन हासिल ना कर सकी!

डॉक्टर साहब के बक़ौल जो “पहाड़ जैसा भारी काम” बाक़ी था, अब उसको पाया-ए-तकमील तक पहुँचाने के लिये हम अपनी सी कोशिश में लगे हैं। हम अल्लाह की मदद और तौफ़ीक़ से इसमें कामयाबी के ख्वाहों भी हैं और उसकी रहमत से “अज़” के उम्मीदवार भी! इस बारे में हम अपने अल्लाह से मुसबत गुमान रखते हैं। यह सब कुछ तो इन्शा अल्लाह हमारे गुमान के मुताबिक़ हो ही जायेगा! मगर एक “ख़ला” है कि जिसका तसव्वुर मुसलसल गमनाक किये जाता है! इस “होमवर्क” के मुकम्मल करने पर आख़िर हमें एक खुसूसी “शाबाश” का लालच भी तो था! अल्लाह तआला के लुत्फ़-ओ-करम से क्या बईद है कि डॉक्टर साहब से मुलाकात का अरमान भी पूरा हो और हमारा यह लालच भी!!!

जुमातुल मुबारक

22 शाबान अल मौअज़्ज़म 1433 हिजरी

लेफ़्टिनेंट कर्नल (रिटा) आशिक़ हुसैन

सूरह युनुस

तम्हीदी कलिमात

सूरह युनुस के आगाज़ के साथ ही कुरान हकीम की तीसरी मंज़िल भी शुरू हो रही है और यहीं से मक्की-मदनी सूरतों के तीसरे ग्रुप का आगाज़ भी हो रहा है। इस लिहाज़ से कुरान का यह मक़ाम गोया “किरानस्स साअदैन्” है। मक्की सूरतों का यह सिलसिला जो सूरह युनुस से शुरू होकर सूरतुल मोमिनून (अट्ठारवें पारे) तक फैला हुआ है, हुज़्म के ऐतबार से तवील तरीन है। (अलबत्ता तेईसवें पारे की सूरतें चूँकि छोटी-छोटी हैं इसलिये तादाद के लिहाज़ से सबसे ज़्यादा मक्की सूरतें आखरी ग्रुप में हैं।) इस ग्रुप में शामिल सूरतुल हिज़्र और सूरतुल हज़ के बारे में बाज़ मुफ़स्सिरीन की राय है कि ये दोनों मदनियात हैं, मगर इस सिलसिले में मुझे उन मुफ़स्सिरीन से इत्तेफ़ाक़ है जो इन दोनों को मक्कियात मानते हैं।

इन पहले तीन ग्रुप्स में शामिल सूरतों की मक्की और मदनी तक्सीम के हवाले से बात की जाए तो जिस तरह पहले ग्रुप में सूरतुल बक्रह से लेकर सूरतुल मायदा तक सवा छः पारों पर मुश्तमिल छः सूरतें मदनी थीं, इसी तरह अब इस ग्रुप में आईन्दा सात पारों पर मुश्तमिल मुसलसल चौदह सूरतें मक्की हैं, जबकि दरमियानी ग्रुप दो मक्की (अल अनआम और अल आराफ़) और दो मदनी (अल अनफ़ाल और अत्तौबा) सूरतों पर मुश्तमिल था।

इस ग्रुप की इन चौदह सूरतों में अक्सर व बेशतर तीन-तीन सूरतों के ज़ेली ग्रुप भी बनते हैं, जिनमें से हर ग्रुप की पहली दी सूरतों के माबैन निस्बते ज़ौजियत पाई जाती है, जबकि तीसरी सूरत मुनफ़रिद है। पहले ज़ेली ग्रुप में शामिल तीन सूरतें निस्बतन तवील हैं, इनके बाद तीन निस्बतन छोटी सूरतों का एक ज़ेली ग्रुप है और इसके बाद फिर तीन सूरतों का एक ज़ेली ग्रुप है जो क़दरे तवील हैं। पहला ज़ेली ग्रुप सूरह युनुस, सूरह हूद और सूरह युसुफ़ पर मुश्तमिल है। इनमें सूरह युनुस और सूरह हूद का आपस में ज़ौजियत का बिल्कुल वैसा ही ताल्लुक़ है जैसा कि सूरतुल अनआम और सूरतुल आराफ़ में है। चुनाँचे सूरह युनुस के ग्यारह रुकुओं में से सिर्फ़ दो रुकूअ अम्बिया अर्रसूल से मुताल्लिक़ हैं और बाक़ी नौ रुकूअ अल तज़कीर बि आला इल्लाह पर मुश्तमिल हैं, जबकि दूसरी तरफ़ सूरह हूद के दस रुकुओं में से साढ़े छः रुकूअ अम्बिया अर्रसूल (अत्तज़कीर बि अय्यामिल्लाह) से मुताल्लिक़ हैं और सिर्फ़ साढ़े तीन रुकुओं में दूसरे मज़ामीन हैं, जिनमें कुफ़्फ़ार के साथ रद्दो क़दह भी है और अल तज़कीर बि आला इल्लाह का मज़मून भी है। इस ज़ेली ग्रुप में सूरह युसुफ़ की हैसियत गोया एक ज़मीमे की है, जो इनसे अलग और बिल्कुल मुनफ़रिद है।

सूरह युनुस और सूरह हूद में ज़ौजियत के ताल्लुक़ में एक अजीब मुतलज़िम (reciprocal) निस्बत भी है कि सूरह युनुस में अम्बिया अर्रसूल के दो रुकुओं में से सिर्फ़ आधे रुकूअ (चंद आयात) में हज़रत नूह अलै. का ज़िक़्र है और बाक़ी डेढ़ रुकूअ हज़रत मूसा अलै. के बारे में है, जबकि दरमियान के किसी रसूल का कोई ज़िक़्र नहीं है। इसके बिल्कुल बरअक्स सूरह हूद में पूरे दो रुकूअ हज़रत नूह अलै. के ज़िक़्र पर मुश्तमिल हैं। यह मक़ाम हज़रत नूह अलै. के ज़िक़्र के ऐतबार से पूरे कुरान में जामेअ तरीन भी है और अफ़ज़ल भी। (अगरचे उनत्तीस्वें पारे में सूरह नूह मुकम्मल आप (अलै.) ही के ज़िक़्र पर मुश्तमिल है, मगर वहाँ वह तफ़ासील नहीं हैं जो यहाँ पर हैं।) हज़रत मूसा अलै. का ज़िक़्र इस सूरत में चंद आयात में सिर्फ़ हवाले के लिये ही आया है, जबकि दरमियान में अम्बिया अर्रसूल के सिलसिले में एक-एक रुकूअ में एक-एक रसूल का ज़िक़्र है।

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

आयात 1 से 10 तक

الرَّبِّ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ① أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَى رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ
آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ② إِنَّ رَبَّكُمْ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُدِيرُ الْأَمْرَ مَا مِنْ شَفِيعٍ إِلَّا مِنْ بَعْدِ إِذْنِهِ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ
فَاعْبُدُوهُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ③ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا إِنَّهُ يَبْدُو الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ④ هُوَ الَّذِي
جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَّرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ
يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ⑤ إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
يَتَّقُونَ ⑥ إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنَّنُوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غِفْلُونَ ⑦
أُولَٰئِكَ مَا لَهُمْ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ⑧ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِآيَاتِهِمْ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ⑨ دَعُوهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّاتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۚ وَآخِرُ دَعْوَاهُمْ أَنِ الْحَمْدُ
لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑩

आयत 1

“अलिफ़, लाम, रा।”

الرَّبِّ

ये हुरूफ़-ए-मुक़त़आत हैं। यहाँ पर एक क़ाबिले ज़िक्र नक्ता यह है कि इससे पहले सुरतल बक्ररह, सुरह आले इमरान और सुरतल आराफ़ तीन सुरतों का आगाज़ हुरूफ़-ए-मुक़त़आत (अलिफ़ लाम मीम, अलिफ़ लाम मीम साद) से होता है और इन तीनों मुक़ामात पर हुरूफ़-ए-मुक़त़आत पर आयत मुक़म्मल हो जाती है, मगर यहाँ इन हुरूफ़ पर आयत मुक़म्मल नहीं हो रही है, बल्कि यह पहली आयत का हिस्सा है। बहरहाल ये तौफ़ीक़ी अमूर (हुज़ूर ﷺ के बताने पर मौक़फ़) हैं। ग्रामर, मन्तिक़, नह्व बयान वगैरह के किसी असूल या क़ायदे को यहाँ दख़ल नहीं है।

“ये बड़ी हिकमत भरी किताब की आयत हैं।”

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ①

आयत 2

“क्या लोगों को बहुत तअज्जुब हुआ है कि हमने वही भेज दी एक शख्स पर उन्हीं में से”

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَى رَجُلٍ مِّنْهُمْ

“कि आप लोगों को खबरदार कर दीजिये और अहले ईमान को बशारत दे दीजिये कि उनके लिये उनके रब के पास बहुत ऊँचा मरतबा है।”

أَنْ أُنْذِرَ النَّاسَ وَبَشِّرَ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ قَدَمٌ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ

“(इस पर) काफ़िरो ने कहा कि यह तो एक खुला जादूगर है।”

قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَذَا السَّحَرُ مُبِينٌ ۝

यानि यह तो अल्लाह की मर्ज़ी पर मुन्हसिर (depend) है। उसका फ़ैसला है कि वह इस मंसब (position) के लिये इंसानों में से जिसको चाहे पसंद फ़रमा कर मुन्तख़िब कर ले। अगर उसने मोहम्मद صلی اللہ علیہ وسلم का इन्तेखाब करके आप صلی اللہ علیہ وسلم को बज़रिया वही इन्ज़ार और तबशीर की ख़िदमत पर मामूर किया है तो इसमें तअज्जुब की कौनसी बात है!

आयत 3

“यक़ीनन तुम्हारा रब वह अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन की तख़लीक़ फ़रमाई छः दिनों में”

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ

“फ़िर वह अर्श पर मुतम्मकिन हो गया, (और) वह तदबीर करता है हर मामले की।”

ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يُدِيرُ الْأَمْرَ

अल्लाह तआला अपनी मशियत और मंसूबा बंदी के मुताबिक़ पूरी कायनात का इन्तेज़ाम संभाले हुए है। क़बल अज़ भी ज़िक़्र हो चुका है कि शाह वलीउल्लाह देहलवी रह. ने अपनी शहरह-ए-आफ़ाक़ तसनीफ़ “हुज्जतुल्लाह अलबालगा” के बाबे अब्बल में अल्लाह तआला के तीन अफ़आल के बारे में बड़ी तफ़सील से बहस की है: (1) इब्दाअ (creation ex nihilo) यानि किसी चीज़ को अदम महज़ से वजूद बख़्शना, (2) ख़ल्क़, यानि किसी चीज़ से कोई दूसरी चीज़ बनाना, और (3) तदबीर, यानि अपनी मशियत और हिकमत के मुताबिक़ कायनाती निज़ाम की मंसूबा बंदी (प्लानिंग) फ़रमाना।

“नहीं है कोई भी शफ़ाअत करने वाला मगर उसकी इजाज़त के बाद।”

مَا مِنْ شَفِيعٍ إِلَّا مِنْ بَعْدِ إِذْنِهِ

कोई उसका इज़न हासिल किये बग़ैर उसके पास किसी की सिफ़ारिश नहीं कर सकता। इससे पहले आयतल कुर्सी (सूरतुल बक्ररह) में भी शफ़ाअत के बारे में इसी नौइयत का इस्तथना आ चुका है।

“वह है अल्लाह तुम्हारा रब, पस तुम उसी की बंदगी करो। तो क्या तुम नसीहत अख़ज़ नहीं करते!”

ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝

आयत 4

“तुम सबका लौटना उसी की जानिब है। यह वादा है अल्लाह का सच्चा।”

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا

“वही है जो ख़ल्क़ का आग़ाज़ करता है, फ़िर वही उसका इआदा (repeat) कर देगा”

إِنَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ

पहले पहल किसी काम का करना या इब्तदाई तौर पर किसी चीज़ को तख़लीक़ करना मुशिकल होता है जबकि उसका इआदा (repeat) करना निस्बतन आसान होता है। यह एक माकूल और मन्तक़ी बात है कि अगर अल्लाह तआला ही ने यह सब कुछ पैदा फ़रमाया है और पहली बार उसे इस तख़लीक़ में कोई मुशिकल पेश नहीं आई तो दोबारा पैदा करना उसके लिये क्यों कर मुशिकल हो जाएगा! बहरहाल वह तमाम इंसानों को दोबारा पैदा करेगा:

“ताकि वह उन लोगों को जज़ा दे जो ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे अमल किये इन्साफ़ के साथ।”

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ

वह अहले ईमान जिन्होंने अल्लाह और उसके दीन के लिये ईसार (त्याग) किया है, उनकी कुर्बानियों और मशक्कतों के बदले में उन्हें ईनामात से नवाज़ा जाएगा और उनके इन आमाल की पूरी-पूरी क़दर की जाएगी।

“और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके पीने के लिये होगा ख़ौलता हुआ पानी और दर्दनाक अज़ाब, उस कुफ़्र की पादाश में जो वह करते रहे।”

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ
بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ٥

आयत 5

“वही है जिसने बनाया सूरज को चमकदार और चाँद को नूर”

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا

यहाँ यह नुक्ता क़ाबिले गौर है कि सूरज के अन्दर जारी अहतराक़ यानि जलने (combustion) के अमल की वजह से रौशनी पैदा (generate) हो रही है इसके लिये “ज़िया” जबकि मनअक्स (reflect) होकर आने वाली रौशनी के लिये “नूर” का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है। सूरज और चाँद की रौशनी के लिये कुरान हकीम ने दो मुख्तलिफ़ अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये हैं, इसलिये कि सूरज की अपनी चमक है और चाँद की रौशनी एक इनअकास (reflection) है।

“और उसने उस (चाँद) की मंज़िलें मुक़रर कर दीं ताकि तुम्हें मालूम हो गिनती बरसों की और तुम (मामलाते ज़िंदगी में) हिसाब कर सको।”

وَقَدَرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابِ

“अल्लाह ने ये सब कुछ पैदा नहीं किया मगर हक़ के साथ, और वह तफ़सील बयान करता है अपनी आयात की उन लोगों के लिये जो इल्म हासिल करना चाहें।”

مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يَعْلَمُونَ ٥

यानि यह कायनात एक बेमक़सद तख़लीक़ नहीं बल्कि एक संजीदा, बामक़सद और नतीज़ाखेज़ तख़लीक़ है।

आयत 6

“यक़ीनन रात और दीन के अदलने-बदलने में और जो कुछ अल्लाह ने बनाया है आसमानों में और ज़मीन में, यक़ीनन निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जिनके अंदर तक्रवा है।”

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَّقُونَ ٦

इन निशानियों से वही लोग सबक़ हासिल करके मुसतफ़ीज़ (benefited) हो सकते हैं जिनके अंदर ख़ौफ़-ए-ख़ुदा है और उनकी अख़लाक़ी हिस्स बेदार होती है।

आयत 7

“बेशक़ वह लोग जो हमसे मुलाक़ात के उम्मीदवार नहीं हैं”

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا

यहाँ पर यह नुक्ता नोट करें कि ये अल्फ़ाज़ इस सूरत में बार-बार दोहराए जायेंगे। असल में यह ऐसी इंसानी सोच और नफ़सियाती कैफ़ियत की तरफ़ इशारा है जिसके मुताबिक़ इंसानी ज़िंदगी ही असल ज़िंदगी है। इंसान को गौर करना चाहिये कि यह इंसानी ज़िंदगी जो हम इस दुनिया में गुज़ार रहे हैं इसकी असल हक़ीक़त क्या है! इसे मुहावरतन “चार दिन की ज़िंदगी” करार दिया जाता है। बहादुर शाह ज़फ़र ने भी कहा है:

उम्र-ए-दराज़ माँग कर लाए थे चार दिन
दो आरज़ू में कट गए, दो इंतज़ार में!

अगर इंसान इस दुनिया में तवील तबई उम्र भी पाये तो उसका एक हिस्सा बचपन की नासमझी और खेल-कूद में ज़ाया हो जाता है। शऊर और जवानी की उम्र का थोड़ा सा वक्फ़ा उसके लिये कारआमद होता है। इसके बाद जल्द ही बुढ़ापा उसे अपनी गिरफ्त में ले लेता है और वह देखते ही देखते {لَيْلًا يَغْلَمُ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا} (सूरह नहल:70) की जीती-जागती तस्वीर बन कर रह जाता है। तो क्या इंसानी ज़िन्दगी की हकीकत बस यही है? और क्या इतनी सी ज़िन्दगी के लिये ही इन्सान को अशरफ़ुल मख़लूक़ात का लक़ब दिया जाता है? इन्सान गौर करे तो उस पर यह हकीकत वाज़ेह होगी कि इंसानी ज़िन्दगी महज़ हमारे सामने के चंद माह व साल का मज़्मूआ नहीं है बल्कि यह एक कभी ना ख़त्म होने वाले सिलसिले का नाम है। अल्लामा इक़बाल के बक़ौल:

तू इसे पैमाना-ए-मज़ीं फ़र्दा से ना नाप
जावेदां, पैहम दवां, हर दम जवां है ज़िन्दगी!

और इक़बाल ही ने इस सिलसिले में इंसानी नासमझी और कमज़र्फी की तरफ़ इन अल्फ़ाज़ में तवज्जोह दिलाई है:

तू ही नादाँ चंद कलियों पर क़नाअत कर गया
वरना गुलशन में इलाजे तंगई दामाँ भी है!

इस लामतनाही (अन्तहीन) सिलसिला-ए-ज़िंदगी में से एक इन्तहाई मुख़्तसर और आरज़ी वक्फ़ा ये दुनियवी ज़िंदगी है जो अल्लाह ने इंसानों को आज़माने और जाँचने के लिये अता की है: {الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا} (सूरह मुल्क:2) जबकि असल ज़िंदगी तो आख़िरत की ज़िंदगी है और वह बहुत तवील है। जैसे कि फ़रमाया: {وَالْآزَاجُ الْأَخْرَجَ لَهُنَّ} (सूरह अनकबूत:64) “और यक़ीनन आख़िरत का घर ही असल ज़िंदगी है, काश कि इन्हें मालूम होता!” मगर वह लोग जिनका ज़हनी उफ़क़ तंग और सोच महदूद है, वह इसी आरज़ी और मुख़्तसर वक्फ़ा-ए-ज़िंदगी को असल ज़िंदगी समझ कर इसकी रअनाईयों (चकाचौंध) पर फ़रयफ़ता (मुग्ध) और इसकी रंगीनियों में गुम रहते हैं। बक़ौल अल्लामा इक़बाल:

काफ़िर की यह पहचान कि आफ़ाक़ में गुम है
मोमिन की यह पहचान है कि गुम उसमें हैं आफ़ाक़!

असल और दाइमी ज़िंदगी की अज़मत और हकीकत ऐसे लोगों की नज़रों से बिल्कुल ओझल हो चुकी है।

“और वह दुनिया की ज़िंदगी पर ही राज़ी और उसी पर मुत्मईन हैं, और
जो हमारी आयात से गाफ़िल हैं।”

وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنُّوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ
عَنْ آيَاتِنَا غُفْلُونَ ۝

इन्सानों के अन्दर और बाहर अल्लाह की बेशुमार निशानियाँ मौजूद हैं और उनकी फ़ितरत उन्हें बार-बार दावत-ए-फ़िक़ भी देती है:

खोल आँख, ज़मीं देख, फ़लक़ देख, फ़िज़ा देख!
मशरिफ़ से उभरते हुए सूरज को ज़रा देख!

मगर वह लोग शहवाते नफ़सानी के चक्करों में इस हद तक गलता व पेचा हैं कि उन्हें आँख खोल कर अन्नफ़्स व आफ़ाक़ में बिखरी हुई लातादाद आयाते इलाही को एक नज़र देखने की फ़ुरसत है ना तौफ़ीक़।

आयत 8

“यही वह लोग हैं जिनका ठिकाना आग़ है, अपनी उस कमाई के सबब
जो वह कर रहे हैं।”

أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

जिस शख्स ने अपनी पूरी दुनयवी ज़िंदगी में ना अल्लाह की तरफ़ रुजूअ किया और ना आख़िरत ही की कुछ फ़िक़ की, सारी उम्र ‘बाबर ब-ऐश कोश कि आलम दोबारा नीस्त’ जैसे नारे को अपना मोटो (moto) बनाए रखा, हलाल व हराम

और ज़ायज़ व नाज़ायज़ की कैद से बेनियाज़ होकर झूठी मसरतें और आरज़ी खुशियाँ जहाँ से मिलें, जिस कीमत पर मिलें हासिल कर लें, तो ऐसे शख्स का आख़री ठिकाना आग के सिवा भला और कहाँ हो सकता है!

आयत 9

“यक़ीनन वह लोग जो ईमान लाए और उन्होंने नेक आमाल किये, उनका रब उनके ईमान के बाअस उनको पहुँचा देगा नेअमतों वाले बागात में, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी।”

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ
بِإِيمَانِهِمْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ

⑨

आयत 10

“उसमें उनका तराना होगा: ऐ अल्लाह तू पाक है”

دَعْوُهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ

वह लोग जन्नत के अन्दर भी अल्लाह तआला की तस्बीह व मुनाजात करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार, तू हर ज़ौअफ़ (कमज़ोरी) से पाक है, हर ऐब और हर नुक्स से मुबर्रा (रहित) है और अहतियाज के हर तसव्वुर से अरफ़अ व आला है।

“और उसमें उनकी (आपस की) दुआ ‘सलाम’ होगी।”

وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ

अहले जन्नत आपस में एक-दूसरे को मिलते हुए अस्सलामु अलैकुम के अल्फ़ाज़ कहेंगे, इस तरह वहाँ हर तरफ़ से सलाम, सलाम की आवाज़ें आ रही होंगी। जैसे सूरतुल वाक्किआ में फ़रमाया: {لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا} (आयात: 25-26) “वहाँ ना बेहुदा बात सुनेंगे और ना गाली गलोच। वहाँ उनका कलाम सलाम-सलाम होगा।”

“और उनकी दुआ और मुनाजात का इख़तताम (हमेशा इन कलिमात पर) होगा कि कुल हम्द और कुल तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जो तमाम जहानों का रब है।”

وَآخِرُ دَعْوُهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

आयात 11 से 20 तक

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقَضَىٰ إِلَيْهِمْ أَجْلَهُمْ ۖ فَتَذَرُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ⑪ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنبِهِ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِلًا فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَأَن لَّمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرِّ مَسَّهُ ۚ كَذَلِكَ زَيْنٌ لِّلْمُسْرِ ۖ فِيمَن مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑫ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِن قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۖ وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا ۚ كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ⑬ ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِن بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ⑭ وَإِذَا تَثَىٰ عَلَيْهِمْ أَيَاتُنَا بِبَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا إِنَّا بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَذَا أَوْ بَدِّلْهُ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَن أَبَدِّلَهُ مِن تِلْقَائِي نَفْسِي ۚ إِنِّي أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ ۚ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ⑮ قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرِكُمْ بِهِ ۚ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّن قَبْلِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ⑯ فَمَن أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ ⑰ وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ

اللَّهُ مَا لَا يَصُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ قُلْ أَتَنْبِئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ⑮ وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِي مَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ⑯ وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانْتَظِرُوا ⑰ إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ⑱

आयत 11

“और अगर अल्लाह जल्दी कर देता लोगों के लिए शर, जैसे कि वह जल्दी चाहते हैं खैर”

وَلَوْ يُعِجِّلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ

इंसान जल्दबाज़ है, वह चाहता है कि उसकी कोशिशों के नतीजे जल्द अज़ जल्द उसके सामने आ जाएँ। मगर अल्लह तो बड़ा हकीम है, उसने हर काम और हर वाक़िये के लिये अपनी मशियत और हिकमत के मुताबिक़ वक़्त मुक़र्रर कर रखा है। वह ख़ूब जानता है कि किस काम में खैर है और किसमें खैर नहीं है। अगर अल्लाह इंसान की गलतियों और बुराइयों के बदले और नतीजे भी फ़ौरन ही उनके सामने रख दिया करता और उनके ज़राएम (जुर्मों) की सज़ाएँ भी फ़ौरन ही उनको दे दिया करता तो:

“उनकी अज़ल पूरी हो चुकी होती”

لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ

यानि उनकी मोहलत-ए-उम्र कभी की ख़त्म हो चुकी होती।

“फ़िर हम उन लोगों को छोड़ देंगे जो हमसे मुलाक़ात के उम्मीदवार नहीं, कि वह अपनी सरकशी में अंधे होकर बढ़ते चले जाएँ।”

فَنَذَرُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ

يَعْبَهُونَ ⑱

फिर वही बात दोहराई गई है। इस अंदाज़ में एक शान-ए-इस्तगना (mock) है कि अगर वह हमें मिलने के उम्मीदवार नहीं तो हमारी नज़रे अलतफ़ात को भी उनसे कोई दिलचस्पी नहीं।

आयत 12

“और इन्सान को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह हमें पुकारता है पहलु के बल (लेटे हुए) या बैठे हुए या खड़े हुए।”

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لَجْنِبَةً أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا

“फ़िर जब हम उससे उसकी तकलीफ़ को दूर कर देते हैं तो वह ऐसे चल देता है जैसे उसने हमें कभी पुकारा ही ना था कोई तकलीफ़ पहुँचने पर।”

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَأَن لَّمْ يَدْعُنَا إِلَى ضُرِّ مَسَّهُ

“ऐसे ही मुज़य्यन कर दिया गया है उन हद से बढ़ने वालों के लिये उनके आमाल को।”

كَذَلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑲

इनके अन्दर इतनी ढिठाई पैदा हो गई है कि ज़रा तकलीफ़ आ जाए तो गिडगिडा कर दुआएँ माँगेंगे, हर हाल में हमें पुकारेंगे और गिरया बज़ारी में रातें गुज़ार देंगे। लेकिन जब वह तकलीफ़ रफ़ा हो जाएगी तो ऐसे भूल जायेंगे गोया हमें जानते ही नहीं।

आयत 13

“और हम तुम लोगों से पहले भी बहुत सी नस्लों और क्रौमों को हलाक कर चुके हैं, जब उन्होंने जुल्म की रविश इख्तियार की”

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا

“और उनके पास (भी) आए थे उनके रसूल वाज़ेह तालीमात लेकर, लेकिन वह नहीं थे ईमान लाने वाले।”

وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا

“इसी तरह हम बदला दिया करते हैं मुजरिम लोगों को।”

كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٣﴾

आयत 14

“फिर उनके बाद हमने तुम्हें ज़मीन में जानशीन बना दिया, ताकि हम देखें कि तुम क्या करते हो!”

ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ

كَيْفَ تَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

यहाँ हर शख्स इन्फ़रादी तौर पर भी अपनी महदूद उम्र में इस्तेहान दे रहा है और क्रौमों और उम्मतें भी अपने-अपने वक्फ़ा-ए-मोहलत में इस इस्तेहान गाह से गुज़र रही है। अल्लामा इक़बाल के बक़ौल:

कुलजुमे हस्ती से तू उभरा है मानिन्दे हबाब
इस ज़ियाखाने में तेरा इस्तेहान है ज़िन्दगी!

आयत 15

“और जब इनको पढ़ कर सुनाई जाती हैं हमारी रौशन आयात तो कहते हैं वह लोग जो हमसे मुलाक़ात के उम्मीदवार नहीं हैं कि (ऐ मोहम्मद صلی اللہ علیہ وسلم) इसके अलावा आप कोई और कुरान पेश करें या इसमें कोई तरमीम करें।”

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ لَا

يَرْجُونَ لِقَاءَنَا أَنْتِ بَقْرَانٍ غَيْرِ هَذَا أَوْ بَدِّلْهُ

यहाँ वही अल्फ़ाज़ फिर दोहराए जा रहे हैं, यानि जो लोग हमसे मिलने की तवक्को नहीं रखते वह हमारे कलाम को संजीदगी से सुनते ही नहीं और कभी सुन भी लेते हैं तो इस्तहज़ाइया (मज़ाकिया) अंदाज़ में जवाब देते हैं कि यह कुरान बहुत सख्त (rigid) है, इसके अहकाम हमारे लिये क़ाबिले कुबूल नहीं। इसमें कुछ मदाहनत (compromise) का अंदाज़ होना चाहिये, कुछ दो और कुछ लो (give and take) के असूल पर बात होनी चाहिये। चुनाँचे आप (صلی اللہ علیہ وسلم) इस किताब में कुछ कमी-बेशी करें तो फिर इसकी कुछ बातें हम भी मान लेंगे।

“(ऐ नबी صلی اللہ علیہ وسلم) कह दीजिये कि मेरे लिये हरगिज़ यह मुमकिन नहीं कि मैं इसमें अपनी तरफ़ से कोई तब्दीली कर लूँ, मैं तो पैरवी करता हूँ उसी की जो मेरी तरफ़ वही किया जा रहा है।”

قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَبَدِّلَهُ مِنْ تِلْقَائِي نَفْسِي إِنْ

أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ

मैं तो खुद वही-ए-इलाही का पाबन्द हूँ। मैं अपनी तरफ़ से इसमें कोई कमी-बेशी, कोई तरमीम व तन्सीख करने का मज़ाज़ नहीं हूँ।

“मैं डरता हूँ बड़े दिन के अज़ाब से, अगर मैं अपने परवरदिगार की नाफ़रमानी करूँ।”

إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾

आयत 16

“आप (इनसे) कहिये कि अगर अल्लाह चाहता तो मैं ना यह कुरान तुम्हें पढ़ कर सुनाता और ना वह तुम्हें इससे वाक़िफ़ करता”

قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرِكُمْ بِهِ

“मैं तुम्हारे दरमियान एक उम्र गुज़ार चुका हूँ इससे पहले। तो क्या तुम लोग अक्ल से काम नहीं लेते!”

فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّن قَبْلِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٧﴾

मैं पिछले चालीस बरस से तुम्हारे दरमियान ज़िंदगी बसर कर रहा हूँ। तुम मुझे अच्छी तरह से जानते हो। तुम जानते हो कि मैं शायर नहीं हूँ, तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि मैं काहिन (priest) या जादूगर भी नहीं हूँ, तुम्हें यह भी इल्म है कि मुझे इन चीज़ों से कभी कोई दिलचस्पी नहीं रही और मैंने इन चीज़ों को सीखने के लिये कभी मशक़ या रियाज़त भी नहीं की। तुम इस हकीक़त को भी ख़ूब समझते हो कि कोई शख्स एक दिन में कभी शायर या काहिन नहीं बन जाता। इन तमाम हक्काइक़ का इल्म रखने के बावजूद भी तुम मुझे ऐसे इल्ज़ामात देते हो, तो क्या तुम लोग तअस्सुब की बिना पर अक्ल से बिल्कुल ही आरी हो गए हो?

आयत 17

“तो उस शख्स से बढ़ कर कौन ज़ालिम होगा जिसने अल्लाह की तरफ़ झूठ बात मंसूब की या झुठलाया उसकी आयात को!”

فَمَن أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ

यानि यह कुरान जो मैं तुम लोगों को सुना रहा हूँ, अगर यह अल्लाह की तरफ़ से नहीं है और मैं इसे अपनी तरफ़ से घड कर पेश कर रहा हूँ तो मुझसे बढ़ कर ज़ालिम कोई नहीं, और अगर ये वाक़िअतन अल्लाह की आयात हैं तो तुम लोगों को मालूम होना चाहिये कि जो शख्स अल्लाह की आयात को झुठला दे, उससे बढ़ कर ज़ालिम और गुनाहगार कोई दूसरा नहीं हो सकता। अब इस मैयार-ए-हकीक़त को सामने रखते हुए तुम में से हर शख्स को चाहिये कि वह अपनी सोच और अपने अमल का जायज़ा ले और देखे कि वह कौनसी रविश इख्तियार कर रहा है।

“यक़ीनन मुजरिम लोग फ़लाह नहीं पाया करते।”

إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ ﴿١٨﴾

आयत 18

“और ये लोग परस्तिश करते हैं अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ों की जो ना इन्हें कोई नुक़सान पहुँचा सकती हैं और ना नफ़ा दे सकती हैं, और कहते हैं कि ये हमारे सिफ़ारशी हैं अल्लाह के यहाँ।”

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ

इससे मुशरिकीने मक्का का बुनियादी अक़ीदा ज़ाहिर हो रहा है। वह लोग मानते थे कि इस कायनात का खालिक और मालिक अल्लाह है। वह अपने बुतों को कायनात का खालिक व मालिक नहीं बल्कि अल्लाह के कुर्ब का वसीला समझते थे। उनका ईमान था कि जिन हस्तियों के नाम पर ये बुत बनाए गए हैं वह हस्तियाँ अल्लाह के यहाँ बहुत मुक़र्रब और महबूब होने के बाइस उसके यहाँ हमारी सिफ़ारश करेंगी।

“आप कहिये कि क्या तुम अल्लाह को बताना चाहते हो वह शय जो वह नहीं जानता, ना आसमानों में और ना ज़मीन में?”

قُلْ أَتَنْبِئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ

क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ की ख़बर देना चाहते हो जिसका उसको खुद पता नहीं? यह वही बात है जो आयतल कुर्सी (सूरह बक्ररह: 255) की तशरीह के ज़िमन में बयान हो चुकी है कि ऐसी किसी शफ़ाअत का आख़िर जवाज़ क्या होगा? अल्लाह तो गायब और हाज़िर सब कुछ जानने वाला है: {يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ} तो फिर आख़िर कोई सिफ़ारशी अल्लाह के सामने खड़े होकर क्या कहेगा? किस बुनियाद पर वह किसी की सिफ़ारिश करेगा? क्या वह ये कहेगा कि ऐ अल्लाह! तू इस आदमी को ठीक से नहीं जानता, मैं इसे बहुत अच्छी तरह जानता हूँ, यह बहुत अच्छा और नेक आदमी है! तो क्या वह अल्लाह को वह कुछ बताना चाहेगा (माज़ अल्लाह) जिसको वह खुद नहीं जानता?

“वह बहुत पाक और बुलंद है उन चीज़ों से जिनको वह उसका शरीक ठहराते हैं।”

سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ⑩

आयत 19

“और नहीं थे लोग मगर एक ही उम्मत, फिर (बाद में) उन्होंने इख़लाफ़ किया।”

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا ⑪

यह मज़मून सूरतुल बक्ररह में भी गुज़र चुका है। हज़रत आदम अलै. से इंसानों की नस्ल चली है, चुनाँचे जिस तरह तमाम इंसान नस्लन एक थे उसी तरह नज़रियाती तौर पर भी वह सब एक ही उम्मत थे। बनी नौए इंसानी के माबैन तमाम नज़रियाती इख़लाफ़ात बाद की पैदावार हैं।

“और अगर एक बात तेरे रब की तरफ़ से पहले से तय ना पा चुकी होती”

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ

अल्लाह तआला ने हर फ़र्द और हर क़ौम के लिये एक अज़ल (वक़््त) मुक़रर फरमा दी है। इसी तरह पूरी कायनात की अज़ल भी तय शुदा है। अगर ये सब कुछ तय ना हो चुका होता:

“तो फ़ैसला कर दिया जाता इनके माबैन उन तमाम चीज़ों में जिनमें ये इख़लाफ़ कर रहे हैं।”

لَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ⑫

आयत 20

“और वह कहते हैं क्यों ना उतारी गई कोई निशानी (मौजज़ा) इस (रसूल) पर इसके रब की तरफ़ से?”

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ

“आप कह दीजिये कि ग़ैब का इल्म तो बस अल्लाह ही को है, पस इंतज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार कर रहा हूँ।”

فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ

الْمُنْتَظِرِينَ ⑬

अपनी इस ज़िद और हठधर्मी के बाद इंतज़ार करो कि मशियते इज़दी (divine orders) से कब, क्या शय ज़हूर में आती है।

आयात 21 से 24 तक

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُمْ مَكْرٌ فِي آيَاتِنَا قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ⑭ إِن رُسُلَنَا يَكْتُشِبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ⑮ هُوَ الَّذِي يُسَبِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلِكِ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أُنْجِيتَنَا مِنْ هَذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ⑯ فَلَمَّا أَنْجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ يَأْتِيهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑰ إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ مِنْ كُلِّ النَّاسِ وَالْأَنْعَامُ ⑱ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ

رُحْرِفَهَا وَارْزَيْتَ وَظَنَّ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَدِرُونَ عَلَيْهَا أَنَّهُمْ أَمْرًا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَن لَّمْ تَغْنِ
بِالْأَمْسِ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾

आयत 21

“और जब हम लोगों को रहमत का मज़ा चखाते हैं उस तकलीफ़ के बाद जो उन पर आ गई थी तो फ़ौरन ही वह हमारी आयात के बारे में साज़िशें करने लगते हैं।”

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَّسْتَهُمْ
إِذَا لَهُمْ مَكْرٌ فِي آيَاتِنَا

पहली उम्मतों में भी ऐसा होता रहा है और हुज़ूर ﷺ की बेअसत के बाद अहले मक्का पर भी छोटी-छोटी तकालीफ़ आती रही हैं जैसे रिवायात में है कि आप ﷺ की बेअसत के बाद मक्का में शदीद नौईयत का क़हत पड़ गया था। ऐसे हालात में मुशरिकीने मक्का कुछ नरम पड़ जाते थे। हुज़ूर ﷺ के पास आकर बैठते भी थे और आप ﷺ की बातें भी सुनते थे। मगर ज्योंहि तकलीफ़ रफ़ा हो जाती तो वह फिर से अल्लाह और उसके रसूल ﷺ के ख़िलाफ़ साज़िशें शुरू कर देते।

“आप कहिये कि अल्लाह अपनी तदबीरों में कहीं ज़्यादा तेज़ है। यक़ीनन हमारे फ़रिश्ते लिख रहे हैं जो कुछ भी साज़िशें तुम लोग कर रहे हो।”

قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا
تَمْكُرُونَ ﴿٢١﴾

आयत 22

“वही है जो तुम्हें सैर कराता है खुशकी और समन्दर में।”

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ

यानि अल्लाह तआला ने मुख्तलिफ़ क़वानीन तबई के तहत मुख्तलिफ़ चीज़ों को सवारियों के तौर पर इन्सानों के लिये मुसख़्बर कर दिया है।

“यहाँ तक कि जब तुम किशितियों में होते हो, और वह चल रही होती है उन्हें (सवारों को) लेकर खुशगवार (मुवाफ़िक़) हवा के साथ और वह बहुत खुश होते हैं”

حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلِكِ وَجَرَيْنَ بِيَمِّ يَمِينٍ طَيِّبَةٍ
وَفَرِحُوا بِهَا

“कि अचानक तेज़ हवा का झकड़ चल पड़ता है और हर तरफ़ से मौंजें उनकी तरफ़ बढ़ने लगती हैं और वह गुमान करने लगते हैं कि वह इन (लहरों) में घेर लिये गए हैं”

جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ
مَكَانٍ وَظَنُوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ

हर तरफ़ पहाड़ जैसी लहरों को अपनी तरफ़ बढ़ते देख कर उन्हें यक़ीन हो जाता है कि बस अब वह लहरों में घिर गए हैं और उनका आख़री वक़्त आन पहुँचा है।

“(उस वक़्त) वह पुकारते हैं अल्लाह को, उसके लिये अपनी इताअत को ख़ालिस करते हुए कि (ऐ अल्लाह!) अगर तूने हमें इस मुसीबत से निजात दे दी तो हम लाज़िमन हो जायेंगे बहुत शुक्र करने वालों में से।”

دَعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنجَيْتَنَا مِنْ هَذِهِ
لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٢٢﴾

ऐसे मुश्किल वक़्त में उन्हें सिर्फ़ अल्लाह ही याद आता है, किसी देवी या देवता का ख़याल नहीं आता। इस सिलसिले में अबु जहल के बेटे अकरमा के बारे में बहुत अहम वाक़िया तारीख़ में मिलता है कि फ़तह मक्का के बाद वह हिजाज़ से फ़रार

होकर हब्शा जाने के लिये बाज़ दूसरे लोगों के साथ कश्ती में सवार थे कि कश्ती अचानक तूफ़ान में घिर गई। कश्ती में तमाम लोग मुशरिकीन थे, लेकिन इस मुसीबत की घड़ी में किसी को भी लात, मनात, उज्ज़ा और हुबल याद ना आए और उन्होंने मदद के लिये पुकारा तो अल्लाह को पुकारा। इसी लम्हे अकरमा को इस हकीकत के इन्क़शाफ़ ने चौंका दिया कि यही तो वह पैग़ाम है जो मोहम्मद (ﷺ) हमें दे रहे हैं। चुनाँचे वह वापस लौट आए और रसूल अल्लाह (ﷺ) की खिदमत में हाज़िर होकर हल्का बगोश-ए-इस्लाम हो गए और शर्फ़े सहाबियत से मुशरफ़ हुए। इसके बाद यही अकरमा रज़ि. इस्लाम के ज़बरदस्त मुजाहिद साबित हुए, और हज़रत अबु बकर सिद्दीक़ रज़ि. के दौरे खिलाफ़त में मुन्करीने ज़कात और मुरतदीन के खिलाफ़ जिहाद में इन्होंने कारहाये नुमाया अंजाम दिये।

दरअसल अल्लाह की मारफ़त (पहचान) इंसान की फ़ितरत के अन्दर समो दी गई है। बाज़ अवकात बातिल ख्यालात व नज़रियात का मलमअ (मिश्रण) इस मारफ़त की कुबूलियत में आड़े आ जाता है, लेकिन जब ये मलमअ उतरने का कोई सबब पैदा होता है तो अन्दर से इंसानी फ़ितरत अपनी असली हालत में नुमाया हो जाती है जो हक़ को पहचानने में लम्हा भर को देर नहीं करती।

आयत 23

“फ़िर जब वह इन्हें निजात दे देता है तो फ़ौरन ही बगावत करने लगते हैं ज़मीन में ना हक़।”

فَلَمَّا أَنْجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ

ज्योंहि ख़तरे की घड़ी टल जाती है तो फिर इन्हें देवियाँ, देवता याद आ जाते हैं और फिर से अल्लाह से सरकशी शुरू हो जाती है।

“ऐ लोगों! तुम्हारी इस बगावत का वबाल तुम्हारी अपनी ही जानों पर आएगा, यह दुनिया की ज़िंदगी का साज़ो-सामान है (इसे बरत लो), फिर हमारी ही तरफ़ तुम सबको लौटना है, फिर हम तुमको बतला देंगे जो कुछ तुम करते रहे थे।”

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾

आयत 24

“इस दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल तो ऐसे है जैसे पानी, जो हम बरसाते हैं आसमान से, फिर उसके साथ निकल आता है ज़मीन का सब्ज़ा, जिसमें से खाते हैं इंसान भी और चौपाये भी।”

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ مِنْ كُلِّ النَّاسِ وَالْأَنْعَامُ

पानी के बगैर ज़मीन बंजर और मुर्दा होती है, उसमें घास, हरियाली वगैरह कुछ भी नहीं होता। ज्योंहि बारिश होती है उसमें से तरह-तरह का सब्ज़ा निकल आता है, फ़सलें लहलहाने लगती हैं, बागात हरे-भरे हो जाते हैं।

“यहाँ तक कि जब ज़मीन अच्छी तरह अपना सिंगार कर लेती है और ख़ूब मुज़य्यन हो जाती है”

حَتَّىٰ إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ

यहाँ पर बहुत ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ में ज़मीन की शादाबी की तस्वीरकशी की गई है। छोटे-बड़े नबातात की नुमाइश, सब्ज़ पोश ख़ूबसूरती की बहार और रंगा-रंग फूलों की ज़ेबाईश के साथ जब ज़मीन पूरी तरह अपना बनाव-सिंगार कर लेती है, फ़सलें अपने जोबन (यौवन) पर आ जाती हैं और बागात फलों से लद जाते हैं:

“और इसके मालिक समझते हैं कि अब हम इस पर क़ादिर हैं”

وَوَظَنَ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَدِرُونَ عَلَيْهَا

ज़मीन वाले लहलहाती फसलों को देख कर खुश होते हैं और समझते हैं कि बस अब चंद दिन की बात है, हम अपनी फसलों की कटाई करेंगे, फलों को पेड़ों से उतारेंगे और हमारी ज़मीन की ये पैदावार हमारी खुशहाली का ज़रिया बनेगी। मगर होता क्या है:

“तो अचानक हमारा एक हुक्म आता है इस (खेत या बाग) पर रात के वक़्त या दिन के वक़्त और हम इसे कर देते हैं कटा हुआ जैसे कि कल वहाँ कुछ था ही नहीं।”

أَنهَآ أَمْرًا لَّيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَهَا حَصِيدًا كَأَن لَّمْ تَغْنِ بِالْأَمْسِ

अल्लाह के हुक्म से ऐसी आफ़त आई कि देखते ही देखते सारी फ़सल तबाह हो गई, बाग़ उजड़ गया, सारी मेहनत अकारत गई, तमाम सरमाया डूब गया। दुनिया की बेसबाती की इस मिसाल से वाज़ेह किया गया है कि यही मामला इंसान का है। इंसान इस दुनिया में दिन-रात मेहनत व मशक्कत और भाग-दौड़ करता है। अगर इंसान की यह सारी मेहनत और तगो-दो अल्लाह की मर्ज़ी के दायरे में नहीं है, इससे शरियत के तकाज़े पूरे नहीं हो रहे हैं तो यह सब कुछ इसी दुनिया की हद तक ही है, आखिरत में इनमें से कुछ भी उसके हाथ नहीं आएगा। मौत के बाद जब उसकी आँख खुलेगी तो वह देखेगा कि उसकी ज़िंदगी भर की सारी मेहनत अकारत चली गई: “जब आँख खुली गुल की तो मौसम था खज़ा का!”

“इसी तरह हम अपनी आयात की तफ़सील करते हैं उन लोगों के लिये जो ग़ौर व फ़िक्र से काम लेते हैं।”

كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٣﴾

आयात 25 से 30 तक

وَاللّٰهُ يَدْعُوْا اِلَى دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاءُ اِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهُهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ اُولٰٓئِكَ اَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّئٰتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ مِّمْلَآءًا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ كَأَمَّا اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطْعًا مِّنَ الْبَيْلِ مُظْلِمًا اُولٰٓئِكَ اَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اٰشْرَكُوْا مَا كَانَ لَكُمْ اَنْتُمْ وَشُرَڪَاؤُكُمْ فَرٰٓئِلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَڪَاؤُهُمْ مَا كُنْتُمْ اِيَّاَنَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٨﴾ فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾ هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّا اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰهُمُ الْحَقُّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾

आयत 25

“और अल्लाह बुला रहा है तुम्हें सलामती के घर की तरफ़, और वह हिदायत देता है जिसको चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़।”

وَاللّٰهُ يَدْعُوْا اِلَى دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَاءُ اِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

आयत 26

“जो लोग अहसान की रविश इख्तियार करेंगे, उनके लिये हसना (भलाई) है और मज़ीद भी।”

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ

उन्हें नेकी का बदला भी बहुत अच्छा मिलेगा और मज़ीद बराआँ उन्हें ईनामात से भी नवाज़ा जाएगा।

“और नहीं मुसल्लत होगी उनके चेहरों पर स्याही और ना ज़िल्लत।”

وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهُهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ

“यही होंगे जन्नत वाले, और रहेंगे उसमें हमेशा-हमेशा।”

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣١﴾

आयत 27

“और जिन लोगों ने बुराईयाँ कमाई तो (उनके लिये) बदला होगा बुराई का वैसा ही”

وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا

यानि जैसी उनकी बुराई होगी वैसा ही उसका बदला होगा, उसमें कुछ इज़ाफ़ा नहीं किया जाएगा।

“और उन पर ज़िल्लत द्या जाएगी। नहीं होगा उन्हें अल्लाह (की पकड़) से कोई भी बचाने वाला।”

وَتَرْهَقُهُمْ ذُلَّةٌ مَّا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ

“गोया उनके चेहरों पर तारीक रात के टुकड़े उढ़ा दिये गए हों।”

كَأَمَّا أَغْشِيَتْ وَجُوهُهُمْ قِطْعًا مِنَ الْبَيْلِ مُظْلِمًا

“यही लोग होंगे जहन्नमी, ये रहेंगे उसी में हमेशा-हमेशा।”

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٢﴾

आयत 28

“और जिस दिन हम इन सबको जमा करेंगे, फिर हम कहेंगे उन लोगों से जिन्होंने शिर्क किया था कि खड़े रहो अपनी जगह पर तुम भी और तुम्हारे शरीक भी।”

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنتُمْ وَشُرَكَاؤُكُمْ

यूँ मालुम होता है कि यह लात, मनात, उज्ज़ा वगैरह की बात नहीं हो रही जिनके बारे में किसी को पता नहीं कि उनकी असल क्या थी, बल्कि यह औलिया अल्लाह, नेक और बरगज़ीदा बन्दों की बात हो रही है जिनके नामों पर मूर्तियाँ और बुत बना कर उनकी पूजा की गई होगी। जैसे क्रौमे नूह ने बुद, सवाअ और यगोश वगैरह औलिया अल्लाह की पूजा के लिये उनके बुत बना रखे थे (इस बारे में तफ़सील सूरतुल नूह में आएगी)। हमारे यहाँ सिर्फ़ यह फ़र्क़ है कि बुत नहीं बनाए जाते, क्रब्रें पूजी जाती हैं।

इस सिलसिले में हज़रत ईसा अलै. से अल्लाह तआला के ख़िताब की एक झलक हम सूरतुल मायदा के आखरी रकूअ में देख आए हैं। इसलिये यहाँ यह ख़याल नहीं आना चाहिये कि ऐसे बुलंद मरतबा लोगों को इस तरह का हुक्म क्यों कर दिया जाएगा कि ठहरे रहो अपनी जगह पर तुम भी और तुम्हारे शरीक भी! बहरहाल अल्लाह तआला की शान बहुत बलंद है, जबकि एक बंदा तो बंदा ही है, चाहे जितनी भी तरक्की कर ले: अर्रब्बु रब्बुन वइन तनज्ज़ल! वल अब्दु अब्दुन वइन तरक्का!

“तो हम उनके दरमियान रिश्ते मुनक़तअ कर देंगे और कहेंगे उनके शरीक (उनसे) कि तुम हमको तो नहीं पूजा करते थे।”

فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاؤُهُمْ مَا كُنْهُمْ إِلَّا نَا

تَعْبُدُونَ ﴿٣٣﴾

वह नेक लोग जिन्हें अल्लाह का शरीक बनाया गया वह इस शिर्क से बरी हैं, क्योंकि उन्होंने तो अपनी ज़िन्दगियाँ अल्लाह की इताअत में गुज़ारी थी। जैसे सूरतुल बक्ररह (आयत: 134) में बहुत वाज़ेह अंदाज़ में फ़रमाया गया है: {تِلْكَ أُمّةٌ فَدَخَلَتْ} “वह एक जमात थी जो गुज़र गई, उनके लिये है जो उन्होंने कमाया और तुम्हारे लिये है जो तुमने कमाया।” अगर कोई शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह. को पुकारता है या किसी मज़ार पर जाकर मुशरिकाना हरकतें करता है तो इसका वबाल साहिबे मज़ार पर क़तअन नहीं होगा। उन पर तो उल्टा ज़ुल्म हो रहा है कि उन्हें अल्लाह के साथ शिर्क

में मुलव्विस किया जा रहा है। चुनौचे अल्लाह के वह नेक बन्दे अल्लाह के यहाँ इन शिर्क करने वालों के खिलाफ़ इस्तगासा (शिकायत) करेंगे, कि वह लोग अल्लाह को छोड़ कर उन्हें पुकारते थे और उनके नामों की दुहाइयाँ देते थे। वह उन शिर्क करने वालों से कहेंगे:

आयत 29

“पस अल्लाह काफ़ी है (बतौर) गवाह हमारे और तुम्हारे माबैन, हम तो तुम्हारी इस इबादत से बिल्कुल बेख़बर थे।”

فَكَفَى بِاللّٰهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لِغٰفِلِيْنَ ۝۲۹

यानि अगर तुम हमारी पूजा करते भी रहे हो तो हमें बिल्कुल इसकी ख़बर नहीं, हम पर इसका कुछ इल्ज़ाम नहीं। हम तुम्हारे इन धिनौने फ़अल से बिल्कुल बरी हैं।

आयत 30

“उस वक़्त हर जान को पता चल जाएगा कि उसने क्या आगे भेजा था, और वह लौटा दिए जाएँगे अल्लाह की तरफ़ जो उनका बरहक़ मौला है, और गुम हो जाएगा उनसे वह सब कुछ जो वह इफ़तरा (मानहानि) करते थे।”

هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّا اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰهُمْ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝۳۰

यानि उस दिन जब शफ़ाअत की उम्मीदों के सारे सहारे हवा हो जायेंगे तो उनके हाथों के तोते उड़ जायेंगे। तब उन्हें मालूम होगा कि: “ख़्वाब था जो कुछ कि देखा, जो सुना अफ़साना था।”

आयात 31 से 39 तक

قُلْ مَنْ يَّرِزُقْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ اَمْنَ يَمْلِكُ السَّنْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدْبِرُ الْاَمْرَ فَسَيَقُولُوْنَ اللّٰهُ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝۳۱ فذٰلِكُمْ اللّٰهُ رَبُّكُمْ الْحَقُّ فَمَا ذَا بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ فَاَنۡتِ تَصِرُ فُؤٰدُ ۝۳۲ كَذٰلِكَ حَقَّقْتُ كَلِمَتِ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝۳۳ قُلْ هَلْ مِنْ شَرِّكُمْ مَّنۡ يَّبۡدُوْا الْخُلُقَ ثُمَّ يَّعِيۡدُهٗ قُلِ اللّٰهُ يَّبۡدُوْا الْخُلُقَ ثُمَّ يَّعِيۡدُهٗ فَاَنۡتِ تُؤْفَكُوْنَ ۝۳۴ قُلْ هَلْ مِنْ شَرِّكُمْ مَّنۡ يَّهۡدِيۡ اِلَى الْحَقِّ قُلِ اللّٰهُ يَّهۡدِيۡ لِلْحَقِّ اَمۡنٌ يَّهۡدِيۡ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمۡنٌ لَا يَّهۡدِيۡ اِلَّا اَنْ يُّهۡدٰى فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝۳۵ وَمَا يَتَّبِعْ اَكۡثَرُهُمۡ اِلَّا ظَنًّا اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيۡ مِنَ الْحَقِّ شَيْۡئًا اِنَّ اللّٰهَ عَلِيۡمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۝۳۶ وَمَا كَانَ هَٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُفۡتَرٰى مِنْ دُوۡنِ اللّٰهِ وَلٰكِنۡ تَصٰدِیۡقُ الَّذِیۡ بَيَّنَّ يَدٰیۡهِ وَتَفۡصِيۡلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِیۡهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیۡنَ ۝۳۷ اَمْ یَقُولُوْنَ افۡتَرٰهٗ قُلْ فَاَتُوۡا بِسُوۡرَةٍ مِّثۡلِهٖ وَاَدْعُوۡا مَنِ اسۡتَظَعۡتُمۡ مِنْ دُوۡنِ اللّٰهِ اِنْ كُنۡتُمْ صٰدِقِیۡنَ ۝۳۸ بَلۡ كَذَّبُوۡا بِمَا لَمْ يُحِیۡطُوۡا بِعِلۡمِهٖ وَلَهَاۤیَاتِهِمْ تَاۡوِیۡلُهٗ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِیۡنَ مِنْ قَبۡلِهِمْ فَاَنظُرْ كَيْفَ كَانَ عٰقِبَةُ الظّٰلِمِیۡنَ ۝۳۹

आयत 31

“(ऐ नबी ﷺ! इनसे) पूछिए कि कौन है जो तुम्हें रिज़क पहुँचाता है आसमान और ज़मीन से या कौन है जिसके क़बज़ा-ए-कुदरत में है तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें?”

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّنْ يَمْلِكُ
السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ

“और कौन है जो निकालता है ज़िन्दा को मुर्दा से, और मुर्दा को ज़िन्दा से, और कौन है तदबीरे अम्र करने वाला?”

وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ
الْحَيِّ وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ

“तो वह कहेंगे अल्लाह!”

فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ

मुशरिकीने मक्का अल्लाह को इन तमाम सिफ़ात के साथ मानते थे और इस बारे में उनके ज़हनों में कोई अबहाम (doubt) नहीं था। वह इस हकीकत को तस्लीम करते थे कि अल्लाह सुबहाना व तआला ना सिर्फ़ इस कायनात का खालिक है बल्कि इसका निज़ाम भी वही चला रहा है।

“तो आप फ़रमाइये कि क्या फिर तुम (उस अल्लाह से) डरते नहीं हो?”

فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣١﴾

जब तुम लोग अल्लाह तआला को अपना खालिक, मालिक और राज़िक मानते हो, जब तुम मानते हो कि कायनात का यह सारा निज़ाम अल्लाह ही अपने हुस्ने तदबीर से चला रहा है तो फिर इसके बाद तुम्हारे इन मुशरिकाना नज़रियात और देवी देवताओं की इस पूजा-पाठ का क्या जवाज़ है? क्या तुम्हें कुछ भी खौफ़-ए-ख़ुदा नहीं है?

आयत 32

“तो वही है अल्लाह तुम्हारा रब बरहक़। तो हक़ के बाद क्या रह जाता है सिवाय गुमराही के? तो कहाँ से तुम फेरे जा रहे हो?”

فَذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ فَمَاذَا بَعَدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ
فَأَلَىٰ تَصْرَفُونَ ﴿٣٢﴾

यही हक़ है जिसको तुम अपनी फ़ितरत की नज़र से पहचान चुके हो। अब इसी को मज़बूती से थाम लो और फिर से गुमराही में मुब्तला होने से बच जाओ। यानि तुम्हारी फ़ितरत के अन्दर हक़ की पहचान मौजूद है। इसकी गवाही खुद तुम्हारी अपनी ज़बानें दे रही हैं। तुम अल्लाह को अपना और इस कायनात का खालिक व मालिक मानते हो, ज़बान से इसका इक़रार करते हो। तो यहाँ तक पहुँच कर फिर क्यों गुमराही में औंधे मुँह गिर जाते हो। तुम्हारी अक़ल कहाँ उलट जाती है?

आयत 33

“इसी तरह तेरे रब की बात सच साबित हुई नाफ़रमान लोगों पर कि वह ईमान नहीं लाएँगे।”

كَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا أَنَّهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾

आयत 34

“इनसे पूछिए क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई ऐसा भी है जो तख़लीक़ करता हो पहली मरतबा और फिर उसे दोबारा भी बनाए?”

قُلْ هَلْ مِنْ شَرِكِكُمْ مَنْ يَبْدُو الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ

“आप कहिये सिर्फ़ अल्लाह ही है जो पहली मरतबा भी पैदा करता है, फिर वह उसे दोबारा भी बनाएगा, तो फिर तुम कहाँ से पलटाए जा रहे हो?”

قُلِ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَأَلَيْ تُؤْفَكُونَ ۝

फिर तुम यह किस उल्टी राह पर चलाए जा रहे हो? तुम कहाँ औंधे हुए जाते हो?

आयत 35

“इनसे पूछिए कि है कोई तुम्हारे शरीकों में से जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई कर सके?”

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ

“आप कहिये कि अल्लाह ही है जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता है।”

قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ

“तो क्या जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करता है वह ज़्यादा मुस्तहिक़ है इसका कि उसकी पैरवी की जाए या वह जो खुद हिदायत नहीं पा सकता, इल्ला यह कि उसकी रहनुमाई की जाए?”

أَمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمْ لَا يَهْدِي إِلَّا أَنْ يَهْدِي

तमाम मख्लूक को हिदायत देने वाला अल्लाह है। चुनाँचे हिदायत व रहनुमाई के लिये सब उसी के सामने दस्ते सवाल दराज़ करते हैं। खुद नबी मुकर्रम ﷺ भी अल्लाह ही से यह दुआ माँगते थे {إِنِّي مِنَ الْمُسْتَغِيثِينَ}। तो भला वह जो हिदायत देता है उसकी बात मानी जानी चाहिये या उनकी जो खुद हिदायत के मोहताज हों?

“तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसे फ़ैसले करते हो!”

فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝

आयत 36

“और नहीं पैरवी कर रहे इनमें से अक्सर मगर गुमान की, और यह गुमान किसी भी दर्जे में (इंसान को) हक़ से मुस्तगना नहीं कर सकता। यक़ीनन अल्लाह जानता है जो कुछ ये कर रहे हैं।”

وَمَا يَتَّبِعْ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝

आयत 37

“और यह कुरान ऐसी शय नहीं है जिसको अल्लाह के सिवा (कहीं और) घड लिया गया हो”

وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَى مِنْ دُونِ اللَّهِ

यह कुरान किसी इंसान के हाथों तसनीफ़ (publish) की जाने वाली किताब नहीं है।

“बल्कि यह तो तस्दीक़ (करते हुए आया) है उसकी जो इसके सामने है और (इसमें तमाम) शरीअत की तफ़सील है, इसमें कोई शुबह नहीं है कि यह तमाम जहानों के रब की तरफ़ से है।”

وَلَكِنْ تَصْدِيقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

आयत 38

“क्या ये कहते हैं कि इसको पैगम्बर ने खुद घड लिया है?”

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ

ये लोग इस कुरान के बारे में कहते हैं कि यह मोहम्मद (ﷺ) की अपनी तसनीफ़ है। इन्होंने खुद ये कलाम मौजूं कर लिया है।

“आप (इनसे) कहिये कि ले आओ तुम भी एक सूरत इस जैसी और (इसके लिये) बुला लो जिसको बुला सकते हो अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो।”

قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتِطَعْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

यह चैलेंज सूरतुल बकरह में भी है जो कि मदनी है, जबकि मक्की सूरतों में तो इसे मुतअदिद बार दोहराया गया है। सूरह हूद में इस जैसी दस सूरतें बना कर ले आने का चैलेंज दिया गया है और यहाँ इस सूरत में यह चैलेंज गोया बरसबीले तनज़ज़ल आख़री दर्जे में पेश किया गया है कि चलो इस जैसी एक सूरत ही बना कर दिखा दो।

आयत 39

“(नहीं) बल्कि इन्होंने तकज़ीब की है उस चीज़ की जिसके इल्म का ये इहाता नहीं कर सके और अभी नहीं आई इनके पास इसकी तावीला”

بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعَلَمِهِ وَلَهِيَآ يَتَرَبَّاهُمْ تَأْوِيلُهُ

यानि ये लोग कुरान के उलूम का इदराक और इसके पैग़ाम का शऊर हासिल नहीं कर सके। इसके अलावा अज़ाब के बारे में इनको दी गई धमकियों का मिस्दाके खारज़ी भी अभी इन पर ज़ाहिर नहीं हुआ, इसलिये वह इस सब कुछ को महज़ डरावा और झूठ समझ रहे हैं। कुरान में इन लोगों को बार-बार धमकियाँ दी गई थीं कि अल्लाह का इन्कार करोगे तो उसकी पकड़ में आ जाओगे, उसकी तरफ़ से बहुत सख्त अज़ाब तुम पर आएगा। यह अज़ाबे मौऊद चूँकि ज़ाहिरी तौर पर उन पर नहीं आया, इसी लिये वह कुरान को भी झुठला रहे हैं।

“इसी तरह झुठलाया था उन लोगों ने भी जो इनसे पहले थे, तो देखो कैसा अंजाम हुआ ज़ालिमों का!”

كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٣٩﴾

आयात 40 से 52 तक

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٤٠﴾ وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ إِنِّي عَمِلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ أَنْتُمْ بَرِيءُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٤١﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَنْتَظِرُ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوا لَا يَبْصُرُونَ ﴿٤٢﴾ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَكِنَّ النَّاسَ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٣﴾ وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ كَانُ لَّمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٤٤﴾ وَإِنَّمَا نُنَبِّئُكَ بِبَعْضِ الذِّكْرِ نَعِدُهُمْ أَوْ نَتُوفِّيهِمْ فَاَلَيْسَ مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٥﴾ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٦﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٧﴾ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٤٨﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن آتَاكُمْ

عَذَابُهُ بَيَّاتًا أَوْ نَهَاتًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٠﴾ أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ امْنُنْ بِهِ الْاِنَّ وَقد كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ
﴿٥١﴾ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا اذْكُرُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾

आयत 40

“इनमें वह भी हैं जो इस पर ईमान ले आयेंगे और वह भी हैं जो ईमान नहीं लायेंगे, और आपका रब इन मुफ़सिदों से ख़ूब वाकिफ़ है।”

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ
وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٥٠﴾

आयत 41

“और अगर ये लोग आपको झुठला दें तो आप कहिये कि मेरे लिये मेरा अमल है और तुम्हारे लिये तुम्हारा अमल।”

وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ لِي عَمَلٍ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ

“तुम बरी हो मेरे अमल की ज़िम्मेदारी से और मैं बरी हूँ तुम्हारे आमाल की ज़िम्मेदारी से।”

أَنْتُمْ بَرِيءُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٥١﴾

ना मेरे अमल की कोई ज़िम्मेदारी तुम लोगों पर है और ना तुम्हारे किये का मैं ज़िम्मेदार हूँ।

आयत 42

“और इनमें ऐसे लोग भी हैं जो बड़ी तबज्जोह से सुनते हैं आप (की बातों) को।”

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ

“तो क्या आप बहरों को सुना सकते हैं चाहे वह अक्ल से काम ना लेते हों।”

أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ﴿٥٢﴾

ये लोग तो पहले से ही ना सुनने का तहिया (निश्चय) किये हुए हैं, इसलिये इनके कान हक़ की तरफ़ से बहरे हो चुके हैं। इनका आपकी बातों को सुनना सिर्फ़ दिखावे का सुनना है ताकि दूसरे लोगों को बता सकें कि हाँ जी हम तो मोहम्मद (ﷺ) की महफ़िल में भी जाते हैं, सारी बातें भी सुनते हैं मगर इनमें ऐसी कोई बात है ही नहीं जिसे माना जाए।

आयत 43

“और इनमें ऐसे भी हैं जो आपको देखते हैं।”

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَنْتَرُ إِلَيْكَ

“तो क्या आप अंधों को हिदायत देंगे ख़्वाह वह देखते ना हों।”

أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْى وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ﴿٥٣﴾

चुनाँचे जब इन लोगों की नीयत ही हिदायत हासिल करने की नहीं है, जब इनके दिल ही अंधे हो चुके हैं तो आपकी मजलिस में आना और आपकी सोहबत में बैठना, उनके लिये हरगिज़ मुफ़ीद नहीं हो सकता।

आयत 44

“यक़ीनन अल्लाह इंसानों पर कुछ भी जुल्म नहीं करता, बल्कि लोग खुद ही अपनी जानों पर जुल्म ढाते हैं।”

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَكِنَّ النَّاسَ

أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٥٤﴾

आयत 45

“और जिस दिन वह उन्हें जमा करेगा (तो वह महसूस करेंगे) जैसे नहीं रहे वह मगर दिन की एक घड़ी, वह एक-दूसरे को पहचान रहे होंगे।”

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ
الْيَوْمِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ

उन्हें दुनिया और आलम-ए-बरज़ख में गुज़रा हुआ वक़्त ऐसे महसूस होगा जैसे कि वह एक दिन का कुछ हिस्सा था।

“वह लोग बड़े ख़सारे का शिकार हुए जिन्होंने झुठला दिया अल्लाह की मुलाक़ात को और ना हुए वह हिदायत पाने वाले।”

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا
مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾

आगे अज़ाब की उस धमकी का ज़िक्र आ रहा है जिसके बारे में आयत 39 में फ़रमाया गया था {وَلَنُثَاقِبَهُمْ ثَائِيلَةً} कि इसकी तावील अभी उनके पास नहीं आई।

आयत 46

“और अगर हम दिखा दें आपको उसमें से कुछ (अज़ाब) जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं या (इससे पहले ही) हम आपको वफ़ात दे दें”

وَأَمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ

“पस इन्हें हमारी ही तरफ़ लौट कर आना है, फिर अल्लाह गवाह है उस पर जो वह कर रहे हैं।”

فَالْيَنَّا مَرَجَعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾

यानि आख़री मुहासबा तो इनका क़यामत के दिन होना ही है, मगर हो सकता है कि यहाँ दुनिया में भी सज़ा का कुछ हिस्सा इनके लिये मुख़तस कर दिया जाए। जैसा कि बाद में मुशरिकीने मक्का पर अज़ाब आया। उन पर आने वाले इस अज़ाब का अंदाज़ पहली क़ौमों के अज़ाब से मुख़तलिफ़ था। इस अज़ाब की पहली क़िस्त जंगे बदर में इनके सत्तर सरदारों के क़त्ल और ज़िल्लत आमेज़ शिकस्त की सूरत में सामने आई, जबकि दूसरी और आख़री क़िस्त 9 हिजरी में वारिद हुई जब इन्हें अल्टीमेटम दे दिया गया: (सूरह तौबा: 2) {فَسِيَّحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ.....} कि अब तुम्हारे लिये सिर्फ़ चंद माह की मोहलत है, इसमें ईमान ले आओ वरना क़त्ल कर दिए जाओगे। अहले मक्का के साथ अज़ाब का मामला पहली क़ौमों के मुक़ाबले में शायद इसलिये भी मुख़तलिफ़ रहा कि पहली क़ौमों की निस्बत इनके यहाँ ईमान लाने वालों की तादाद काफ़ी बेहतर रही। मसलन अगर हज़रत नूह अलै. की साढ़े नौ सौ साल की तब्लीग से अस्सी लोग ईमान लाए (मेरी राय में वह लोग अस्सी भी नहीं थे) तो यहाँ मक्का में हुज़ूर ﷺ की बारह साल की मेहनत के नतीजे में अहले ईमान की तादाद इससे दो गुना थी और इनमें हज़रत अबु बकर, हज़रत तल्हा, हज़रत जुबैर, हज़रत उस्मान, हज़रत अब्दुरहमान बिन औफ़, हज़रत उमर और हज़रत हम्ज़ा रज़ि. जैसे बड़े-बड़े लोग भी शामिल थे।

आयत 47

“और हर उम्मत के लिये एक रसूल (भेजा गया) है।”

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ

“फिर जब आया उनका रसूल तो उनके माबैन अद्ल के साथ फ़ैसला कर दिया गया और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया गया।”

فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ فَصَيِّبْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا

يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

इसकी वज़ाहत के लिये हज़रत नूह, हज़रत हूद, हज़रत सालेह, हज़रत शोएब, हज़रत लूत और हज़रत मूसा अलै. की क़ौमों के मामलात को ज़हन में रखिये।

आयत 48

“और वह कहते हैं कि कब यह (अज़ाब का) वादा पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो?”

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

आयत 49

“(ऐ नबी ﷺ! आप कह दीजिये कि मैं तो खुद अपनी जान के लिये भी कोई इख्तियार नहीं रखता, ना किसी ज़र्र का ना नफ़े का, सिवाय इसके जो अल्लाह चाहे।”

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ

“हर उम्मत के लिये एक वक़्त मुअय्यन है।”

لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ

जैसे हर उम्मत के लिये एक रसूल है, इसी तरह हर उम्मत के लिये उसकी अजल (मोहलत की मुद्दत) भी मुक़र्रर कर दी गई है। अल्लाह की मशियत और हिकमत के मुताबिक़ उनके लिये मुक़र्रर करदा वक़्त बहरहाल पूरा होकर रहता है।

“जब उनका वक़्त आ जाता है तो फिर ना तो वह उसको एक घड़ी मौअख़्खर कर सकते हैं और ना ही उसे पहले ला सकते हैं।”

إِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا

يَسْتَقْدِرُونَ ﴿٤٩﴾

आयत 50

“(ऐ नबी ﷺ! इनसे) कहिये क्या तुमने गौर किया कि अगर तुम्हारे ऊपर अल्लाह का अज़ाब (नागहाँ) आ धमके रात को या दिन के वक़्त, तो वह क्या शय है जिसके बल पर यह मुजरिम जल्दी मचा रहे हैं?”

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن آتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَآئَاتٍ أَوْ نَهَارًا مَّاذَا

يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْهَاجِرُ مَوْنٌ ﴿٥٠﴾

यानि यह जो तुम सीना तान कर कहते हो कि ले आओ अज़ाब! और फिर कहते हो कि आ क्यों नहीं जाता हम पर अज़ाब! और फिर इस्तहज़ाइया (मज़ाकिया) अंदाज़ में इस्तफ़सार (सवाल) करते हो कि यह अज़ाब का वादा कब पूरा होने जा रहा है? तो कभी तुम लोगों ने इस पहलु पर भी गौर किया है कि अगर वह अज़ाब किसी वक़्त अचानक तुम पर आ ही गया, रात की किसी घड़ी में या दिन के किसी लम्हे में, तो उससे हिफ़ाज़त के लिये तुमने क्या बंदोबस्त कर रखा है? आख़िर तुम लोग किस बल बूते पर अज़ाब को ललकार रहे हो? किस चीज़ के भरोसे पर तुम इस तरह ज़सरतें कर रहे हो?

आयत 51

“फिर क्या जब वह (अज़ाब) वाक़ेअ हो जाएगा तब तुम लोग इस पर ईमान लाओगे? (उस वक़्त कहा जाएगा) क्या अब (ईमान ला रहे हो)? और इसी की तो तुम जल्दी मचा रहे थे।”

أَتُمِّدُوا مَا وَفَع آمَنْتُمْ بِهِ إِلَّٰنَ وَقَدْ كُنتُمْ بِهِ

تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥١﴾

अज़ाब जब वाक़िअतन ज़ाहिर हो जाएगा तो उस वक़्त ईमान लाने का कोई फ़ायदा नहीं होगा।

आयत 52

“फिर कहा जाएगा इन ज़ालिमों से कि अब दाइमी अज़ाब का मज़ा चखो। तुम्हें बदला नहीं दिया जा रहा है मगर तुम्हारे अपने ही करतूतों का।”

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٣﴾

आयात 53 से 60 तक

وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقُّ هُوَ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٥٣﴾ وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ وَأَسْرُوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٥٤﴾ إِلَّا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾ هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٥٦﴾ يَأْتِيهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُمْ مَوْعِدَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾ قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٨﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِّن رِّزْقٍ فَجَعَلْتُم مِّنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ اللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ ﴿٥٩﴾ وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦٠﴾

आयत 53

“और (ऐ नबी ﷺ!) ये लोग आपसे पूछते हैं कि क्या ये वाकई हक है?”

وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقُّ هُوَ

जैसे कुरान बार-बार अपने मुखाल्फ़ीन से मुतजस्साना अंदाज़ में सवाल (searching questions) करता है, इसी तरह मुशरिकीन भी हुज़ूर ﷺ से searching अंदाज़ में सवाल करते थे। यहाँ उनका यह सवाल नक़ल किया गया है कि जो कुछ आप कह रहे हैं क्या वाकई यह सच है? क्या आपको खुद भी इसका पूरा-पूरा यक़ीन है?

“आप कह दीजिये कि हाँ मेरे रब की क़सम! यक़ीनन वह हक़ है, और तुम (अल्लाह को) आजिज़ नहीं कर सकते।”

قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٥٣﴾

इन अल्फ़ाज़ में बहुत ज़्यादा ताकीद और शिद्दत है।

आयत 54

“और अगर किसी गुनाहगार जान के पास ज़मीन की सारी दौलत भी हो तो वह उसे उस (अज़ाब) के बदले में दे डाले।”

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ

بِهِ

“और वह अपनी नदामत को छुपायेंगे जब वह देखेंगे अज़ाब को।”

وَأَسْرُوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ

“और उनके दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा।”

وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٥٤﴾

आयत 55

“आगाह हो जाओ! जो कुछ भी है आसमानों और ज़मीन में वह अल्लाह ही की मिलकियत है।”

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ

“आगाह हो जाओ! यक़ीनन अल्लाह का वादा हक़ है लेकिन इनकी अक्सरियत इल्म नहीं रखती।”

أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾

आयत 56

“वही है जो ज़िन्दा करता है और मारता है और उसी की तरफ़ तुम्हें लौट कर जाना है।”

هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٥٦﴾

अगली दो आयत अज़मते कुरान के ज़िम्न में एक बेश बहा खज़ाना और इफ़ादियत (उपयोगिता) के ऐतबार से निहायत जामेअ आतात हैं।

आयत 57

“ऐ लोगों! आ गई है तुम्हारे पास नसीहत तुम्हारे रब की तरफ़ से और तुम्हारे सीनों (के अमराज़) की शिफ़ा”

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَ تَكْمُمُ مَوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ
وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ

“और अहले ईमान के लिये हिदायत और (बहुत बड़ी) रहमत।”

وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾

इस आयत के अल्फ़ाज़ की तरतीब (मौएज़ा, शिफ़ा, हिदायत और रहमत) बहुत पुर हिकमत है। सूरह बक्रह की आयत 74 में इन्सान के दिल की सख्ती का ज़िक्र इस तरह किया गया है: {ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ...}। दरअसल दिल की सख्ती ही वह बुनियादी मर्ज़ है जिसके बाइस आला से आला कलाम भी किसी इन्सान पर बेअसर होकर रह जाता है: “मर्दे नादाँ पर कलामे नर्म व नाज़ुक बेअसर।” चुनाँचे कुबूले हिदायत के लिये सबसे पहले दिलों की सख्ती को दूर करना ज़रूरी है। जैसे बारिश से फ़ायदा उठाने के लिये ज़मीन को नर्म करना पड़ता है, सख्त ज़मीन बारिश से कुछ फ़ायदा नहीं उठा सकती, बारिश का पानी ऊपर ही ऊपर से बह जाता है, उसके अंदर ज़ब्र नहीं होता। इसी तरह अगर इन्सान का माअदा (पेट) ही ख़राब हो तो कोई दूसरी दवाई अपना असर नहीं दिखाती। लिहाज़ा इन्सान की किसी भी बीमारी के इलाज के लिये पहले उसके माअदे को दुरुस्त करना ज़रूरी है।

दिलों की सख्ती को दूर करने के लिये मौअस्सर तरीन नुस्खा वाअज़ व नसीहत (मौअज़ा) है। जब वाअज़ और नसीहत से दिलों में गुदाज़ पैदा होगा तो फिर कुरान उन पर दवाई की मानिन्द असर करके तकब्वुर, हसद, बुग़ज़, हुब्बे दुनिया वगैरह तमाम अमराज़ को दूर कर देगा। हुब्बे दुनिया में दौलत, औलाद, बीवी, शोहरत वगैरह की तमाम मोहब्बतें शामिल हैं। मुलाहेज़ा हो सूरह आले इमरान की आयत 14:

رُؤْيُ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ وَالْخَرْبِ

आयत ज़ेरे मुताअला में अल्फ़ाज़ की तरतीब पर गौर किया जाए तो यह हक़ीकत सामने आती है कि एक इन्सान के हक़ में कुरान सबसे पहले वाअज़ और नसीहत है, फिर तमाम अमराज़े क़ल्ब के लिये शिफ़ा और फिर हिदायत। क्योंकि जब दिल से बीमारी निकल जाएगी, दिल शिफ़ायाब होगा तब ही इंसान कुरान की हिदायत और रहनुमाई को अमलन इख्तियार करेगा, और जब इंसान ये सारे मराहिल तय करके कुरान की हिदायत के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी को ढाल लेगा तो फिर उसको ईनामे ख़ास से नवाज़ा जाएगा और वह है अल्लाह की खुसूसी रहमत। क्योंकि यह कुरान रब्बे रहमान की रहमानियत का मज़हरे अतम है: {عَلَّمَ الْقُرْآنَ} {الرَّحْمَنُ}।

आयत 58

“(ऐ नबी ﷺ! इनसे) कह दीजिये कि यह (कुरान) अल्लाह के फ़ज़ल और उसकी रहमत से (नाज़िल हुआ) है।”

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ

यह कुरान अल्लाह के फ़ज़ल और रहमत का मज़हर और बनी नौए इंसान पर उसका बहुत बड़ा अहसान है। यह सबसे बड़ी दौलत है जो अल्लाह तआला ने नौए इंसानी को अता की है।

“तो चाहिये कि लोग इस पर खुशियाँ मनाएँ!”

فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا

“फ़रह” के मायने हैं खुशी से फूले ना समाना, यानि खुशी के जज़्बे में हृदय से बढ़ जाना, इस लिहाज़ से यह जज़्बा शरीअत-ए-इस्लामी में क़ाबिले मज़म्मत है और यही वज़ह है कि यह लफ़्ज़ कुरान में ज़्यादातर मनफ़ी मफ़हूम में आया है। जैसे सूरह अल क़सस (आयत: 76) में क़ारून के ज़िक्र में ये अल्फ़ाज़ आए हैं: {إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ}। लेकिन यहाँ पर तो ऐलाने आम हो रहा है कि अगर “फ़रह” करना ही है तो दौलते कुरान पर करो! अगर तुम्हें इतराना ही है तो नेअमते कुरान पर इतराओ! और अगर ज़श्र ही मनाना है तो ज़श्रे कुरान मनाओ!

“वह कहीं बेहतर है उन चीज़ों से जो वह जमा करते हैं।”

هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٨﴾

ये माल व दौलते दुनिया, ये सामाने अराईश व ज़ेबाईश, ये आश्याए आसाईश, ये रंगा-रंग नेअमते, गर्ज़ इस दुनिया में इंसान अपने लिये जो कुछ भी इकठ्ठा करता है, उस सब कुछ से कहीं बेहतर कुरान की दौलत है।

इन दो आयत में कुरान की अहमियत व अज़मत के बयान में जो ताकीद और जलाल है उसकी क़दरदानी का तक्काज़ा है कि तमाम मुसलमान इस तस्सवुर को हर्ज़े जान बना लें, इन आयत को ज़बानी याद करें, अल्फ़ाज़ की तरतीब को मद्देनज़र रखते हुए इनसे इस्तेफ़ादा की कोशिश करें और कुरान की तालीम व तफ़हीम के ज़रिये से दिल को नर्म और गुदाज़ करने का सामान करें, ताकि इसके असरात दिल के अन्दर ज़ब्र होकर अपना रंग जमाएँ (चूँ बजां दर रफ्त जां दीगर शूद)। और इस तरह कुरान के ज़रिये अपनी दुनिया-ए-दिल व जान में इन्क़लाब बरपा करें, ताकि यह इनके लिये शिफ़ा, हिदायत और रहमत बन जाए। आमीन!

आयत 59

“इनसे कहिये कि तुमने कभी ग़ौर किया कि अल्लाह ने तुम्हारे लिये जो रिज़क़ उतारा है तुमने उसमे से (अज़ खुद) किसी को हाराम क़रार दे दिया और किसी को हलाल!”

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِنْ رِزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا

“इनसे पूछिये क्या अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया है या तुम अल्लाह पर इफ़तरा कर रहे हो?”

قُلْ اللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ ﴿٥٩﴾

सूरतुल अनआम में उन चीज़ों की तफ़सील बयान हुई है जिन्हें वह लोग अज़ खुद हाराम या हलाल क़रार दे लेते थे। सूरतुल मायदा में भी उनकी खुद साख़ता शरीअत का ज़िक्र है।

आयत 60

“और जो लोग अल्लाह से झूठी बातें मंसूब करते हैं, क़यामत के दिन के बारे में उनका क्या गुमान है?”

وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ

वह क्या खयाल रखते हैं कि उस दिन इस ज़ुर्म के बदले में उनके साथ कैसा सुलूक होगा?

“यक्रीनन अल्लाह तो इन्सानों के हक में बहुत फज़ल वाला है, लेकिन उनकी अक्सरियत शुक्र गुज़ार नहीं है।”

إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦٠﴾

आयात 61 से 70 तक

وَمَا تَكُونُ فِي شَأٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٦١﴾
 آلا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحْزَنُكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا هُوَ السَّابِقُ الْعَلِيمُ ﴿٦٥﴾ آلا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنْ فِي ذَلِكَ لَايَةٍ لِقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٧﴾ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ هُوَ الْغَنِيُّ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ إِنْ عِنْدَكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ بِهَذَا أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾ قُلْ إِنْ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾
 مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نَذِقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾

आयत 61

“और (ऐ नबी ﷺ) नहीं होते आप किसी भी कैफ़ियत में और नहीं पढ़ रहे होते आप कुरान में से कुछ और (ऐ मुसलमानों!) तुम नहीं कर रहे होते कोई भी (अच्छा) अमल”

وَمَا تَكُونُ فِي شَأٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ

“मगर यह कि हम तुम्हारे पास मौजूद होते हैं जब तुम उसमें मसरूफ़ होते हो।”

إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ

इस अंदाज़े तखातब (speech) में एक खास कैफ़ है। पहले वाहिद के सीगे (एकवचन) में हुज़ूर अकरम ﷺ से ख़िताब है और आप ﷺ को खुशख़बरी सुनाई जा रही है कि आप जिस कैफ़ियत में भी हों, कुरान पढ़ रहे हों या पढ़ कर सुना रहे हों, हम ब-ज़ाते खुद आपको देख रहे होते हैं, आपकी आवाज़ सुन रहे होते हैं। फिर इसी खुशख़बरी को जमा के सीगे (बहुवचन) में तमाम मुसलमानों के लिये आम कर दिया गया है कि तुम लोग जो भी भलाई कमाते हो, कुर्बानियाँ देते हो, ईसार (त्याग) करते हो, हम खुद उसे देख रहे होते हैं। हम तुम्हारे एक-एक अमल के गवाह और क़दरदान हैं। हमारे यहाँ अपने बन्दों के बारे में तगाफ़िल या नाक़दरी नहीं है।

“और नहीं गायब होती आपके रब से ज़मीन में एक ज़र्रा के बराबर भी कोई शय और ना आसमानों में, और ना ही इससे कमतर कोई शय और ना बड़ी, मगर यह कि वह एक रौशन किताब में दर्ज है।”

وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِّثْقَالٍ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي
كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٣١﴾

कोई ज़र्रा बराबर चीज़ या उससे छोटी या बड़ी आसमानों और ज़मीन में ऐसी नहीं है जो कभी रब्बे जुल जलाल की नज़रों से पोशीदा हो गई हो और वह एक रौशन किताब में दर्ज ना हो। यह रौशन किताब अल्लाह तआला का इल्मे क़दीम है।

आयत 62

“आगाह हो जाओ! अल्लाह के दोस्तों पर ना कोई खौफ़ है और ना वह गमगीन होंगे।”

إِلَّا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٢﴾

ये औलिया अल्लाह कौन लोग हैं? ये कोई अलैहदा नौअ (species) नहीं हैं, और ना ही इसके लिये कोई खास लिबास ज़ेब तन करने या कोई मख्सूस हुलिया बनाने की ज़रूरत है, बल्कि औलिया अल्लाह वह लोग हैं जो ईमाने हक़ीकी से बहरामंद हों, उनके दिलों में यक़ीन पैदा हो चुका हो और वह अल्लाह के फ़ज़लो करम से दर्जा-ए-“अहसान” पर फ़ाएज़ हो चुके हों, जिसका ज़िक्र “हदीसे जिब्राइल” में हुआ है: ((أَنَّ تَعْبُدَ اللَّهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَاتَّعِزَّ بِرَأْسِكَ))⁽¹⁾ अल्लाह तआला अपने इन खास बन्दों की जिस तरह पज़ीराई फ़रमाता है इसका अंदाज़ सूरतुल बक्ररह, आयत नम्बर 257 में इस तरह बयान हुआ है: {اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ} “अल्लाह वली है अहले ईमान का, उन्हें निकालता है अंधेरों से रोशनी की जानिबा।” आयत ज़ेरे नज़र में भी उन्हें खुशख़बरी सुनाई गई है कि ऐसे लोग खौफ़ और हुज़्न से बिल्कुल बेनियाज़ होंगे। बहरहाल इस सिलसिले में एक बहुत अहम नुक्ता लायक़-ए-तव्वजो है कि जो अल्लाह का दोस्त होगा उसके अंदर अल्लाह की गैरत व हमियत भी होगी। वह अल्लाह के दीन को पामाल होते देख कर तड़प उठेगा। वह अल्लाह के शाएर की बेहुरमती को कभी बर्दाश्त नहीं कर सकेगा। वह अल्लाह के दीन को ग़ालिब करने के लिये अपना तन-मन-धन कुर्बान कर देगा। गोया दुनियावी ज़िंदगी में ये मैयार और तर्ज़े अमल औलिया अल्लाह की पहचान है। अगली आयत में मज़ीद वज़ाहत फ़रमा दी गई कि ये औलिया अल्लाह कौन लोग हैं:

आयत 63

“वह लोग जो साहिबे ईमान हों और तक्रवा की रविश इख्तियार करें।”

الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٣٣﴾

और यह तक्रवा किस तरह अहले ईमान को दर्जा-ब-दर्जा बुलंद करता चला जाता है इसकी तफ़सील हम सूरतुल मायदा की इस आयत के ज़िमान में पढ़ चुके हैं: {إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَآمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوْا وَأَحْسَنُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ} (आयत 93)।

आयत 64

“उनके लिये दुनिया की ज़िन्दगी में भी बशारतें हैं और आख़िरत में भी।”

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ

इन बशारतों के बारे में हम सूरतुल तौबा की आयत नम्बर 52 में पढ़ चुके हैं: {قُلْ هَلْ تَرْضَوْنَ بِنَا إِلَّا أَحَدَى الْحُسَيْنَيْنِ} यानि हमारे लिये तो दो अच्छाईयों के सिवा किसी तीसरी चीज़ का तस्सवुर ही नहीं है, हमारे लिये तो बशारत ही बशारत है। अगर बिलफ़र्ज़ दुनिया में कोई तकलीफ़ आ भी जाए तो भी कोई ग़म नहीं, क्योंकि हमारे ऊपर जो भी तकलीफ़ आती है वह

हमारे रब ही की तरफ़ से आती है। जैसे फ़रमाया गया: {قُلْ لَّنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا} (सूरह तौबा:51) चुनाँचे इसमें घबराने की क्या बात है? वह हमारा दोस्त है, और दोस्त की तरफ़ से अगर कोई तकलीफ़ भी आ जाए तो सिर आँखों पर। हमें मालूम है कि इस तकलीफ़ में भी हमारे लिये खैर और भलाई ही होगी।

“अल्लाह की बातों में कोई तब्दीली नहीं हो सकती। यही तो है बहुत बड़ी कामयाबी।”

لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٣﴾

आयत 65

“और (ऐ नबी ﷺ) इनकी बातें आपको रंजीदा ना करें।”

وَلَا يَخْزُكَ قَوْلُهُمْ

“इज्जत कुल की कुल अल्लाह के इख्तियार में है, वह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है।”

إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٥﴾

आयत 66

“आगाह हो जाओ! अल्लाह ही के (ममलूक) हैं जो कोई भी आसमानों में हैं और ज़मीन में हैं।”

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ

“और ये लोग जो अल्लाह के अलावा (उसके) शरीकों को पुकार रहे हैं वह किसी चीज़ का इत्तेबाअ नहीं कर रहे।”

وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ

“वह तो जन्न व तखमीन ही के पीछे पड़े हैं और सिर्फ़ अटकल से काम लेते हैं।”

إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿١٦﴾

आयत 67

“वही है जिसने तुम्हारे लिये रात बनाई ताकि तुम उसमें सुकून हासिल करो और दिन को बना दिया रौशन।”

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا

रात को पुरसुकून बनाया ताकि रात के वक़्त आराम करो, और दिन को रौशन बनाया ताकि उसमें अपनी मआशी ज़िम्मेदारियाँ निभाओ और दूसरे काम-काज निपटाओ।

“यक़ीनन इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।”

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿١٧﴾

आयत 68

“इन्होंने कहा कि अल्लाह ने औलाद इख्तियार की है, (वह ऐसी बातों से) पाक है। वह बेनियाज़ है।”

قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ هُوَ الْغَنِيُّ

अल्लाह की शान इससे बहुत बुलंद है कि उसे औलाद की हाजत हो। यहाँ “गनी” का लफ़्ज़ इस लिहाज़ से बहुत अहम है। औलाद की तमन्ना आदमी इसलिये करता है कि उसका सहारा बने और मरने के बाद उसके ज़रिये दुनिया में उसका नाम

बाक्री रह जाए। अल्लाह तआला ऐसी हाजतों से पाक है। वह हमेशा बाक्री रहने वाला है, वह हर हाजत से गनी और बेनियाज़ है, उसे औलाद समेत किसी चीज़ की ज़रूरत और हाजत नहीं।

“उसी का है जो कुछ है आसमानों में और जो कुछ है ज़मीन में।”

لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ

“नहीं है तुम्हारे पास कोई सनद (दलील) इसके लिये।”

إِنْ عِنْدَكُمْ مِنْ سُلْطَنِ بِهَذَا

“क्या तुम अल्लाह की तरफ़ मंसूब कर रहे हो वह चीज़ जिसके मुतल्लिक तुम्हें इल्म ही नहीं!”

أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ٦٩

तुम्हारे पास कोई इल्मी सनद या अक्ली दलील इस बात के हक़ में नहीं है जो तुम अल्लाह की तरफ़ मंसूब कर रहे हो।

आयत 69

“(ऐ नबी ﷺ) आप कह दीजिये कि जो लोग अल्लाह की तरफ़ झूठ बातें मंसूब करते हैं वह कभी फ़लाह नहीं पायेंगे।”

قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ

٦٩

आयत 70

“दुनिया में (इनके लिये) बरतने की कुछ चीज़ें हैं, फिर हमारी ही तरफ़ इनका लौटना है”

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ

दुनिया की चंद रोज़ा ज़िंदगी का फायदा उठाने के लिये इन्हें कुछ साज़ो-सामान दे दिया गया है, फिर हमारी ही तरफ़ इनकी वापसी होगी।

“फिर हम इन्हें मज़ा चखाएंगे बहुत सख्त अज़ाब का, उस कुफ़्र की वजह से जो वह करते रहे हैं।”

ثُمَّ نَذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ

٧٠

आयात 71 से 74 तक

وَأَنذَرْتَهُمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي وَتَذِكْرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُونِ ٧١ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجِرْتُمْ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَأَمِزْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ٧٢ فَكَذَّبُوهُ فَتَبَّيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلْفَ وَاعْرِضْنا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ٧٣ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَبَاءُواهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ كَذَلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ٧٤

अब अम्बिया रसूल के बारे में दो रूकूअ आ रहे हैं, जिनका आगाज़े सूरत में ज़िक्र हुआ था कि इनमें पहले हज़रत नूह अलै. का ज़िक्र बहुत इख्तेसार (संक्षेप) के साथ (आधे रूकूअ में) है बाद में हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र क़दरे तफ़सील से (डेढ़ रूकूअ में) आया है। दरमियान में सिर्फ़ हवाला दिया गया है कि हमने मुख्तलिफ़ क़ौमों की तरफ़ रसूलों को भेजा, इस सिलसिले में किसी रसूल का नाम नहीं लिया गया।

आयत 71

“और इनको सुनाइये नूह अलै. की ख़बर।”

وَأُنلِّ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ

“जब उसने कहा अपनी क़ौम से कि ऐ मेरी क़ौम के लोगों! अगर तुम पर बड़ा भारी गुज़र रहा है मेरा खड़ा होना और अल्लाह की आयात के साथ नसीहत करना”

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَقَوْمِ إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي
وَتَذَكِيرِي بِآيَاتِ اللَّهِ

मेरा दावते हक़ के साथ खड़ा होना और तब्लीग़ व तज़कीर का मेरा ये अमल अगर तुम पर बहुत शाक़ गुज़र रहा है कि तुम मेरा मज़ाक़ उड़ाते हो और मुझ पर आवाज़े कसते हो तो मुझे तुम्हारी मुख़ालफ़त की कोई परवाह नहीं।

“तो मैंने बस अल्लाह पर तवक्कुल कर लिया है, पस तुम जमा कर लो अपने सारे ज़राए और अपने शरीकों को (भी बुला लो)”

فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ

“फिर तुम पर तुम्हारा मामला किसी इश्तेबाह (error) में ना रह जाए, फिर जो फैसला मेरे बारे में करना है कर गुज़रो और मुझे कोई मोहलत ना दो।”

ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا
تُنْظِرُونِ ④

इस तर्ज़े तखातब से अंदाज़ा हो रहा है कि हज़रत नूह अलै. का दिल अपनी क़ौम के रवैये की वजह से किस क़दर दुखा हुआ था, और ऐसा होना बिल्कुल फ़ितरी अमल था। अल्लाह के उस बन्दे ने साढ़े नौ सौ साल तक अपनी क़ौम को समझाने और नसीहत करने में दिन-रात एक कर दिया था, अपना आराम व सुकून तक कुर्बान कर दिया था, मगर वह क़ौम थी कि टस से मस नहीं हुई थी। बहरहाल इन अल्फ़ाज़ में अल्लाह के रसूल की तरफ़ से एक आखरी बात चैलेन्ज के अंदाज़ में कही जा रही है कि तुम लोग अपनी सारी कुव्वतें मुजतमा कर लो, तमाम वसाइल इकट्ठे कर लो और फिर मेरे साथ जो कर सकते हो कर गुज़रो!

आयत 72

“फिर अगर तुम (इससे) ऐराज़ करो”

فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ

“तो मैंने तुम लोगों से (कभी) कोई अज़्र तो नहीं माँगा।”

فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ

यानि फिर अगर तुम इस चैलेंज का सामना ना कर सको और मेरे खिलाफ़ आखरी अक़दाम करने का हौसला भी ना कर पाओ तो फिर ज़रा ठंडे दिमाग से सोचो तो सही कि मैं पिछले साढ़े नौ सौ साल से तुम्हें राहे रास्त पर लाने की जो जद्दो-जहद कर रहा हूँ उसके एवज़ मैंने तुम लोगों से कोई मुआवज़ा, कोई उजरत, कोई तारीफ़ व तौसीफ़, कोई शाबाश, अलगज़र्ज़ कुछ भी तलब नहीं किया। तो क्या मेरे इस तर्ज़े अमल से तुम लोगों को इतनी सी बात भी समझ में नहीं आती कि इसमें मेरा कोई ज़ाती मफ़ाद नहीं है? मालूम होता है कि वह लोग हज़रत नूह अलै. का चैलेंज कुबूल करके उनके खिलाफ़ अक़दाम करने से गुरेज़ाँ (अनिच्छुक) थे। उन्हें डर था कि अगर हमने इन्हें क़त्ल कर दिया तो हम पर कोई बड़ी मुसीबत नाज़िल हो जाएगी।

“मेरा अज़्र तो अल्लाह ही के ज़िम्मे है और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं उसके फ़रमावरदार बन्दों में से रहूँ।”

إِنْ أَجْرِي إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٤٧﴾

आयत 73

“तो इन्होंने (फिर भी) झुठला दिया उसको, तो हमने निजात दे दी उसको और जो भी उसके साथ थे कश्ती में और उनको बना दिया जानशीन”

فَكَذَّبُوهُ فَتَبَّيْنَاهُ وَمَنْ مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلِيفَ

उन्ही लोगों को हमने ज़मीन में खिलाफ़त अता की।

“और ग़र्क़ कर दिया हमने उन लोगों को जिन्होंने हमारी आयात की तकज़ीब की थी, तो देखो कैसा अंजाम हुआ उन लोगों का जिन्हें ख़बरदार कर दिया गया था!”

وَأَعْرِضْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٤٨﴾

आयत 74

“फिर हमने भेजा उनके बाद बहुत से रसूलों को उनकी (अपनी-अपनी) क़ौमों की तरफ़, तो वह (सबके सब) आए उनके पास रौशन दलीलें लेकर”

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رُسُلًا إِلَى قَوْمِهِمْ فَجَاءُوهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ

“लेकिन वह (सारी रौशन दलीलें देखने के बावजूद भी) उस चीज़ पर ईमान लाने वाले ना बने जिसका पहले इन्कार कर चुके थे। इसी तरह हम मुहर कर दिया करते हैं हृद से तज़ावुज़ करने वालों के दिलों पर।”

فَمَا كَانُوا لِلْيَوْمِ مُؤْمِرِينَ بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ كَذَلِكَ نَطْبَعُ عَلَى قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ﴿٤٩﴾

आयात 75 से 82 तक

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَى وَهَارُونَ إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُجْرِمِينَ ﴿٥٠﴾ فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَذَا السِّحْرُ مُبِينٌ ﴿٥١﴾ قَالَ مُوسَى اتَّقُوا لَوْنِ الْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ أَسِحْرُ هَذَا وَلَا يُفْلِحُ السِّحْرُونَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَلْفِتَنَّا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا وَتَكُونَ لَكُمُ الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمْ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٥٣﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سِحْرِ عَلِيمٍ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّا جَاءَ السِّحْرُ قَالَ لَهُمْ مُوسَى الْقَوَامَ أَنْتُمْ مُلْفُونَ ﴿٥٥﴾ فَلَمَّا أَلْقَوْا قَالَ مُوسَى مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿٥٦﴾ وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٧﴾

आम तौर पर कुरान हकीम में अम्बिया अर्रसुल के ज़िम्न में छः रसूलों का तज़क़िरा बार-बार आया है, लेकिन यहाँ इख़्तसार (संक्षेप) के साथ हज़रत नूह अलै. का सिर्फ़ तीन आयात में ज़िक्र किया गया है। फिर इस एक आयत (74) में बाक़ी

तमाम रसूलों का नाम लिए बगैर सिर्फ हवाला दे दिया गया है और इसके बाद हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र कदरे तफ़सील से हुआ है।

आयत 75

“फिर भेजा हमने इनके बाद मूसा और हारून (अलै.) को फिरऔन और उसके सरदारों की जानिब अपनी निशानियों के साथ”

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَى وَهَارُونَ إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا

“तो उन्होंने तकब्बुर किया और वह थे मुजरिम लोग।”

فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٧٥﴾

आयत 76

“तो जब उनके पास हक़ आया हमारी तरफ़ से तो उन्होंने कहा यह तो खुला जादू है।”

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧٦﴾

आयत 77

“मूसा ने कहा कि क्या तुम लोग हक़ के बारे में यह कह रहे हो जबकि वह तुम्हारे पास आ पहुँचा है।”

قَالَ مُوسَى أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ

“क्या यह जादू है? और जादूगर तो कभी फ़लाह नहीं पाया करते।”

أَسِحْرٌ هَذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّحَرُونَ ﴿٧٧﴾

आयत 78

“उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिये आए हो कि हमें फेर दो उन तरीक़ों से जिन पर पाया हमने अपने आबा व अजदाद को”

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَلْفِتَنَّا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا

“और तुम दोनों की बड़ाई क़ायम हो जाए ज़मीन में? और हम हरगिज़ तुम दोनों की बात मानने वाले नहीं हैं।”

وَتَكُونُ لَكُمْ الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمْ

بِمُؤْمِنِينَ ﴿٧٨﴾

यानि तुम दोनों (हज़रत मूसा और हारून अलै.) यहाँ अपनी बादशाही क़ायम करना चाहते हो। इस अंदेशे की वजह यह थी कि हज़रत मूसा अलै. अहले मिस्र को बंदगी-ए-रब की जो दावत दे रहे थे उससे वह मुशरिकाना निज़ाम ख़तरे में था जिस पर फिरऔन की बादशाही, उसके सरदारों की सरदारी और मज़हबी पेशवाओं की पेशवाई क़ायम थी।

आयत 79

“और फिरऔन ने कहा कि ले आओ मेरे पास तमाम माहिर जादूगरों को।”

وَقَالَ فِرْعَوْنُ أَتُتُونِي بِكُلِّ سِحْرٍ عَلِيمٍ ﴿٧٩﴾

आयत 80

“और जब वह जादूगर आ गए तो मूसा ने उनसे फ़रमाया कि डालो जो तुम डालने वाले हो।”

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمُ مُوسَى الْقُوا مَا أَنْتُمْ مُلْقُونَ ﴿٨٠﴾

आयत 81

“और जब उन्होंने डाल दिया तो मूसा ने फ़रमाया कि तुम लोग जो कुछ लाए हो ये जादू है।”

فَلَمَّا الْقُوا قَالَ مُوسَى مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ

यानि जादू वह ना था जो मैंने दिखाया था, बल्कि जादू यह है जो तुम दिखा रहे हो।

“यक़ीनन अल्लाह इसे अभी बातिल कर देगा। बेशक अल्लाह मुफ़सिदों के अमल को कामयाब नहीं करता।”

إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ

(८१)

अल्लाह तआला अभी तुम्हारी शअब्दाबाज़ी (magic trick) का बातिल होना साबित कर देगा। इसे नेस्तोनाबूद कर देगा, मन्ज़ूर कर देगा। अल्लाह तआला फ़साद बरपा करने वालों के अमल को नतीजा खेज़ नहीं होने देता।

आयत 82

“और अल्लाह तो हक़ को हक़ साबित करता है अपने कलिमात से, ख्वाह यह मुजरिमों को कितना ही नागवार हो।”

وَيُحَقِّقُ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٨٢﴾

आयात 83 से 93 तक

فَمَا أَمَنَ لِمُوسَى إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِنْ قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ مِنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ أَنْ يَفْتِنَهُمْ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٨٣﴾ وَقَالَ مُوسَى يَقَوْمِ إِن كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِن كُنْتُمْ مُسْلِمِينَ ﴿٨٤﴾ فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٨٥﴾ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾ وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى وَأَخِيهِ أَنْ تَبَوَّآ الْقَوْمَ كَمَا يَمْرُؤَانِ أَجْعَلُوا بَيْنَكُمْ قُبُلَةً وَاقِيهِمَا الصَّلَاةَ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٧﴾ وَقَالَ مُوسَى رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَئَهُ زِينَةً وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَى أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّى يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٨٨﴾ قَالَ قَدْ أُجِيبَتْ دَعْوَتُكُمَا فَاسْتَقْبِمَا وَلَا تَتَّبِعَنَّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾ وَجَوْرَنَا بِبَنِي إِسْرَآءِيلَ الْبَحْرَ فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنَ وَجُنُودُهُ بَغْيًا وَعَدُوًّا حَتَّى إِذَا أَدْرَكَهُ الْعَرْقُ قَالَ أَمَنْتُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا الَّذِي آمَنْتُ بِهِ بَنُو إِسْرَآءِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩٠﴾ أَلَنْ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلَ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ﴿٩١﴾ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلَقَكَ آيَةً وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا لَغَفْلُونَ ﴿٩٢﴾ وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَآءِيلَ مَبُوءًا صِدْقٍ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ فَمَا اخْتَلَفُوا حَتَّى جَاءَهُمُ الْعِلْمُ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٩٣﴾

आयत 83

“तो कोई ईमान नहीं लाया मूसा पर मगर चंद नौजवान उसकी क्रौम में से”

فَمَا آمَنَ لِمُوسَى إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهِ

“डरते हुए फिरऔन और अपने सरदारों से कि वह उनको मुसीबत में मुब्तला ना कर दें।”

عَلَى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ أَن يَفْتِنَهُمْ

उस वक़्त मिस्र पर क्रिब्ती क्रौम हुक्मरान थी, जिसे कुरान ने “आले फिरऔन” कहा है और इसराइली उनके महकूम (वश में) थे। हज़रत मूसा अलै. अपनी क्रौम बनी इसराइल की आज़ादी के अलम्बरदार थे, लेकिन इसके बावजूद बनी इसराइल में से भी सिर्फ़ चंद नौजवान लड़कों ने ही आपकी दावत पर लब्बैक कहा था। दरअसल गुलाम होने की वजह से वह लोग फिरऔन और उसके सरदारों के मज़ालिम से खौफ़ज़दा थे। आम तौर पर हर महकूम क्रौम के साथ इसी तरह होता है कि उसके कुछ लोग अपनी क्रौम से ग़दारी करके हुक्मरानों से मिल जाते हैं और हुक्मरान उन्हें मराआत (प्रोत्साहन) और खिताबात से नवाज़ कर उनकी वफ़ादारियाँ ख़रीद लेते हैं। चुनाँचे बनी इसराइल में से भी कुछ लोग फिरऔन के एजेंट बन चुके थे। इसकी सबसे बड़ी मिसाल क़ारून की है। वह हज़रत मूसा अलै. की क्रौम में से था, मगर फिरऔन का दरबारी और उसका एजेंट था। यही वजह थी कि वह हज़रत मूसा अलै. के ख़िलाफ़ साज़िशें करता रहता था (इसका तफ़्सीली ज़िक्र सूरतुल क़सस में है)। बहरहाल बनी इसराइल के आम लोग ऐसे मुखबिरों के डर से हज़रत मूसा अलै. के क़रीब होने से गुरेज़ करते थे। नौजवान चूँकि बाहिम्मत और पुरजोश होते हैं, इसलिये वह इस तरह की इन्क़लाबी आवाज़ पर लब्बैक कहने का ख़तरा मोल ले लेते हैं, जबकि इसी क्रौम के अधेड़ उम्र लोग कम हिम्मती और मसलहतों का शिकार होते हैं। यह पूरा फ़लसफ़ा इस आयत में मौजूद है। इन आयात के नुज़ूल के वक़्त अहले मक्का में से भी मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ का साथ देने के लिये जो लोग आगे बढ़ रहे थे वह चंद बाहिम्मत नौजवान ही थे, ना कि मसलहत कोश बूढ़े।

“और यक़ीनन फिरऔन ज़मीन में बहुत सरकशी कर रहा था, और वह यक़ीनन हद से बढ़ जाने वालों में से था।”

وَأَنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّهُ لَمِنَ

الْمُسْرِفِينَ ﴿٨٣﴾

आयत 84

“और मूसा ने कहा कि ऐ मेरी क्रौम के लोगों! अगर तुम अल्लाह पर ईमान ले आए हो तो अब उसी पर तवक्कुल भी करो अगर तुम वाक़िअतन फ़रमाबरदार बन गए हो।”

وَقَالَ مُوسَى يُقَوْمُ إِن كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللّهِ فَعَلَيْهِ

تَوَكَّلُوا إِن كُنْتُمْ مُّسْلِمِينَ ﴿٨٤﴾

आयत 85

“तो उन्होंने कहा कि हमने अल्लाह पर तवक्कुल किया। ऐ हमारे रब! तू हमें इन ज़ालिमों के लिये तख़्ता-ए-मशक़ ना बना दे।”

فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ

الظَّالِمِينَ ﴿٨٥﴾

अल्लाह पर तवक्कुल करते हुए हम अपना मामला उसी के हवाले करते हैं। परवरदिगार! अब ऐसा ना हो कि हमारे ज़रिये से तू इनको आज़माए। जैसे अबु जहल अगर आले यासिर पर ज़ुल्म ढहाता था तो अल्लाह के यहाँ यह उसकी भी आज़माइश हो रही थी, लेकिन इस आज़माइश में तख़्ता-ए-मशक़ हज़रत यासिर और हज़रत सुमैय्या रज़ि. बन रहे थे।

आयत 86

“और हमें अपनी रहमत से इस काफ़िर क्रौम से निजात अता फ़रमा।”

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾

आयत 87

“और हमने वही की मूसा और उसके भाई (हारून) को कि तुम अपनी क्रौम के लिये मिस्र में कुछ घर मुअय्यन कर लो”

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَنْ تَبَوُّوا الْقَوْمَ كَمَا مِمَصَّرَ
بُيُوتًا

इन घरों में जमा होकर तुम लोग अल्लाह की इबादत किया करो। इसी तरह का इंतेज़ाम हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने भी अपनी दावत के इब्तदाई ज़माने में किया था जब आप صلی اللہ علیہ وسلم ने दारे अरक़म को दावती और तन्ज़ीमी सरगरमियों के लिये मुख़्तस (allocated) फ़रमाया था।

“और बनाओ अपने घरों को क़िब्ला रुख”

وَأَجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً

फ़िरऔन के डर से वह लोग मस्जिद तो बना नहीं सकते थे, इसलिये उन्हें हुक्म दिया गया कि अपने घरों को तामीर ही क़िब्ला रुख करो, ताकि वहाँ तुम नमाज़ें पढ़ा करो। इससे यह भी मालूम होता है कि हज़रत मूसा अलै. के ज़माने में भी क़िब्ला मुअय्यन था जबकि बैतुल मक़दस तो अभी बना ही नहीं था। बैतुल मक़दस तो हज़रत मूसा अलै. के ज़माने से एक हज़ार साल बाद हज़रत सुलेमान अलै. ने तामीर फ़रमाया था। चुनाँचे हज़रत मूसा अलै. और आपकी क्रौम का क़िब्ला यही बैतुल्लाह था। तौरात में उनकी क़ुरबान गाहों के खैमों के बारे में तफ़सील मिलती है कि यह खैमे इस तरह नसब (installed) किये जाते थे कि जब कोई शख्स कुर्बानी पेश करता था तो उसका रुख सीधा क़िब्ले की तरफ़ होता था।

“और नमाज़ कायम रखो, और अहले ईमान को बशारत दे दो।”

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٧﴾

आयत 88

“और मूसा ने अर्ज़ किया कि ऐ हमारे परवरदिगार! तूने फ़िरऔन और उसके सरदारों को सामाने ज़ेव व ज़ीनत और अमवाल अता कर दिये हैं दुनिया की ज़िंदगी में”

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَآئِهِ زِينَةً
وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

“परवरदिगार! इसलिये कि वह लोगों को गुमराह करे तेरे रास्ते से!”

رَبَّنَا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِكَ

इनके पास ताक़त है, इक़तदार है, इख़्तियार है, दौलत है, जाह व हश्म है। लोग उनके रौब व दबदबे के खौफ़ और माल व दौलत के लालच से गुमराह हो रहे हैं। परवरदिगार! क्या तूने उन्हें यह सब कुछ इसलिये दे रखा है कि वह तेरे बन्दों को तेरे सीधे राते से गुमराह करें?

“ऐ हमारे रब! इनके अमवाल को बरबाद कर दे और इनके दिलों में सख्ती पैदा कर दे”

رَبَّنَا أَطْمِسْ عَلَىٰ أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ

“कि ये ईमान ना लाये, जब तक कि ये खुल्लम-खुल्ला देख ना लें अज़ाबे अलीम को।”

فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّىٰ يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٨٨﴾

और जब वह अज़ाब को देख लेंगे तो फिर इनका ईमान इन्हें कुछ फ़ायदा नहीं देगा, क्योंकि उस वक़्त का ईमान अल्लाह के यहाँ मौअतबर नहीं है। यह हज़रत मूसा अलै. की आले फ़िरऔन से बेज़ारी की आख़री हद है। अगरचे नबी एक-एक फ़र्द के लिये ईमान का ख़्वाहिशमंद होता है, मगर फ़िरऔन और उसके सरदार अहले ईमान को सताने और अज़ीयतें देने में इस हद तक आगे जा चुके थे कि हज़रत मूसा अलै. खुद अल्लाह तआला से दुआ माँग रहे हैं कि ऐ अल्लाह! अब इन लोगों के दिलों को सख़्त कर दे, इनके दिलों पर मुहर लगा दे, ताकि तेरा अज़ाब आने तक इन्हें ईमान नसीब ही ना हो। इसलिये कि जो कुछ इन्होंने अल्लाह और अहले ईमान की दुश्मनी में किया है उसकी सज़ा इन्हें मिल जाए।

आयत 89

“अल्लाह ने फ़रमाया कि (ठीक है) तुम दोनों की दुआ कुबूल कर ली गई,
अब तुम दोनों भी कायम रहो”

قَالَ قَدْ أُجِيبَتْ دَعْوُتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا

ऐसा ना हो कि वक़्त आने पर तुम्हारा दिल पसीज जाए और फिर दुआ करने लगो कि ऐ अल्लाह अब इनको माफ़ फ़रमा दे!

“और उन लोगों के रास्ते की पैरवी मत करना जो इल्म नहीं रखते।”

وَلَا تَتَّبِعَنَّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

आयत 90

“और हमने बनी इसराइल को पार उतार दिया समंदर (या दरिया) के”

وَجُوزْنَا بِبَنِي إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ

“फिर उनका पीछा किया फ़िरऔन और उसके लश्करों ने सरकशी और ज़्यादती के गर्ज से।”

فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ بَغْيًا وَعَدُوًّا

“यहाँ तक कि जब पा लिया उसे गर्क ने”

حَتَّىٰ إِذَا أَذْرَكَهُ الْغَرَقُ

यानि जब फ़िरऔन गर्क होने लगा तो:

“कहने लगा कि मैं ईमान लाया कि कोई मअबूद नहीं सिवाय उसके जिस पर बनी इसराइल ईमान लाए हैं, और मैं)उसके (फ़रमा बरदारों में से हूँ।”

قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهُ لَا اِلَهَ اِلَّا الَّذِي اٰمَنْتُ بِهِ بَنُو

إِسْرَءِيلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩٠﴾

आयत 91

“क्या अब (तू ईमान ला रहा है)? हालाँकि इससे पहले तू नाफ़रमानी करता रहा है और तू फ़साद बरपा करने वालों में से था।”

أَلَمْ تَكُنْ مِنَ الْمُنْكَرِينَ ﴿٩١﴾

आयत 92

“तो आज हम तुम्हारे बदन को बचायेंगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिये एक निशानी बना रहे।”

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلَقَكَ آيَةً

यानि तुम्हारे जिस्म तो महफूज़ रखा जाएगा, इसको गलने-सड़ने नहीं दिया जाएगा ताकि बाद में आने वाले इसे देख कर इबरत हासिल कर सकें। चुनाँचे गर्क होने के कुछ अरसे बाद फ़िरऔन की लाश किनारे पर पाई गई थी, सिर्फ़ उसके नाक

को किसी मछली वगैरह ने काटा था, बाक़ी लाश सही सलामत थी और आज तक काहेरा के अजाएब घर (म्यूजियम) में मौजूद है।

“और यक़ीनन बहुत से लोग हमारी आयात से ग़फलत ही बरतते रहते हैं।”

وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا لَغَفُلُونَ ﴿٩٣﴾

आयत 93

“और हमने बनी इसराइल को बहुत ही उम्दा जगह फ़राहम कर दी और हमने उन्हें पाकीज़ा रोज़ी दी।”

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مَبَوءًا صَدِيقٍ وَرَزَقْنَاهُمْ
مِّنَ الطَّيِّبَاتِ

“फिर उन्होंने इख़्तलाफ़ नहीं किया यहाँ तक कि उनके पास इल्म आ गया।”

فَمَا اخْتَلَفُوا حَتَّى جَاءَهُمُ الْعِلْمُ

यानि उन्होंने उस वक़्त इख़्तलाफ़ किया और तफ़रक़े बरपा किये जबकि उनके पास इल्म आ चुका था। उन्होंने ऐसा नावाक़फ़ियत की बुनियाद पर मजबूरन नहीं किया था, बल्कि ये सब कुछ उनके अपने नफ़्स की शरारतों का नतीजा था।

“यक़ीनन आपका रब फ़ैसला करेगा उनके माबैन क़यामत के दिन, जिन चीज़ों में वह इख़्तलाफ़ करते रहे थे।”

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ

يَخْتَلِفُونَ ﴿٩٣﴾

आयत 94 से 103 तक

فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِّمَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْأَلِ الَّذِينَ يَقْرَأُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٩٤﴾ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَتَكُونُوا مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٩٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٦﴾ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٧﴾ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةً أَمْنَتْ فَنَفَعَهَا إِيمَانُهَا إِلَّا قَوْمٌ يُونُسُ لَهَا أَمْنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٩٨﴾ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ فِي الْأَرْضِ كُلَّهُمْ جَمِيعًا أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتَّى يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٩٩﴾ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَوْمَنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَجْعَلُ الرَّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٠﴾ قُلِ انْظُرُوا مَاذَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا تُغْنِي الْآيَاتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠١﴾ فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ قُلْ فَانْظُرُوا إِلَيَّ مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا نَجِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾

आयत 94

“फिर अगर आपको कोई शक़ है उस चीज़ के बारे में जो हमने आप पर नाज़िल की है”

فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِّمَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ

यहाँ खिताब बज़ाहिर मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ से है, लेकिन इस बात का तो क़तअन कोई इम्कान नहीं कि आप ﷺ को इसमें कोई शक होता, लिहाज़ा असल में रुए सुखन अहले मक्का की तरफ़ है। बाज़ अवक़ात जिससे बात करना मक़सूद होता है उसके रवैय्ये की वजह से उससे इस क़दर नफ़रत हो जाती है कि उसे बराहे रास्त मुखातिब करना मुनासिब नहीं समझा जाता। ऐसी सूरत में किसी दूसरे शख्स से बात की जाती है ताकि असल मुखातिब बिलवास्ता तौर पर उसे सुन ले। चुनाँचे इसका मतलब यही है कि ऐ मुशरिकीने मक्का! अगर तुम लोगों को इस किताब के बारे में कोई शक है जो हमने अपने रसूल ﷺ पर नाज़िल की है:

“तो पूछ लीजिये उन लोगों से जिनको किताब दी गई थी आप से पहले।”

فَسَلِّ الَّذِينَ يَفْرُغُونَ الْكِتَابِ مِنْ قَبْلِكَ

“(ऐ नबी ﷺ!) आपके पास हक़ आया है आपके रब की तरफ़ से, तो हरगिज़ ना हो जाएँ आप शक करने वालों में से।”

لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ

الْمُتَرَدِّينَ ﴿٩٥﴾

यह उसी अंदाज़े तखातब का तसल्लुल है कि हुज़ूर ﷺ को मुखातिब करके मुशरिकीने मक्का को सुनाया जा रहा है।

आयत 95

“और मत हो जाना उन लोगों में से जिन्होंने अल्लाह की आयात को झुठलाया, वरना तुम हो जाओगे ख़सारा पाने वालों में से।”

وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَتَكُونُوا مِنَ

الْخَاسِرِينَ ﴿٩٦﴾

आयत 96

“यक़ीनन जिन लोगों पर तेरे रब की बात साबित हो चुकी है वह ईमान नहीं लायेंगे।”

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ

﴿٩٧﴾

जो लोग अपनी ज़िद और हठधर्मी की वजह से क़ानूने खुदावंदी की ज़द में आ चुके हैं और उनके दिलों पर आखरी मोहर लग चुकी है, अब ऐसे लोगों को ईमान नसीब नहीं होगा।

आयत 97

“और चाहे उनके पास सारी ही निशानियाँ आ जाएँ (अब वह ईमान नहीं लाएंगे) जब तक कि अज़ाबे अलीम को देख ना लें।”

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٩٨﴾

जैसा कि फ़िरऔन का मामला हुआ कि जब गर्क होने लगा तब ईमान लाया।

आयत 98

“तो क्यों ना हुई कोई बस्ती ऐसी जो ईमान लाती और उसे उसका ईमान नफ़ा पहुँचाता सिवाय क़ौम-ए-युनुस के?”

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ آمَنَتْ فَنَفَعَهَا إِيمَانُهَا إِلَّا قَوْمَ

يُؤُسُ

हज़रत युनुस अलै. नैनवा की तरफ़ मबऊस हुए थे। आपकी दावत के मुक़ाबले में आपकी क़ौम इन्कार पर अड़ी रही। जब आखरी हुज़त के बाद उन लोगों पर अज़ाब का फ़ैसला हो गया तो हज़रत युनुस अलै. हमियते दीनी के जोश में उन्हें छोड़ कर चले गए और जाते-जाते उन्हें यह ख़बर दे गए कि अब तीन दिन के अंदर-अंदर तुम पर अज़ाब आ जाएगा, जबकि

अल्लाह की तरफ़ से आपको अपनी क़ौम को छोड़ कर जाने की अभी बाज़ाबता (officially) तौर पर इजाज़त नहीं दी गई थी। अल्लाह तआला की सुन्नत यह रही है कि ऐसे मौक़ों पर रसूल अपनी मरज़ी से अपनी बस्ती को नहीं छोड़ सकता जब तक कि अल्लाह तआला की तरफ़ से बाक़ायदा हिजरत का हुक्म ना आ जाए (नबी का मामला इस तरह से नहीं होता)। मोहम्मद रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم की मिसाल हमारे सामने है कि आप صلی اللہ علیہ وسلم ने मुसलमानों को मदीना हिजरत करने का हुक्म दे दिया था मगर आप صلی اللہ علیہ وسلم ने खुद उस वक़्त तक हिजरत नहीं फ़रमाई जब तक आपको अल्लाह तआला की तरफ़ से बाज़ाबता तौर पर इसकी इजाज़त नहीं मिल गई थी। सीरत की किताबों में यहाँ तक तफ़सील मिलती है कि हज़रत अबु बकर रज़ि. ने दो ऊँटनियाँ इस मक़सद के लिये तैयार कर रखी थीं और रोज़ाना आपसे इस्तफ़सार करते थे कि हुज़ूर! इजाज़त मिली या नहीं?

बहरहाल हज़रत युनुस अलै. के जाने के बाद अज़ाब के आसार पैदा हुए तो पूरी बस्ती के लोग अपने बच्चों, औरतों और माल-मवेशी को लेकर बाहर निकल आए और अल्लाह के हुज़ूर गिडगिडा कर तौबा की। अल्लाह के क़ानून की मुताबिक़ तो अज़ाब के आसार ज़ाहिर हो जाने के बाद ना ईमान फायदामंद होता है और ना तौबा कुबूल की जाती है, मगर हज़रत युनुस अलै. के वक़्त से पहले हिजरत कर जाने की वजह से उस क़ौम के मामले में नरमी इख़्तियार की गई और उनकी तौबा कुबूल करते हुए उन पर से अज़ाब को टाल दिया गया। यूँ इंसानी तारीख़ में एक इस्तसना (exception) कायम हुआ कि उस क़ौम के लिये क़ानूने खुदावंदी में रियायत दी गई।

“जब वह ईमान ले आए तो हमने हटा दिया उनसे दुनिया की ज़िंदगी में वह रुसवाकुन अज़ाब और एक वक़्त मुअय्यन के लिये हमने उन्हें (फ़वायदे दुनियवी से) बहरामंद होने का मौक़ा दे दिया।”

لَبَّاءُ امْنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ٩٨

आयत 99

“और (ऐ नबी صلی اللہ علیہ وسلم!) अगर आपका रब चाहता तो ज़मीन में जितने लोग भी हैं सबके सब ईमान ले लाते।”

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مِنَ فِي الْأَرْضِ كُلَّهُمْ جَمِيعًا

ये मज़मून सूरतुल अनआम में बड़े शद्दो-मद्द के साथ आ चुका है। हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की शदीद ख्वाहिश थी कि यह सब लोग ईमान ले आएँ, मगर अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि इस सिलसिले में हमारा अपना क़ानून है और वह यह कि जो हक़ का तालिब होगा उसे हक़ मिल जाएगा और जो तअस्सुब, ज़िद और हठधर्मी पर उतर आएगा, उसे हिदायत नसीब नहीं होगी। अगर लोगों को मुसलमान बनाना ही मक़सूद होता तो अल्लाह के लिये यह कौनसा मुश्किल काम था। वह सबको पैदा ही ऐसे करता कि सब मोमिन, मुत्तक़ी और परहेज़गार होते। आख़िर उसने फ़रिश्ते भी तो पैदा किये हैं जो कभी गलती करते हैं ना उसकी मअसियत (अवहेलना)। जैसा कि सूरतुल तहरीम में फ़रमाया: { لَا يَغْضُوبُ اللَّهُ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ } (आयत:6) “वह अल्लाह के अहक़ाम की नाफ़रमानी नहीं करते और वही करते हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है।” लेकिन इंसानों को उसने पैदा ही इम्तिहान के लिये किया है। सूरतुल मुल्क के आज़ाज़ में ज़िन्दगी और मौत की तख़लीक़ का यही मक़सद बताया गया है: { خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا } (आयत:2) “उसने ज़िन्दगी और मौत को पैदा किया ताकि तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन हुस्ने अमल का रवैय्या इख़्तियार करता है।” लिहाज़ा ऐ नबी صلی اللہ علیہ وسلم आप इस मामले में अपना फ़र्ज़ अदा करते जाएँ, कोई ईमान लाए या ना लाए इसकी परवाह ना करें, किसी को हिदायत देने या ना देने का मामला हमसे मुताल्लिक़ है।

“तो क्या आप लोगों को मजबूर कर देंगे कि वह ज़रूर ईमान ले आएँ!”

أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ٩٩

असल में यह सारी बातें हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم के दिल का बोझ हल्का करने के लिये की जा रही हैं कि आप हर वक़्त दावत व तब्लीग़ की जद्दो-जहद में मसरूफ़ हैं, फिर आप صلی اللہ علیہ وسلم को यह अंदेशा भी रहता है कि कहीं इस ज़िंमन में मेरी तरफ़ से कोई कोताही तो नहीं हो रही। जैसे सूरतुल आराफ़ (आयत 2) में फ़रमाया: { فَلَا يَكُنْ فِي صَدْرِكَ حَزَجٌ مِّنْهُ } कि आप صلی اللہ علیہ وسلم के दिल में फराएज़

रिसालत के सिलसिले में किसी किस्म की तंगी नहीं होनी चाहिए। और इन लोगों के पीछे आप ﷺ अपने आपको हलकान ना करें।

आयत 100

“किसी जान के लिये मुमकिन नहीं है कि वह ईमान लाए मगर अल्लाह के इज्जत से।”

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ

“और वह गंदगी मुसल्लत कर देता है उन लोगों पर जो अक्ल से काम नहीं लेते।”

وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٠﴾

आयत 101

“इनसे कहिये कि देखो जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है।”

قُلْ انْظُرُوا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

ज़मीन व आसमान में अल्लाह तआला की बेशुमार निशानियाँ हैं, इनको ब-नज़र-ए-गाएर देखने की ज़रूरत है।

“लेकिन यह निशानियाँ और डरावे उन लोगों के कुछ काम नहीं आते जो ईमान नहीं लाना चाहते।”

وَمَا تُغْنِي الْاٰیٰتِ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠١﴾

आयत 102

“तो क्या ये मुंतज़िर हैं उसी तरह के दिनों के जैसे इनसे पहले लोगों पर गुज़र चुके हैं?”

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ

रसूलों की तकज़ीब करने वाली क्रौमों पर आने वाले अज़ाबे इस्तेसाल वाले दिनों को कुराने हकीम में “अय्यामुल्लाह” करार दिया गया है। तो क्या ये लोग ऐसे दिनों के मुंतज़िर हैं जो क्रौमे नूह या क्रौमे हूद या क्रौमे सालेह या क्रौमे लूत को देखने पड़े थे?

“कह दीजिये कि पस इंतज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने वालों में हूँ।”

قُلْ فَانْتَظِرُوا اِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾

आयत 103

“फिर निजात देते रहे हैं अपने रसूलों को और अहले ईमान को। इसी तरह हमारे ऊपर हक़ है कि हम अहले ईमान को निजात दें।”

ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا نُنَجِّ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾

जैसे हज़रत नूह, हज़रत हूद और हज़रत सालेह अलै. की क्रौमों में से जो लोग ईमान ले आए उन्हें बचा लिया गया। आमुरा और सदुम की बस्तियों में से कोई एक खुश किस्मत भी ना निकला कि उसे बचाया जाता। हज़रत लूत अलै. सिर्फ अपनी दो बेटियों को लेकर वहाँ से निकले थे, जबकि उनकी अपनी बीवी भी पीछे रह जाने वालों के साथ रह गई और अज़ाब का निशाना बनी।

आयात 104 से 109 तक

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّكُمُ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَأَنْ أَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذَا مِنَ الظَّالِمِينَ ۝ وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّٰ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۝ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَخُصِمَ اللَّهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝

आयत 104

“(ऐ नबी ﷺ) कह दीजिये कि ऐ लोगों! अगर तुम्हें मेरे दीन के बारे में कोई शक है”

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ دِينِي

अब सूरत के आखिर में फ़ैसलाकुन अंदाज़ में ख़िताब किया जा रहा है कि ऐ लोगों! ये जो तुम मुझ पर दबाव डाल रहे हो, कि मैं अपने मौक़फ़ में कुछ नरमी पैदा कर लूँ या तुम्हारे साथ किसी हद तक मदाहनत (compromise) का रवैया इख़्तियार करूँ, तो इसका मतलब तो यह है कि तुम्हें मेरे दीन के बारे में अभी तक शक है। अगर ऐसा है तो तुम लोग अपना यह शक दूर कर लो:

“तो (जान लो कि) मैं हरगिज़ नहीं पूजने वाला उनको जिनको तुम पूजते हो अल्लाह के सिवा, बल्कि मैं तो पूजूंगा उसी अल्लाह को जो तुम्हें क़ब्ज़ करेगा।”

فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّكُمُ

“और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं ईमान लाने वालों में से हो जाऊँ।”

وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

आयत 105

“और यह कि आप अपना रुख सीधा रखिये दीन की तरफ़ यक्सु होकर।”

وَأَنْ أَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا

पूरे हनीफ़ यानि यक्सु होकर दीन की तरफ़ मुतवज्जह हों।

“और हरगिज़ ना हों इन मुशरिकों में से।”

وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

आयत 106

“और मत पुकारिये अल्लाह के सिवा उसको जो ना तुम्हें नफ़ा दे सके ना नुक़सान, और अगर (बिलफ़र्ज़) आपने ऐसा किया तो फिर आप भी जालिमों में से हो जायेंगे।”

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذَا مِنَ الظَّالِمِينَ ۝

आयत 107

“और अगर अल्लाह आपको कोई ज़रर पहुँचाये, तो कोई नहीं है उसको दूर करने वाला सिवाय अल्लाह के।”

وَإِنْ يَّمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ

“और अगर वह इरादा कर ले आपके साथ भलाई का तो उसके फ़ज़ल को लौटाने वाला कोई नहीं।”

وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ

“वह पहुँचाता है इस (फ़ज़ल) को अपने बन्दों में से जिसे चाहे, और वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है।”

يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ الْغَفُورُ

الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾

आयत 108

“कह दीजिये कि ऐ लोगों! तुम्हारे पास हक़ आ चुका है तुम्हारे रब की तरफ़ से। तो अब जो कोई भी हिदायत पायेगा वह अपने भले को ही हिदायत पायेगा।”

قُلْ يَٰ أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ

इस हिदायत का फ़ायदा उसी को होगा, आक्रबत (आख़िरत) उसी की सँवरेगी और अल्लाह की रहमत उसके शामिले हाल होगी।

“और जो कोई भटक जाएगा तो वह भी अपनी जान पर ही वबाल लेगा। और मैं तुम्हारा ज़िम्मेदार नहीं हूँ।”

وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ

بِوَكِيلٍ ﴿١٠٥﴾

मुझे तुम्हारे ऊपर कोई दरोगा मुक़रर नहीं किया गया। मैं तुम्हारे बारे में मसऊल नहीं हूँ। अल्लाह के यहाँ तुम्हारे बारे में मुझसे बाज़पुर्स नहीं होगी कि ये ईमान क्यों नहीं लाये थे? {وَلَا تَسْأَلْ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ} (सूरह बक्ररह:119) “और आपसे नहीं पूछा जाएगा जहन्नमियों के बारे में!”

आयत 109

“और (ऐ नबी ﷺ) आप पैरवी करते जाइये उसकी जो आपकी तरफ़ वही किया जा रहा है और सन्न कीजिये”

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ

अपने मौक़फ़ पर जमे रहिये और डटे रहिये, मुश्किलात के दबाव को बर्दाश्त कीजिये।

“यहाँ तक कि अल्लाह फ़ैसला कर दे, और यक़ीनन वह बहतरीन फ़ैसला करने वाला है।”

حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿١٠٩﴾

بَارِكْ لِلَّهِ وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيمِ وَنَفَعْنِي وَآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ۔

सूरह हूद

तम्हीदी कलिमात

सूरह हूद के दस रुकूअ हैं, जिनमें से छः रुकूअ अम्बिया अररुसुल पर मुश्तमिल हैं। यह सूरत चूँकि सूरह युनुस के साथ मिलकर जोड़ा बनाती है इसलिये सूरह युनुस के बरअक्स इसमें हज़रत नूह अलै. का ज़िक्र बहुत तफ़सील के साथ हुआ है जबकि हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र बिल्कुल सरसरी अंदाज़ में है (सूरह युनुस में हज़रत नूह अलै. का ज़िक्र सरसरी अंदाज़ में है और हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र तफ़सील के साथ है) इन दोनों पैगम्बरों के ज़िक्र के दरमियान में बाक़ी रसूलों का ज़िक्र इस सूरत में बिल्कुल सूरतुल आराफ़ वाले अंदाज़ में है, यानि एक-एक रुकूअ में एक-एक रसूल का तज़क़िरा है।

हदीस में आता है कि हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ि. ने नबी मुकर्रम ﷺ से अर्ज़ किया: “या रसूल अल्लाह! आप पर बुढ़ापे के आसार नुमायाँ हो गये हैं” जवाब में हुज़ूर ﷺ ने इशार्द फ़रमाया: ((شَيْئَيْنِ هُودُواخَوَائِهَا))⁽²⁾ “मुझे सूरह हूद और उसकी हम मज़मून सूरतों ने बूढ़ा कर दिया है।” इससे अंदाज़ा होता है कि जब इन सूरतों में पै दर पै तम्बीहात नाज़िल हो रही थीं तो आप ﷺ को हर वक़्त यह अंदेशा घुलाए देता होगा कि कहीं अल्लाह की दी हुई मोहलत ख़त्म ना हो जाये और वह आख़री साअत (घड़ी/वक़्त) ना आ जाये जब अल्लाह तआला किसी क़ौम को अज़ाब में पकड़ लेने का फ़ैसला सादर फ़रमा देता है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

आयात 1 से 8 तक

الرَّسُولُ كَتَبَ أَحْكَمَتْ أَيْتُهُ ثُمَّ فَصَّلَتْ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ خَبِيرٍ ① ۝ أَلَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۚ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ ② ۝ وَأَنْ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُغْفِرْ لَكُمْ مَتَاعًا حَسَنًا إِلَى أَجَلٍ مُسَمًّى وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ ۚ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيرٍ ③ ۝ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ ۖ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ④ ۝ أَلَا إِنَّهُمْ يَتَّبِعُونَ صُدُورُهُمْ لِيَسْتَخْفُوا مِنْهُ ۚ أَلَا حِينَ يَسْتَغْشُونَ ثِيَابَهُمْ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑤ ۝ وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رُزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ⑥ ۝ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّالْوَتِ وَالْأَرْضِ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۚ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۚ وَلَئِنْ قُلْتُمْ إِنَّكُمْ مَبْعُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ⑦ ۝ وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِلَى أُمَّةٍ مَعْدُودَةٍ لَيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۚ أَلَا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ⑧

आयात 1

“अलिफ़, लाम, रा। यह वह किताब है जिसकी आयात (पहले) पुख्ता की गई हैं, फिर उनकी तफ़सील बयान की गई है उस हस्ती की तरफ़ से जो हकीम है और ख़बीर है।”

الرَّسُولُ كَتَبَ أَحْكَمَتْ أَيْتُهُ ثُمَّ فَصَّلَتْ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ

خَبِيرٍ ①

इसका एक मफ़हूम यह भी हो सकता है कि कुरान मजीद में शुरू-शुरू में जो सूरतें नाज़िल हुई हैं वो हुज़्म के ऐतबार से तो छोटी, लेकिन बहुत जामेअ और गहरे मफ़हूम की हामिल हैं, जैसे कूज़े में समुन्दर को बंद कर दिया गया हो। मसलन सूरतुल अन्न जिसके बारे में इमाम शाफ़ई रहिमुल्लाह फ़रमाते हैं: *لَوْ تَدَكَّرَ النَّاسُ هَذِهِ السُّورَةَ لَوَسَّعَتْهُمْ* “अगर इस सूरत के अलावा कुरान मजीद में कुछ भी नाज़िल ना होता तो भी यह सूरत लोगों की हिदायत के लिये काफ़ी थी।” इमाम शाफ़ई रहि. सूरतुल अन्न के बारे में मज़ीद फ़रमाते हैं: *لَوْ تَدَكَّرَ النَّاسُ هَذِهِ السُّورَةَ لَوَسَّعَتْهُمْ* “अगर लोग इस सूरत पर ही तदब्बुर करें तो यह उनकी हिदायत के लिये काफ़ी हो जायेगी।” चुनाँचे कुरान मजीद की इब्तदाई सूरतें और आयात बहुत मोहकम और जामेअ हैं और बाद में उन्हीं की तफ़सील बयान हुई है। और इस किताब का बुनियादी पैग़ाम यह है:

आयत 2

“कि मत इबादत करो किसी की सिवाय अल्लाह के। यक़ीनन मैं हूँ तुम्हारे लिये उसी की जानिब से ख़बरदार करने वाला और बशारत देने वाला।”

إِلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ ﴿٢﴾

अम्बिया और रुसुल के लिये कुरान मजीद में बशीर और नज़ीर के अल्फ़ाज़ बार-बार आते हैं। जैसे सूरह अन्निसा की आयत नम्बर 168 में फ़रमाया: *وَمَا تُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ* (आयत 48) और सूरह अनआम में फ़रमाया: *وَمَا تُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ*

आयत 3

“और यह कि अपने रब से इस्तग़फ़ार करो, फिर उसकी जनाब में तौबा करो, वह तुम्हें (दुनियावी ज़िन्दगी में) माल व मताअ देगा बहुत अच्छा एक वक़्त मुअय्यन तक और हर साहिबे फ़ज़ल को उसके हिस्से का फ़ज़ल अता करेगा।”

وَأَنِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ

यहाँ *ذِي فَضْلٍ* से मुराद है ‘मुस्तहिक़े फ़ज़ल’। यानि जो भी फ़ज़ल का मुस्तहिक़ होगा, अल्लाह तआला उसे अपना फ़ज़ल ज़रूर अता फ़रमाएगा।

“और अगर तुम फिर जाओगे तो मुझे अंदेशा है तुम पर एक बड़े हौलनाक दिन के अज़ाब का।”

وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيرٍ

﴿٣﴾

आयत 4

“अल्लाह ही कि तरफ़ तुम्हें लौट कर जाना है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।”

إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤﴾

आयत 5

“आगाह हो जाओ यह लोग अपने सीनों को दुहरा करते हैं ताकि अल्लाह से छुप जायें।”

إِلَّا أَنَّهُمْ يُتَوَنَّوْنَ صُدُورَهُمْ لِيَسْتَخْفُوا مِنْهُ

यह मक्क़ाम मुश्किलातुल कुरान में से है और इसके बारे में बहुत से अक़वाल हैं। *يَتَوَنَّوْنَ* के मायने फेरने, मोड़ने और लपेटने के हैं। मक्का में रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم की दावत के मुख़ालफ़ीन में से कुछ लोगों का रवैया ऐसा था कि आप صلی اللہ علیہ وسلم को आते देखते तो रुख़ बदल लेते या कपड़े की ओट में मुँह छुपा लेते, ताकि कहीं आमना-सामना ना हो जाये और आप صلی اللہ علیہ وسلم उन्हें

मुखातिब करके कुछ अपनी बातें ना कहने लगे। यहाँ ऐसे लोगों की तरफ इशारा है कि यह लोग हक़ का सामना और हकीकत का मुवाजह (interface) करने से घबराते हैं, हालाँकि किसी के गुरेज़ करने से हकीकत गायब नहीं हो जाती। शुरुआत तूफ़ान के दौरान अगर रेत में सर छुपा ले तो इससे तूफ़ान का रुख़ तब्दील नहीं हो जाता।

इसके अलावा एक राय वह है जो बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. के हवाले से नक़ल हुई है कि कुछ अहले ईमान पर हया का बहुत ज़्यादा ग़लबा था (मसनल हज़रत उस्मान रज़ि. इन अस्थाब में बहुत नुमायाँ थे) ऐसे लोग कभी गुस्ले के वक़्त भी उरिया (नंगा) होना पसंद नहीं करते थे और ऐसे मौक़ो पर इस अंदाज़ से झुक जाते थे कि जहाँ तक मुम्किन हो सतर छुपा रहे। इसी तरह क़जाए हाजत (टॉयलेट में जाने) के वक़्त भी पूरे सतर का अहतमाम करते थे। इस हवाले से इस हुक्म का मंशा यह है कि तुम इस सिलसिले में जो कुछ भी कर लो, अल्लाह तआला की निगाहों से तो नहीं छुप सकते हो। लिहाज़ा सतर छुपाने के बारे में जो भी अहक़मात हैं उनकी मारुफ़ तरीक़े से पैरवी करो। इस तरह के किसी भी मामले में गुलू की ज़रूरत नहीं है।

“आगाह हो जाओ कि जब वो अपने ऊपर अपने कपड़े लपेटते हैं तब भी अल्लाह जानता है जो कुछ वो छुपा रहे होते हैं और जो कुछ ज़ाहिर कर रहे होते हैं। वह तो उसको भी जानता है जो कुछ सीनों के अंदर है।”

أَلَا حِينَ يَسْتَغْشُونَ ثِيَابَهُمْ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑤

आयत 6

“और नहीं है कोई भी चलने-फिरने वाला (जानदार) ज़मीन पर, मगर उसका रिज़क़ अल्लाह के ज़िम्मे है।”

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا

अल्लाह तआला ने इस कायनात के अंदर तक्रसीम-ए-रिज़क़ का जो निज़ाम वज़अ (प्रारूप तैयार) किया है उसमें उसने हर जानदार के लिये उसकी ज़रूरियाते ज़िन्दगी फ़राहम कर दी हैं। बुद्धि की पैदाईश बाद में होती है मगर उसके लिये माँ की छातियों में दूध पहले पैदा हो जाता है। लेकिन जहाँ कोई इंसान या इंसानों का कोई ग़िरोह अल्लाह के इस निज़ाम और उसके क़वानीन को पसे पुस्त डाल कर कोई ऐसा निज़ाम या ऐसे क़वानीन वज़अ करे जिनके तहत एक फ़र्द के हिस्से का रिज़क़ किसी दूसरे के झोली में चला जाये, तो रिज़क़ या दौलत की तक्रसीम का खुदाई निज़ाम दरहम-बरहम हो जायेगा। इस लूट-खसोट का लाज़मी नतीजा यह होगा कि कहीं दौलत के बेजा अम्बार लगेंगे और कहीं बेशुमार इंसान फ़ाक्रों पर मजबूर हो जायेंगे। लिहाज़ा जहाँ कहीं भी रिज़क़ की तक्रसीम में कोई कमी-पेशी नज़र आये तो समझ लो कि इसका ज़िम्मेदार खुद इंसान है।

“और वह जानता है उसके मुस्तक़िल ठिकाने को भी और उसके आरज़ी तौर पर सौंपे जाने की जगह को भी।”

وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا

मुस्तक़र और मुस्तवदअ दोनों अल्फ़ाज़ की तशरीह सूरतुल अनआम की आयत 98 में तफ़सील के साथ हो चुकी है। वहाँ इन अल्फ़ाज़ के बारे में तीन मुख़्तलिफ़ अक़वाल भी ज़ेरे बहस आ चुके हैं।

“यह सब कुछ एक रौशन किताब में (दर्ज) है।”

كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ⑥

वही रौशन और वाज़ेह किताब जो इल्मे इलाही की किताब है।

आयत 7

“और वही है जिसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में और उसका तख़्त था पानी पर”

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ

मेरे नज़दीक यह आयत आज भी मुतशाबेहात में से है, लेकिन शायद यह उस दौर की तरफ़ इशारा है जब यह दुनिया मअरिज़े वुजूद में आई। ज़मीन की तख़लीक़ के बारे में साइंसी और तारीख़ी ज़राय से अब तक मिलने वाली मालूमात को मुज्तमा (इकट्ठा) करके जो आरा (बहुत सी राय) सामने आयी हैं उनके मुताबिक़ ज़मीन जब ठंडी होनी शुरू हुई तो उससे बुखारात और मुख्तलिफ़ अक़साम की गैसों ख़ारिज हुई। इन्हीं गैसों में से हाईड्रोजन और ऑक्सीजन के मिलने से पानी पैदा हुआ जो लाखों साल तक बारिशों की सूरत में ज़मीन पर बरसता रहा। फिर जब ज़मीन ठंडी होकर सुकड़ी तो उसकी सतह पर नशेब व फ़राज़ (उतार-चढ़ाव) पैदा होने से पहाड़ और समुद्र वुजूद में आये। उस वक़्त तक किसी किस्म की कोई मख़्लूक़ पैदा नहीं हुई थी। यह वह दौर था जिसके बारे में कहा जा सकता है कि इस ज़मीन की हद तक अल्लाह तआला का तख़्ते हुकूमत (इसका तसव्वुर इंसानी ज़हन से मा वराअ [बहुत ऊपर] है) पानी पर था। फिर वह दौर आया जब ज़मीन की आबो-हवा ज़िन्दगी के लिये मुवाफ़िक़ हुई तो मिट्टी और पानी से वुजूद में आने वाले दलदली इलाक़ों में नबाताती (वनस्पति) या हैवानी (पशु) मख़्लूक़ की इब्तदाई शक़्लें पैदा हुई (वल्लाहु आलम!)

“ताकि तुम्हें आज़माए कि कौन है तुममें से अच्छे अमल करने वाला।”

لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا

यानि इंसानी ज़िन्दगी का वह हिस्सा जो इस दुनिया में गुज़रता है उसका असल मक़सद इस्तिहान है। अल्लामा इक़बाल ने इस शेअर में इस आयत की बहुत खूबसूरत तर्जुमानी की है:

कुलज़ुम-ए-हस्ती से तू उभरा है मानिन्द-ए-हबाब
इस ज़ियाँ ख़ाने में तेरा इस्तिहान है ज़िन्दगी!

“और अगर आप कहें कि तुम्हें उठाया जायेगा मरने के बाद तो कहेंगे वो लोग जिन्होंने कुफ़ किया कि यह तो खुला जादू है।”

وَلَيْنَ قُلْتُمْ إِنَّكُمْ مَبْعُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ

لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ⑥

आयत 8

“और अगर मुअख़्खर किए रखें हम उनसे अज़ाब को एक ख़ास मुदत तक तो वो कहते हैं कि किस चीज़ ने रोक रखा है उसे?”

وَلَيْنَ آخَرًا عَنْهُمْ الْعَذَابُ إِلَى أُمَّةٍ مَعْدُودَةٍ

لَيَقُولَنَّ مَا يَجْبِسُهُ

कि इतने अरसे से आप (ﷺ) हमें धमकियाँ दे रहे हैं कि तुम पर अज़ाब आने वाला है, मगर अब तक वह अज़ाब आया क्यों नहीं? आख़िर किस चीज़ ने उसे रोक रखा है?

“आगाह हो जाओ! जिस दिन यह उन पर आ जायेगा तो उनकी तरफ़ से फेरा नहीं जायेगा, और उनको घेरे में ले लेगी वही चीज़ जिसका यह लोग इस्तेहज़ा किया करते थे।”

أَلَا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ

مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ⑧

आयात 9 से 24 तक

وَلَيْنَ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَيَكْفُرُ ④ وَلَيْنَ أَذَقْنَاهُ نِعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَاءٍ مَسْتَهْ

لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتِ عَنِّي إِنَّهُ لَفَرِحَ فَخُورٌ ⑤ إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ

كَبِيرٌ ⑥ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ كُتْرًا أَوْ جَاءَ مَعَهُ

مَلَكٌ إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ⑦ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوْرٍ مِثْلِهِ مُفْتَرِيْنَ

وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ③ فَإِنْ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا أُنْزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ④ مَنْ كَانَ يَرْيِدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزَيَّنَّا لَهَا تُفًّافًا لِيَهْمُ أَعْمَالُهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَشُونَ ⑤ أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبِطُلٌ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑥ أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كُتِبَ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً أُولَئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِنْهُ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ⑦ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أُولَئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ⑧ الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ⑨ أُولَئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ يُضْعِفُ لَهُمْ الْعَذَابُ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ⑩ أُولَئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ⑪ لَا جَرَمَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمْ الْخَاسِرُونَ ⑫ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآخَبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ⑬ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصْمَىٰ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ⑭

आयत 9

“और अगर हम मज़ा चखाते हैं इंसान को अपनी तरफ़ से रहमत का”

وَلَكِنْ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً

“फिर (जब) हम उससे वह छीन लेते हैं तो वह हो जाता है बिल्कुल मायूस, निहायत नाशुक्रा।”

ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَيَكُونُ مِنْكُمْ قَوُورٌ ⑨

इंसान बुनियादी तौर पर कोताह नज़र और नाशुक्रा है। किसी नेअमत, कामयाबी या खुशी के बाद अगर उसे कोई मुश्किल पेश आती है तो उस वक़्त वह भूल जाता है कि उस पर कभी अल्लाह की नज़रे करम भी थी। चाहिये तो यह कि अच्छे हालात में इंसान अल्लाह का शुक्र अदा करे और जब कोई सख्ती आ जाये तो उस पर सब्र करे और साथ ही साथ दिल में इत्मिनान रखे कि हर तरह के हालात अल्लाह तआला की तरफ़ से आते हैं, अगर आज सख्ती है तो कल आसाइश भी तो थी।

आयत 10

“और अगर हम मज़ा चखाएँ उसे नेअमतों का किसी तकलीफ़ के बाद जो उसको पहुँची हुई थी तो ज़रूर कहेगा कि मेरे तो सारे दिलदर दूर हो गये।”

وَلَكِنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ صَرَاءٍ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتِ عَنِّي

“बेशक वह इतराने वाला और फ़ख्र जताने वाला है।”

إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ⑩

जब किसी सख्ती के बाद इंसान को आसाइश या कोई नेअमत मिल जाती है तो बजाय इसके कि उसे अल्लाह की रहमत और उसका ईनाम समझते हुए सजदा-ए-शुक्र बजा लाए, वह उस पर इतराना और डींगे मारना शुरू कर देता है और उसे अपनी तदबीर का नतीजा और अपनी मेहनत का सिला करार देता है।

आयत 11

“सिवाय उन लोगों के जिन्होंने सब्र की रविश इख्तियार की और नेक आमाल किये।”

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

यानि सब इंसान एक जैसे नहीं, कुछ ऐसे भी हैं जिनको अल्लाह ने हक़ीकी ईमान की नेअमत से नवाज़ रखा है और ईमान के नतीजे में उनके दिल सब्र की दौलत से मालामाल हैं और उनके किरदार से आमाले सालेहा के नूर की किरणें फूटती हैं।

“उन्हीं के लिये मग़फ़िरत और बहुत बड़ा अज़्र है।”

أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝

आयत 12

“तो (ऐ नबी ﷺ) शायद आप कुछ चीज़ें छोड़ दें उसमें से जो आपकी तरफ़ वही की जा रही है”

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضُ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ

“और आपका सीना उससे तंग हो रहा है जो वो कह रहे हैं, कि क्यों नहीं उनके ऊपर उतार दिया गया कोई ख़जाना या क्यों नहीं आया उनके पास कोई फ़रिश्ता।”

وَصَاحِقٌ بِهٖ صَدْرُكَ ۚ أَنْ يَقُولُوا ۖ أَلَا أَنْزَلَ عَلَيْهِ كُتُبًا
أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ

यह मज़मून इससे पहले बड़ी वज़ाहत के साथ सूरतुल अनआम में आ चुका है, लेकिन ज़ेरे मुताअला गुप की मक्की सूरतों में भी जा-बजा मुशरिकीन की ऐसी बातों का ज़िक्र मिलता है। इसलिये कि इन दोनों गुप्स में शामिल यह तमाम मक्की सूरतें एक ही दौर में नाज़िल हुई हैं।

यहाँ मक्की सूरतों की तरतीब-ए-मुस्हफ़ के बारे में एक अहम नुक्ता समझ लें। रसूल अल्लाह ﷺ के कयाम-ए-मक्का के बारह साल के अरसे को अगर चार-चार साल के तीन हिस्सों में तक़सीम करें तो पहले हिस्से यानि पहले चार साल में जो सूरतें नाज़िल हुई वो कुरान मजीद के आखरी दो गुपों में शामिल हैं, यानि सूरह काफ़ से लेकर आखिर तक। दरमियानी चार साल के दौरान नाज़िल होने वाली सूरतें दरमियानी गुपों में शामिल हैं और आखरी चार साल में जो सूरतें नाज़िल हुई हैं वो शुरू के दो गुपों में शामिल हैं। एक गुप में सूरतुल अनआम और सूरतुल आराफ़ जबकि इस दूसरे गुप में सूरह यूनुस से सूरतुल मोमिनून (इसमें सिर्फ़ एक इस्तसना [exception] है जिसका ज़िक्र बाद में आयेगा)।

“(ऐ नबी ﷺ) आप तो सिर्फ़ ख़बरदार करने वाले हैं, और हर चीज़ का ज़िम्मेदार अल्लाह है।”

إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝

इस दौर की सूरतों में मुख्तलिफ़ अंदाज़ में बार-बार हुज़ूर ﷺ को तसल्ली दी जा रही है कि आप ﷺ का फ़र्ज़े मन्सबी यही है कि आप ﷺ इन लोगों को ख़बरदार कर दें। इसके बाद तमाम मामलात अल्लाह के हवाले हैं। वह बेहतर जानता है कि ईमान या हिदायत की तौफ़ीक़ किसे देनी है और किसे नहीं देनी। कोई मौजज़ा दिखाना है या नहीं, नाफ़रमानों को कब तक मोहलत देनी है और कब उन पर अज़ाब भेजना है। यह सब कुछ अल्लाह तआला ही के इख्तियार में है।

आयत 13

“क्या वो कहते हैं कि यह (कुरान) उस عليه وسلم ने खुद गढ़ लिया है।”

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ

“आप عليه وسلم कहिए कि अच्छा तुम लोग भी ले आओ इस जैसी दस सूरतें गढ़ी हुई”

قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوْرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرِيْنَ

मुशरिकीन को यह चैलेंज मुख्तलिफ़ दर्जों में बार-बार दिया गया था। इससे पहले उन्हें कहा गया था कि इस जैसा कुरान तुम भी बनाकर दिखाओ (बनी इस्राईल:88) यहाँ दूसरे दर्जे में 10 सूरतों का चैलेंज दिया गया। फिर इसके बाद बर सबीले तनज़ुल सिर्फ़ एक सूरत बनाकर लाने को कहा गया, जिसका तज़क़िरा सूरह युनुस (आयत 38) में भी है और सूरतुल बक्ररह (आयत 23) में भी।

“और (इसके लिये) बुला लो तुम जिसको भी बुला सकते हो अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो।”

وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ

صٰدِقِيْنَ ﴿١٣﴾

आयत 14

“फिर अगर वो (तुम्हारे मददगार) तुम्हारी इस दुआ को कुबूल ना करें”

فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ

यानि अगर वो इस चैलेंज को कुबूल करने की ज़ुरत ना कर सकें और तुम्हारी मदद को ना पहुँच सकें:

“तो जान लो कि यह अल्लाह ही के इल्म से नाज़िल हुआ है और यह कि कोई मअबूद नहीं है सिवाय उसके। तो क्या अब तुम सरे तस्लीम खम करते हो?”

فَاعْلَمُوا اَنَّ مَا اُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَاَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَهَلْ

اَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿١٤﴾

यह कुफ़्फ़ार ही से खिताब है कि तुम लोग इस चैलेंज का जवाब देने के लिये अपने मअबूदों को पुकार देखो, कुछ खुद मेहनत करो और कुछ उनसे कहो कि वो अल्काअ और इल्हाम करें और इस तरह मिल-जुल कर 10 सूरतें बना लाओ। और अगर तुम्हारे यह मअबूद तुम्हारी इस दरख्वास्त को कुबूल ना कर सकें तो जान लो कि ना सिर्फ़ यह कुरान अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हुआ है बल्कि अल्लाह के सिवा कोई और मअबूद भी नहीं। तो इस सब कुछ के बाद भी क्या तुम मानने वाले नहीं हो? ज़ोरे इस्तदलाल मुलाहिज़ा हो कि एक ही दलील से कुराने हकीम के कलामे इलाही होने का सुबूत भी दिया गया है और अल्लाह तआला की तौहीद का भी।

आयत 15

“जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी ज़ेब व ज़ीनत के तालिब हों”

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزَيِّنٰتَهَا

जिन लोगों का मक़सदे हयात ही दुन्यवी माल व मताअ को हासिल करना हो और उसी के लिये वो रात-दिन दौड़-धूप में लगे हों तो:

“हम उनके आमाल का पूरा-पूरा बदला उन्हें इसी (दुनिया की ज़िन्दगी) में दे देते हैं और इसमें उनकी हक़तल्फ़ी नहीं की जाती।”

نُوفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالُهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ

﴿١٥﴾

इन लोगों के दिल व दिमाग पर दुनिया परस्ती छाई हुई है, और इन्होंने अपनी तमामतर सलाहियतें दुन्यवी ज़िन्दगी को हसीन व दिलकश बनाने के लिये ही सफ़्र कर दी हैं। उनकी सारी मन्सूबाबंदी इसी दुनिया के माल व मताअ के हसूल के

लिये है। चुनाँचे उनकी ऊँची-ऊँची इमारतें भी बन गई हैं, कारोबार भी खूब वसीअ हो गये हैं, हर क्रिस्म का सामाने असाइश भी उनकी दस्तरस में हैं, ऐशो इशरत के मौक़े भी हस्बे ख्वाहिश उन्हें मयस्सर हैं। लेकिन उन्हें मालूम होना चाहिये कि:

आयत 16

“यही लोग हैं जिनके लिये आखिरत में कुछ नहीं है सिवाय आग के।”

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ

इनकी सारी मेहनत और भाग-दौड़ इसी दुनिया के लिये थी, लिहाज़ा हमने इनकी मेहनत का सिला इसी दुनिया में देकर इनका हिसाब चुका दिया है।

“और इस (दुनिया) में उन्होंने जो कुछ किया वो सब हव्त हो जायेगा और जो आमाल उन्होंने किए वो भी ज़ाया हो जायेंगे।”

وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبِطُلْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

रोज़े महशर उन्हें मालूम होगा कि जो कुछ उन्होंने दुनिया में बनाया और जिसके लिये अपनी तमामतर इस्तअदादात (कोशिशें) और सलाहियतें सर्फ़ कीं वो सब मलिया-मेट हो चुका है, और अगर उन्होंने अपने दिल को बहलाने के लिये कोई झूठी-सच्ची नेकी की होगी तो वह भी बे-बुनियाद साबित होगी।

आयत 17

“तो भला वह शख्स जो अपने रब की तरफ़ से एक वाज़ेह दलील पर हो”

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ

बय्यिना (वाज़ेह दलील) से मुराद इंसान की फ़ितरते सलीमा है। इंसान के अंदर जो रूहे रब्बानी फूँकी गई है उसकी वजह से अल्लाह की मारफ़त उसके अंदर मौजूद है। मगर यह मारफ़ते इलाही इंसान के अंदर ख्वाबीदा (dormant) होती है। फिर जब वही के ज़रिये वाज़ेह हिदायत उस तक पहुँचती है तो ख्वाबीदा मारफ़त फौरन जाग जाती है।

“और उसके पीछे आए अल्लाह की तरफ़ से एक गवाह भी”

وَيَشْهَدُهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ

यानि एक सलीमुल फ़ितरत शख्स जिसको खुद अपने वुजूद में और ज़मीन व आसमान की साख़्त और कायनात के नज़म व नस्क़ में तौहीद बारी तआला की वाज़ेह शहादत मिल रही थी, जब उसके पास कुरान की सूरत में अल्लाह की तरफ़ से एक गवाही भी आ गई, तो यह “नूरुन अला नूर” वाला मामला हो गया। और फिर उस पर मुस्तज़ाद तौरात की तस्दीक़।

“और उससे पहले किताबे मूसा भी मौजूद थी जो इमाम (रहनुमा) भी थी और रहमत भी।”

وَمِنْ قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً

ऐसा सलीमुल फ़ितरत शख्स क्योंकि ईमान नहीं लाएगा? यह तम्सील ज़्यादा वज़ाहत के साथ सूरतुन्नूर में बयान हुई है।

“यही लोग हैं जो इस (कुरान) पर ईमान लाएँगे।”

أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ

“और जो इसका इंकार करेगा उन गिरोहों में से तो आग ही उसके वादे की जगह है।”

وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ

तो अब जो भी इस किताब के मुन्कर हों चाहे वो मुशरिकीने मक्का में से हों, दूसरे कुफ़्फ़ार में से, या अहले किताब में से, उनका मौऊद (वादा किया हुआ) ठिकाना बस दोजख़ है।

“तो आप इसके बारे में किसी शक में ना पड़ें”

فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ

“यक्रीनन यह हक है आप के रब की तरफ़ से लेकिन अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं।”

إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ

⑫

आयत 18

“और उस शख्स से बढ कर कौन ज़ालिम होगा जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा।”

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا

जिसने खुद कोई चीज़ गढ़ कर अल्लाह की तरफ मन्सूब कर दी।

“यह वो लोग हैं जो पेश किए जायेंगे अपने रब के सामने”

أُولَئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَى رَبِّهِمْ

“और गवाही देने वाले कहेंगे कि यह हैं वो लोग जिन्होंने झूठ कहा था अपने रब पर।”

وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى رَبِّهِمْ

“अगाह हो जाओ! ऐसे ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है।”

أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ⑬

उन झूठ गढ़ने वालों में गुलाम अहमद क़ादयानी आँजहानी और उस जैसे दूसरे मुद्दईयाने नुबूवत भी शामिल होंगे।

आयत 19

“जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसमें कज़ी तलाश करते हैं।”

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا

तालिमाते हक़ और तरीक़े हिदायत पर ख़्वाह-म-ख़्वाह के ऐतराज़ात करते हैं ताकि लोग इस रास्ते को इख़्तियार ना करें।

“और यही लोग आख़िरत के मुन्कर हैं।”

وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَفِرُونَ ⑭

यह वही बात है जो हम सूरह युनुस में बार-बार पढ़ आए हैं: {الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا} कि उन्हें हमसे मुलाक़ात की उम्मीद ही नहीं और उनकी असल बीमारी भी यही है कि वो दिल से आख़िरत के मुन्कर हैं और इसी वजह से उनकी अक़्लों पर पर्दे पड़े हुए हैं।

आयत 20

“यह लोग ज़मीन में (अल्लाह को) हरग़िज आजिज़ करने वाले नहीं हैं”

أُولَئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ

यह लोग अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं हैं और अल्लाह और उसके रसूल ﷺ को हरग़िज शिकस्त नहीं दे सकते।

“और ना ही अल्लाह के सिवा उनका कोई हिमायती है।”

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ

“उनके लिये अज़ाब दोगुना किया जाता रहेगा।”

يُضَعَّفُ لَهُمُ الْعَذَابُ

“(इसलिये कि) ना तो वो सुनने की सलाहियत रखते थे और ना ही देखते थे।”

مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ

②

वो बिल्कुल अंधे और बहरे हो गये थे। सूरतुल बक्ररह में ऐसे लोगों की कैफ़ियत इस तरह बयान की गई है: {عُمِّيْ فَهُمْ} {لَا يَرَوْنَ}। हक़ के लिये उन लोगों के इसी रवैय्ये की वजह से उनका अज़ाब बढ़ाया जाता रहेगा।

आयत 21

“यह वो लोग हैं जिन्होंने अपने आपको बरबाद कर लिया और उनसे गुम हो गया जो कुछ वो इफ़तरा किया करते थे।”

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا

كَانُوا يَفْتَرُونَ ①

तब उन्हें अपने झूठे मअबूद और सिफ़ारशी, मनघड़त अक्राइद व नज़रियात और अल्लाह तआला पर इफ़तरा परदाज़ियों में से कुछ भी नहीं सूझेगा। यह सब कुछ पादर हवा हो जायेगा।

आयत 22

“कुछ शक नहीं कि आख़िरत में सबसे बड़ कर ख़सारा पाने वाले यही लोग होंगे।”

لَا جَرَمَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمْ الْآخَسِرُونَ ②

वाजेह रहे कि “अख़सरु” अफ़आले तफ़सील का सीगा है।

अहले जहन्नम के तज़किरे के बाद फ़ौरी तक्राबुल (simultaneous contrast) के लिये अब अहले जन्नत का ज़िक्र किया जा रहा है।

आयत 23

“(इसके बरअक्स) वो लोग जो ईमान लाए और उन्होंने नेक आमाल किए और अपने रब के सामने आजिज़ी की, वो होंगे जन्नत वाले और उसमें रहेंगे हमेशा-हमेशा”

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا إِلَىٰ
رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ③

आयत 24

“इन दोनों गिरोहों की मिसाल ऐसे है जैसे एक शख्स अंधा और बहरा हो और दूसरा देखने और सुनने वाला।”

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصْمَىٰ وَالْبَصِيرِ
وَالسَّمِيعِ ④

“क्या यह दोनों बराबर हैं मिसाल के ऐतबार से? तो क्या तुम नसीहत अख़ज़ नहीं करते!”

هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ⑤

भला दोनों का हाल यक़सा हो सकता है? क्या तुम इस मिसाल से कोई सबक़ हासिल नहीं करते?

अब अगले छः रूकूअ अम्बिया अर्रसूल पर मुश्तमिल हैं। इनमें उन्हीं छः रसूलों और उनकी क्रौमों के हालात बयान हुए हैं जिनका ज़िक्र हम सूरतुल आराफ़ में पढ़ आए हैं। यानि हज़रत नूह, हज़रत हूद, हज़रत सालेह, हज़रत शुऐब, हज़रत लूत और हज़रत मूसा अला नबिय्यिना व अलैहिम अस्सलातु वस्सलाम। यह छः रसूल हैं जिनका ज़िक्र कुरान हकीम में बहुत तकरार के साथ आया है। इस तकरार की वजह यह है कि कुरान के अब्वलीन मुखातिब (अहले अरब) इन सब रसूलों और इनकी क्रौमों के हालात से बखूबी वाकिफ़ थे। जिस खित्ते में यह रसूल अपने-अपने ज़माने में मबऊस हुए उसके बारे में कुछ तफ़सील हम सूरतुल आराफ़ में पढ़ आए हैं। यहाँ इनमें से चीदह-चीदह (arranged) मालूमात ज़हन में फिर से ताज़ा कर लें।

अगले सफ़े पर जो नक्शा दिया गया है यह गोया “अर्ज़ल कुरान” का नक्शा है। कुरान मजीद में जिन रसूलों के हालात का तज़क़िरा है वो सबके सब इसी खित्ते के अंदर मबऊस किए गये। नक्शे में जज़ीरा नुमाए अरब के दाएँ तरफ़ ख़लीज फ़ारस और बाएँ तरफ़ बहरा-ए-कुलज़म (बहरा-ए-अहमर /Red Sea) है, जो ऊपर जाकर ख़लीज अक़बा और ख़लीज स्वेज़ में तक़सीम हो जाता है।

नक्शे पर ख़लीज फ़ारस से ऊपर सीधी लकीर खींची जाये और ख़लीज अक़बा के शिमाली कोने से भी एक लकीर खींची जाये तो जहाँ यह दोनों लकीरें आपस में मिलेंगी, यह वह इलाक़ा है जहाँ पर हज़रत नूह अलै. की क्रौम आबाद थी। यहीं से ऊपर शिमाल की जानिब अरारात का पहाड़ी सिलसिला है, जिसमें कोहे जूदी पर आपकी कश्ती लंगर अंदाज़ हुई थी। इस इलाक़े में सैलाब की सूरत में हज़रत नूह अलै. की क्रौम पर अज़ाब आया, जिससे पूरी क्रौम हालाक़ हो गई। उस वक़्त तक पूरी नस्ले इंसानी बस यहीं पर आबाद थी, चुनाँचे सैलाब के बाद नस्ले इंसानी हज़रत नूह की औलाद ही से आगे चली।

हज़रत नूह अलै. के एक बेटे का नाम साम था, वह अपनी औलाद के साथ ईराक़ के इलाक़े में आबाद हो गये। उस इलाक़े में उनकी नस्ल से बहुत सी क्रौमें पैदा हुई। उन्हीं में से एक क्रौम अपने मशहूर सरदार “आद” के नाम की वजह से मशहूर हुई। क्रौमे आद जज़ीरा नुमाए अरब के जुनूब में अहक़ाफ़ के इलाक़े में आबाद थी। इस क्रौम में जब शिर्क आम हो गया तो अल्लाह तआला ने उनकी इस्लाह के लिये बहुत से नबी भेजे।

नक्शा “अर्ज़ल कुरान”

(उन क्रौमों के इलाक़े जिनका ज़िक्र कुरान में बार-बार आया है)



इन अम्बिया के आखिर में हज़रत हूद अलै. उनकी तरफ़ रसूल मबऊस होकर आये। आपकी दावत को रद्द करके जब यह क्रौम भी अज़ाबे इलाही की मुस्तहक़ हो गई तो हज़रत हूद अलै. अपने अहले ईमान साथियों को साथ लेकर अरब के वस्ती इलाक़े हिज़ की तरफ़ हिज़रत कर गये। यहाँ फिर उन लोगों की नस्ल आगे बढ़ी। इनमें से क्रौमे समूद ने खुसूसी तौर पर बहुत तरक्की की। इस क्रौम का नाम भी समूद नामी किसी बड़ी शख्सियत के नाम पर मशहूर हुआ। ये लोग फ़ने तामीर के बहुत माहिर थे। चुनाँचे इन्होंने मैदानी इलाक़ों में भी आलीशान महलात तामीर किए और Granite Rocks पर मुश्तमिल इन्तहाई सख़्त पहाड़ों को तराश कर ख़ूबसूरत मकानात भी बनाए। इस क्रौम की तरफ़ हज़रत सालेह अलै. मबऊस किए गये। यह तीनों अक़वाम (क्रौमे नूह, क्रौमे आद और क्रौमे समूद) हज़रत इब्राहीम अलै. के ज़माने से पहले की हैं।

दूसरी तरफ़ ईराक़ में जो सामी उल नस्ल लोग आबाद थे उनमें हज़रत इब्राहीम अलै. मबऊस हुए। आपका तज़क़िरा कुरान में कहीं भी “अम्बिया अर्रसूल” के अंदाज़ में नहीं किया गया। यहाँ सूरह हूद में भी आपका ज़िक्र “क़ससुल नबिय्यीन” की तर्ज़ पर आया है। फिर हज़रत इब्राहीम अलै. ने ईराक़ से हिज़रत की और बहुत बड़ा सहाराई इलाका अबूर करके शाम चले गये। वहाँ आपने फ़लस्तीन के इलाक़े में अपने बेटे हज़रत इस्हाक़ अलै. को आबाद किया जबकि इससे पहले अपने बड़े बेटे हज़रत इस्माईल अलै. को आप मक्का में आबाद कर चुके थे। हज़रत लूत अलै. आपके भतीजे थे। शाम की तरफ़ हिज़रत करते हुए वो भी आपके साथ थे। हज़रत लूत अलै. को अल्लाह तआला ने रिसालत से नवाज़ कर आमूरा और सदुम के शहरों की तरफ़ मबऊस फ़रमाया। यह शहर बहरा-ए-मुरदार (Dead Sea) के किनारे पर आबाद थे। लिहाज़ा क़ौम समूद के बाद अम्बिया अर्रसूल के अंदाज़ में हज़रत लूत अलै. ही का ज़िक्र आयेगा।

हज़रत इब्राहीम अलै. की जो औलाद आपकी तीसरी बीवी क़तूरा से हुई वो ख़लीज अक़बा के मशरिक़ी इलाक़े में आबाद हुई। अपने किसी मशहूर सरदार के नाम पर इस क़ौम और इस इलाक़े का नाम “मदयन” मशहूर हुआ। इस क़ौम की तरफ़ हज़रत शुऐब अलै. को मबऊस किया गया। अम्बिया अर्रसूल के इस सिलसिले में हज़रत शुऐब अलै. के बाद हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र आता है। हज़रत मूसा अलै. को मिस्र में मबऊस किया गया जो जज़ीरा नुमाए अरब से बाहर जज़ीरा नुमाए सीना (Senai Peninsula) के दूसरी तरफ़ वाक़ेअ (situated) है आपकी बेअसत बनी इस्राईल में हुई थी, जो हज़रत यूसुफ़ अलै. की वसातत से फ़लस्तीन से हिज़रत करके मिस्र में आबाद हुए थे। (सूरह यूसुफ़ में इस हिज़रत की पूरी तफ़सील मौजूद है।)

बनी नौए इंसान की हिदायत के लिये अल्लाह तआला ने बहुत से अम्बिया अर्रसूल दुनिया के मुख्तलिफ़ इलाक़ों में मबऊस फ़रमाए। उन तमाम पैगम्बरों की तारीख़ बयान करना कुरान का मौज़ू नहीं है। कुरान तो किताबे हिदायत है और अम्बिया व रसूल के वाक़िआत भी हिदायत के लिये ही बयान किए जाते हैं। इस हिदायत के तमाम पहलु किसी एक रसूल के क़िस्से में भी मौजूद होते हैं मगर मज़क़ूर छः रसूलों (अलै.) का ज़िक्र बार-बार इसलिये कुरान में आया है कि उनके नामों से अहले अरब वाक़िफ़ थे और उनकी हिकायात (दास्तान) व रिवायात में भी उनके तज़क़िरे मौजूद थे।

आयात 25 से 35 तक

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ٢٥ أَن لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمِ الْيَوْمِ ٢٦ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا نَرِيكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرِيكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَادُوا بِإِسْنَابَادِي الرُّأْيِ وَمَا نَرِي لَكَ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكَ كَذِبِينَ ٢٧ قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي وَآتَنِي رَحْمَةً مِنْ عِنْدِهِ فَعُوبِتْ عَلَيْكُمْ أَنْزِلْ مُكُومَهَا وَاتَّمْ لَهَا كِرْهُونَ ٢٨ وَيَقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَا لَآ إِنْ أَجْرِي إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّهُمْ مُلْقُوا رَبِّهِمْ وَلَكِنِّي أَرِكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ٢٩ وَيَقَوْمِ مَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ طَرَدْتُهُمْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ٣٠ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلِكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ لَنْ يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنْفُسِهِمْ إِنِّي إِذَا لَبِنَ الظَّالِمِينَ ٣١ قَالُوا أَيُّنُوحُ قَدْ جَدَلْتَنَا فَكَثُرَتْ جِدَالُنَا فَاتَّبَعْنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ٣٢ قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيَكُمْ بِهِ اللَّهُ إِنْ شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ٣٣ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِي إِنْ أَرَدْتُ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ٣٤ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَىٰ إِجْرَائِي وَأَنَا بِرَبِّي عَمَّا تَجْرُمُونَ ٣٥

“और हमने भेजा नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ (तो आपने कहा) कि मैं तुम्हारे लिये एक खुला ख़बरदार करने वाला हूँ।”

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ

﴿٢٥﴾

आयत 26

“कि मत् पूजो किसी को सिवाय अल्लाह के। मुझे अंदेशा है तुम पर एक बड़े दर्दनाक दिन के अज़ाब का।”

أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ

يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿٢٦﴾

आयत 27

“तो उसकी क़ौम के उन सरदारों ने कहा जिन्होंने कुफ़्र की रविश इख़्तियार की थी कि हम नहीं देखते (ऐ नूह) आपको मगर अपने जैसा एक इंसान”

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا تَرِيدُ إِلَّا

بَشَرًا مِّثْلَنَا

उन्होंने कहा कि आप तो बिल्कुल हमारे जैसे इंसान हैं। आपमें हमें कोई ऐसी बात नज़र नहीं आती कि हम आपको अल्लाह का फ़रसतादा (भेजा हुआ) मान लें।

“और हम नहीं देखते मगर यह कि आपकी पैरवी करने वाले बज़ाहिर हम में अदना दर्जे के लोग हैं।”

وَمَا تَرِيدُكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَادُوا أَنْ يَبَادُؤَ

الرَّأْيِ

हमें बिला तामिल नज़र आ रहा है कि चंद मुफ़लिस, नादार और निचले तबक़े के लोग आपके गिर्द इकठ्ठे हो गये हैं, जबकि हमारे मआशरे का कोई भी मौअज़ज़ और माकूल आदमी आपसे मुतास्सिर नहीं हुआ।

“और हमें नज़र नहीं आती अपने मुक़ाबले में तुम लोगों में कोई भी फ़जीलत, बल्कि हमारा गुमान तो यही है कि तुम लोग झूठे हो।”

وَمَا تَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ

﴿٢٧﴾

आयत 28

“नूह ने कहा: ऐ मेरी क़ौम के लोगो! ज़रा ग़ौर करो अगर मैं (पहले से ही) अपने रब की तरफ़ से बय्यिना पर था”

قَالَ يَقُومِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي

यह लफ़्ज़ बय्यिना इस सूरत में बार-बार आयेगा। यानि मैंने अपनी ज़िन्दगी तुम्हारे दरमियान गुज़ारी है, मेरा किरदार, मेरा अख़लाक और मेरा रवैय्या सब कुछ तुम अच्छी तरह जानते हो। तुम लोग जानते हो कि मैं एक शरीफ़ अन्नफ़्स और सलीमुल फ़ितरत इंसान हूँ। लिहाज़ा तुम लोग ग़ौर करो कि पहले भी अगर मैं ऐसी शख़्सियत का हामिल इंसान था:

“और (अब) उसने मुझे अपने पास से ख़ास रहमत भी अता फ़रमा दी है (और यह वह चीज़ है) जिसको तुम्हारी नज़रों से पोशीदा रखा गया है।”

وَأَنْبِئْ رَحْمَةً مِنْ عِنْدِهِ فَعَبَّيْتُ عَلَيْكُمْ

यानि मेरे ऊपर अल्लाह की रहमत से वही आती है जिसकी कैफ़ियत और हक़ीकत का इदराक तुम लोग नहीं कर सकते। मैं इसके बारे में तुम लोगों को बता ही सकता हूँ, दिखा तो नहीं सकता।

“तो क्या हम चिपका दें तुम पर इसको (ज़बरदस्ती) जबकि तुम लोग इसको नापसंद करते हो?”

أَنْزَلْنَاهَا وَأَنْتُمْ لَهَا كَرِهُونَ ﴿٢٨﴾

अब अगर एक बात आप लोगों को पसंद नहीं आ रही तो हम ज़बरदस्ती उसको तुम्हारे सिर नहीं थोप सकते। हम आप लोगों को मजबूर तो नहीं कर सकते कि आप ज़रूर ही अल्लाह को अपना मअबूद और मुझे उसका रसूल मानो।

आयत 29

“और ऐ मेरी क्रौम के लोगो! मैं तुमसे इसके बदले कोई माल तलब नहीं करता। मेरा अज़्र तो अल्लाह ही के ज़िम्मे है, और जो लोग ईमान लाए हैं मैं उनको धुत्कारने वाला भी नहीं हूँ।”

وَيَقُومُ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَا لَا إِنْ أَجْرِي إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الَّذِينَ آمَنُوا

जिन लोगों के बारे में तुम कहते हो कि वो अदना तबक़े से ताल्लुक रखते हैं, वो सब अहले ईमान हैं, इस लिहाज़ से मेरे नज़दीक वो बहुत अहम और मौअज़ज़ लोग हैं। अब मैं तुम्हारे कहने पर उनको खुद से दूर नहीं हटा सकता।

“वो यक़ीनन अपने रब से मिलने वाले हैं, लेकिन मैं तुम्हें देखता हूँ कि तुम लोग जहालत में मुब्तला हो गये हो।”

إِنَّهُمْ مُلْقَوْنَ رَبَّهُمْ وَلَكِنِّي أَرَكُمُ قَوْمًا يَجْهَلُونَ ﴿٢٩﴾

आयत 30

“और ऐ मेरी क्रौम के लोगो! (ज़रा सोचो कि) अगर मैं इनको अपने यहाँ से भगा दूँगा तो कौन मेरी मदद करेगा अल्लाह के मुक़ाबले में?”

وَيَقُومُ مَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ طَرَدْتُهُمْ

यह सब सच्चे मोमिनीन, अल्लाह का ज़िक्र करने वाले और उससे दुआ माँगने वाले लोग हैं। अगर मैं तुम्हारे कहने पर इनको धुत्कार दूँ तो अल्लाह की नाराज़गी से मुझे कौन बचाएगा।

“तो क्या तुम लोग नसीहत अख़ज नहीं करते?”

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣٠﴾

आयत 31

“और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़जाने हैं”

وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ

मैंने कब दावा किया है कि अल्लाह के ख़जानों पर मेरा इख़्तियार है। यह वही बात है जो हम सूरतुल अनआम आयत 50 में मुहम्मदुन रसूल अल्लाह ﷺ के हवाले से पढ़ चुके हैं।

“और ना मैं ग़ैब का इल्म रखता हूँ, ना मैं कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ”

وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ

“और ना मैं यह कह सकता हूँ उन लोगों के बारे में जिन्हें तुम्हारी आँखें हकीर देख रही हैं कि अल्लाह उन्हें कोई ख़ैर नहीं देगा।”

وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ لَنْ يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا

क्या मालूम अल्लाह के यहाँ वो बहुत महबूब हों, अल्लाह उन्हें बहुत बुलंद मरातिब अता करे और उखरवी ज़िन्दगी में {فَرُوحٌ وَرِجَانٌ وَجَنَّتْ نَعِيمٌ} (अल् वाक़या:89) का मुस्तहिक ठहराए।

“अल्लाह खूब जानता है जो कुछ उनके दिलों में है (अगर मैं उनको दूर कर दूँ) तब तो यकीनन मैं खुद ज़ालिमों में से हो जाऊँगा।”

اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنْفُسِهِمْ إِنَِّّي إِذَا لَبِيتُ الظَّالِمِينَ ﴿٣١﴾

यह तो अल्लाह ही बेहतर जानता है कि कौन अपने ईमान के दावे में कितना मुखलिस है और किसके दिल में अल्लाह के लिये कितनी मोहब्बत है। अगर मैं तुम्हारे तानों से तंग आकर इन अहले ईमान को अपने पास से उठा दूँ तो मेरा शुमार ज़ालिमों में होगा।

आयत 32

“उन्होंने कहा: ऐ नूह! तुमने हमसे झगड़ा किया और खूब झगड़ा किया।”

قَالُوا يَنْبُحُ قَدْ جَدَلْتَنَا فَأَكْثَرْتَ جِدَالَنَا

जब हज़रत नूह अलै. की इन तमाम बातों का इल्मी, अक्ली और मन्तक़ी सतह पर कोई जवाब उन लोगों से ना बन पड़ा तो वो ख्वाह-म-ख्वाह ज़िद और हठधर्मी पर उतर आये कि बस जी बहुत हो गया बहस-मुबाहसा, अब छोड़ें इन दलीलों को और:

“पस ले आओ हम पर वह अज़ाब जिसकी तुम हमें धमकी दे रहे हो, अगर तुम सच्चे हो।”

فَاتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿٣٢﴾

आयत 33

“आपने फ़रमाया कि वह (अज़ाब) तो अल्लाह ही लायेगा तुम्हारे ऊपर अगर वह चाहेगा और फिर तुम उसको शिकस्त नहीं दे सकोगे।”

قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُمْ بِهِ اللَّهُ إِنْ شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ

﴿٣٣﴾

अगर उसने तुम्हें अज़ाब देने का फ़ैसला कर लिया तो फिर तुम लोग उसका मुक़ाबला करके उसके अज़ाब से बच कर भाग नहीं सकोगे।

आयत 34

“और तुम लोगों को मेरी नसीहत कुछ फ़ायदा नहीं दे सकती अगर मैं तुम्हें नसीहत करना भी चाहूँ, अगर अल्लाह ही तुम्हारी गुमराही का फ़ैसला कर चुका है।”

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نَصْحِي إِنْ أَرَدْتُ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ

अगर तुम्हारी ख्वाह-म-ख्वाह की ज़िद और हठधर्मी के बाइस अल्लाह ने तुम्हारी गुमराही के फ़ैसले पर मुहर सन्त कर (लगा) दी हो तो फिर नसीहत और ख़ैरख्वाही तुम्हारे हक़ में कुछ भी मुफ़ीद नहीं हो सकती।

“वही तुम्हारा रब है, और उसी की तरफ़ तुम लौटा दिए जाओगे।”

هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٣٤﴾

आयत 35

“क्या यह कहते हैं कि इस (मुहम्मद ﷺ) ने इस (कुरान) को गढ़ लिया है? आप ﷺ कहिए कि अगर मैंने इसे गढ़ लिया है तो इसका ववाल मुझ ही पर आयेगा, और मैं बरी हूँ उससे जो जुर्म तुम कर रहे हो।”

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَىٰ إِجْرَائِي وَأَنَا بِرَبِّي مِنَّمَا تُحَرِّمُونَ ﴿٣٥﴾

यह एक जुमला-ए-मौतरज़ा (सहानुभूतिशील बात) है जो हज़रत नूह अलै. के ज़िक्र के दरमियान आ गया है। इसमें रसूल अल्लाह ﷺ को मुखातिब करके फ़रमाया जा रहा है कि ऐ नबी ﷺ! यह तमाम बातें जो हम आपको बज़रिया-ए-वही

बताते हैं, जैसे हज़रत नूह और आपकी क्रौम की ग़फ़्त व शनीद नक़ल हुई, तो मुशरिकीने मक्का कहते हैं कि यह बातें और क्रिस्से आप खुद अपनी तरफ़ से बनाकर उन्हें सुनाते हैं। आप उन पर वाज़ेह कर दें कि मैं अगर वाक़ई यह जुर्म कर रहा हूँ तो इसका वबाल भी मुझ ही पर आयेगा। मगर आप लोग इसके दूसरे पहलु पर भी ग़ौर करें कि अगर यह क़लाम वाक़ई अल्लाह की तरफ़ से है तो इसको झुठला कर तुम लोग जिस जुर्म के मुरतक़िब हो रहे हो, उसके नतीजे भी फिर तुम लोगों को ही भुगतना हैं। बहरहाल मैं अलल ऐलान कह देता हूँ कि मैं तुम्हारे इस जुर्म से बिल्कुल बरी हूँ। इस जुमला-ए-मौतरज़ा के बाद हज़रत नूह अलै. के ज़िक्र का सिलसिला दोबारा वहीं से जोड़ा जा रहा है।

आयात 36 से 49 तक

وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾ وَاصْنَعِ الْفُلَكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٣٧﴾ وَيَصْنَعِ الْفُلَكَ ۖ وَكَلَّمَا مَرْ عَلَىٰهِ مَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ قَالَ إِنْ تَسْخَرُوا مِنِّي فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٣٨﴾ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُورُ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ وَمَا آمَنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٤٠﴾ وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ فَجَرَبْهَا وَمُرْسَهَا إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٤١﴾ وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَنَادَىٰ نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يَبْنَئِي أَرَأَيْتَ لَكَ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكَافِرِينَ ﴿٤٢﴾ قَالَ سَاوِي إِلَىٰ جَبَلٍ يَعْصِمُنِي مِنَ الْمَاءِ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَنْ رَحِمَ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُعْرِضِينَ ﴿٤٣﴾ وَقِيلَ يَا رَأْسُ ابْلَغِي مَاءَكُمْ وَيَسَاءَ أَقْلَعِي وَغِيضَ الْمَاءِ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾ وَنَادَىٰ نُوحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحَكَمِينَ ﴿٤٥﴾ قَالَ يُنُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ فَلَا تَسْأَلْنِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنِّي أَعْطُكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٤٦﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُنْ مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٤٧﴾ قِيلَ يُنُوحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِنَّا وَبَرَكَتٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ أُمَمٍ مِمَّنْ مَعَكَ وَأُمَمٌ سَنَسِتَبْتُهُمْ ثُمَّ يَمْسُهُمْ مِتْنَا عَذَابَ الْيَمِّ ﴿٤٨﴾ تِلْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا أَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هَذَا فَاصْبِرْ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٩﴾

आयत 36

“और वही कर दी गई नूह की तरफ़ कि अब कोई शख्स ईमान नहीं लाएगा तुम्हारी क्रौम में से सिवाय उन लोगों के जो ईमान ला चुके हैं, तो जो कुछ वो कर रहे हैं आप उसकी वजह से ग़मगीन ना हों।”

وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

आयत 37

“और (अब) आप कशती बनाइये हमारी निगाहों के सामने और हमारी हिदायत के मुताबिक”

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا

इस हुक्म से यूँ लगता है कि कशती की तैयारी के हर मरहले पर हज़रत नूह अलै. को अल्लाह तआला की तरफ़ से हिदायत मिल रही थीं, मसलन लम्बाई इतनी हो, चौड़ाई इतनी हो, लकड़ियाँ यूँ तैयार करो, वगैरह।

“और जो ज़ालिम हैं उनके बारे में अब मुझसे बात ना कीजिएगा।”

وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا

अब इन मुन्करीन में से किसी के बारे में कोई दरख्वास्त, दुआ या सिफ़ारिश वगैरह आपकी तरफ़ से ना आए, अब उसका वक़्त गुज़र चुका है।

“(अब) यह सबके सब ग़र्क़ किए जायेंगे।”

إِنَّهُمْ مُّعَذَّبُونَ ﴿٢٤﴾

आयत 38

“और आप कशती बना रहे थे और जब भी आपके पास से गुज़रते आपकी क़ौम के सरदार तो वो आपका मज़ाक उड़ाते।”

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكَلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأَ مِنْ قَوْمِهِ

سَخِرُوا مِنْهُ

हज़रत नूह अलै. और आपके अहले ईमान साथी जिस जगह और जिस इलाक़े में यह कशती बना रहे थे ज़ाहिर है कि वहाँ हर तरफ़ खुशकी थी, समुद्र या दरिया का कहीं दूर-दूर तक नामो निशान नहीं था। इन हालात में तसव्वुर करें कि क्या-क्या बातें और कैसे-कैसे तमस्खुर आमेज़ फ़िक़रे कहे जाते होंगे कि अब तो मालूम होता है कि इनकी बिल्कुल ही मत मारी गई है कि खुशकी पर कशती चलाने का इरादा है!

“नूह फ़रमाते कि अगर (आज) तुम हमसे तमस्खुर कर रहे हो तो (वो वक़्त करीब आने वाला है कि) हम भी तुमसे तमस्खुर करेंगे जैसे कि अब तुम तमस्खुर कर रहे हो।”

قَالَ إِنْ تَسْخَرُوا مِنِّي فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا

تَسْخَرُونَ ﴿٢٥﴾

आयत 39

“तो अनक़रीब तुम जान लोगे के किस पर आता है वह अज़ाब जो उसे रुसवा कर देगा, और किस पर इतराता है वह अज़ाब जो कायम रहने वाला (दाइमी) होगा।”

فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ

عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٩﴾

आयत 40

“यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आ गया और तनवर जोश से उबल पड़ा।”

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ

मशरिक़े वुस्ता के उस पूरे इलाक़े में एक बहुत बड़े सैलाब के वाज़ेह आसार भी मिलते हैं, इस बारे में तारीख़ी शहादतें भी मौजूद हैं और आज का इल्मे तबक़ातुल अर्द (Geology) भी इसकी तस्दीक़ करता है। H.G. Wells ने इस सैलाब की तावील यूँ की है कि यह इलाक़ा बहरा-ए-रोम (Mediterranean) की सतह से बहुत नीचा था, मगर समुद्र के मशरिक़ी साहिल यानि शाम और फ़लस्तीन के साथ-साथ मौजूद पहाड़ी सिलसिलों की वजह से समुद्र का पानी खुशकी की तरफ़ नहीं आ सकता था। (जैसे कराची के बाज़ इलाक़ों के बारे में भी कहा जाता है कि वो सतह समुद्र से बहुत नीचे हैं मगर

साहिली इलाक़े की सतह चूँकी बुलंद है इसलिये समुद्र का पानी इस तरफ़ नहीं आ सकता।) H.G. Wells का ख़्याल है कि इस इलाक़े में समुद्र से किसी वजह से पानी के लिये कोई रास्ता बन गया होगा जिसकी वजह से यह पूरा इलाक़ा समुद्र की शक्ल इख़्तियार कर गया। कुरान मजीद के अल्फ़ाज़ के मुताबिक़ इस सैलाब का आगाज़ एक ख़ास तनवर से हुआ था जिसके नीचे से पानी का चश्मा फूट पड़ा। उसके साथ ही आसमान से ग़ैर मामूली अंदाज़ में लगातार बारिशें हुईं और ज़मीन ने भी अपने चश्मों के दहाने खोल दिये। फिर आसमान और ज़मीन के यह दोनों पानी मिल कर अज़ीम सैलाब की सूरत इख़्तियार कर गये। सूरह अल क्रमर में इसकी तफ़सील बाँ अल्फ़ाज़ बयान की गई है: {فَفَتْحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَرٍ} (आयत:11-12) “पस हमने आसमान के दरवाज़े खोल दिये जिनसे लगातार बारिश बरसने लगी और ज़मीन को फाड़ दिया कि हर तरफ़ चश्मे फूट पड़े और यह दोनों तरह के पानी उस काम को पूरा करने के लिये मिल गये जो मुक़द्दर कर दिया गया था।”

“हमने कहा: (ऐ नूह अलै!) अपनी क़श्ती में तमाम जानदारों का एक-एक जोड़ा रख लो और अपने अहलो अयाल को भी, सिवाय उनके जिनके में बारे में पहले हुक्म गुज़र चुका है”

قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ

यह इस्तसनाई हुक्म हज़रत नूह अलै. की एक बीवी और आपके बेटे “याम” (कुन्आन) के बारे में था, जो उसी बीवी से था, जबकि आपके तीन बेटे हाम, साम और याफ़िस ईमान ला चुके थे और आपके साथ क़श्ती में सवार हुए थे। हज़रत साम और उनकी औलाद बाद में इसी इलाक़े में आबाद हुई थी। चुनाँचे क्रौमे आद, क्रौमे समूद और हज़रत इब्राहीम अलै. सब सामीउल नस्ल थे। हाम और याफ़िस दूसरे इलाक़ों में जाकर आबाद हुए और अपने-अपने इलाक़ों में उनकी नस्ल भी आगे चली।

“और उन लोगों को भी (सवार कर लें) जो ईमान लाये हैं, और नहीं ईमान लाये थे आपके साथ मगर बहुत ही कम।”

وَمَنْ آمَنَ وَمَا آمَنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ ۝

यहाँ पर लफ़ज़ क़लील अँग्रेज़ी मुहावरे “the little” के हम मायने है, यानि बहुत ही थोड़े, ना होने के बराबर।

आयत 41

“और नूह ने फ़रमाया: सवार हो जाओ इसमें, अल्लाह के नाम के साथ ही है इसका चलना भी और इसका लंगर अंदाज़ होना भी।”

وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرِبَهَا وَمُرسِدُهَا

जब तक अल्लाह चाहेगा और जिस सिम्त को इसे चलायेगा यह चलेगी और जब और जहाँ उसकी मशीयत होगी यह लंगर अंदाज़ हो जायेगी।

“यक़ीनन मेरा रब बख़्शने वाला, बहुत रहम करने वाला है।”

إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

आयत 42

“और वह चल रही थी उन सबको लेकर पहाड़ जैसी मौज़ों के दरमियान से”

وَهِيَ تَجْرِي فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ

“और नूह ने पुकारा अपने बेटे को और वह एक किनारे की तरफ़ था, कि ऐ मेरे बेटे आओ हमारे साथ (क़श्ती में) सवार हो जाओ और काफ़िरों के साथ मत रहो।”

وَنَادَى نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يُبْنَىٰ اِرْكَبْ مَعَنَا

وَلَا تَكُن مَعَ الْكَافِرِينَ ۝

आयत 43

“उसने कहा मैं अभी किसी पहाड़ पर चढ़ जाऊँगा जो मुझे पानी से बचा लेगा।”

“नूह ने कहा: आज के दिन कोई बचाने वाला नहीं है अल्लाह के अम्र से, सिवाय उसके जिस पर अल्लाह ही रहम फ़रमा दे।”

“और हाइल हो गई उन दोनों के दरमियान एक मौज और वह हो गया गर्क होने वालों में।”

इस गुफ्तगू के दौरान एक बड़ी मौज आई और उसकी ज़द में आकर आपकी नज़रों के सामने आपका वह बेटा गर्क हो गया।

قَالَ سَأُوۡبَىٰٓٓ إِلَىٰ جَبَلٍ يَّعۡصِمُنِي مِنَ الْمَآءِ

قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوۡمَ مِنۡ أَمۡرِ اللّٰهِ اِلَّا مَن رَّحِمَ

وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ ﴿٣٣﴾

आयत 44

“और हुक्म हुआ कि ऐ ज़मीन तू अपने पानी को निगल जा”

ज़मीन को अल्लाह तआला का हुक्म हुआ कि तू अपने इस पानी को अपने अंदर ज़ब कर ले। अल्लाह बेहतर जानता है कि इस अमल में कितना वक़्त लगा होगा। बहरहाल हुक्मे इलाही के मुताबिक़ पानी ज़मीन में ज़ब हो गया।

“और ऐ आसमान तू भी अब थम जा, और पानी सुखा दिया गया, और फ़ैसला चुका दिया गया”

“और कश्ती जूदी पहाड़ पर जा ठहरी”

وَقِيلَ يَا اَرْضُ ابْلَعِي مَآءَكَ

وَيَسۡمَآءُ اَقْلَعِي وَغِيۡضَ الْمَآءِ وَقُۡصِيۡ الْاَمۡرُ

وَاسۡتَوۡثَ عَلَى الْجُوۡدِيِّ

कोहे अरारात में “जूदी” एक चोटी का नाम है। यह दुश्वार गुज़ार पहाड़ी सिलसिला आज़र बायजान के इलाक़े और तुर्की की सरहद के करीब है। किसी ज़माने में एक ऐसी ख़बर भी मशहूर हुई थी कि इस पहाड़ी सिलसिले की एक चोटी पर किसी जहाज़ के पायलट ने कोई क़श्तीनुमा चीज़ देखी थी। बहरहाल कुरान का फ़रमान है कि हम उस क़श्ती को महफूज़ रखेंगे और एक ज़माने में यह निशानी बन कर दुनिया के सामने आयेगी (अल्अन्कबूत :15)। चुनाँचे मालूम होता है कि वह कश्ती अब भी कोहे जूदी की चोटी पर मौजूद है और एक वक़्त आयेगा जब इंसान उस तक रसाई हासिल कर लेगा।

“और कह दिया गया दूरी (हलाकत) है उस क्रौम के लिये जो ज़ालिम थी।”

وَقِيلَ بُعۡدًا لِلۡقَوۡمِ الظَّالِمِيۡنَ ﴿٣٤﴾

यानि उस क्रौम का नामो निशान मिटाकर हमेशा के लिये नस्यम मन्सिया कर दिया गया।

आयत 45

“और पुकारा नूह ने अपने रब को और कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरा बेटा मेरे अहल में से था”

“और यक़ीनन तेरा वादा सच्चा है और तू तमाम हाकिमों में सबसे बड़ा और सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला हाकिम है।”

परवरदिगार तूने वादा किया था कि तू मेरे अहल को बचा लेगा, जबकि मेरा बेटा तो मेरी आँखों के सामने डूब गया।

وَنَادَىٰ نُوحٌ رَّبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابۡنِي مِنۡ اٰهۡلِي

وَإِنَّ وَعۡدَكَ الْحَقُّ وَأَنتَ أَحۡكَمُ الْحَاكِمِيۡنَ ﴿٣٥﴾

आयत 46

“अल्लाह ने फ़रमाया कि ऐ नूह! वह तुम्हारे अहल में से नहीं है, उसके आमाल ग़ैर सालेह हैं।”

قَالَ يَنْوُحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ

उसके नज़रियात, उसके अक्काइद, उसका किरदार सब काफ़िराना थे। वह आपके अहल में कैसे शुमार हो सकता है? नबी का घराना सिर्फ़ नसब से नहीं बनता बल्कि ईमान व अमले सालेह से बनता है। चुनाँचे वह आपके नस्बी ख़ानदान का एक रुकन होने के अलल रग़म आपके ईमानी व अख़लाकी ख़ानदान का फ़र्द नहीं था।

“तो आप मुझसे उस चीज़ का सवाल ना करें जिसके बारे में आपको इल्म नहीं।”

فَلَا تَسْأَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ

“मैं आपको नसीहत करता हूँ कि आप ज़बात से मग़लूब हो जाने वालों में से ना बनें।”

إِنِّي أَعْطُكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝

यह बहुत सख़्त अंदाज़ है। याद कीजिए कि सूरतुल अनआम की आयत 35 में मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ से भी इसी तरह के अल्फ़ाज़ फ़रमाए गये हैं।

आयत 47

“नूह ने अज़्र किया: ऐ मेरे परवरदिगार! मैं तेरी पनाह तलब करता हूँ इससे कि मैं तुझसे ऐसी बात का सवाल करूँ जिसके बारे में मेरे पास कोई इल्म नहीं है।”

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ

“और अगर तूने मुझे माफ़ ना फ़रमा दिया और मुझ पर रहम ना फ़रमाया तो मैं हो जाऊँगा ख़सारा पाने वालों में।”

وَالَا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُنْ مِنَ الْخَسِرِينَ ۝

आयत 48

“हुक्म हुआ ऐ नूह उतर जाओ हमारी तरफ़ से सलामती और बरकतों के साथ, जो आप पर भी होंगी और उन उम्मतों पर भी जो आपके साथियों की नस्लों से वुजूद में आयेंगी।”

قِيلَ يَنْوُحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ وَعَلَى أُمَمٍ مِّنْ مَّعَكَ

आम ख़याल यही है कि इस तूफ़ान के बाद नस्ले इंसानी हज़रत नूह अलै. के इन तीनों बेटों से चली थी। इस सिलसिले में माहिरीन इल्मुल इन्साब की मुख़्तलिफ़ आरा (राय) का खुलासा यह है कि आपके बेटे हज़रत साम उस इलाक़े में आबाद हो गये, जबकि हज़रत याफ़िस की औलाद वस्ती एशिया के पहाड़ी सिलसिले को अबूर करके रूस के मैदानी इलाक़ों में जा बसी। फिर वहाँ से उनमें से कुछ लोग सहाराए गोबी को अबूर करके चीन की तरफ़ चले गये। चुनाँचे वस्ती एशिया के मुमालिक से लेकर चीन, उसके मल्हका इलाक़ों और पूरे यूरोप में इसी नस्ल के लोग आबाद हैं। इनके अलावा Anglo Saxons और शुमाली अक्रवाम के लोग भी इसी नस्ल से ताल्लुक़ रखते हैं।

दूसरी तरफ़ हज़रत हाम की नस्ल के कुछ लोग मशरिक़ की तरफ़ कूच करके ईरान और फिर हिन्दुस्तान में आ बसे। जबकि इनमें से बाज़ दूसरे क़बाईल ज़ज़ीरा नुमाए सीना को अबूर करके मग़रिब में सूडान और मिस्र की तरफ़ चले गये। चुनाँचे आरयाई अक्रवाम, रोमन, जर्मन, यूनानी और मशरिक़ी यूरोप के तमाम लोग हज़रत हाम ही की नस्ल से ताल्लुक़ रखते हैं, वल्लाहु आलम।

“और कुछ और क़ौमें (भी होंगी) जिन्हें हम (दुनिया के) कुछ फ़ायदे देंगे, फिर उनको हमारी तरफ़ से एक दर्दनाक अज़ाब आ पकड़ेगा।”

وَأُمَّمٌ سَنَنْتَعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

जैसा कि बाद में क्रौमे आद व क्रौमे समूद पर अज़ाब आया है।

आयत 49

“(ऐ मुहम्मद صلی اللہ علیہ وسلم) यह ग़ैब की चीज़ों में से है जो हम वही कर रहे हैं
आपकी तरफ़ा”

تِلْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ

“इससे पहले ना आप इनको जानते थे और ना आपकी क्रौमा”

مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا أَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هَذَا

“तो आप सब्र कीजिए, यक्रीनन अंजामकार भला होगा अहले तक़वा ही
का।”

فَاصْبِرْ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٤٩﴾

आप हिम्मत और सब्र व इस्तक्रामत के साथ अपना काम किए चले जायें। यक्रीनन अंजामकार की कामयाबी अहले तक़वा ही के लिये है।

आयात 50 से 60 तक

وَالِى عَادِ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ إِن أَنْتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ﴿٥٠﴾ يَقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِنْ أَجَرْتَنِى إِلَّا عَلَى الَّذِى فَطَرَنِى أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾ وَيَقَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِينَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا يَهُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٥٣﴾ إِنْ نَقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ قَالَ إِنِّى أُشْهِدُ اللَّهَ وَأَشْهَدُوا أَنِّى بَرِئٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾ مِنْ دُونِهِ فَكِيدُونِى جَمِيعًا ثُمَّ لَا تُنْظَرُونَ ﴿٥٥﴾ إِنِّى تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّى عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٦﴾ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّى قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا إِنَّ رَبِّى عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِیظٌ ﴿٥٧﴾ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَنَجَّيْنَاهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ عَادٌ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٥٩﴾ وَأَتَّبَعُوا فِى هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ أَلَا بُعْدًا لِعَادٍ قَوْمِ هُودٍ ﴿٦٠﴾

आयत 50

“और क्रौमे आद की तरफ़ (हमने भेजा) उनके भाई हूद अलै. को।”

وَالِى عَادِ أَخَاهُمْ هُودًا

क्रौमे आद हज़रत साम की नस्ल से थी। यह क्रौम अपने ज़माने में जज़ीरा नुमाए अरब के जुनूब में आबाद थी। आज-कल यह इलाक़ा लक़ व दक़ सहरा है।

“आप अलै. ने कहा: ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की इबादत करो, तुम्हारा कोई मअबूद नहीं अल्लाह के सिवा। (इस सिलसिले में) तुम महज़ झूठ गढ़ते हो।”

قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ إِن أَنْتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ ﴿٥٠﴾

यह जो तुमने मुख्तलिफ़ नामों से मअबूद गढ़ रखे हैं इनकी कोई हक़ीक़त नहीं है, यह तुम महज़ इफ़तरा कर रहे हो।

आयत 51

“ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं तुमसे किसी अज़्र का तालिब नहीं हूँ। नहीं है मेरा अज़्र मगर उसी के ज़िम्मे जिसने मुझे पैदा फ़रमाया है। तो क्या तुम लोग अक़ल से काम नहीं लेते?”

يَقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِن أَجْرِي إِلَّا عَلَى الَّذِي فَطَرَنِي أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾

आयत 52

“और मेरी क़ौम के लोगो! अपने परवरदिगार से इस्तग़फ़ार करो, फिर उसी की तरफ़ रुजूअ करो”

وَيَقَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ

शिक, बुतपरस्ती को छोड़ दो और अल्लाह से अपने इस गुनाह की माफ़ी माँगो।

“वह आसमान से तुम पर ख़ूब पानी बरसाएगा, और तुम्हारी मौजूदा कुव्वत में मज़ीद कुव्वत का इज़ाफ़ा फ़रमाएगा, और तुम रूगरदानी ना करो मुजरिम बन कर।”

يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا وَيَزِيدُكُمْ قُوَّةً إِلَى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا عُجْرًا مَّيِّنَ ﴿٥٢﴾

कुरान हकीम के कई मक़ामात से यह बात मालूम होती है कि जब अल्लाह तआला किसी क़ौम की तरफ़ अपना रसूल अपने पैग़ाम के साथ भेजता है तो अब उस क़ौम की क़िस्मत उस पैग़ाम के साथ मुअल्लक़ हो जाती है। अगर वो क़ौम रसूल पर ईमान ले आती है और उस पैग़ाम को कुबूल कर लेती है तो अल्लाह तआला उस पर अपनी नेअमतों के दरवाज़े खोल देता है, ब-सूरते दीगर उसे तबाह व बर्बाद कर दिया जाता है।

आयत 53

“उन्होंने कहा कि ऐ हूद! तुम हमारे पास कोई सनद लेकर नहीं आये”

قَالُوا يَهُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ

यानि आप जो दावा करते हैं कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो इसके सबूत के तौर पर आपके पास कोई खुली निशानी, सनद या मौअज़्ज़ा नहीं है।

“और हम नहीं हैं छोड़ने वाले अपने मअबूदों को सिर्फ़ तुम्हारे कहने पर, और हम तुम्हारी बात मानने वाले नहीं हैं।”

وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٥٣﴾

आयत 54

“हम तो यहीं कहते हैं कि तुम पर हमारे मअबूदों में से किसी की मार पड़ी है।”

إِن نَقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوْءٍ

यानि हमारा ख्याल तो यही है कि आप जो हमारे मअबूदों का इन्कार करते हैं और उनकी शान में गुस्ताखी करते रहते हैं इसकी वजह से आपको उनकी तरफ़ से सज़ा मिली है और आपका दिमागी तवाज़ुन ठीक नहीं रहा। इसी लिये आप बहकी-बहकी बातें करने लगे हैं।

“हूद अलै. ने कहा कि मैं अल्लाह को गवाह ठहराता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि मैं बरी हूँ उनसे जिन्हें तुम शरीक ठहरा रहे हो, उसके सिवा”

قَالَ إِنِّي أَشْهَدُ اللَّهَ وَأَشْهَدُؤَا إِنِّي بَرِيٌّ عَمَّا تُشْرِكُونَ
﴿٥٧﴾ مِنْ دُونِهِ

मैं तुम्हारे इन झूठे मअबूदों और तुम्हारे शिर्क के इस जुर्म से बिल्कुल बरी और बेज़ार हूँ। यह वही बात है जो हज़रत इब्राहीम अलै. ने अपनी क्रौम से फ़रमाई थी।

आयत 55

“पस तुम सब मिलकर मेरे खिलाफ़ जो चालें चल सकते हो चल लो, फिर मुझे ज़रा मोहलत ना दो।”

فَكِيدُونِي بِمِيعَاتٍ لَّمْ لَا تُنْظَرُونَ ﴿٥٥﴾

आयत 56

“मैंने तो तव्वकुल किया है अल्लाह पर जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है।”

إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ

“नहीं है कोई जानदार मगर उसकी पेशानी उसकी गिरफ्त में है।”

مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا

यानि हर जानदार की क्रिस्मत और तकदीर अल्लाह के हाथ में है। हुज़ूर ﷺ से भी एक मशहूर दुआ में ये अल्फ़ाज़ मन्कूल हैं: (فِي قَبْضَتِكَ نَاصِيَتِي يَدِكَ) (3) यानि ऐ अल्लाह! मैं तेरे ही कब्ज़ा-ए-कुदरत में हूँ, मेरी पेशानी तेरे ही हाथ में है।

“यक़ीनन मेरा रब तो सीधी राह पर है।”

إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٦﴾

अगर अल्लाह तक रसाई हासिल करनी है, अगर उसे पाना है तो वह तौहीद और अदल व इंसफ़ की सीधी राह पर ही मिलेगा।

आयत 57

“फिर अगर तुम पीठ मोड़ मोड़ लो (इंकार करो) तो मैंने पहुँचा दिया है तुम्हें (वह पैगाम) जो मुझे देकर तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है।”

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ

“और मेरा रब तुम्हारी जगह किसी और क्रौम को ले आयेगा, और तुम उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकोगे। यक़ीनन मेरा रब हर चीज़ पर निगहबान है।”

وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا

إِنَّ رَبِّي عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيفٌ ﴿٥٧﴾

आयत 58

“और जब हमारा (अज़ाब का) फैसला आ गया तो हमने बचा लिया हूद अलै. को और आपके अहले ईमान साथियों को अपनी रहमत से।”

وَلَهَا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ

بِرَحْمَةٍ مِنَّا

“और हमने उन्हें निजात दे दी एक बहुत ही भारी अज़ाब से।”

وَنَجَّيْنَاهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾

आयत 59

“यह थी क्रौमे आद, जिन्होंने इंकार किया अपने रब की आयात का और नाफ़रमानी की उसके रसूलों की”

وَتِلْكَ عَادٌ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ

यहाँ पर उन तमाम अंबिया को भी रसूल कहा गया है जो हज़रत हूद अलै. से पहले इस क्रौम में मबऊस हुए। अक्सर इस तरह होता रहा है कि किसी क्रौम में पहले बहुत से अम्बिया किराम अलै. उनके मुअल्लिमिन (अध्यापक) की हैसियत से आते रहे और फिर आखिर में एक रसूल आया। और जैसा कि क़बूल अज़ भी नबी और रसूल के फ़र्क़ के ज़िम्न में बयान हो चुका है कि कुरान में यह दोनों अल्फ़ाज़ अगर अलग-अलग आयें तो एक दूसरे की जगह पर आ सकते हैं, लेकिन अगर यह दोनों अल्फ़ाज़ इकट्ठे एक जगह आयें तो फिर इनमें से हर लफ़ज़ अपने ख़ास मायने देता है।

“और उन्होंने पैरवी की हर सरकश व दुश्मने हक़ के हुक्म की।”

وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٥٩﴾

आयत 60

“और उनके पीछे लगा दी गई लानत इस दुनिया में भी और क़यामत के दिन (के लिये) भी।”

وَاتَّبَعُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ

“आगाह हो जाओ, क्रौमे आद ने अपने रब का कुफ़्र किया था। सुन लो, फटकार है आद पर जो क्रौमे हूद थी।”

إِنَّا إِنَّا عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا بَعْدَ الْقَوْمِ هُودٍ

﴿٦٠﴾

आयात 61 से 68 तक

وَالِى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنِّ إِلَهٍ غَيْرُهُ هُوَ أَنشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوا لَهُ ثُمَّ تَوْبُوا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُّجِيبٌ ﴿٦١﴾ قَالُوا يٰصَالِحُ قَدْ كُنْتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَذَا أَتَنْهَانَا أَنْ نَعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ مَرْيَبٍ ﴿٦٢﴾ قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَيْنِي مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ عَصَيْتُهُ فَمَا تَزِيدُونَنِي غَيْرَ تَخْسِيرٍ ﴿٦٣﴾ وَيَقَوْمِ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ فَذُرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ﴿٦٤﴾ فَعَقَرُوهَا فَقَالَ مَثَعُوَانِي دَارَكُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ذَلِكُمْ وَعَدُّ غَيْرُ مَكْدُوبٍ ﴿٦٥﴾ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صَالِحًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ﴿٦٦﴾ وَأَخَذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جُثَيْنٍ ﴿٦٧﴾ كَانُوا يَمْنُونُ ﴿٦٨﴾

आयत 61

“और समूद की तरफ़ (हमने भेजा) उनके भाई सालेह को।”

وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا

क्रौमे आद में से जो लोग बचे थे वो अपने इलाक़े से आगे वस्ती इलाक़े की तरफ़ जाकर “हजर” में आबाद हुए और उन लोगों की नस्ल में से समूद नाम की एक बड़ी क्रौम उभरी। फिर वक़्त के साथ-साथ जब उस क्रौम के अंदर भी वही खराबियाँ पैदा हो गईं और वो लोग भी जब बुतपरस्ती और शिर्क की लानत में मुब्तला हो गये तो उनकी इस्लाह के लिये हज़रत सालेह अलै. को मबऊस किया गया।

“आप अलै. ने फ़रमाया: ऐ मेरी क्रौम के लोगो! अल्लाह की बंदगी करो, तुम्हारा कोई मअबूद उसके सिवा नहीं है।”

قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ

“उसने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और उसमें तुमको आबाद किया, तो उससे अपने गुनाह को बख़्शवाओ, फिर उसी की जनाब में रुजूअ करो।”

هُوَ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا

فَاسْتَغْفِرُوا لَهُ ثُمَّ تَوَبُّوا إِلَيْهِ

“यक़ीनन मेरा रब करीब है और दुआ का कुबूल करने वाला है।”

إِنَّ رَبِّي قَرِيبٌ مُّجِيبٌ ①

आयत 62

“उन्होंने कहा कि ऐ सालेह! आपसे तो हमारी बड़ी उम्मीदें वाबस्ता थीं इससे पहले”

قَالُوا يٰصَالِحُ قَدْ كُنْتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَذَا

यानि आप तो अपने अख़लाक़ व किरदार की वजह से पूरी क्रौम की उम्मीदों का मरकज़ थे। हमें तो तबक्को थी कि आप अपनी सलाहियतों के सबब अपने आबा व अजदाद और पूरी क्रौम का नाम रौशन करेंगे, मगर आपने यह क्या किया? आपने तो अपने बाप-दादा के दीन और उनके तौर-तरीकों पर ही तन्कीद (आलोचना) शुरू कर दी। आपकी इन बातों से तो पूरी क्रौम की उम्मीदों पर पानी फिर गया है।

“क्या आप हमें रोक रहे हैं उनको पूजने से जिनको हमारे आबा व अजदाद पूजते थे? और यक़ीनन जिस चीज़ की तरफ़ आप हमें बुला रहे हैं उसके बारे में हमें बहुत शक़क़ व शुबहात हैं।”

أَتَنْهَاهُمْ أَنْ تُعْبَدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا

تَدْعُونَا إِلَيْهِ مُرِيبٌ ②

आपकी इस दावते तौहीद के बारे में हमें सख़्त शुबह है जिसने हमें खलजान में डाल दिया है। हमारा दिल आपकी इस दावत पर मुत्मईन नहीं है।

आयत 63

“सालेह अलै. ने कहा: ऐ मेरी क्रौम के लोगो! ज़रा सोचो तो सही, अगर मैं (पहले से ही) अपने रब की तरफ़ से बय्यिना पर था”

قَالَ يٰقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّي

हज़रत सालेह अलै. ने भी वही बात कही कि देखो मेरी गुज़िश्ता ज़िन्दगी तुम्हारे सामने है। मेरा किरदार और मेरा अख़लाक़ गवाह है कि मैं इससे पहले तुम्हारे मआशरे का एक सालेह किरदार और सलीमुल फ़ितरत इंसान था।

“और अल्लाह ने मुझे अपने पास से ख़ास रहमत भी अता कर दी”

وَإِنِّي مِنْهُ رَحْمَةٌ

और अब मेरे पास अल्लाह की तरफ़ से वही भी आ गई है, अल्लाह ने अपनी रहमते ख़ास से मुझे नुबुवत से भी सरफ़राज़ फ़रमा दिया है।

“तो अब अगर मैं उसकी नाफ़रमानी करूँ तो मुझे अल्लाह (की पकड़) से कौन बचायेगा? तुम तो इज़ाफ़ा नहीं करोगे मेरे लिये मगर ख़सारे ही में!”

فَمَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ عَصَيْتُهُ ۖ فَمَا تَزِيدُونَنِي
غَيْرَ تَخْسِيرٍ ۝۱۳

यानि अगर मैं अपनी फ़ितरते सलीम और वही-ए-इलाही की रहनुमाई के बावजूद इस दावते हक़ को छोड़ कर तुम्हें खुश करने के लिये गुमराही का तरीक़ा इख़्तियार कर लूँ तो मुझे अल्लाह तआला क गिरफ़्त से कौन बचायेगा? तुम्हारी इस तरह की बातों से तो मालूम होता है कि तुम लोग मेरी तबाही के दर पे हो।

आयत 64

“और (देखो) मेरी क़ौम के लोगों! यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक निशानी है, इसे छोड़े रखो कि यह चरती फिरे अल्लाह की ज़मीन में”

وَيَقَوْمٍ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي
أَرْضِ اللَّهِ

“और (देखना) किसी बुरे इरादे से इसे हाथ ना लगाना, वरना तुम्हें आ पकड़ेगा एक क़रीबी अज़ाब।”

وَلَا تَمْسُوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ۝۱۴

वह अज़ाब अब दूर नहीं है और उसे आते कुछ देर ना लगेगी।

आयत 65

“तो उन्होंने उसकी कून्चें काट डालीं”

فَعَقَرُوهَا

उन्होंने बाक्रायदा मन्सूबाबंदी करके ऊँटनी को हलाक कर डाला।

“तो सालेह अलै. ने फ़रमाया: अब तुम अपने घरों में तीन दिन तक रह बस लो। यह वह वादा है जो झूठा साबित नहीं होगा।”

فَقَالَ تَمَتَّعُوا فِي دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ذَلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ
مَكْذُوبٍ ۝۱۵

आयत 66

“तो जब हमारा फ़ैसला आ गया तो हमने निजात दी सालेह अलै. को और उनको जो आपके साथ ईमान लाए थे, अपनी रहमत से”

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صَالِحًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
بِرَحْمَةٍ مِنَّا

“और उस दिन की रुसवाई से (उन्हें बचा लिया)। यक़ीनन आपका परवरदिगार बहुत ताक़तवर, ज़बरजस्त है।”

وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝۱۶

आयत 67

“और उन ज़ालिमों को पकड़ लिया एक चिंघाड़ ने तो वो अपने घरों के अंदर औंधे पड़े रह गये।”

وَآخِذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ
جُثَمِينَ ۝۱۷

आयत 68

“गोया वो कभी उनमें बसे ही नहीं थे।”

كَانَ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا

“आगाह हो जाओ, यकीनन समूद ने अपने रब का कुफ़ किया। आगाह हो जाओ फिटकार है समूद पर!”

آلَإِنَّ مُمُودًا كَفَرُوا بِهِمْ ۖ أَلَا بُعْدَ الْإِثْمُودِ ﴿٦٨﴾

आयात 69 से 83 तक

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَىٰ قَالُوا سَلَامٌ قَالَ سَلَّمَ فَمَا لَبَّكَ أَنْ جَاءَ بِعِجْلٍ حَنِئِدٍ ﴿٦٩﴾ فَلَبَّارًا أَيُّدِيهِمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكِيرُهُمْ وَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً قَالُوا لَا تَخَفْ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ لُّوطٍ ﴿٧٠﴾ وَامْرَأَتُهُ قَابِئَةُ فَضْحِكَةٍ فَبَشَّرْنَا بِهَا إِبْرَاهِيمَ وَوَرَأَىٰ إِسْحَاقَ يَعْقُوبَ ﴿٧١﴾ قَالَتْ يُونُكَلِّي ۖ أَلَيْدًا وَأَنَا عَجُوزٌ ۖ وَهَذَا بَعْلِي شَيْخًا ۚ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ﴿٧٢﴾ قَالُوا اتَّعَجِبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ وَرَحِمَتِ اللَّهُ وَبَرَكَتُهُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ ۚ إِنَّهُ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ ﴿٧٣﴾ فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَىٰ يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ ﴿٧٤﴾ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ﴿٧٥﴾ يَا إِبْرَاهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَذَا ۖ إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَإِنَّهُمْ آتِيهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ﴿٧٦﴾ وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِئَاءَ بِهِمْ ۖ وَقَبِيلُهُمْ مِنْهُمْ عَصِيبٌ ﴿٧٧﴾ وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ ۖ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۚ قَالَ يَقَوْمُ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي هُنَّ أَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَلَا تَخْزُونِ فِي صَیْفِي ۖ أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَشِيدٌ ﴿٧٨﴾ قَالُوا الْقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ﴿٧٩﴾ قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةٌ أَوْ آوِي إِلَىٰ رُكْنٍ شَدِيدٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوا يَلُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَصِلُوا إِلَيْكَ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ ۖ إِلَّا أَمْرًا تَكُنُ إِنَّهُ مَصِيبٌ مِمَّا آصَابَهُمْ ۚ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ۖ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ﴿٨١﴾ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا ۖ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِنْ سِجِّيلٍ مَنضُودٍ ﴿٨٢﴾ مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ۖ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ﴿٨٣﴾

अब इन आयात में हज़रत इब्राहीम अलै. का ज़िक्र आ रहा है, मगर आपका ज़िक्र अंबिया अरुसुल के तौर पर नहीं बल्कि बिल्कुल मुख्तलिफ़ अंदाज़ में है। यहाँ रसूलों के ज़िक्र में एक खूबसूरत तकसीम को मद्देनज़र रखें, कि इस सूरत में पहले तीन रसूल जिनका ज़माना हज़रत इब्राहीम अलै. से पहले का है (हज़रत नूह, हज़रत हूद और हज़रत सालेह अलै.) इनका ज़िक्र करने के बाद हज़रत इब्राहीम अलै. का मुख्तसरन क़ससुल नबियीन के अंदाज़ में आया है, आपके ज़िक्र के बाद फिर तीन रसूलों का तज़किरा है जो आप ही की नस्ल में से थे, बल्कि उनमें से हज़रत लूत अलै. तो आपके भतीजे और हम असर भी थे। यहाँ पर हज़रत लूत अलै. का ज़िक्र अंबिया अरुसुल के अंदाज़ में आया है और इसी के ज़ेल में हज़रत इब्राहीम अलै. का ज़िक्र है। जब हज़रत लूत अलै. की क़ौम पर अज़ाब भेजने का फ़ैसला हुआ तो अज़ाब के फ़रिश्ते बराहेरास्त हज़रत लूत अलै. के पास जाने के बजाय पहले हज़रत इब्राहीम अलै. के पास गये और वहाँ ना सिर्फ़ क़ौमे लूत पर अज़ाब के बारे में उनका हज़रत इब्राहीम अलै. के साथ मक़ालमा (बातचीत) हुआ बल्कि फ़रिश्तों ने हज़रत सारह अलै. को हज़रत इस्हाक़ अलै. की विलादत की खुशख़बरी भी दी।

याद रहे कि सूरतुल आराफ़ में भी जब इन छः रसूलों का तज़क़िरा अंबिया अर्रसूल के अंदाज़ में हुआ तो वहाँ भी हज़रत इब्राहीम अलै. का ज़िक्र नहीं किया गया और जब सूरतुल अनआम (जो सूरतुल आराफ़ की जुड़वाँ सूरत है) में हज़रत इब्राहीम का तज़क़िरा आया तो अंबिया अर्रसूल के अंदाज़ में नहीं बल्कि क़ससुल नबिय्यीन के अंदाज़ में आया है। यानि हज़रत इब्राहीम अलै. का ज़िक्र कुरान हकीम में इस तरह कहीं भी नहीं आया कि आपको अपनी क़ौम की तरफ़ मबऊस किया गया हो, आपने अपनी क़ौम को दावते तौहीद दी हो, क़ौम उस दावत से मुन्कर हुई हो और फिर उस पर अज़ाब भेज दिया गया हो।

आयत 69

“और इब्राहीम के पास हमारे फ़रस्तादे (फ़रिश्ते) बशारत लेकर आये।
उन्होंने कहा: सलाम!”

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى قَالُوا سَلَامًا

“इब्राहीम ने भी (जवाब में) सलाम कहा, फिर कुछ देर ना गुज़री कि
आप ले आये एक बछड़ा भुना हुआ।”

قَالَ سَلَامٌ فَمَا لَبِثَ أَنْ جَاءَ بِعِجْلٍ حَنِيذٍ ۝١٩

महमानों की आमद के फ़ौरन बाद हज़रत इब्राहीम अलै. ने उनकी ज़ियाफ़त के लिये एक बछड़ा ज़िबह किया और उसे भून कर उनके सामने पेश कर दिया।

आयत 70

“फिर जब आपने देखा कि उनके हाथ उसकी तरफ़ नहीं बढ़ रहे हैं”

فَلَبَّارًا أَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ

“तो आपने उनमें अजनबियत पाई और उनकी तरफ़ से एक ख़ौफ़ महसूस
किया।”

نَكَرَهُمْ وَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً

जब हज़रत इब्राहीम अलै. ने महसूस किया कि रस्मी इसरार के बावजूद भी मेहमान किसी तौर खाने की दावत कुबूल करने पर अमादा नहीं हो रहे तो अब आप बजा तौर पर खटके कि यह पुर इसरार (रहस्यमय) लोग कौन हैं और यहाँ किस इरादे से आए हैं? उस ज़माने में यह रिवाज भी था कि अगर कोई शख्स दुश्मनी की गर्ज से किसी के पास जाता तो उसके यहाँ का खाना नहीं खाता था। इसी लिये हज़रत इब्राहीम अलै. को उनकी तरफ़ से ख़द्शा (डर) महसूस हुआ। जब उन्होंने आपका यह ख़ौफ़ महसूस किया तो:

“उन्होंने कहा: आप डरिये नहीं, असल में तो हम भेजे गये हैं क़ौमे लूत
की तरफ़।”

قَالُوا لَا تَخَفْ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ لُّوطٍ ۝٢٠

यानि हम फ़रिश्ते हैं और हमें क़ौमे लूत की तरफ़ अज़ाब की गर्ज से भेजा गया है।

आयत 71

“और आपकी बीबी (कहीं करीब) खड़ी थी तो वह हँस पड़ी”

وَأَمْرَأَتُهُ قَائِمَةٌ فَضَحِكَتْ

हज़रत सारह अलै. करीब ही कहीं पर्दे के पीछे खड़ी यह सारी बातें सुन रही थीं तो आप शायद हज़रत इब्राहीम अलै. की हालत पर हँस पड़ी कि मेरे शौहर फ़रिश्तों से ख़ौफ़ज़दा हो गये थे।

“तो हमने उसे बशारत दी इस्हाक़ अलै. की और इस्हाक़ के बाद याक़ूब
अलै. की”

فَبَشَّرْنَاهَا بِإِسْحَقَ ۖ وَمِنْ وَرَاءِ إِسْحَقَ يَعْقُوبَ ۝٢١

यानि फ़रिश्तों ने हज़रत सारह अलै. को हज़रत इस्हाक़ की विलादत की खुश ख़बरी दी और साथ ही हज़रत याक़ूब यानि पोते की भी। उस वक़्त हज़रत हाजरा के यहाँ हज़रत इस्माईल अलै. की विलादत हो चुकी थी। हज़रत सारह हज़रत

“यक्रीनन इब्राहीम बहुत ही बुर्दवार, नरम दिल और अल्लाह की जनाब में रुजूअ करने वाले थे।”

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ حَلِيمٌ ۝٢٥

यहाँ हज़रत इब्राहीम अलै. की यह तीन सिफ़ात एक साथ जमा फ़रमा कर आपकी बहुत क़द्र अफ़ज़ाई भी फ़रमाई गई है और आपके मुजादला करने की वजह भी बयान फ़रमा दी गई है कि चूँकि आप बहुत हलीमुल तबअ (नर्म स्वभाव) और दिल के नर्म थे, इसी वजह से आपने आख़री हद तक कोशिश की कि अज़ाब के टलने की कोई सूरत पैदा हो जाये। इसी तरह मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की तबीयत मुबारक में भी खुसूसी नर्मि थी और हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ि. को भी अल्लाह ने तबीयत की ख़ास नर्मि अता कर रखी थी।

आयत 76

“ऐ इब्राहीम छोड़िये इस मामले को, अब तो आपके रब का फ़ैसला आ चुका है।”

يَا إِبْرَاهِيمُ اَعْرِضْ عَنْ هَذَا ۖ إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ ۖ

“और उन पर वह अज़ाब आकर ही रहेगा जिसे लौटाया नहीं जा सकेगा।”

وَأَنَّهُمْ أَتَيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُودٍ ۝٢٦

आयत 77

“और जब आये हमारे फ़रस्तादे लूत अलै. के पास तो आप उनकी वजह से बड़े ग़मगीन हुए, और आपका दिल बहुत तंग हुआ”

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِئَءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا

“और आप कहने लगे कि आज तो बहुत सख़्ती का दिन है।”

وَقَالَ هَذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ۝٢٧

चूँकि उन बस्तियों के लोगों में आमर्द परस्ती आम थी, लिहाज़ा उनकी आख़री आज़माईश के लिये फ़रिश्तों को उनके पास नौजवान ख़ूबसूरत लड़कों के रूप में भेजा गया था। हज़रत लूत अलै. उन ख़ूबसूरत मेहमान लड़कों को देख कर इसी लिये परेशान हुए कि अब वह अपने इन मेहमानों का दिफ़ाअ (बचाव) कैसे करेंगे। इसलिये कि आप जानते थे कि उनकी क़ौम के लोग किसी अपील या दलील से बाज़ आने वाले नहीं थे और आप अकेले ज़बरदस्ती उन्हें रोक नहीं सकते थे।

आयत 78

“और आये आपकी क़ौम के लोग दीवानावार दौड़ते हुए आप (के घर) की तरफ़, और वो पहले से ही गंदे कामों में मुलव्विस थे।”

وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ

“लूत ने फ़रमाया: ऐ मेरी क़ौम के लोगो! यह मेरी बेटियाँ (मौजूद) हैं, वो तुम्हारे लिये ज़्यादा पाकीज़ा हैं”

قَالَ يَقَوْمِ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي هُنَّ أَطْهَرُ لَكُمْ

मुफ़स्सिरीन ने इसके एक मायने तो यह मुराद लिये हैं कि तुम्हारे घरों में तुम्हारी बीवियाँ मौजूद हैं जो मेरी बेटियों ही की मानिन्द हैं, क्योंकि नबी अपनी पूरी क़ौम के लिये बाप की तरह होता है। जैसे सूरतुल अहज़ाब आयत 6 में हुज़ूर ﷺ के बारे में फ़रमाया गया है: {وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُ} कि आपकी तमाम अज़वाजे मुतहहरात रज़ि. मोमिनीन की माँए हैं। इसके दूसरे

मायने यह भी हो सकते हैं कि हज़रत लूत अलै. ने अपनी बेटियों के बारे में फ़रमाया कि ये मेरी बेटियाँ हैं, उनसे जायज़ और पाकीज़ा तरीक़े से निकाह कर लो, मैं इसके लिये तैयार हूँ, लेकिन मेरे इन मेहमानों के बारे में मुझे रुसवा ना करो।

“तो अल्लाह का ख़ौफ़ करो और मुझे मेरे मेहमानों के मामले में रुसवा ना करो। क्या तुम में कोई एक आदमी भी नेक चलन नहीं है?”

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تَخْزُونِ فِي ضَعْفَى الْيَسْرِ مِنْكُمْ
رَجُلٌ رَّشِيدٌ ④

क्या तुम लोगों में कोई एक भी शरीफ़ अन्नफ़स इन्सान नहीं है जो मेरा साथ दे और इन सब लोगों को बद्अख़लाक़ी और बेहयाई से रोके।

आयत 79

“उन्होंने कहा कि तुम्हें तो मालूम ही है कि तुम्हारी इन बेटियों पर हमारा कोई हक़ नहीं है, और तुम ख़ूब जानते हो जो हम चाहते हैं।”

قَالُوا الْقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ وَإِنَّكَ
لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ④

क्रौम के लोगों ने कहा कि अब आप इधर-उधर की बातें मत कीजिए, आप ख़ूब समझते हैं कि हमारा यहाँ आने का मक़सद क्या है।

आयत 80

“लूत ने कहा: काश मेरे पास तुम्हारे मुक़ाबले के लिये कोई ताक़त होती या कोई मज़बूत सहारा होता जिसकी मैं पनाह ले लेता।”

قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةً أَوْ إِنِّي إِلَىٰ رُكْنٍ شَدِيدٍ ⑤

इस ज़िम्न में नबी ﷺ ने फ़रमाया: ((يُرِيدُ اللَّهُ لِيُظَاهِرَ الْقَدْرَ كَانَ يُؤْتِي إِلَىٰ رُكْنٍ شَدِيدٍ)) (5) “अल्लाह रहम फ़रमाए लूत पर, वो एक मज़बूत क़िले में ही तो थे।” यानि अल्लाह तआला की पुश्त पनाही और हिफ़ाज़त तो हज़रत लूत अलै. को हासिल थी। लेकिन उस वक़्त जो सूरते हाल बन गई थी उसमें बरबनाए तबअ बशरी परेशानी और ख़ौफ़ का तारी हो जाना नबुवत की अस्मत के मनाफ़ी नहीं है। जैसे हज़रत मूसा अलै. भी वक़्ती तौर पर जादूगरों के साँपों से डर गये थे।

आयत 81

“फ़रिश्तों ने कहा: ऐ लूत! हम आपके रब के भेजे हुए (फ़रिश्ते) हैं, यह लोग आप तक नहीं पहुँच पायेंगे।”

قَالُوا يَلُوْطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَصِلُوا إِلَيْكَ

फ़रिश्तों ने अपना तआरुफ़ कराते हुए आपको तसल्ली दी कि आप इत्मिनान रखें, यह लोग आपको कोई ग़ज़न्द (नुक़सान) नहीं पहुँचा सकेगें। फिर फ़रिश्ते ने अपना हाथ हिलाया तो वो सब नाबकार (दुष्ट) अंधे हो गये।

“पस आप रात के (उस बक़िया) हिस्से में अपने घर वालों को लेकर निकल जायें और कोई भी आप में से पीछे मुड़ कर ना देखें।”

فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ

यानि यहाँ से जाते हुए आप लोगों को पीछे रह जाने वालों की तरफ़ किसी किसिम की कोई तवज्जोह करने की ज़रूरत नहीं है।

“सिवाय आपकी बीवी के, उस पर भी वही मुसीबत आयेगी जो सब पर आने वाली है।”

إِلَّا امْرَأَتَكَ إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا أَصَابَهُمْ

यानि जब आप अपने घर वालों को लेकर यहाँ से निकलेंगे तो अपनी बीवी को साथ लेकर नहीं जायेंगे। आपकी उस बीवी का ज़िक़्र सूरतुल तहरीम (आयत 10) में हज़रत नूह अलै. की मुशरिक बीवी के साथ इस तरह हुआ है:

صَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتَ نُوحٍ وَامْرَأَتَ لُوطٍ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتَهُمَا فَلَمْ يُغَيِّرِ
عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدَّٰخِلِينَ ﴿٥١﴾

“अल्लाह काफ़िरों के लिये मिसाल बयान करता है नूह की बीवी और लूत की बीवी की। वो दोनों औरतें हमारे दो बरगज़ीदा (चुने हुए) बंदों के तहत थीं लेकिन उन्होंने अपने शौहरों से ख्यानत की, चुनौचे उनके शौहर उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा नहीं सके। और (उन दोनों औरतों से) कह दिया गया कि तुम भी (जहन्नम में) दाखिल होने वालों के साथ जहन्नम में दाखिल हो जाओ।”

“उनके वादे का वक़्त सुबह का है, क्या सुबह करीब नहीं है!”

إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ﴿٥١﴾

फ़रिश्तों ने हज़रत लूत अलै. से कहा कि अब आप लोगों के पास ज़्यादा वक़्त नहीं है। आप फ़ौरी तौर पर अपनी बच्चियों को लेकर यहाँ से निकल जायें, सुबह होते ही इन बस्तियों पर अज़ाब आ जायेगा। और सुबह होने में अब देर ही कितनी है!

आयत 82

“फिर जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हमने उसके ऊपर (के हिस्से) को नीचा कर दिया”

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا

यानि उन बस्तियों को तलपट कर दिया गया। जब इमारतें तबाह होती हैं तो छत ज़मीनबोस हो जाती हैं और दीवारें उसके ऊपर गिरती हैं, बुनियादें भी ऊपर आ जाती हैं।

“और (मज़ीद) हमने उन पर बारिश बरसाई तब तब कंकरियों की।”

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارًا مِّن سِجِّيلٍ مُّنْضُودٍ ﴿٥٢﴾

सिज्जील असल में फ़ारसी लफ़्ज़ है। फ़ारसी में यह “संगे गिल” था जो अरबी में आकर सिज्जील का तलफ़्फ़ुज़ इख़्तियार कर गया। संग के मायने पत्थर और गिल के मायने मिट्टी के हैं। यानि मिट्टी के पत्थर जो गीली मिट्टी के धूप में गर्म होकर पुख़्ता हो जाने के बाद बनते हैं, जैसे ईंटों को भट्टे में पकाया जाता है। उन बस्तियों पर अज़ाब दो सूरतों में आया, एक ज़मीन के अंदर कोई ज़ोरदार धमाका हुआ, जिसके नतीज़े में ज़बरदस्त ज़लज़ला आया और यह बस्तियाँ उलट-पलट हो गईं। फिर ऊपर से कंकरियों की बारिश हुई और इस तरह उन्हें उन पत्थरों के अंदर दफ़न कर दिया गया।

आयत 83

“वो निशानज़दा थे तुम्हारे रब की तरफ़ से।”

مُسَوَّمَةٌ عِنْدَ رَبِّكَ

यानि हर पत्थर एक आदमी के लिये निशानज़दा और मख़सूस था।

“और यह इन ज़ालिमों से कोई ज़्यादा दूर नहीं।”

وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ﴿٥٣﴾

यानि मुशरिकीने मक्का से क़ौमे लूत की यह बस्तियाँ ज़्यादा दूर नहीं हैं। कुरैश के क़ाफ़िले जब फ़लस्तीन की तरफ़ जाते थे तो पहले क़ौमे समूद और क़ौमे मदयन के इलाक़े से गुज़रते थे, फिर क़ौमे लूत की बस्तियों के आसार भी उनके रास्ते में आते थे।

आयात 84 से 95 तक

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٨٤﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٨٥﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٨٦﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٨٧﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٨٨﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٨٩﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٩٠﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٩١﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٩٢﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٩٣﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٩٤﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ﴿٩٥﴾

النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ۝ قَالُوا يُشْعِبُ أَصْلَوتُكَ تَأْمُرُكَ أَنْ نَتْرَكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَنْ نَفْعَلَ فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَكِيمُ الرَّشِيدُ ۝ قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَى بَيْنَةٍ مِّن رَّبِّي وَرَزَقْنِي مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَمْلِكُمْ إِلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَنْهُ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝ وَيَقَوْمِ لَا تَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِي أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ صَالِحٍ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيدٍ ۝ وَاسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ ۝ قَالُوا يُشْعِبُ مَا نَفَقَهُ كَثِيرًا إِمَّا تَقُولُ وَإِنَّا لَنَرَاكَ فِينَا ضَعِيفًا وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنَاكَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْنَا بَعِيزٌ ۝ قَالَ يَقَوْمِ أَرَهْطِي أَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَاتَّخَذُ مُمُوهًا وَرَأَىٰكُمْ ظَاهِرًا لَّيَالِيًا أَنْ رَبِّي بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝ وَيَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ سَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ وَارْتَقِبُوا إِلَيَّ مَعَكُمْ رَقِيبٌ ۝ وَلَهَا جَاءَ أَمْرُنَا نَجِّنَا شُعَيْبًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَاتَّخَذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جُثَيْنٍ ۝ كَانُوا لَمْ يَعْنُوا فِيهَا إِلَّا بُعْدًا لِلَّذِينَ كَانُوا يَعْبُدُونَ ۝

आयत 84

“और मदन की तरफ (हमने भेजा) उनके भाई शोएब को।”

وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا

इस क्रौम के बारे में हम सूरतुल आराफ़ के मुताअले के दौरान पढ़ चुके हैं कि यह लोग बनी कतूरा में से थे और खलीज उक़बा के दाहिनी (मशरिकी) तरफ़ के इलाक़े में आबाद थे। इस इलाक़े में यह लोग एक बड़ी मज़बूत क्रौम बन कर उभरे थे। यह इलाक़ा उस वक़्त की दो बहुत अहम बैयनुल अक़वामी शाहराहों के मक़ामे इन्क़ताअ (intersection) पर वाक़ेअ था। एक शाहराह शिमालन-जुनूबन (उत्तरी-दक्षिणी) थी जो शाम से यमन जाती थी और दूसरी मशरिकन-गुरुबन (पूर्वी-पश्चिमी) थी जो इराक़ से मिस्र को जाती थी। चुनाँचे तमाम तिजारती क़ाफ़िले यहीं से गुज़रते थे जिसकी वजह से यह इलाक़ा उस ज़माने का बहुत बड़ा तिजारती मरकज़ बन गया था। नतीजतन यहाँ के लोग बहुत खुशहाल हो गये थे, मगर साथ ही नाप-तौल में कमी और राहज़नी जैसे क़बीह जरायम (घिनौने अपराध) में भी मुलव्विस थे।

“आपने कहा: ऐ मेरी क्रौम के लोगो! अल्लाह की बंदगी करो, तुम्हारा कोई मअबूद नहीं उसके सिवा।”

قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِن إِلَهٍ غَيْرُهُ

“और ना कम करो माप और तौल में”

وَلَا تَنْقُصُوا الْبِكْيَالَ وَالْبِيزَانَ

“मैं तुम्हें आसूदा हाल देखता हूँ, लेकिन (अगर तुम लोग इन ग़लतकारियों से बाज़ ना आये तो) मुझे अंदेशा है तुम पर एक ऐसे दिन के अज़ाब का जो तुम्हें घेर लेगा।”

وَالْبِيزَانَ إِنِّي أَرْكُم بِخَيْرٍ وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ

عَذَابَ يَوْمٍ مُحِيطٍ ۝

आयत 85

“और ऐ मेरी क्रौम के लोगो! पूरा-पूरा दिया करो पैमाना और तौल, अदल और इंसाफ़ के साथ”

وَيَقُومُوا أَوْفُوا الْبَيْتِ وَالْيَمِينَ بِالْقِسْطِ

“और मत कम दिया करो लोगों को उनकी चीज़ें और ना ही ज़मीन में फ़साद मचाते फ़िरो।”

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْتُوا فِي

الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٥﴾

आयत 86

“अल्लाह की अता करदा बचत ही तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम मोमिन हो।”

بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ مُؤْمِنِينَ

इंसाफ़ के साथ पूरा-पूरा नापो और तौलो, और लोगों की चीज़ों में कमी करके उनकी हक़ तलफ़ी ना किया करो। अगर तुम लोग दियानतदारी से तिजारत करो, और इस तरह अल्लाह तआला तुम्हें जो मुनाफ़ा अता करे, उसी पर क़नाअत (सन्तुष्टि) करो तो यह तुम्हारी दुनिया व आख़िरत के लिये बहुत बेहतर होगा।

“लेकिन मैं तुम्हारे ऊपर कोई निगरान नहीं हूँ।”

وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ﴿٨٦﴾

मैं तो तुम्हें समझा सकता हूँ, नेकी की तल्कीन कर सकता हूँ, तुम पर मेरा कोई ज़ोर नहीं है।

आयत 87

“उन्होंने कहा: ऐ शोएब! क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें इस बात का हुक़्म देती है कि हम छोड़ दें उनको जिनको पूजते आये हैं हमारे आबा व अजदाद?”

قَالُوا يُشْعِبُ أَصْلَوتُكَ تَأْمُرُكَ أَنْ نَتْرُكَ مَا يَعْبُدُ

أَبَاؤُنَا

अगरचे हज़रत शोएब अलै. की गुफ़्तगू में उनके शिर्क का तज़क़िरा नहीं है, मगर उनके इस जवाब से मालूम हुआ कि वो बुनियादी तौर पर इस मर्ज़े शिर्क में भी मुब्तला थे जो तमाम गुमराह क्रौमों का मुशतरक (common) मर्ज़ रहा है।

“या (तुम्हारी नमाज़ यह सिखाती है कि) हम अपने अम्वाल में अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ तसरूफ़ (व्यवस्थित) ना करें?”

أَوْ أَنْ تَفْعَلَ فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ

यानि हमारी मिल्लियत में जो सामान और माल है क्या हम उसके इस्तेमाल में भी अपनी मर्ज़ी नहीं कर सकते? यह वही तसव्वुर है जो आज के जदीद ज़माने में sacred right of ownership के ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ में पेश किया जाता है, जबकि इस्लाम में मिल्लियत का ऐसा तसव्वुर नहीं है। इस्लाम की रू से हर चीज़ का मालिक अल्लाह है और दुनिया का यह माल और साज़ो सामान इंसानों के पास अल्लाह की अमानत है, जिसमें अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ तसरूफ़ करने की इजाज़त नहीं है। लिहाज़ा इस्लाम मिल्लियत के किसी “मुक़द्दस हक़” को तस्लीम नहीं करता, क्योंकि:

ई अमानत चंद रोज़ा नज़्दे मास्त

दर हक़ीक़त मालिके हर शय खुदास्त

यानि यह माल व दौलत हमारे पास चंद दिन की अमानत है, वरना हक़ीक़त में हर शय का मालिक हक़ीक़ी तो अल्लाह ही है। बहरहाल जब इंसान खुद को मालिक समझता है तो फिर वो वही कुछ कहता है जो हज़रत शोएब अलै. की क्रौम ने कहा था कि हमारा माल है, हम जैसे चाहें इसमें तसरूफ़ करें!

“हाँ एक तुम ही तो हो जो बड़े बावक्रार और नेकचलन हो!”

إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَكِيمُ الرَّشِيدُ ﴿٨٧﴾

क्रौम का हज़रत शोएब अलै. को हलीम और रशीद कहना किसी ताज़ीम और तकरीम के लिये नहीं था, बल्कि तअन और इस्तहज़ा (हँसी) के तौर पर था।

आयत 88

“आपने फ़रमाया: ऐ मेरी क्रौम के लोगो! ज़रा सोचो कि अगर मैं (पहले भी) अपने रब की तरफ़ से बय्यिना पर था”

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَأَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّي

हज़रत शोएब अलै. ने वही बात फ़रमाई जो दूसरे अंबिया व रसूल अपनी-अपनी क्रौम से फ़रमाते आये थे कि तुम्हारे दरमियान रहते हुए मेरा किरदार और अख़लाक पहले भी मिसाली था, मैं इस मआशरे में एक शरीफ़ुन्नफ़्स और सलीमुल फ़ितरत इंसान के तौर पर मारूफ़ था।

“और अल्लाह ने अपने पास से मुझे अच्छा रिज़क भी अता किया है”

وَرَزَقْنِي مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا

यानि फिर मुझे अल्लाह ने नुबुवत और रिसालत से भी सरफ़राज़ फ़रमा दिया है।

“और मैं हरगिज़ नहीं चाहता कि जिस चीज़ से तुम लोगों को मना करूँ खुद वही काम करूँ।”

وَمَا أُرِيدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَا اَنْهَكُم عَنْهُ

“मैं तो कुछ नहीं चाहता सिवाय इस्लाह के जिस क़दर मुझमें इस्तताअत है, और मेरी तौफ़ीक़ तो अल्लाह ही की तरफ़ से है।”

اِنْ اُرِيدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيقِي اِلَّا بِاللّٰهِ

मेरा मक़सद तुम लोगों की इस्लाह है और इस सिलसिले में जो कुछ भी मैं कर रहा हूँ वह अल्लाह की तौफ़ीक़ ही से कर रहा हूँ। उसी ने मुझे हिम्मत और इस्तक्रामत से नवाज़ा है।

“उसी पर मैंने तवक्कुल किया है और उसी की तरफ़ मैं रज़ूअ करता हूँ।”

عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَالْيَهِ اُنِيْبُ ۝

आयत 89

“और ऐ मेरी क्रौम के लोगो! (देखो) मेरी दुश्मनी तुम्हें उस अंजाम तक ना ले जाये कि तुम पर भी वही अज़ाब आ जाये जैसा कि आया था क्रौमे नूह, क्रौमे हूद या क्रौमे सालेह पर।”

وَيَقَوْمٍ لَا يُجِبِرْ مَتَّكُمْ شِقَاقِي اَنْ يُصِيبَكُمْ مِّثْلُ مَا اَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ اَوْ قَوْمَ هُودٍ اَوْ قَوْمَ صَالِحٍ

“और क्रौमे लूत तो तुमसे ज़्यादा दूर भी नहीं है।”

وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ۝

हज़रत शोएब अलै. से पहले इन चारों क्रौमों पर अज़ाबे इस्तेसाल आ चुका था। और यह जो फ़रमाया गया कि क्रौमे लूत तुमसे “बईद (दूर)” नहीं है, यह ज़मानी और मकानी दोनों ऐतबार से है। जियोग्राफ़ियाई ऐतबार से ख़लीज उक़बा के मशरक़ी साहिल से मुत्तसल (connect) इलाक़े में क्रौमे मदनन आबाद थी। इस इलाक़े से ज़रा हट कर मशरक़ की जानिब बहरे मुर्दार (Dead Sea) है जिसके साहिल पर आमूरा और सदूम की वह बस्तियाँ थीं जिनमें हज़रत लूत अलै. मबऊस हुए थे। ज़मानी ऐतबार से भी इन दोनों अक़वाम में हज़ारों साल का नहीं बल्कि सिर्फ़ चंद सौ साल का बुअद (gap) था। बहरहाल मुझे उन मुफ़स्सिरीन से इख़्तिलाफ़ है जो हज़रत शोएब अलै. को हज़रत मूसा अलै. के हमअस्र समझते हैं। इस ज़िम्न में मुझे उन उल्मा की राय से इत्तेफ़ाक़ है जिनका ख़याल है कि हज़रत मूसा अलै. मदनन में जिस शख़्स के मेहमान बने थे और जिनकी बेटी के साथ बाद में आपने निकाह किया था वह मदनन के उन लोगों की नस्ल से कोई नेक बुजुर्ग थे जो शोएब अलै. के साथ अज़ाबे इस्तेसाल से बच गये थे।

दूसरा अहम नुक्ता इस आयत में यह बयान हुआ है कि बाज़ अवकात किसी दाई के साथ ज़ाती अनाद (नफ़रत) और दुश्मनी की बुनियाद पर कोई शख्स या कोई गिरोह उसकी असूली दावत को भी ठुकरा देता है। यह इंसानी रवैय्ये का एक बहुत ख़तरनाक पहलु है क्योंकि इसमें उस दाई का तो कोई नुक़सान नहीं होता मगर सिर्फ़ ज़ाती तअस्सुब की बुनियाद पर उसकी दावत को ठुकराने वाले खुद को बर्बाद कर लेते हैं।

आयत 90

“और इस्तग़फ़ार करो अपने रब से, फिर उसकी तरफ़ रुजूअ करो।
यक़ीनन मेरा रब रहीम भी है, मुहब्बत फ़रमाने वाला भी।”

وَاسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ

وَوَدُودٌ ۝

अपने रब से अपने गुनाहों की माफ़ी तलब करो और उसकी तरफ़ पलट आओ। उसकी इबादत और इताअत शआरी (आज्ञाकारिता) इख़्तियार करो तो तुम उसके दामने रहमत को अपने लिये वसीअ पाओगे। वह इन्तहाई रहम करने वाला और अपनी मख़लूक से मुहब्बत रखने वाला है।

आयत 91

“उन्होंने कहा: ऐ शोएब! तुम जो कुछ कहते हो उसमें से अक्सर बातें
हमारी समझ में नहीं आती”

قَالُوا يَشْعِبُ مَا نَفَقَهُ كَثِيرًا إِمَّا تَقُولُ

जब ज़हनों के साँचे बिगड़ जाये और सोचों के ज़ाविये (एंगल) बदल जायें तो फिर सीधी बात भी समझ में नहीं आती।

“और हम तो देखते हैं तुम्हें अपने दरमियान एक कमज़ोर आदमी। और
अगर तुम्हारा ख़ानदान ना होता तो हम तुम्हें (कभी का) संगसार कर
चुके होते, और तुम हम पर ग़ालिब नहीं हो।”

وَإِنَّا لَنَرُوكَ فِيْنَا ضَعِيفًا وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنَاكَ

وَمَا أَنْتَ عَلَيْنَا بَعِيزٌ ۝

यहाँ पर एक अहम नुक्ता यह समझ लें कि जिस ज़माने में जो सूरत नाज़िल हुई है उसमें नबी अकरम صلی اللہ علیہ وسلم और आपके सहाबा किराम रज़ि. को पेश आने वाले मअरूज़ी (specifically) हालात के साथ तताबक़ (matching) पैदा किया गया है। यानि गुज़िश्ता अक्रवाम के वाक़यात जो मुख़्तलिफ़ सूरतों में तवातर (frequency) के साथ बार-बार आये हैं यह तकरारे महज़ नहीं है, बल्कि हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की दावत व तहरीक को जिस दौर में जिन मसाईल का सामना होता था उस ख़ास दौर में नाज़िल होने वाली सूरतों में इन मसाईल की मुनास्बत से पिछली अक्रवाम के हालात व वाक़यात से वो बातें नुमाया की जाती थीं जिनमें हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم और अहले ईमान के लिये रहनुमाई और दिलजोई का सामान मौजूद था। चुनाँचे आयत ज़ेरे नज़र में हज़रत शोएब अलै. के ख़ानदान और क़बीले की हिमायत की बात इसलिये हुई है कि इधर मक्का में हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم को भी कुछ ऐसे ही हालात का सामना था। उस ज़माने में बनु हाशिम के सरदार आपके चचा अबु तालिब थे जिन्हें हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم से बहुत मुहब्बत थी और आपने अपने बचपन का कुछ अरसा उनके साया-ए-आतफ़त (influenced) में गुज़ारा था। उन्हीं की वजह से आपको पूरे क़बीले बनु हाशिम की पुस्त पनाही हासिल थी। अगर उस वक़्त बनु हाशिम की सरदारी कहीं अबु लहब के पास होती तो आप صلی اللہ علیہ وسلم को अपने ख़ानदान और क़बीले की यह हिमायत हासिल ना होती, इस तरह मुशरिकीने मक्का को आपके ख़िलाफ़ (मआज़ अल्लाह) कोई इन्तहाई अक्रदाम करने का मौक़ा मिल जाता। लिहाज़ा यहाँ हालात में तताबक़ इस तरह पैदा किया गया है कि जिस तरह अल्लाह तआला ने आज मक्के में बनु हाशिम की हिमायत से मुहम्मद रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم को एक महफूज़ क़िला मुहैया फ़रमा दिया है, बिल्कुल इसी नौईयत की हिफ़ाज़त उस वक़्त अल्लाह तआला ने हज़रत शोएब अलै. को उनके ख़ानदान की हिमायत की सूरत में भी अता फ़रमाई थी।

आयत 92

“आपने फ़रमाया: ऐ मेरी क़ौम के लोगो! क्या मेरा ख़ानदान तुम पर अल्लाह से ज़्यादा भारी है?”

قَالَ يَقَوْمِ ارْهَاطِيْ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِنَ اللّٰهِ

हकीकत में मेरा पुश्तपनाह तो अल्लाह है। तुम अल्लाह से नहीं डरते, लेकिन मेरे ख़ानदान से डरते हो। क्या तुम्हारे नज़दीक मेरा ख़ानदान अल्लाह से ज़्यादा ताक़तवर है?

“और उस (अल्लाह) को तो तुमने अपनी पीठों के पीछे डाल रखा है।”

وَاتَّخَذْتُمْ مُمُوْدًا وَّرَاءَكُمْ ظَهْرِيًّا

यानि अल्लाह को तो तुम लोगों ने बिल्कुल ही भुला छोड़ा है, पसे पुश्त डाल दिया है। यह इंसानी नफ़िसयात का एक अहम पहलु है। अगरचे आज हम भी अल्लाह को अपना खालिक, मालिक और मअबूद मानने का दावा करते हैं मगर साथ ही दुनिया और इसके झमेलों में इस क़दर मगन रहते हैं कि अल्लाह का तसव्वुर मुस्तहज़र (stabilizer) नहीं रहता। यही वजह है हम कारोबार-ए-दुनिया में हकीक़ी मुसबब अल असबाब को भुला कर असबाब व हक़ायक (cause and fact) की मन्तक़ी भूल-भुलव्यों में गुम रहते हैं:

काफ़िर की यह पहचान की आफ़ाक़ में गुम है
मोमिन की यह पहचान कि गुम उसमें हैं आफ़ाक़!

यहाँ हज़रत शोएब अलै. का अपने ख़ानदान के मुक़ाबले में अल्लाह का ज़िक्र करना यह ज़ाहिर कर रहा है कि वो लोग अल्लाह को बख़ूबी जानते थे, इसी तरह मुशरिकीने मक्का भी अल्लाह को मानते थे। गोया अल्लाह का मामला ऐसे लोगों के नज़दीक आँख ओझल पहाड़ ओझल वाला होता है। इसी लिये तो हज़रत शोएब अलै. ने फ़रमाया था कि तुम लोग मेरे ख़ानदान से डरते हो मगर अल्लाह से नहीं डरते! हज़रत शोएब अलै. के इस जवाब में कुरैश के लिये यह पैग़ाम मुज़मर (मौजूद) है कि तुम्हें भी मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की तरफ़ से यही जवाब है।

“यक़ीनन मेरा रब तो उस सबका इहाता किए हुए है जो कुछ तुम कर रहे हो।”

إِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٩٣﴾

अल्लाह तुम्हारा और तुम्हारे आमाल का घेराव किए हुए है। तुम उसकी गिरफ़्त से निकल कर कहीं नहीं जा सकते हो।

आयत 93

“और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम करो जो कुछ कर सकते हो अपनी जगह पर, मैं भी कर रहा हूँ जो मैं (अपनी जगह पर) कर सकता हूँ।”

وَيَقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ

तुम मेरे खिलाफ़ जो भी रेशा दवानियाँ कर सकते हो, जो भी चालें चल सकते हो, और जो अक़दामात भी कर सकते हो, कर गुज़रो। अपने तौर पर जो कुछ मैं कर सकता हूँ, जो कोशिश मुझसे बन आ रही है मैं कर रहा हूँ। यह चैलेंज करने का अंदाज़ सूरतुल अनआम से चला आ रहा है। यह गोया मक्का के हालात के साथ तताबक़ (matching) किया जा रहा है। मक्के में हक़ व बातिल की कशमकश भी अब इन्तहा को पहुँच चुकी थी और उसकी वजह से आपकी तबीयत के अंदर एक तरह की बेज़ारी पैदा हो चुकी थी कि अब जो कुछ तुम कर सकते हो कर लो!

“अनक़रीब तुम जान लोगे कि किस पर अज़ाब आता है जो उसे रुसवा कर देगा और कौन है जो झूठा है।”

سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ مَنْ يَّاتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ

كَاذِبٌ

“तुम भी इन्तेज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हूँ।”

وَإِنِّيْ لَمَعَكُمْ رَقِيْبٌ ﴿٩٤﴾

आयत 94

“फिर जब हमारा हुक्म आ गया तो हमने अपनी रहमत से निजात दे दी शोएब को और उन लोगों को जो आपके साथ ईमान लाये थे”

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
بِرَحْمَةٍ مِنَّا

“और ज़ालिमों को आ पकड़ा एक ज़बरदस्त कड़क ने, तो वो अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।”

وَأَخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي
دِيَارِهِمْ جُثِيمِينَ ﴿٩٦﴾

आयत 95

“जैसे कि वो कभी उनमें आबाद ही नहीं थे। आगाह हो जाओ फटकार है मदयन पर, जैसे कि समूद पर फटकार हुई थी।”

كَانَ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا إِلَّا بُعْدًا لِلْمَدِينِ كَمَا بَعْدَتْ
ثُمُودُ ﴿٩٥﴾

अहले मदयन भी अल्लाह तआला की फटकार का निशाना बन कर उसी तरह हलाक हो गये जैसे क़ौमे समूद हलाक हुई थी।

अब आखिर पर बहुत मुख्तसर अंदाज में हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र किया जा रहा है।

आयात 96 से 99 तक

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٩٦﴾ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ
﴿٩٧﴾ يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ وَبِئْسَ الْوَرْدُ الْمَوْرُودُ ﴿٩٨﴾ وَاتَّبَعُوا فِي هَذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ
بِئْسَ الرَّفْدُ الْمَرْفُودُ ﴿٩٩﴾

आयत 96

“और हमने भेजा मूसा को अपनी आयात और वाज़ेह सनद के साथ।”

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٩٦﴾

आयत 97

“फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़, लेकिन उन्होंने फ़िरऔन ही की पैरवी की। हाँलाकि फ़िरऔन का मामला रास्ती (धर्म) वाला नहीं था।”

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ وَمَا أَمْرُ
فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ﴿٩٧﴾

आयत 98

“क़यामत के दिन वह आएगा आगे चलता हुआ अपनी क़ौम के”

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

दुनिया की तरह क़यामत के दिन भी उसे क़यादत का मौक़ा फ़राहम किया जायेगा। वह आगे-आगे होगा और उसकी क़ौम पीछे-पीछे आ रही होगी, जैसे वो लोग दुनिया में उसके पीछे चलते थे।

“फिर वह आग के घाट पर उन्हें उतार देगा। और वह बहुत ही बुरा घाट है जिस पर वो उतारे जायेंगे।”

فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ وَبِئْسَ الْوَرْدُ الْمَوْرُودُ ٩٨

जिस तरह जानवरों का कोई गिरोह पानी पीने के लिये घाट पर आता है और उनका लीडर आगे-आगे जा रहा होता है, ऐसे ही फिरऔन अपनी क्रौम को जहन्नम के घाट पर ला उतारेगा।

आयत 99

“और इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लगा दी गई और क़यामत के दिन भी। बहुत ही बुरा है वह इनाम जो उनको मिलने वाला है।”

وَأَتَّبِعُوا فِي هَذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ بِئْسَ الرَّفْدُ
الْمَرْفُودُ ٩٩

आयत 100 से 109 तक

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْقُرَى نَقُصُّهُ عَلَيْكَ مِنْهَا قَائِمٌ وَحَصِيدٌ ١٠٠ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَمَا أَغْنَتْ عَنْهُمْ آلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ لَّهَا جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٍ ١٠١ وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَى وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ١٠٢ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِمَنْ خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ ١٠٣ ذَلِكَ يَوْمُ تَجْمَعُ لََّهُ النَّاسُ وَذَلِكَ يَوْمٌ مَشْهُودٌ ١٠٤ وَمَا نُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مُّعَدودٍ ١٠٥ يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَسَعِيدٌ ١٠٦ فَأَمَّا الَّذِينَ شَفَعُوا فِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَشَهِيقٌ ١٠٧ خُلِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ١٠٨ وَأَمَّا الَّذِينَ سُِعِدُوا فِي الْجَنَّةِ خُلِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ عَطَاءٌ غَيْرُ مُجْدُوذٍ ١٠٩ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَؤُلَاءِ مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَاؤُهُمْ مِنْ قَبْلُ وَإِنَّا لَنَنُفُثُهُمْ نَصِيحَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوصٍ ١١٠

आयत 100

“ये हैं उन बड़ी-बड़ी बस्तियों की कुछ अहम खबरें जो हम आपको सुना रहे हैं, उनमें ऐसी भी हैं जो अभी क़ायम हैं और ऐसी भी हैं जो बिल्कुल ख़त्म हो गईं।”

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْقُرَى نَقُصُّهُ عَلَيْكَ مِنْهَا قَائِمٌ
وَحَصِيدٌ ١٠٠

हसीदुन का लफ़्ज़ उस खेत के लिये इस्तेमाल होता जिसकी फ़सल काट ली गई हो। फ़सल के कटने के बाद खेत में जो वीरानी का मंज़र होता है उसके साथ अज़ाबे इस्तेसाल से तबाह शुदा बस्तियों को तश्बीह दी गई है। फिर उन बस्तियों में कुछ तो ऐसी हैं जिनका नामो-निशान तक मिट चुका है मगर बाज़ ऐ भी हैं जिनके आसार को बाक़ी रखा गया है। मसलन क्रौमे आद की आबादियों का कोई नामो-निशान तक नहीं मिलता जिससे मालूम हो सके कि यह क्रौम कहाँ आबाद थी (अगरचे हाल ही में सेटेलाइट के ज़रिये उनके शहर और शहाद की जन्नत के कुछ आसार ज़ेरे ज़मीन मिलने का दावा सामने आया है)। दूसरी तरफ़ क्रौमे समूद के मकानात के खन्डरात आज तक मौजूद हैं।

आयत 101

“और हमने उन पर कोई जुल्म नहीं किया बल्कि उन्होंने अपनी जानों पर खुद जुल्म ढहाया”

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ

“तो उनके कुछ भी काम ना आ सके उनके वो मअबूद जिन्हें वो अल्लाह के सिवा पुकारा करते थे, जब आपके रब का हुक्म आ पहुँचा।”

فَمَا أَغْنَتْ عَنْهُمْ آلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ لَّهَا جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ

“और उन्होंने कुछ इज़ाफ़ा नहीं किया उनके हक़ में मगर बर्बादी ही का।”

وَمَا زَادُوهُمْ غَيْرَ تَتْبِيبٍ ①

जब अल्लाह तआला की तरफ़ से अज़ाबे इस्तेसाल का हुक्म आ गया तो उनके वो मअबूद जिन्हें वो अल्लाह को छोड़ कर पुकारा करते थे उनके कुछ काम ना आ सके और उन्होंने उनकी हलाकत व बर्बादी के सिवा और किसी चीज़ में इज़ाफ़ा नहीं किया।

आयत 102

“और (ऐ नबी ﷺ!) ऐसे ही होती है पकड़ आपके रब की, जब वह पकड़ता है बस्तियों को जबकि वो ज़ालिम होती हैं।”

وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقَرْيَ وَهِيَ ظَالِمَةٌ

जब किसी बस्ती में गुनाह और मअसियत (लापरवाही) का चलन आम हो जाता है तो वो गोया “जुल्म” की मुरतकिब (दोषी) होकर अज़ाब की मुस्तहिक्क (हक़दार) हो जाती है।

“यक़ीनन उसकी पकड़ बड़ी दर्दनाक भी है और बड़ी सख़्त भी।”

إِنْ أَخَذَهَا إِلَيْمٌ شَدِيدٌ ②

अल्लाह की पकड़ के बारे में सूरतुल बुरुज (आयत नम्बर:12) में फ़रमाया गया: {إِنْ يَطْشُ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ} “यक़ीनन तेरे रब की पकड़ बहुत सख़्त है।”

आयत 103

“यक़ीनन इसमें निशानी है उन लोगों के लिये जो आख़िरत के अज़ाब से डरते हों।”

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ

“वह एक ऐसा दिन है जिसमें लोगों को जमा किया जायेगा और वह दिन है पेशी का।”

ذَلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوعٌ لَّهُ النَّاسُ وَذَلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُودٌ

③

आयत 104

“और हम उसे एक वक़्ते मुअय्यन तक के लिये मौअख़बर किए हुए हैं।”

وَمَا تُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مُّعَدَّدٍ ④

उसके आने की एक घड़ी मुअय्यन है, जिसको बाक़ायदा गिन कर और हिसाब लगा कर तय किया गया है।

आयत 105

“जब वह दिन आ जायेगा तो कोई मुतनफ़फ़स बात नहीं कर सकेगा मगर अल्लाह के इज़्ज से, तो उन (इंसानों) में से कुछ शक्की होंगे और कुछ सईद।”

يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَسَعِيدٌ ⑤

यानि कुछ इंसान बद् बख्त होंगे और कुछ नेक बख्त।

आयत 106

“तो वो लोग जो बद् बख्त हैं वो आग में होंगे जिसमें उन्हें चीखना है और दहाड़ना है।”

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُّوا فِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ
وَشَهيقٌ ﴿١٠٦﴾

वो लोग दर्द और कर्ब (पीड़ा) की वजह से चीख व पुकार करेंगे और फुत्कारे मारेंगे।

आयत 107

“उसी में वो हमेशा रहेंगे जब तक कि रहे आसमान और ज़मीन, सिवाय उसके जो तेरा रब चाहे।”

خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا
شَاءَ رَبُّكَ ۚ

यह मक्काम मुश्किलातुल कुरान में से है। यह कुरान का वाहिद मक्काम है जहाँ {خَالِدِينَ فِيهَا} के साथ कुछ इस्तसनात (exceptions) भी आये हैं। जहन्नम और जन्नत कब तक रहेंगी या जहन्नमी और जन्नती लोग उनमें कब तक रहेंगे? इसके बारे में फ़रमाया: {مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ} कि जब तक आसमान और ज़मीन कायम रहेंगे। इससे मुराद अबदियत भी हो सकती है और इस तरह का कोई इशारा भी हो सकता है कि शायद कभी कोई ऐसा वक़्त आये जब ज़मीन व आसमान का वह निज़ाम बदल भी जाये और कोई दूसरा निज़ाम इसकी जगह ले ले। वाज़ेह रहे कि इस “ज़मीन व आसमान” से मुराद भी मौजूदा ज़मीन व आसमान नहीं हो सकते, इसलिये कि अज़रुए अल्फ़ाज़े कुरानी यह तो क़यामत के रोज़ बदल डाले जायेंगे और यहाँ क़यामत के बाद पेश आने वाले हालात व वाक़यात का ज़िक्र हो रहा है। फिर इसमें भी एक इस्तसना बयान किया गया है: {إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ} “सिवाय उसके जो तेरा रब चाहे।” यानि अगर अल्लाह तआला खुद ही किसी के अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ (छूट) करना चाहे या किसी को एक मुद्दत तक अज़ाब देकर जहन्नम से निकालने का फ़ैसला फ़रमाए तो उसे इसका पूरा इख़्तियार है। ज़जा व सज़ा के बारे में भी अहले सुन्नत का अक़ीदा है कि अल्लाह तआला का इख़्तियार मुत्लक़ (पक्का) है, लेकिन यह भी अल्लाह तआला का तयशुदा फ़ैसला है कि कुफ़्कार के लिये जहन्नम अब्दी (हमेशा रहने वाला) ठिकाना है। वल्लाहु आलम!

“बेशक आपका रब जो इरादा करे उसे कर गुज़रने वाला है।”

إِنَّ رَبَّكَ فَعَالٌ لِّمَا يُرِيدُ ﴿١٠٧﴾

आयत 108

“और जो लोग नेकबख्त होंगे वो जन्नत में रहेंगे हमेशा-हमेश जब तक रहे आसमान और ज़मीन, सिवाय उसके जो आपका रब चाहे।”

وَأَمَّا الَّذِينَ سَعِدُوا فِي الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا مَا
دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ ۚ

“यह ऐसी बख़्शिश है जो कभी ख़त्म नहीं होगी।”

عَطَاءٌ غَيْرٌ مَّجْدُودٌ ﴿١٠٨﴾

इन आयात में जन्नत और जहन्नम का जो मुवाज़ना (compare) किया गया है इसमें जन्नत के लिये {عَطَاءٌ غَيْرٌ مَّجْدُودٌ} के अल्फ़ाज़ इज़ाफ़ी तौर पर इस्तेमाल किए गये हैं। इस तरह के लफ़्ज़ी फ़र्क़ व तफ़ावुत (अंतर) का जब उल्मा व मुफ़स्सरीन बारीक बीनी से जायज़ा लेते हैं तो इनसे बड़े-बड़े फ़लसफ़ियाना नुकात (टिप्स) पैदा होते हैं। चुनाँचे जन्नत और जहन्नम के बारे में हाफ़िज़ इब्ने तैमिया रहि. और शेख़ इब्ने अरबी रहि. दोनों ने एक राय पेश की है जो अहले सुन्नत के आम इज्माई

अक्रीदे से मुख्तलिफ़ है। इन दोनों बुज़ुर्गों के दरमियान अगरचे बड़ा नज़रियाती बुअद (फ़ासला) है (इमाम इब्ने तैमिया रहि. बाज़ अवकात शेख़ मोयहिद्दीन इब्ने अरबी पर तन्कीद [आलोचना] करते हुए बहुत सख़्त अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करते हैं) मगर इस राय में दोनों का इत्तेफ़ाक़ है कि जन्नत तो अब्दी है मगर जहन्नम अब्दी नहीं है। एक वक़््त आयेगा, चाहे वह अरबों साल के बाद आये, जब जहन्नम ख़त्म कर दी जायेगी। इसके बरअक्स अहले सुन्नत का इज्माई अक्रीदा यही है कि जन्नत और जहन्नम दोनों अब्दी हैं। वल्लाहु आलम!

आयत 109

“पस (ऐ नबी ﷺ!) आप किसी शक में ना रहें उनके बारे में जिनकी यह लोग पूजा कर रहे हैं।”

فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَؤُلَاءِ

“यह लोग नहीं पूजा कर रहे हैं मगर ऐसे ही जैसे कि इनके आबा व अजदाद पूजा करते रहे हैं इससे पहले।”

مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَاؤُهُمْ مِنْ قَبْلُ

यह तो बस लकीर के फ़कीर बने हुए हैं।

“और यक़ीनन हम उनको देने वाले हैं उनका हिस्सा बग़ैर किसी कमी के।”

وَأَنَّا لَمَوْفُقُوهُمْ نَصِيبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوصٍ ۝

आयात 110 से 123 तक

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ۝ وَإِنْ كَلَّا لَتَأْتِيَ فِيهِمْ رَبُّكَ أَعْمَالُهُمْ إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ۝ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَزُلْفًا مِنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبُنَ السَّيِّئَاتِ ذَلِكَ ذِكْرَى لِلذَّكْرَيْنِ ۝ وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝ فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ۝ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَى بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ ۝ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَا يَزَالُونَ مُخْتَلِفِينَ ۝ إِلَّا مَنْ رَحِمَ رَبُّكَ وَلِذَلِكَ خَلَقَهُمْ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝ وَكُلًّا نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ وَجَاءَكَ فِي هَذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقُلْ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ أَعْمَلُوا عَلَى مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَمِلُونَ ۝ وَانْتَظِرُوا إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ۝ وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُ الْأَمْرُ كُلُّهُ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝

आयत 110

“और मूसा को हमने किताब दी थी फिर उसमें इख़्तलाफ़ पैदा कर दिए गये।”

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ

“और अगर तय ना हो चुकी होती एक बात तेरे रब की तरफ़ से पहले ही से तो उनके माबैन फ़ैसला कर दिया जाता।”

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ

“और (अब तो) यह लोग इस (तौरात) के बारे में उलझा देने वाले शक में मुब्तला हो गये हैं।”

وَأَنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ۝

यह बात सूरतुल शौरा में वज़ाहत से बयान की गई है कि हर रसूल की उम्मत अपनी इल्हामी (Almighty) किताब की वारिस होती है। फिर जब उस उम्मत पर ज़वाल (गिरावट) आता है तो अपनी उस किताब के बारे में भी उनके यहाँ शकूक व शुब्हात पैदा हो जाते हैं कि वाक़िअतन यह किताब अल्लाह की तरफ़ से है भी या नहीं!

आयत 111

“और (ऐ नबी ﷺ!) आपका रब इन सबको इनके आमाल का लाज़िमन पूरा-पूरा बदला देगा।”

وَأَنَّ كُلًّا لِلَّهِ لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ أَعْمَالَهُمْ

“यक़ीनन वह बा-ख़बर है उससे जो अमल यह लोग कर रहे हैं।”

إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

आयत 112

“तो (ऐ नबी ﷺ!) आप डटे रहें जैसा कि आपको हुक्म हुआ है और वो भी जिन्होंने तौबा की है आपके साथ”

فَأَسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ

आप ﷺ के साथ वो लोग भी सन्न व इस्तक़ामत (stability) के साथ डटे रहें जो शिर्क से बाज़ आए हैं, जिन्होंने कुफ़्र को छोड़ा है और आपके साथ ईमान लाये हैं।

“और तुम लोग हद से तजावुज़ (हद पार) ना करो।”

وَلَا تَطْغَوْا

तजावुज़ की एक शक़ल यह भी हो सकती है कि मुन्करीने हक़ पर जल्द अज़ाब ले आने की ख़्वाहिश करें और यह भी कि चारों तरफ़ से उन लोगों की मुख़ालफ़त के सबब किसी लम्हें गुस्से में आ जायें और हिल्म (नम्रता) व बुर्दबारी (सन्न) का दामन हाथ से छोड़ बैठें।

“यक़ीनन वह तुम लोगों के सब आमाल देख रहा है।”

إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

अल्लाह तआला तुम्हारे आमाल भी देख रहा है और जो कुछ तुम्हारे मुख़ालफ़ीन कर रहे हैं उनकी तमाम हरकतें भी उसके इल्म में हैं। इसलिये उसके यहाँ से तुम्हें तुम्हारा अज़्र व सवाब मिलेगा, और उन लोगों को उनके करतूतों की सज़ा मिलेगी।

आयत 113

“और कोई झुकाव पैदा ना करना उन लोगों की तरफ़ जिन्होंने जुल्म किया”

وَلَا تَرْكُؤُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا

यह ख़ालिस हक़ और बातिल की कशमकश है, इसमें कहीं कोई रिश्तेदारी का मामला, कोई पुराने मरासिम (रिवाज़), क़बीले की मुहब्बत वग़ैरह अवामिल तुम लोगों को किसी लम्हे उनकी तरफ़ झुकने पर माइल (इच्छुक) ना करें।

“अगर ऐसा हुआ तो तुम्हें आग पकड़ लेगी, फिर तुम्हारे लिये अल्लाह के सिवा कोई हिमायती नहीं होंगे, फिर तुम्हारी मदद नहीं की जायेगी।”

فَتَسَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن أَوْلِيَاءَ
ثُمَّ لَا تَنْصَرُونَ ﴿١١٣﴾

आयत 114

“और (ऐ नबी ﷺ) नमाज़ को क़ायम रखिये दिन के दोनों सिरों पर और रात की कुछ घड़ियों में।”

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَزُلْفًا مِّنَ اللَّيْلِ

दिन के दोनों सिरों पर फज़ और अस्त्र के अवकात हैं जबकि रात में मगरिब और इशा शामिल हैं। लेकिन यह याद रहे कि पाँच नमाज़ों का मौजूदा निज़ाम ग्यारह नबवी में मेराज के बाद क़ायम हुआ है। इससे पहले मक्की दौर में तक़रीबन साढ़े दस बरस तक नमाज़ों के बारे में जो अहक़ाम नाज़िल हुए वो इसी नौइयत (nature) के है। यहाँ एक नुक्ता फिर से ज़हन में ताज़ा कर लें कि हुज़ूर ﷺ से इस अंदाज़ में सीगा-ए-वाहिद में जो ख़िताब किया जाता है, वो दरअसल आप ﷺ की वसातत (मध्यस्थता) से उम्मत को हुक्म देना मक़सूद होता है।

“यक़ीनन नेकियाँ बदियों को दूर कर देती हैं। यह याद दिहानी है याद रखने वालों के लिये।”

إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ذَلِكَ ذِكْرِي
لِلذَّكَرَيْنِ ﴿١١٤﴾

आयत 115

“और सब्र कीजिए, यक़ीनन अल्लाह नेकी करने वालों का अज़्र ज़ाया नहीं करता।”

وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٥﴾

आयत 116

“तो क्यों ना ऐसा हुआ कि तुमसे पहले की क़ौमों में हक़ के ऐसे अलम्बरदार होते जो (अपनी-अपनी क़ौमों के लोगों को) रोकते ज़मीन में फ़साद मचाने से”

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِن قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةٍ
يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ

“मगर बहुत थोड़े लोग ऐसे थे, जिन्हें हमने उनमें से बचा लिया।”

إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ

यह बात कुरान में बार-बार दोहराई गई है कि हक़ के अलम्बरदार, अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर का हक़ अदा करने वाले लोग जहाँ भी हों, जिस क़ौम से भी हों, अल्लाह तआला हमेशा उन्हें अपनी रहमते खास से बचा लेता है।

“और पीछे पड़े रहे वो ज़ालिम उन ऐश व आराम की चीज़ों के जो उन्हें दी गई थीं और वो मुजरिम थे।”

وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ

﴿١١٦﴾

आयत 117

“और आपका रब ऐसा नहीं कि बस्तियों को जुल्म के साथ हलाक कर दे जबकि उनमें बसने वाले लोग इस्लाह करने वाले हों।”

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا

مُضِلُّونَ ﴿١١٤﴾

ऐसा नहीं होता कि किसी इलाके, किसी मुल्क या शहर में अच्छे किरदार के हामिल, अपनी और दूसरों की इस्लाह में सरगर्म लोगों की अक्सरियत हो और अल्लाह फिर भी उस बस्ती पर अज़ाब भेज दे।

आयत 118

“और अगर आपका रब चाहता तो तमाम नौए इंसानी को एक ही उम्मत बना देता, लेकिन वो तो इख़्तिलाफ़ करते ही रहेंगे।”

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَا

يَرَاؤُونَ مُخْتَلِفِينَ ﴿١١٥﴾

जहाँ कहीं भी लोग इकट्ठा मिल-जुल कर रह रहे होंगे उनमें इख़्तिलाफ़े राय का होना बिल्कुल फ़ितरी बात है। मुख़्तलिफ़ लोगों की मुख़्तलिफ़ सोच है, हर एक का अपना-अपना नुक्ता-ए-नज़र है और इसके लिये अपना-अपना इस्तदलाल (तर्क) है। उसी के मुताबिक़ उनके नज़रियात हैं और उसी के मुताबिक़ उनके आमाल व अफ़आल। जब तक यह इस्तदलाल इल्म और कुरान व सुन्नत की बुनियाद पर है तो इसमें कोई क़बाहत (संकोच) नहीं, बशर्ते कि यह इख़्तिलाफ़ की हद तक रहे और तिफ़र्क़े की सूरत इख़्तियार ना करे और “मन दीगरम तू दीगरी” वाला मामला ना हो।

इस नुक्ते को यूँ भी समझना चाहिये कि इमाम अबु हनीफ़ा और इमाम शाफ़ई रहि. दोनों ने कुरान व सुन्नत से इस्तदलाल किया है, मगर बाज़ अवकात दोनों बुजुर्गों की आराअ (राय) में बहुत ज़्यादा इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। मगर ऐसे अहले इल्म हज़रात के यहाँ ऐसा इख़्तिलाफ़ कभी भी नज़ाअ (विवाद) व तिफ़र्क़े बाज़ी का बाइस नहीं बनता। एक दूसरे ज़ाविये (एंगल) से देखा जाये तो दुनिया की रौनक और खूबसूरती भी इसी तनूअ (विविधता) और इख़्तिलाफ़ से क़ायम है।

गुलहाए रंगारंग से है रौनके चमन

ऐ ज़ौक़ इस चमन को है ज़ेब इख़्तिलाफ़ से!

अगर दुनिया में यक्सानियत (monotany) ही हो तो इंसान की तबीयत उससे उकता जाये।

आयत 119

“सिवाय उसके कि जिस पर आपका रब रहम फ़रमा दे। और इसी लिये उसने उन्हें पैदा किया है।”

إِلَّا مَنْ رَحِمَ رَبُّكَ وَلِذَلِكَ خَلَقَهُمْ

अल्लाह तआला ने इंसानों की तख़लीक़ के अंदर यह इख़्तिलाफ़ और तनूअ खुद रखा है। दुनिया में अरबों इंसान हैं मगर उनमें कोई से दो इंसानों के मिज़ाज, शक्ल व सूरत और आवाज़ हत्ता कि ऊँगलियों के निशानात आपस में नहीं मिलते। लिहाज़ा अल्लाह इंसानों को पैदा ही इसी अंदाज़ पर करता है कि उनमें तनूअ और इन्फ़रादियत क़ायम रहे। एक हदीसे नबवी की रू से इंसान भी मअदनियात (minerals) की तरह हैं। चुनाँचे जिस तरह मअदनियात की बेशुमार अक्रसाम (क्रिस्मे) हैं मगर हर एक की अपनी खुसूसितात और अपनी पहचान है, यही मामला इंसानों का है।

“और आपके रब की यह बात पूरी होकर रहेगी कि मैं जहन्नम को जिन्यों और इंसानों सबसे भर कर रहूँगा।”

وَمَتَّ كَلِمَةً رَبُّكَ لَا مَلَكٌ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

أَجْمَعِينَ ﴿١١٦﴾

यानि तमाम मुशरिक, सरकश (विद्रोही), नाफ़रमान और गुनहगार जिन्यों और इंसानों को उठा कर के जहन्नम का ईंधन बनाऊँगा और यूँ उनसे जहन्नम को भर दूँगा। उसने जन्नत बनाई है तो उसे भी आबाद करना है और जहन्नम बनाई है तो उसे भी ईंधन फ़राहम (provide) करना है।

आयत 120

“और (ऐ नबी ﷺ) हम रसूलों की खबरों में से हर एक आपको सुना रहे हैं”

وَكُلًّا نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ

यह “अंबिया अर्रसूल” की वही इस्तलाह (term) है जिसका ज़िक्र क़ब्ल अज़ें बार-बार हुआ है। हज़रत नूह, हज़रत हूद, हज़रत सालेह, हज़रत लूत, हज़रत शोएब और हज़रत मूसा अलै. के हालात हम आपको बार-बार इसलिये सुना रहे हैं:

“(ताकि) मज़बूत रखें हम इसके साथ आपका दिला”

مَا نُنْعِثُ بِهِ فُؤَادَكَ

ताकि इन वाक्यात को सुन कर आप और आपके साथियों के दिलों में इत्मिनान बढ़े और इस्तक्रामत में इज़ाफ़ा हो। इन वाक्यात के ज़रिये से हम यह बात वाज़ेह करना चाहते हैं कि मक्का में आप पर और आपके साथियों पर मसाइब (मुसीबतों) के जो पहाड़ टूट रहे हैं, यह कोई नई बात नहीं है, बल्कि जब भी कोई रसूल किसी क़ौम की तरफ़ मबऊस हुआ और उसे दावते हक़ पेश की तो उसकी मुखालफ़त इसी शद्दो-मद से हुई। अंबिया व रसूल और उनके साथियों को हमेशा ऐसे ही हालात का सामना करना पड़ा। मगर जिस तरह हमने हर बार अहले हक़ की मदद की और बिल्आख़िर कामयाब वही हुए, इसी तरह अब भी हक़ व बातिल की इस जाँ कसल कशमकश में बोल-बाला हक़ ही का होगा, और आख़िरकार फ़तह आपकी और आपके साथियों ही की होगी।

“और इसमें आपके पास हक़ आया है और मोमिनीन के लिये इसमें नसीहत और याद दिहानी है।”

وَجَاءَكَ فِي هَذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرٌ لِلْمُؤْمِنِينَ

(१२०)

यानि इस कुरान में या इस सूरत में या इन वाक्यात में हक़ और बातिल को बिल्कुल वाज़ेह कर दिया गया है और मोमिनीन के लिये नसीहत और याद दिहानी का सामान भी फ़राहम कर दिया गया है।

आयत 121

“और कह दीजिए उन लोगों से जो ईमान नहीं लाते कि तुम अपनी जगह पर करो (जो कर सकते हो) हम भी कर रहे हैं (जो कुछ हम कर सकते हैं)।”

وَقُلْ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ اَعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ اِنَّا عَمِلُونَ

عَمَلُونَ (१२१)

यानि तुम मेरी मुखालफ़त और दुश्मनी में कोई दक्कीका फ़रो गुज़ाशत (थोड़ी सी भी गुंजाइश) ना करो, इस ज़िमन में जो कर सकते हो बेशक मेरे खिलाफ़ कर गुज़रो, तुम अपने तरीक़े पर चलते रहो, हम अपनी रविश पर चलते रहेगे।

आयत 122

“और तुम भी इन्तेज़ार करो, हम भी मुन्तज़िर हैं।”

وَانتَظِرُوا اِنَّا مُنْتَظِرُونَ (१२२)

कि अल्लाह की तरफ़ से आख़िरी फ़ैसला क्या आता है।

आयत 123

“और अल्लाह ही के लिये हैं आसमानों और ज़मीन की तमाम छुपी चीज़ें और कुल का कुल मामला उसी की जानिब लौटा दिया जायेगा”

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ
كُلُّهُ

“तो आप उसी की इबादत करें और उसी पर तवक्कुल करें। और यकीनन आपका रब ग़ाफ़िल नहीं है उससे जो तुम लोग कर रहे हो।”

فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا
تَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾

بَارِكْ اللّٰهُ لِي وَلَكُمْ فِى الْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَنَفَعْنِىْ وَاَيَّاهُ كَمْ بِالْآيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ۔



सूरह युसुफ़

तम्हीदी कलिमात

चौदह मक्की सूरतों (सूरह युनुस से सूरतुल मोमिनून) पर मुश्तमिल इस तवील सिलसिले में तीन-तीन सूरतों के जो ज़ेली ग्रुप्स हैं, सूरह युसुफ़ इनमें से पहले ज़ेली ग्रुप का हिस्सा है, लेकिन इस सूरत को अपने मज़मून और खास अंदाज़ की बिना पर पहली दो सूरतों (सूरह युनुस और सूरह हूद) का ज़मीमा (complement) समझना चाहिए। बल्कि हकीकत तो यह है कि सूरह युसुफ़ पूरे कुरान मजीद में अपने अंदाज़ की एक बिल्कुल मुनफ़रिद (अकेली) सूरत है। इसकी हल्की सी मुशाबहत (copy) सिर्फ़ सूरह ताहा के साथ है। सूरह ताहा भी सूरह युसुफ़ की तरह सिर्फ़ एक रसूल यानि हज़रत मूसा अलै. के तज़किरे पर मुश्तमिल है। इन दोनों सूरतों में इसके अलावा एक मअनवी निस्बत यह भी है कि हज़रत युसुफ़ अलै. के ज़माने में और आपकी वसातत (मध्यस्थता) से बनी इसराइल मिस्त्र में दाख़िल हुए थे, जबकि हज़रत मूसा अलै. के ज़माने में आपके ज़रिये से वह लोग वहाँ से निकले थे।

इससे पहले मक्की सूरतों में अंबिया अर्रसूल का मज़मून बहुत शद्दो-मद्द के साथ बयान हुआ है, जबकि हज़रत इब्राहीम अलै. का ज़िक्क क़ससुल नबिय्यीन के अंदाज़ में आया है, पहले सूरतुल अनआम में और फिर सूरह हूद में। मगर सूरह युसुफ़ क़ससुल नबिय्यीन के ऐतबार से भी यँ मुनफ़रिद है कि पूरी सूरत एक ही नबी के हालात पर मुश्तमिल है। इस पूरे क्रिस्से में अंबिया अर्रसूल के अंदाज़ की हल्की सी झलक भी नज़र नहीं आती। यानि इस तरह का कोई इशारा कहीं भी नहीं मिलता कि हज़रत युसुफ़ अलै. मिस्त्र में इस क़ौम की तरफ़ मबऊस हुए थे, या फिर उन्होंने अपनी क़ौम को दावते तौहीद देने के बाद कहा हो कि अगर तुम मेरी इस दावत को नहीं मानोगे तो तुम पर अल्लाह का अज़ाब आएगा। पूरी सूरत में हमें इनकी तरफ़ से जा-बजा दावत की मिसालें मिलती हैं मगर वह एक मसलेह के अंदाज़ में तब्लीग़ करते नज़र आते हैं। इससे नबी और रसूल के माबैन फ़र्क़ भी वाज़ेह हो जाता है। रसूलों के हालात के ज़िम्न में हम पढ़ आये हैं कि एक रसूल की बेअसत तअय्युन (संकल्प) के साथ जिस क़ौम की तरफ़ होती थी वह उन्हें अल्लाह वाहिद की बंदगी और अपनी इताअत का हुक्म देता था: {إِنِ اعْبُدُوا اللَّهَ مِنۢ بَيْنِ يَدَيْهِ فَاعْبُدُوهُ وَآطِئُواْ مَظَاهِرَٓهُ} (सूरह नूह:3) “कि तुम अल्लाह की बंदगी करो, उसका तक्वा इख्तियार करो और मेरी इताअत करो।” और अगर वह क़ौम अपने रसूल की दावत को रद्द करती चली जाती थी तो बिलआख़िर उस क़ौम पर अल्लाह की तरफ़ से अज़ाब नाज़िल हो जाता था और उसे सफ़हा-ए-हस्ती से मिटा दिया जाता था। लेकिन नबी का मामला औलिया अल्लाह की तरह होता था। वह अपने मआशरे में तौहीद की दावत देता, कुफ़्र व शिर्क और बिदआत से इजतनाब (बचने) की तलक़ीन (हिदायत) करता और उनकी इस्लाह की कोशिश करता। बनी इसराइल में अम्बिया किराम अलै. तसल्लुल के साथ (continue) आते रहे हैं, लेकिन रसूल मअदूदे चंद (गिनती के) थे। उम्मत मुस्लिमा में बड़े-बड़े औलिया किराम अलै. पैदा हुए हैं और उन्होंने अज़ीमुश्शान दावती और तजदीदी (पुनर्निर्माण) खिदमात अंजाम दी हैं, लेकिन वही का दरवाज़ा अम्बिया किराम अलै. के बाद बंद हो चुका है।

इस सूरत के नुज़ूल और इसमें हज़रत युसुफ़ अलै. के हालात की इस क़दर तफ़सील बयान करने का बुनियादी सबब तो यह है कि मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ के दावा-ए-नबुवत की ख़बरें जब यहूद-ए-मदीना तक पहुँचीं तो उन्होंने तौरात की मालूमात की बुनियाद पर शरारतन मुशरिकीने मक्का को मुख्तलिफ़ सवालात भेजने शुरू कर दिए, जो वह हुज़ूर ﷺ से पूछते रहते थे। उन सवालात में एक अहम सवाल यह भी था कि बनी इसराइल के बारे में आप यह वाक़ियात तो बयान कर रहे हैं कि मिस्त्र में फ़िरऔन उन पर ज़ुल्म करता था और वहाँ वो गुलामाना ज़िन्दगी बसर कर रहे थे और फिर हज़रत मूसा अलै. उनको वहाँ से निकाल कर ले गए, मगर बनी इसराइल के जद्दे अमजद (forefather) हज़रत इब्राहीम, हज़रत इसहाक़ और हज़रत याकूब अलै. तो फ़लस्तीन में आबाद थे, उनके बारे में यह भी बताएँ कि वहाँ से यह लोग मिस्त्र में कैसे पहुँच गए? यह तारीख़ का एक सवाल था, जिसके जवाब में अल्लाह तआला ने ना सिर्फ़ यह पूरा वाक़िया इस सूरत में बहुत ही ख़ूबसूरत अंदाज़ में बयान फ़रमा दिया, बल्कि इस क्रिस्से को कुरैश के उस तर्ज़े अमल पर भी मुन्तबिक्क (logical) कर दिया जो वह बिरादराने युसुफ़ की मानिन्द (तरह) नबी आख़िरुज्ज़माँ ﷺ के साथ रवा रखे हुए थे।

मैं यह भी अर्ज़ करता चलूँ कि कुरान हकीम के साथ मेरा जो ज़हनी व क़ल्बी रिश्ता और मअनवी रब्त (मानसिक लिंक) व ताल्लुक़ कायम हुआ उसका नुक्ता-ए-आगाज़ यही सूरह युसुफ़ बनी, जब मैंने मौलाना अबुल आला मौदूदी रहि. के क़लम से इसकी तफ़सीर का मुताअला (study) किया। मैंने 1947 में मैट्रिक का इम्तिहान पास ही किया था कि मशरिफ़ी पंजाब में फ़सादात शुरू हो गए और मुसलमानों का क़त्ले आम होने लगा। तक्ररीबन डेढ़ माह तक हम अपने शहर हिसार में महसूर (घिरे) रहे। हमने अपनी हिफ़ाज़त के लिये मोर्चे कायम कर लिए थे, जिनमें शहर के नौजवान अपनी बारी से झूटी देते। फ़ारिग वक़्त में, मैं और मेरे बड़े भाई इज़हार अहमद एक मस्जिद में बैठ कर मुताअला करते। उन दिनों मौलाना मौदूदी रहि. के माहनामा (monthly) तर्जुमानुल कुरान में “तफ़हीमुल कुरान” के सिलसिले में सूरह युसुफ़ की तफ़सीर शाया (publish) हो रही थी। मैंने भी मैट्रिक में अरबी का मज़मून (subject) रखा था और भाईजान ने भी जब मैट्रिक किया था तो अरबी पढ़ी थी। चुनाँचे हम मिल कर सूरह युसुफ़ की तफ़सीर का मुताअला करते और उस पर बाहम मुज़ाकरा करते। कुरान हकीम की तिलावत और तर्जुमे की मदद से उसको समझने का मामला तो पहले से ही था, लेकिन इस तफ़सीरी मुताअले और मुज़ाकरे से कुरान हकीम के साथ ज़हनी और क़ल्बी रिश्ता अस्तवार (solid) हुआ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

आयात 1 से 6 तक

الرَّسُولُ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ① إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ② نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَذَا الْقُرْآنَ وَإِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الْغَافِلِينَ ③ إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ ④ قَالَ يَبْنَئِي لَكَ تَقْصُصُ رُءْيَاكَ عَلَى إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُبِينٌ ⑤ وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلَى آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَى أَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ⑥

आयात 1

“अलिफ़, लाम, रा। यह एक रौशन किताब की आयात हैं।”

الرَّسُولُ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ①

यह उस किताबे रौशन की आयात हैं जो अपना मुद्दा वाज़ेह तौर पर बयान करती है और कोई अबहाम (अस्पष्टता) बाक़ी नहीं रहने देती।

आयात 2

“हमने इसको नाज़िल किया है अरबी कुरान बना कर”

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا

यानि वह कुरान जो उम्मुल किताब और लौहे महफूज़ में हमारे पास है, इसको हमने कुराने अरबी बना कर मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ पर नाज़िल किया है।

“ताकि तुम लोग इसे अच्छी तरह से समझ सको।”

لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ②

यह खिताब अरब के उम्मीय्यीन से है कि हमारे आखरी रसूल ﷺ की अव्वलीन बेअसत तुम्हारी तरफ़ हुई है। आप ﷺ के मुखातबीन अव्वलीन तुम लोग हो। चुनाँचे हमने कुरान को तुम्हारी अपनी ज़बान में नाज़िल किया है ताकि तुम लोग इसे अच्छी तरह समझ सको।

आयत 3

“(ए नबी ﷺ!) हम आपको सुनाने लगे हैं बेहतरीन बयान”

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ

क्रसस (क्राफ़ की ज़बर के साथ) यहाँ बतौर मसदर आया है और इसके मायने हैं “बयान।” अगर लफ़्ज़ क्रिसस (क्राफ़ की ज़ेर के साथ) होता तो क्रिस्सा की जमा के मायने देता, और इस सूरत में इसका तर्जुमा यूँ होता कि हम आप ﷺ को बेहतरीन क्रिस्सा सुना रहे हैं।

“इस कुरान के साथ जो हमने आपकी तरफ़ वही किया है, और यक़ीनन आप इससे पहले (इससे) नावाक्रिफ़ थे।”

بِمَا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَذَا الْقُرْآنَ وَإِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ

لِنَ الْغَفْلِينَ ۝

यानि कुरान में इस वही (सूरत) के नुज़ूल से पहले आप इस वाक़िये से वाक्रिफ़ नहीं थे।

आयत 4

“जब युसुफ़ ने अपने वालिद (याक़ूब) से कहा”

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ

हज़रत याक़ूब अलै. की बड़ी बीवी से आपके दस बेटे थे और वह सबके सब उस वक़्त तक जवानी की उम्र को पहुँच चुके थे, जबकि आपके दो बेटे (युसुफ़ अलै. और बिन यमीन) आपकी छोटी बीवी से थे। इनमें हज़रत युसुफ़ अलै. बड़े थे, मगर अभी यह दोनों ही कमसिन (teen) थे।

“अब्बा जान! मैंने ख़्वाब में देखा है ग्यारह सितारों और सूरज और चाँद को, मैंने उनको देखा है कि वह मुझे सज्दा कर रहे हैं।”

يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ

وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ ۝

आयत 5

“याक़ूब अलै. ने फ़रमाया: ए मेरे प्यारे बेटे! अपना यह ख़्वाब अपने भाईयों के सामने बयान ना करना”

قَالَ يَبْنَئُ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلَى إِخْوَتِكَ

हज़रत याक़ूब अलै. ने समझ लिया कि इस ख़्वाब में युसुफ़ के ग्यारह भाईयों और माँ-बाप के बारे में कोई इशारा है और शायद अल्लाह तआला मेरे इस बेटे के लिये कोई ख़ास फज़ीलत ज़ाहिर करने वाला है।

“वरना वह तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई साज़िश करेंगे।”

فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا

मुमकिन है वह लोग ख़्वाब सुन कर इसमें वाज़ेह इशारे को भाँप लें तो उनके अंदर हसद की आग भड़क उठे और फिर वह तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई साज़िश करें, तुम्हें गज़न्द (harm) पहुँचाने की कोशिश करें।

“यक़ीनन शैतान तो इंसान का खुला दुश्मन है।”

إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝

वह दुश्मनी में किसी को भी किसी भी वक़्त, कोई भी पट्टी पढ़ा सकता है।

आयत 6

“और इसी तरह तुम्हारा रब तुम्हें मुन्तखिब करेगा”

وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ

हज़रत याकूब अलै. ने समझ लिया कि मेरे बेटों में से यूसुफ़ को अल्लाह तआला ने नबुवत के लिये चुन लिया है।

“और तुम्हें सिखाएगा तावीलुल अहादीस में से (ईल्म)”

وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ

यहाँ पर तावील हदीस के दो मायने हो सकते हैं, एक तो ख़्वाबों की ताबीर और दूसरे मामला फ़हमी और दूरबीनी, बातों की कुनह (तह) तक पहुँच जाना, हकीकत तक रसाई हो जाना।

“और इत्माफ़ फ़रमायेगा अपनी नेअमत का तुझ पर और आले याकूब पर जिस तरह उसने इससे पहले अपनी नेअमत का इत्माफ़ फ़रमाया तेरे आबा व अजदाद इब्राहीम और इसहाक़ अलै. पर।”

وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَىٰ

أَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلِ إِبْرَاهِيمَ وَاسْحَقَ

यहाँ हज़रत याकूब अलै. ने कसरे नफ़सी के सबब हज़रत इब्राहीम और हज़रत इसहाक़ अलै. के साथ अपना नाम नहीं लिया।

“यक्रीनन तेरा रब जानने वाला, हिकमत वाला है।”

إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ٦

आयात 7 से 20 तक

لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٍ لِلِّسَّالِينَ ② إِذْ قَالَ الْيُوسُفُ لِأَخِيهِ أَحِبُّ إِلَيَّ أَيْنَا مِثْلًا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّ أَبَانَا لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ③ اقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَظْهَرُوا أَرْضًا يَخُلْ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ④ قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَالْقُوَّةُ فِي غَيْبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطُهَا بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِنْ كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ⑤ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنَصْحُونَ ⑥ أَرْسَلَهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَع وَيَلْعَبُ وَإِنَّا لَهُ لَحَفُظُونَ ⑦ قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُونَ ⑧ قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَخَسِرُونَ ⑨ فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَاجْمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي غَيْبَتِ الْجُبِّ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَهُمْ بِأَمْرِهِمْ هَذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ⑩ وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ ⑪ قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ⑫ وَجَاءُوا عَلَىٰ قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ⑬ وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَىٰ دَلْوَةً قَالَ يُبْشِرُ-ي هَذَا غُلَامٌ وَأَسَرُّهُ بِضَاعَةً وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ⑭ وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ⑮

आयत 7

“यक्रीनन युसुफ़ और आपके भाइयों (के क्रिस्से) में (बहुत सी) निशानियाँ हैं पृच्छने वालों के लिये।”

لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٍ لِّلْمُتَلَكِّينَ ۝

यानि जिन लोगों (कुरैशे मक्का) ने यह सवाल पूछा है और जिन लोगों (यहूदे मदीना) के कहने पर पूछा है, उन सबके लिये इस क्रिस्से में बहुत सी निशानियाँ हैं। अगर वह सिर्फ़ इस क्रिस्से को हकीकत की नज़रों से देखें और इस पर गौर करें तो बहुत से हक्काइक़ निखर कर उनके सामने आ जायेंगे।

आयत 8

“जब उन्होंने कहा कि युसुफ़ और इसका भाई हमारे वालिद को हमसे ज़्यादा महबूब हैं जबकि हम एक ताक़तवर जमात हैं।”

إِذْ قَالُوا لِيُوسُفَ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَيْنَا مِمَّنَّا وَغُضِبْنَا
عُصْبَةً

बिरादराने युसुफ़ ने कहा कि हम पूरे दस लोग हैं, सबके सब जवान और ताक़तवर हैं, ख़ानदान की शान तो हमारे दम क़दम से है (क़बाईली ज़िंदगी में नौजवान बेटों की तादाद पर ही किसी ख़ानदान की शान व शौक़त और कुव्वत व ताक़त का इन्हसार [dependent] होता है) लेकिन हमारे वालिद हमें नज़र अंदाज़ करके इन दो छोटे बच्चों को ज़्यादा अहमियत देते हैं।

“यक्रीनन हमारे वालिद सरीह ग़लती पर हैं।”

إِنَّ أَبَانَا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

आयत 9

“(चुनाँचे) क़त्ल कर दो युसुफ़ को या इसे फेंक आओ (दूर) किसी इलाक़े में ताकि तुम्हारे वालिद की तवज्जो सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ हो जाए”

اقْتُلُوا يُوسُفَ أَوْ اطْرَحُوهُ أَرْضًا يَبْلُغَ لَكُمْ وَجْهُ
أَبِيكُمْ

युसुफ़ चूँकि इन दोनों में बड़ा है, इसलिये वही वालिद साहब की सारी तवज्जो और इनायात का मरकज़ व महवर (center & axis) बना हुआ है, चुनाँचे जब यह नहीं रहेगा तो ला-महाला (आनिवार्य रूप से) वालिद साहब की तमामतर शफ़क़त और मेहरबानी हमारे लिये ही होगी।

“और फिर इसके बाद नेक बन जाना।”

وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ۝

इस फ़िक़रे में उनके नफ़्स और ज़मीर की कशमकश की झलक साफ़ नज़र आ रही है। ज़मीर तो मुसलसल मलामत कर रहा था कि यह क्या करने लगे हो? अपने भाई को क़त्ल करना चाहते हो? यह तुम्हारी सोच दुरुस्त नहीं है! लेकिन आमतौर पर ऐसे मौक़े पर इंसान का नफ़्स उसके ज़मीर पर ग़ालिब आ जाता है, जैसा कि हमने सूरतुल मायदा, आयत 30 में हाबील और क़ाबील के सिलसिले में पढ़ा था: {فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ} “पस क़ाबील के नफ़्स ने उसे आमदा कर ही लिया अपने भाई के क़त्ल करने पर।”

इसी तरह उन लोगों ने भी अपने ज़मीर की आवाज़ को दबा कर आपस में मशवरा किया कि एक दफ़ा यह कड़वा घूंट हलक़ से उतार लो, फिर इसके बाद तौबा करके और कफ़ारा वगैरह अदा करके किसी ना किसी तरह इस जुर्म की तलाफ़ी कर देंगे और बाक़ी ज़िन्दगी नेक बन कर रहेंगे।

आयत 10

“कहा उनमें से एक कहने वाले ने कि यूसुफ़ को क़त्ल मत करो”

قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ

यह शरीफुन्नफ़्स इंसान उनके सबसे बड़े भाई थे जिन्होंने यह मशवरा दिया। इनका नाम यहूदा था, और इन्हीं के नाम पर लफ़्ज़ “यहूदी” बना है। इन्होंने कहा कि असल मसला तो इससे पीछा छुड़ाने का है, लिहाज़ा ज़रूरी नहीं कि क़त्ल जैसा गुनाह करके ही यह मक़सद हासिल किया जाए, इसके लिये कोई दूसरा तरीक़ा भी इख़्तियार किया जा सकता है।

“और डाल आओ इसे किसी बावली के ताक़चे में, उठा ले जाएगा इसको कोई काफ़िला”

وَالْقُوَّةُ فِي غَيْبَتِ الْجَبِّ يَلْتَقِظُهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ

पुराने ज़माने के कुओं की एक ख़ास किस्म को बावली कहा जाता था, इसका मुँह खुला होता था लेकिन गहराई में यह तदरीजन तंग होता जाता था। पानी की सतह के करीब इसकी दीवार में ताक़चे से बनाए जाते थे। इस तरह की बावलियाँ पुराने ज़माने में काफ़िलों के रास्तों पर बनाई जाती थी। चुनाँचे इस मशवरे पर अमल की सूरत में क़वी इम्कान था कि किसी काफ़िले का उधर से गुज़र होगा और काफ़िले वाले यूसुफ़ को बावली से निकाल कर अपने साथ ले जायेंगे। बड़े भाई के इस मशवरे का मक़सद बज़ाहिर यह था कि इस तरह कम अज़ कम यूसुफ़ की जान बच जाएगी और हम भी उसके खून से हाथ रंगने के जुर्म के मुरतकिब (दोषी) नहीं होंगे।

“अगर तुम कुछ करने ही वाले हो।”

إِنْ كُنْتُمْ فاعِلِينَ ⑩

जब नौ भाई इस बात पर पूरी तरह तुल गए कि यूसुफ़ से बहरहाल छुटकारा हासिल करना है तो दसवाँ भाई उनको इस हरकत से बिल्कुल मना तो नहीं कर सका, लेकिन उसने कोशिश की कि कम अज़ कम वह लोग यूसुफ़ को क़त्ल करने से बाज़ रहें।

आयत 11

“उन्होंने कहा: अब्बाजान! क्या वजह है कि आप हम पर भरोसा नहीं करते यूसुफ़ के मामले में, हालाँकि हम तो उसके बड़े खैर-ख्वाह हैं।”

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَى يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ

لَنَصِحُونَ ⑪

आयत 12

“कल ज़रा इसे हमारे साथ भेजिये, वह कुछ चर-चुग लेगा और खेले कूदेगा, और हम यक़ीनन इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।”

أَرْسَلَهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعْ وَيَلْعَبُ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ⑫

उन्होंने कहा कि कल हम शिकार पर जा रहे हैं, आप यूसुफ़ को भी हमारे साथ भेज दीजिये। वहाँ यह दरख्तों से फल वगैरह खाएगा और खेल-कूद से भी दिल बहलाएगा। आप इसकी तरफ़ से बिल्कुल फ़िक्रमंद ना हों, हम इसकी हिफ़ाज़त करेंगे।

आयत 13

“याक़ूब अलै. ने फ़रमाया: मुझे यह बात अंदेशे में डालती है कि तुम इसे ले जाओ, और मैं डरता हूँ कि कहीं इसे भेड़िया ना खा जाए जबकि तुम इससे ग़ाफ़िल हो जाओ।”

قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ

الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُونَ ⑬

मुझे इस बात का डर है कि वह तुम्हारे साथ चला जाए, फिर तुम लोग अपनी मसरूफ़ियात में मुन्हमिक (मग्न) हो जाओ, इस तरह वह जंगल में अकेला रह जाए और कोई भेड़िया उसे फाड़ खाए।

आयत 14

“वह कहने लगे कि अगर (हमारे होते हुए) इसे भेड़िया खा गया जबकि हम एक ताक़तवर जमात हैं, तब तो हम बहुत ही निकम्मे साबित होंगे।”

قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِدَا
لْخُسْرُونَ ﴿١٤﴾

यह कैसे मुमकिन है कि हमारे जैसे दस कड़ियल जवानों के होते हुए उसे भेड़िया खा जाए, हम इतने भी गए गुज़रे नहीं हैं।

आयत 15

“फिर जब वह उसको ले गए और सब इस पर मुत्तफ़िक़ (agree) हो गए कि उसे डाल दें बावली के ताक़चे में।”

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَاجْمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي غَيِّبَتِ الْجُبِّ

यहाँ पर اَجْمَعُوا के बाद عَلَى का सिला महज़ूफ़ है, यानि इस मनसूबे पर वह सबके सब जमा हो गए, उन्होंने इस राय पर इत्तेफ़ाक़ कर लिया।

“और हमने (उस वक़्त) वही की युसुफ़ को कि तुम (एक दिन) उनको उनकी यह हरकत ज़रूर जतलाओगे और उन्हें इसका अंदाज़ा भी नहीं होगा।”

وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِأَمْرِ هَذَا وَهُمْ لَا
يَشْعُرُونَ ﴿١٥﴾

यह बात इल्हाम की सूरत में हज़रत युसुफ़ अलै. के दिल में डाली गई होगी, क्योंकि अभी आपकी उम्र नबुवत की तो नहीं थी कि बाकायदा वही होती। बहरहाल आप पर यह इल्हाम किया गया कि एक दिन तुम अपने इन भाइयों को यह बात उस वक़्त जतलाओगे जब इन्हें इसका खयाल भी नहीं होगा। इस छोटे से फ़िक़रे में जो बलागत है इसका जवाब नहीं। चंद अल्फ़ाज़ के अंदर हज़रत युसुफ़ अलै. की तस्सली के लिये गोया पूरी दास्तान बयान कर दी गई है कि तुम्हारी जान को ख़तरा नहीं है, तुम ना सिर्फ़ इस मुश्किल सूरतेहाल से निकलने में कामयाब हो जाओगे बल्कि एक दिन ऐसा भी आएगा जब तुम इस काबिल होगे कि अपने इन भाइयों को उनका यह सुलूक जतला सको।

आयत 16

“और वह आए अपने वालिद के पास शाम को रोते हुए।”

وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ ﴿١٦﴾

आयत 17

“उन्होंने कहा: अब्बाजान! हम जाकर दौड़ का मुकाबला करने लगे और हमने छोड़ दिया था युसुफ़ को अपने सामान के पास”

قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِنْدَ
مَتَاعِنَا

हमने अपना इज़ाफ़ी सामान इकठ्ठा करके एक जगह रखा और उस सामान के पास हमने युसुफ़ को छोड़ दिया था। खुद हम एक-दूसरे से दौड़ में मुकाबला करते हुए दूर निकल गए।

“तो उसे खा लिया एक भेड़िये ने। और आप हमारी बात मानेंगे तो नहीं, ख़्वाह हम कितने ही सच्चे हों।”

فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا
صَادِقِينَ ﴿١٧﴾

आयत 18

“और वह उसकी कमीज़ पर झूठ-मुठ का खून भी लगा लाए।”

وَجَاءُوا عَلَى قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ

“हज़रत याक़ूब ने फ़रमाया: (वाक़िया यूँ नहीं) बल्कि तुम्हारी नफ़्सों ने तुम्हारे लिये एक बड़े काम को आसान बना दिया है।”

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا

उनकी बात सुनकर हज़रत याक़ूब अलै. ने फ़रमाया कि नहीं, बात कुछ और है। यह बात जो तुम बता रहे हो यह तो तुम्हारे जी की ग़द्दी हुई एक बात है। तुम्हारे नफ़्सों ने तुम्हारे लिये एक बड़ी बात को हल्का करके पेश किया है और तुम लोगों ने कोई बहुत बड़ा ग़लत अक्रदाम किया है।

“अब सब्र ही बेहतर है, और अल्लाह ही की मदद तलब की जा सकती है उस पर जो तुम बयान कर रहे हो।”

فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ ①

हज़रत याक़ूब अलै. अकेले थे, बूढ़े थे और दूसरी तरफ़ दस जवान बेटे, इस सूरते हाल में और क्या कहते?

आयत 19

“और (कुछ अरसे बाद) एक क़ाफ़िला आया तो उन्होंने भेजा अपने आगे चलने वाले को”

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ

जब क़ाफ़िले चलते थे तो एक आदमी क़ाफ़िले के आगे-आगे चलता था। वह क़ाफ़िले के पड़ाव के लिये जगह का इन्तखाब (चुनाव) करता और पानी वगैरह के इंतज़ाम का जायज़ा लेता। क़ाफ़िले वालों ने इस झूटी पर मामूर शख्स को भेजा कि वह जाकर पानी का खोज लगाए। उस शख्स ने बावली देखी तो पानी निकालने की तदबीर करने लगा।

“तो उसने लटकाया अपना डोला।”

فَادْلَىٰ دَلْوَهُ

हज़रत युसुफ़ ने उसके डोल को पकड़ लिया। उसने जब डोल खींचा और हज़रत युसुफ़ को देखा तो:

“वह पुकार उठा कि खुश ख़बरी हो! यह तो एक लड़का है। और उन्होंने उसे छुपा लिया, एक पूंजी समझ कर।”

قَالَ يَبْشُرِي هَذَا غُلَامٌ وَأَسَرُّوهُ بِضَاعَةً

कि बहुत ख़ूबसूरत लड़का है, बेचेंगे तो अच्छे दाम मिलेंगे।

“और अल्लाह ख़ूब जानता था जो वो कर रहे थे।”

وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ②

आयत 20

“और (मिस्र पहुँच कर) उन्होंने बेच दिया उसको बड़ी थोड़ी सी कीमत पर चंद दिरहम के एवज़, और वो थे उसके मामले में बहुत ही क़नाअत पसंद।”

وَشَرُّوهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ

مِنَ الزَّاهِدِينَ ③

अगरचे उन्होंने हज़रत युसुफ़ अलै. को माले तिजारत समझ कर छुपाया था, मगर मिस्र पहुँच कर बिल्कुल ही मामूली कीमत पर फ़रोख्त कर दिया। उस ज़माने में दिरहम एक दीनार का चौथा हिस्सा होता था। गोया उन्होंने चंद चवन्नियों के एवज़ आपको बेच दिया। इसलिये कि आपके बारे में उस वक़्त तक उन्हें कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं रही थी। इसकी दो वजुहात थीं, एक तो आप उनके लिये मुफ़्त का माल थे जिस पर उन लोगों का कोई सरमाया वगैरह नहीं लगा था, लिहाज़ा जो मिल गया उन्होंने उसे ग़नीमत जाना। दूसरे उन लोगों को आपकी तरफ़ से हर वक़्त यह धड़का लगा रहता था कि

लड़के के वारिस आकर कहीं इसे पहचान ना लें और उन पर चोरी का इल्ज़ाम ना लग जाए। लिहाज़ा वह जल्द अज़ जल्द आपके मामले से जान छुड़ाना चाहते थे।

आयात 21 से 29 तक

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لَا مَرْأَتَهُ أَكْرَمِيَ مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنِيَ أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۚ وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٢﴾ وَرَأَوْنَاهُ الْيَتِيمَ الَّذِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابُ وَقَالَتْ هَيْت لَكَ ۚ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنْ رَأَاهَاَنَّ رَبُّهُ ۚ كَذَلِكَ نَتَصَرَّفُ عَنْهُ الشُّرُوءَ وَالْفَحْشَاءَ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ﴿٢٤﴾ وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِنْ دُبُرٍ ۚ وَالْفَيَّاسُ يَنْبَغِي أَنَّ الْبَابَ قَالَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٥﴾ قَالَ هِيَ رَأَوْنِي عَنْ نَفْسِي ۚ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ أَهْلِهَا إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٦﴾ وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٧﴾ فَلَمَّا رَأَىٰ قَمِيصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۚ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾ يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هَذَا ۚ وَاسْتَغْفِرِي لِذَنْبِكِ ۚ إِنَّكَ كُنْتَ مِنَ الْخَاطِئِينَ ﴿٢٩﴾

आयात 21

“और मिस्र के जिस शख्स ने युसुफ़ को ख़रीदा, (उसने) अपनी बीवी से कहा: इसको अच्छे तरीक़े से रखना, हो सकता है यह हमारे लिये नफ़ा बख़्श हो या फिर हम इसे अपना बेटा ही बना लें।”

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لَا مَرْأَتَهُ أَكْرَمِيَ مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنِيَ أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۚ

वह शख्स मिस्र की हुकूमत में बहुत आला मंसब (अज़ीज़े मिस्र) पर फ़ाइज़ था। हज़रत युसुफ़ अलै. को बेटा बनाने की ख्वाहिश से मालूम होता है कि शायद उसके यहाँ औलाद नहीं थी।

“और इस तरह हमने युसुफ़ को उस मुल्क में तमक्कुन (take care) अता किया।”

وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ

इस तरीक़े से अल्लाह तआला ने युसुफ़ अलै. को उस दौर की मुतमद्दन तरीन मम्लकत (Modern Civil Society) में पहुँचा दिया और वहाँ आपकी रिहाइश (रहने) का बंदोबस्त भी किया तो किसी झोंपड़ी में नहीं बल्कि मुल्क के एक बहुत बड़े, साहिबे हैसियत के घर में, और वह भी महज़ एक गुलाम के तौर पर नहीं बल्कि खुसूसी इज्ज़त व इकराम के अंदाज़ में।

“और ताकि हम उसको सिखाएँ बातों की तह तक पहुँचने का इल्म।”

وَلِنُعَلِّمَهُ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ

यानि अज़ीज़े मिस्र के घर में आपको जगह बना कर देने का बुनियादी मक़सद यह था कि वहाँ आप को “मामला फ़हमी” की तरबियत फ़राहम की जाए। अज़ीज़े मिस्र का घर एक तरह का सेक्रेटरियेट (सचिवालय) होगा जहाँ आए दिन इन्तहाई आला सतह के इजलास (मीटिंग्स) होते होंगे, और क़ौमी व बैनुल अक़वामी नौइयत के इन्तहाई अहम अमूर (इंटरनेशनल मामलों) पर बहस व तम्हीस (छानबीन) के बाद फ़ैसले किये जाते होंगे और हज़रत युसुफ़ को इन तमाम सरगर्मियों का

बहुत करीब से मुशाहिदा करने के मौक़े मयस्सर आते होंगे। इस तरह बहुत आला सतह की तालीम व तरबियत का एक इंतज़ाम था जो हज़रत युसुफ़ के लिये यहाँ पर कर दिया गया।

“और अल्लाह तो अपने फ़ैसले पर ग़ालिब है लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं हैं।”

وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا

يَعْلَمُونَ ﴿٢١﴾

अल्लाह तआला अपने इरादे की तन्फ़ीज़ पर ग़ालिब है, वह अपना काम करके रहता है।

आयत 22

“और जब आप अपनी जवानी को पहुँच गए तो हमने आप को हुक्म और इल्म अता किया।”

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا

“और इसी तरह हम मोहसिनीन को बदला देते हैं।”

وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٢﴾

हुक्म और इल्म से मुराद नबुवत है। हुक्म के मायने कुव्वते फ़ैसला के भी हैं और इक़तदार (ताक़त) के भी। इल्म से मुराद वही है।

आयत 23

“और आपको फ़ुसलाने की कोशिश की उस औरत ने जिसके घर में आप थे”

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهِ

यानि अज़ीज़े मिस्र की बीवी आप पर फ़रिफ़ता (मुग्ध) हो गई। कुरान में इसका नाम मज़कूर नहीं, अलबत्ता तौरात में इसका नाम जुलेखा बताया गया है।

“और (एक मौक़े पर) उसने दरवाज़े बंद कर लिए और बोली जल्दी से आ जाओ!”

وَعَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْت لَكَ

“आप ने फ़रमाया: मैं अल्लाह की पनाह तलब करता हूँ, वह मेरा रब है, उसने मुझे अच्छा ठिकाना दिया है।”

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهُ رَبِّيْ اَحْسَنُ مِّنْ هٰذَا

यहाँ पर “रब” के दोनों मायने लिये जा सकते हैं अल्लाह भी और आक्रा भी। चुनाँचे इस फ़िक़रे का एक मफ़हूम तो यह है कि वह अल्लाह मेरा रब है और उसने मेरे लिये बहुत अच्छे ठिकाने का इंतज़ाम किया है, मैं उसकी नाफ़रमानी का कैसे सोच सकता हूँ! दूसरे मायने में इसका मफ़हूम यह है कि आपका ख़ाविंद मेरा आक्रा है, वह मेरा मोहसिन और मुरब्बी भी है, उसने मुझे अपने घर में बहुत इज्ज़त व इकराम से रखा है, और मैं उसकी ख़यानत करके उसके ऐतमाद को ठेस पहुँचाऊँ, यह मुझसे नहीं हो सकता! यह दूसरा मफ़हूम इसलिये भी ज़्यादा मुनासिब है कि “रब” का लफ़ज़ इस सूरत में आक्रा और बादशाह के लिये मुतअदिद (कई) बार इस्तेमाल हुआ है।

“बेशक ज़ालिम लोग फ़लाह नहीं पाया करते।”

اِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾

आयत 24

“और उस औरत ने इरादा किया आपका, और आप भी इरादा कर लेते उसका अगर ना देख लेते अपने रब की एक दलील।”

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا اَنْ رَّا بُرْهَانَ رَبِّهٖ

हज़रत युसुफ़ अलै. जवान थे और मुमकिन था कि तबअ बशरी (इंसानी फ़ितरत) की बुनियाद पर आपके दिल में भी कोई ऐसा ख्याल जन्म लेता, मगर अल्लाह ने इस नाज़ुक मौक़े पर आपकी खुसूसी मदद फ़रमाई और अपनी खुसूसी निशानी दिखा कर आपको किसी मनफ़ी (negative) ख्याल से महफूज़ रखा। यह निशानी क्या थी, इसका कुरान में कोई ज़िक्र नहीं, अलबत्ता तौरात में इसकी वज़ाहत यूँ बयान की गई है कि ऐन इस मौक़े पर हज़रत याक़ूब अलै. की शकल दीवार पर ज़ाहिर हुई और आपने ऊँगली का इशारा करके हज़रत युसुफ़ को बाज़ रहने के लिये कहा।

“यह इसलिये कि हम फ़ेर दें उससे बुराई और बेहयाई को।”

كَذَلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ

यानि हमने अपनी निशानी दिखा कर हज़रत युसुफ़ से बुराई और बेहयाई का रुख फ़ेर दिया और यूँ आपकी अस्मत व इफ़फ़त (Harmony and Chest) की हिफ़ाज़त का खुसूसी अहतमाम किया।

“यक़ीनन वह हमारे चुने हुए बन्दों में से थे।”

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ٢٠

वाज़ेह रहे कि यहाँ लफ़ज़ मुख़लस (लाम की ज़बर के साथ) आया है। मुख़लस और मुख़लस के फ़र्क़ को समझ लीजिए। मुख़लस इस्मुल फ़ाइल है यानि खुलूस व इख़लास से काम करने वाला और मुख़लस वह शख्स है जिसको ख़ालिस कर लिया गया हो। अल्लाह के मुख़लस वह हैं जिनको अल्लाह ने अपने लिये ख़ालिस कर लिया हो, यानि अल्लाह के ख़ास बरगज़ीदा (चुने हुए) और चहेते बन्दे।

आयत 25

“और वह दोनों आगे-पीछे दरवाज़े की तरफ़ दौड़े”

وَأَسْتَبَقَا الْبَابَ

यानि हज़रत युसुफ़ ने जब देखा कि इस औरत की नीयत ख़राब है और इस पर शैतानियत का भूत सवार है तो आप उससे बचने के लिये दरवाज़े की तरफ़ लपके और आपके पीछे वह भी भागी ताकि आपको क़ाबू कर सके।

“और फाड़ दी उस (औरत) ने आपकी क़मीज़ पीछे से”

وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِنْ دُبُرٍ

आपको दौड़ते हुए देख कर उस औरत ने आपकी तरफ़ तेज़ी से लपक कर पीछे से आपको पकड़ने की कोशिश की तो आपकी क़मीज़ उसके हाथ में आकर फट गई।

“और पाया उन दोनों ने उसके ख़ाविंद को दरवाज़े के पास।”

وَالْفَيّاسِيْدَ هَٰذَا الْبَابِ

उस औरत ने लाज़िमन ऐसे वक़्त का इंत़खाब किया होगा जब उसका ख़ाविंद घर से बाहर था और उसके जल्द घर आने का इम्क़ान नहीं था, मगर ज्योंहि वह दोनों आगे-पीछे दरवाज़े से बाहर निकले तो ग़ैर-मुतवक्को तौर पर उसका ख़ाविंद ऐन दरवाज़े पर खड़ा था।

“वह (फ़ौरन) बोली क्या सज़ा होनी चाहिये ऐसे शख्स की जिसने इरादा किया तुम्हारी बीवी के साथ बुराई का, सिवाय इसके कि इसे जेल भेज दिया जाए या कोई और दर्दनाक सज़ा दी जाए।”

قَالَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ

أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ٢٥

अपने ख़ाविंद को देखते ही उस औरत ने फ़ौरन पैंतरा बदला और उसकी ग़ैरत को ललकारते हुए बोली कि इस लड़के ने मुझ पर दस्तदराज़ी (ज़बरदस्ती) की है और मैंने बड़ी मुश्किल से खुद को बचाया है। अब इससे आप ही समझें और इसे कोई इबरतनाक सज़ा दें।

आयत 26

“आपने फ़रमाया कि इसी ने मुझे फुसलाना चाहा था”

قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِي عَنْ نَفْسِي

सूरतेहाल बहुत नाज़ुक और ख़तरनाक रुख़ इख़्तियार कर चुकी थी। हज़रत युसुफ़ को भी अपने दिफ़ा (बचाव) में कुछ ना कुछ तो कहना था। लिहाज़ा आपने साफ़-साफ़ बता दिया कि खुद इस औरत ने मुझे गुनाह पर आमादा करने की कोशिश की है।

“और गवाही दी औरत के ख़ानदान वालों में से एक गवाह ने।”

وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ أَهْلِهَا

उस औरत के अपने रिश्तेदारों से भी कोई शख्स मौक़े पर आ पहुँचा। उसने मौक़ा महल देख कर वकूआ (event) के बारे में बड़ी मुदल्लल (logical) और खूबसूरत क़राइनी शहादत (circumstantial evidence) दी कि:

“अगर तो इसकी क़मीज़ फटी है सामने से, तो यह सच्ची है और वह झूठा है।”

إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ

الْكَذِبِينَ ㉑

अगर औरत से दस्तदराज़ी की कोशिश हो रही थी और वह अपना तहफ़ुज़ कर रही थी तो ज़ाहिर है कि हमलावर की क़मीज़ सामने से फटनी चाहिए।

आयत 27

“और अगर इसकी क़मीज़ फटी है पीछे से, तो फिर यह झूठी है और वह सच्चा है।”

وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ

الصّٰدِقِينَ ㉒

इस आदिलाना और हकीमाना गवाही से मालूम होता है कि जहाँ उस मआशरे में बहुत सी खराबियाँ थीं (जिनमें से कुछ का ज़िक्र आगे आया) वहाँ इस गवाही देने वाले शख्स जैसे हक़ गो और इंसफ़ पसंद लोग भी मौजूद थे जिसने क़राबतदार होते हुए भी हक़ और इंसफ़ की बात की।

आयत 28

“फिर जब उस (अज़ीज़े मिस्र) ने देखा कि आपकी क़मीज़ फटी हुई है पीछे से, तो उसने कहा कि यह तुम औरतों की चालों में से (एक चाल) है, यक़ीनन तुम औरतों के फ़रेब बहुत बड़े होते हैं।”

فَلَمَّا رَأَىٰ قَمِيصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِن كَيْدِكُنَّ

إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ㉓

फ़िर अज़ीज़े मिस्र ने हज़रत युसुफ़ से कहा:

आयत 29

“युसुफ़! इस मामले से दरग़ज़र करो।”

يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ㉔

इसके बाद वह अपनी बीवी से मुखातिब हुआ और बोला:

“और तुम अपने गुनाह की माफ़ी माँगो, यक़ीनन क़सूरवार तुम ही हो।”

وَاسْتَغْفِرْ لِي ذَنْبِكِ ۚ إِنَّكَ كُنْتَ مِنَ الْخٰطِئِينَ ㉕

आयात 30 से 35 तक

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا إِنَّا لَنَرِيهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ٣٠
 فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَأً وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ
 فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا إِنْ هَذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ٣١
 الَّذِي لَمْ يَسْجَنْ فِيهِ وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَا أُمِرَ لَا يُسْجَنَ وَلَيَكُونَنَّ مِنَ الصَّغِيرِينَ
 ٣٢ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ ٣٣
 فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ٣٤ ثُمَّ بَدَأَ لَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا رَأَوُا الْآيَاتِ لَيْسَ جُنْدَهُ
 حَتَّىٰ حِينٍ ٣٥

आयत 30

“और शहर में औरतों ने (इस वाकिये का जिक्र करते हुए) कहा कि अज़ीज़ की बीवी तो अपने गुलाम को फुसला रही है।”

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ

“वह उसकी मोहब्बत में गिरफ्तार हो चुकी है।”

قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا

“यकीनन हम देखते हैं कि वह बहुत भटक गई है।”

إِنَّا لَنَرِيهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ٣٠

उसका अपने गुलाम के साथ इस तरह का मामला! यह तो बहुत ही घटिया बात है!

आयत 31

“फिर जब उसने सुनी उनकी मक्काराना बातें”

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ

अज़ीज़े मिस्र की बीवी ने जब सुना कि शहर में उसके खिलाफ़ इस तरह के चर्चे हो रहे हैं और मिस्र की औरतें ऐसी तअन आमेज़ बातें कर रही हैं तो उसने भी जवाबी कार्रवाई का मंसूबा बना लिया। यह उस मआशरे के इन्तहाई आला सतह के लोगों की बात थी और इसका चर्चा भी उसी सतह पर हो रहा था। उसे भी अपने इर्द-गिर्द सब लोगों के किरदार का पता था, कहाँ क्या खराबी है और किसके यहाँ कितनी गंदगी है वह सब जानती थी। चुनाँचे उसने उस आला सोसाइटी के इज्जतमाई किरदार का भांडा बीच चौराहे में फोड़ने का फ़ैसला कर लिया।

“उसने दावत दी उन सबको और अहतमाम किया एक तकियेदार मजलिस का”

أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَأً

उसने खाने की एक पुरतकल्लुफ़ तक्ररीब का अहतमाम किया जिसमें मेहमान औरतों के लिये गाव तकिये लगे हुए थे।

“और उनमें से हर औरत को उसने एक छुरी दे दी”

وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا

खाने की चीज़ों में फ़ल वगैरह भी होंगे, चुनाँचे हर मेहमान औरत के सामने एक-एक छुरी भी रख दी गई।

“और (युसुफ़ से) कहा कि अब तुम इनके सामने आओ!”

وَقَالَتْ أَخْرِجْ عَلَيْنَهُ

“फिर जब उन्होंने युसुफ़ को देखा तो उसे बहुत अजीम जाना (शशदर [हैरान] रह गई)”

فَلَبَّارَ آيَةٍ أَكْبَرَهُ

“और उन सबने अपने हाथ काट लिए”

وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ

औरतों ने जब पाकीज़गी और तक्रद्दुस का पैकर एक जवाने रअना अपने सामने खड़ा देखा तो मबहूत होकर रह गई। सबकी सब आपके हुस्न व जमाल पर ऐसी फ़रिफ़ता हुई कि अपने-अपने हाथ ज़ख़मी कर लिये। मुमकिन है किसी एक औरत का हाथ तो वाकई आलमे हैरत व महवियत में कट गया हो और उसकी तरफ़ हज़रत युसुफ़ बहैसियत खादिम के मुतवज्जा हुए हों कि खून साफ़ करके पट्टी वगैरह कर दें और यह देख कर बाक़ी सबने भी अपनी-अपनी उंगलियाँ दानिस्ता काट ली हों कि इस तरह यही इल्तफ़ात (तवज्जो) उन्हें भी मिलेगा। क़त्तअ बाबे तफ़ईल है, जिसमें किसी काम को पूरे अहतमाम और इरादे से करने के मायने पाए जाते हैं।

“और वह पुकार उठीं कि हाशा लिल्लाह यह कोई आदमी तो नहीं! यह तो कोई बहुत बुज़ुर्ग़ फ़रिश्ता है।”

وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هَذَا بَشَرًا ۖ إِنْ هَذَا إِلَّا مَلَكٌ

كَرِيمٌ ﴿٣١﴾

आयत 32

“तो उस औरत ने कहा कि यह है वह जिसके बारे में तुम मुझे मलामत कर रही थीं।”

قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الذِّئْبَنِي لَمُتْنِي فِيْهِ

“और यक़ीनन मैंने इसे फ़सलाना चाहा था लेकिन वह बचा रहा।”

وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ

“और अगर इसने वह ना किया जो मैं इसे हुक्म दे रही हूँ तो वह लाज़िमन क़ैद में पड़ेगा और ज़रूर ज़लील होकर रहेगा।”

وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَا أَمُرُهُ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا مِّنَ

الصَّغِيرِينَ ﴿٣٢﴾

उस औरत का धडल्ले से खुसूसी दावत का अहतमाम करना और उसमें सबको फ़ख़ से बताना कि देख लो यह है वह शख्स जिसके बारे में तुम मुझे मलामत करती थीं, और फिर पूरी बेहयाई से ऐलान करना कि एक दफ़ा तो यह मुझसे बच गया मगर कब तक? आख़िरकार इसे मेरी बात माननी होगी! इससे तस्सवुर किया जा सकता है कि उनकी इस इन्तहाई ऊँची सतह की सोसायटी की मजमूई तौर पर अखलाक़ी हालत क्या थी!

आयत 33

“युसुफ़ ने दुआ की: ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे क़ैद ज़्यादा पसंद है उस चीज़ से जिसकी तरफ़ यह मुझे बुला रही हैं।”

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ

“और अगर तूने मुझसे दूर ना कर दिया इनकी चालों को तो (हो सकता है) मैं भी इनकी तरफ़ माइल हो जाऊँ और जाहिलों में से हो जाऊँ।”

وَالَا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ

الْجَاهِلِينَ ﴿٣٣﴾

आयत 34

“तो आपके रब ने आपकी दुआ कुबूल करली और उन औरतों की चालों को आपसे फेर दिया। यक़ीनन वही है सुनने वाला, जानने वाला।”

فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ إِنَّهُ هُوَ
السَّيِّعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٤﴾

आयत 35

“फिर उन लोगों को यह बात सूझी सारी निशानियाँ देख लेने के बाद कि इसको कुछ अरसे के लिये जेल में डाल दिया जाए।”

ثُمَّ بَدَأَ لَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا رَأَوُا الْآيَاتِ لَيْسَجُزُّنَهُ حَتَّى
جِئِينَ ﴿٣٥﴾

उस तक़रीब (function) में जो कुछ हुआ उस मामले को पोशीदा (छुपा) रखना मुमकिन नहीं था, चुनाँचे अरबावे इख्तियार ने जब यह सारे हालात देखे तो उन्हें आफ़ियत और मसलिहत इसी में नज़र आई कि हज़रत युसुफ़ को वक़्ती तौर पर मंज़र से हटा दिया जाए और इसके लिये मुनासिब यही है कि कुछ अरसे के लिये इन्हें जेल में डाल दिया जाए।

आयत 36 से 42 तक

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيْنِ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرِيتُ نَبِيًّا آتِيًّا بِكُفْرٍ كَثِيرٍ ۖ وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرِيتُ نَبِيًّا آتِيًّا بِكُفْرٍ كَثِيرٍ ۖ قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقُنِيهِ إِلَّا نَبَأُ كُفْرٍ تَكْتُمُونَ ﴿٣٦﴾
قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقُنِيهِ إِلَّا نَبَأُ كُفْرٍ تَكْتُمُونَ ﴿٣٧﴾
قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقُنِيهِ إِلَّا نَبَأُ كُفْرٍ تَكْتُمُونَ ﴿٣٨﴾
وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ مَا كَانَ لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ ذَلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٩﴾
يَصَاحِبِ السِّجْنَ ۚ أَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ اللّهِ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٤٠﴾ مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءً سَمِيَتْهُمَا آتَمٌ وَابَاؤُكُمْ ۖ مَا أَنْزَلَ اللّهُ بِهِمَا مِنْ سُلْطَانٍ ۚ إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلّهِ أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ۚ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾
يَصَاحِبِ السِّجْنَ ۚ أَمَّا أَحَدُكُمَا فَيَسْقِي رَبَّهُ خَمْرًا ۚ وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَأْسِهِ ۚ قُضِيَ ۚ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتَيْنِ ﴿٤٢﴾
لِلَّذِينَ ظَنُّوا أَنَّهُ نَاجٍ مِنْهُمَا إِذْ كُرِيَ عِنْدَ رَبِّكَ ۚ فَإِنَّكَ لَتَرَاهُ فِي السِّجْنِ بِضَعِّ سِنِينَ ﴿٤٣﴾

आयत 36

“और दाख़िल हुए आपके साथ जेल में दो नौजवान।”

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيْنِ

जब हज़रत युसुफ़ अलै. को जेल भेजा गया तो इत्तेफ़ाक़न उसी मौक़े पर दो और कैदी भी आपके साथ जेल में दाख़िल किये गए।

“उनमें से एक ने कहा कि मैंने अपने आप को ख्वाब में देखा है कि मैं शराब कशीद कर रहा हूँ।”

قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرَبْنِي أَعْصِرُ خَمْرًا

“और दूसरे ने कहा कि मैंने अपने आप को ख्वाब में देखा है कि मैं सिर पर रोटियाँ उठाये हुए हूँ और परिंदे उसमें से खा रहे हैं।”

وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرَبْنِي أَحْمِلُ فَوْقَ رَأْسِي خُبْرًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ

“हमें इन ख्वाबों की ताबीर बता दीजिये, हम आपको बहुत नेकोकार देखते हैं।”

نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٦﴾

हम देख रहे हैं कि आप दूसरे क़ैदियों से बिल्कुल मुख्तलिफ़ हैं। आप आला अख़लाक़ और क़ाबिले रशक किरदार के मालिक हैं। हमें उम्मीद है कि आप हमारे ख्वाबों के सिलसिले में ज़रूर हमारी रहनुमाई फ़रमाएंगे।

आयत 37

“युसुफ़ ने फ़रमाया कि तुम लोगों को जो खाना दिया जाता है उसके आने से पहले-पहले मैं तुम दोनों को इसकी ताबीर बता दूँगा।”

قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقُنِيهِ إِلَّا نَبَّأْتُكُمَا
بِتَأْوِيلِهِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا

जेल में क़ैदियों के खाने के अवकाश मुक़र्रर होंगे। आपने फ़रमाया कि आप लोग अब ताबीर के बारे में फ़िक्र मत करो, वह तो मैं खाना आने से पहले-पहले बता दूँगा, लेकिन मैं तुम लोगों से इसके अलावा भी बात करना चाहता हूँ, लिहाज़ा इस वक़्त तुम लोग मेरी बात सुनो। हज़रत युसुफ़ अलै. का यह तरीक़ा एक दाई-ए-हक़ के लिये रहनुमाई का ज़रिया है। एक दाई की हर वक़्त यह कोशिश होनी चाहिए कि तब्लीग़ के लिये, हक़ बात लोगों तक पहुँचाने के लिये जब और जहाँ मौक़ा मैयस्सर आए उससे फ़ायदा उठाये। चुनाँचे हज़रत युसुफ़ अलै. ने देखा कि लोग मेरी तरफ़ खुद मुतवज्जा हुए हैं तो आपने इस मौक़े को ग़नीमत जाना और उनकी हाज़त को मौअख़बर करके पहले उन्हें पैगामे हक़ पहुँचाना ज़रूरी समझा।

“यह उस इल्म में से है जो मेरे रब ने मुझे सिखाया है।”

ذَلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي

आपने उन्हीं की बात को आगे बढ़ाते हुए अपनी बात शुरू की और ख्वाबों की ताबीर के हवाले से अल्लाह तआला का तआरुफ़ कराया, कि यह इल्म मुझे मेरे रब ने सिखाया है, इसमें मेरा अपना कोई कमाल नहीं है।

“(देखो!) मैंने तर्क कर दिया है उस क़ौम का रास्ता जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते और आख़िरत के यही लोग मुन्कर हैं।”

إِنِّي تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ
هُمْ كَفِرُونَ ﴿٣٧﴾

आयत 38

“और मैंने पैरवी की है अपने आबा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब (अलै.) के तरीक़े की।”

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ

आपकी इस बात से मौरूसी और शऊरी अक़ाएद (heritage & conscious beliefs) का फ़र्क़ समझ में आता है। यानि एक तो वह अक़ाएद व नज़रियात हैं जो बच्चा अपने वालिदैन् से अपनाता है, जैसे एक मुसलमान घराने में बच्चे को मौरूसी (विरासती) तौर पर इस्लाम के अक़ाएद मिलते हैं। अल्लाह और रसूल का नाम वह बचपन ही से जानता है, इब्तदाई कलिमे उसको पढ़ा दिए जाते हैं, नमाज़ भी सिखा दी जाती है। लेकिन अगर वह शऊर (conscious) की उम्र को पहुँचने के बाद अपने आज़ादाना इन्तख़ाब के नतीजे में अपने इल्म और ग़ौर व फ़िक्र से कोई अक़ीदा (belief) इख़्तियार करेगा तो

वह उसका शऊरी अक्रीदा होगा। चुनाँचे हज़रत युसुफ़ अलै. ने अपने इस शऊरी अक्रीदे का ज़िक्र किया कि अगरचे वह जिन लोगों के दरमियान ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, वह अल्लाह, उसके किसी नबी और वही वगैरह के तसव्वुरात से नाबलद (unaware) हैं, सबके सब काफ़िर और मुशरिक हैं, मगर मुझे देखो मैंने इस माहौल का असर कुबूल नहीं किया, और अपने इर्द-गिर्द के लोगों के नज़रियात और अक्लाएद नहीं अपनाए, बल्कि पूरे शऊर के साथ अपने आबा व अजदाद के नज़रियात को सही मानते हुए उनकी पैरवी कर रहा हूँ, सिर्फ़ इसलिये नहीं कि वह मेरे आबा व अजदाद थे, बल्कि इसलिये कि यही सही रास्ता मेरे नज़दीक माकूल और अक्ले सलीम के करीबतर है।

“(देखो!) हमारे लिये यह रवा नहीं है कि हम अल्लाह के साथ किसी भी शय को शरीक करें।”

وَيَعْقُوبُ مَا كَانَ لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ

“यह अल्लाह का बड़ा फ़ज़ल है हम पर और सब लोगों पर लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।”

ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنْ أَكْثَرُ

النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٨﴾

यानि शिर्क से बचने और तौहीद को अपनाने का अक्रीदा दरअसल अल्लाह का अपने बन्दों पर बहुत बड़ा फ़ज़ल है, क्योंकि अल्लाह तआला ने इंसान को अशरफ़ुल मख़्लूकात बनाया है। इस हैसियत में इंसान के शायाने शान नहीं है कि वह उन चीज़ों की परस्तिश करता फ़िरे जिन्हें खुद उसकी ख़िदमत और इस्तफ़ादे (इस्तेमाल) के लिये पैदा किया गया है।

आयत 39

“ऐ मेरे जेल के दोनों साथियों! क्या बहुत से मुतफ़र्रिक रब बेहतर हैं या अकेला अल्लाह जो सब पर हावी व ग़ालिब है?”

يُصَاحِبِي السِّجْنِ أَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ اللّٰهُ
الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٣٩﴾

आयत 40

“नहीं पूजते तुम उस (अल्लाह) के सिवा मगर चंद नामों को जो मौसूम कर रखे हैं तुम लोगों ने और तुम्हारे आबा व अजदाद ने”

مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ
وَأَبَاؤُكُمْ

“नहीं उतारी अल्लाह ने उनके लिये सनद। इख्तियारे मुतलक तो सिर्फ़ अल्लाह ही का है।”

مَا أَنْزَلَ اللّٰهُ بِهِمَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلّٰهِ

क्रानून बनाने और उसके मुताबिक़ हुक्म चलाने का इख्तियार सिर्फ़ अल्लाह का है।

“उसने हुक्म दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की बंदगी मत करो!”

أَمَرَ ۖ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ

“यही है दीन सीधा (और हमेशा से कायम व दायम) लेकिन अक्सर लोग इल्म नहीं रखते।”

ذٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

﴿٤٠﴾

आयत 41

“ऐ मेरे जेल के दोनों साथियों! तुम में से एक तो अपने आक्रा को शराब पिलाएगा।”

يُصَاحِبِي السِّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمَا فَيَسْقِي رَبَّهُ خَمْرًا

यहाँ पर रब का लफज़ बादशाह के लिये इस्तेमाल हुआ है। यह उस शख्स के ख़्वाब की ताबीर है जिसने खुद को शराब कशीद करते हुए देखा था। यह शख्स पहले भी बादशाह का साक़ी था मगर इस पर कोई इल्ज़ाम लगा और इसे जेल भेज दिया गया। हज़रत युसुफ़ अलै. ने ख़बर दे दी कि इसके ख़्वाब के मुताबिक़ वह इस इल्ज़ाम से बरी होकर अपने पुराने ओहदे पर बहाल हो जाएगा।

“और जो दूसरा है उसे सूली दे दी जाएगी और परिंदे उसके सिर में से (नोच-नोच कर) खायेगे।”

وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَأْسِهِ

“फ़ैसला कर दिया गया है उस मामले का जिसके बारे में तुम दोनों मुझसे पूछ रहे थे।”

قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِينَ ۝

आयत 42

“और युसुफ़ ने कहा उस शख्स से जिसके बारे में आपने गुमान किया कि वह उन दोनों में से निजात पाएगा कि अपने आक्रा से मेरा ज़िक्र भी करना।”

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِنْهُمَا اذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ

यानि तुम्हें कभी मौक़ा मिले तो बादशाह को बताना कि जेल में एक ऐसा कैदी भी है जिसका कोई क़सूर नहीं और उसे ख़्वाह मख़्वाह जेल में डाल दिया गया है।

“तो उसे भुलाए रखा शैतान ने ज़िक्र करना अपने आक्रा से, तो आप रहे जेल में कई बरस तक।”

فَأَنسَاهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ

سِنِينَ ۝

بُضْع का लफज़ अरबी ज़बान में दो से लेकर नौ तक (दस से कम) की तादाद के लिये इस्तेमाल होता है।

आयत 43 से 49 तक

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعٌ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَبْسُتٌ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي رُءْيَايَ إِن كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُونَ ۝
 وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسَلُونِ ۝
 يُوَسِّفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَبْسُتٍ لَّعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ۝
 قَالَ تَزَرَّعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَابًّا فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرَوْهُ فِي سُنْبُلَةٍ إِلَّا قَلِيلًا فَمَا تَأْكُلُونَ ۝
 ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ نَأْسٌ فِيهِ شِدَادٌ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا فَمَا تَحْصِنُونَ ۝
 ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْرِضُونَ ۝

आयत 43

“और बादशाह ने कहा है कि मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि सात मोटी गायें हैं, जिनको खा रही हैं सात दुबली गायें”

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ

अब यहाँ से इस क्रिस्से का नया बाब शुरू हो रहा है। उस वक़्त मिस्र पर फ़राअना (फ़िराऊन) की हुकूमत नहीं थी, बल्कि वहाँ चरवाहे बादशाह हुक्मरान थे। तारीख़ में अक्सर ऐसे वाक़ियात मिलते हैं कि कुछ सहराई क़बीलों ने कुव्वत हासिल करके मुतमद्दन (moderate) इलाक़ों पर चढ़ाई की, फिर या तो वो लूट-मार करके वापस चले गए या उन इलाक़ों पर अपनी हुकूमतें क़ायम कर लीं। ऐसी ही एक मिसाल मिस्र के चरवाहे बादशाहों की है जो सहराई क़बीलों से ताल्लुक रखते थे। उन्होंने किसी ज़माने में मिस्र पर हमला किया और मक्कामी लोगों (क़िब्ती क्रौम) को गुलाम बना कर वहाँ अपनी हुकूमत क़ायम कर ली। यहाँ जिस बादशाह का ज़िक्र है वह इसी ख़ानदान से था। इस बादशाह के किरदार और रवैय्ये की जो झलक इस क्रिस्से में दिखाई गई है इससे मालूम होता है कि वह अगरचे तौहीद व रिसालत से नाबलद (unaware) था मगर एक नेक सरश्त इंसान था।

“और सात बालियाँ हैं हरी और दूसरी (सात) खुश्क।”

وَسَبْعٌ سُنْبُلَاتٍ خَضَرٌ وَأَخْرِي يَبُسْتُ

“तो ऐ मेरे दरबारियों! मुझे बताओ ताबीर मेरे ख़्वाब की अगर तुम लोग ख़्वाबों की ताबीर कर सकते हो।”

يَا أَيُّهَا الْمَلَأَ أَفْتُونِ فِي رُءْيَايَ إِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُونَ ﴿٣٦﴾

आयत 44

“उन्होंने कहा कि यह तो परेशान ख्यालात हैं, और ऐसे ख़्वाबों की ताबीर हम नहीं जानते।”

قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ بِغَالِبِينَ ﴿٣٧﴾

बादशाह के ख़्वाब को सुन कर उन्होंने जवाब दिया कि यह कोई मअनवी ख़्वाब नहीं, ऐसे ही बेमअनी और मुन्तशिर क्रिस्म के ख़्यालात हैं जिनकी हम कोई ताबीर नहीं कर सकते। फ़्राईड का भी यही ख़याल है कि ख़्वाब में इंसान अपने शह्वानी (कामुक) ख़्यालात और दूसरी दबी हुई नफ़सानी ख़्वाहिशात की तस्कीन (satisfaction) करना चाहता है, मगर इस्लामी नुक्ता-ए-नज़र से ख़्वाब तीन क्रिस्म के होते हैं। पहली क्रिस्म “रुअया-ए-सादक्का” की है यानि सच्चे ख़्वाब, यह अल्लाह की तरफ़ से होते हैं और ऐसे ख़्वाबों के बारे में हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया है कि यह नबुवत के अज्ज़ाअ (घटकों) में से है। दूसरी क्रिस्म के ख़्वाब वह हैं जो शैतान की तरफ़ से होते हैं और इनमें बाज़ अवक़ात श्यातीने ज़िन्न अपनी तरफ़ से ख़्यालात इंसानों के ज़हनों में इल्हाम भी करते हैं। तीसरी क्रिस्म के ख़्वाब वह हैं जिनका ज़िक्र फ़्राईड ने किया है। यानि इंसान के अपने ही ख़्यालात मुन्तशिर अंदाज़ में मुख्तलिफ़ वजुहात की बिना पर सोते वक़्त इंसान के ज़हन में आते हैं और इनमें कोई मायने या रवत होना ज़रूरी नहीं होता।

आयत 45

“और कहा उस शख्स ने जो उन दोनों (कैदियों) में से निज़ात पा गया था और एक तवील अरसे के बाद उसे (अचानक) याद आ गया”

وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ

वह शख्स जेल से रिहा होकर फिर र से साक़ीगिरी कर रहा था। उसे बादशाह के ख़्वाब के ज़िक्र से अचानक हज़रत युसुफ़ अलै. याद आ गए कि हाँ जेल में एक शख्स है जो ख़्वाबों की ताबीर बताने में बड़ा माहिर है।

“(उसने कहा) मैं बता दूँगा तुम लोगों को इसकी ताबीर, बस मुझे ज़रा (कैदखाने में युसुफ़ के पास) भेज दें।”

أَنَا أَنْبِئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسِلُونِ ۝

इस तरह वह शख्स जेल में हज़रत युसुफ़ अलै. के पास पहुँच कर आपसे मुखातिब हुआ:

आयत 46

“ऐ युसुफ़! ऐ रास्तबाज! हमें ताबीर बताइये सात मोटी गायों के बारे में कि उन्हें खा रही हैं सात दुबली, और सात सब्ज बालियों और दूसरी (सात) खुश्क बालियों के बारे में”

يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ
يَأْكُلُهُنَّ سَبْعُ عِجَافٍ وَسَبْعٍ سُتُوبَاتٍ خُضِرٍ وَأُخْرٍ
يُبَسِّتُ

“ताकि मैं वापस जाऊँ (ताबीर) लेकर उन लोगों के पास, ताकि उन्हें भी मालूम हो जाए।”

لَعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ۝

आयत 47

“युसुफ़ अलै. ने (ताबीर बताते हुए) फ़रमाया कि तुम सात साल तक ख़ूब ज़राअत (कृषि) करोगे लगातार।”

قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأَبًا

“तो (इस दौरान में) जो फ़सल भी तुम काटो उसे रहने देना उसकी बालियों में ही, सिवाय उस क़लील तादाद के जो तुम खाओ।”

فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُنْبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تَأْكُلُونَ

۝

आपने सिर्फ़ इस ख़्वाब की ताबीर ही नहीं बताई बल्कि मसले की तदबीर भी बता दी और तदबीर भी ऐसी जो शाही मुशीरों (सलाहकारों) के वहम व गुमान में भी नहीं आ सकती थी। आज के साइंसी तज़ुर्बात से यह बात साबित होती है कि अनाज को महफूज़ करने का बेहतरीन तरीक़ा यही है कि उसे सिट्टों के अंदर ही रहने दिया जाए और इन सिट्टों को महफूज़ कर लिया जाए। इस तरह से अनाज ख़राब नहीं होता और उसे कीड़े-मकोड़ों से बचाने के लिये किसी इज़ाफ़ी preservative की ज़रूरत भी नहीं होती।

आयत 48

“फिर इसके बाद सात साल आयेंगे बहुत सख्त”

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ

खुशहाली के सात सालों के बाद सात साल तक खुश्कसाली का समाँ होगा जिसकी वजह से मुल्क में शदीद क़हत पड़ जाएगा।

“वह (सात साल) चट कर जायेंगे उसको जो कुछ तुमने उनके लिये बचा रखा होगा सिवाय उसके जो तुम (बीज के लिये) महफूज़ कर लोगे।”

يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تُحْصِنُونَ ۝

हज़रत युसुफ़ अलै. ने ख़्वाब की ताबीर यह बताई कि सात साल तक मुल्क में बहुत खुशहाली होगी, फ़सलें बहुत अच्छी होंगी, मगर इन सात सालों के बाद सात साल ऐसे आएँगे जिनमें खुश्कसाली के सबब शदीद क़हत पड़ जाएगा। इस मसले की तदबीर आपने यह बताई कि पहले सात साल के दौरान सिर्फ़ ज़रूरत का अनाज इस्तेमाल करना, और बाक़ी सिट्टों के अंदर ही महफूज़ करते जाना और जब क़हत का ज़माना आए तो इन सिट्टों से निकाल कर ब-क़दरे ज़रूरत अनाज इस्तेमाल करना।

आयत 49

“फिर आएगा इसके बाद एक साल कि उसमें ख़ूब बारिशें होंगी लोगों पर और उसमें वह (अंगूर का) रस निचोड़ेंगे।”

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ

يَعَصِرُونَ ﴿٤٩﴾

जब ख़ूब बारिशें होंगी तो अंगूर की बेलें ख़ूब फलें-फूलेंगी, अंगूर की पैदावार भी ख़ूब होगी, लोग ख़ूब अंगूर निचोड़ेंगे और शराब कशीद करेंगे।

आयत 50 से 57 तक

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَسَأَلَهُ مَا بَالَ النِّسْوَةِ الَّتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَاوَدْتُنَّ يُوسُفَ عَنْ نَفْسِهِ قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ الْمُنْحَصِرُ الْحَقُّ أَنَا رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٥١﴾ ذَلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِينَ ﴿٥٢﴾ وَمَا أَبْرَأُ نَفْسِي إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥٣﴾ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ أَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي فَلَمَّا كَلَّمَهُ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٤﴾ قَالَ اجْعَلْنِي عَلَىٰ خَزَائِنِ الْأَرْضِ إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ ﴿٥٥﴾ وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ يَتَّبِعُوهُ مِنْهَا حَيْثُ شَاءَ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَشَاءُ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾ وَلَا جُزْءَ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾

आयत 50

“(यह सुनकर) बादशाह ने कहा कि उस शख्स को मेरे पास ले आओ!”

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ

बादशाह अपने ख़्वाब की ताबीर और फिर उसकी ऐसी आला तदबीर सुनकर यक्रीनन बहुत मुतास्सिर (impress) हुआ होगा और उसने सोचा होगा कि ऐसे ज़हीन, फ़तीन शख्स को जेल में नहीं बल्कि बादशाह का मुशीर होना चाहिये। चुनाँचे उसने हुक़म दिया कि उस कैदी को फ़ौरन मेरे पास लेकर आओ।

“फिर जब आया आपके पास ऐलची (दूत), तो आपने फ़रमाया कि तुम वापस चले जाओ अपने आक्रा के पास”

فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ

बादशाह का पैग़ाम लेकर जब क़ासिद (पैग़ाम लाने वाला) आपके पास पहुँचा तो आपने उसके साथ जाने से इन्कार कर दिया कि मैं इस तरह अभी जेल से बाहर नहीं आना चाहता। पहले पूरे मामले की छान-बीन की जाए कि मुझे किस जुर्म की पादाश में जेल भेजा गया था। अगर मुझ पर कोई इल्ज़ाम है तो उसकी मुकम्मल तफ़तीश हो और अगर मेरा कोई क़सूर नहीं है तो मुझे अलल ऐलान बेगुनाह और बरी करार दिया जाए। चुनाँचे आपने उस क़ासिद से फ़रमाया कि तुम अपने बादशाह के पास वापस जाओ:

“और उससे पूछो कि उन औरतों का क्या मामला था जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे?”

فَسَأَلَهُ مَا بَأَلِ الذِّسْوَةِ الَّتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ

“यक्रीनन मेरा रब उनकी चालों से खूब वाकिफ़ है।”

إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ⑤٠

बादशाह तक यह बात पहुँची तो उसने सब बेगमात को तलब कर लिया।

आयत 51

“उसने पूछा कि क्या मामला था तुम्हारा जब तुम सबने फुसलाना चाहा था युसुफ़ को?”

قَالَ مَا خَطْبُكَ إِذْ رَاوَدْتُنَّ يُوسُفَ عَنْ نَفْسِهِ

“उन्होंने कहा कि अल्लाह गवाह है, हमारे इल्म में उसके बारे में कोई भी बुराई नहीं है।”

قُلْنَا حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ

उस वक़्त जो कुछ भी हुआ था वह सब हमारी तरफ़ से था, युसुफ़ की तरफ़ से कोई गलत बात हमने महसूस नहीं की।

“(इस पर) अज़ीज़ की बीवी भी बोल उठी कि अब हकीकत तो वाज़ेह हो ही गई है, मैंने ही उसको फुसलाने की कोशिश की थी और वह बिल्कुल सच्चा है।”

قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ الَّتِي حَصَصَ الْحَقُّ أَنَا رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصّٰدِقِیْنَ ⑤١

इस तरह अज़ीज़ की बीवी को उस हकीकत का बरमला इज़हार करना पड़ा कि युसुफ़ अलै. ने ना तो ज़बान से कोई गलत बयानी की है और ना ही उसके किरदार में कोई खोट है।

आयत 52

“यह इसलिये कि वह जान ले कि मैंने उसकी ग़ैरमौजूदगी में उसकी ख़्यानत नहीं की”

ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّي لَمْ اَخْنُهُ بِالْغَيْبِ

यह फ़िक़रा स्याक़े इबारत में किसी की ज़बान से अदा हुआ है इसके बारे में मुफ़स्सरीन के बहुत से अक़वाल हैं। इसलिये कि इस फ़िक़रे के मौक़ा महल और अल्फ़ाज़ में मुतअद्दिद इस्कानात की गुंजाईश है। उन अक़वाल में से एक क़ौल यह है कि यह फ़िक़रा अज़ीज़ की बीवी की ज़बान ही से अदा हुआ है कि मैंने सारी बात इसलिये सच-सच बयान कर दी है ताकि युसुफ़ को मालूम हो जाए कि मैंने उसकी अदम मौजूदगी में उससे कोई गलत बात मंसूब करके उसकी ख़्यानत नहीं की।

“और यह कि यक्रीनन अल्लाह ख़्यानत करने वालों की चाल को कामयाब नहीं करता।”

وَ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِیْ كَيْدَ الْخٰیضِیْنَ ⑤٢

आयत 53

“और मैं अपने नपस को बरी करार नहीं देती यक्रीनन (इंसान का) नपस तो बुराई ही का हुक्म देता है”

وَمَا اَبْرِئُ نَفْسِیْ اِنَّ النّفْسَ لَا مَارَءَۃٌ بِالسُّوْءِ

“सिवाय उसके जिस पर मेरा रब रहम फ़रमाए। यक्रीनन मेरा रब बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।”

اِلَّا مَارَحمَ رَبِّیْ اِنَّ رَبِّيْ غَفُوْرٌ رّحِیْمٌ ⑤٣

अगर गुज़िशता आयत में नक़ल होने वाले बयान को अज़ीज़े मिस्र की बीवी का बयान माना जाए तो इस सूरत में आयत ज़ेरे नज़र भी उसी के कलाम का तसल्लुल करार पाएगी और इसका तर्जुमा वही होगा जो ऊपर किया गया है। यह तर्जुमा दरअसल उस नज़रिये के मुताबिक़ है जिसके तहत हमारे बहुत से मुफ़स्सरीन और क़िस्सा गो हज़रात ने माई जुलेखा को

वली अल्लाह के दर्जे तक पहुँचा दिया है। और कुछ बर्द भी नहीं कि उसका इश्के मिजाज़ी वक्त्र के साथ-साथ इश्के हकीक़ी में तब्दील हो गया हो और वह हकीक़तन हिदायत पर आ गई हो। बहरहाल जो लोग इस बात को दुरुस्त तस्लीम करते हैं वह इन आयात का तर्जुमा इसी तरह करते हैं, क्योंकि उसने ऐतराफ़े जुर्म करके तौबा कर ली थी और इस लिहाज़ से मज़क़ूर मुफ़स्सरीन का मौक़फ़ यह है कि ऐतराफ़े गुनाह से लेकर आयत 53 के इख़तताम तक उसी का बयान है।

इस सिलसिले में दूसरा मौक़फ़ (जो दौरे हाज़िर के ज़्यादातर मुफ़स्सरीन ने इख़्तियार किया है) यह है कि अज़ीज़े मिस्र की बीवी का बयान इस आयत पर ख़त्म हो गया: {اَنَارَاوْذُئْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ وَآلِهَتِهِ لِيُنْصِرَهُ الْمَرْءُ الضَّالُّونَ} (आयत 51) और इसके बाद हज़रत युसुफ़ अलै. का बयान नक़ल हुआ है। इस सूरत में आयत 52 और 53 का मफ़हूम यूँ होगा कि जब बादशाह की तफ़तीशी कार्रवाई और अज़ीज़े मिस्र की बीवी के बरमला ऐतराफ़े जुर्म के बारे में हज़रत युसुफ़ को बताया गया तो आपने फ़रमाया कि इस सब कुछ से मेरा यह मक़सूद नहीं था कि किसी की इज़्ज़त व नामूस का परदा चाक हो, बल्कि मैं तो चाहता था कि अज़ीज़े मिस्र यह जान ले कि अगर उसने मुझे अपने घर में इज़्ज़त व इकराम से रखा था और मुझ पर ऐतमाद किया था तो मैंने भी उसकी अदम मौजूदगी में उसकी ख़्यानत करके उसके ऐतमाद को ठेस नहीं पहुँचाई, और मेरा ईमान है कि अल्लाह ख़्यानत करने वालों को राहयाब नहीं करता। बाक़ी मैं खुद को बहुत पारसा नहीं समझता बल्कि समझता हूँ कि नफ़से इंसानी तो इंसान को बुराई पर उभारता ही है और इसके हमले से सिर्फ़ वही बच सकता है जिस पर मेरा रब अपनी खुसूसी नज़रे रहमत फ़रमाए। अल्लाह तआला की तरफ़ से मेरी हिफ़ाज़त का भी अगर खुसूसी इंतेज़ाम ना फ़रमाया जाता तो मुझसे भी ग़लती सरज़द हो सकती थी। मगर चूँकि मेरा रब बख़्शने वाला बहुत ज़्यादा रहम फ़रमाने वाला है इसलिये उसने मुझ पर अपनी खुसूसी रहमत फ़रमाई।

आयत 54

“और बादशाह ने (अब फ़ैसलाकुन अंदाज़ में) कहा कि उसको मेरे पास ले आओ, मैं उसको अपना मुसाहिबे ख़ास बनाऊँगा।”

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي

“तो जब बादशाह ने आपसे बात-चीत की तो कहा कि आज के दिन से आप हमारे नज़दीक बड़े बाइज़्ज़त और मौअतबर इंसान हैं।”

فَلَمَّا كَلَّمَهُ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ اَمِيْنٌ ﴿٥٤﴾

आज से आपका शुमार हमारे ख़ास मुक़र्रबीन में होगा और इस लिहाज़ से ममलिकत के अंदर आपका एक ख़ास मुक़ाम होगा। आपकी अमानत व दयानत पर हमें पूरा-पूरा भरोसा है।

आयत 55

“आपने फ़रमाया कि मुझे मुल्क के ख़ज़ानों पर मुक़र्रर कर दें, मैं हिफ़ाज़त करने वाला भी हूँ और जानने वाला भी हूँ।”

قَالَ اجْعَلْنِي عَلَى خَزَائِنِ الْأَرْضِ اِنِّي حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ

﴿٥٥﴾

हज़रत युसुफ़ अलै. जान चुके थे कि इस मुल्क पर बहुत बड़ी आफ़त आने वाली है और अगर इस मुम्किनना सूरते हाल का मुक़ाबला करने के लिये बर वक्त्र दुरुस्त और मौसर अक़दाम ना किये गए तो ना सिर्फ़ खुद मिस्र एक ख़ौफ़नाक क़हत की ज़द में आ जाएगा बल्कि आस-पास के इलाक़ों के लिये भी बहुत भयानक हालात पैदा हो जायेंगे। इस पूरे ख़ित्ते में मिस्र ही एक ऐसा मुल्क था जहाँ ग़ल्ला और दूसरी अश्याए ख़ुराक (खाने-पीने की चीज़ें) पैदा होती थीं। इसके हमसाया में चारों तरफ़ खुशक सहाराई इलाक़े थे और अनाज वगैरह के सिलसिले में इन इलाक़ों का इन्हसार भी मिस्र की ज़राअत पर था। यही वजह थी कि आपने मौक़ा देखा तो फ़ौरन अपनी ख़िदमात पेश कर दी कि अगर ख़ज़ाने और ख़ुराक व ज़राअत का पूरा इंतेज़ाम व इन्सराम (अनुरूप) मेरे पास होगा तो मैं इस आफ़त का सामना करने के लिये जामेअ और ठोस मंसूबा बंदी कर सकूँगा।

आयत 56

“और इस तरह हमने यूसुफ़ को तमक्कुन अता किया (मिस्र की) ज़मीन में, कि वह उसमें जहाँ चाहे अपना ठिकाना बना ले।”

وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا يُوسُفَ فِي الْأَرْضِ يَتَّبِعُوا مِنْهَا
حَيْثُ يَشَاءُ

हज़रत यूसुफ़ अलै. को अल्लाह तआला की तरफ़ से तमक्कुन अता होने का यह दूसरा मरहला था। पहले मरहले में आपको बदवी और सहराई माहौल से उठा कर उस दौर के एक निहायत मुत्मद्दीन मुल्क की आला तरीन सतह की सोसाइटी में पहुँचाया गया, जबकि दूसरे मरहले में आपको उसी मुल्क के अरबाबे इख्तियार व इक़तदार की सफ़ में एक निहायत मुमताज़ मक़ाम अता कर दिया गया, जिसके बाद आप पूरे इख्तियार के साथ अज़ीज़ के ओहदे पर मुतमक्किन हो गए।

“हम अपनी रहमत से नवाज़ते हैं जिसको चाहते हैं और हम नेकोकारों का अज़्र जाया नहीं करते।”

نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَشَاءُ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ
الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٧﴾

आयत 57

“और आखिरत का अज़्र तो बहुत ही बेहतर है उनके लिये जो ईमान लाएँ और तक्वे की रविश इख्तियार किये रखें।”

وَلَا جُزْءَ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ
﴿٥٨﴾

अब यहाँ से आगे इस क्रिस्से का एक नया बाब शुरू होने जा रहा है। वाज़ेह रहे कि आईदा रुकूअ के मज़ामीन और गुज़िश्ता मज़मून के दरमियान ज़माना एतबार से तक्रीबन दस साल का बुअद (distance) है। अब बात उस ज़माने से शुरू हो रही है जब मिस्र में बेहतर फ़सलों के सात साला दौर के बाद क़हत पड़ चुका था। यहाँ पर जो तफ़सीलात छोड़ दी गई हैं उनका खुलासा यह है कि हज़रत यूसुफ़ अलै. की ताबीर के ऐन मुताबिक़ सात साल तक मिस्र में खुशहाली का दौर दौरा रहा और फ़सलों की पैदावार मामूल (normal) से कहीं बढ़ कर हुई। इस दौरान हज़रत यूसुफ़ अलै. ने बाक़ायदा मंसूबा बंदी के तहत अनाज के बड़े-बड़े ज़खाइर (ज़खीरे) जमा कर लिए थे। चुनाँचे जब यह पूरा इलाक़ा क़हत की लपेट में आया तो मिस्र की हुकूमत के पास ना सिर्फ़ अपने अवाम के लिये बल्कि मल्हूक़ा (सहयोगी) इलाक़ों के लोगों की ज़रूरत पूरी करने के लिये भी अनाज वाफ़र मिक्क़दार (थोक मात्रा) में मौजूद था। चुनाँचे हज़रत यूसुफ़ अलै. ने इस ग़ैर मामूली सूरतेहाल के पेशेनज़र “राशन बंदी” का एक ख़ास निज़ाम मुतआरिफ़ (introduce) करवाया। इस निज़ाम के तहत एक ख़ानदान को एक साल के लिये सिर्फ़ इस क़दर गल्ला दिया जाता था जिस क़दर एक ऊँट उठा सकता था और उसकी कीमत इतनी वसूल की जाती थी जो वह आसानी से अदा कर सके। इन हालात में फ़लस्तीन में भी क़हत का समां था और वहाँ से भी लोग क़ाफ़िलों की सूरत में मिस्र की तरफ़ गल्ला लेने के लिये आते थे। ऐसे ही एक क़ाफ़िले में हज़रत यूसुफ़ अलै. के दस भाई भी गल्ला लेने मिस्र पहुँचे, जबकि आपका माँ जाया (सगा) भाई उनके साथ नहीं था। इसलिये कि हज़रत याक़ूब अलै. अपने उस बेटे तो किसी तरह भी उनके साथ कहीं भेजने पर आमादा नहीं थे।

आयत 58 से 68 तक

وَجَاءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٥٨﴾ وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِآخِ لَكُمْ
مِّنْ أَبِيكُمْ أَلا تَرَوْنَ أَنِّي أُوفِي الْكَيْلَ وَأَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٥٩﴾ فَإِن لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِي وَلَا تَقْرَبُونِ
﴿٦٠﴾ قَالُوا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ﴿٦١﴾ وَقَالَ لِفَتِيلِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا
انْقَلَبُوا إِلَى أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَى أَبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَا آخَانَا

تَكْتُلُ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ﴿٣٧﴾ قَالَ هَلْ امْنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا امْنُتُكُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ مِن قَبْلُ ۖ قَالَ اللَّهُ حَیْرٌ حَفِظْنَا وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِیْمِ ﴿٣٨﴾ وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَآءَهُمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ ۖ قَالُوا يَا بَنَاتَنَا مَا نَبْغِي هَذِهِ بِضَآءَةً رَّدَّتْ إِلَيْنَا ۖ وَمِیْرُ أَهْلِنَا وَمَحْفَظُ أَحْنَانَا وَنَزَدَادُ كَيْلٍ بَعِیْرٍ ۚ ذَٰلِكَ كَيْلٌ یَّسِیْرٌ ﴿٣٩﴾ قَالَ لَن أَرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّىٰ تُتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَن يُحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّا أَتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِیْلٌ ﴿٤٠﴾ وَقَالَ یَبْنَی لَا تَدْخُلُوا مِنْ بَابٍ وَاحِدٍ ۖ وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ۚ وَمَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَیْءٍ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٤١﴾ وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَیْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ یُغْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَیْءٍ إِلَّا حَاجَةٌ فِی نَفْسِ یَعْقُوبَ قَضَاهَا ۚ وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ ۚ لِّمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَٰكِن أَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾

आयत 58

“और आए यूसुफ़ के भाई और आपके सामने पेश हुए”

وَجَاءَ إِخْوَةُ یُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ

“तो आपने उन्हें पहचान लिया मगर वह आपको नहीं पहचान पाए।”

فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٥٨﴾

इन हालात में यह इम्कान उनके वहम व गुमान में भी नहीं था कि अज़ीज़े मिस्र जिसके दरबार में उनकी पेशी हो रही है वह उनका भाई यूसुफ़ है।

आयत 59

“फिर जब आपने उनका सामान तैयार करवा दिया तो फ़रमाया कि (आईन्दा) अपने उस भाई को भी मेरे पास लेकर आना जो तुम्हारे वालिद से (तुम्हारा भाई) है।”

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِأَخٍ لَّكُمْ مِّنْ أَبِيكُمْ

गल्ला चूँकि राशन बंदी के तहत दिया जाता था इसलिये उन्होंने दरख्वास्त की होगी कि हमारा एक भाई और भी है, उसके अहलखाना भी हैं, उसे हम अपने वालिद की ख़िदमत के लिये पीछे छोड़ आए हैं, उसके हिस्से का गल्ला भी हमें दे दिया जाए। इस सिलसिले में सवाल व जवाब के दौरान उन्होंने यह भी बताया होगा कि हम दस हक़ीक़ी भाई हैं जबकि वह ग्यारहवाँ भाई बाप की तरफ़ से सगा लेकिन वालिदा की तरफ़ से सौतेला है। हज़रत यूसुफ़ ने यह सारा माजरा सुनने के बाद फ़रमाया होगा कि ठीक है मैं आपके ग्यारहवें भाई के हिस्से का इज़ाफ़ी गल्ला तुम लोगों को इस शर्त पर दे देता हूँ कि आईन्दा जब तुम लोग गल्ला लेने के लिये आओगे तो अपने उस भाई को साथ लेकर आओगे ताकि मैं तस्दीक़ कर सकूँ कि तुम लोगों ने गलत बयानी करके मुझसे इज़ाफ़ी गल्ला तो नहीं लिया।

“क्या तुम देखते नहीं हो कि मैं पैमाना पूरा भर कर देता हूँ और बेहतरीन मेहमान नवाज़ी करने वाला भी हूँ।”

إِلَّا تَرَوْْنَ آبِيَی الْكَيْلِ وَأَنَا حَیْرٌ الْمُنْزِلِیْنَ ﴿٥٩﴾

आयत 60

“और अगर तुम उसे मेरे पास लेकर नहीं आओगे तो मेरे पास तुम्हारे लिये कोई गल्ला नहीं है, और तुम मेरे करीब भी ना फटकना।”

فَإِنْ لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِي وَلَا تَقْرُبُونِ ⑩

आयत 61

“उन्होंने कहा कि हम उसके बारे में उसके वालिद को आमादा करने की कोशिश करेंगे और हम यह ज़रूर करके रहेंगे।”

قَالُوا سَنُرَاوِدُّ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ⑪

आयत 62

“और युसुफ़ ने अपने नौजवानों से कहा कि इनकी पूंजी (भी वापस) उनके कजावों (थैलों) में रख दो”

وَقَالَ لِفِتْيَانِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ

उस ज़माने में चीज़ों के एवज़ ही चीज़ें खरीदी जाती थीं। चुनाँचे वह लोग भी अपने यहाँ से कुछ चीज़ें (भेड़-बकरियों की ऊन वगैरह) इस मक़सद के लिये लेकर आए थे और गल्ले की क्रीमत के तौर पर अपनी वह चीज़ें उन्होंने पेश कर दी थीं। मगर हज़रत युसुफ़ अलै. ने अपने मुलाज़मीन को हिदायत कर दी कि जब इनके कजावों (थैलों) में गन्दुम (गेहूँ) भरी जाए तो इन लोगों की यह चीज़ें भी जो इन्होंने गल्ले की क्रीमत के तौर पर अदा की हैं चुपके से वापस इनके कजावों में ही रख दी जाएँ।

“ताकि वह पहचाने इनको जब लौटे अपने अहलो अयाल की तरफ़, शायद कि (इस तरह) वह दोबारा आएँ।”

لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ⑫

आयत 63

“फिर जब वह लौटे अपने वालिद के पास तो कहने लगे: अब्बाजान! हमसे (एक) पैमाना रोक लिया गया है”

فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَىٰ أَبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ

यानि उन्होंने आईन्दा के लिये हमारे छोटे भाई के हिस्से का गल्ला रोक दिया है और वह तभी मिलेगा जब हम इसको वहाँ लेकर जायेंगे।

“तो (आईन्दा) हमारे भाई को हमारे साथ भेजियेगा ताकि हम (इसके हिस्से का भी) गल्ला लेकर आएँ, और हम इसकी पूरी हिफ़ाज़त करेंगे।”

فَأَرْسِلْ مَعَنَا آخَانَا نَكْتَلُ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ⑬

आयत 64

“याक़ूब अलै. ने फ़रमाया कि क्या मैं इसके बारे में उसी तरह तुम पर ऐतबार कर लूँ जैसे मैंने इसके भाई (युसुफ़) के बारे में तुम पर ऐतबार किया था?”

قَالَ هَلْ أُمْنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا أُمْنُكُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ مِنْ قَبْلُ

“(वैसे तो) अल्लाह ही बेहतरीन मुहाफ़िज़ है और वही तमाम रहम करने वालों में सबसे बड़ कर रहम करने वाला है।”

فَاللَّهُ خَيْرٌ حِفْظًا وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ⑭

आयत 65

“और जब उन्होंने खोला अपना सामान तो उन्होंने देखा कि उनकी पूंजी उन्हें लौटा दी गई है।”

وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ
إِلَيْهِمْ

“वह पुकार उठे: अब्बाजान! हमें और क्या चाहिये? यह हमारी पूंजी भी हमें लौटा दी गई है।”

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا نَبْغِي هَذِهِ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا

“(अब हम जायेंगे) और अपने अहलो अयाल के लिये गल्ला लाएँगे और अपने भाई की हिफ़ाज़त करेंगे, और एक ऊँट का बोझ ज्यादा लाएँगे। यह (एक इज़ाफ़ी) बोझ (लाना तो अब) बहुत आसान है।”

وَمِمِّزُ أَهْلِنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزِدَادُ كَيْلٍ بَعِيرٍ ذَٰلِكَ
كَيْلٌ يَّسِيرٌ ⑩

आयत 66

“याक़ूब अलै. ने फ़रमाया: मैं इसे (वापस) हरगिज़ नहीं भेजूँगा तुम्हारे साथ, यहाँ तक कि तुम मेरे सामने पुख्ता क़सम खाओ अल्लाह की कि तुम लाज़िमन इसे लेकर आओगे मेरे पास, सिवाय इसके कि तुम सबको घेरे में ले लिया जाए।”

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّى تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ
لَتَأْتُنِنِي بِهِ إِلَّا أَنْ يُحَاطَ بِكُمْ

हाँ अगर कोई एसी मुसीबत आ जाए कि तुम सबके सब घेर लिए जाओ और वहाँ से ग़्लूखलासी (छुटकारा पाना) मुश्किल हो जाए तो और बात है, मगर आम हालात में तुम लोग इसे वापस मेरे पास लाने के पाबन्द हो गए।

“फिर जब उन्होंने आपको अपना पुख्ता क़ौल व क़रार दे दिया तो याक़ूब ने फ़रमाया कि जो कुछ हम कह रहे हैं अल्लाह इस पर निगेहबान है।”

فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ

⑪

आयत 67

“और आपने कहा: ऐ मेरे बेटो! तुम लोग एक दरवाज़े से (शहर में) दाख़िल ना होना बल्कि मुतफ़र्रिक़ (अलग-अलग) दरवाज़ों से दाख़िल होना।”

وَقَالَ يَبْنَئِي لَا تَدْخُلُوا مِن بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِن
أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ

हसद और नज़रे बद वगैरह के असरात से बचने के लिये बेहतर है कि आप तमाम भाई इकट्ठे एक दरवाज़े से शहर में दाख़िल होने के बजाय मुख्तलिफ़ दरवाज़ों से दाख़िल हों।

“और मैं तुमको बचा नहीं सकता अल्लाह (के फ़ैसले) से कुछ भी।”

وَمَا أَغْنِي عَنْكُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ

मैं अल्लाह के किसी फ़ैसले को तुम लोगों से नहीं टाल सकता। अगर अल्लाह की मशीयत में तुम लोगों को कोई ग़ज़न्द (नुक़सान) पहुँचना मंज़ूर है तो मैं उसको रोक नहीं सकता। यह सिर्फ़ इंसानी कोशिश की हद तक अहतियाती तदबीर है जो हम इख्तियार कर सकते हैं।

“इख्तियारे मुतलक़ तो सिर्फ़ अल्लाह ही का है, उसी पर मैंने तवक्कुल किया है, और तमाम तवक्कुल करने वालों को उसी पर तवक्कुल करना चाहिए।”

إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُونَ ⑫

आयत 68

“तो जब वह दाखिल हुए जहाँ से उन्हें हुक्म दिया था उनके वालिद ने।”

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ

“वह (याकूब) बचाने वाला नहीं था उनको अल्लाह (के फ़ैसले) से कुछ भी, सिवाय इसके कि याकूब के दिल में एक खयाल था जो उसने उसे पूरा कर लिया।”

مَا كَانَ يُغْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسٍ يَغْفُوبُ قُضَاهَا

हज़रत याकूब अलै. के दिल में एक खटक थी जिसे दूर करने के लिये आपने यह तदबीर इख्तियार की कि अपने बेटों को हिदायत कर दी कि वह एक दरवाज़े से दाखिल होने के बजाय मुख्तलिफ़ दरवाज़ों से दाखिल हों, लेकिन आपकी यह तदबीर अल्लाह के किसी फ़ैसले पर असर अंदाज़ नहीं हो सकती थी।

“और यक़ीनन आप साहिबे इल्म थे उस इल्म के ऐतबार से जो हमने आपको सिखाया था, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं हैं।”

وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٧٨﴾

आयात 69 से 79 तक

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَى إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ جَعَلَ السَّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيَّتُهَا الْعِيرُ إِنَّكُمْ لَسِرُّ قَوْنٍ ﴿٨٠﴾ قَالُوا أَقْبِلُوا عَلَيْنِهِمْ مَاذَا تَفْقِدُونَ ﴿٨١﴾ قَالُوا تَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَن جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ﴿٨٢﴾ قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سِرَّيْنِ ﴿٨٣﴾ قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ كَاذِبِينَ ﴿٨٤﴾ قَالُوا جَزَاؤُهُ مَنْ وَجَدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ كَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٨٥﴾ فَبَدَأَ بِأَوْعِيَّتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ اسْتَخَرَهَا مِنْ وِعَاءِ أَخِيهِ كَذَلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَن نَّشَاءُ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ﴿٨٦﴾ قَالُوا إِنْ يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَهُ مِنْ قَبْلُ فَأَسْرَهَا يُوسُفُ فِي نَفْسِهِ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ قَالَ أَنْتُمْ شَرٌّ مَكَانًا وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ﴿٨٧﴾ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبَا شَيْخًا كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدًا مَكَانَهُ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٨﴾ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ تَأْخُذَ إِلَّا مَنْ وَجَدْنَا مَتَاعَنَا عِندَهُ إِنَّا إِذًا لَّظَالِمُونَ ﴿٨٩﴾

आयत 69

“और जब वह आए यूसुफ़ के पास तो आपने अपने भाई को अपने पास अलग बुला लिया और उसे बता दिया कि मैं तुम्हारा भाई हूँ”

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَى إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ

आपने अपने भाई बिन यामिन को अलैहदगी में अपने पास बुला लिया और उन पर अपनी शनाख्त ज़ाहिर कर दी कि मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ जो बचपन में खो गया था।

“तो अब मत गमगीन होना उस पर जो यह लोग करते रहे हैं।”

فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

हज़रत युसुफ़ अलै. ने अपने छोटे भाई को तसल्ली देते हुए फ़रमाया कि मुझे अल्लाह ने इस आला मक़ाम तक पहुँचाया है और हमें आपस में मिला भी दिया है। चुनाँचे अब इन बड़े भाइयों के ख़ैरिये पर तुम्हें परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। अब सख्ती के दिन ख़त्म हो गए हैं।

आयत 70

“फिर जब आपने उनके लिये उनका सामान तैयार करा दिया तो रख दिया पीने का प्याला अपने भाई के सामान में”

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ جَعَلَ السَّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ

यह बादशाह का खुसूसी ज़ाम था जो सोने का बना हुआ था।

“फिर एक पुकारने वाले ने पुकार लगाई कि ऐ क़ाफ़िले वालो! तुम लोग चोर हो।”

ثُمَّ أَدْنَىٰ مَوْدِنَ أَيْتَهَا الْعِثْرَ إِنَّكُمْ لَسِرِقُونَ ﴿٢٠﴾

जब वह क़ाफ़िला चल पड़ा तो उसे रोक लिया गया कि हमारे यहाँ से कोई चीज़ चोरी हुई है और हमें इस बारे में तुम लोगों पर शक है।

आयत 71

“उन्होंने पूछा उनकी तरफ़ मुड़ कर कि आपकी क्या चीज़ गुम हुई है?”

قَالُوا وَقَبِلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا تَفْقِدُونَ ﴿٢١﴾

आयत 72

“उन्होंने जवाब दिया कि हमें बादशाह का ज़ामे ज़रें नहीं मिल रहा और जो उसे ले आएगा उसे एक ऊँट के बोझ के बराबर गल्ला दिया जाएगा, और मैं इसका ज़िम्मेदार हूँ।”

قَالُوا تَفْقِدُ صَوَاعَ الْبَيْتِ وَلَمَّا جَاءَ بِهِ حُمْلٌ يُعِيرُ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ﴿٢٢﴾

आयत 73

“उन्होंने कहा: अल्लाह की क़सम आप लोग ख़ूब जानते हैं कि हम ज़मीन में फ़साद मचाने नहीं आए और हम चोरी करने वाले हरगिज़ नहीं हैं।”

قَالُوا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا جِئْتَنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سِرَّيْنَ ﴿٢٣﴾

आप लोग अच्छी तरह जानते हैं कि हम क़हत के मारे लोग यहाँ इतनी दूर से गल्ला लेने आए हैं, हम कोई चोर-डाकू नहीं हैं। उनके इस फ़िक़रे और अंदाज़े गुफ़्तगू में बड़ी लजाजत पाई जाती है।

आयत 74

“उन्होंने (शाही मुलाज़मीन) ने कहा कि फिर उस (चोर) की क्या सज़ा होगी अगर तुम लोग झूठे हुए?”

قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ كَذِبِينَ ﴿٢٤﴾

यानि अगर तुम लोग अपने इस दावे में झूठे निकले और तुममें से ही कोई शख्स चोर हुआ तो फिर उस शख्स की क्या सज़ा होनी चाहिए?

आयत 75

“उन्होंने कहा कि उसकी सज़ा यही है कि जिसके सामान में वह (जामे ज़र्रे) पाया जाए वह खुद ही उसका बदला होगा। हम तो इसी तरीक़े से ज़ालिमों को सज़ा दिया करते हैं।”

قَالُوا جَزَاءُ مَنْ وَجَدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاءُ كَذَلِكَ
نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٧٥﴾

उन्होंने कहा कि हाँ अगर ऐसा हुआ तो फिर जिसके सामान में से आपका जाम निकल आए, सज़ा के तौर पर आप लोग उसे अपने पास रख लें, वह आपका गुलाम बन जाएगा। हमारे यहाँ तो (शरीअते इब्राहीमी की रू से) चोरी के जुर्म की यही सज़ा राएज़ है।

आयत 76

“तो आपने (तलाशी) शुरू की उनके बोरों की अपने भाई के बोरे से पहले, फिर आपने निकाल लिया वह (जाम) अपने भाई के सामान से।”

فَبَدَأَ بِأَوْعِيَّتِهِمْ قَبْلَ وَعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا
مِنْ وَعَاءِ أَخِيهِ

“इस तरह से हमने तदबीर की युसुफ़ के लिये।”

كَذَلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ

यह एक ऐसी तदबीर थी जिसमें तौरिये का सा अंदाज़ था और इससे मक़सूद किसी को नुक़सान पहुँचाना नहीं बल्कि उस पूरे ख़ानदान को आपस में मिलाना था। इस तदबीर की ज़िम्मेदारी अल्लाह ने खुद ली है कि हज़रत युसुफ़ ने अपनी तरफ़ से ऐसा नहीं किया था बल्कि अल्लाह ने आपके लिये यह एक राह निकाली थी। यह वज़ाहत इसलिये ज़रूरी थी ताकि किसी के ज़हन में यह अशक़ाल (बुटी) पैदा ना हो कि ऐसी तदबीर इख़्तियार करना तो शाने नबुवत के मनाफ़ी है। यहाँ पर यह नुक्ता लायक़-ए-तवज्जो है कि अल्लाह तआला का इख़्तियार भी मुतलक़ है और उसका इल्म भी हर शय पर मुहीत है। अल्लाह को तो इल्म था कि यह आरज़ी सा मामला है और इससे किसी को कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा।

“आपके लिये मुमकिन नहीं था कि अपने भाई को रोकते बादशाह के क़ानून के मुताबिक़ सिवाय इसके कि अल्लाह चाहे।”

مَا كَانَ لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ

लफ़्ज़ “दीन” की तारीफ़ (definition) के ऐतबार से कुरान की यह आयत बहुत अहम है। यहाँ دِينِ الْمَلِكِ (बादशाह के दीन) से मुराद वह निज़ाम है जिसके तहत बादशाह उस पूरे मुल्क तो चला रहा था, जिसमें बादशाह इक़तदार आला (sovereignty) का मालिक था। उसका इख़्तियार मुतलक़ था, उसका हर हुक्म क़ानून था और पूरा निज़ामे सल्तनत व ममलिकत उसके ताबेअ था। इस हवाले से “दीनुल्लाह” की इस्तलाह बहुत आसानी से वाज़ेह हो जाती है। चुनाँचे अगर अल्लाह के इक़तदार (sovereignty) और इख़्तियार मुतलक़ को तस्लीम करके पूरा निज़ामे ज़िन्दगी उसके ताबेअ कर दिया जाए तो यही “दीनुल्लाह” का अमली ज़हूर होगा। यही वह कैफ़ियत थी जो “दीनुल्लाह” के ग़लबे के बाद ज़ज़ीरा नुमाए अरब में पैदा हुई थी और जिसकी गवाही सूरतुल नस्र में इस तरह दी गई है: {وَآيَاتِ { (1) إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ { (2) النَّاسُ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا { (आयत 2)। इसी तरह आज का दीन जिसे अवाम की फ़लाह का ज़ामिन करार दिया जा रहा है “दीनुल जम्हूर” है। इस दीन या निज़ाम में क़ानून साज़ी का इख़्तियार जम्हूर यानि अवाम या अवाम के नुमाइंदों को हासिल है, वह जिसे चाहें जायज़ करार दें और जिसे चाहें नाजायज़, और यही सबसे बड़ा कुफ़्र और शिर्क है।

बहरहाल उस वक़्त मिस्र में बादशाही निज़ाम राएज़ था जिसको हज़रत युसुफ़ अलै. बदल नहीं सकते थे, क्योंकि आप बादशाह तो नहीं थे। आपको जो इख़्तियार हासिल था वह उसी निज़ाम के मुताबिक़ अपने शौबे और महक़मे की हद तक था जिसके वह इंचारज थे। इसी लिये अल्लाह तआला ने आपके लिये यह तदबीर निकाली। आपके भाइयों से पहले यह

इक्रार करा लिया गया कि जिसके सामान से वह प्याला बरामद होगा, सज़ा के तौर पर उसे खुद ही गुलाम बनना पड़ेगा और इस तरह हज़रत युसुफ़ के लिये जवाज़ पैदा हो गया कि वह अपने भाई को अपने पास रोक सकें।

“हम दर्जे बुलंद करते हैं जिसके चाहते हैं। और हर साहिबे इल्म के ऊपर कोई और साहिबे इल्म भी है।”

رَفَعُ دَرَجَتٍ مِّنْ نَّشَأٍ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ

④

यानि इल्म के लिहाज़ से उलमा के दरजात हैं। हर आलिम के ऊपर उससे बड़ा आलिम है और यह दरजात अल्लाह तआला की ज्ञात पर जाकर इख़्तताम पज़ीर होते हैं, जो सबसे बड़ा आलिम है।

आयत 77

“उन्होंने कहा कि अगर इसने चोरी की है तो इससे पहले इसका भाई भी चोरी कर चुका है।”

قَالُوا إِن يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَهُ مِنْ قَبْلُ

बिरादराने युसुफ़ की तबीयत का हल्कापन मुलाहिज़ा हो कि इस पर उन्होंने फ़ौरन कहा कि अगर इसने चोरी की है तो इससे यह बर्द नहीं था, क्योंकि एक ज़माने में इसके माँजाए भाई (युसुफ़) ने भी इसी तरह की हरकत की थी।

“इसको छुपाये रखा युसुफ़ ने अपने जी में और उन पर ज़ाहिर नहीं होने दिया।”

فَاسْرَهَا يُوسُفُ فِي نَفْسِهِ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ

“आपने (दिल ही दिल में) कहा कि तुम बजाए खुद बहुत बुरे लोग हो, और जो कुछ तुम बयान कर रहे हो अल्लाह इससे ख़ूब वाकिफ़ है।”

قَالَ أَنْتُمْ شَرُّ مَكَانٍ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ⑤

उन्होंने आप पर भी फ़ौरन चोरी का बेबुनियाद इल्ज़ाम लगा दिया, मगर आपने कमाले हिकमत और सब्र से इसे बरदाश्त किया और इस पर किसी क्रिस्म का कोई रद्दे अमल ज़ाहिर नहीं किया।

आयत 78

“वह कहने लगे: ऐ अज़ीज़ (साहिबे इख़्तियार)! इसका वालिद जो है बहुत बूढ़ा है, तो आप इसकी जगह हम में से किसी एक को रख लें।”

قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا مَكَانَهُ

“हम देख रहे हैं कि आप बड़े ही नेक इंसान हैं।”

إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ⑥

यह सूरतेहाल उन लोगों के लिये बहुत परेशानकुन थी। बाप का ऐतमाद वह पहले ही खो चुके थे। इस दफ़ा अल्लाह के नाम पर अहद करके बिन यामिन को अपने साथ लाए थे। अब खयाल आता था कि अगर इसे यहाँ छोड़ कर वापस जाते हैं तो वालिद को जाकर क्या मुँह दिखाएँगे। चुनाँचे वह गिडगिडाने पर आ गए और हज़रत युसुफ़ अलै. की मिन्नत समाजत करने लगे कि आप बहुत शरीफ़ और नेक इंसान हैं, आप हम में से किसी एक को इसकी जगह अपने पास रख लें, मगर इसको जाने दें।

आयत 79

“युसुफ़ ने फ़रमाया: अल्लाह की पनाह इस बात से कि हम पकड़ लें किसी और को उस शख्स के बजाए जिसके पास से हमने अपना माल बरामद किया है, यक़ीनन इस सूरत में तो हम ज़ालिम होंगे।”

قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا مَن وَجَدْنَا مَتَاعَنَا

عِنْدَهُ إِنَّا إِذَا الظَّالِمُونَ ⑦

आयात 80 से 93 तक

فَلَمَّا اسْتَيْسَسُوا مِنْهُ خَلَصُوا نَجِيًّا ۖ قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ ۖ فَلَنْ أْبْرَحَ الْأَرْضَ حَتَّى يَأْذَنَ لِىَ أَبِي أَوْ يَحْكَمَ اللَّهُ لى ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحَكِمِينَ ۝ اِرْجِعُوا إِلَىٰ آبَائِكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَاتَانَا إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۖ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلَّمَنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَافِظِينَ ۝ وَسَأَلَ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعِيرَ الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ وَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا سَفَىٰ عَلَىٰ يُوسُفَ ۖ وَابْيَضَّتْ عَيْنُهُ مِنَ الْحُزَنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ۝ قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتُنَا ۖ إِنَّكَ مُدْكَرٌ يُّوسُفَ ۖ حَتَّىٰ تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ ۝ قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ يَبْنِي إِذْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِنْ يُوسُفَ وَأَخِيهِ وَلَا تَأْيِسُوا مِنْ رَّوْحِ اللَّهِ إِنَّهُ لَا يَأْيِسُ مِنْ رَّوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكَافِرُونَ ۝ فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا وَأَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجاةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۚ إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ۝ قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّكَ لَأَنْتَ يُوسُفَ ۖ قَالَ أَنَا يُوسُفَ وَهَذَا أَخِي قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا ۚ إِنَّهُ مَنْ يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝ قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ آثَرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَخُطِئِينَ ۙ قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۖ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝ إِذْهَبُوا بِقَمِيصِي هَذَا فَأَلْقُوهُ عَلَىٰ وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا ۖ وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ۝

आयत 80

“फिर जब वह यूसुफ़ से मायूस हो गए तो अलैहदगी में जाकर मशवरा करने लगे।”

“उनके बड़े ने कहा: क्या तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारे वालिद ने तुमसे अल्लाह के नाम पर पुख्ता अहद लिया हुआ है”

उनके सबसे बड़े भाई का नाम यहूदा था, यह वही थे जिन्होंने मशवरा देकर हज़रत यूसुफ़ की जान बचाई थी कि अगर तुम उसकी जान के दरपे हो गए हो तो उसे क़त्ल मत करो बल्कि किसी दूर दराज़ इलाक़े में फेंक आओ।

“और (क्या तुम नहीं जानते) जो ज़्यादाती इससे पहले तुम यूसुफ़ के मामले में कर चुके हो!”

“अब तो मैं इस सरज़मीन से नहीं हिलूँगा, यहाँ तक कि मेरे वालिद खुद मुझे इजाज़त दे दें”

فَلَمَّا اسْتَيْسَسُوا مِنْهُ خَلَصُوا نَجِيًّا ۖ

قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ

وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ ۖ

فَلَنْ أْبْرَحَ الْأَرْضَ حَتَّى يَأْذَنَ لِىَ أَبِي

तुम लोग जाकर वालिद साहब को सारा वाक़िया बताओ, फिर अगर वह मुतमईन होकर मुझे इजाज़त दे दें तो तब मैं वापस जाऊँगा वरना मैं इधर ही रहूँगा।

“या फिर अल्लाह ही मेरे बारे में कोई फैसला कर दे, और यक़ीनन वह बेहतरीन फैसला करने वाला है।”

أَوْ يَخُكِّمَ اللَّهُ إِلَيَّ وَهُوَ خَيْرُ الْحَكِمِينَ ۝

आयत 81

“तुम लौट जाओ अपने वालिद के पास और (जाकर) कहो कि अब्बाजान! आपके बेटे ने चोरी की है।”

ارْجِعُوا إِلَىٰ آبَائِكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ

“और हम गवाही नहीं दे सकते मगर उसी चीज़ की जिसके बारे में हमें इल्म है, और हम गैब के निगेहबान नहीं हैं।”

وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلَيْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَفِظِينَ

۝

अब्बाजान! हमने उसे चोरी करते हुए नहीं देखा, हम तो आपको वही हकीकत बता रहे हैं जो हमारे इल्म में आई है और वह यह है कि बिन यामिन ने चोरी की है और इस जुर्म में वह वहाँ पकड़ा गया है।

आयत 82

“आप इस बस्ती (वालों) से पूछ लें जिसमें हम थे, और उस क़ाफ़िले (वालों) से जिनके साथ हम आए हैं। और हम (अपने बयान में) बिल्कुल सच्चे हैं।”

وَسَلِّ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعَيْرَ الَّتِي أَقْبَلْنَا

فِيهَا وَإِنَّا لَصٰدِقُونَ ۝

आप मिस्र से भी हकीकत हाल मालूम करा सकते हैं या फिर जिस क़ाफ़िले के साथ हम गए थे उसके सब लोग वहाँ मौजूद थे, उनके सामने यह सब कुछ हुआ था। आप उनमें से किसी से भी पूछ लें, वह सारा माजरा आपको बता देंगे।

आयत 83

“आपने फ़रमाया: (नहीं!) बल्कि तुम्हारे लिये तुम्हारे नफ़्सों ने एक काम आसान कर दिया है, पस सब्र ही बेहतर है।”

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبِّرْ جَمِيلٌ

हज़रत याक़ूब अलै. ने यहाँ पर फिर वही फ़िक़रा बोला जो हज़रत युसुफ़ अलै. की मौत के बारे में ख़बर मिलने पर बोला था। उन्हें यक़ीन था कि हकीकत वह नहीं है जो वह बयान कर रहे हैं। उन्होंने कहा: बहरहाल मैं इस पर भी सब्र करूँगा और बखूबी करूँगा।

“हो सकता है अल्लाह उन सबको ले आए मेरे पास। यक़ीनन वह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है।”

عَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ

الْحَكِيمُ ۝

हज़रत याक़ूब अलै. के लिये हज़रत युसुफ़ अलै. का गम ही क्या कम था कि अब दयारे ग़ैर में दूसरे बेटे के मुसीबत में गिरफ़्तार होने की ख़बर मिल गई, और फिर तीसरे बेटे यहूदा का दुःख इस पर मुस्तज़ाद जिसने मिस्र से वापस आने से इन्कार कर दिया था, मगर फिर भी आप सब्र का दामन थाम रहे। रंज व आलम के सेल बेपनाह का सामना है मगर पाए इस्तक्रामत में लग्ज़िश नहीं आई। बस अल्लाह तआला की ज़ात पर भरोसा है और उसी की रहमत से उम्मीद!

आयत 84

“और आपने उनसे रुख फेर लिया और कहने लगे हाए अफ़सोस युसुफ़ पर! (और रोना शुरू कर दिया)”

وَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا سَفَى عَلَى يَوْسُفَ

“और सदमे से आपकी आँखें सफ़ेद पड़ गई थीं क्योंकि आप गम को (अंदर ही अंदर) पीते रहते थे।”

وَأَبْيَضَّتْ عَيْنُهُ مِنَ الْحُزَنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٨٥﴾

हज़रत याकूब अलै. को हज़रत युसुफ़ अलै. से बहुत मोहब्बत थी। बेटे के हिज़्र व फ़राक (जुदाई) में आपके दिल पर जो गुज़री थी खुद कुरान के यह अल्फ़ाज़ इस पर गवाह हैं। यह इंसानी फ़ितरत का एक नागुज़ीर तक्काज़ा है जिसे यहाँ अच्छी तरह समझने की ज़रूरत है। किसी के बच्चे का फ़ौत हो जाना यकीनन बहुत बड़ा सदमा है, लेकिन बच्चे का गुम हो जाना इससे कई गुना बड़ा सदमा है। फ़ौत होने की सूरत में अपने सामने तजहीज़ व तकफ़ीन (अंतिम संस्कार) होने से, अपने हाथों दफ़न करने और क़ब्र बना लेने से किसी क़दर सन्न का दामन हाथ में रहता है और फिर रफ़्ता-रफ़्ता उस सन्न में सबात (दृढ़ता) पैदा होता जाता है। मगर बच्चे के गुम होने की सूरत में उसकी याद मुस्तक़िल तौर पर इंसान के लिये सोहाने रूह बन जाती है। यह खयाल किसी वक़्त चैन नहीं लेने देता कि ना मालूम बच्चा ज़िन्दा है या फ़ौत हो गया है। और अगर ज़िन्दा है तो कहाँ है? और किस हाल में है? यही दुःख था जो हज़रत याकूब अलै. को अन्दर ही अन्दर खा गया था और रो-रो कर आपकी आँखें सफ़ेद हो चुकी थीं। आपको वही के ज़रिये यह तो बतला दिया गया था कि युसुफ़ ज़िन्दा है और आपसे ज़रूर मिलेंगे, मगर कहाँ हैं? किस हाल में हैं? और कब मिलेंगे? ये वह सवालात थे जो आपको सालाह साल से मुसलसल कर्ब (दर्द) में मुब्तला किये हुए थे। अब बिन यामिन की जुदाई पर युसुफ़ का गम पूरी शिद्दत से औद (लौट) कर आया।

आयत 85

“उन्होंने कहा: (अब्बाजान!) अल्लाह की क़सम आप तो युसुफ़ ही को याद करते रहेंगे यहाँ तक कि आप या तो (इसी सदमे में) घुल जायेंगे या फ़ौत हो जायेंगे।”

قَالُوا تَاللّٰهِ تَفْتَوُا تَدْكُرُ يُوسُفَ حَتَّىٰ تَكُونَ حَرَضًا
أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ ﴿٨٥﴾

आयत 86

“याकूब ने फ़रमाया: मैं अपनी परेशानी और अपने गम की फ़रियाद अल्लाह ही से करता हूँ”

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَيْنِي وَخُزْنِي إِلَى اللَّهِ

मैंने तुम लोगों से तो कुछ नहीं कहा, मैंने तुम्हें तो कोई लअन-तअन (तानाकशी) नहीं की, तुमसे तो मैंने कोई बाज़पुर्स नहीं की। यही अल्फ़ाज़ थे जो नबी अकरम ﷺ ने ताएफ़ के दिन अपनी दुआ में इस्तेमाल फ़रमाए थे: ((اللَّهُمَّ إِلَيْكَ أَشْكُو ضَعْفَ...)) (6) “ऐ अल्लाह मैं तेरी जनाब में फ़रियाद लेकर आया हूँ अपनी कुव्वत की कमज़ोरी और अपने वसाइल की कमी की, और लोगों के सामने मेरी जो तौहीन हो रही है उसकी। ऐ अल्लाह! तूने मुझे किसके हवाले कर दिया है?.....”

“और मैं अल्लाह की तरफ़ वह कुछ जानता हूँ जो तुम लोग नहीं जानते हो।”

وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾

यानि अल्लाह तआला के दिए हुए इल्म से मैं जानता हूँ कि युसुफ़ ज़िन्दा है फ़ौत नहीं हुए।

आयत 87

“ऐ मेरे बेटों! जाओ और तलाश करो यूसुफ़ को भी और उसके भाई को भी, और अल्लाह की रहमत से मायूस ना होना।”

يٰٓبَنِيٓ اٰدٰهْبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُۤوسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَاْيَسُوْا مِنْ رُّوْحِ اللّٰهِ

“यक्रीनन अल्लाह की रहमत से मायूस तो बस काफ़िर ही होते हैं।”

اِنَّهٗ لَا يَاْيَسُ مِنْ رُّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ

۸۷

साहिबे ईमान लोग कभी अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होते।

आयत 88

“फिर जब वह लोग यूसुफ़ के यहाँ पहुँचे”

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ

अगले साल जब वह लोग अपने वालिद के हुक्म के मुताबिक मिस्र पहुँचे और फिर हज़रत यूसुफ़ के सामने पेश हुए।

“उन्होंने कहा: ऐ अज़ीज़ (साहिबे इख्तियार)! हम पर और हमारे अहलो अयाल पर बड़ी सख्ती आ गई है”

قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَاَهْلُنَا الضُّرُّ

कई साल से लगातार क़हत का समां था। आहिस्ता-आहिस्ता उसके असरात ज़्यादा शिद्वत के साथ ज़ाहिर हो रहे होंगे। भेड़-बकरियाँ भी ख़त्म हो चुकी होंगी। अब तो उनकी ऊन भी नहीं होगी जो अनाज की कीमत के एवज दे सकें।

“और हम बहुत हक़ीर सी पूंजी लेकर आए हैं, लेकिन (इसके बावजूद) आप हमारे लिये पैमाने पूरे भर कर दीजिये”

وَجِئْنَا بِضَاعَةٍ مُّزْجِيَةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ

इस दफ़ा हम जो चीज़ें गल्ले की कीमत अदा करने के लिये लेकर आए हैं वह बहुत कम और नाक़िस हैं। हम जानते हैं कि इनसे गल्ले की कीमत पूरी नहीं हो सकती।

“और हमें ख़ैरात भी दीजिये।”

وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا

अपने इन्तहाई ख़राब हालात की वजह से हम चूँकि ख़ैरात के मुस्तहक़ हो चुके हैं, इसलिये आपसे दरख़वास्त है कि इस दफ़ा कुछ गल्ला आप हमें ख़ैरात में भी दें।

“यक्रीनन अल्लाह सदक़ा देने वालों को जज़ा देता है।”

اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ ۝۸۸

चूँकि हज़रत यूसुफ़ अलै. के लिये यह सारी सूरतेहाल बहुत रक्तअंगेज़ (दयनीय) थी, इसलिये आप मज़ीद ज़ब्त नहीं कर सके और आपने उन्हें अपने बारे में बताने का फ़ैसला कर लिया।

आयत 89

“आपने पूछा: क्या तुम लोगों को याद है कि तुमने क्या किया था यूसुफ़ और उसके भाई के साथ जबकि तुम नादान थे।”

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُۤوسُفَ وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ ۝۸۹

आपका अपने भाईयों से यह सवाल करना गोया अल्लाह तआला के इस वादे का हफ़्त-ब-हफ़्त अयफ़ा (प्रदर्शन) था जिसका ज़िक्र सूरत के आज़ाज़ में इन अल्फ़ाज़ में हुआ था: {وَاَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِ لَنُنَبِّئَنَّهُمْ بِاَمْرِ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ} (आयत 15)। यह तब की बात

है जब वह सब भाई मिल कर आपको बावली में फेंकने की तैयारी कर रहे थे। अल्लाह तआला ने उस वक़्त इन अल्फ़ाज़ में आपके दिल पर इल्हाम किया था कि एक वक़्त आएगा जब आप अपने भाईयों को यह बात ज़रूर जतलायेंगे, और यह ऐसे वक़्त और ऐसी सूरतेहाल में होगा जब यह बात उनके वहम व गुमान में भी नहीं होगी।

आयत 90

“उन्होंने कहा: तो क्या आप यूसुफ़ हैं? यूसुफ़ ने फ़रमाया: हाँ! मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है”

قَالُوا إِنَّكَ لَأَنْتَ يُوسُفُ قَالَ أَنَا يُوسُفُ وَهَذَا
أَخِي

“अल्लाह ने हम पर बड़ा अहसान किया है। यक़ीनन जो शख्स तक़वा की रविश इख्तियार करता है और सब्र करता है तो अल्लाह ऐसे नेकोकारों के अज़्र को ज़ाया नहीं करता।”

قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَىٰ نَاثِرٍ إِنَّهُ مَنْ يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا
يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ⑨

आयत 91

“उन्होंने कहा: अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने आपको हम पर फज़ीलत बख़शी है, यक़ीनन हम ही खताकार थे।”

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ أَثَرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَخَطِئِينَ

⑨

यक़ीनन हम खताकार हैं, बिलाशुबह ज़ुल्म व ज़्यादती के मुरतकिब हम ही हुए थे।

आयत 92

“यूसुफ़ ने फ़रमाया: आज के दिन तुम लोगों पर कोई मलामत नहीं।”

قَالَ لَا تَثْرِبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ

यह इस क़दर मामूली बात नहीं थी जिसे एक फ़िक़रे में ख़त्म कर दिया जाता, मगर हज़रत यूसुफ़ अलै. की शख्सियत के तरफ़अ (पदोन्नति) और अख़लाक़ की अज़मत की दलील है कि आपने अपने उन खताकार भाईयों को फ़ौरन ग़ैर मशरूत (unconditional) तौर पर माफ़ कर दिया।

यहाँ ये बात भी नोट कर लें कि नबी अकरम ﷺ ने फ़तह मक्का के मौक़े पर अपने मुखालफ़ीन, जिनके ज़राएम (जुर्मों) की फ़ेहरिस्त बड़ी तवील और संगीन थी, को माफ़ करते हुए हज़रत यूसुफ़ अलै. के इसी क़ौल का तज़क़िरा किया था। आपने फ़रमाया: ((اِنَّا قَوْلُ كُنَّا قَالِ اِنِّي يُوسُفُ: لَا تَثْرِبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ)) “मैं आज (तुम्हारे बारे में) वही कहूँगा जो मेरे भाई हज़रत यूसुफ़ अलै. ने (अपने भाईयों से) कहा था: (जाओ) तुम पर आज कोई ग़िरफ़्त नहीं है।”

“अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, और वह तमाम रहम करने वालों से बढ़ कर रहम करने वाला है।”

يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ⑩

आयत 93

“तुम मेरी यह क़मीज़ ले जाओ और (जाकर) इसे मेरे वालिद के चेहरे पर डाल दो, आपकी बसारीत लौट आएगी।”

إِذْهَبُوا بِقِمِيصِي هَذَا فَالْقُوهُ عَلَىٰ وَجْهِ أَبِي يَأْتِ
بَصِيرًا

“और तुम ले आओ मेरे पास अपने तमाम अहल खाना (घर वालों) को।”

وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٣﴾

आयात 94 से 101 तक

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَنْ تُفَنِّدُونِ ﴿٩٣﴾ قَالُوا تَاللّٰهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ﴿٩٤﴾ فَلَمَّا أَنْ جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْفَهُ عَلَى وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بِصِيرًا قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٩٥﴾ قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا خَاطِئِينَ ﴿٩٦﴾ قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٩٧﴾ فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَى إِلَيْهِ أَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوا مِصْرَ إِن شَاءَ اللَّهُ أَمِينٌ ﴿٩٨﴾ وَرَفَعَ أَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ سُجَّدًا وَقَالَ يَأْبَتِ هَذَا تَأْوِيلُ رُءُيَايَ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ الْبَدْوِ مِنْ بَعْدِ أَنْ نَزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِّمَا يَشَاءُ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٩٩﴾ رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنْتَ وَلِيَّ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ ﴿١٠٠﴾

आयत 94

“और जब काफ़िला चला (मिस्र से तो) उनके वालिद ने फ़रमाया: मुझे यूसुफ़ की खुशबू आ रही है, अगर तुम लोग यह ना कहो कि मैं सठिया गया हूँ।”

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَنْ تُفَنِّدُونِ ﴿٩٣﴾

यहाँ पर यह बात काबिले गौर है कि ज्योंहि हज़रत यूसुफ़ अलै. की क़मीज़ ले कर काफ़िला मिस्र से चला उसी लम्हे कनआन में हज़रत याक़ूब अलै. को अपने बेटे की खुशबू पहुँच गई। मगर इससे पहले एक तवील अरसे तक आपने अपने बेटे के हिज़्र में रो-रो कर अपनी आँखें सफ़ेद कर लीं, मगर यह खुशबू नहीं आई। इससे यह नुक्ता वाज़ेह होता है कि कोई नबी हो या वली, किसी मौज्ज़े या करामात का ज़हूर किसी भी शख़्सियत का ज़ाती क़माल नहीं है, बल्कि यह अल्लाह तआला की ख़ास इनायत है। वह जिसको, जिस वक़्त जो इल्म चाहे अता फ़रमा दे या उसके हाथों जो चाहे दिखा दे। जैसे एक दफ़ा हज़रत उमर रज़ि. को मस्जिदे नबवी में खुत्बे के दौरान अल्लाह तआला ने शाम के इलाक़े में वाक़ेअ उस मैदाने जंग का नक़शा दिखा दिया जहाँ उस वक़्त इस्लामी अफ़वाज़ बरसर पैकार थीं, और आपने फ़ौज के कमान्डर सारया को एक हरबी तदबीर इख़्तियार करने की बा-आवाज़े बुलंद तलक़ीन फ़रमाई। जनाब सारया ने मैदाने जंग में हज़रत उमर रज़ि. की आवाज़ सुनी और आपकी हिदायत पर अमल किया। लेकिन इसका यह मतलब हरगीज़ नहीं कि हज़रत उमर रज़ि. को इख़्तियार था कि जब चाहते ऐसा मंज़र देख लेते।

आयत 95

“उन्होंने (घरवालों) ने कहा: अल्लाह की क़सम! आप तो अपने उसी पुराने ख़ब्त (धुन) में मुबतला हैं।”

قَالُوا تَاللّٰهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ﴿٩٥﴾

आपको शुरू ही से यह वहम है कि यूसुफ़ ज़िन्दा है और आपको उसके दोबारा मिलने का यक़ीन है। यह आपके ज़हन पर उसी वहम के ग़लबे का असर है जो आप इस तरह की बातें कर रहे हैं। वही पुराने ख्यालात यूसुफ़ की खुशबू बन कर आपके दिमाग़ में आ रहे हैं।

आयत 96

“तो जब आया बशारत देने वाला और उसने डाला उस (क़मीज़) को याक़ूब के चेहरे पर तो आप फिर से हो गए देखने वाले।”

فَلَمَّا أَنْ جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْفَهُ عَلَى وَجْهِهِ فَارْتَدَّ
بَصِيرًا

यूसुफ़ अलै. की क़मीज़ चेहरे पर डालते ही हज़रत याक़ूब अलै. की बशारत लौट आई। यहाँ यह बात क़ाबिले ज़िक्र है कि हज़रत याक़ूब अलै. के सामने ज़िन्दगी का सबसे अन्दुहनाक (भयानक) ग़म भी हज़रत यूसुफ़ अलै. के कुरते ही की सूरत में सामने आया था जब बिरादाराने यूसुफ़ ने उस पर खून लगा कर उनके सामने पेश कर दिया था कि यूसुफ़ को भेड़िया खा गया और अब ज़िन्दगी की सबसे बड़ी खुशी भी यूसुफ़ के कुरते ही की सूरत में नमूदार हो गई।

“आपने फ़रमाया: क्या मैं तुमसे कहता नहीं था कि मुझे अल्लाह की तरफ़ से उन चीज़ों का इल्म है जो तुम नहीं जानते?”

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ

91

आयत 97

“उन्होंने कहा: अब्बाजान! हमारे लिये हमारे गुनाहों की मग़फ़िरत तलब कीजिये, यक़ीनन हम ही ख़ताकार थे।”

قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا خَاطِئِينَ 92

आयत 98

“आपने फ़रमाया: अनक़रीब मैं मग़फ़िरत तलब करूँगा तुम्हारे लिये अपने रब से, यक़ीनन वही है बख़्शीश वाला, बहुत रहम करने वाला।”

قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ
الرَّحِيمُ 93

यहाँ पर “سَوْفَ” का लफ़ज़ बहुत अहम है। यानि आपने फ़ौरी तौर पर उनके लिये इस्तग़फ़ार नहीं किया बल्कि वादा किया कि मैं अनक़रीब तुम लोगों के लिये अपने रब से इस्तग़फ़ार करूँगा। इसका मतलब यह है कि अभी अपने बेटों के बारे में आपके दिल में रंज व गुस्सा बरकरार था। शायद आपका ख्याल हो कि मैं यूसुफ़ से मिल कर सारी तफ़सीलात मालूम करूँगा, इसके बाद जब तमाम मामलात की सफ़ाई हो जाएगी तो फिर मैं अपने रब से इन के लिये माफ़ी की दरख़वास्त करूँगा।

आयत 99

“फिर जब वह सब यूसुफ़ के पास पहुँच गए तो उन्होंने जगह दी अपने पास अपने वालिदैन को”

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُسُفَ أَوَى إِلَيْهِ أَبَوَاهُ

कनआन से चलकर बनी इसराइल का यह पूरा ख़ानदान जब हज़रत यूसुफ़ अलै. के पास मिस्र पहुँचा तो आपने खुसूसी ऐज़ाज़ के साथ उनका इस्तक़बाल किया और अपने वालिदैन को अपने पास इम्तियाज़ी नाशिस्तें पेश कीं।

“और कहा कि अब आप लोग मिस्र में दाखिल हो जाएँ, अल्लाह ने चाहा तो पूरे अमन व चैन के साथ (यहाँ रहें)।”

وَقَالَ ادْخُلُوا مِصْرَ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۝۹۹

अब आप लोगों को कोई परेशानी नहीं होगी। अगर अल्लाह ने चाहा तो यहाँ आपके लिये अमन व चैन और सुकून व राहत ही है।

आयत 100

“और आपने अपने वालिदैन को ऊँचे तख़्त पर बैठाया, और वह सबके सब युसुफ़ के सामने सज्दे में गिर गए।”

وَرَفَعَ اَبُوْهُ عَلٰى الْعَرْشِ وَخَرُّواْ لَهٗ سُجَّدًا ۝

यह सज्दा-ए-ताज़ीमी था जो पहली शरीअतों में जायज़ था। शरीअते मोहम्मदी ﷺ में जहाँ दीन की तकमील हो गई वहाँ तौहीद का मामला भी आख़री दरजे में तकमील को पहुँचा दिया गया। चुनाँचे यह सज्दा-ए-ताज़ीमी अब हरामे मुतलक है। जो लोग अपने बुज़ुर्गों या क़ब्रों को सज्दा करते हैं वह सरीह शिर्क का इरतकाब करते हैं। साबक़ा अम्बिया किराम अलै. के हालात व वाक़िआत से आज इसके लिये कोई दलील अख़ज़ करना क़तअन दुरुस्त नहीं।

“और युसुफ़ ने कहा: अब्बाजान! यह है ताबीर उस ख़्वाब की जो मैंने पहले (बचपन में) देखा था”

وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُّءُيَايَ مِنْ قَبْلُ ۝

हज़रत युसुफ़ अलै. के इस ख़्वाब का ज़िक्र आयत 4 में है कि ग्यारह सितारे और सूरज और चाँद मुझे सज्दा कर रहे हैं। इसमें ग्यारह भाई सितारे की मानिन्द जबकि वालिदैन सूरज और चाँद के हुक्म में हैं।

“मेरे रब ने उसको सच्चा कर दिखाया।”

قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ۝

“और उसने मुझे पर बहुत अहसान किया जब मुझे क़ैदखाने से निकलवाया”

وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْ اِذَا خَرَجْتِنِيْ مِنَ السِّجْنِ ۝

“और आप लोगों को (यहाँ) ले आया सहरा से”

وَجَاءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدُوِّ ۝

आप लोगों को सहरा की पुर मशक्क़त ज़िन्दगी से निजात दिला कर यहाँ मिस्र के मुतमद्दिन और तरक्की याफ़ता माहौल में पहुँचा दिया, जहाँ ज़िन्दगी की हर सहूलत मयस्सर है।

“इसके बाद कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान दुश्मनी डाल दी थी।”

مِّنْ بَعْدِ اَنْ تَزْغِ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ۝

“यक़ीनन मेरा रब ग़ैर महसूस तौर पर तदबीर करता है जो चाहता है। यक़ीनन वही है हर शय का इल्म रखने वाला, हिकमत वाला।”

اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَاءُ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝

अल्लाह तआला अपनी मशियत के मुताबिक़ बारीक़ बीनी से तदबीर करता है और उसकी तदबीर बिलआख़िर कामयाब होती है। इसके बाद हज़रत युसुफ़ अलै. अल्लाह के हुज़ूर दुआ करते हैं:

आयत 101

“ऐ मेरे रब! तूने मुझे हुक्मत भी अता की है और मुझे ख़्वाबों की ताबीर (या मामला फ़हमी) का इल्म भी सिखाया है।”

رَبِّ قَدْ اَتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ
الْاَحَادِيْثِ ۝

“ऐ वह हस्ती जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है, तू ही मेरा कारसाज़ है, दुनिया में भी और आखिरत में भी।”

فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنْتَ وَلِيّٰ فِى الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ

“मुझे वफ़ात दीजियो फ़रमाबदारी की हालत में और मुझे शामिल कर दीजियो अपने सालेह बन्दों में।”

تَوَفِّىْ مُسْلِمًا وَّالْحَقِّىْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۝

आयात 102 से 111 तक

ذٰلِكَ مِنْ اَنْبَاِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ۝ وَمَا اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ
حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَكَآيْنٍ مِّنْ اٰيَةٍ فِى السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ يَمْرُوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ۝ وَمَا يُوْثِقُ مِنْهُمْ اَللّٰهُ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ۝ اَفَاَمِنُوْا اَنْ
تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ قُلْ هٰذِهِ سَبِيْلِيْ اَدْعُوْا اِلَى اللّٰهِ عَلَى
بَصِيْرَةٍ اَنَاْ وَمَنْ اَتَّبَعَنِىْ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَمَا اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْ اِلَيْهِمْ مِّنْ
اَهْلِ الْقُرٰى اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ
اَتَّقَوْا اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ حَتّٰى اِذَا اسْتَيْسَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْا اَنْهُمْ قَدْ كُنُوْا جَاءَهُمْ نَصْرٌ مِّنَّا فَتَنّٰى مِّنْ نَّشَآءٍ وَلَا يَرٰدُ
بَاْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ لَقَدْ كَانَ فِى قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِى الْاَلْبَابِ ۝ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُفْتَرٰى وَلٰكِنْ
تَصْدِيْقًا لِّذِيْ بَيْنٍ يَدِّيْهِ وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّلْقَوْمِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝

आयात 102

“ये हैं ग़ैब की ख़बरों में से जो हम वही करते हैं (ऐ मोहम्मद ﷺ) आपकी तरफ़।”

ذٰلِكَ مِنْ اَنْبَاِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ

“और आप उनके पास मौजूद नहीं थे जब उन्होंने इत्तेफ़ाके राय किया था अपने मामले पर और जब वह लोग साज़िश कर रहे थे।”

وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ

۝

आयात 103

“और बहुत से लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं, चाहे आप कितनी ही ख्वाहिश रखें।”

وَمَا اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝

इन मुन्करीने हक़ ने अपनी तरफ़ से एक सवाल किया था, हमने इसका मुफ़स्सल (विस्तृत) जवाब दे दिया है। मगर इसका यह मतलब नहीं है कि इस क़दर उम्दा और ख़ूबसूरत जवाब पाकर वह लोग ईमान भी ले आयेंगे। नहीं ऐसा नहीं होगा। इनमें से अक्सर लोग आप ﷺ की शदीद ख्वाहिश के बावजूद भी ईमान नहीं लाएंगे।

आयत 104

“और (ऐ नबी ﷺ!) आप इस पर इनसे कोई अज़्र तो नहीं माँग रहे, यह (कुरान) तो तमाम जहाँ वालों के लिये एक याददिहानी है।”

وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ

١٠٤

आयत 105

“और कितनी ही निशानियाँ हैं आसमानों और ज़मीन में जिन पर से ये गुज़रते रहते हैं, लेकिन ये उनसे ऐराज़ ही करते हैं।”

وَكَأَيِّن مِّن آيَةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا

وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ﴿١٠٥﴾

ये लोग ज़मीन व आसमान की वुसअतों (extensions) में अल्लाह तआला की बेशुमार निशानियों को बार-बार देखते हैं मगर कभी इन पर गौर करके सबक़ हासिल नहीं करते।

आयत 106

“और इनमें से अक्सर लोग अल्लाह पर ईमान नहीं रखते मगर इस तरह कि (किसी ना किसी नौअ का) शिर्क भी करते हैं।”

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُشْرِكُونَ ﴿١٠٦﴾

ये आयत हमारे लिये बहुत ज़्यादा लायक़-ए-तवज्जो है और हम सबको इस पर बहुत गौर व खौज़ करने की ज़रूरत है। शिर्क का मामला उन लोगों का तो बिल्कुल वाज़ेह है जो एक अल्लाह के साथ बेशुमार दूसरे मअबूदों पर ईमान रखते हैं और मुख्तलिफ़ नामों से उनकी पूजा करते हैं। लेकिन जो लोग खुद को मुवहिहद (Monotheism) समझते हैं और अपने ख्याल में वह इस्कानी हद तक मुवहिहद होते भी हैं, बसा औक्रात ग़ैर शऊरी तौर पर वह भी किसी ना किसी नौअ (type) के शिर्क में मुलव्विस हो जाते हैं। इस सूरतेहाल को समझने के लिये बड़ी गहरी बसीरत की ज़रूरत है, और ऐसी बसीरत और ऐसा इल्म हासिल करना हर साहिबे शऊर मुसलमान पर फ़र्ज़ है ताकि वह खुद को इस मोहलक (घातक) और तबाहकुन गुनाह से बचा सके।

शिर्क को कुरान मजीद में बदतरीन गुनाह और सबसे बड़ा जुर्म क़रार दिया गया है। इस गुनाह की शिद्दत का अंदाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि सूरतुन्निसा में वह आयत दो मरतबा आई है जिसमें शिर्क का इरतकाब (commit) करने वाले फ़र्द के लिये माफ़ी और मगफ़िरत के किसी भी इस्कान को सख्ती से रद्द कर दिया गया है: {إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ} (आयत 116 व 148) इस ऐतबार से मैं यहाँ पर एक दफ़ा फिर ज़िक़र करना ज़रूरी समझता हूँ कि “हक़ीक़त व अक़साम शिर्क” के मौजू पर मेरी छः घंटे की तक्रारीर की रिकार्डिंग आप ज़रूर सुनें (अब इसी नाम से एक किताब भी दस्तयाब है, जिसका मुताअला कर लें) और समझने की कोशिश करें कि शिर्क की हक़ीक़त और इसकी अक़साम क्या है? माज़ी में शिर्क की क्या सूरतें थीं और आज के दौर का सबसे बड़ा शिर्क कौनसा है? शिर्क फ़िल-ज़ात क्या है? शिर्क फ़िल-सिफ़ात क्या है? शिर्क फ़िल-हुकूक क्या है? नज़रियाती शिर्क क्या है? साइंस में ये शिर्क किस तौर से आया है? क़ौम परस्ती, माद्दा परस्ती, नफ़्स परस्ती और दौलत परस्ती किस ऐतबार से शिर्क के जुमरे (श्रेणी) में आती है? कौन-कौन से बड़े शिर्क हैं जिनमें आज हमारे मुलव्विस होने का इस्कान (संभावना) है? शिर्क के बारे में ये तमाम तफ़सीलात जानना एक बंदा-ए-मुसलमान के लिये इन्तहाई ज़रूरी हैं।

आयत 107

“क्या वह इससे बेखौफ़ हो चुके हैं कि आ धमके उन पर ढाँप लेने वाली आफ़त अल्लाह के अज़ाब की”

أَفَأَمِنُوا أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللَّهِ

“या (उनको ये डर भी नहीं रहा कि) आ जाए उन पर क्रयामत अचानक और उन्हें इसका अहसास तक ना हो!”

أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٥﴾

आयत 108

“(ऐ नबी ﷺ) आप कह दीजिये कि ये मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ़ बुला रहा हूँ, पूरी बसीरत के साथ, मैं भी और वह लोग भी जिन्होंने मेरी पैरवी की है।”

قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعْتُ

यानि मेरा इस रास्ते को इख्तियार करना और फिर इसकी तरफ़ लोगों को दावत देना, यँही कोई अँधेरे में टामक टोईयाँ मारने के मुतरादिफ़ नहीं है, बल्कि मैं अपनी बसीरते बातिनी के साथ, पूरी सूझ-बूझ और पूरे शऊर के साथ इस रास्ते पर खुद भी चल रहा हूँ और इस रास्ते की तरफ़ दूसरों को भी बुला रहा हूँ। इसी तरह मेरे पैरोकार भी कोई अंधे बहरे मुक़ल्लिद नहीं हैं बल्कि पूरे शऊर के साथ मेरी पैरवी कर रहे हैं।

आज के दौर में इस शऊरी ईमान की बहुत ज़रूरत है। अगरचे blind faith भी अपनी जगह बहुत कीमती चीज़ है और ये भी इंसान की ज़िंदगी और ज़िंदगी की इक़दार में इन्क़लाब ला सकता है, लेकिन आज ज़रूरत चूँकि निज़ाम बदलने की है और निज़ाम पर मआशरे के intelligentsia का तसल्लुत (शासन) है, इसलिये जब तक इस तबक़े के अंदर शऊर और बसीरत वाला ईमान पैदा नहीं होगा, ये निज़ाम तब्दील नहीं हो सकता।

“और अल्लाह पाक है और मैं हरगिज़ शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ।”

وَسُبْحَنَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٦﴾

आयत 109

“और (ऐ नबी ﷺ) हम नहीं भेजते रहे आपसे पहले (रसूल बनाकर) मगर मदों ही को बस्तियों वालों में से, जिनकी तरफ़ हम वही करते थे।”

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رَجَالًا نُوحِي إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ

यानि आप ﷺ से पहले मुख्तलिफ़ अदवार (समय) में और मुख्तलिफ़ इलाक़ों में जो अंबिया व रसूल आए वह सब आदमी ही थे और उन ही बस्तियों के रहने वालों में से थे।

“तो क्या ये लोग ज़मीन में घूमे-फिरे नहीं हैं कि वह देखते कि क्या अंजाम हुआ उन लोगों का जो इनसे पहले थे।”

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ

ये उन्ही अक़वाम के अंजाम की तरफ़ इशारा है जिनका ज़िक्र अम्बिया अर्रसूल के तहत कुरान में बार-बार आया है।

“और यक़ीनन आख़िरत का घर बेहतर है उन लोगों के लिये जो तक़वे की रविश इख्तियार करें। तो क्या तुम अक़ल से काम नहीं लेते?”

وَلَذَارُ الْأَخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٧﴾

अगली आयत मुश्किलातुल कुरान में से है और इसके बारे में बहुत सी आरा (राय) हैं। मेरे नज़दीक जो राय सहीतर है, सिर्फ़ वह यहाँ बयान की जा रही है।

आयत 110

“यहाँ तक कि जब रसूल मायूस हो गए”

حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْئَسَ الرُّسُلُ

यानि मुतलक्का क्रौम में जिस क़दर फ़ितरते सलीमा की इस्तेदाद (potential) थी उस लिहाज़ से नताइज सामने आ चुके। उनमें से जिन लोगों ने ईमान लाना था वह ईमान ला चुके और मज़ीद किसी के ईमान लाने की तवक्को ना रही। ब-अल्फ़ाज़े दीगर इस चाटी में से जिस क़दर मक्खन निकलना था निकल चुका, अब इसे मज़ीद बिलौने का कोई फ़ायदा नज़र नहीं आ रहा।

“और लोग यह समझ बैठे कि उनसे झूठ बोला गया था”

وَوَظَنُوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوا

यहाँ وَظَنُوا का फ़ाइल मुतलक्का क्रौम के लोग हैं, यानि अब तक जो लोग ईमान नहीं लाए थे वह मज़ीद दिलेर हो गए। उन्होंने ये समझा कि ये सब-कुछ वाकई झूठ था। क्योंकि अगर सच होता तो इतने अरसे से हमें जो अज़ाब की धमकियाँ मिल रही थीं वह पूरी हो जातीं। हम ईमान भी नहीं लाए और अज़ाब भी नहीं आया तो इसका मतलब ये है कि नबुवत का दावा और अज़ाब के ये डरावे सब झूठ ही था।

“तो उनको हमारी मदद आ पहुँची”

جَاءَهُمْ نَصْرُنَا

यानि अम्बिया व रसूल की दावत और हक़ व बातिल की कशमकश के दौरान हमेशा ऐसा हुआ कि जब दोनों तरफ़ की सोच अपनी-अपनी आखरी हद तक पहुँचती (पैगम्बर समझते कि अब मज़ीद कोई शख्स ईमान नहीं लाएगा और मुन्किर समझते कि अब कोई अज़ाब वगैरह नहीं आएगा, ये सब ढोंग था) तो ऐन ऐसे मौक़े पर नबियों और रसूलों के पास हमारी तरफ़ से मदद पहुँच जाती।

“पस बचा लिया गया उनको जिनको हमने चाहा। और हमारा अज़ाब फेरा नहीं जा सकता मुजरिम क्रौम से।”

فَنَجَّيْنَا مَن نَّشَاءُ وَلَا يَرِيْدُ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ

الْمُجْرِمِينَ ۝

यानि अपने अंबिया व रसूल के लिये हमारी ये मदद मुन्करीने हक़ पर अज़ाब की सूरत में आती और इस अज़ाब से जिसे हम चाहते बचा लेते, लेकिन इस सिलसिले की अटल हकीक़त ये है कि ऐसे मौक़े पर मुजरिमीन पर हमारा अज़ाब आकर ही रहता है। उनकी तरफ़ से इसका रुख किसी तौर से मोड़ा नहीं जा सकता।

आयत 111

“यक़ीनन इन (साबक़ा अक़वाम) के वाक़िआत में होशमंद लोगों के लिये इब्रत है।”

لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِأُولِي الْأَلْبَابِ

“ये (कुरान) ऐसी बात नहीं जिसे ग़ढ़ लिया गया हो, बल्कि ये तो तस्दीक़ (करते हुए आया) है उसकी जो इससे पहले मौजूद है”

مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَكِن تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ

يَكْدِيهِ

यानि ये वाक़िआत तौरात में भी हैं और कुरान उन्ही वाक़िआत की तस्दीक़ कर रहा है। हज़रत युसुफ़ अलै. के क़िस्से के सिलसिले में मौलाना अबुल आला मौदूदी रह. ने बहुत उमदगी के साथ तौरात और कुरान का तक्राबली मुताअला पेश किया है, जिसका खुलासा ये है कि कुरान के हुस्ने बयान और इसके हकीमाना अंदाज़ का मैयार इस क़दर बुलंद है कि तौरात में इसका अशरे अशीर (दसवां हिस्सा) भी नहीं है। इसकी वज़ह यह है कि असल तौरात तो गुम हो गई थी। बाद में हाफ़ज़े की मदद से जो तहरीरें मुरत्तब की गईं, इनमें ज़ाहिर है वह मैयार तो पैदा नहीं हो सकता था जो अल्लाह तआला की तरफ़ से नाज़िलशुदा तौरात में था।

“और (इसमें) तफ़सील है हर चीज़ की और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिये जो (इस पर) ईमान लाते हैं।”

وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّلْقَوْمِ يُؤْمِنُونَ

۞

यानि वह इल्म जो इस दुनिया में इंसान के लिये ज़रूरी है और वह रहनुमाई जो दुनियावी ज़िंदगी में उसे दरकार है सब-कुछ इस कुरान में मौजूद है।

بَارِكُ اللّٰهُ لِي وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيمِ وَنَفَعْنِي وَايَاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ۔



सूरह रअद

तम्हीदी कलिमात

सूरतुल रअद से मक्की-मदनी सूरतों के ज़ेरे मुताअला ग्रुप के दूसरे ज़ेली ग्रुप का आगाज़ हो रहा है। इस ज़ेली ग्रुप में इस सूरत के अलावा सूरह इब्राहीम और सूरतुल हिज़्र शामिल हैं। यह तीनों सूरतें निस्बतन सबतन छोटी हैं, जबकि पहले ज़ेली ग्रुप में शामिल तीनों सूरतें इनके मुक़ाबले में तवील थीं। सूरतुल रअद और सूरह इब्राहीम का आपस में जोड़े का ताल्लुक है, इन दोनों के मज़ामीन में भी मुशाबहत है और तवालत (आकार) में भी यह तक़रीबन बराबर हैं, अलबत्ता सूरतुल हिज़्र मुनफ़रिद है। जहाँ तक सूरतुल रअद के मौज़ू का ताल्लुक है यह सूरत “अत्तज़कीर बिआला इल्लाह” पर मुशतमिल है। इसमें अक़वामे गुज़िशता का तज़क़िरा किसी रसूल या क्रौम का नाम लिए बग़ैर बिल्कुल सरसरी अंदाज़ में आया है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

आयात 1 से 7 तक

الْهٰذَا تِلْكَ الْكِتٰبُ الَّذِي اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنَ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ النَّاسَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ①
الَّذِي رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِاَجَلٍ مُّسَمًّى يُدَبِّرُ الْاَمْرَ
يُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُوْنَ ② وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِیَ وَاَنْهٰرًا وَمِنْ كُلِّ
الشَّجَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا رَوْجَیْنِ اِثْنَيْنِ یُغْشٰی الْبَلَّ التَّهَارُ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ③ وَفِی الْاَرْضِ قِطْعٌ
مُّتَجَوِّرٰتٌ وَجَنَّتْ مِنْ اَعْنَابٍ وَزَرْعٌ وَنَخِیْلٌ صِنْوَانٌ وَغَیْرُ صِنْوَانٍ یُسْقٰی بِمَآءٍ وَّاحِدٍ وَنُفِصِّلُ بَعْضَهَا عَلٰی بَعْضٍ
فِی الْاَكْلِ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ④ وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ اِذَا كُنَّا تُرَبَّآءًا لَّغٰی خَلْقٍ جَدِیْدٍ
اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ فِیْ اَعْنَاقِهِمْ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ⑤
وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّیِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثَلٰتُ وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰی ظُلْمِهِمْ
وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِیْدُ الْعِقَابِ ⑥ وَيَقُوْلُ الَّذِیْنَ كَفَرُوا لَوْلَا اُنْزِلَ عَلَیْهِ اٰیَةٌ مِنْ رَّبِّهِ اِنَّمَا اَنْتَ مُنْذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ

②

आयत 1

“अलिफ़, लाम, मीम, रा। ये (अल्लाह की) किताब की आतात हैं”

الْهٰذَا تِلْكَ الْكِتٰبُ

“और (ऐ नबी ﷺ!) जो चीज़ आप पर नाज़िल की गई है आपके रब की तरफ़ से वह हक़ है लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते (या ईमान लाने वाले नहीं हैं)।”

وَالَّذِي أَنْزَلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ①

आयत 2

“अल्लाह ही है जिसने उठाया है आसमानों को बगैर ऐसे सतूनों के जिन्हें तुम देखते हो”

اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا

इस कायनात के अन्दर जो बुलन्दियाँ हैं उन्हें सतूनों या किसी तबई सहारे की ज़रूरत नहीं है, बल्कि अल्लाह तआला की तरफ़ से बाहमी कशिश का एक अज़ीमुशशान निज़ाम वज़अ किया गया है, जिसके तहत तमाम कहकशाएँ, सितारे और सय्यारे अपने-अपने मक़ाम पर रह कर अपने-अपने मदार में घूम रहे हैं।

“फिर वह मुतमक्किन हुआ अर्श पर और उसने (मुसलसल) काम में लगा दिया सूरज और चाँद को।”

ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ وَسَحَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

“हर एक चल रहा है एक वक़्ते मुअय्यन के लिये।”

كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى

यानि इस कायनात की हर चीज़ मुतहर्रिक है, चल रही है, यहाँ पर सुकून और क़याम का कोई तस्सवुर नहीं। दूसरा अहम नुक्ता जो यहाँ बयान हुआ वह यह है कि इस कायनात की हर शय की उम्र या मोहलत मुक़रर है। हर सितारे, हर सय्यारे, हर निज़ामे शम्शी और हर कहकशा की मोहलते ज़िन्दगी मुक़रर व मुअय्यन है।

“वह तदबीर फ़रमाता है अपने अम्र की और तफ़सील बयान करता है अपनी आयात की, ताकि तुम अपने रब की मुलाक़ात का यक़ीन करो।”

يُذَكِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ بَلِقَاءَ رَبِّكُمْ

تُؤْتُونَ ②

आयत 3

“और वही है जिसने ज़मीन को फैलाया और बनाए उसमें लंगर (यानि पहाड़) और नदियाँ।”

وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا

अल्लाह तआला ने ज़मीन का तवाज़ुन बरक़रार रखने के लिये इस पर पहाड़ों के खूटे गाड दिये हैं और पानी की फ़राहमी के लिये दरिया और नदियाँ बहा दी हैं।

“और उसने हर तरह के फलों में जोड़े बनाए”

وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا رَوْحِينَ اثْنَيْنِ

जोड़े बनाने के इस क़ानून को अल्लाह तआला ने सूरतुल ज़ारयात आयत 49 में इस तरह बयान फ़रमाया है: {وَمِنْ كُلِّ ثَمَرٍ حَلْفَيْنِ.....} “और हर चीज़ के हमने जोड़े बनाए.....।” गोया यह ज़ौजैन (नर और मादा) की तख़लीक़ और इनका क़ायदा व क़ानून अल्लाह तआला ने इस आलमे ख़ल्क के अन्दर एक बाक़ायदा निज़ाम के तौर पर रखा है। यहाँ पर फलों के हवाले से इशारा है कि नबातात में भी नर और मादा का बाक़ायदा निज़ाम मौजूद है। कहीं नर और मादा फूल अलग-अलग होते हैं और कहीं एक ही फूल के अंदर एक हिस्सा नर और एक हिस्सा मादा होता है।

“वह ढाँप देता है दिन पर रात को।”

يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارُ

“यक्रीनन इसमें निशानियाँ हैं गौर व फ़िक्र करने वालों के लिये।”

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٥٠﴾

आयत 4

“और ज़मीन में क़तआत हैं एक-दूसरे से मुत्तसिल और बागात अंगूरों के और खेतियाँ और खज़ूर के दरख़्त, जड़ों से मिले हुए भी और अलग-अलग भी, इन्हें एक ही पानी से सैराब किया जाता है”

وَفِي الْأَرْضِ قِطْعٌ مُّتَجَوِّزَاتٌ وَجَنَّتْ مِنْ أَعْنَابٍ
وَزَرْعٌ وَنَخِيلٌ صِنْوَانٌ وَغَيْرُ صِنْوَانٍ يُسْقَى بِمَاءٍ
وَاحِدٍ

“(इसके बावजूद) हम किसी को किसी पर फज़ीलत दे देते हैं ज़ायक़े में।”

وَنُفِضْلُ بَعْضَهَا عَلَى بَعْضٍ فِي الْأُكْلِ

एक ही ज़मीन में एक ही जड़ से खज़ूर के दो दरख़्त उगते हैं, दोनों को एक ही पानी से सैराब किया जाता है, लेकिन दोनों के फलों का अपना-अपना ज़ायक़ा होता है।

“यक्रीनन इसमें निशानियाँ हैं अक़ल वालों के लिये।”

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾

यह अत्तज़कीर बिआला इल्लाह का अंदाज़ है, जिसमें बार-बार अल्लाह की कुदरतों, निशानियों और नेअमतों की तरफ़ तवज्जो दिलाई जाती है।

आयत 5

“और अगर तुम्हें तअज्जुब करना है तो क़ाबिले तअज्जुब है इनका ये क़ौल कि क्या जब हम (मर कर) मिट्टी हो जायेंगे तो क्या हम अज़ सरे नौ (दोबारा से) वजूद में आयेंगे?”

وَإِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءِذَا كُنَّا تُرَابًا ءَأَنَّا لَفِي
خَلْقٍ جَدِيدٍ

यानि कुफ़्फ़ार का मरने के बाद दोबारा जी उठने पर तअज्जुब करना, ब-ज़ाते खुद बाइसे तअज्जुब है। जिस अल्लाह ने पहली मर्तबा तुम लोगों को तख़लीक़ किया, पूरी कायनात और इसकी एक-एक चीज़ पुर हिकमत तरीक़े से बनाई उसके लिये यह तअज्जुब करना कि वह हमें दोबारा कैसे ज़िन्दा करेगा, ये सोच और ये नज़रिया अपनी जगह बहुत ही मज़हकाखेज़ (funny) और बाइसे तअज्जुब है।

“यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने रब का इन्कार किया।”

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ

दोबारा जी उठने के अक़ीदे से इनका ये इन्कार दरअसल अल्लाह के वजूद का इन्कार है। उसकी कुदरत और उसके अला कुल्ली शयइन क़दीर होने का इन्कार है।

“और यही वह लोग हैं जिनकी गर्दनो में तोक़ पड़े हुए हैं, और यही जहन्नमी हैं, उसमें रहेंगे हमेशा-हमेशा।”

وَأُولَٰئِكَ الْأَغْلَىٰ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٥٢﴾

आयत 6

“और यह लोग जल्दी मचा रहे हैं आपसे बुराई (अज़ाब) के लिये भलाई से पहले”

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ

कुफ़ारे मक्का हुज़ूर ﷺ से बड़ी ज़सरत और ढिटाई के साथ बार-बार मुतालबा करते थे कि ले आएँ हम पर वह अज़ाब जिसके बारे में आप हमें रोज़-रोज़ धमकियाँ देते हैं।

“हालाँकि इनसे पहले (बहुत सी) मिसालें गुज़र चुकी हैं।”

وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثَلَاتُ

अल्लाह के अज़ाब की बहुत सी इबरतनाक मिसालें गुज़िशता अक़वाम की तारीख़ की सूरत में इनके सामने हैं।

“और यक़ीनन आपका रब लोगों के हक़ में माफ़ करने वाला है इनके जुल्म के बावजूद।”

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِلنَّاسِ عَلَى ظُلْمِهِمْ

यह उसकी रहमत और शाने गफ़फ़ारी का मज़हर है कि इनके मुतालबे के बावजूद और इनके शिर्क व जुल्म में इस हद तक बढ़ जाने के बावजूद अज़ाब भेजने में ताख़ीर (देर) फ़रमा रहा है।

“और यक़ीनन आपका रब सख़्त सज़ा देने वाला भी है।”

وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ①

आयत 7

“और काफ़िर लोग कहते हैं कि क्यों नहीं उतारी गई इस शख्स पर कोई निशानी इसके रब की तरफ़ से?”

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ

मुशरिकीने मक्का बार-बार इसी दलील को दोहराते थे कि अगर आप रसूल हैं तो आपके रब की तरफ़ से आपको कोई हिस्सी मौज्ज़ा क्यों नहीं दिया गया?

“(ऐ नबी ﷺ) आप तो बस ख़बरदार कर देने वाले हैं और हर क़ौम के लिये एक हादी है।”

إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ②

जिस तरह हमने हर क़ौम के लिये पैग़म्बर भेजे हैं इसी तरह आपको भी हमने इन लोगों की हिदायत के लिये मबऊस किया है। आपके ज़िम्मे इनकी तब्शीर, तंज़ीर और तज़कीर है। आप ﷺ अपना यह फ़र्ज़ अदा करते रहें।

आयात 8 से 18 तक

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْبِلُ كُلُّ أَنْثَىٰ وَمَا تَغِيصُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُوا وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ ③ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ④ سَوَاءٌ مِنْكُمْ مَنْ أَسَرَ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ⑤ لَهُ مُعَقِّبَاتٌ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُ وَمَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَالٍ ⑥ هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ⑦ وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْحَالِ ⑧ لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطٍ كَفَيْهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ وَمَا دَعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ⑨ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمُوتِ

وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلْلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۝١٥ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ قُلْ أَفَاتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ أَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمَةُ وَالنُّورُ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝١٦ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَابِيًا وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِثْلُهُ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ۝١٧ لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝١٨

आयत 8

“अल्लाह खूब जानता है कि हर मादा क्या उठाए हुए है”

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْبِلُ كُلُّ أُنْثَىٰ

हर मादा चाहे वह इन्सान है या हैवान, उसके रहम (गर्भाशय) में जो कुछ है अल्लाह के इल्म में है।

“और (वह जानता है) जिस क्रदर रहम सिकुडते हैं या बढ़ते हैं।”

وَمَا تَغِيضُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ

जब हमल (गर्भ) ठहर जाता है तो रहम सिकुडता है और जब बच्चा बढ़ता है तो उसके बढ़ने से रहम फैलता है। एक-एक मादा के अन्दर होने वाली इस तरह की एक-एक तब्दीली को अल्लाह खूब जानता है।

“और हर चीज़ उसके यहाँ अंदाज़े के मुताबिक़ है।”

وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ ۝١٩

इस कायनात का पूरा निज़ाम एक तयशुदा हिकमते अमली के तहत चल रहा है जहाँ हर चीज़ की मिक़दार और हर काम के लिये क़ायदा और क़ानून मुकर्रर है।

आयत 9

“वह जानने वाला है ग़ैब और ज़ाहिर का, (वह) बहुत बड़ा, बहुत बुलंदी वाला है।”

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ۝٢٠

आयत 10

“(उसके इल्म में) बराबर हैं तुम में से जो बात को (दिल में) छुपायें और जो उसे (बुलंद आवाज़ से) ज़ाहिर करें और वह जो रात की तारीकी में छुपे हुए हों और जो दिन की रौशनी में चलते-फिरते हों।”

سَوَاءٌ مِنْكُمْ مَّنْ أَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ

مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ۝٢١

ग़ायब (absent) की सूरत हो या ज़ाहिर (appearance) का आलम, अल्लाह के इल्म के सामने सब बराबर हैं। हर चीज़ और उसकी हर कैफ़ियत हर आन उसके सामने हाज़िर व मौजूद है।

आयत 11

“उस (इंसान) के लिये बारी-बारी आने वाले (पहरेदार मुकर्रर) हैं, वह उसके सामने और उसके पीछे से उसकी हिफाज़त करते रहते हैं अल्लाह के हुक्म से।”

لَهُ مُعَقِّبَتٌ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ مِّنْ أَمْرِ اللَّهِ

यह मज़मून इससे पहले हम सूरतुल अनआम (आयत 61) में भी पढ़ चुके हैं: {وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً} कि अल्लाह तआला अपनी तरफ़ से तुम्हारे ऊपर मुहाफ़िज़ भेजता है। अल्लाह के मुकर्रर करदा ये फ़रिश्ते अल्लाह की मशीयत के मुताबिक़ हर वक़्त इंसान की हिफाज़त करते रहते हैं, हत्ता की उसकी मौत का वक़्त आ पहुँचता है।

“यक़ीनन अल्लाह किसी क़ौम की हालात नहीं बदलता, जब तक कि वह खुद नहीं बदल देते उस (कैफ़ियत) को जो उनके दिलों में है।”

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ

आप अपनी बातिनी कैफ़ियत बदलेंगे, इसके लिये मेहनत करेंगे तो अल्लाह की तरफ़ से भी आपके मामले में तब्दीली कर दी जाएगी। मौलाना ज़फ़र अली खान ने इस आयत की तर्जुमानी इन ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ में की है:

खुदा ने आज तक उस क़ौम की हालत नहीं बदली
ना हो जिसको ख्याल आप अपनी हालत के बदलने का

“और जब अल्लाह किसी क़ौम के लिये किसी बुरी शय (अज़ाब) का फ़ैसला कर लेता है तो फिर उसको लौटाने वाला कोई नहीं है, और नहीं है उनके लिये अल्लाह के सिवा कोई मददगार।”

وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُونِهِ مِّنْ وَّالٍ ۝۱۱

आयत 12

“वही है जो तुम्हें दिखाता है बिजली (की चमक) ख़ौफ़ से भी और उम्मीद से भी, और वह उठाता है बड़े बोझल बादल।”

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۝۱۲

गहरे बादलों की गरज-चमक में ख़ौफ़ के साए भी होते हैं और उम्मीद की रौशनी भी कि शायद इस बारिश से फ़सलें लहलहा उठें और हमारी क़हतसाली खुशहाली में बदल जाए। यानि ऐसी सूरतेहाल में ख़ौफ़ व रजाअ (आशा) की कैफ़ियत एक साथ दिलों पर तारी होती है।

आयत 13

“और तस्बीह करती है कड़क उसकी हम्द के साथ और फ़रिश्ते (भी) उसके ख़ौफ़ से”

وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ

ये गरज और कड़क की आवाज़ दरअसल अल्लाह की तस्बीह व तहमीद का एक अंदाज़ है।

“और वह भेजता है कड़कदार बिजलियाँ, फिर वह गिरा देता है उन्हें जिस पर चाहता है”

وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ

“और वह (उस वक़्त) अल्लाह के बारे में झगड़ रहे होते हैं। और उसकी पकड़ बहुत सख़्त है।”

وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْحَالِ ۝۱۳

आयत 14

“उसी का पुकारना हक़ है।”

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ

यानि अल्लाह ही एक हस्ती है जिसको पुकारना, जिससे दुआ करना बरहक़ है, क्योंकि एक वही है जो तुम्हारी पुकार को सुनता है, तुम्हारी हाजत को जानता है, तुम्हारी हाजत रवाई करने पर क़ादिर है, इसलिये उसको पुकारना हक़ भी है और सूदमंद (फ़ायदेमंद) भी। उसे छोड़ कर किसी और को पुकारोगे, चाहे वह कोई फ़रिश्ता हो, वली हो या नबी, कोई तुम्हारी पुकार और फ़रियाद को नहीं सुनेगा, जैसा कि अगली आयत में फ़रमाया गया है, तुम्हारी हर ऐसी पुकार अकारत जाएगी। इस फ़िक़रे का दूसरा मफ़हूम यह भी है कि “उसी की दावत हक़ है।” यानि जिस चीज़ की दावत वह दे रहा है, जिस रास्ते की तरफ़ वह बुला रहा है वही हक़ है।

“और जिनको ये लोग पुकार रहे हैं उसके सिवा, वह इनकी दुआ को किसी तरह भी कुबूल नहीं करते”

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ بِشَيْءٍ

वह इनकी कोई भी दादरसी नहीं कर सकते।

“मगर जैसे कोई फैला दे अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ कि वह उसके मुँह तक पहुँच जाए, हालाँकि वह (उसके मुँह) तक पहुँचने वाला नहीं है।”

إِلَّا كَبَاسِطٍ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ

जैसे अपने हाथ फैलाकर पानी को अपने मुँह की तरफ़ बुलाना एक कारे अबस (व्यर्थ काम) है, इसी तरह किसी ग़ैरुल्लाह को पुकारना, उसके सामने गिड़गिड़ाना और उससे दादरसी की उम्मीद रखना भी कारे अबस है।

“और काफ़िरों की दुआ तो बिल्कुल बेकार है।”

وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝

ये लोग जो अल्लाह के अलावा किसी और को पुकारते हैं इनकी ये पुकार ला-हासिल है, एक तीर बेहदफ़ (without aim) और सदा बे-सहरा है।

आयत 15

“अल्लाह ही को सज्दा करता है जो कोई भी आसमानों में और ज़मीन में है, आमादगी के साथ भी और मजबूरन भी, और उनके साए भी सुबह व शाम (उसी को सज्दा करते हैं)।”

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا
وَكَرْهًا وَظِلُّهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاَصَالِ ۝

सुबह के वक़्त जब सूरज निकलता है और साए ज़मीन पर लम्बे होकर पड़े होते हैं वह इस हालत में अल्लाह को सज्दा कर रहे होते हैं और इसी तरह शाम को गुरुबे आफ़ताब के वक़्त भी ये साए हालते सज्दा में होते हैं।

आयत 16

“(इनसे) पूछिए कौन है आसमानों और ज़मीन का मालिक? कहिये अल्लाह ही है।”

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قُلِ اللّٰهُ

“कहिये क्या तुमने उसको छोड़ कर ऐसे हिमायती बना लिये हैं जो खुद अपने लिये भी किसी नफ़ा व नुक़सान का इख़्तियार नहीं रखते?”

قُلْ أَفَاتُخَذُكُمْ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ
لِأَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا

“(इनसे) पूछिये क्या बराबर है अँधा और देखने वाला? या क्या बराबर हैं अँधेरे और रौशनी?”

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي
الظُّلُمَةُ وَالنُّورُ

“क्या इन्होंने अल्लाह के ऐसे शरीक ठहरा लिये हैं जिन्होंने तख़लीक़ की है उसकी तख़लीक़ की तरह, तो ये तख़लीक़ उन पर मुशतबह (संदिग्ध) हो गई है?”

أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهُ الْخَلْقُ
عَلَيْهِمْ

यानि इन मुशरिकीन का मामला तो यूँ लगता है जैसे उनके मअबूदों ने भी कुछ मख़लूक पैदा कर रखी है और कुछ मख़लूक अल्लाह की है। अब वह बेचारे इस शशो-पंज में पड़े हुए हैं कि कौनसी मख़लूक को अल्लाह से मंसूब करें और किस-किस को अपने इन मअबूदों की मख़लूक मानें! जब ऐसा नहीं है और वह खुद तस्लीम करते हैं कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ भी है इसका खालिक और मालिक अल्लाह है तो फिर अल्लाह को अकेला और वाहिद मअबूद मानने में वह क्यों शकूक व शुब्हात का शिकार हो रहे हैं?

“कह दीजिये कि अल्लाह ही खालिक है हर शय का, और वह है यक्ता (The Only), सब पर हावी।”

قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ⑪

आयत 17

“वह आसमान से पानी बरसाता है, फिर तमाम नदियाँ बहने लगती हैं अपनी-अपनी वुसअत के मुताबिक़”

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا

कुरान चूँकि हिजाज़ में नाज़िल हो रहा था इसलिये इसमें ज़्यादातर मिसालें भी उसी सरज़मीन से दी गई हैं। इस मिसाल में भी इलाक़ा हिजाज़ के पहाड़ी सिलसिलों और वादियों का ज़िक़्र है, कि जब बारिश होती है तो हर वादी में उसकी वुसअत (capacity) के मुताबिक़ सैलाबी कैफ़ियत पैदा हो जाती है। किसी वादी का catchment area ज़्यादा है तो वहाँ ज़्यादा ज़ोरदार सैलाब आ जाता है जिसका कम है वहाँ थोड़ा सैलाब आ जाता है।

“फिर उठा लाता है सैलाब उभरते झाग को।”

فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَابِيًا

पानी जब ज़ोर से बहता है तो उसके ऊपर झाग सा बन जाता है। लेकिन इस झाग की कोई हकीक़त और वक़अत नहीं होती।

“और जिन (धातुओं) को ये लोग आग पर तपाते हैं ज़ेवर या दूसरी चीज़ें बनाने के लिये उन पर भी इसी तरह का झाग उभरता है।”

وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ
زَبَدٌ مِثْلُهُ

“इसी तरह अल्लाह हक़ व बातिल को टकराता है।”

كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ

इसका दूसरा तर्जुमा यूँ होगा: “इसी तरह अल्लाह हक़ व बातिल की मिसाल बयान करता है।”

“तो जो झाग है वह खुश्क हो कर ज़ाएल हो जाता है।”

فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً

झाग की कोई हकीकत और हैसियत नहीं होती, असल नताइज के ऐतबार से इसका होना या ना होना गोया बराबर है।

“और जो चीज़ लोगों के लिये मुफ़ीद होती है वह ठहर जाती है ज़मीन में।”

وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ

सैलाब का पानी ज़मीन में ज़ब्व होकर फ़ायदेमंद साबित होता है जबकि झाग ज़ाया हो जाता है, इसी तरह पिघली हुई धात के ऊपर फूला हुआ झाग और मैल-कुचैल फ़ुज़ूल चीज़ है, असल ख़ालिस धात उस झाग के नीचे कठाली की तह में मौजूद होती है जिससे ज़ेवर या कोई दूसरी कीमती चीज़ बनाई जाती है।

“इसी तरह अल्लाह मिसालें बयान करता है।”

كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ۝

ये आयत कार्ल मार्क्स के dialectical materialism के फ़लसफ़े के हवाले से बहुत अहम है। इस फ़लसफ़े का जितना हिस्सा दुरुस्त है वह इस आयत में मौजूद है। दौरे जदीद के ये जितने भी नज़रिये (theories) हैं इनमें से हर एक में कुछ ना कुछ सच्चाई मौजूद है। डारविन का नज़रिया-ए-इरतकाअ (Evolution Theory) हो या फ़्राइड और मार्क्स के नज़रियात, इनमें से कोई भी सौ फ़ीसद गलत नहीं है। बल्कि हकीकत ये है कि इन नज़रियात में गलत और दुरुस्त ख़्यालात गडमड हैं। जहाँ तक मार्क्स के नज़रिये जदलियाती मादियत (dialectical) materialism का ताल्लुक है इसके मुताबिक किसी मआशरे में एक ख़्याल या नज़रिया जन्म लेता है जिसको thesis कहा जाता है। इसके रद्देअमल के तौर पर एंटी थेसिस (antithesis) वजूद में आता है। फिर ये थेसिस और एंटी थेसिस टकराते हैं और इनके टकराने से एक नई शकल पैदा होती है जिसे सिंथेसिस (synthesis) कहा जाता है। ये अगरचे इस नज़रिये की बेहतर शकल होती है मगर ये भी अपनी जगह कामिल नहीं होती, इसके अंदर भी नक्काइस (faults) मौजूद होते हैं। चुनाँचे इसी सिंथेसिस की कोख से एक और एंटी थेसिस जन्म लेता है। इनका फिर आपस में इसी तरह टकराव होता है और फिर एक नया सिंथेसिस वजूद में आता है। ये अमल (process) इसी तरह बतदरीज (step by step) आगे बढ़ता चला जाता है। इस तसादुम (टकराव) में जो चीज़ फ़ज़ूल, गलत और बेकार होती है वह ज़ाया होती रहती है, मगर जो इल्म और ख़्याल मआशरे और नस्ले इंसानी के लिये फ़ायदेमंद होता है वह किसी ना किस शकल में मौजूद रहता है।

दौरे जदीद के बेशतर नज़रिये (theories) ऐसे लोगों की तख़वीक हैं जिनके इल्म और सोच का इन्हसार (depend) कुल्ली तौर पर मादे (material) पर था। ये लोग रूह और इसकी हकीकत से बिल्कुल नाबलद थे। बुनियादी तौर पर यही वजह थी कि इन लोगों के अख़ज़करदा नताइज अक्सर व बेशतर गलत और गुमराहकुन थे। बहरहाल इस सारे अमल (process) में गलत और बातिल ख़्यालात व मफ़रज़ात (मान्यताएँ) खुद-ब-खुद छटते रहते हैं और नस्ले इंसानी के लिये मुफ़ीद उलूम (useful science) की ततहीर (purification) होती रहती है। सूरतुल अम्बिया में ये हकीकत इस तरह वाज़ेह की गई है: {يُلْ تَقْرَفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ} (आयत 18) “हम दे मारते हैं हक़ को बातिल पर, तो वह बातिल का भेजा निकाल देता है, फिर वह (बातिल) गायब हो जाता है।” हक़ व बातिल और खैर व शर की इस कशमकश के ज़रिये से गोया नस्ले इंसानी तदरीजन तमद्दुन (civilization) और इरतकाअ के मराहिल तय करते हुए रफ़ता-रफ़ता बेहतरी की तरफ़ आ रही है।

अल्लामा इक़बाल के मुताबिक नस्ले इंसानी के लिये कामिल बेहतरी या हतमी कामयाबी अल्लाह तआला के उस पैग़ाम की तामील में पोशीदा है जिसका कामिल अमली नमूना इस दुनिया में पन्द्रह सौ साल पहले नबी आखिरुज़्ज़मान صلی اللہ علیہ وسلم ने पेश किया था। इरतकाअ-ए-फ़िक्रे इंसानी के सफ़र के नाम पर इंसानी तमद्दुन के छोटे-बड़े तमाम क़ाफ़िले शऊरी या ग़ैरशऊरी तौर पर इसी मीनारे नूर (light house) की तरफ़ रवां-दवां हैं। अगर किसी माहौल में रौशनी की कोई किरण उजाला बिखेरती नज़र आती है तो वह इसी मिन्बा-ए-नूर की मरहूने मन्नत है। और अगर किसी माहौल के हिस्से की तारीकियाँ अभी तक गहरी हैं तो जान लीजिये कि वह अपनी इस फ़ितरी और हतमी मंज़िल से हनूज़ दूर है। इस सिलसिले में इक़बाल के अपने अल्फ़ाज़ मुलाहिज़ा हों:

हर कज़ा बीनी जहाने रंगों बू,

ज़ान्का-ए-अज़ खाकश बरवीद आरज़ू
या ज़नूरे मुस्तफ़ा अव रा बहास्त,
या हनूज़ अंदर तलाशे मुस्तफ़ा अस्त

आयत 18

“जिन लोगों ने अपने रब की दावत पर लब्बैक कहा उनके लिये भलाई है।”

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ

“और जिन्होंने उसकी दावत को कुबूल नहीं किया, अगर उनके पास हो जो कुछ है ज़मीन में सबका सब और इसके साथ उतना ही और भी तो वह (ये सब कुछ) ज़रूर बदले में दे डालें।”

وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ

جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَا فِتْنًا لَهُ

“यही लोग हैं जिनके लिये बुरा हिसाब है और इनका ठिकाना जहन्नम है, और वह बहुत बुरा ठिकाना है।”

أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ

الْمِهَادُ ۝۱۸

यानि इनके हिसाब का जो नतीजा निकलने वाला है वह इनके हक में बहुत बुरा होगा।

आयात 19 से 26 तक

أَمَّنْ يَعْلَمُ أَمَّا أَنْزَلَ إِلَيْكَ مِنَ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۝۱۹ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ ۝۲۰
وَالَّذِينَ يُوَفُّونَ بِعَهْدِ اللَّهِ
وَلَا يَنْقُضُونَ الْعَيْثَ ۝۲۱ وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ۝۲۲
وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ
السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۝۲۳ جَنَّتٌ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ
وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ۝۲۴ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝۲۵ وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ
عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ
سُوءُ الدَّارِ ۝۲۶ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۝۲۷ وَفَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا
مَتَاعٌ ۝۲۸

आयत 19

“(ऐ नबी ﷺ!) क्या वह शख्स जो जानता है कि जो कुछ आप पर आपके रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया वह हक़ है, भला उस जैसा हो सकता है जो अँधा है?”

أَمَّنْ يَعْلَمُ أَمَّا أَنْزَلَ إِلَيْكَ مِنَ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ

أَعْمَىٰ

“यक़ीनन नसीहत तो अक़ल वाले ही हासिल करते हैं।”

إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰؤِ الْأَلْبَابِ ۝۱۹

आयत 20

“वह लोग जो अल्लाह के (साथ किये गए) अहद को पूरा करते हैं और क़ौल व क़रार को तोड़ते नहीं हैं।”

الَّذِينَ يُوفُونَ بَعْدَ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ ۝

क़बूल अज़ सूरतुल बक्ररह की आयत 177 में भी हम इनसे मिलते-जुलते ये अल्फ़ाज़ पढ़ते आए हैं: {وَالَّذِينَ يُوفُونَ بَعْدَ اللَّهِ إِذَا عَاهَدُوا} अल्लाह के साथ किये गए मुआहिदों में से एक तो वह अहदे अलस्त है (ब-हवाला अल आराफ़ 172) जो हमने आलमे अरवाह में अल्लाह के साथ किया है, फिर हर बंदा-ए-मोमिन का मीसाक़ शरीअत है कि मैं अल्लाह के तमाम अहकामात की तामील करूंगा। फिर अल्लाह का मोमिन के साथ किया गया वह सौदा भी एक अहद है जिसका ज़िक्र सूरतुतौबा आयत 111 में है और जिसके मुताबिक़ अल्लाह ने मोमिनीन के जान व माल जन्नत के बदले ख़रीद लिये हैं। आयत ज़ेरे नज़र में ये उन खुशकिस्मत लोगों का ज़िक्र है जो अल्लाह के साथ किये गए तमाम अहद दरजा-ब-दरजा पूरे करते हैं।

आयत 21

“और जो लोग जोड़ते हैं उसको जिसको जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है, और जो डरते रहते हैं अपने रब से और अंदेशा रखते हैं बुरे हिसाब का।”

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ۝

वह लोग क़राबत के रिश्तों को जोड़ते हैं, यानि सिला रहमी करते हैं और हिसाबे आख़िरत के नताइज की बुराई से हमेशा ख़ौफ़ज़दा रहते हैं कि उस दिन हिसाब के नाताइज़ मनफ़ी (negative) होने की सूरत में कहीं हमारी शामत ना आ जाए।

आयत 22

“और वह लोग जिन्होंने सब्र किया अपने रब की रज़ा जोई के लिये, और नमाज़ कायम की, और खर्च किया उसमें से जो हमने उन्हें दिया था पोशीदा तौर पर भी और ऐलानिया भी।”

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً

“और वह भलाई से बुराई को दूर करते हैं, यही लोग हैं जिनके लिये दारे आख़िरत की कामयाबी है।”

وَيَذَرُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى
الدَّارِ ۝

वह बुराई का जवाब बुराई से नहीं देते, बल्कि कोई शख्स अगर उनके साथ बुराई करता है तो वह जवाबन उसके साथ भलाई से पेश आते हैं ताकि उसके अन्दर अगर नेकी का जज़्बा मौजूद है तो वह जाग जाए। (اللهم ربنا اجعلنا منهم)

आयत 23

“(आख़िरत का घर) वह बागात हैं हमेशा रहने के, जिनमें वह दाख़िल होंगे और जो भी सालेह होंगे उनके आबा, उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से, और हर दरवाज़े से जन्नत के फ़रिश्ते उनके सामने हाज़िर होंगे।”

جَنَّاتٍ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ
وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ
مِّنْ كُلِّ بَابٍ ۝

आयत 24

“(और कहेंगे) सलामती हो आप पर बसबब उसके जो आप लोगों ने सब्र किया, तो क्या ही अच्छा है यह आखिरत का घर!”

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٣﴾

जन्नत में अपने आबा व अजदाद और अहलो अयाल में से सालेह लोगों की मअयत (साथ) गोया अल्लाह की तरफ़ से अपने नेक बन्दों के लिये एक ऐज़ाज़ होगा, और इसके लिये अगर ज़रूरत हुई तो उनके उन रिश्तेदारों के दरजात भी बढ़ा दिये जायेंगे। मगर यहाँ यह नुक्ता बहुत अहम है कि अहले जन्नत के जो क़राबतदार कुफ़्कार और मुशरिकीन थे, उनके लिये रिआयत की कोई गुंजाइश नहीं होगी, बल्कि इस रिआयत से सिर्फ़ वह अहले ईमान मुस्तीज़ होंगे जो “सालेहीन” की baseline पर पहुँच चुके होंगे। यानि सूरतुन्निसा आयत 69 में जो मदारज (दर्जे) बयान हुए हैं उनके ऐतबार से जो मुसलमान कमसे कम दर्जे की जन्नत में दाख़ले का मुस्तिहक़ हो चुका होगा, उसके मदारज (दर्जे) उसके किसी क़राबतदार की वजह से बढ़ा दिये जायेंगे जो जन्नत में आला मरातिब पर फ़ाइज़ होगा। मसलन एक शख्स को जन्नत में बहुत आला मरतबा अता हुआ है, अब उसका बाप एक सालेह मुसलमान की baseline पर पहुँच कर जन्नत में दाख़िल होने का मुस्तिहक़ तो हो चुका है मगर जन्नत में उसका दर्जा बहुत नीचे है, तो ऐसे शख्स के मरातिब बढ़ा कर उसे अपने बेटे के साथ आला दर्जे की जन्नत में पहुँचा दिया जाएगा।

आयत 25

“और (इसके बरअक्स) वह लोग जो तोड़ते हैं अल्लाह के अहद को उसको मज़बूती से बाँधने के बाद और काटते हैं उन (रिश्तों) को जिनको जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया है और ज़मीन में फ़साद मचाते हैं।”

وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ

क़बल अज़ सूरतुल बकरह आयत 27 में भी हम बैयन ही ये अल्फ़ाज़ पढ़ आए हैं: {وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ} वहाँ इस हवाले से कुछ वज़ाहत भी हो चुकी है।

“यही लोग हैं जिनके लिये लानत होगी और इनके लिये बुरा घर (जहन्नम) है।”

أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٢٥﴾

आयत 26

“अल्लाह जिसके लिये चाहता है रिज़क़ कुशादा कर देता है और जिसे चाहता है नपा-तुला रिज़क़ देता है।”

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ

“और यह लोग मगन है दुनिया की ज़िन्दगी पर, हालाँकि दुनिया की ज़िन्दगी आखिरत के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं है सिवाय थोड़े से फ़ायदे के।”

وَفَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ﴿٢٦﴾

जो लोग उखरवी ज़िन्दगी के ईनामात के उम्मीदवार नहीं हैं इनकी जुहद व कोशिश की जौलानगाह यही दुनियावी ज़िन्दगी है। उनकी तमामतर सलाहियतें इसी ज़िन्दगी की असाइशों के हसूल में सर्फ़ होती हैं और वह इसकी ज़ेब व ज़ीनत पर फ़रिफ़ता और इसमें पूरी तरह मगन हो जाते हैं। वह अपने इस तर्ज़े अमल पर बहुत खुश और मुतमईन होते हैं, हालाँकि दुनिया की ज़िन्दगी आखिरत के मुक़ाबले में एक मताए क़लील व हक़ीर के सिवा कुछ भी नहीं।

आयत 27 से 31 तक

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَىٰ إِلَهِهِ مَنْ آتَابَ ۚ ۝٢٥ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝٢٦ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحَسُنَ مَا فِي كَذَلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ الذِّكْرَ أَوْ حِينَآ إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَنِ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابِ ۝٢٧ وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كَلِمَةٌ بِهِ الْمُؤْتَىٰ بَلْ لِلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا أَفَلَمْ يَأْتِئِسَ الَّذِينَ آمَنُوا أَن لَّو يَشَاءُ اللَّهُ لَهْدَىٰ النَّاسَ جَمِيعًا وَلَا يَزَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُم بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِّن دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْوَعْدَ ۝٢٨

आयत 27

“और कहते हैं यह काफिर लोग कि क्यों नहीं उतारी गई इस शख्स पर कोई निशानी इसके रब की तरफ से?”

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ

मुशरिकीने मक्का की हठधर्मी मुलाहिजा हो, बार-बार उनकी इसी बात और इसी दलील का जिक्र हो रहा है कि मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ पर कोई हिस्सी मौज्जा क्यों नहीं उतारा गया?

“आप कह दीजिये कि अल्लाह जिसको चाहता है गुमराह करता है और अपनी तरफ हिदायत उसी को देता है जो खुद (उसकी तरफ) रुजूअ करे।”

قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَىٰ إِلَهِهِ مَنْ آتَابَ

۝٢٥

जो लोग खुद हिदायत के तालिब होते हैं और अल्लाह तआला की तरफ मुतवज्जो होते हैं, वह उन्हें नेअमते हिदायत से सरफराज फरमाता है।

आयत 28

“वह लोग जो ईमान लाए और उनके दिल अल्लाह के जिक्र से मुतमईन होते हैं।”

الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ

दिल और रूह के लिये तस्कीन (सुकून) का सबसे बड़ा जरिया अल्लाह का जिक्र है इसलिये कि इंसान की रूह उसके दिल की मकीन (दिल में रहती) है और रूह का ताल्लुक बराहेरास्त अल्लाह तआला की ज्ञात के साथ है। जैसा कि सूरह बनी इसराइल में फरमाया गया: {وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي} (आयत 85) “और (ऐ नबी ﷺ) यह लोग आपसे रूह के बारे में सवाल करते हैं, आप फरमाएँ कि रूह मेरे परवरदिगार के अम्र (हुक्म) में से है।” लिहाजा जिस तरह इंसानी जिस्म की हयात का मिम्बा (source) ये ज़मीन है और जिस्म की नशो नुमा (growth) और तक्रवियत (ताक़त) का सारा सामान ज़मीन ही से मुहैया होता है इसी तरह इंसानी रूह का मिम्बा ज्ञाते बारी तआला है और इसकी नशो नुमा और तक्रवियत के लिये गिज़ा का सामान भी वहीं से आता है। चुनाँचे रूह अमरुल्लाह (अल्लाह का हुक्म) है और इसकी गिज़ा ज़िक्रुल्लाह और कलामुल्लाह है।

“आगाह हो जाओ! अल्लाह के जिक्र के साथ ही दिल मुतमईन होते हैं।”

أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝٢٦

दुनियावी मालो-मता और सामाने ऐशो-आसाइश की बहुतात से नफ्स और जिस्म की तस्कीन का सामान तो हो सकता है, यह चीज़ें दिल के सुकून और इत्मिनान का बाइस नहीं बन सकतीं। दिल को यह दौलत नसीब होगी तो अल्लाह के ज़िक्र से होगी।

आयत 29

“जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये उनके लिये सुबारकबाद है और लौटने का बहुत अच्छा मुक़ाम है।”

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ
مَآبٍ ۝۲۹

आयत 30

“(ऐ नबी ﷺ) इसी तरह हमने आपको भेजा है एक ऐसी उम्मत में जिससे पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं ताकि आप तिलावत करके सुनाएँ इन लोगों को वह (किताब) जो हमने वही की है आपकी तरफ़ दर हालाँकि यह लोग रहमान का इन्कार कर रहे हैं।”

كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ
لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ الذِّكْرَ أَوْ حَيِّنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ
بِالرَّحْمَنِ

अगरचे अल्लाह तआला का नाम “अर्रहमान” अरब में पहले से मुतारफ़ था मगर मुशरिकीने मक्का “अल्लाह” ही को जानते और मानते थे, इसलिये वह इस नाम से बिदकते थे और अजीब अंदाज़ में पूछते थे कि ये रहमान कौन है? (अल फुरक़ान 60)

“कह दीजिये कि वह मेरा रब है, उसके सिवा और कोई मअबूद नहीं।”

قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ

“उसी पर मैंने भरोसा किया है और उसी की तरफ़ मेरा लौटना है।”

عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابٍ ۝۳०

आयत 31

“और अगर होता कोई ऐसा कुरान जिसके ज़रिये से पहाड़ चल पड़ते, या ज़मीन के टुकड़े-टुकड़े हो जाते या कलाम करते उसके ज़रिये मुर्दे (तब भी ये ईमान लाने वाले नहीं थे)।”

وَلَوْ أَن قُرْآنًا سِيرَت بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِعَتْ بِهِ
الْأَرْضُ أَوْ كَلِمَةٌ بِهِ الْمَوْتُ

यहाँ फिर हिस्सी मौज़्ज़ों के बारे में मुशरिकीन के मुतालबे का जवाब दिया जा रहा है। सूरतुल अनआम में ये मज़मून तफ़सील से गुज़र चुका है। यहाँ फ़रमाया जा रहा है कि अगर हमने कोई ऐसा कुरान उतारा होता जिसकी तासीर से तरह-तरह के हिस्सी मौज़्ज़ात का ज़हूर होता तब भी ये ईमान लाने वाले नहीं थे। ये कुरान हर उस शख्स के लिये सरापा मौज़्ज़ा है जो वाकई हिदायत का ख्वाहिशमंद है। ये तालिबाने हक़ के दिलों को गुदाज़ करता है, उनको रूह को ताज़गी बख़्शता है, उनके ला-शऊर के अन्दर ख्वाबेदा ईमानी हक़ाइक़ को जगाता है। ऐसे लोग अपनी हिदायत का तमाम सामान इस कुरान के अन्दर मौजूद पाते हैं।

“बल्कि इख्तियार तो कुल का कुल अल्लाह के हाथ में है। क्या अहले ईमान इस पर सुतमईन नहीं हो जाते कि अगर अल्लाह चाहता तो तमाम इंसानों को हिदायत दे देता?”

بَلْ لِلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ۚ فَلَمْ يَأْيِسِ الَّذِينَ آمَنُوا أَن
لَّو يَشَاءَ اللَّهُ لَهْدَى النَّاسَ جَمِيعًا

अहले ईमान को तो ये यक्रीन है ना कि अगर अल्लाह चाहता तो दुनिया के तमाम इंसानों को हिदायत दे सकता था, और अगर उसने ऐसा नहीं किया तो ये ज़रूर उसी की मशीयत है। लिहाज़ा इस यक्रीन से उनको तो दिल जमई और इत्मिनान हासिल हो जाना चाहिये।

“और जो काफ़िर हैं उनको बराबर पहुँचती रहेगी उनके आमाल के सबब कोई ना कोई आफ़त, या उनके घरों के करीब उतरती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ जाए।”

وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُمْ بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتَّى يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ

“यक्रीनन अल्लाह अपने वादे की ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं करता।”

إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْبِعَادَ ۝

इन लोगों के करतूतों की पादाश में इन पर कोई ना कोई आफ़त और मुसीबत नाज़िल होती रहेगी। वह मुसलसल खौफ़ की कैफ़ियत में मुब्तला रहेंगे, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा पूरा हो जाए।

आयात 32 से 37 तक

وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَمْلَيْتُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝^{٣٢} أَفَمَن هُوَ قَائِمٌ عَلَى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ قُلُوبُهُمْ أَمْ تَنْبِئُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ أَمْ بِيْظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ بَلْ زَيْنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوا عَنِ السَّبِيلِ وَمَن يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن هَادٍ ۝^{٣٣} لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ وَمَا لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِن وَّاقٍ ۝^{٣٤} مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ أُكْلُهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ۝^{٣٥} وَالَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابُ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَن يُنْكِرُ بَعْضَهُ قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ إِلَيْهِ أَدْعُوا وَإِلَيْهِ مَابِ ۝^{٣٦} وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِن وَّاقٍ وَلَا وَاقٍ ۝^{٣٧}

۝

आयत 32

“और (ऐ नबी ﷺ) आपसे पहले भी रसूलों का मज़ाक उड़ाया गया, तो मैंने ढील दी (कुछ अरसे के लिये) काफ़िरों को, फिर मैंने उनको पकड़ लिया।”

وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَمْلَيْتُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ

“तो कैसा रहा मेरा अज़ाब।”

فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝

ज़रा तस्सवुर करें क्रौमे नूह, क्रौमे हूद, क्रौमे सालेह, क्रौमे लूत, क्रौमे शोएब और आले फ़िरऔन के अंजाम का और फिर सोंचे कि इन नाफ़रमान क्रौमों की जब गिरफ़्त हुई तो वह किस क्रदर इबरतनाक थी।

आयत 33

“तो क्या वह हस्ती जो हर जान से मुहासबा करने वाली है जो उसने कमाई की है (औरों की तरह हो सकती है?)”

أَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ

अल्लाह तआला हर आन हर शख्स के साथ मौजूद है और उसकी एक-एक हरकत और उसके एक-एक अमल पर नज़र रखता है। क्या ऐसी कुदरत किसी और को हासिल है?

“और इन्होंने अल्लाह के शरीक बना लिये हैं।”

وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ

इन्होंने ऐसी बसीर, खबीर और अला कुल्ली शयइन क़दीर हस्ती के मुकाबले में कुछ मअबूद गढ़ लिये हैं, जिनकी कोई हैसियत नहीं।

“आप कहिये! ज़रा इनके नाम तो बताओ! क्या तुम अल्लाह को जताना चाहते हो वह शय जो वह नहीं जानता ज़मीन में?”

قُلْ سَمُّوهُمْ أَمْ تُنَبِّئُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ

यानि अल्लाह जो इस क़दर अलीम और बसीर हस्ती है कि अपने हर बन्दे के हर खयाल और हर फ़अल (काम) से वाकिफ़ है, तो तुम लोगों ने जो भी मअबूद बनाए हैं क्या उनके पास अल्लाह से ज़्यादा इल्म है? क्या तुम अल्लाह को एक नई बात की ख़बर दे रहे हो जिससे वह ना-वाकिफ़ है?

“या तुम सिर्फ़ सतही सी बात करते हो?”

أَمْ بَظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ

यानि य़ूही जो मुँह में आता है तुम लोग कह डालते हो और इन शरीकों के बारे में तुम्हारे अपने दावे खोखले हैं। तुम्हारे इन दावों की बुनियादों में यक़ीन की पुख्तगी नहीं है। इनके बारे में तुम्हारी सारी बातें सतही नौइयत की हैं, अक़ली और मन्तक़ी (logical) तौर पर तुम खुद भी उनके कायल नहीं हो।

“बल्कि इन काफ़िरों के लिये इनकी मक्कारियाँ मुज़य्यन कर दी गई हैं, और वह रोक दिये गए हैं (सीधे) रास्ते से।”

بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوا عَنِ

السَّبِيلِ

“और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तो उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं है।”

وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝

अब गोया इनके दिल उलट दिये गए हैं, इनके दिलों पर मुहर कर दी गई है और इनके आमाल को देखते हुए अल्लाह ने इनकी गुमराही के बारे में आख़री फ़ैसला दे दिया है। अब इनको कोई राहेरास्त पर नहीं ला सकता।

आयत 34

“इनके लिये अज़ाब है दुनिया की ज़िंदगी में भी, और आख़िरत का अज़ाब तो इससे भी ज़्यादा सख्त होगा।”

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ

أَشَقُّ

“और नहीं होगा कोई भी इनको अल्लाह से बचाने वाला।”

وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ وَّاقٍ ۝

आयत 35

“मिसाल उस जन्नत की जिसका वादा किया गया है मुत्तकियों से, उसके दामन में नदियाँ बहती होंगी, उसके फल भी हमेशा कायम रहने वाले होंगे और उसके साथे भी।”

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ أُكْلُهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا

“यह है अंजाम उन लोगों का जिन्होंने तक्रवा की रविश इख्तियार की, और काफ़िरो का अंजाम तो आग है।”

تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ۝۳۵

आयत 36

“और जिन लोगों को तो हमने किताब दी थी वह खुश हो रहे हैं इस (कुरान) से जो (ऐ नबी ﷺ) आपकी तरफ़ नाज़िल किया गया है।”

وَالَّذِينَ آتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ

यह मदीने के अहले किताब में से नेक सरिश्त लोगों का ज़िक्र है। उनको जब ख़बरें मिलती थीं कि मक्के में आख़री नबी ﷺ का ज़हर हो चुका है तो वह इन ख़बरों से खुश होते थे।

“और बाज़ ग़िरोहों में से कुछ ऐसे भी हैं जो इसके बाज़ हिस्सों का इन्कार करते हैं।”

وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَنْ يُنْكِرُ بَعْضَهُ

“आप कहिये कि मुझे तो हुक्म हुआ है कि मैं अल्लाह की बंदगी करूँ और उसके साथ शिर्क न करूँ, उसी की तरफ़ मैं बुला रहा हूँ और उसी की तरफ़ मेरा लौटना है।”

قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أَشْرِكَ بِهِ إِلَيْهِ
أَدْعُوا وَإِلَيْهِ مَابِ ۝۳۶

आयत 37

“और इसी तरह हमने इसको उतारा है अरबी में क़ौले फ़ैसल बना कर।”

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا

“हुक्म” ब मायने “फ़ैसला” यानि यह कुराने अरबी क़ौले फ़ैसल बन कर आया है। जैसा कि सूरतुल तारिक़ में फ़रमाया है: {وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ} {إِنَّهُ لَقَوْلُ فَضْلٍ} (आयात 13-14) “ये कलाम (हक्क को बातिल से) जुदा करने वाला है और कोई बेहुदा बात नहीं है।”

“और (ऐ नबी ﷺ) अगर आपने इनकी ख्वाहिशात की पैरवी की इसके बाद कि आपके पास सही इल्म आ चुका है तो नहीं होगा आपके लिये भी अल्लाह की तरफ़ से ना कोई हिमायती और ना कोई बचाने वाला।”

وَلَيْنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ
مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا وَاقٍ ۝۳۷

आयात 38 से 43 तक

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ لِكُلِّ أَجَلٍ
كِتَابٍ ۝۳۸ يَمْحُوا اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُثَبِّتُ ۖ وَعِنْدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ ۝۳۹ وَإِنْ مَا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوْفِّيَنَّكَ
فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ۝۴۰ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ وَاللَّهُ يَجْكُمُ لَا مُعَقِّبَ
لِحُكْمِهِ ۖ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝۴۱ وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ

وَسَيَعْلَمُ الْكُفْرُ لِمَنْ عُقِبِيَ الدَّارِ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسَتْ مُرْسَلًا ۚ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ
وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ ۝

आयत 38

“और हमने भेजा रसूलों को आपसे पहले भी और हमने बनाई उनके लिये वीवियाँ भी और औलाद भी।”

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ
أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً

आप صلی اللہ علیہ وسلم से पहले जितने भी रसूल आए हैं वह सब आम इंसानों की तरह पैदा हुए (सिवाय हज़रत ईसा अलै. के), फिर उन्होंने निकाह भी किये और उनकी औलादें भी हुई।

“और किसी रसूल के लिये मुमकिन नहीं था कि वह कोई निशानी (मौज्जा) ले आता मगर अल्लाह के इज़्ज़ से। हर शय के लिये एक मुकर्रर वक़्त लिखा हुआ है।”

وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ لِكُلِّ
أَجَلٍ كِتَابٌ ۝

आयत 39

“अल्लाह जिस चीज़ को चाहता है मिटा देता है और (जिस को चाहता है) कायम रखता है, और उसी के पास है उम्मुल किताब।”

يَمْحُوا اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُغَيِّثُ ۚ وَعِنْدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ ۝

उम्मुल किताब यानि असल किताब अल्लाह के पास है। सूरतुल जुखरुफ़ में इसके मुताल्लिक यूँ फ़रमाया गया है: {وَأَنذَرُكُمْ} (आयत 4) “और यह असल किताब (यानि लौहे महफूज़) में हमारे पास है जो बड़ी फज़ीलत और हिक्मत वाली है।” आप इसे लौहे महफूज़ कहें, उम्मुल किताब कहें या किताबे मकनून कहें, असल कुरान इसके अन्दर है। ये कुरान जो हमारे पास है ये उसकी मुसद्दका नक़ल है जो अल्लाह तआला ने अपनी ख़ास इनायत और मेहरबानी से हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की वसातत से हमें दुनिया में अता कर दिया है।

आयत 40

“और ख्वाह हम दिखा दें आपको इसका कुछ हिस्सा जिसकी हम इनको धमकी दे रहे हैं, या हम आपको वफ़ात दे दें”

وَإِنْ مَا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوْفِّيَنَّكَ

यानि ये भी हो सकता है कि आपकी ज़िंदगी ही में इनको अज़ाबे इलाही में से कुछ हिस्सा मिल जाए, और ये भी हो सकता है कि आप صلی اللہ علیہ وسلم की ज़िन्दगी में इन पर ऐसा वक़्त ना आए, बल्कि अज़ाब के ज़हूर में आने से पहले हम आपको वफ़ात दे दें।

“पस आपके ज़िम्मे तो पहुँचाना ही है और हमारे ज़िम्मे हिसाब लेना है।”

فَأَمَّا عَلَيْكَ الْبَلْغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ۝

आप صلی اللہ علیہ وسلم पर हमारा पैग़ाम पहुँचाने की ज़िम्मेदारी थी, सो आप صلی اللہ علیہ وسلم ने ये ज़िम्मेदारी अहसन तरीक़े से अदा कर दी। अब उनको हिदायत देना या ना देना, उन पर अज़ाब भेजना या ना भेजना और उनका हिसाब लेना, ये सब कुछ हमारे ज़िम्मे है और हम ये फ़ैसले अपनी मशियत ले मुताबिक़ करेंगे।

आयत 41

“क्या ये लोग देखते नहीं कि हम ज़मीन को घटाते चले आ रहे हैं इसके किनारों से?”

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا

“और अल्लाह ही फ़ैसला करता है, कोई नहीं पीछे डालने वाला उसके हुक्म को, और वह जल्द हिसाब लेने वाला है।”

وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقَّبَ لِحُكْمِهِ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ

(२१)

ये मज़मून सूरतुल अंबिया की आयत नम्बर 44 में इस तरह बयान हुआ है: {أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا أَفَهُمُ الْغَالِبُونَ} “क्या ये लोग देखते नहीं कि हम ज़मीन को इसके किनारों से घटाते चले आ रहे हैं, तो क्या अब ये गालिब आने वाले हैं?” ये उस दौर की तरफ़ इशारा है जब मुशरिकीने मक्का ने मक्का के अंदर रसूल अल्लाह ﷺ और मुसलमानों के खिलाफ़ दुश्मनी की भट्टी पूरे ज़ोर-शोर से धक्का रखी थी और वह लोग इसमें अपने सारे वसाइल इस उम्मीद पर झोंके जा रहे थे कि एक दिन मोहम्मद ﷺ और आपकी इस तहरीक को नीचा दिखा कर रहेंगे। इस सूरतेहाल में इन्हें मक्का के मज़ाफ़ाती इलाकों (उम्मुल कुराअ व मन हवलहा) के मअरूज़ी हालात के हवाले से मुस्तक़बिल की एक इम्कानी झलक दिखाई जा रही है कि बेशक अभी तक मक्के के अंदर तुम्हारी हिकमते अमली किसी हद तक कामयाब है, लेकिन क्या तुम देख नहीं रहे हो कि मक्के के आस-पास के क़बाइल के अंदर इस दावत के असर व नफ़ूज़ में ब-तदरीज़ इज़ाफ़ा हो रहा है और इसके मुक़ाबले में तुम्हारा हल्का-ए-असर रोज़-ब-रोज़ सिकुड़ता चला जा रहा है। जैसे क़बीला बनी गिफ़ार के एक नौजवान अबु ज़र रज़ि। ये दावत कुबूल करके अपने क़बीले में एक मुबल्लिग़ की हैसियत से वापस गए हैं और आपकी वसातत से ये दावत उस क़बीले में भी पहुँच गई है। यही हाल इर्द-गिर्द के दूसरे क़बाइल का है। इन हालात में क्या तुम्हें नज़र नहीं आ रहा कि ये दावत रफ़ता-रफ़ता तुम्हारे चारों तरफ़ से तुम्हारे गिर्द घेरा तंग करती चली जा रही है? अब वह वक़्त बहुत करीब नज़र आ रहा है जब तुम्हारे इर्द-गिर्द का माहौल इस्लाम कुबूल कर लेगा और तुम लोग इसके दायरा-ए-असर के अंदर महसूर (क़ैद) होकर रह जाओगे।

इस आयत में जिस सूरते हाल का ज़िक्र है इसका अमली मुज़ाहि़रा हिज़रत के बाद बहुत तेज़ी के साथ सामने आया। हुज़ूर ﷺ ने मदीना तशरीफ़ लाने के बाद एक तरफ़ कुरैशे मक्का के लिये उनकी तिज़ारती शाहराहों को मख़दूश (तबाह) बना दिया तो दूसरी तरफ़ मदीना के आस-पास के क़बाइल के साथ सियासी मुआहिदात करके इस पूरे इलाक़े से कुरैशे मक्का के असर व रसूख़ की बिसात लपेट दी। मदीना के मज़ाफ़ात में आबाद बेशतर क़बाइल कुरैशे मक्का के हलीफ़ (इत्तेहादी) थे मगर अब इनमें से अक्सर या तो मुसलमानों के हलीफ़ बन गए या इन्होंने ग़ैर-जानिबदार रहने का ऐलान कर दिया। कुरैशे मक्का की मआशी नाकाबंदी (economic blockade) और सियासी इन्क़ताअ (political isolation) के लिये रसूल अल्लाह ﷺ के ये अक्रदामात इस क़दर मौअस्सर थे कि इसके बाद इन्हें अपने इर्द-गिर्द से सिकुड़ती हुई ज़मीन बहुत वाज़ेह अंदाज़ में दिखाई देने लगी।

दरअसल फ़लसफ़ा-ए-सीरत के ऐतबार से ये बहुत अहम मौज़ू है मगर बहुत कम लोगों ने इस पर तव्वजो दी है। मैंने अपनी किताब “मन्हज़-ए-इंक्लाब-ए-नबवी ﷺ” में इस पर तफ़सील से बहस की है।

आयत 42

“और जो इनसे पहले थे उन्होंने भी बड़ी चालें चली थीं”

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ

अपने-अपने दौर में मुन्करीने हक़ ने अम्बिया व रसूल की दावते हक़ को रोकने के लिये साज़िशों के ख़ूब जाल फैलाए थे और बड़ी-बड़ी मंसूबा बंदियाँ की थीं।

“लेकिन सारी की सारी तदबीरें अल्लाह ही के इख़्तियार में हैं।”

فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا

अल्लाह तआला ऐसे लोगों की तदबीरों और साज़िशों का मुकम्मल तौर पर इहाता किये हुए है। उसकी मशियत के खिलाफ़ इनकी कोई तदबीर कामयाब नहीं हो सकती।

“वह जानता है हर जान जो कुछ कमाती है। और अनकरीब मालूम हो जाएगा काफ़िरों को कि दारे आख़िरत की कामयाबी किसके लिये है।”

يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ وَسَيَعْلَمُ الْكُفْرُ لَيْنٌ

عُقْبَى الدَّارِ ۝

दारे आख़िरत की भलाई और उसका आराम किसके लिये है, इन्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा।

आयत 43

“और ये काफ़िर कहते हैं कि आप (अल्लाह के) रसूल नहीं हैं।”

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا

“आप कह दीजिये कि अल्लाह काफ़ी है गवाह मेरे और तुम्हारे दरमियान”

قُلْ كَفَى بِاللّٰهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ

अल्लाह जानता है कि मैं उसका रसूल हूँ और उसका जानना मेरे लिये काफ़ी है।

“और जिनके पास किताब का इल्म है (वह भी इस पर शाहिद हैं)।”

وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ ۝

मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह की गवाही काफ़ी है कि मैं उसका रसूल हूँ और फिर हर उस शख्स की गवाही जो किताबे आसमानी का इल्म रखता है। अल्लाह तो जानता ही है जिसने मुझे भेजा है और मेरा मामला उसी के साथ है। इसके अलावा ये अहले किताब भी बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। अहले किताब के इस मामले को सूरतुल बक्ररह की आयत 146 और सूरतुल अनआम की आयत 20 में इस तरह वाज़ेह फ़रमाया गया है: {يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ} कि ये आप ﷺ को ब-हैसियत रसूल ऐसे पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं।

بَارِكْ اللّٰهُ لِي وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيمِ وَنَفَعْنِي وَايَاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ۔



सूरह इब्राहीम

तम्हीदी कलिमात

सूरह इब्राहीम का सूरतुल रअद के साथ जोड़े का ताल्लुक है। इन दोनों सूरतों में कई ऐसी आयात हैं जो सूरतुल बक्ररह की बाज़ आयात के साथ मुशाबिहत रखती हैं। सूरतुल रअद में किसी नबी या रसूल का ज़िक्र नाम के साथ नहीं आया, इसी तरह सूरह इब्राहीम में भी अम्बिया व रसूल अलै. का तज़क़िरा क़द्रे मुख्तलिफ़ अंदाज़ में आया है। शुरू में हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र चंद आयात में करने के बाद ज़माना-ए-क़ब्ल के सब अम्बिया व रसूल अलै. का ज़िक्र जमा के सीगे में एक साथ किया गया है, जबकि आख़िर में इख़्तसार (संक्षेप) के साथ हज़रत इब्राहीम अलै. का ज़िक्र है। इसी वजह से इस सूरत का नाम भी आप अलै. से मन्सूब है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

आयात 1 से 4 तक

الرَّ كُتِبَ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۝
 لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَوَيْلٌ لِلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ۝
 الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى
 الْآخِرَةِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا أُولَئِكَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝
 وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانٍ
 قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ فَيُضِلُّ اللَّهُ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

आयत 1

“अलिफ़, लाम, रा”

الر

इस मक़ाम पर हुरूफ़े मुक़त्ताआत के बारे में एक अहम नुक्ता यह है कि मक्की सूरतों के इस सिलसिले के पहले ज़ेली ग्रुप की तीनों सूरतों (युनुस, हूद और यूसुफ़) का आगाज़ अलिफ़, लाम, रा से हो रहा है, जबकि दूसरे ज़ेली ग्रुप की पहली सूरत (अल् रअद) अलिफ़, लाम, मीम, रा से और दूसरी दोनों सूरतें (इब्राहीम और अल् हिज़्र) फिर अलिफ़, लाम, रा से ही शुरू हो रही हैं।

“(ऐ नबी ﷺ) यह किताब हमने नाज़िल की है आपकी तरफ़ ताकि आप निकालें लोगों को अंधेरो से रौशनी की तरफ़, उनके रब के इज़्ज़ (हुक़म) से”

الرَّ كُتِبَ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ
 الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ

कुरान करीम में अंधेरे के लिए लफ़ज़ “ज़ुलुमात” हमेशा जमा और इसके मुक़ाबले में “नूर” हमेशा वाहिद इस्तेमाल हुआ है। चूँकि किसी फ़र्द की हिदायत के लिये फ़ैसला अल्लाह की तरफ़ से ही होता है, इसलिये फ़रमाया कि आप ﷺ का इन्हें अंधेरो से निकाल कर रौशनी में लाने का यह अमल अल्लाह के हुक़म और उसकी मंज़ूरी से होगा।

“उस हस्ती के रास्ते की तरफ़ जो सब पर ग़ालिब और अपनी ज़ात में खुद महमूद है।”

إِلَى صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ①

आयत 2

“वो अल्लाह जिसकी मिल्कियत है हर वो शय जो आसमानों और ज़मीन में है।”

اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ②

“और बर्बादी है काफ़िरो के लिये एक सख्त अज़ाब से।”

وَوَيْلٌ لِلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ③

आयत 3

“वो लोग जो पसंद करते हैं दुनिया की ज़िन्दगी को आखिरत के मुकाबले में”

الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ ④

यह आयत हम सबको दावत देती है कि हम में से हर शख्स अपने गिरेबान में झाँके और अपनी तरजीहात (Preferences) का तजज़िया (analysis) करे कि उसकी मोहलते ज़िन्दगी के अवकातकार की तक्सीम क्या है? उसकी बेहतरीन सलाहियतें कहाँ खप रही हैं? और उसने अपनी ज़िन्दगी का बुनियादी नस्बुलऐन (लक्ष्य) किस रुख़ पर मुतय्यन (निर्धारित) कर रखा है? फिर अपनी मशगूलियात में से दुनिया और आखिरत के हिस्से अलग-अलग करके देखे कि दुन्यवी ज़िन्दगी (مَتَاعُ الدُّنْيَا) को समेटने की इस भाग-दौड़ में से असल और हक़ीकी ज़िन्दगी (خَيْرٌ وَأَبْقَى) के लिये उसके दामन में क्या कुछ बचता है?

“और वो रोकते हैं अल्लाह के रास्ते से और उसके अंदर कज़ी (कमी) तलाश करते हैं। यक़ीनन यह लोग बहुत दूर की गुमराही में मुब्तला हो चुके हैं।”

وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا أُولَٰئِكَ ⑤

فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ⑥

अल्लाह के रास्ते से रोकने की मिसालें आज भी आपको क़दम-क़दम पर मिलेंगी। मसनल एक नौजवान को अगर अल्लाह की तरफ़ से दीन का शऊर और मता-ए-हिदायत नसीब हुई है और वह अपनी ज़िन्दगी को उसी रुख़ पर डालना चाहता है तो उसके वालिदैन और दोस्त अहबाब उसको समझाने लगते हैं, कि तुम अपने कैरियर को देखो, अपने मुस्तक़बिल की फ़िक्र करो, यह तुम्हारे दिमाग में क्या फ़तूर आ गया है? गर्ज वह किसी ना किसी तरह से उसे क़ायल करके अपने उसी रास्ते पर ले जाने की कोशिश करते हैं जिस पर वो खुद अपनी ज़िन्दगियाँ बर्बाद कर रहे हैं।

आयत 4

“और हमने नहीं भेजा किसी रसूल को मगर उसकी क़ौम की ज़बान ही में ताकि वो उनके लिये (अल्लाह के अहक़ाम) अच्छी तरह वाज़ेह कर दे।”

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانٍ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ ⑦

لَهُمْ ⑧

यानि हर क़ौम की तरफ़ मबऊस रसूल पर वही उस क़ौम की अपनी ही ज़बान में आती थी ताकि बात के समझने और समझाने में किसी क़िस्म का अबहाम (अस्पष्टता) ना रह जाये, और इबलाग़ (पैग़ाम पहुँचाने) का हक़ अदा हो जाये। जैसे हज़रत मूसा अलै. को तौरात दी गई तो अबरानी ज़बान में दी गई जो आप अलै. की क़ौम की ज़बान थी।

“फिर अल्लाह गुमराह करता है जिसको चाहता है और हिदायत देता है जिसको चाहता है।”

فَيُضِلُّ اللَّهُ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ⑨

इसका तर्जुमा यूँ भी हो सकता है कि अल्लाह गुमराह करता है उसे जो चाहता है गुमराह होना और हिदायत देता है उसको जो चाहता है हिदायत हासिल करना।

“और वो ज़बरदस्त है, कमाल हिकमत वाला।”

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑤

आयात 5 से 8 तक

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَذَكِّرْهُمْ بِآيَاتِ اللَّهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ⑤
وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنْجَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيَدْعُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ⑥
وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ⑦ وَقَالَ مُوسَىٰ إِنَّ تَكْفُرًا أَتَمُّ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَأِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ⑧

आयत 5

“और (इसी तरह) हमने भेजा था मूसा अलै. को अपनी निशानियों के साथ कि निकालो अपनी क़ौम को अंधेरे से उजाले की तरफ़ और उन्हें खबरदार करो अल्लाह के दिनों के हवाले से।”

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَذَكِّرْهُمْ بِآيَاتِ اللَّهِ

यह “التذكير بآيات الله” की वही इस्तलाह (term) है जिसका जिक्र शाह वलीउल्लाह देहलवी रहि. के हवाले से क़बल अज़ बार-बार आ चुका है। शाह वलीउल्लाह ने अपनी मशहूर किताब “अल् फ़ौज़ुल कबीर” में मज़ामीन कुरान की तक्रसीम के सिलसिले में “التذكير بآيات الله” की यह इस्तलाह इस्तेमाल की है, यानि अल्लाह के उन दिनों के हवाले से लोगों को खबरदार करना जिन दिनों में अल्लाह ने बड़े-बड़े फ़ैसले किए और उन फ़ैसलों के मुताबिक़ कई क़ौमों को नेस्तोनाबूद कर दिया। इसके साथ शाह वलीउल्लाह रहि. ने दूसरी इस्तलाह “التذكير بآلاء الله” इस्तेमाल की है, यानि अल्लाह की नेअमतों और उसकी निशानियों के हवाले से तज़कीर और याद दिहानी।

“यक़ीनन इसमें निशानियाँ हैं हर उस इंसान के लिए जो बहुत सब्र करने वाला और बहुत शुक्र करने वाला है।”

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ⑤

सब़ार और शक़ूर दोनों मुबालगे के सीगे हैं। सब्र और शुक्र ये दोनों सिफ़ात आपस में एक-दूसरे के लिए तक़मीली (complementary) नौइयत की हैं। चुनाँचे एक बंदा-ए-मोमिन को हर वक़्त इनमें से किसी एक हालत में ज़रूर होना चाहिए और अगर वह इनमें से एक हालत से निकले तो दूसरी हालत में दाख़िल हो जाये। अगर अल्लाह ने उसको नेअमतों और आसाइशों (सुखों) से नवाज़ा है तो वह शुक्र करने वाला हो और अगर कोई मुसीबत या तंगी उसे पहुँचती है तो सब्र करने वाला हो।

हज़रत सोहेब बिन सनान रुमी रज़िअल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया:

عَجَبًا لِمَنِ الْمُؤْمِنُ إِنَّ أَمْرَهُ كُلَّهُ خَيْرٌ وَلَيْسَ ذَلِكَ لِأَحَدٍ إِلَّا لِلْمُؤْمِنِ إِنْ أَصَابَتْهُ سَرَاءٌ شَكَرَ فَكَانَ خَيْرًا لَهُ وَإِنْ أَصَابَتْهُ ضَرَاءٌ صَبَرَ فَكَانَ خَيْرًا لَهُ

“मोमिन का मामला तो बहुत ही खूब है, उसके लिए हर हाल में भलाई है, और यह बात मोमिन के सिवा किसी और के लिए नहीं है। अगर उसे कोई आसाइश (सुख) पहुँचती है तो शुक्र करता है, पस यह उसके लिए बेहतर है, और अगर उसे कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो सन्न करता है, पस यह उसके लिए बेहतर है।”(7)

आयत 6

“और याद करो जब मूसा ने अपनी क्रौम से कहा कि अपने ऊपर अल्लाह की उस नेअमत को याद रखो जब उसने तुम्हें निजात दी आले फ़िराऔन से”

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِذْ كُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ
أَنْجَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ

“वो तुम्हें मुब्तला किये हुए थे बदतरीन अज़ाब में, और वो लोग तुम्हारे बेटों को ज़िबह कर देते थे और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दा रखते थे।”

يَسْؤُمُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيُذَيِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ
وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ

“और उसमें यक्कीनन तुम्हारे लिए तुम्हारे रब की तरफ़ से बहुत बड़ी अज़माईश थी।”

وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِّنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ①

आयत 7

“और याद करो जब तुम्हारे रब ने ऐलान कर दिया था कि अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें और ज़्यादा दूँगा”

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ

अगर तुम लोग मेरे अहकाम मानोगे और मेरी नेअमतों का हक़ अदा करोगे तो मेरे ख़जानों में कोई कमी नहीं है, मैं तुम लोगों को अपनी मज़ीद नेअमतें भी अता करूँगा।

“और अगर तुम कुफ़्र करोगे तो यक्कीनन मेरा अज़ाब भी बहुत सख़्त है।”

وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ②

लेकिन अगर तुम कुफ़्राने नेअमत करोगे, मेरी नेअमतों की नाक़द्री और नाशुक्री करोगे और मेरे अहकाम से रूगदर्नी (अस्वीकार) करोगे तो याद रखो, मेरी सज़ा भी बहुत सख़्त होगी।

आयत 8

“और मूसा ने कहा कि अगर तुम कुफ़्र करो और जो भी लोग ज़मीन में हैं वो (सबके सब काफ़िर हो जायें) तो यक्कीनन अल्लाह ग़नी और अपनी ज़ात में खुद महमूद है।”

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنَّ تَكْفُرُوا أَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ
جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ③

वो बेनियाज़ है, उसको किसी की अहतियाज (ज़रूरत) या परवाह नहीं। वो अपनी ज़ात में सतूदह सिफ़ात है।

आयात 9 से 17 तक

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودُ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ جَاءَتْهُمْ
رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ

مُرِيْبٍ ۙ قَالَتْ رُسُلُهُمْ اِنَّا لِلّٰهِ شَاكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ قَالُوْا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَاؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝۱۰
قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ وَمَا كَانَ لَنَا اَنْ نَّاتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝۱۱ وَمَا لَنَا اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰنَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا اٰذَيْتُمُوْنَا وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝۱۲ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِلٰى رُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَاۤ اَوْ لَنَعُوْدَنَّ فِيْ مِلَّتِنَاۤ اَوْ لَيُؤْتِيَنَا اللّٰهُمَّ رَبُّهُمْ لَهٰلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۝۱۳ وَلَنُسَكِنَنَّكُمْ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِىْ وَخَافَ وَعِيَدِ ۝۱۴ وَاسْتَغْتَحٰوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۝۱۵ مِّنْ وَّرَآيِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صٰدِيْدٍ ۝۱۶ يَّتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهُ وَيَآتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۚ وَمِنْ وَّرَآيِهِ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ۝۱۷

आयत 9

“क्या तुम्हारे पास आ नहीं चुकी हैं खबरें उन लोगों की जो तुमसे पहले थे, यानि क्रौमे नूह और आद और समूद की”

اَلَمْ يَآتِكُمْ نَبُؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمٍ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُوْدٌ

“और उनकी जो उनके बाद हुए, उन्हें अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता।”

وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ

“उनके पास आये उनके रसूल वाज़ेह निशानियाँ लेकर, तो उन्होंने अपनी उँगलियाँ अपने मुँहों में ठूस लीं”

جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْا اَيْدِيَهُمْ فِىْۤ اَفْوَاهِهِمْ

“और कहा कि हम तो इंकार करते हैं उसका जिसके साथ तुम भेजे गये हो, और तुम हमें जिस चीज़ की दावत दे रहे हो उसके बारे में हम सख़्त उलझन में डाल देने वाले शक में मुब्तला हैं।”

وَقَالُوْا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهِ وَاِنَّا لَفِىْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ۙ

यहाँ तमाम रसूलों को एक जमाअत फ़र्ज़ करके उनका ज़िक्र इकठ्ठे किया जा रहा है, क्योंकि सबने अपनी-अपनी क्रौम को एक जैसी दावत दी और उस दावत के जवाब में सब रसूलों की क्रौमों का रद्दे अमल भी तक्ररीबन एक जैसा था। उन सब अक्रवाम ने अपने रसूलों की दावत को रद्द करते हुए कहा कि हमें तो उन बातों के मुताल्लिक बहुत से शक व शुब्हात लाहक़ हैं, जिनकी वजह से हम सख़्त उलझन में पड़ गये हैं।

आयत 10

“उनके रसूलों ने कहा कि क्या तुम लोगों को अल्लाह की ज़ात के बारे में शक है जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है?”

قَالَتْ رُسُلُهُمْ اِنَّا لِلّٰهِ شَاكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

यह searching question का सा अंदाज़ है जिसमें बात वहाँ से शुरू की जा रही है जहाँ तक खुद फ़रीज़े सानी (second party) को भी इत्तेफ़ाक़ है। मज़क़ूर तमाम अक़वाम के कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन में एक अक़ीदा हमेशा मुशतरक़ रहा है कि वो तमाम लोग ना सिर्फ़ अल्लाह को मानते थे बल्कि उसे ज़मीन व आसमान का ख़ालिक भी तस्वीम करते थे। चुनाँचे जिस क्रौम के लोगों ने भी अपने रसूल की दावत को शक व शुब्हात की बिना पर रद्द करना चाहा उनको हमेशा यही जवाब दिया गया। यानि सबसे पहले अल्लाह की ज़ात का मामला हमारे-तुम्हारे दरमियान वाज़ेह होना चाहिए कि तुम्हें अल्लाह की ज़ात के बारे में शक है या उसके ख़ालिक अर्द व समावात (Creator of Heaven & Earth) होने में?

“वो (अल्लाह) तुम्हें बुला रहा है ताकि तुम्हारे गुनाहों को बख़्श दे और एक वक़्ते मुअय्यन तक तुम्हें मोहलत दे।”

يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ إِلَىٰ
أَجَلٍ مُّسَمًّى

“उन्होंने जवाब दिया कि नहीं हैं आप लोग मगर हमारी ही तरह के इंसान।”

قَالُوا إِنَّا نَتَّبِعُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا

“आप चाहते हैं कि रोक दें हमें उन (की परस्तिश) से जिनको पूजते थे हमारे आबा, तो लाइये आप हमारे सामने कोई खुला मौज़्जा!”

تُرِيدُونَ أَن تَصَدُّوا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأُنُوتَا
بِسُلْطَنِ مُّبِينٍ ⑩

सब क्रौमों के लोगों का यह जवाब भी एक जैसा था, सबने रसूलों के इंसान होने पर ऐतराज़ किया और सबने हिस्सी मौअज़्जा तलब किया।

आयत 11

“उनके रसूलों ने उनसे कहा कि वाक़ई हम कुछ नहीं हैं मगर तुम्हारी ही तरह के इंसान, लेकिन अल्लाह अहसान फ़रमाता है अपने बंदों में से जिस पर चाहता है।”

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِن نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَكِنَّ
اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ

यह अल्लाह की मर्ज़ी का मामला है, वो जिसे चाहता है अपनी रहमत से नवाज़ देता है। उसने हमें अपनी रिसालत के लिए चुन लिया है, हमारी तरफ़ वही भेजी है और हमें मामूर किया है कि हम आप लोगों को ख़बरदार करें और उसके अहकाम आप तक पहुँचाएं।

“और हमारे लिए मुमकिन नहीं है कि हम ले आएँ तुम्हारे पास कोई मौअज़्जा अल्लाह के हुक्म के बग़ैर। और अल्लाह ही पर तवक्कुल करना चाहिए अहले ईमान को।”

وَمَا كَانَ لَنَا أَنْ نَأْتِيَكُمْ بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَىٰ
اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ⑪

आयत 12

“और हमें क्या है कि हम अल्लाह पर तवक्कुल ना करें हालाँकि उसने हमें हमारे रास्तों की हिदायत बख़्शी है।”

وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا

अल्लाह ने हमें अपने तक्करूब के तरीक़े और अपनी तरफ़ आने के रास्ते बताए हैं, यह कैसे मुमकिन है कि हम उस पर तवक्कुल ना करें?

“और हम सब्र ही करेंगे उस ईजा (परेशानी) पर जो तुम हमें पहुँचा रहे हो, और अल्लाह ही पर तवक्कुल करना चाहिए तमाम तवक्कुल करने वालों को।”

وَلَتَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا أَدْبَرْنَا وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿١٦﴾

आयत 13

“और कहा उन लोगों ने जो काफ़िर हुए थे अपने रसूलों से”

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلرُّسُلِهِمْ

रसूलों की जमाअत और उनकी क्रौमों के दरमियान होने वाले सवालात व जवाबात का तज़क़िरा जारी है। यानि अपने-अपने ज़माने में अपने-अपने रसूलों से मुतालक़ा अक़वाम के लोगों ने कहा:

“हम लाज़ि़मन निकाल बाहर करेंगे तुम्हें अपनी ज़मीन से या तुम्हें लौटना होगा हमारे दीन में।”

لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُوذُنَّ فِي مِلَّتِنَا

“तो वही की उनकी तरफ़ उनके रब ने कि हम इन ज़ालिमों को अब लाज़ि़मन हलाक कर देंगे।”

فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ﴿١٧﴾

आयत 14

“और हम आबाद करेंगे ज़मीन में तुम लोगों को उनके बाद।”

وَلَنُسَكِّنَنَّكُمْ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ

यानि अल्लाह तआला ने रसूलों की तरफ़ वही भेजी कि अब तमाम काफ़ि़रों को हलाक कर दिया जायेगा और उसके बाद रसूल और उनके साथ बच जाने वाले तमाम अहले ईमान को फिर से ज़मीन में आबाद करने का सामान किया जायेगा।

“यह उन लोगों के लिए है जो मेरे सामने खड़े होने और मेरी वईद (चेतावनी) से डरते हैं।”

ذَٰلِكَ لِمَنِ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ﴿١٨﴾

जो लोग अज़ाब की वईदों (चेतावनियों) से डरते हैं और रोज़े महशर अल्लाह की अदालत में खड़े होने के तसव्वर से लरज़ जाते हैं।

आयत 15

“और उन्होंने फ़ैसला तलब किया और नामुराद होकर रहा हर सरकश ज़िदी।”

وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿١٩﴾

जो लोग कुफ़्र व शिर्क में डटे रहते वो इस बात पर भी अपने रसूल से इसरार करते कि हमारे और तुम्हारे दरमियान आख़री फ़ैसला हो जाना चाहिए। फिर जब अल्लाह की तरफ़ से वह आख़री फ़ैसला अज़ाबे इस्तेसाल की सूरत में आता तो उसके नतीजे में सरकश और हठधर्म क्रौम को नस्तोनाबूद कर दिया जाता। ऐसे मुन्करीने हक़ की तबाही व बर्बादी का नक्श़ा कुरान हकीम में इस तरह खींचा गया है: {كَأَن لَّهُمْ يَغْنَوُافِيهَا} (अल्आराफ़:92) “वो ऐसे हो गये जैसे कभी थे ही नहीं” और {فَأَصْبَحُوا لَا يَرَىٰ إِلَّا مَسَكِنَهُمْ} (अल् अहक़ाफ़:25) यानि वो ऐसे हो गये कि उनके दयार व अमसार में सिर्फ़ उनके महलात व मसाकन ही नज़र आते थे जबकि उनके मकीनों का नामो-निशान तक बाक़ी ना रहा। और यह सब कुछ तो उन लोगों के साथ इस दुनिया में हुआ, जबकि आख़िरत की बड़ी सज़ा उसके अलावा है जिसको झेलते हुए उनमें से हर एक सरकश ज़िदी इस तरह निशाने इब्रत बनेगा:

आयत 16

“उसके पीछे जहन्नम है और उसको पिलाया जायेगा पीप वाला पानी।”

مَنْ وَرَّاهُ جَهَنَّمَ وَيُسْقَى مِنْ مَّاءٍ صَدِيدٍ ۝

आयत 17

“वो उसको घूँट-घूँट पीने की कोशिश करेगा लेकिन उसे हलक़ से उतार नहीं पाएगा”

يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ

“और उसे हर तरफ़ से मौत (आती हुई नज़र) आयेगी लेकिन मर नहीं सकेगा।”

وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ

शदीद तकलीफ़ में मौत इंसान को राहत पहुँचा देती है। बाज़ बीमार ऐसे होते हैं कि तकलीफ़ की शिद्दत में ऐड़ियाँ रगड़ रहे होते हैं और मौत उनके लिए राहत का सामान बन जाती है। लेकिन जहन्नम ऐसी जगह है कि जहाँ इंसान को मौत नहीं आयेगी। सूरह ताहा में इस कैफ़ियत को इन अल्फ़ाज़ में बयान किया गया है: {لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ} “ना वो उसमें मरेगा और ना जी पायेगा।” अहले जहन्नम शदीद ख़्वाहिश करेंगे कि मौत आ जाये और उनका क्रिस्सा तमाम हो जाये मगर उनकी यह ख़्वाहिश पूरी नहीं होगी।

“और उसके बाद उसके लिये एक और सख़्त अज़ाब होगा।”

وَمِنْ وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ۝

यानि उस सख़्ती में मुसलसल इज़ाफ़ा होता जायेगा, अज़ाब की शिद्दत दर्जा-ब-दर्जा बढ़ती ही चली जायेगी।

आयत 18 से 21 तक

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ
ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ۝ ۱۸ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ يَشَاءُ يَذْهَبَكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ ۱۹
وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝ ۲۰ وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ
عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ قَالُوا لَوْ هَدَانَا اللَّهُ لَهْدَيْنَاكُمْ ۖ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجْرٌ غَنَاءٌ أَمْ صَبْرٌ نَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيصٍ ۝ ۲۱

आयत 18

“मिसाल उन लोगों की जिन्होंने कुफ़र किया अपने रब के साथ (ऐसी है) कि उनके आमाल हों राख की मानिन्द, जिस पर ज़ोरदार हवा चले आँधी के दिन।”

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ

اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ

अल्लाह के यहाँ किसी भी नेक अमल की कुबूलियत के लिए ईमान लाज़मी और बुनियादी शर्त है। चुनाँचे जो लोग अपने रब का कुफ़र करते हैं उनके नेक आमाल को यहाँ राख के ऐसे ढेर से तशबीह दी गई है जिस पर तेज़ आँधी चली और उसका एक-एक ज़रा मुन्तशिर हो गया। यानि बज़ाहिर तो वो ढेर नज़र आता था मगर अल्लाह के यहाँ उसकी कुछ भी हैसियत बाक़ी ना रही। यह बहुत अहम मज़मून है और कुरान करीम में मुख्तलिफ़ मिसालों के साथ इसे तीन बार दोहराया गया है। सूरह नूर की आयत 39 में कुफ़र के आमाल को सराब से तशबीह दी गई है और सूरह अल् फुरकान की आयत 23 में मुन्करीने आखिरत के आमाल को {هَبَاءٌ مُنْتُزَأٌ} यानि “हवा में उड़ते हुए ज़रात” की मानिन्द करार दिया गया है।

दरअसल हर इंसान अपनी ज़हनी सतह के मुताबिक़ नेकी का एक तस्सवुर रखता है, क्योंकि नेकी हर इंसान की रूह की ज़रूरत है, मगर नेकी का ताल्लुक चूँकि बराहेरास्त अल्लाह तआला की मर्ज़ी और उसकी कुबूलियत के साथ है, चुनाँचे

इसके लिए मैयार भी वही क़ाबिले कुबूल होगा जो अल्लाह ने खुद क़ायम किया है, और वह मैयार सूरतुल बक्ररह की आयतुल बिर् की रोशनी में यह है:

لَيْسَ الْبِرُّ أَنْ تُولُوا وَجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ
وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ وَآتَى الْمَالَ عَلَى حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ
وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّادِقِينَ فِي الْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ الْبَأْسِ
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾

“नेकी यही नहीं है कि तुम अपने चेहरे मशरिफ़ और मगरिब की तरफ़ फेर दो, बल्कि असल नेकी तो उसकी है जो ईमान लाया अल्लाह पर, यौमे आखिरत पर, फरिशतों पर, किताब पर और नबियों पर। और उसने खर्च किया माल उसकी मोहब्बत के बावजूद क़राबतदारों, यतीमों, मोहताजों, मुसाफ़िरों और माँगने वालों पर और गर्दनों के छुड़ाने में। और क़ायम की नमाज़ और अदा की ज़कात। और जो पूरा करने वाले हैं अपने अहद को जब कोई अहद कर लें। और सन्न करने वाले फ़क्र व फ़ाक्रा में, तकलीफ़ में और हलाते जंग में। यही वो लोग हैं जो सच्चे हैं और यही हक़ीकत में मुत्तक़ी हैं।”

अगर नेकी इस मैयार के मुताबिक़ है तो फिर यह वाक़ई नेकी है, लेकिन अगर ऐसा नहीं है तो नेकी की शक़ल में धोखा, सराब (भ्रम) व फ़रेब है, नेकी नहीं है। दरअसल जब इंसान की फ़ितरत मस्ख़ (बिगडैल) हो जाती है तो उसके साथ ही उसका नेकी का तसव्वुर भी मस्ख़ हो जाता है। नेकी चूँकि एक बुरे से बुरे इंसान के भी ज़मीर की ज़रूरत है इसलिये बजाय इसके कि एक बुरा इंसान अपनी इस्लाह करके अपने आमाल व किरदार को नेकी के मतलूबा मैयार पर ले आये, वो उल्टा नेकी के मैयार को घसीट कर अपने ख़्यालात व नज़रियात की गंदगी के ढेर के अंदर उसकी जगह बनाने की कोशिश करता है। यही वजह है कि हमारे मआशरे में चोर, डाकू और लुटेरे सदक़ा व ख़ैरात करते और ख़िदमते ख़ल्क के बड़े-बड़े काम करते नज़र आते हैं और जिस्म फ़रोश औरतें मज़ारों पर धमाल डालती और नियाज़ बाँटती दिखाई देती हैं। इस तरह यह लोग अपने ज़मीर की तस्क़ीन का सामान करने की कोशिश करते हैं कि हमारे पेशे में क़द्रे क़बाहत का अंसर (element) पाया जाता है तो क्या हुआ, इसके साथ-साथ हम नेकी के फ़लाँ-फ़लाँ काम भी तो करते हैं!

इसी तरह जब मज़हबी मिज़ाज रखने वाले लोगों की फ़ितरत मस्ख़ होती है तो वो कबीरा गुनाहों की तरफ़ से बेहिस्स और सगीरा के बारे में बहुत हस्सास (serious) हो जाते हैं। ऐसे लोग को सगाइर के बारे में तो बड़े ज़ोरदार मुबाहिसे और मुनाज़रे कर रहे होते हैं, मगर कबीरा को वो लायक़-ए-ऐतनाअ (worthy of acceptance) ही नहीं समझते। इस पसमंज़र में सही तर्ज़े अमल यह है कि पहले कबाइर से कुल्ली तौर पर इज्जनाब (बचाव) किया जाये और फिर उसके बाद सगीरा की तरफ़ तवज्जो की जाये। बहरहाल क़यामत के दिन बेशुमार ऐसे लोग होंगे जो अपने ज़अम में बहुत ज़्यादा नेकियाँ लेकर आये होंगे, मगर अल्लाह के नजदीज़ उनकी नेकियों की कोई हैसियत और वक़अत नहीं होगी।

“उन्हें कुछ भी हाथ ना आयेगा उसमें से जो कमाई उन्होंने की होगी।
यही तो है दूर की गुमराही।”

لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ

الْبُعِيدُ ﴿١٧٨﴾

उनको ज़अम (गुमान) होगा कि उन्होंने दुनिया में बहुत नेक काम किए थे, ख़िदमते ख़ल्क के बड़े-बड़े प्रोजेक्ट शुरू कर रखे थे, मगर उस दिन वहाँ उनमें से कोई नेकी भी उनके काम आने वाली नहीं होगी।

आयत 19

“क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया है?”

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ

“अगर वो चाहे तो तुम लोगों को ले जाये (हलाक कर दे) और एक नई मख्लूक को ले आये।”

إِنْ يَشَاءُ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝۱۹

उसकी कुदरत, कुव्वते तखलीक और तखलीकी महारत खत्म तो नहीं होगी, वो अपनी मख्लूक में से जिसको चाहे खत्म कर दे और जब चाहे कोई नई मख्लूक पैदा कर दे।

आयत 20

“और यह काम अल्लाह पर कोई भारी नहीं है।”

وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝۲۰

आयत 21

“और वो अल्लाह के सामने खड़े होंगे सबके सब, तो कहेंगे कमज़ोर लोग मुतकब्बरीन से कि हम आप लोगों के पैरोकार थे, तो क्या आप अल्लाह के अज़ाब में से हमारे लिए कुछ कमी कर सकते हैं?”

وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۝۲۱

कमज़ोर लोग ताक़तवर लोगों से, जिन्हें वो दुनिया में अपने सरदार और लीडर मानते थे, कहेंगे कि हम आपके फ़रमाबरदार थे, आपका हर हुक्म मानते थे, आपकी ख़िदमत करते थे, आपके झंडे उठाते थे, आपके लिए ज़िन्दाबाद के नारे लगाते थे, तो क्या आप हमारी उन ख़िदमात के एवज़ आज इस अज़ाब से हमें कुछ रियायत दिला सकते हैं?

“वो कहेंगे कि अगर अल्लाह ने हमें हिदायत दी होती तो हम तुम्हें भी हिदायत की राह दिखाते।”

قَالُوا لَوْ هَدَانَا اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ ۝۲۲

वो कोरा जवाब दे देंगे कि हम खुद गुमराह थे, सो हमने तुम्हें भी गुमराह किया।

“अब हमारे हक़ में बराबर है, ख़्वाह हम जज़अ-फ़ज़अ करें या सन्न करें, हमारे लिए ख़लासी की कोई सूरत नहीं।”

سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجْرٌ أَمْ صَبْرٌ نَا مَا لَنَا مِنْ مُجِيبٍ ۝۲۳

۝۲۱

अब तो यक्साँ है, ख़्वाह हम बेकरारी का मुज़ाहिरा करें, चीखें-चिल्लायेँ या सन्न करें, हमारे लिए कोई मफ़र नहीं, हमारे बचने की कोई सूरत नहीं।

आयत 22 से 23 तक

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَهَا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعَدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِي عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي فَلَا تَلُمُونِي وَلَوْلَا أَنْفُسُكُمْ مَا آتَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِمُصْرِخِي إِنْ كَفَرْتُمْ بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝۲۴ وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۝۲۵

आयत 22

“और शैतान कहेगा (उस वक़्त) जब फ़ैसला चुका दिया जायेगा”

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ

जब तमाम बनी नौए इंसान की किस्मत का फ़ैसला हो जायेगा और अहले जन्नत को जन्नत की तरफ़ और अहले जहन्नम को जहन्नम की तरफ़ ले जाया जा रहा होगा तो शैतान कहेगा:

“(देखो लोगो!) अल्लाह ने तुमसे एक वादा किया था सच्चा वादा, और मैंने भी तुमसे वादे किए थे तो मैंने तुमसे (अपने वादों की) ख़िलाफ़वर्ज़ी की।”

إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ

“लेकिन मेरे पास तुम पर कोई इख़्तियार नहीं था”

وَمَا كَانَ لِي عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ

मैं तुम पर किसी किस्म का जबर नहीं कर सकता था और तुम्हें ज़बरदस्ती बुराई की तरफ़ नहीं ला सकता था। यह इख़्तियार मुझे अल्लाह ने दिया ही नहीं था।

“सिवाय इसके कि मैंने तुम लोगों को दावत दी और तुमने मेरी दावत को कुबूल कर लिया।”

إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي

मैंने तुम लोगों को वरगलाया, मासियत (गुनाह) की दावत दी, अल्लाह की नाफ़रमानियों और बेहयाई के कामों की तरगीब दी और तुम लोगों ने मेरा कहा मान लिया।

“तो अब तुम लोग मुझे मलामत ना करो, बल्कि अपने आपको मलामत करो।”

فَلَا تُلْؤُمُونِي وَلَوْلَمْوَا أَنْفُسَكُمْ

क्योंकि अल्लाह तआला के सारे अहकाम तुम्हारे सामने थे, उसके रास्ते के तमाम निशानात तुम पर वाज़ेह थे। उनसे रूगरदानी करके तुम लोगों ने अपनी मर्ज़ी से मेरे रास्ते को इख़्तियार किया। मैं तुम्हें ज़बरदस्ती खींच कर इस तरफ़ नहीं लेकर आया। चुनाँचे आज मुझे कोसने के बजाय अपने आपको लअन-तअन करो।

“अब ना मैं तुम्हारी फ़रियाद रसी कर सकता हूँ, ना तुम मेरी फ़रियाद को पहुँच सकते हो।”

مَا أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِمُصْرِخِي

“बिलाशुबह मैं इंकार करता हूँ उसका जो क़बूल अज़ तुम मुझे (अल्लाह का) शरीक ठहराते रहे थे।”

إِنِّي كَفَرْتُ بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ

तुमने दुनिया में जो कुछ भी किया था इंतहाई ग़लत किया था। तुम लोगों को अल्लाह के अहकाम पर अमल करना चाहिए था और उसके वादे पर ऐतबार करना चाहिए था। तुम लोग ना सिर्फ़ अल्लाह के अहकाम को पसेपुशत डाल कर मेरा कहना मानते रहे बल्कि मुझे उसके बराबर का दर्जा भी देते रहे। आज मैं तुम्हारे उन सब ऐतकादात (मान्यताओं) से ऐलाने बराअत करता हूँ।

“यक्कीन ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।”

إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

आयत 23

“और दाखिल किए जायेंगे वो लोग जो ईमान लाये होंगे और जिन्होंने नेक अमल किए होंगे ऐसे बागात में जिनके नीचे नदियाँ बहती होंगी, वो उसमें रहेंगे हमेशा-हमेश अपने रब के हुक्म से। वहाँ उनकी मुलाक़ात की दुआ (एक-दूसरे पर) सलाम होगी।”

وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ

تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ

تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۝

आयात 24 से 27 तक

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ۚ تُؤْتِي أُكْلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۚ

आयत 24

“क्या तुमने गौर नहीं किया कि अल्लाह ने कैसी मिसाल बयान की है कलिमा-ए-तैय्यबा की!”

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً

कलिमा-ए-तैय्यबा से आमतौर पर तो कलिमा-ए-तौहीद “ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुन रसूल अल्लाह” मुराद लिया जाता है। इसमें कुछ शक नहीं कि ला इलाहा इल्लल्लाह अफ़ज़ल ज़िक्र है, लेकिन यहाँ कलिमा-ए-तैय्यबा से तौहीद पर मन्त्री अक्काइद व नज़रियात, भलाई की हर बात, कलामे तैय्यब और हक़ की दावत मुराद है।

“(इसकी मिसाल ऐसी है) जैसे एक पाकीज़ा दरख़्त, उसकी जड़ मज़बूत और शाखें आसमान में हैं।”

كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ۚ

आयत 25

“यह (दरख़्त) हर फ़सल में अपना फल लाता है अपने रब के हुक्म से।”

تُؤْتِي أُكْلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا

इस दरख़्त की जड़ें ज़मीन में मज़बूती से जमी हुई हैं, उसकी शाखें आसमान से बातें कर रही हैं और उसका फल भी मुतवातर (लगातार) आ रहा है।

“और अल्लाह मिसालें बयान करता है लोगों के लिए ताकि वो नसीहत अख़ज़ करें।”

وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ

⑤

कोई भलाई का काम हो, नेकी की दावत हो, राहे हक़ की कोई तहरीक हो, जिसने भी ऐसी किसी नेकी की इब्तदा की उसने गोया अपने लिए एक बहुत उम्दाह फलदार दरख़्त लगा लिया। यह दरख़्त जब तक बाक़ी रहेगा अपने असरात व समरात से ना मालूम किस-किस को फैज़याब करेगा। जैसे किसी ने भलाई की दावत दी और उस दावत को कुछ लोगों ने कुबूल किया, उन्होंने उस दावत को मज़ीद आगे फैलाया, यूँ उसकी नेकी का हल्का-ए-असर वसीअ से वसीअतर होता जायेगा और ना मालूम मुस्तक़बिल में ऐसे नेक असरात मज़ीद कहाँ-कहाँ तक पहुँचेंगे। हज़रत जरीर बिन अब्दुलल्लाह बिन जाबिर रज़ि. रिवायत करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया:

مَنْ سَنَّ فِي الْإِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَلَهُ أَجْرُهَا وَأَجْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا بَعْدَهُ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَنْقُصَ مِنْ أَجُورِهِمْ شَيْءٌ وَمَنْ سَنَّ فِي الْإِسْلَامِ سُنَّةً سَيِّئَةً كَانَ عَلَيْهِ وِزْرُهَا وَوِزْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ بَعْدِهِ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَنْقُصَ مِنْ أَؤْزَارِهِمْ شَيْءٌ

“जिस किसी ने इस्लाम में किसी नेकी काम का आगाज़ किया तो उसके लिए उस काम अज़्र भी होगा और बाद में जो कोई भी उस पर अमल करेगा उसका अज़्र भी उसको मिलेगा, लेकिन उनके अज़्र व सबाब में कोई कमी नहीं होगी। और जिस किसी ने इस्लाम में किसी बुरी शय का आगाज़ किया तो उस पर उसका गुनाह भी होगा और बाद में जो कोई भी उस पर अमल करेगा उसके गुनाहों का बोझ भी उस पर डाला जायेगा, मगर उनके गुनाहों में कोई कमी नहीं होगी।”⁽⁸⁾

आयत 26

“और कलिमा-ए-खबीस की मिसाल ऐसी है जैसे एक घटिया दरख्त (झाड़-झंकाड़), जिसे ज़मीन के ऊपर से ही उखाड़ लिया जाये, उसके लिए कोई करार नहीं।”

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۝

भलाई और उसके असरात के मुकाबले में बुराई, बुराई की दावत और बुराई के असरात की मिसाल ऐसी है जैसे एक बहुत उम्दा, मज़बूत और फलदार दरख्त के मुकाबले में झाड़-झंकाड़। ना उसकी जड़ों में मज़बूती, ना वजूद को सबात (stability), ना साया, ना फल। बुराई बाज़ अवकात लोगों में रिवाज भी पा जाती है, उन्हें भली भी लगती है और उसकी ज़ाहिरी खूबसूरती में लोगों के लिए वक़्ती तौर पर कशिश भी होती है। जैसे माले हुराम कसरत और चमक-दमक लोगों को मुतास्सिर करती है मगर हकीकत में ना तो बुराई को सबात (stability) और दवाम (continuous) हासिल है और ना उसके असरात में लोगों के लिए फ़ायदा!

आयत 27

“अल्लाह सबात अता करता है अहले ईमान को क़ौले साबित के ज़रिये से दुनिया की ज़िन्दगी में भी और आखिरत में भी।”

يُعَيِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ

यहाँ क़ौले साबित से मुराद ईमान है। आखिरत पर पुख्ता ईमान रखने वाला शख्स दुनिया के अंदर अपने किरदार और नज़रियात में मज़बूत और साबित क़दम होता है। उसके हौसले, उसके मौक़फ़ और उसकी सलाहियतों को अल्लाह तआला इस्तक्रामत बख़्शता है। ऐसे लोगों को इसी तरह का सबात आखिरत में भी अता होगा।

“और गुमराह कर देता है अल्लाह ज़ालिमों को, और अल्लाह करता है जो चाहता है।”

وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۝

आयात 28 से 34 तक

الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَةَ اللَّهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ۖ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا وَبِئْسَ الْقَرَارُ ۝ وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَدَاءً لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِهِ قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِن مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ۝ قُلْ لِعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعَ فِيهِ وَلَا خِلَالٍ ۝ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَكُمْ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ

وَسَخَّرَ لَكُمُ الْإِنهَرَ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآبِّينَ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۖ وَآتَكُم مِّن كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ وَإِن تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تَحْصُوهَا إِنَّ الْإِنسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ﴿٢٨﴾

आयत 28

“क्या तुमने शौर नहीं किया उन लोगों के हाल पर जिन्होंने अल्लाह की नेअमत को बदल दिया कुफ़र से”

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَةَ اللَّهِ كُفْرًا

अल्लाह तआला ने उन्हें हिदायत की नेअमत से नवाज़ा था, मगर उन्होंने हिदायत हाथ से देकर ज़लालत और गुमराही खरीद ली। अल्लाह, उसके रसूल और उसकी किताब से कुफ़र करके उन्होंने अल्लाह की नेअमत से खुद को महरूम कर लिया।

“और उन्होंने अपनी क़ौम को ला उतारा तबाही के घर में”

وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٩﴾

जैसे सूरह हूद, आयत 98 में फ़िरऔन के बारे में फ़रमाया गया है कि रोज़े महशर वह अपनी क़ौम की क़यादत करता हुआ आयेगा और उस पूरे जुलूस को लाकर जहन्नम के घाट उतार देगा। इसी तरह तमाम क़ौमों और तमाम मआशरों के गुमराह लीडर अपने-अपने पैरोकारों को जहन्नम में पहुँचाने का बाइस बनते हैं।

आयत 29

“यह (दारुल ब्वार) जहन्नम है, वो इसमें दाखिल होंगे, और वो बहुत ही बुरी जगह है ठहरने की।”

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا وَبئس القرار ﴿٣٠﴾

आयत 30

“और इन्होंने अल्लाह के मद्दे-मुक़ाबिल (शरीक) ठहरा दिये हैं ताकि गुमराह करें लोगों को उसके रास्ते से।”

وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِهِ

यानि इन्होंने झूठे मअबूदों का ढोंग इसलिये रचाया है ताकि लोगों को अल्लाह की बंदगी से हटाकर गुमराह कर दें। “अन्द” जमा है “ن” की, इसके मायने मद्दे-मुक़ाबिल के हैं। सूरतुल बक्ररह की आयत 22 में भी हम पढ़ आये हैं: {فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا} “तो अल्लाह के मद्दे-मुक़ाबिल ना ठहराया करो।” इस मामले की नज़ाकत का अंदाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि एक सहाबी रज़ि. ने हुज़ूर ﷺ से मुहावरतन अर्ज़ किया: “مَا شَاءَ اللَّهُ وَمَا شِئْتُ” “जो अल्लाह चाहे और जो आप चाहें” तो आप ﷺ ने उन्हें फ़ौरन टोक दिया और फ़रमाया: ((أَجْعَلُنِي لِلَّهِ وَمَا شَاءَ اللَّهُ وَحْدَةً)) (9) “क्या तूने मुझे अल्लाह का मद्दे-मुक़ाबिल बना दिया? (बल्कि वही होगा) जो तन्हा अल्लाह चाहे!” यानि मशियत तो अल्लाह ही की है, जो होगा उसी की मशियत और मर्ज़ी से होगा। इख़्तियार सिर्फ़ उसी का है, और किसी का कोई इख़्तियार नहीं।

“आप कहिये कि (दुनिया की ज़िन्दगी में) तमाम फ़ायदा उठा लो, फिर यक़ीनन तुम्हारा लौटना आग ही की तरफ़ है।”

قُلْ مَتَّعُوا فَإِن مَصِيبِكُمْ إِلَى النَّارِ ﴿٣١﴾

आयत 31

“आप कहिए मेरे उन बंदों से जो ईमान लाये हैं कि वो नमाज़ कायम करें”

قُلْ لِّلْعِبَادِ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ

यहाँ यह नुक्ता लायक-ए-तवज्जो है कि **قُلْ لِّلْعِبَادِ** के अल्फ़ाज़ से रसूल अल्लाह **ﷺ** को मुख़ातिब करके अहले ईमान को बिल्वास्ता हुक्म दिया जा रहा है और **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا** के अल्फ़ाज़ से अहले ईमान को बराहेरास्त मुख़ातिब नहीं किया गया। इस सिलसिले में पहले भी बताया जा चुका है कि पूरे मक्की कुरान में **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا** के अल्फ़ाज़ से बराहेरास्त मुसलमानों से खिताब नहीं किया गया। (सूरह हज में एक मक्काम पर यह अल्फ़ाज़ आये हैं मगर इस सूरह को मक्की या मदनी होने के बारे में इख़तलाफ़ है।) इसमें जो हिकमत है वो अल्लाह ही बेहतर जानता है। जहाँ तक मुझे इसकी वजह समझ में आयी है वो मैं आपको बता चुका हूँ कि **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا** का तर्जें खिताब उम्मत के लिए है और मक्की दौर में मुसलमान अभी एक उम्मत नहीं बने थे। मुसलमानों को उम्मत का दर्जा मदीने में आकर तहवीले क़िब्ला के बाद मिला। पिछले दो हज़ार बरस से उम्मते मुस्लिमा के मन्सब पर यहूदी फ़ाइज़ थे। उन्हें इस मन्सब से माज़ूल करके मुहम्मदुन रसूल अल्लाह **ﷺ** की उम्मत को उम्मते मुस्लिमा का दर्जा दिया गया और तहवीले क़िब्ला इस तब्दीली की ज़ाहिरी अलामत क़रार पाया। यानि यहूदियों के क़िबले की हैसियत बतौर क़िब्ला ख़त्म करने का मतलब यह क़रार पाया कि उन्हें उम्मते मुस्लिमा के मन्सब से माज़ूल कर दिया गया है। चुनाँचे कुरान में **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا** के अल्फ़ाज़ के ज़रिये मुसलमानों से खिताब उसके बाद शुरू हुआ।

“और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते रहें ख़ुफ़िया और ऐलानिया, इससे पहले-पहले कि वो दिन आ जाये जिसमें ना कोई ख़रीद व फ़रोख़्त होगी और ना कोई दोस्ती काम आयेगी।”

وَيُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِّن قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعَ فِيهِ وَلَا خِلَالٍ ۝۱

यह आयत सूरतुल बक्ररह की आयत 254 से बहुत मिलती-जुलती है। वहाँ बैय (खरीदो-फ़रोख़्त) और दोस्ती के अलावा शफ़ाअत की भी नफ़ी की गई है: **{يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ائْتِفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُم مِّن قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعَ فِيهِ وَلَا خِلَالٍ وَلَا شَفَاعَةً}** “यानि उस दिन से पहले-पहले हमारे अता करदा रिज़क़ में से खर्च करलो जिसमें ना कोई बैय (खरीद-फ़रोख़्त) होगी, ना कोई दोस्ती काम आयेगी और ना ही किसी की शफ़ाअत फ़ायदेमंद होगी।

आयत 32

“अल्लाह ही है जिसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को और उतारा आसमान से पानी, फिर निकाला उसके ज़रिये से फलों की शक़ल में तुम्हारे लिए रिज़क़।”

“और मुख़बर कर दिया तुम्हारे लिये क़श्ती को कि वो चले समुन्दर में उसके हुक्म से, और उसने मुख़बर कर दिए तुम्हारे लिये दरिया (और नहरें वगैरह)।”

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ ۝۲

आयत 33

“और मुख़बर कर दिया तुम्हारे लिए सूरज और चाँद को, कि मुसलसल चल रहे हैं, और मुख़बर कर दिया तुम्हारे लिए रात को और दिन को।”

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۝۳

इन तमाम चीज़ों के गिनवाने से इंसान को यह जतलाना मक़सूद है कि ज़मीन के दामन और आसमान की वुसअतों में अल्लाह की तमाम तख़लीक़ात और फ़ितरत की तमाम कुव्वतें मुसलसल इंसान की ख़िदमत में उसकी नफ़ा रसानी के लिए मसरूफ़ेकार हैं और वो इसलिये कि इस कायनात में इंसान ही एक ऐसी मख़लूक़ है जो सब मख़लूक़ात से आला है। अल्लाह ने यह बिसात-ए-कौन व मकान इंसान ही के लिए बिछाई है और बाक़ी तमाम अशया (चीज़ों) को इसलिये पैदा किया है

कि वो बिलवास्ता या बिलावास्ता उसकी ज़रूरियात पूरी करें। यही बात सूरतुल बक्ररह की आयत 29 में इस तरह बयान फ़रमाई गई है: {هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا} यानि ये ज़मीन पर जो कुछ भी नज़र आ रहा है यह अल्लाह ने तुम्हारे (इंसानो के) लिए पैदा किया है। और उन चीज़ों को तुम्हारी ज़रूरतें पूरी करने के लिए मुसख़्खर कर दिया है।

आयत 34

“और उसने तुम्हें वो सब कुछ दिया जो तुमने उससे माँगा।”

وَأَتَكُمْ مِنْ كُلِّ مَسَآئِلُهُ

यह माँगना शऊरी भी और ग़ैरशऊरी भी। यानि वो तमाम चीज़ें भी अल्लाह ने हमारे लिए फ़राहम की हैं जिनका तक्काज़ा हमारा वजूद करता है और हमें अपनी ज़िन्दगी को क़ायम रखने के लिए उनकी ज़रूरत है। क्योंकि इंसान को पूरी तरह शऊर नहीं है कि उसे किस-किस अंदाज़ में किस-किस चीज़ की ज़रूरत है और उसकी ज़रूरत की यह चीज़ें उसे कहाँ-कहाँ से दस्तयाब होंगी।

अल्लाह तआला ने इंसान की दुन्यवी ज़िन्दगी की ज़रूरतें पूरी करने लिए असबाब व नताइज के ऐसे-ऐसे सिलसिले पैदा कर दिए हैं जिनका अहाता करना इंसानी अक्ल के बस में नहीं है। अल्लाह ने बहुत सी ऐसी चीज़ें भी पैदा कर रखी हैं जिनसे इंसान की ज़रूरतें अनजाने में पूरी हो रही हैं। मसलन एक वक़्त तक इंसान को कब पता था कि कौनसी चीज़ में कौनसा विटामिन पाया जाता है। मगर वो विटामिन्स मुख़्तलिफ़ ग़िज़ाओं के ज़रिये से इंसान की ज़रूरतें इस तरह पूरी कर रहे थे कि इंसान को इसकी ख़बर तक ना थी। बहरहाल अल्लाह हमें वो चीज़ें भी अता करता है जो हम उससे शऊरी तौर पर माँगते हैं और वो भी जो हमारी ज़िन्दगी और बक्का का फ़ितरी तक्काज़ा हैं।

“और अगर तुम अल्लाह की नेअमतों को गिनना चाहोगे तो नहीं गिन सकोगे। यक़ीनन इंसान बड़ा ही ज़ालिम और बहुत नाशुक्रा है।”

وَأِنْ تَعَدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تَحْصُوهَا إِنَّ الْإِنْسَانَ

لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ﴿٣٥﴾

इंसान के लिए यह मुम्किन ही नहीं कि वो अल्लाह की नेअमतों को गिन सके। कफ़फ़ार (काफ़ की ज़बर के साथ) यहाँ फ़ाल के वज़न पर मुबालगे का सीगा है, यानि नाशुक्रा में बहुत बढ़ा हुआ।

आयत 35 से 41 तक

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ آمِنًا وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ الْأَصْنَامَ ﴿٣٥﴾ رَبِّ إِنَّهُمْ أَضَلُّنَ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ فَمَنْ تَبِعْنِي فَإِنَّهُ مِنِّي وَمَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٦﴾ رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بُوَادٍ غَيْرِ ذِي زَرْعٍ عِندَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ﴿٣٧﴾ رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ وَمَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿٣٨﴾ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٩﴾ رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ﴿٤٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾

आयत 35

“और याद करो जब कहा इब्राहीम ने कि ऐ मेरे रब इस शहर (मक्का) को बना दे अमन की जगह और बचाए रख मुझे और मेरी औलाद को इससे कि हम बुतों की परस्तिश करें।”

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ آمِنًا
وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ الْأَصْنَامَ ٢٥

यह मज़मून सूरतुल बक्ररह के पन्द्रहवें रकूअ के मज़मून से मिलता-जुलता है। हज़रत इब्राहीम अलै. से मा-क़बूल ज़माने की जो तारीख़ हमें मालूम हुई है उसके मुताबिक़ उस दौर की सबसे बड़ी गुमराही बुतपरस्ती थी। आप अलै. से पहले की तमाम अक़वाम गुमराही में मुब्तला थीं। आपकी अपनी क़ौम का इस सिलसिले में यह हाल था कि उन्होंने एक बहुत बड़े बुतखाने में बहुत से बुत सजा रखे थे। इन्हीं बुतों का सूरतुल अम्बिया में ज़िक़्र मिलता है कि हज़रत इब्राहीम अलै. ने उनको तोड़ा था। इसके अलावा आपकी क़ौम सितारों की पूजा भी करती थी, जबकि नमरूद ने उन्हें सियासी शिर्क में भी मुब्तला कर रखा था। वह इख़्तियारे मुतलक़ का दावेदार था और जिस चीज़ को वह चाहता जायज़ करार देता और जिसको चाहता ममनूअ (नाजायज़)।

आयत 36

“ऐ मेरे परवरदिगार! इन बुतों ने (पहले भी) बहुत से लोगों को गुमराह किया है। तो जो कोई मेरी पैरवी करे वो तो बिलाशुबह मुझसे है”

رَبِّ إِنَّهُمْ أَضَلُّنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ فَمَنْ تَبِعَنِي
فَإِنَّهُ مِنِّيَّ

मैंने खुद को हर क्रिस्म के शिर्क से पाक कर लिया है, अब जो लोग मेरी पैरवी करें, शिर्क से दूर रहें, तौहीद के रास्ते पर चलें, ऐसे लोग तो मेरे ही साथी हैं, उनके साथ तो मेरा वादा पूरा होगा।

“और जो मेरी नाफ़रमानी करे तो बिलाशुबह तू बख़्शने वाला मेहरबान है।”

وَمَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ٢٦

हज़रत इब्राहीम अलै. की तबीयत के बारे में हम सूरह हूद में अल्लाह तआला का यह फ़रमान पढ़ चुके हैं: {إِبْرَاهِيمَ الْحَكِيمَ} (आयत 75) कि आप बहुत ही नरम दिल, हलीमुल तबीअ और हर वक़्त अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करने वाले थे। चुनाँचे जब गुनहगारों का ज़िक़्र हुआ तो आपने अल्लाह की सिफ़ाते ग़फ़़ारी और रहीमी का ज़िक़्र करने पर ही इक़तफ़ा (संतोष) किया है। बिल्कुल इसी अंदाज़ में हज़रत ईसा अलै. की इल्तजा (request) का ज़िक़्र सूरह मायदा में आया है: {إِنْ تَعَذَّلْتُمْ فَإِنَّكُمْ عِبَادِي وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ} (आयत 118) यानि परवरदिगार! अगर तू उन्हें अज़ाब देगा तो वो तेरे ही बंदे हैं, तू जिस तरह चाहे उन्हें अज़ाब दे, तेरा इख़्तियार मुतलक़ है। लेकिन अगर तू उन्हें माफ़ कर दे तो भी तेरे इख़्तियार और तेरी हिक़मत पर कोई ऐतराज़ करने वाला नहीं है।

आयत 37

“ऐ हमारे रब! मैंने अपनी औलाद (की एक शाख) को आबाद कर दिया है इस बे-आब-ओ-गयाह वादी (बंजर भूमी) में तेरे मोहतरम घर के पास”

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زَرْعٍ
عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ

ऐ हमारे परवरदिगार! तेरे हुक्म के मुताबिक़ मैंने यहाँ तेरे इस मोहतरम घर के पास अपनी औलाद को लाकर आबाद कर दिया है। हज़रत इब्राहीम अलै. की दुआ में पहले रब्बी, रब्बी (ऐ मेरे परवरदिगार!) का सीगा आ रहा था मगर अब “रब्बना” जमा का सीगा आ गया है। मालूम होता है कि इस मौक़े पर आप अलै. के साथ हज़रत इस्माईल अलै. भी शामिल हो गये हैं। यहाँ पर عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ के अल्फ़ाज़ से उन रिवायात को भी तक्वियत (मज़बूती) मिलती है जिनके मुताबिक़ बैतुल्लाह की तामीर सबसे पहले हज़रत आदम अलै. ने की थी। उन रिवायात में यह भी मज़कूर है कि हज़रत आदम अलै. का तामीर करदा बैतुल्लाह इब्तदाई ज़माने में गिर गया और सैलाब के सबब उसकी दीवारें वगैरह भी बह गयीं, सिर्फ़

बुनियादें बाक्री रह गयीं। उन्हीं बुनियादों पर फिर हज़रत इब्राहीम अलै. और हज़रत इस्माईल अलै. ने उसकी तामीर की जिसका ज़िक्र सूरतुल बक्ररह की आयत 127 में मिलता है: {وَأَذِّنْ لَهُمْ أَزْوَاجَهُمْ الْفُؤَادَ مِنَ الْيَمِينِ وَاسْمِعِ يُسُ} बहरहाल हज़रत इब्राहीम अलै. अर्ज़ कर रहे हैं:

“ऐ हमारे परवरदिगार! ताकि ये नमाज़ कायम करें, तू तो लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ माइल कर दे”

رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِنَ النَّاسِ
تَهْوِي إِلَيْهِمْ

लोगों के दिलों में उनके लिए मुहब्बत पैदा हो जाये, लोग ऐतराफ़ व जवानिब से उनके पास आयें, ताकि इस तरह उनके लिए यहाँ रहने और बसने का बंदोबस्त हो सके।

“और उनको रिज़क अता कर फलों से, ताकि वो शुक्र अदा करें।”

وَأَرْزُقْهُمْ مِنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ②

आयत 38

“ऐ हमारे परवरदिगार! तू खूब जानता है जो कुछ हम छुपाते हैं और जो कुछ हम ज़ाहिर करते हैं।”

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ

“और अल्लाह पर तो कोई शय मछ्फ़ी (छुपी) नहीं ज़मीन में और ना आसमान में।”

وَمَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي
السَّمَاءِ ③

आयत 39

“कुल शुक्र और कुल सना उस अल्लाह के लिए है जिसने मुझे अता फ़रमाये, बावजूद बुढ़ापे के इस्माईल और इस्हाक़ अलै. (जैसे बेटे)।”

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ
وَإِسْحَاقَ

जब हज़रत इस्माईल अलै. की वलादत हुई तो हज़रत इब्राहीम अलै. की उम्र 81 बरस थी और उसके कई साल बाद हज़रत इस्हाक़ अलै. पैदा हुए।

“यक़ीनन मेरा परवरदिगार दुआओं को सुनने वाला है।”

إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ④

आयत 40

“ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे बना दे नमाज़ कायम करने वाला और मेरी औलाद में से भी”

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي

यानि मुझे तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे कि मैं नमाज़ को पूरी तरह कायम रखूँ और मेरी औलाद को भी तौफ़ीक़ बख़्श दे कि वो लोग भी नमाज़ कायम करने वाले बनकर रहें।

“ऐ हमारे परवरदिगार! मेरी इस दुआ को कुबूल फ़रमा।”

رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ⑤

आयत 41

“ऐ हमारे परवरदिगार! मुझे, मेरे वालिदैन् और तमाम मोमिनीन को बख्श दे, जिस दिन हिसाब कायम हो।”

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ
الْحِسَابُ ﴿٣١﴾

आयात 42 से 52 तक

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ﴿٣٢﴾ مُهْطِعِينَ مُقْنِعِينَ رُءُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَأَفْدَتْهُمْ لَهُمْ هَوَاءٌ ﴿٣٣﴾ وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ نُنِجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرَّسُولَ أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُم مِّنْ زَوَالٍ ﴿٣٤﴾ وَسَكَنْتُمْ فِي مَسْكَنِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْآمَثَالَ ﴿٣٥﴾ وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ وَإِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٣٦﴾ فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفَ وَعْدِهِ رُسُلَهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٣٧﴾ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمُوتُ وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٣٨﴾ وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٣٩﴾ سَرَابِئِلُهُمْ مِّنْ قِطْرَانٍ تَعْشَىٰ وَجُوهُهُمُ النَّارُ ﴿٤٠﴾ لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٤١﴾ هَذَا بَلَّغٌ لِلنَّاسِ وَلِيُنذَرُوا بِهِ وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا هُوَ إِلَهُ الْوَاحِدُ وَلِيَدَّكَّرَ أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿٤٢﴾

आयत 42

“और आप हरगिज़ ना समझें अल्लाह को गाफ़िल उससे जो ये ज़ालिम कर रहे हैं।”

“यकीनन वो उन्हें मोहलत दे रहा है उस दिन तक जिसमें निगाहें फटी की फटी रह जायेंगी।”

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ

إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ﴿٣٢﴾

आयत 43

“वो दौड़ते होंगे (महशर की तरफ़) अपने सरो को ऊपर उठाए, नहीं लौटेगी उनकी तरफ़ उनकी निगाह, और उनके दिल उड़े हुए होंगे।”

مُهْطِعِينَ مُقْنِعِينَ رُءُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ
وَأَفْدَتْهُمْ لَهُمْ هَوَاءٌ ﴿٣٣﴾

खौफ और दहशत के सबब नज़रें एक जगह जम कर रह जायेंगी और इधर-उधर हरकत करना भी भूल जायेंगी। यह मैदाने हश्र में लोगो की कैफ़ियत का नक्शा खींचा गया है।

आयत 44

“और (ऐ नबी ﷺ) ख़बरदार कर दीजिए लोगों को उस दिन से जब उन पर अज़ाब आयेगा”

وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ

“तो कहेंगे वो लोग जिन्होंने जुल्म की रविश इख्तियार की थी: ऐ हमारे परवरदिगार! हमें मोहलत दे दे बस थोड़ी सी मुद्दत तक, हम तेरी दावत कुबूल कर लेंगे और रसूलों की पैरवी करेंगे।”

فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخْرِنَا إِلَىٰ أَجَلٍ
قَرِيبٍ نُّجِيبُ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعُ الرَّسُولَ

“(जवाब में कहा जायेगा) क्या तुम वही लोग नहीं हो जो पहले क्रसमें खाया करते थे कि तुम्हारे लिए कोई ज़वाल नहीं है।”

أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلِ مَا لَكُم مِّنْ زَوَالٍ

۞

कि हमारा इक़तदार, हमारी यह शान व शौकत, हमारी यह जागीरें, यह सब कुछ हमारी बड़ी सोची-समझी मन्सूबा बंदियों का नतीजा है, इन्हें कहाँ से ज़वाल आयेगा!

आयत 45

“और तुम आबाद थे उन्हीं लोगो के मस्कानों (घरों) में जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया था”

وَسَكَنْتُمْ فِي مَسْكَانِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ

तुम्हारे आस-पास के इलाक़ों में वो क़ौमें आबाद थीं जो माज़ी (past) में अल्लाह के अज़ाब का निशाना बनीं। क़ौमे आद भी इसी जज़ीरा नुमाए अरब में आबाद थी, क़ौमे समूद के मसाकिन भी तुम्हें दावते इबरत देते रहे, क़ौमे मदयन का इलाक़ा भी तुमसे कुछ ज़्यादा दूर नहीं था और क़ौमे लूत के शहरों के आसार से भी तुम लोग खूब वाकिफ़ थे।

“और तुम पर अच्छी तरह वाज़ेह हो गया था कि हमने उनके साथ क्या सुलूक किया था, और हमने तुम्हारे लिए मिसालें भी बयान कर दी थीं।”

وَتَبَيَّنَ لَكُم كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ

الْأَمْثَالَ ۞

उनके हालात पूरी तरह खोल कर तुम लोगों को सुना दिए गये थे। यह तज़क़िरा बि-अय्यामिल्लाह की तफ़सीलात की तरफ़ इशारा है जो कुरान में बयान हुई हैं और इस सिलसिले में हुज़ूर ﷺ से इसी सूरत की आयत 5 में खुसूसी तौर पर फ़रमाया गया: {وَذَرِّهُمْ يَوْمَئِذٍ} “कि आप अल्लाह के दिनों (अक़वामे गुज़िशता के वाकिआते अज़ाब) के हवाले से इन लोगों को खबरदार करें।”

आयत 46

“और उन्होंने अपनी सी चालें चलीं”

وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ

ऐ कुरैशे मक्का! जिस तरह आज तुम हमारे नबी ﷺ के खिलाफ़ अपनी चालें चल रहे हो, इसी तरह तुमसे पहले वाले लोगों ने भी कुछ कमी नहीं की थी। जहाँ तक उनका बस चला था उन्होंने अपनी चालें चली थीं। क़ौमे नूह, क़ौमे हूद, क़ौमे सालेह और क़ौमे लूत के सरदारों ने अपने रसूलों के खिलाफ़ जो कुछ किया और जो कुछ कहा उसकी तफ़सीलात हम तुम्हें सुना चुके हैं। और क़ौमे शुऐब के सरदारों की मजबूरी का ज़िक्र भी हम कर चुके हैं जो तुम लोगों की मजबूरी से मिलती-जुलती थी। यानि उनका बेचारगी से यह कहना कि अगर तुम्हारा क़बीला तुम्हारी पुश्त पर ना होता तो हम अब तक तुम्हें संगसार कर चुके होते। चुनाँचे हमारे लिए और हमारे नबी ﷺ के लिए तुम्हारी ये चालें, यह साज़िशें और ये रेशा दवानियाँ कोई अनहोनी नहीं हैं। अलबत्ता तुम लोग अपनी पेशरू अक़वाम (पहली क़ौमों) के वाकिआत के आइने में अपने मुस्तक़बिल और अन्जाम की झलक देखना चाहो तो साफ़ देख सकते हो। तुम लोग अंदाज़ा कर सकते हो कि तुमसे पहले उन मुशरिकीने हक़ की चालें किस हद तक कामयाब हुईं और तुम तजज़िया (analysis) कर सकते हो कि हर बार हक़ व बातिल की कशमकश का आखिरी नतीजा क्या निकला।

“और अल्लाह ही के कब्ज़ा-ए-कुदरत में हैं उनकी तमाम चालें और उनकी चालें ऐसी तो ना थीं कि उनसे पहाड़ टल जाते।”⁽¹⁰⁾

وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ وَإِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ

الْجِبَالُ ﴿٣٧﴾

अल्लाह तआला उनकी तमाम चालों का अहाता किए हुए था और यह मुमकिन नहीं था कि अल्लाह की मर्ज़ी और मशियत के खिलाफ़ उनका कोई मन्सूबा कामयाब हो जाता। बहरहाल उनकी चालें और मन्सूबेबंदियाँ अल्लाह तआला के मुक़ाबले में कुछ ऐसी नहीं थीं कि उनके सबब पहाड़ अपनी जगह बदलने पर मजबूर हो जाते।

आयत 47

“तो आप यह मत समझें कि अल्लाह अपने उस वादे के खिलाफ़ करेगा जो उसने अपने रसूलों से किया।”

فَلَا تَحْسِبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفًا وَعْدَهُ رُسُلُهُ

यहाँ पर रसूल के बजाय रसूल जमा का सीगा इस्तेमाल हुआ है, यानि तमाम रसूलों के साथ अल्लाह का यह मुस्तक़िल वादा रहा कि तुम्हारी मदद की जायेगी और आखरी कामयाबी तुम्हारी ही होगी। जैसा कि सूरतुल मुजादला की आयत 21 में फ़रमाया: {كَتَبَ اللَّهُ لَأَعْلَيْنَاكَ أَوْسُ} यानि अल्लाह ने तय किया हुआ है, लिख कर रखा हुआ है कि मैं और मेरे रसूल ग़ालिब आकर रहेंगे। दरमियान में कुछ ऊँच-नीच होगी, तकलीफ़ें भी आएँगी, आज़माईशों का सामना भी करना होगा, मगर फ़तह हमेशा हिज़बुल्लाह ही की होगी। आज़माईशों के उन मरहलों के बारे में सूरतुल बक्ररह में फ़रमाया:

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ﴿٥٥﴾

“और हम ज़रूर तुम्हारी आज़माईश करेंगे किसी क़द्र ख़ौफ़ और भूख से और माल और जानों और समरात (फलों) के नुक़सान से, तो आप सन्न करने वालों को बशारत सुना दें।”

इसके बाद सूरतुल बक्ररह में ही फ़रमाया:

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُدْخَلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ الْبَأْسَاءُ وَالضَّرَاءُ وَزُلُّوا حَتَّى

يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَى نَصُرَ اللَّهُ إِنْ نَصَرَ اللَّهُ قَرِيبٌ ﴿٥٦﴾

“क्या तुम समझते हो कि यूँ ही जन्नत में दाखिल हो जाओगे और अभी तुमको पहले लोगों जैसी (मुशक़लात) तो पेश आई ही नहीं। उनको तो (बड़ी-बड़ी) सख़्तियाँ और तकलीफ़ें पहुँची थीं और वो हिला डाले गये थे, यहाँ तक कि पैगम्बर और उनके साथ जो मोमिनीन थे सब पुकार उठे कि कब आयेगी अल्लाह की मदद, आगाह हो जाओ! अल्लाह की मदद करीब है।”

बहरहाल अल्लाह तआला का अपने रसूलों से यह पुख़्ता वादा रहा है कि हक़ व बातिल की इस कशमकश में बिल्आखिर फ़तह उन्हीं की होगी और उन्हें झुठलाने वालों को उनके सामने सज़ा दी जायेगी। यह सारी बातें तफ़सील से कुरान में बयान की जा चुकी हैं ताकि उन लोगों को कोई शक ना रहे।

“यक़ीनन अल्लाह ज़बरदस्त है इन्तेक़ाम लेने वाला।”

إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ﴿٥٧﴾

आयत 48

“जिस दिन ज़मीन बदल दी जायेगी इस ज़मीन के सिवा (किसी और शक़ल में) और आसमानों को भी (बदल दिया जायेगा)।”

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتُ

यह रोज़े महशर के मन्ज़र की तरफ इशारा है। इस सिलसिले में क़बूल अज़ भी कई दफ़ा ज़िक्र किया गया है कि कुरान की फ़राहम करदा तफ़सीलात के मुताबिक़ यूँ लगता है जैसे महशर का मैदान इसी ज़मीन को बनाया जायेगा। उसके लिए ज़मीन की शक़ल में मुनासिब तब्दीली की जायेगी, जैसा कि इस आयत में फ़रमाया गया है। सूरतुल फ़ज्र आयत 21 में इस तब्दीली की एक सूरत इस तरह बताई गई है: {إِذَا دُكِّيَتْ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا} “जब ज़मीन को कूट-कूट कर हमवार (smooth) कर दिया जायेगा।” फिर सूरतुल इन्शक्काक़ आयत 3 में फ़रमाया गया: {وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ} “और जब ज़मीन को खींचा जायेगा।” इस तरह तमाम तफ़सीलात को जमा करके जो सूरतेहाल मुमकिन होती महसूस होती है वो यह है कि ज़मीन के तमाम नशैब व फ़राज़ (ऊँच-नीच) को ख़त्म करके इसे बिल्कुल हमवार भी किया जायेगा और वसीअ (बड़ा) भी। इस तरह इसे एक बहुत बड़े मैदान की शक़ल दे दी जायेगी। जब ज़मीन को हमवार किया जायेगा तो पहाड़ रेज़ा-रेज़ा हो जाएँगे, ज़मीन के पिचकने से इसके अन्दर का सारा लावा बहार निकाल आयेगा और समुन्दर भाप बन कर उड़ जाएँगे। इसी तरह निज़ामे समावी में भी ज़रूरी रद्दो-बदल किया जायेगा, जिसके बारे में सूरतुल क्रियामा में इस तरह बताया गया है: {وَجَمْعُ الشُّمُسِ} (आयत 9) यानि सूरज और चाँद को एकजा (एक) कर दिया जायेगा। वल्लाहु आलम!

हाल ही में एक साहब ने “The Machanics of the Doom’s Day” के नाम से एक किताब लिखी है। यह साहब माहिरे तबीअयात (expert ऑफ़ physics) हैं। मैंने इस किताब का पेश लफ़ज़ भी लिखा है। इसमें उन्होंने बहुत सी ऐसी बातें लिखी हैं जिनकी तरफ़ इससे पहले तवज्जो नहीं की गई। इस लिहाज़ से उनकी यह बातें यकीनन काबिले गौर हैं। उन्होंने ने इस ख़याल का इज़हार किया है कि क़यामत का यह मतलब हरगिज़ नहीं कि उस वक़्त पूरी कायनात ख़त्म हो जायेगी, बल्कि यह वाक़्या सिर्फ़ हमारे निज़ामे शम्सी में रू नुमा होगा। जिस तरह इस कायनात के अंदर किसी गैलेक्सी या किसी गैलेक्सी के किसी हिस्से की मौत वाक़ेअ होती रहती है इसी तरह एक वक़्त आयेगा जब हमारा निज़ामे शम्सी तबाह हो जायेगा और तबाह होने के बाद कुछ और शक़ल इख़्तियार कर लेगा। हमारी ज़मीन भी चूँकि इस निज़ाम का हिस्सा है, लिहाज़ा इस पर भी हर चीज़ तबाह हो जायेगी, और यही क़यामत होगी। वल्लाहु आलम!

“और ये हाज़िर हो जायेंगे अल्लाह के सामने जो वाहिद और क़हहार है।”

وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿٨٩﴾

सूरतुल फ़ज्र आयत 22-23 में उस वक़्त का मंज़र बैन अल्फ़ाज़ बयान हुआ है: {وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا} “और अल्लाह तआला उस वक़्त नुज़ूल फ़रमाएगा, फ़रिश्ते भी क़तार दर क़तार आयेंगे और जहन्नम भी सामने पेश कर दी जायेगी....” अल्लाह तआला के नुज़ूल फ़रमाने की कैफ़ियत का हम तसव्वुर नहीं कर सकते। जिस तरह हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला रात के आखरी हिस्से में आसमाने दुनिया पर नुज़ूल फ़रमाता है, लेकिन हम यह नहीं जानते कि इस नुज़ूल की कैफ़ियत क्या होती है, इसी तरह आज हम नहीं जान सकते कि रोज़े क़यामत जब अल्लाह तआला ज़मीन पर नुज़ूल फ़रमाएगा तो उसकी कैफ़ियत क्या होगी। मुमकिन है तब इसकी हक़ीक़त हम पर मुन्कशिफ़ (disclosure) कर दी जाये।

आयत 49

“और तुम देखोगे मुजरिमों को उस रोज़ कि वो जकड़े हुए होंगे बाहम ज़ंजीरों में।”

وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقْرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٤٩﴾

आयत 50

“उनके कुरते होंगे गंधक के और ढाँपे हुए होगी उनके चेहरों को आग।”

سَرَابِيلُهُمْ مِنْ قَطَرِ انِّ وَتَغْشَى وُجُوهُهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾

आयत 51

“ताकि अल्लाह बदला दे दे हर जान को जो कुछ भी उसने कमाया।
यकीनन अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है।”

لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ ﴿٥١﴾

उस दिन अल्लाह तआला को इतने ज़्यादा लोगों का हिसाब लेते हुए देर नहीं लगेगी।

आयत 52

“यह पहुँचा देना है लोगों के लिए”

هَذَا بَلَاغٌ لِلنَّاسِ

इस कुरान और इसके अहकाम को लोगों तक पहुँचाने की ज़िम्मेदारी हमने मुहम्मदूँ रसूल अल्लाह ﷺ पर डाली थी। आप ﷺ ने यह ज़िम्मेदारी अहसन तरीके से पूरी कर दी है। अब यह ज़िम्मेदारी आप ﷺ की उम्मत के हर फ़र्द पर आयद होती है कि वो ये पैगाम तमाम इंसानों तक पहुँचाये।

“ताकि वो इसके ज़रिये से ख़बरदार कर दिये जायें”

وَلِيُنذِرُوا بِهِ

यानि इस कुरान के ज़रिये से तमाम इंसानों की तज़कीर व तनज़ीर का हक़ अदा हो जाये। इस हवाले से सूरतुल अनआम की आयत 19 के यह अल्फ़ाज़ भी याद कर लीजिए: {وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ هَٰذَا الْقُرْآنِ لِانذِرْكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ} “यह कुरान मेरी तरफ़ वही किया गया है ताकि मैं ख़बरदार करूँ इसके ज़रिये से तुम्हें भी और (हर उस शख्स को) जिस तक भी यह पहुँच जाये।”

“और ताकि वो जान लें कि सिर्फ़ वही मअबूद है अकेला, और इसलिये
कि नसीहत अख़ज़ करें अक़्ल वाले लोग।”

وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا هُوَ إِلَهُ وَاحِدٌ وَلِيَذَّكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ

﴿٥٢﴾

بَارِكْ اللَّهُ لِي وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيمِ وَنَفَعْنِي وَايَاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ۔



सूरतुल हिज्र

तम्हीदी कलिमात

असलूब (pattern) के ऐतबार से सूरतुल हिज्र अपने ग्रुप की बाक़ी तीनों सूरतों से बिल्कुल मुनफ़रिद (unique) है, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह पिछले ज़ेली ग्रुप में सूरह युसुफ़ बाक़ी दोनों सूरतों से मुनफ़रिद थी। चुनाँचे इस ज़ेली ग्रुप की पहली दोनों सूरतों (अल रअद और इब्राहीम) का ना सिर्फ़ मिज़ाज और असलूब एक सा है बल्कि दोनों में निस्बते ज़ौजियत भी है, जबकि सूरतुल हिज्र का मिज़ाज, अंदाज़ और असलूब उन दोनों सूरतों से मुख़्तलिफ़ है।

असलूब में एक बुनियादी फ़र्क़ तो आयात की तवालत (लम्बाई) के सिलसिले में हैं। दूसरी दोनों सूरतों की आयात के मुक़ाबले में सूरतुल हिज्र की आयात निस्बतन छोटी हैं। सूरह रअद के छः रकूअ हैं और इसकी आयात 43 हैं। गोया औसतन एक रकूअ में सात आयात हैं। इसी तरह सूरह इब्राहीम के सात रकूअ हैं और इसकी 52 आयात हैं। यानि इसके एक रकूअ में भी औसतन तक्ररीबन सात आयात ही हैं। अब जब हम इस हवाले से सूरतुल हिज्र को देखते हैं तो इसके छः रकूअ में 99 आयात हैं। यानि एक रकूअ में औसतन 16 आयात हैं। आयात के छोटे होने का मतलब ये है कि इस सूरत का असलूब मक्की दौर की इब्तदाई सूरतों से मिलता है। इससे यह साबित होता है कि सूरतुल हिज्र इब्तदाई चार साल में नाज़िल होने वाली सूरतों में से एक है।

सूरतों के असलूब के बारे में एक बुनियादी नुक्ता बहुत अहम है कि बिल्कुल इब्तदाई दौर में नाज़िल होने वाली सूरतों की आयात छोटी और रिदम (rhythm) बहुत तेज़ है। इनमें सौती आहंग और ग़नाइयत (Sound Compatible & Humility) भी बहुत वाज़ेह है। जबकि बाद में नाज़िल होने वाली सूरतों के मिज़ाज और असलूब में इस लिहाज़ से हमें बतदरीज तब्दीली नज़र आती है और यह तब्दीली मदनी दौर में जाकर अपनी इन्तहा को पहुँच जाती है जहाँ आयात निस्बतन तवील हैं और रिदम बहुत धीमा। चुनाँचे मदनी दौर में आयात दैन, आयतल कुर्सी और आयतुलबिर् जैसी ग़ैर मामूली तवालत की हामिल आयात भी हैं जो इब्तदाई दौर की बाज़ सूरतों से भी ज़्यादा तवील हैं। सूरतों के इस असलूब की मिसाल एक ऐसे दरिया की सी है जो पहाड़ों से निकलता है और बतदरीज सफ़र करते हुए मैदानी इलाक़े में पहुँचता है। पहाड़ी इलाक़े में उसका बहाव बहुत तेज़ और पाट मुख़्तसर होता है। लेकिन मैदानी इलाक़े में आकर उसके बहाव में ठहराव और पाट में वुसअत आ जाती है। जैसे दरिया-ए-सिंध, जो पहाड़ी इलाक़ों से गुज़रते हुए एक नदी का मंज़र पेश करता है, मैदानी इलाक़ों में दरियाखान वगैरह के करीब उसका पानी मीलों में फैला नज़र आता है।

इस मिसाल के मुताबिक़ इब्तदाई दौर की सूरतों का रिदम तेज़ और आयात मोहकम हैं, इनके मज़ामीन में ज़ामियत और गहराई ज़्यादा है, जबकि बाद में नाज़िल होने वाली सूरतों में यह मज़ामिन बतदरीज फैलते गए हैं और फिर इस निस्बत से इबारत का रिदम भी मध्यम होता गया है। इस तदरीजी तब्दीली के हवाले से देखें तो मक्की दौर की आखरी सूरतों में भी हमें वह रिदम नुमाया महसूस नहीं होता जो इब्तदाई ज़माने की सूरतों, मसलन सूरह क़ाफ़, सूरतुन्नजम, सूरतुर्रहमान, सूरतुल वाक़या और सूरतुल मुल्क में नज़र आता है।

अब रहा यह सवाल कि इब्तदाई दौर में नाज़िल होने वाली सूरतुल हिज्र को मुस्हफ़ के वस्त (बीच) में और ऐसी सूरतों के दरमियान में क्यों रखा गया है जिनका ज़माना-ए-नुज़ूल बाद का है, तो इसका वाज़ेह और हत्मी (अंतिम) जवाब तो यही है कि इस मामले का ताल्लुक़ तौफ़ीकी अमूर से है और इसकी असल हिकमत भी अल्लाह तआला ही जानता है। मगर इस सिलसिले में मेरी एक अपनी राय है जिसका इज़हार करने की ज़रूरत कर रहा हूँ, और वो यह कि यहाँ एक जैसी मक्की सूरतों का एक तवील सिलसिला है जो ग्याहरवें पारे से शुरू होकर अठ्ठाहरवें पारे तक चला गया है। इन सूरतों में एक जैसे मज़ामीन तकरार के साथ आ रहे हैं। चुनाँचे इस यकसानियत (समानता) को ख़त्म करने और एक तरह का तनूअ (विभिन्नता) पैदा करने के लिए इब्तदाई दौर की एक सूरत को यहाँ पर रखा गया है। वरना मिज़ाज और असलूब के ऐतबार से सूरतुल हिज्र की बहुत ज़्यादा मुशाबहत सूरतुल शौअरा के साथ है। वल्लाहु आलम!

यहाँ पर सूरतुल हिज्र की एक आयत को तेरहवें पारे में और बाक़ी सूरतों को चौदहवें पारे में देख कर पारों की तक्रसीम की बुनियाद और उसके तरीक़े कार के बारे में भी सवाल उठता है। इस सिलसिले में बुनियादी तौर पर यह बात अहम है कि

यह तक्रसीम सहाबा रजि. के ज़माने में नहीं थी, बल्कि बाद में की गई, और ब-गर्जे-तिलावत कुरान मज़ीद को तीस बराबर अज्ज़ाअ में तक्रसीम कर दिया गया, ताकि रोज़ाना एक पारे की तिलावत से महीने भर में कुरान ख़त्म कर लिया जाये। बहरहाल इस तक्रसीम में कोई खास हिकमत नज़र नहीं आती और ना ही इसमें मज़मून के तसलसुल का ख़याल रखा गया है। इस तक्रसीम में जा-बजा सूरतों की फ़सीलें टूटी नज़र आती हैं। कई मक़ामात पर किसी सूरत की चंद आयात एक पारे में और बाक़ी सूरह अगले पारे में शामिल की गई है। जैसे सूरह हूद की इब्तदाई पाँच आयात ग्यारहवें पारे में है जबकि बाक़ी पूरी सूरत बारहवें पारे में है। इसके बरअक्स कुरान हकीम की मंज़िलों की तक्रसीम सहाबा रजि. के दौर में हुई और इस तक्रसीम में बड़ा हुस्न नज़र आता है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

आयात 1 से 15 तक

الرَّسُولُ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ مُبِينٍ ① رُبَّمَا يَوْدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ② ذَرَهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ③ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرِيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُومٌ ④ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ⑤ وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ⑥ لَوْ مَا تَأْتِيَنَا بِالْمَلِكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ⑦ مَا نُنْزِلُ الْمَلِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذَا مُنْظَرِينَ ⑧ إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ⑨ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شَيْعِ الْأَوَّلِينَ ⑩ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ⑪ كَذَلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ⑫ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ⑬ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمُ بَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ⑭ لَقَالُوا إِنَّمَا سُكَّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَسْحُورُونَ ⑮

आयात 1

“अलिफ़, लाम, रा”

الر

हुरूफ़े मुक़त्ताआत का यह सिलसिला सूरह यूनस से शुरू हुआ था। पाँच सूरतों के आगाज में अलिफ़, लाम, रा के हुरूफ़ हैं एक सूरह (अर् रअद) में अलिफ़, लाम, मीम, रा। यह इस सिलसिले की छठी और आखरी सूरत है।

“यह (अल्लाह की) किताब और कुराने मुबीन की आयात हैं।”

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ مُبِينٍ ①

आयात 2

“एक वक़्त ख़्वाहिश करेंगे वो लोग जिन्होंने कुफ़्र किया था कि काश वो मुसलमान होते।”

رُبَّمَا يَوْدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ②

एक वक़्त आयेगा कि उन लोगों के लिए उनका कुफ़्र मुअजबे हसरत (पछतावा) बन जायेगा।

आयात 3

“(ऐ नबी ﷺ) छोड़ दीजिए इनको, ये खा-पी लें और फ़ायदा उठा लें।”

ذَرُّهُمْ يَأْكُلُوا وَيَشْرَبُوا

ज़मीन में जो मोहलत इन्हें मिली हुई है उसमें ख़ूब मज़े कर लें।

“और (लंबी-लंबी) उम्मीदें इनको गाफ़िल किए रखें”

وَيُلْهِمُهُمُ الْأَمَلُ

هُلِي के मायने हैं गाफ़िल कर देना। सूरतुत्तकासुर में फ़रमाया गया: {الْهَكْمُ الشَّكْرُ} (आयात 1-2) “गाफ़िल किए रखा तुम्हें कसरत की ख़्वाहिश के मुक़ाबले ने, यहाँ तक कि तुमने क़ब्रें जा देखीं।” इंसान के लंबे-लंबे मन्सूबे बनाने को “तबले अमल (distant hopes)” कहते हैं। जब इंसान इस गोरख धंधे में पड़ जाये, तो ख़्वाहिशों और आरज़ूओं का यह सिलसिला ख़त्म होने में नहीं आता, मगर ज़िन्दगी ख़त्म हो जाती है। हदीसे नबवी ﷺ है: ((مَا قُلَّ وَكَفَى خَيْرٌ مِّنَّا كُتْرًا)) यानि अगर कोई शय कम है लेकिन आपको किफ़ायत कर जाये, आपकी ज़रूरत उससे पूरी हो जाये तो यह उससे कहीं बेहतर है जो आपकी ज़रूरत से ज़्यादा हो और आपको अपने ख़ालिक और मालिक की याद से गाफ़िल कर दे।

अगर माल व दौलत की रेल-पेल है, रिज़क और सामाने आसाईश की फ़रावानी है, कभी कोई हाजत परेशान नहीं करती, कोई महरूमी, कोई नारसाई अल्लाह की याद ताज़ा करने का सबब नहीं बनती, तो ऐसी हालत में रफ़ता-रफ़ता इंसान के बिल्कुल गाफ़िल हो जाने के इम्कानात होते हैं। इससे बेहतर है कि इतना मिले जिससे ज़रूरत पूरी हो जाये और किसी के सामने दस्ते सवाल-दराज़ ना करना पड़े। लेकिन इस क़द्र फ़रावानी ना हो कि ग़फ़लत ग़लबा पा ले।

“तो अनक़रीब उन्हें मालूम हो जायेगा।”

فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٥﴾

आयत 4

“और हमने किसी भी बस्ती को हलाक नहीं किया, मगर उसके लिए एक मुअय्यन नौश्ता (एक वक़्त तय) था।”

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤﴾

हर क़ौम पर आने वाला अज़ाब का एक वक़्त मुअय्यन था जो पहले से लिखा हुआ था।

आयत 5

“कोई उम्मत ना तो अपने वक़्ते मुअय्यन से आगे बढ़ सकती है और ना पीछे रह सकती है।”

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٥﴾

आयत 6

“और उन्होंने कहा कि ऐ वो शख्स जिस पर (उसके वक़ौल) यह ज़िक्र नाज़िल हुआ है (हमारे नज़दीक) तो तुम यक़ीनन दीवाने हो।”

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ﴿٦﴾

﴿٦﴾

मआज़ अल्लाह! सुम्मा मआज़ अल्लाह!! मजनून “जिन्न” से मुशतक़ (व्युत्पन्न) है। अरबी में जिन्न के मायने मख़फ़ी चीज़ के हैं। इसी मायने मे रहमे मादर में बच्चे को जनीन कहा जाता है, क्योंकि वो नज़र से पोशीदा (छुपा) होता है। इस ऐतबार से लफ़ज़ “जन्नत” भी इस माद्रे से है और इससे मुराद ऐसी ज़मीन है जो दरख़्तों और घास वग़ैरह से पूरी तरह ढकी हुई हो। सूरतुल अनआम आयत 76 में हज़रत इब्राहीम अलै. के तज़किरे में यह लफ़ज़ इस तरह आया है: {فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ} यानि जब रात की तारीकी ने उसे ढाँप लिया। चुनाँचे मजनून उस शख्स को भी कहा जाता है जिस पर जिन्न के असरात हों, आसेब का साया हो और उसको भी जिसका ज़हनी तवाज़ुन दुरुस्त ना हो।

रसूल अल्लाह ﷺ के बारे में यह बात वही के बिल्कुल इब्तदाई दौर में कही गई थी और इसके कहने वालों में वो लोग भी शामिल थे जो इस तरह के ख्यालात का इज़हार मआनदाना (दुश्मनी के) अंदाज़ में नहीं बल्कि हमदर्दी में कर रहे थे। यानि जब इब्तदा में हुज़ूर ﷺ ने नुबूवत का दावा किया और बताया कि ग़ार-ए-हिरा में उनके पास फ़रिश्ता आया है तो बहुत से लोगों को गुमान हुआ कि शायद आप ﷺ को किसी बद् रूह वगैरह का असर हो गया है। चूँकि नुबूवत मिलने और फ़रिश्ते के आने का दावा उनके लिए बिल्कुल नई बात थी इसलिए उनका वाकई यह ख्याल था कि अकेले कई-कई रातें ग़ार-ए-हिरा में रहने की वजह से ज़रूर आप ﷺ पर कसी बद् रूह या जिन्न के असरात हो गये हैं। चुनाँचे सूरह नून (इसका दूसरा नाम सूरतुल क़लम भी है) जो कि बिल्कुल इब्तदाई दौर की सूरत है, इसमें उन लोगों के ख्यालात की तरदीद (इन्कार) करते हुए फ़रमाया गया: {مَا أَنتَ بِمُعْجِزٍ} (आयत 2) “आप अपने रब के फ़ज़ल से मजबून नहीं हैं।”

आयत 7

“क्यों नहीं ले आते हमारे सामने फ़रिश्तों को अगर तुम सच्चे हो?”

لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَكَةِ إِن كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۝

अब इसके बाद अल्लाह तआला की तरफ़ से उनकी इन बातों का जवाब आ रहा है:

आयत 8

“हम नहीं उतारा करते फ़रिश्तों को मगर हक़ के साथ”

مَا نُنْزِلُ الْمَلَكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ

यानि यह लोग फ़रिश्तों को बुलाना चाहते हैं या अपनी शामत को? इन्हें मालूम होना चाहिए कि आद व समूद और क़ौम लूत पर फ़रिश्ते नाज़िल हुए तो किस गर्ज से नाज़िल हुए! इन्हें मालूम होना चाहिए कि फ़रिश्ते जब किसी क़ौम पर नाज़िल होते हैं तो आखरी फ़ैसले के निफ़ाज़ के लिए नाज़िल होते हैं।

“और (अगर फ़रिश्ते नाज़िल हो गये तो) फिर इन्हें मोहलत नहीं दी जायेगी।”

وَمَا كُنَّا إِذَا مُنْظَرِیْنَ ۝

आयत 9

“यक़ीनन हमने ही यह ज़िक्र नाज़िल किया है और बिलाशुबह हम ही इसके मुहाफ़िज़ हैं।”

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ۝

यह आयत मुबारका बहुत अहम है। जहाँ तक इसके पहले हिस्से का ताल्लुक है तो यह हुक्म तौरात पर भी सादिक़ आता है और इंज़ील पर भी। यानि यह दोनों किताबें भी अल्लाह ही की तरफ़ से नाज़िल हुई थीं। कुरान में इसकी बार-बार तस्दीक़ भी की गई है। सूरतुल मायदा में तौरात के मुनज़ज़ल मिन अल्लाह होने की तस्दीक़ इस तरह की गई है: {وَأَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ فِيهِ تَحْفَظُهَا وَتُذَكِّرُهَا} (आयत 44)। सूरह आले इमरान की आयत 3 में इन दोनों किताबों का ज़िक्र फ़रमाया गया: {وَأَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ فِيهِ تَحْفَظُهَا وَتُذَكِّرُهَا}। लेकिन इस आयत के दूसरे हिस्से में जो हुक्म आया है वो सिर्फ़ और सिर्फ़ कुरान की शान है। इससे पहले किसी इल्हामी किताब या सहीफ़ा-ए-आसमानी की हिफ़ाज़त की ज़मानत नहीं दी गई। इसकी वजह यह थी कि साबक़ा (पिछली) कुतुब की हिदायात व तालीमात हत्मी (अंतिम) और अब्दी (हमेशा क लिये) नहीं थीं। वो तो गोया अबूरी अदवार के लिए वक़्ती और आरज़ी हिदायात थीं और इस लिहाज से उन्हें हमेशा के लिए महफूज़ रखने की ज़रूरत भी नहीं थी। अब जबकि हिदायत कामिल हो गई तो उसे ता-अबद (हमेशा तक के लिये) महफूज़ कर दिया गया।

यह आयत ख़तमे नुबूवत पर भी बहुत बड़ी दलील है। अगर सूरतुल मायदा की आयत 3 के मुताबिक़ कुरान हिदायत दर्जा-ए-कामिलियत तक पहुँच गई और आयत ज़ेरे नज़र के मुताबिक़ वो अब्दी तौर पर महफूज़ भी हो गई तो वही के जारी रहने की ज़रूरत भी ख़त्म हो गई। चुनाँचे क़ादयानियों के पास इन दोनों कुरानी हक़ायक़ को तस्लीम कर लेने के बाद (और उनके लिए इन्हें तस्लीम किये बग़ैर चारा भी नहीं) वही के जारी रहने के जवाज़ की कोई अक़ली व मन्तक़ी

दलील बाक़ी नहीं रह जाती। वही की ज़रूरत इन दोनों में से किसी एक सूरत में ही हो सकती है कि या तो अभी हिदायत कामिल नहीं हुई थी और उसकी तकमील के लिए वही के तसलसुल की ज़रूरत थी। या फिर हिदायत कामिल तो हो गई थी मगर बाद में ग़ैर महफूज़ हो गई या गुम हो गई और इस वजह से पैदा हो जाने वाली कमी को पूरा करने के लिए वही की ज़रूरत थी। बहरहाल अगर इन दोनों में से कोई सूरत भी दरपेश नहीं है तो सिलसिला-ए-वही के जारी रहने का कोई जवाज़ नहीं। और अल्लाह तआला (मआज़ अल्लाह) अबस का काम नहीं करता कि ज़रूरत के बग़ैर ही सिलसिला-ए-वही को जारी किये रखे।

यहाँ दो दफ़ा (ज़ेरे नज़र आयत से क़ब्बल आयत 6 में भी) कुरान हकीम के लिए “अज़ ज़िक्र” का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है। इसी तरह सूरह “नून” की आख़री दो आयत में भी कुरान हकीम के लिए यह लफ़्ज़ आया है। ज़िक्र का मफ़हूम याद दिहानी है। कुरानी फ़लसफ़े के मुताबिक़ कुरान मजीद का “अज़ ज़िक्र” होना इस मफ़हूम में है कि ईमानी हक़ायक़ खुसूसी तौर पर अल्लाह की ज़ात और उसकी सिफ़ात का इल्म इंसानी रूह के अंदर मौजूद है, मगर इस इल्म पर ज़हूल (भूल और ग़फ़लत) का पर्दा तारी हो जाता है। जैसे एक वक़्त में इंसान को एक चीज़ याद होती है मगर बाद में याद नहीं रहती। इसका मतलब यह है कि उस चीज़ के बारे में मालूमात उसकी याददाश्त के तहख़ाने में दब जाती है। फिर बाद में किसी वक़्त ज्योंहि कोई चीज़ उन मालूमात से मुताल्लिक़ सामने आती है तो इंसान के ज़हन में वो भूली-बिसरी मालूमात फिर से ताज़ा हो जाती है। इस तरह ज़हन में मौजूद मालूमात को फिर से ताज़ा करने वाली चीज़ गोया याद दिहानी (reminder) का काम करती है। मसलन एक दोस्त से आपकी सालहा-साल (सालों तक) से मुलाक़ात नहीं हुई और उसका ख़याल भी कभी नहीं आया, मगर एक दिन अचानक उसका दिया हुआ एक क़लम या रुमाल सामने आने से उस दोस्त की याद एकदम ज़हन में ताज़ा हो गई। इस क़लम या रुमाल की हैसियत गोया एक निशानी (या आयत) की है जिससे आपके ज़हन में एक भूली-बिसरी याद फिर से ताज़ा हो गई।

इसी तरह अल्लाह की ज़ात का इल्म इंसानी रूह में ख़फ़्ता (dormant) हालत में मौजूद है। उस इल्म को फिर से जगा कर ताज़ा करने और उस पर पड़े हुए ज़हूल और निस्नान (भूल) के पर्दों को हटाने के लिए आयाते आफ़ाक़िया, आयाते अन्फ़ुसिया और आयाते कुरानिया गोया याद दिहानी का काम देती हैं और अल्लाह की याद को इंसान के ज़हन में ताज़ा करती हैं। इस लिहाज़ से कुरान को अज़ ज़िक्र (याद दिहानी) के नाम से मौसूम किया गया है।

आयत 10

“और (ऐ नबी ﷺ) हमने आपसे पहले भी रसूल भेजे थे, पहली जमाअतों में”

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شَيْعِ الْأَوَّلِينَ ⑩

شَيْعَة की जमा है और इसके मायने अलग होकर फैलने वाले गिरोह के हैं। जैसे हज़रत नूह अलै. के बेटों की नस्लें बढ़ती गई तो उनके क़बीले और गिरोह अलैहदा होते गये और यूँ तक्रसीम होकर रुए ज़मीन पर फैलते गये। उर्दू अल्फ़ाज़ “इशाअत” और “शाया” भी इसी मादे से मुश्तक़ हैं, चुनाँचे इन अल्फ़ाज़ में भी फैलने और फैलाने का मफ़हूम पाया जाता है।

आयत 11

“और नहीं आया उनके पास कोई भी रसूल, मगर वो उसके साथ इस्तहज़ा (हँसी-मज़ाक़) ही करते रहे।”

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ⑪

आयत 12

“इसी तरह हम इसको चुभो देते हैं मुजरिमों के दिलों में।”

كَذَلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ⑫

हक़ की दावत अपनी तासीर की वजह से हमेशा मुखातबीन के दिलों में उतर जाती है। चुनाँचे जो लोग अंबिया की दावत को ठुकराते रहे, वो उसकी हक़क़ानियत को खूब पहचान लेने के बाद ठहराते रहे। इसलिए की हक़ को हक़ तस्लीम करने से उनके मफ़ादात पर ज़र्र (चोट) पड़ती थी।

आयत 13

“(तो ऐ नबी ﷺ!) यह लोग ईमान नहीं लायेंगे और पहले लोगों की सुन्नत गुज़र चुकी है।”

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ۝۱۳

अंबिया व रसूल के मुखातबीन का हमेशा से यही तरीका रहा है। जिस तरह हमने अपने रसूल मुहम्मद ﷺ पर यह “अज्ज़िक्र” नाज़िल किया है इसी तरह पहले भी हम अपने रसूलों पर किताबें और सहीफ़े नाज़िल करते रहे हैं, मगर उनकी क़ौमों के लोग अक्सर इंकार ही करते रहे।

आयत 14

“और अगर हम उन पर आसमान का कोई दरवाज़ा खोल भी देते और वो उस पर चढ़ने लगते।”

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ۝۱۴

आयत 15

“तब भी वो यही कहते कि हमारी तो नज़र बंदी कर दी गई है, बल्कि हम पर तो जादू कर दिया गया है।”

لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ۝۱۵

आयात 16 से 25 तक

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّظِيرِينَ ۝۱۶ وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ۝۱۷ إِلَّا مَن اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ شِهَابٌ مُّبِينٌ ۝۱۸ وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ۝۱۹ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهُ بِرَازِقِينَ ۝۲۰ وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنْزِلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۝۲۱ وَأَرْسَلْنَا الرِّيحَ لَوَاحٍ فَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخَزَنِينَ ۝۲۲ وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ۝۲۳ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ۝۲۴ وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يُحْشِرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝۲۵

आयत 16

“और हमने आसमान में बुर्ज बनाए हैं और हमने उसे (आसमानों को और बुर्जों को) मुज़य्यन कर दिया है देखने वालों के लिए।”

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّظِيرِينَ ۝۱۶

इन बुर्जों की असल हकीकत का हमें इल्म नहीं है, इस लिहाज़ से यह आयत भी आयाते मुतशाबेहात में से है। अलबत्ता रात के वक़्त आसमान पर सितारों की बहार वह दिलकश मंज़र पेश करती है जिससे हर देखने वाले की आँख महज़ूज़ (प्रसन्न) हुए बग़ैर नहीं रह सकती।

आयत 17

“और हमने हिफाज़त की है उसकी हर शैताने मरदूद से।”

وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ۝۱۷

यह गोया हमारे ईमान बिल् ग़ैब का हिस्सा है कि इन सितारों के ज़रिये से अल्लाह तआला ने आसमानों में हिफाज़ती इंतेज़ामात कर रखे हैं। इस कायनात की तख़लीक़ के बारे में इंसान की जदीद तहक़ीक़ माज़ी करीब में हुई है, लेकिन अभी भी इस सिलसिले में इंसानी इल्म बहुत महदूद है। वायरस और बैक्टीरिया के बारे में कुछ ही अरसा पहले हमें मालूम हुआ कि यह भी कोई मख़्लूक़ है। इस वसीअ व अरीज़ (विशाल) कायनात में यक़ीनन बहुत से ऐसे हक़ायक़ होंगे जिनके बारे में अब भी इंसान कुछ नहीं जानता। बहरहाल अब तक जितनी मख़्लूकात के बारे में हमें इल्म है उनमें सिर्फ़ तीन क्रिस्म की मख़्लूकात ऐसी हैं जिनमें खुद शऊरी (self consciousness) पाई जाती है, यानि मलाइका (फ़रिश्ते), जिन्नात और इंसान। इनमें से पहले मलाइका को पैदा किया गया, फिर जिन्नात को और फिर इंसान को। गोया इंसान इस कायनात की तख़लीक़ के ऐतबार से recent दौर की मख़्लूक़ है। अलबत्ता इंसानों की अरवाह उसी दौर में पैदा की गई जब मलाइका को पैदा किया गया। बहरहाल खुदशऊरी सिर्फ़ इन तीन क्रिस्म की मख़्लूकात में ही पाई जाती है, बाक़ी जो भी मख़्लूकात इस कायनात में मौजूद हैं, चाहे वो खुशकी और समुद्र के जानवर हो या हवा में उड़ने वाले परिन्दे, उनमें शऊर तो है मगर खुदशऊरी नहीं है।

जिन्नात की तख़लीक़ चूँकि आग से हुई है लिहाज़ा उनके अंदर मख़्की कुव्वत (potential energy) इंसानों के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा है। मेरा गुमान है कि जिन्नात को सूरज की आग से पैदा किया गया है और इस लिहाज़ से उन्हें पूरे निज़ामे शम्सी (solar system) के दायरे में आमद व रफ्त की ताक़त और इस्तेदाद हासिल है और इसके लिए उन्हें किसी राकेट या मशीनी ज़राए की ज़रूरत नहीं है। अपनी इसी इस्तेदाद से नाजायज़ फ़ायदा उठाते हुए वो आलमे बाला से अल्लाह तआला के अहक़ाम और तदबीरात की तरसील (delivery) के दौरान मलाइका से कुछ ख़बरें उचकने की कोशिश करते हैं। फिर वो ऐसी ख़बरें इंसानों में अपने दोस्तदार आमिल और काहिन लोगों को बताते हैं ताकि वो अपनी दुकानें चमका सकें। इसकी मिसाल यूँ है जैसे ऐवाने सदर से अहक़ाम की तरसील व तक्रसीम के दौरान कोई शख़्स मुतालक़ा अहलकारों से उन अहक़ाम के बारे में ख़बरें हासिल करके क़बल अज़ वक़्त उन लोगों तक पहुँचा दे जो उनके ज़रिए से अपनी दुकानें चमकाना चाहते हैं।

जिन्नात को निज़ामे शम्सी की हुदूद फ़लांगने से रोकने के लिए अल्लाह तआला ने सितारों में मिसाइल नस्ब कर रखे हैं। जब भी कोई जिन्न अपनी हुदूद से तजावुज़ करते हुए ममनुअ इलाक़े में दाख़िल होने की कोशिश करता है तो उस पर मिसाइल फेंका जाता है जिसे हम शहाबे साक्रब कहते हैं। इस पूरे निज़ाम पर हम “कुल्लुन मिन इंदी रब्बिना” के उसूल के तहत यक़ीन रखते हैं जो हमारे ईमान बिल् ग़ैब का हिस्सा है। बहरहाल साइंसी तरक्की के सबब कायनात के बारे में अब तक सामने आने वाली मालूमात और ईजादात के साथ भी इन कुरानी मालूमात का किसी ना किसी हद तक तताबक़ (corroboration) मौजूद है।

आयत 18

“सिवाय उसके कि जो कोई चोरी-छिपे सुनना चाहे”

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ

जैसे एक फरिश्ता कुछ अहक़ाम लेकर आ रहा हो और कोई जिन्न उससे कोई सुन-गुन लेने की कोशिश करे। फरिश्ते नूरी हैं और जिन्न नारी (आग) मख़्लूक़ हैं, चुनाँचे नूर और नार (आग) के दरमियान ज़्यादा बुअद (फ़र्क़) ना होने की वजह से ऐसा होना मुम्किन है। अज़ाज़ील (इब्लीस) का भी एक जिन्न होने के बावजूद फरिश्तों के साथ उठना-बैठना था।

“तो उसका पीछा करता है एक अंगारा चमकता हुआ।”

فَاتَّبَعَهُ شِهَابٌ مُّبِينٌ ۝۱۸

ऐसी खिलाफ़वर्ज़ी की सूरत में उस जिन्न पर मिसाइल फेंका जाता है। यह मिसाइल अल्लाह तआला ने इसी मक़सद के लिए सितारों में नस्ब कर रखे हैं।

आयत 19

“और ज़मीन को हमने फैला दिया और इसमें हमने लंगर डाल दिये”

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَالْقَيْنَا فِيهَا رَاسِيَ

ज़मीन के यह लंगर पहाड़ हैं जिनके बारे में कुरान बार-बार कहता है कि यह ज़मीन की हरकत को मुतवाज़न रखने (Isostasy) का एक ज़रिया हैं।

“और उसमें उगा दी हमने हर शय ठीक अंदाज़े के मुताबिक़।”

وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ۝۱۹

कायनात के इस खुदाई निज़ाम में हर चीज़ की मिक़दार और तादाद उस हद तक ही रखी गई है जिस हद तक उसकी ज़रूरत है। अगर कोई चीज़ उस मुक़रर हद से बढ़ेगी तो इस निज़ाम में खलल का बाइस बनेगी। मसलन बाज़ मछलियों के अंडों की तादाद लाखों में होती है। यह तमाम अंडें अगर मछलियाँ बन जायें तो चंद ही सालों में एक मछली की औलाद इस ज़मीन के हुज़्म (मात्रा) से भी कई गुना ज़्यादा बढ़ जाये। बहरहाल इस कायनात के निज़ाम को दुरुस्त रखने के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से हर चीज़ को एक तयशुदा अंदाज़े और ज़रूरत के मुताबिक़ रखा गया है।

आयत 20

“और हमने बनाए हैं तुम्हारे लिए इस ज़मीन में ज़राए मआश (उनके लिए भी) जिन्हें तुम रिज़क नहीं देते।”

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهُ بِرَازِقِينَ

۝۲۰

कुछ मख़्लूक तो ऐसी है जिसकी रोज़ी और खाने-पीने का इंतेज़ाम बज़ाहिर इंसानों के ज़िम्मेदारी है, जैसे पालतु जानवर, मगर बहुत सी मख़्लूक़ात ऐसी हैं जिनके रिज़क की ज़िम्मेदारी इंसानों पर नहीं है, मगर अल्लाह उन सबको उनके हिस्से का रिज़क बाहम (परस्पर) पहुँचा रहा है।

आयत 21

“और नहीं है कोई शय मगर हमारे पास हैं उसके ख़ज़ाने”

وَأِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ

कोई शय ऐसी नहीं है जिसके ख़ज़ाने हमारे पास ना हों। हमारे ख़ज़ाने और वसाइल ला-महदूद हैं, लेकिन:

“हम नाज़िल करते उसमें से मगर एक तयशुदा अंदाज़े के मुताबिक़।”

وَمَا نُنْزِلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۝۲۱

उन लामुतनाही और ला-महदूदी (Endless & Unlimited) ख़ज़ानों से सिर्फ़ ज़रूरत के मुताबिक़ अश्या (चीज़ें) दुनिया में भेजी जाती हैं। जैसे हमारे यहाँ बड़े-बड़े गोदामों से ज़रूरत के मुताबिक़ चीज़ों की तरसील की जाती है।

आयत 22

“और हम भेजते हैं हवाएँ जो बोझल होती हैं (या बोझल करने वाली होती हैं)”

وَأَرْسَلْنَا الرِّيحَ لَوَاحٍ

हवा का मफ़हूम पहले तो यही समझा जाता था कि ये हवाएँ बादलों को उठा कर लाती हैं और बारिश का सबब बनती हैं, लेकिन अब जदीद साइंसी तहक़ीक़ से मालूम हुआ कि (polen grains) भी हवाओं के ज़रिए मुन्तक़िल होते हैं जिनसे फूलों की फर्टीलाइज़ेशन होती है, जिसके नतीजे में फ़सलें और फल पैदा होते हैं। यूँ यह सारा नबाताती निज़ाम (वनस्पति विज्ञान) भी हवाओं की वजह से चल रहा है।

“पस हमने उतारा आसमान से पानी फिर वो तुम लोगों को पिलाया।”

فَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَسْقَيْنَاكُمُوهُ

पानी मबदा-ए-हयात है। ज़मीन पर हर तरह की ज़िन्दगी के वजूद का मिम्बा और सरचश्मा भी पानी है और फिर पानी पर ही ज़िन्दगी की बक्रा का इन्हसार भी है। पानी की इस अहमियत के पेशेनज़र अल्लाह तआला ने इसकी तकसीम व तरसील का एक लगा-बन्धा निज़ाम वज़अ किया है जिसे आज की साइंस ने वाटर साइकिल का नाम दिया है। वाटर साइकिल का यह अज़ीमुश्शान निज़ाम अल्लाह तआला के अजाईबात मे से है। समुद्रों से हवाओं तक बुखारात पहुँचा कर बारिश और बर्फ़बारी का इंतेज़ाम, ग्लैशियर्स की शक्ल में बुलंद व बाला पहाड़ों पर वाटर स्टोरेज का अहतमाम, फिर चश्मों, नदी-नालों और दरियाओं के ज़रिए से इस पानी की वसीअ व अरीज़ मैदानी इलाकों तक रसाई और ज़ेरेज़मीन पानी का अज़ीमुश्शान ज़खीरा। यह अल्लाह तआला का वज़अ करदा वाटर साइकिल है जिस पर पूरी दुनिया में हर क्रिस्म की ज़िन्दगी का दारोमदार है।

“और तुम इसके जमा करने वाले नहीं हो।”

وَمَا أَنتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ﴿٢٢﴾

यह तुम्हारे बस में ना था कि तुम पानी के इस ज़खीरे को जमा करते।

आयत 23

“और यक़ीनन हम ही हैं जो ज़िन्दा भी रखते हैं और मौत भी वारिद करते हैं और हम ही वारिस होंगे।”

وَأَنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ﴿٢٣﴾

यह कायनात और इसकी हर चीज़ अल्लाह ही की मिल्कियत है। एक वक़्त आयेगा जब ज़ाहिरी मिल्कियत का भी कोई दावेदार बाक़ी नहीं रहेगा।

आयत 24

“और हम जानते हैं तुममें से आगे बढ़ने वालों को भी और जानते हैं पीछे रहने वालों को भी।”

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ﴿٢٤﴾

चूँकि यह नुबूवत के बिल्कुल इब्तदाई ज़माने की सूरत है इसलिए फ़रमाया जा रहा है कि हम जानते हैं उन लोगों को जो हक़ की इस दावत पर फ़ौरन लब्बैक कहेंगे और आगे बढ़ कर कुरान को सीनों से लगायेंगे। हम जानते हैं कि {الشَّيْقُونِ الْأُولُونَ} के मिस्दाक़ कौन लोग होंगे। हमें मालूम है कि अबुबकर (रज़ि.) कुबूले हक़ के लिए एक लम्हें की देर नहीं लगायेगा। हम यह भी जानते हैं कि उस्मान (रज़ि.) भी इस दावत को फ़ौरन कुबूल कर लेगा। यह भी हमारे इल्म में है कि अबुबकर (रज़ि.) की तब्लीग़ से तल्हा, जुबैर, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) जैसे लोग फ़ौरन ईमान ले आयेंगे, और हमें यह भी मालूम है वह कि कौन-कौन बदनसीब हैं जो इस सआदत को समेटने में पीछे रह जायेंगे।

आयत 25

“और यक़ीनन आपका रब ही है जो इन सब को जमा करेगा। यक़ीनन वो कमाल हिकमत वाला, खूब इल्म रखने वाला है।”

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥﴾

आयात 26 से 48 तक

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۝۶۱ وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ تَارِ السَّمُومِ ۝۶۲ وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۝۶۳ فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعُوا لَهُ السَّجِدِينَ ۝۶۴ فَسَجَدَ الْمَلَكَةُ كُلُّهُمْ أَسْجُودًا ۝۶۵ إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَى أَنْ يَكُونَ مَعَ السَّجِدِينَ ۝۶۶ قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ إِلَّا تَكُونُ مَعَ السَّجِدِينَ ۝۶۷ قَالَ لَمْ أَكُنْ لِأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۝۶۸ قَالَ فَاهْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ۝۶۹ وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ۝۷۰ قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمٍ يُبْعَثُونَ ۝۷۱ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۝۷۲ إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ۝۷۳ قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝۷۴ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخْلَصِينَ ۝۷۵ قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ۝۷۶ إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنْ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَوِينَ ۝۷۷ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ۝۷۸ لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَقْسُومٌ ۝۷۹ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝۸۰ أَدْخُلُوهَا بِسَلَامٍ أَمِينٍ ۝۸۱ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَلٍّ إِخْوَانًا عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ۝۸۲ لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ۝۸۳

आयत 26

“और यक्रीनन हमने बनाया है इंसान को सने हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से।”

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ۝۶۱

حَمَإٍ مَسْنُونٍ से सना हुआ गारा मुराद है, जिससे बदबु भी उठ रही हो। इस रकूअ में यह सकील इस्तलाह तीन मर्तबा इस्तेमाल हुई है। इंसान के माद्दा-ए-तख्लीक के हवाले से कुरान में जो मुख्तलिफ़ अल्फ़ाज़ इस्तेमाल हुए हैं, उन पर ग़ौरो-फिक्र करने की ज़रूरत है। सबसे पहले मरहले पर तुराब यानि मिट्टी का ज़िक्र है, चुनाँचे फ़रमाया {وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ} (रूम:20)। मिट्टी में पानी मिलकर गारा बन जाये तो इस गारे को अरबी में “طين” कहते हैं। लिहाज़ा इंसान की तख्लीक के सिलसले में तीन का ज़िक्र भी कुरान में मुतअद्दिद बार हुआ है। सूरतुल आराफ़ में हम शैतान का यह क़ौल पढ़ आये हैं: {خَلَقْتَنِي مِنْ تَلٍّ} (आयत 12) “मुझे तूने बनाया आग से और इस (आदम) को बनाया मिट्टी से।” तीन के बाद “طين لازب” का मरहला है। सूरह अस्साफ़ात में फ़रमाया गया: {إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ لَازِبٍ} (आयत 11) “طين لازب” असल में वह गारा है जो अमल-ए-तख़मीर (fermentation) की वजह से लेसदार हो चुका हो। आम तौर पर गारे में कोई organic matter भूसा वगैरह मिलाने से उसकी यह शक़ल बनती है। “طين لازب” के बाद अगला मरहला “حَمَإٍ مَسْنُونٍ” का है। अगर लेसदार गारा ज़्यादा देर तक पड़ा रहे और उसमें सड़ेंध पैदा हो जाये तो इसको “حَمَإٍ مَسْنُونٍ” कहा जाता है। फिर अगर यह सना हुआ गारा खुशक होकर सख़्त हो जाये तो यह खनकने लगता है। आपने किसी दरिया के साहिल के क़रीब या किसी दलदली इलाक़े में देखा होगा कि ज़मीन के ऊपर खुशक पपड़ी सी आ जाती है, जिस पर चलने से यह आवाज़ पैदा करके टूटती है। ऐसी मिट्टी के लिए कुरान ने “صَلْصَالٌ كَالْفَخَّارِ” (अर्रहमान:14) की इस्तलाह इस्तेमाल की है, यानि ठीकरे जैसी खनखनाती मिट्टी।

इंसान के माद्दा-ए-तख्लीक के लिये मन्दर्जा वाला तमाम अल्फ़ाज़ में से एक बुनियादी लफ़ज़ ही किफ़ायत कर सकता था कि हमने इंसान को मिट्टी से बनाया, लेकिन इस ज़िम्न में इन मुख्तलिफ़ अल्फ़ाज़ (तुराब, तीन, तीने लाज़िब, सलसालिन मिन हमाइन मसनून और सलसालिन कलफख़वार) के इस्तेमाल में यक्रीनन कोई हिकमत कारफ़रमा होगी।

मुमकिन है यह तख्लीक के मुख्तलिफ़ मराहिल (stages) का ज़िक्र हो और अगर ऐसा है तो नज़रिया -ए-इरतकाअ (Evolution Theory) के साथ भी इसकी तत्बीक़ (corroboration) होती नज़र आ रही है। इंसान की तख्लीक अगर खुसूसी तौर पर भी अमल में आई हो तो हो सकता है कि बाक़ी हैवानात इरतकाई अंदाज़ में पैदा किए गये हों। बहरहाल ज़मीन की हैवानी हयात के बारे में साइंस भी कुरान से मुत्तफ़िक़ है कि यह तमाम मख्लूक मिट्टी और पानी से बनी है। इधर कुरान फ़रमाता है कि मब्दा-ए-हयात पानी है और इस सिलसिले में साइंस का नज़रिया भी यही है कि साहिली इलाक़ों में मिट्टी और पानी के इतसाल (मिलने) से दलदल बनी, फिर उस दलदल के अंदर अमल-ए-तखमीर (fermentation) के ज़रिये सड़ेंध पैदा हुई तो वहाँ एलजी (Algae) या अमीबा (Amoeba) की सूरत में नबाताती या हैवानी हयात का आगाज़ हुआ। चुनाँचे साइंसी तहकीक़ यहाँ कुरान से इत्तेफ़ाक़ करती नज़र आती है, गोया: “मुत्तफ़िक़ गर दीद राए बू अली बाराए मन!”

आयत 27

“और जिन्नात को हमने पैदा किया था उससे पहले आग की लपट से।”

وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَارِ السَّمُومِ ٢٧

यह लफ़ज़ “समूम” उर्दू में भी मारूफ़ है। मौसम गर्मा में सहारा में चलने वाली तेज़ गर्म हवा को बादे समूम कहते हैं। आग के शोले का वो हिस्सा जो बज़ाहिर नज़र आता है उसके गिर्द हाले की शक़ल में उसका वो हिस्सा होता है जो आमतौर पर नज़र नहीं आता। शोले के इस नज़र ना आने वाले हिस्से का दर्जा-ए-हरारत निस्बतन ज़्यादा होता है। यहाँ “नारे समूम” से मुराद आग की वही लपट या लौ मुराद है जो शदीद गर्म होती है और उसी से जिन्नात को पैदा किया गया है। यहाँ एक नुक्ता यह भी मद्देनज़र रहना चाहिए कि जिन्नात को अगरचे आग से पैदा किया गया है मगर वो आग नहीं हैं। बिल्कुल इसी तरह जैसे हमें मिट्टी से पैदा किया गया है मगर हम मिट्टी नहीं हैं। दूसरी अहम बात यहाँ यह वाज़ेह हुई कि जिन्नात को इंसानों से बहुत पहले पैदा किया गया था।

आयत 28

“और याद करो जब कहा था आप ﷺ के रब ने फ़रिश्तों से कि मैं बनाने वाला हूँ एक बशर को सने हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से।”

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّنْ

صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ٢٨

यहाँ फिर वही सकील इस्तलाह (صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ) इस्तेमाल हुई है। इंसानी तख्लीक की इब्तदा के बारे में एक नुक्ता यह भी लायक़-ए-तवज्जोह है कि कुरान में जहाँ भी तख्लीक के इन इब्तदाई मराहिल का ज़िक्र आया है, वहाँ लफ़ज़ आदम इस्तेमाल नहीं हुआ, बल्कि बशर और इंसान के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल हुए हैं। पूरे कुरान में सिर्फ़ सूरह आले इमरान की आयत 59 ऐसी है जहाँ इब्तदाई तख्लीक के ज़िम्न में आदम अलै० का ज़िक्र इस तरह आया है: {إِنَّمَثَلْ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ} “यक़ीनन ईसा अलै० की मिसाल अल्लाह के नज़दीक़ आदम की सी है। उसको मिट्टी से बनाया, फिर कहा हो जा तो वह हो गया।”

आयत 29

“फिर जब मैं उसे पूरी तरह दुरुस्त कर दूँ”

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ

किसी भी तख्लीक के बाद उसका तस्विया ज़रूरी होता है। पहले बुनियादी ढाँचा बनाया जाता है और फिर उसकी नोक पलक सँवारी जाती है। जैसे एक इमारत का ढाँचा खड़ा करने के बाद उसकी आराईश व ज़ेबाईश की जाती है और रंग व रोगन का अहतमाम किया जाता है।

“और फूँक दूँ मैं उसमें अपनी रूह में से, तो गिर पड़ना उसके लिए सज्दे में।”

وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿٣٩﴾

आयत 30

“तो सज्दा किया तमाम फरिश्तों ने मिल कर।”

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٤٠﴾

﴿٤०﴾ में बहुत ताकीद पाई जाती है कि सबके सब ने इकठ्ठे होकर सज्दा किया, और उनमें से कोई भी मुस्तस्ना (अलग) ना रहा। जिब्रील, मीकाईल, इसराफ़ील, अज़राईल समेत सब झुक गये, कोई भी पीछे ना रहा। फरिश्तों के साथ ज़िक्र आने की वजह से गुमान होता है कि जैसे इब्लीस भी फरिश्ता था, मगर वह फरिश्ता नहीं था, जैसा कि सूरतुल कहफ़ की आयत 50 में “كَانَ مِنَ الْجِنَّ” फ़रमा कर वाज़ेह कर दिया गया कि वह जिन्नात में से था।

आयत 31

“सिवाय इब्लीस के, उसने इंकार किया सज्दा करने वालों के साथ होने से।”

إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَى أَنْ يَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٤١﴾

आयत 32

“अल्लाह ने फ़रमाया: ऐ इब्लीस क्या हुआ तुझे कि तू नहीं हुआ सज्दा करने वालों के साथ?”

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ إِلَّا تَكُونُ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٤٢﴾

आयत 33

“उसने कहा: मेरे लिए रवा नहीं है कि सज्दा करूँ उस बशर को जिसे तूने पैदा किया है सने हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से।”

قَالَ لَمْ أَكُنْ لَّا سَجَدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ﴿٤٣﴾

आयत 34

“अल्लाह ने फ़रमाया: बस निकल जा इसमें से, तू यक़ीनन मरदूद हो चुका है।”

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٤٤﴾

आदम को सज्दा करने के हुक्मे इलाही का इंकार करके तू रानदाह-ए-दरगाह हो चुका है। अब यहाँ से फ़िल फ़ौर निकल जा!

आयत 35

“और यक़ीनन तुझ पर लानत रहेगी रोज़-ए-जज़ा तक।”

وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ﴿٤٥﴾

आयत 36

“उसने अर्ज़ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे मोहलत दे दे उस दिन तक जब यह दोबारा उठाए जायेंगे।”

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٣٧﴾

आयत 37

“अल्लाह ने फ़रमाया (जा) तुझे मोहलत दे दी गई।”

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٣٨﴾

आयत 38

“वक्त्रते मुअय्यन के दिन तक।”

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٣٩﴾

यानि रोज़े क़यामत तक तू ज़िन्दा रहेगा। वैसे तो ज़िन्नो की उम्रें इंसानों से काफ़ी ज़्यादा होती होंगी मगर ऐसा कोई ज़िन्न भी नहीं है जो इस इब्तदाई तख़लीक़ के वक्त्र से लेकर आज तक ज़िन्दा हो, मा सिवाय उस एक ज़िन्न के जिसका नाम अज़ाज़ील है। बाक़ी उसकी औलाद और ज़ुर्रियत अपनी जगह है।

आयत 39

“उसने कहा: ऐ मेरे परवरदिगार! चूँकि तूने मुझे गुमराह किया है।”

قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي

यहाँ यह नुक्ता क़ाबिले ग़ौर है कि इब्लीस अपनी इस गुमराही को अल्लाह तआला की तरफ़ मन्सूब कर रहा है।

“मैं यक़ीनन मुज़य्यन कर दूँगा इनके लिए ज़मीन में (दुनिया को) और मैं ज़रूर गुमराह करूँगा इन सबको।”

لَأَزِيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَا أُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾

कि मैं औलादे आदम के लिए ज़मीन में दुनिया की रौनाक़ों और उसकी आराईश व ज़ेबाईश को इस हद तक पुरकशिश बना दूँगा कि वो उसमें गुम होकर आपको और आपके अहक़ाम को भूल जायेंगे। इस तरह मैं उन सबको आपके सीधे रास्ते से गुमराह करके छोड़ूँगा।

आयत 40

“सिवाय तेरे उन बंदों के जिनको तू उनमें से (अपने लिए) ख़ालिस कर ले।”

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخْلِصِينَ ﴿٤١﴾

مُخْلِصِينَ (लाम की ज़बर के साथ) से मुराद वो बंदे हैं जिन्हें अल्लाह ख़ास अपने लिए चुन ले, यानि अल्लाह के महबूब और बरगज़ीदा बंदे। अल्लाह के ऐसे बन्दों के बारे में शैतान का ऐतराफ़ है कि उन पर मेरा ज़ोर नहीं चलेगा।

आयत 41

“अल्लाह ने फ़रमाया कि यह एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुँचाने वाला है।”

قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤٢﴾

यानि मेरे और तुम्हारे दरमियान यह मामला तय हो गया, तुम्हें मोहलत दे दी गई। मुझ तक पहुँचने का रास्ता बिल्कुल वाज़ेह है। तुम औलादे आदम को इस रास्ते से बहकाने के लिए अपना ज़ोर आजमा लो।

आयत 42

“यक्कीनन मेरे बंदों पर तुझे कोई इख्तियार नहीं होगा”

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ

यानि सिर्फ़ “خُلَاصِيْنَ” ही की तख्सीस नहीं है बल्कि किसी इंसान पर भी तुझे इख्तियार नहीं होगा।

“सिवाय उनके जो खुद तेरी पैरवी करें गुमराहों में से।”

إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿٣١﴾

जो लोग “गावीन” में से होंगे, खुद उनके अंदर सरकशी होगी, वो खुद अपनी नफ्सपरस्ती की तरफ़ मायल होकर तेरी पैरवी करेंगे, उनको ले जाकर तू गुमराही के जिस गड्ढे में चाहे फेंक दे और जहन्नम की जिस वादी में चाहे उनको गिरा दे, मुझे उनसे कोई दिलचस्पी नहीं। लेकिन मेरे किसी फ़रमा-बरदार बंदे पर तुझे कोई इख्तियार हासिल नहीं होगा।

आयत 43

“और यक्कीनन जहन्नम ही उन सबका मौजूद (वादा किया हुआ) ठिकाना है।”

وَأَنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْءِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٢﴾

जो लोग भी तेरी पैरवी करेंगे, उन सबके लिए जहन्नम का वादा है।

आयत 44

“इस (जहन्नम) के सात दरवाज़े हैं, उनमें से हर दरवाज़े का एक हिस्सा है मुकर्रर शुदा।”

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْصُومٌ

﴿٣٣﴾

जहन्नम के हर दरवाज़े में से दाखिल होने वाले जिन्नों और इंसानों को मख्सूस कर दिया गया है। मुमकिन है दरवाज़ों की यह तक्सीम व तख्सीस गुनाहों की नौइयत के ऐतबार से हो। वल्लाहु आलम!

अहले जहन्नम के ज़िक्र के बाद अब अहले जन्नत का ज़िक्र होने जा रहा है। मुवाज़ने और फ़ौरी तक्काबुल (simultaneous contrast) का यह अंदाज़ व असलूब कुरान में हमें जगह-जगह मिलता है।

आयत 45

“(इसके बरअक्स) यक्कीनन मुत्तक़ी लोग होंगे बागात और चश्मों में।”

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٣٤﴾

आयत 46

“(उनसे कहा जायेगा कि) तुम दाखिल हो जाओ इन (बागात) में सलामती के साथ बेखौफ़ व ख़तर।”

أَدْخُلُوهَا بِسَلٰمٍ أٰمِنِينَ ﴿٣٥﴾

यहाँ तुम हर तरह से अमन में रहोगे, तुम्हें किसी क्रिस्म का कोई अंदेशा नहीं होगा।

आयत 47

“और हम निकाल देंगे उनके सीनों में से जो कुछ भी कदूरत होगी”

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غَلٍ

यह मज़मून बिल्कुल इन्हीं अल्फ़ाज़ में सूरतुल आराफ़ (आयत 43) में भी आ चुका है। अहले ईमान की आपस की रंजिश, कदूरतें और शिकायतें ख़त्म करके उनके दिलों को हर किसिम के तकद्दुर से पाक कर दिया जायेगा।

“भाई-भाई (बन कर वो बैठे होंगे) तख़्तों पर आमने-सामने।”

إِخْوَانًا عَلَى سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٢٤﴾

जब किसी से नाराज़गी हो तो आदमी आँखे चार नहीं करता, लेकिन अहले जन्नत के दिल चूँकि एक-दूसरे की तरफ़ से बिल्कुल साफ़ होंगे, इसलिए वो आमने-सामने बैठ कर एक-दूसरे से बातें कर रहे होंगे।

आयत 48

“नहीं पहुँचेगी उन्हें उसमें कोई थकान, और ना ही वो उसमें से निकाले जायेंगे।”

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٢٨﴾

अहले जन्नत को जन्नत में दाखिल होने के बाद वहाँ से निकाले जाने का खटका नहीं होगा और ना ही उसमें उन्हें किसी किसिम की कोई तकलीफ़ या परेशानी होगी।

आयत 49 से 84 तक

نَبِّئْ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٢٩﴾ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٣٠﴾ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣١﴾ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجَدُونَ ﴿٣٢﴾ قَالُوا لَا تَوَجَّلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ﴿٣٣﴾ قَالَ أَبَشِّرْهُم بِمَا هُمْ فِيهِ مُشْكِرُونَ ﴿٣٤﴾ قَالُوا أَبَشِّرْكَ بِإِخْوَانٍ فَالَاحِقِينَ بِكَ مِنَ الْقَبِيلِ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٣٥﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٣٦﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٣٧﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٣٨﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٣٩﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٤٠﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٤١﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٤٢﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٤٣﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٤٤﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٤٥﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٤٦﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٤٧﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٤٨﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٤٩﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٥٠﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٥١﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٥٢﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٥٣﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٥٤﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٥٥﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٥٦﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٥٧﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٥٨﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٥٩﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٦٠﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٦١﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٦٢﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٦٣﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٦٤﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٦٥﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٦٦﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٦٧﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٦٨﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٦٩﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٧٠﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٧١﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٧٢﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٧٣﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٧٤﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٧٥﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٧٦﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٧٧﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٧٨﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٧٩﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٨٠﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٨١﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٨٢﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٨٣﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٨٤﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٨٥﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٨٦﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٨٧﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٨٨﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٨٩﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٩٠﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٩١﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٩٢﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٩٣﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٩٤﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٩٥﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٩٦﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٩٧﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٩٨﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿٩٩﴾ قَالُوا وَمَنْ يَتَّقُ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿١٠٠﴾

आयत 49

“(ऐ नबी! ﷺ) मेरे बंदों को बता दीजिए कि मैं यक्रीनन बहुत बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला हूँ।”

يَبِّئْ عِبَادِيَ أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٢٩﴾

आयत 50

“और यह कि मेरा अज़ाब भी बहुत दर्दनाक अज़ाब है।”

وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٣٠﴾

यक्रीनन मैं गफूर और रहीम हूँ, मगर दूसरी तरफ़ मेरा अज़ाब भी बहुत सख़्त होता है। लिहाज़ा कोई शख्स निडर और निश्चिन्त भी ना हो जाये, बल्कि मेरे बंदों को हर वक़्त “बैयनल खौफ़ वर्रिजा” की कैफ़ियत में रहना चाहिए। वो मेरी रहमत और मग़फ़िरत की उम्मीद भी रखें और मेरे अज़ाब से डरते भी रहें।

आयत 51

“और इन्हें ज़रा बताइये इब्राहीम अलै० के मेहमानों के बारे में।”

وَنَبِّئُهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ﴿٣١﴾

यह वाक़िया थोड़े बहुत फ़र्क़ के साथ हम सूरह हूद के सातवें रकूअ में भी पढ़ चुके हैं।

आयत 52

“जब वो दाख़िल हुए आप अलै. के यहाँ तो उन्होंने सलाम किया, आप अलै. ने कहा कि हमें तो तुमसे खौफ़ आ रहा है।”

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ

وَجُلُونَ ﴿٣٢﴾

आपके अजनबी होने की वजह से हमें आपसे ख़दशा है। लिहाज़ा बेहतर होगा आप लोग अपनी शिनाख़्त करवा दें।

आयत 53

“उन्होंने कहा कि डरिये नहीं, हम आपको एक साहिबे इल्म बेटे की बशारत देते हैं।”

قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ﴿٣٣﴾

फ़रिश्तों ने हज़रत इब्राहीम अलै. को हज़रत इस्हाक़ अलै. की विलादत की खुशख़बरी दी। हज़रत इस्माईल अलै. की विलादत इससे चंद बरस क़बल हो चुकी थी। वाज़ेह रहे कि कुरान हकीम में हज़रत इस्माईल अलै. के लिये “गुलामुन हलीम” और हज़रत इस्हाक़ अलै. के लिये “गुलामुन अलीम” के अल्फ़ाज़ आते हैं।

आयत 54

“आप अलै. ने कहा कि क्या तुम मुझे खुशख़बरी दे रहे हो बावजूद इसके कि मुझे पर बुढ़ापा तारी हो चुका है, तो तुम मुझे यह कैसी खुशख़बरी दे रहे हो!”

قَالَ أَبَشَّرْتُ مُنُونِي عَلَى أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فِيمَ تَبَشِّرُونِ ﴿٣٤﴾

﴿٣٤﴾

अला यहाँ पर “अलल रग़म” के मफ़हूम में इस्तेमाल हुआ है कि मेरे बुढ़ापे के बावजूद तुम मुझे जो बेटे की खुशख़बरी दे रहे हो तो कहीं तुम लोगों को कोई मुग़ालता तो नहीं हो रहा?

आयत 55

“उन्होंने कहा कि हम आप अलै. को हक के साथ बशारत दे रहे हैं, तो आप नाउम्मीद लोगों में से ना हों।”

قَالُوا بَشِّرْكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ الْقَاطِئِينَ ﴿٥٥﴾

उन्होंने बताया कि हम आपके रब की तरफ से भेजे गये हैं और यह जो बशारत हमने आपको दी है यह हकीकती और कतई बात है, बिल्कुल ऐसा ही होगा।

आयत 56

“आप अलै. ने कहा कि कौन होगा जो अपने रब की रहमत से मायूस हो, सिवाय गुमराहों के!”

قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِن رَّحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ﴿٥٦﴾

चुनाँचे अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत और रहमत से हज़रत इब्राहीम अलै. को सत्तासी (87) बरस की उम्र में बेटा अता किया। इसी तरह का मामला हज़रत ज़करिया अलै. के साथ भी पेश आया। हज़रत ज़करिया अलै. की ज़ौजह-ए-मुहतरमा सारी उम्र बाँझ रहीं, मगर जब वो दोनों मियाँ-बीवी बहुत बूढ़े हो चुके थे तो अल्लाह ने उन्हें बेटा (हज़रत याहिया अलै.) अता किया।

आयत 57

“आप अलै. ने पूछा: फरिस्तादो! तुम्हारी क्या मुहिम है?”

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٧﴾

अब हज़रत इब्राहीम अलै. ने उनसे पूछ ही लिया कि आप लोगों के यहाँ आने का क्या मक़सद है? आपको क्या मुहिम दरपेश है?

आयत 58

“उन्होंने कहा कि हमें भेजा गया है एक मुज़रिम क़ौम की तरफ़।”

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَى قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٥٨﴾

आयत 59

“सिवाय आले लूत अलै. के, उन सबको हम ज़रूर बचा लेंगे।”

إِلَّا آلَ لُوطٍ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٩﴾

आयत 60

“सिवाय उनकी बीवी के, हमने अंदाज़ा ठहरा लिया है कि वो यक़ीनन पीछे रहने वालों में से होगी।”

إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَا إِنَّهَا لَمِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٦٠﴾

आयत 61

“तो जब लूत अलै. के घर पहुँचे वो भेजे हुए।”

فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ﴿٦١﴾

आयत 62

“उस (लूत अलै.) ने कहा कि यक़ीनन तुम अजनबी लोग हो।”

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُونَ ﴿٦٢﴾

हज़रत लूत अलै. ने देखा कि यह बिल्कुल अजनबी लोग हैं, तो उन्होंने पूछा कि आप लोग कौन हैं, और कहाँ से तशरीफ़ लाये हैं? आपकी तशरीफ़ आवरी का मक़सद क्या है?

आयत 63

“उन्होंने कहा: बल्कि हम तो आपके पास वो शय लेकर आये हैं जिसके बारे में यह लोग शक में पड़े हुए थे।”

قَالُوا بَلْ جُنُنْكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿٦٣﴾

हज़रत लूत अलै. जब अपनी क्रौम को मुतन्बा (warn) करते थे कि अगर तुम लोग शिर्क से और इस फ़अले ख़बीस से बाज़ नहीं आओगे तो तुम पर अल्लाह का अज़ाब आयेगा, तो वो आप अलै. का मज़ाक उड़ाते थे, क्योंकि उन्हें यक़ीन नहीं था कि उन पर वाक़ई अज़ाब आ जायेगा। फ़रिश्तों ने कहा कि आज हम वही अज़ाब लेकर आ गये हैं जिसके बारे में यह लोग शक में थे।

आयत 64

“और हम आये हैं आपके पास हक़ (क़तई फ़ैसले) के साथ और यक़ीनन हम सच्चे हैं।”

وَأَتَيْنَكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٦٤﴾

आयत 65

“तो आप अपने घर वालों को ले जाइये रात के एक हिस्से में, और आप उनके पीछे-पीछे जाइये, और आप लोगों में से कोई भी पीछे मुड़ कर ना देखें”

فَاسْرِبْ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ

यानि आप लोग सुबह होने से पहले-पहले यहाँ से निकल जायें। पीछे रह जाने वालों के लिए अब दोस्ती और हमदर्दी जैसे जज़्बात का इज़हार किसी भी शक़ल में नहीं होनी चाहिए।

“और आप चले जाइये जहाँ आपको हुक्म हुआ है।”

وَأَمْضُوا حَيْثُ تُؤْمَرُونَ ﴿٦٥﴾

आयत 66

“और हमने लूत अलै. को अपने इस फ़ैसले से आगाह कर दिया कि सुबह होते ही उन लोगों की जड़ काट दी जायेगी।”

وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَؤُلَاءِ مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ﴿٦٦﴾

वहाँ से निकलने से पहले हज़रत लूत अलै. को बता दिया गया कि इस पूरी क्रौम को तहस-नहस कर दिया जायेगा और यहाँ कोई एक मुतनफ़्फ़स भी नहीं बचेगा।

आयत 67

“और आये अहले शहर खुशियाँ मनाते हुए।”

وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٦٧﴾

हज़रत लूत अलै. के यहाँ ख़ूबसूरत लड़कों को देख कर बद्क़माश किस्म के लोगों ने खुशी-खुशी आप अलै. के घर पर यलग़ार कर दी।

आयत 68

“लूत अलै. ने कहा: यह मेरे मेहमान हैं, चुनौचे तुम लोग मुझे रुसवा ना करो।”

قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ صَائِفُونَ فَلَا تَفْضَحُون ۝٦٨

आयत 69

“अल्लाह से डरो और मुझे बेआबरू मत करो।”

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُون ۝٦٩

आयत 70

“उन्होंने कहा: क्या हमने आपको सब दुनिया वालों (की हिमायत में खड़े होने) से मना नहीं किया था?”

قَالُوا أَوَلَمْ نُنْهَكَ عَنِ الْعَالَمِينَ ۝٧٠

क्या हम आपको मना नहीं कर चुके कि आप हर किसी की तरफ़दारी करते हुए हमारे मामले में दखलअंदाज़ी ना किया करें। हम जिसके साथ जो चाहें करें, आप बीच में आने वाले कौन होते हैं?

आयत 71

“आप अलै. ने कहा: यह मेरी बेटियाँ हैं अगर तुम्हें कुछ करना ही है।”

قَالَ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي إِنْ كُنْتُمْ فاعِلِينَ ۝٧١

क्रबल अज़ इस फ़िक्ररे की वज़ाहत हो चुकी है। यानि मेरी क्रौम की बेटियाँ जो तुम्हारे घरों में मौजूद हैं उनकी तरफ़ रुजूअ करो। अल्लाह तआला ने उन्हें तुम्हारे लिए फ़ितरी साथी बनाया है। इस फ़िक्ररे का दूसरा मतलब यह भी हो सकता है कि आप अलै. ने इत्मा मे हुज्जत के लिए उनमें से दो सरदारों को यहाँ तक कह दिया हो कि अगर ऐसी ही बात है तो मैं अपनी बेटियों का निकाह तुमसे किए देता हूँ।

आयत 72

“क़सम है आप अलै. की जान की, वो लोग अपनी इस बदमस्ती में बिल्कुल अंधे हो गये थे।”

لَعَنَرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَةٍ يَمَعُهُونَ ۝٧٢

عه के माद्रे में दिल के अंधेपन का मफ़हूम पाया जाता है, यानि उन लोगों के दिल भलाई और बुराई की तमीज़ से बिल्कुल आरी हो गये थे।

आयत 73

“तो उन्हें आ पकड़ा एक चिंघाड़ ने उजाला होने के वक़्त।”

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ۝٧٣

यानि पौ फटते ही उन पर अल्लाह के अज़ाब का कौड़ा एक ज़बरदस्त चिंघाड़ के साथ टूट पड़ा।

आयत 74

“फिर हमने उसके ऊपर वाले हिस्से को बना दिया उसके निचले वाला, और हमने बरसाए उनके ऊपर पकी हुई मिट्टी के कंकरा।”

فَجَعَلْنَا عَلَيْهِ سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيلٍ ۝٧٤

سِجِّيلٍ ۝٧٤

यानि उन आबादियों को पूरी तरह तलपट कर दिया गया और उन पर संगे-गिल की बारिश बरसाई गई।

आयत 75

“यक्कीनन इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो हक्क के मुतलाशी होते हैं।”

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّمُتَوَسِّمِينَ ﴿٧٥﴾

مُتَوَسِّمِينَ से मुराद वो लोग हैं जो आयाते आफ़ाक्रिया, आयाते तारीखिया, आयाते अन्फुसिया या आयाते कुरानिया के ज़रिये से हक्कीक़त को जानना और पहचानना चाहें। इस्म (असल मादा “ومس” है, अलिफ़ इसके हुरूफ़े असलिया में से नहीं है) के मायने अलामत के हैं। उर्दू में लफ़्ज़ “इस्म” को नाम के मुतरादिफ़ के तौर पर जाना जाता है, इसलिये कि किसी चीज़ या शख्स का नाम भी एक अलामत का काम देता है, जिससे उसकी पहचान होती है। लिहाज़ा जो असहाबे बसीरत अलामतों से मुतवस्सम (बाब तफ़्ज़ूल) होते हैं, उनके लिए ऐसे वाक़िआत में सामाने इबरत मौजूद है।

आयत 76

“और यह बस्तियाँ एक सीधी राह पर वाक़ेअ थीं।”

وَإِنَّهَا لَبِسَبِيلٍ مُّقِيمٍ ﴿٧٦﴾

क्रौमे लूत की यह बस्तियाँ उस शाहराहे आम पर वाक़ेअ थीं जो यमन (बहीरह-ए-अरब) और शाम (बहीरह-ए-रोम) के साहिलों को आपस में मिलाती थी। मशरक़ी मुमालिक (हिन्दुस्तान, चीन, जावा, मलाया वग़ैरह) से यूरोप जाने के लिए जो सामान आता था वो यमन के साहिल पर उतारा जाता था और फिर उस रास्ते से तिजारती क़ाफ़िले उसे शाम और फ़लस्तीन के साहिल पर पहुँचा देते थे। इसी तरह यूरोप से मशरक़ी मुमालिक के लिए आने वाला सामान शाम के साहिल पर उतरता था और यही क़ाफ़िले उसे यमन के साहिल पर पहुँचाने का ज़रिया बनते थे। उस वक़्त नहर स्वेज़ भी नहीं बनी थी और “रास उम्मीद” वाला रास्ता (Around the Cape of Good Hope) भी दरयाफ़्त नहीं हुआ था, जो वास्कोडिगामा ने 1498 ईस्वी में तलाश किया। चुनाँचे यह शाहराह उस ज़माने में मशरिक् और मगरिब के दरमियान तिजारती रास्ते का वाहिद ज़रिया थी।

आयत 77

“यक्कीनन इसमें निशानी है अहले ईमान के लिए।”

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾

आयत 78

“और बेशक बन वाले भी ज़ालिम थे।”

وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لظَالِمِينَ ﴿٧٨﴾

“अस्हाबुल अयका” से अहले मदयन मुराद हैं। यह हज़रत शुऐब अलै. की क्रौम थी मगर यहाँ इस क्रौम का ज़िक्र करते हुए आप अलै. का नाम नहीं लाया गया। इन सब अक्रवाम का तज़क़िरा यहाँ पर अंबिया अर्रसुल के अंदाज़ में हो रहा है।

आयत 79

“तो उनसे भी हमने इन्तेक़ाम लिया। और यह दोनों बस्तियाँ भी खुले रास्ते पर वाक़ेअ थीं।”

فَأَنتَقَمْنَا مِنْهُمُ وَإِنَّهُمَا لَبِآِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿٧٩﴾

इससे मुराद वही तिजारती शाहराह है जिसका ज़िक्र अभी हुआ है। यह अस्हाबे हिज्र के मसाकन से भी होकर गुज़रती थी जबकि अहले मदयन की आबादियाँ और क्रौमे लूत अलै. की बस्तियाँ भी इसी शाहराह पर वाक़ेअ थीं।

आयत 80

“और (इसी तरह) हिज्र वालों ने भी मुर्सलीन को झुठलाया।”

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٥٠﴾

अस्थाबे हिज्र से मुराद क्रौमे समूद है। क्रौमे समूद हिज्र के इलाक़े में आबाद थी और उनकी तरफ़ हज़रत सालेह अलै. मबऊस किए गये थे। जैसे हज़रत हूद अलै. की क्रौमे आद का ज़िक्र “अहक्राफ़” के हवाले से भी हुआ है (मुलाहिज़ा हो सूरतुल अहक्राफ़) जो उस क्रौम का इलाक़ा था, इसी तरह क्रौमे समूद का ज़िक्र यहाँ “अस्थाबुल हिज्र” के नाम से हुआ है। यहाँ पर “मुर्सलीन” के लफ़्ज़ से यह भी मालूम होता है कि इस क्रौम में पहले बहुत से अंबिया आये और फिर आखिर में रसूल की हैसियत से हज़रत सालेह अलै. तशरीफ़ लाये।

आयत 81

“और उन्हें हमने अपनी आयात अता कीं लेकिन वो उनसे ऐराज़ ही करते रहे।”

وَاتَيْنَهُمْ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٥١﴾

क्रौमे समूद को बतौर खास ऊँटनी की सूरत में हिस्सी मौअज़्ज़ा दिखाया गया था कि एक चट्टान शक्र (फटी) हुई और उसके अंदर से एक खूबसूरत गाभिन ऊँटनी बरामद हो गई।

आयत 82

“और वो पहाड़ों को तराश कर घर बनाते थे, अमन व सुकून के साथ।”

وَكَانُوا يَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ﴿٥٢﴾

क्रौमे समूद के यह घर आज भी मौजूद हैं और देखने वालों को दावते इबरत दे रहे हैं। मैंने खुद भी उनका मुशाहिदा किया है।

आयत 83

“तो उन्हें आ पकड़ा एक चिंघाड़ ने सुबह के वक़्त।”

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ ﴿٥٣﴾

आयत 84

“तो कुछ काम ना आ सका उनके जो वो कमाते थे।”

فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٥٤﴾

वो खुशहाल क्रौम थी मगर उन्होंने जो माल व असबाब जमा कर रखा था वो उन्हें अज़ाबे इलाही से बचाने के लिए कुछ भी मुफ़्रीद साबित ना हो सका।

इस सूरह मुबारक में अब तक तीन रसूलों का ज़िक्र “अम्बिया अर्रसूल” के अंदाज़ में हुआ है। उनमें से हज़रत शोऐब और हज़रत सालेह अलै. का नाम लिए बग़ैर उनकी क्रौमों का ज़िक्र किया गया है, जबकि हज़रत लूत अलै. का ज़िक्र नाम लेकर किया गया है। इसके बरअक्स हज़रत इब्राहीम अलै. का ज़िक्र यहाँ भी क्रससुन्नबिय्यीन के अंदाज़ में आया है, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह सूरह हूद में आया था।

इस सूरह की आख़री पन्द्रह आयात दावते दीन के ऐतबार से बहुत अहम हैं।

आयात 85 से 99 तक

وَمَا خَلَقْنَا السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَأَتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيلَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِنَ الْمَثَانِ وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ۝ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَى مَا مَتَّعْتَابَهُ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَخَفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ۝ كَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِبِينَ ۝ الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ۝ فَوَرَّبُّكَ لَنَسْأَلَهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُبْشِرِينَ ۝ إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ۝ الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ۝ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّى يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ۝

आयत 85

“और हमने नहीं तखलीक किया आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के दरमियान हैं मगर हक़ के साथ।”

وَمَا خَلَقْنَا السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ

यह कायनात एक बा-मक़सद तखलीक है, कोई खेल-तमाशा नहीं। हिन्दु मैथालॉजी की तर्ज़ पर यह कोई राम की लीला नहीं है कि राम जी जिसको चाहें राजा बना कर तख़्त पर बैठा दें और जिसे चाहें तख़्त से नीचे पटक दें, बल्कि यह कायनात और इसकी एक-एक चीज़ की तखलीक बा-मायने और बा-मक़सद है। इस हकीक़त को सूरह आले इमरान (आयत:91) में इस तरह बयान फ़रमाया गया है: {رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا بَاطِلًا سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ} “ऐ हमारे रब! तूने यह कायनात बे-मक़सद नहीं बनाई, तेरी ज़ात इससे बहुत आला और पाक है, लिहाज़ा हमें आग के अज़ाब से बचा ले।”

“और यक़ीनन क़यामत आकर रहेगी”

وَإِنَّ السَّاعَةَ لَأَتِيَةٌ

चूँकि यह कायनात और इसकी हर चीज़ हक़ के साथ तखलीक की गई है, लिहाज़ा इस हक़ का मन्तक़ी तक्राज़ा है कि एक यौमे हिसाब आए, लिहाज़ा क़यामत आकर रहेगी। इस कायनात का ब-ग़ौर जायज़ा लेने से यह हकीक़त अयाँ (उजागर) होती है कि इसकी तमाम चीज़ें इंसान के लिए पैदा की गई हैं। अगर वाक़ई ऐसा है तो मन्तक़ी सवाल उठता है कि फिर इंसान को किसलिये पैदा किया गया है? और इंसान के अंदर जो अख़लाक़ी हिस्स (moral sense) पैदा की गई है, उसे पैदाइशी तौर पर नेकी और बदी की जो तमीज़ दी गई है यहाँ दुनिया में उससे क्या नताइज बरामद हो रहे हैं? इस दुनिया में तो अख़लाक़ियात के उसूलों के बरअक्स नतीजे सामने आते हैं। यहाँ चोर डाकू और लुटेरे ऐश करते नज़र आते हैं और नेक सीरत लोग फ़ाक़े करने पर मजबूर हैं। लिहाज़ा उस सूरते हाल का मन्तक़ी तक्राज़ा है कि इस दुनिया के बाद एक और दुनिया हो जिसमें हर शख्स का पूरा-पूरा हिसाब हो और हर शख्स को ऐसा सिला और बदला मिले जो उसके आमाल के ऐन मुताबिक़ हो।

“तो (ऐ नबी ﷺ) आप इनसे खूबसूरती के साथ दरगुज़र करें।”

فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيلَ ۝

यह मुजरिम लोग हमारी पकड़ से बच नहीं सकेंगे। क़यामत आयेगी और यह लोग ज़रूर कैफ़रे-किरदार को पहुँचेंगे, मगर अभी हम इन्हें ढील देना चाहते हैं, मज़ीद कुछ देर के लिये मोहलत देना चाहते हैं। चुनाँचे आप ﷺ फ़िलहाल इनकी दिल आज़ार बातें बर्दाश्त करें, इनकी मआन्दाना सरगर्मियों (enmity activities) के जवाब में सब्र करें और अहसन अंदाज़ में इस सब कुछ को नज़र अंदाज़ करें। इस रवैय्ये और ऐसे तर्ज़े अमल से आप ﷺ के दर्जात बुलंद होंगे।

आयत 86

“यक्रीन आप ﷺ का रब पैदा करने वाला, खूब जानने वाला है।”

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ﴿٨٦﴾

वह जो पैदा करने वाला है, अपनी मख्लूक को खूब जानता भी है। सूरतुल मुल्क में फ़रमाया गया: {الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ} (आयत:14) “क्या उसी के इल्म में नहीं होगा जिसने पैदा किया? बल्कि वो तो निहायत बारीक-बीन बाख़बर है।” किसी मशीन को बनाने वाला उसके तमाम कलपुर्जों से खूब वाकिफ़ होता है।

आयत 87

“और हमने आप ﷺ को दी हैं सात बार-बार पढ़ी जाने वाली आयात और अज़मत वाला कुरान।”

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ﴿٨٧﴾

﴿٨٧﴾

इस पर तक़रीबन तमाम उम्मत का इज्माअ है कि यहाँ सात बार-बार दोहराए जाने वाली आयात से मुराद सूरतुल फ़ातिहा है। हदीस में सूरतुल फ़ातिहा को नमाज़ का लाज़मी जुज़्ब (component) करार दिया गया है: ((صَلَاةٌ لِّمَنْ لَّمْ يَفْرَأْ بِهَا حَتَّى)) (मुत्फ़िक़ अलैह) यानि जो शख्स (नमाज़ में) सूरतुल फ़ातिहा नहीं पढ़ता उसकी नमाज़ नहीं। क़ब्ल अज़ सूरतुल फ़ातिहा के मुताअले के दौरान हम वह हदीसे कुद्सी भी पढ़ चुके हैं जिसमें सूरतुल फ़ातिहा ही को नमाज़ करार दिया गया है: ((قَسَمْتُ الصَّلَاةَ بَيْنِي وَبَيْنَ عَبْدِى يَضَعُني)) (रवाहु मुस्लिम) अब जबकि हर नमाज़ी अपनी नमाज़ की हर रकअत में सूरतुल फ़ातिहा की तिलावत कर रहा है तो अंदाज़ा करें कि दुनिया भर में इन सात आयात की तिलावत कितनी मर्तबा होती होगी। इसके अलावा आयत ज़ेरे नज़र में इस सूरत को “कुराने अज़ीम” का नाम भी दिया गया है। यानि अहमियत और फ़ज़ीलत के ऐतबार से सूरतुल फ़ातिहा कुरान अज़ीम का दर्जा रखती है। इसी बुनियाद पर इस सूरत को असासुल कुरान और उम्मुल कुरान करार दिया गया है। इसके अलावा इसे अल काफ़िया (किफ़ायत करने वाली) और अल शाफ़िया (शिफ़ा देने वाली) जैसे नाम भी दिये गये हैं।

एक हदीस के मुताबिक़ सूरतुल फ़ातिहा जैसी कोई सूरत ना तौरात में है, ना इंजील में और ना ही कुरान में। चुनाँचे यहाँ हुज़ूर ﷺ की दिलजोई के लिए फ़रमाया जा रहा है कि ऐ नबी ﷺ देखें हमने आप ﷺ को इतना बड़ा ख़जाना अता फ़रमाया है। अबु ज़हल अगर खुद को मालदार समझता है, वलीद बिन मुगीरा अपने ज़अम (ख़याल) में अगर बहुत बड़ा सरदार है तो आप ﷺ मुत्लक़ परवाह ना करें। इन लोगों की सोच के अपने पैमाने हैं। इन बदबख़्तों को क्या मालूम कि हमने आपको कितनी बड़ी दौलत से नवाज़ा है!

आयत 88

“आप ﷺ आँख उठा कर भी ना देखें उस माल व मताअ की तरफ़ जो हमने उनके मुख़्तलिफ़ गिरोहों को दे रखा है”

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ

अबु ज़हल की दौलत व शौकत, वलीद बिन मुगीरा के बागात और उन जैसे दूसरे काफ़िरों की जागीरें आप ﷺ को हरगिज़ मुतास्सिर ना करें। आप ﷺ उनकी इन चीज़ों की तरफ़ आँख उठा कर भी ना देखें। एक हदीस में है कि अगर दुनिया व मा-फ़ीहा (जो दुनिया में है) की हैसियत अल्लाह की निगाह में मच्छर के एक पर के बराबर भी होती तो अल्लाह तआला किसी काफ़िर को एक घूँट पानी तक ना देता। चुनाँचे इन कुफ़रार को जो माल व मताअ इस दुनिया में दिया गया है अल्लाह तआला के नज़दीक इसकी कुछ अहमियत नहीं है। अहले ईमान को भी चाहिए कि वो भी माल व दौलते दुनिया को उसी नज़र से देखें।

“और आप ﷺ उनकी हालत पर ग़म ना करें”

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ

यह लोग आपकी दावत को ठुकरा कर अज़ाब के मुस्तहिक हो रहे हैं। इनमें आप ﷺ के कबीले के अफ़राद भी शामिल हैं और अबु लहब जैसे अज़ीज़ व अक्रारब भी, मगर आप अब इन लोगों के अंजाम के बारे में बिल्कुल परेशान ना हों।

“और अहले ईमान के लिए अपने बाजू झुका कर रखें।”

وَ اخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

अहले ईमान के साथ आप ﷺ शफ़क्कत और मेहरबानी से पेश आयें। इन लोगों में फुकरा व मसाकीन भी हैं और गुलाम भी। यह लोग जब आपके पास हाज़िर हों तो कमाल तवाज़अ (विनय) से इनका इस्तक़बाल कीजिए और इनकी दिल जोई फ़रमाइये। इससे कब्ल यही बात इस अंदाज़ में बयान फ़रमाई गई है: {فَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ} (अनआम:54) सूरतुल शौरा (आयत:215) में भी इस मज़मून को इन अल्फ़ाज़ में दोहराया गया है: {وَ اخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ} कि अहले ईमान जो आप ﷺ की पैरवी कर रहे हैं, आप अपने कंधे उनके लिए झुका कर रखिये। सूरह बनी इस्राईल में वालिदैन् के अदब व अहताराम के सिलसिले में भी यही अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए गये हैं कि औलाद अपने वालिदैन् के साथ अदब, मुहब्बत, आजिज़ी और इन्कसारी (विनम्रता) का मामला करें।

आयत 89

“और कह दीजिए कि मैं तो खुल्लम-खुल्ला ख़बरदार करने वाला हूँ।”

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ۝

मेरी इसके सिवा कोई ज़िम्मेदारी नहीं है कि आप लोगों को वाज़ेह तौर पर ख़बरदार कर दूँ।

आयत 90

“जैसे कि हमने नाज़िल किया इन तक़सीम करने वालों पर।”

كَمَا أُنزِلْنَا عَلَى الْمُفْتَسِمِينَ ۝

आयत 91

“जिन्होंने (अपने) कुरान को टुकड़े-टुकड़े कर दिया।”

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ۝

इस आयत के मफ़हूम के सिलसिले में मुफ़स्सरीन् ने मुख़्तलिफ़ राय बयान की हैं। इस ज़िम्न में ज़्यादा करीने-क़यास राय यह है कि यहाँ लफ़ज़ “कुरान” का इत्लाक़ तौरात पर हुआ है। जैसा कि सूरह सबा की आयत 31 में फ़रमाया गया: {وَقَالَ: {الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُؤْمِنُوا بِهِذَا الْقُرْآنَ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ} यानि कुफ़्कार कहते हैं कि ना इस कुरान पर ईमान लाओ और ना उस पर जो इससे पहले था। तो गोया तौरात भी कुरान ही था और यहूद ने अपने मफ़ादात के लिए अपने उस कुरान को टुकड़े-टुकड़े कर दिया था। उनके इस कारनामे का तज़क़िरा सूरह अनआम की आयत 91 में इस तरह हुआ है: {تَجْعَلُونَهُ قُرْآنًا طِينًا} है: “तुमने इस (तौरात) को वर्क-वर्क कर दिया है, इनमें से किसी हिस्से को ज़ाहिर करते हो और अक्सर को छुपा कर रखते हो।”

आयत 92

“तो (ऐ मुहम्मद ﷺ) आपके रब की क़सम! हम इन सबसे पूछ कर रहेंगे।”

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝

इस आयत का मज़मून और अंदाज़ वही है जो इससे पहले हम सूरतुल आराफ़ में पढ़ चुके हैं: {فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْأَلَنَّ} (अयत:6) “हम लाज़िम्न पूछ कर रहेंगे उनसे भी जिनकी तरफ़ रसूलों को भेजा गया और उनसे भी जिनको

रसूल बना कर भेजा गया।” चुनाँचे ऐ नबी صلی اللہ علیہ وسلم यह थोड़े वक़्त की बात है, हम इनसे एक-एक चीज़ का हिसाब लेकर रहेंगे।

आयत 93

“जो कुछ यह लोग करते रहे हैं।”

عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

आयत 94

“अब आप صلی اللہ علیہ وسلم अलल ऐलान बयान करें जिसका आपको हुक्म दिया जा रहा है और इन मुशरिकों की ज़रा परवाह ना करें।”

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾

इस हुक्म को रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم की दावती तहरीक में एक नए मोड़ की हैसियत हासिल है। इससे क़बल आप صلی اللہ علیہ وسلم अपने क़रीबी साथियों और रिश्तेदारों को इन्फ़रादी तौर पर दावत दे रहे थे, जैसे आप صلی اللہ علیہ وسلم ने अपनी ज़ौजा मोहतरमा हज़रत ख़दीजा रज़ि. से बात की, अपने पुराने दोस्त हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ि. को दावत दी, अपने चचा ज़ाद भाई हज़रत अली रज़ि. को ऐतमाद में लिया जो आपके ज़ेरे क़िफ़ालत भी थे और अपने आज़ाद करदा गुलाम और मुँह बोले बेटे हज़रत ज़ैद रज़ि. से भी बात की। आप صلی اللہ علیہ وسلم की इस इन्फ़रादी दावत का सिलसिला इब्तदाई तौर पर तक़रीबन तीन साल पर मुहीत नज़र आता है। बाज़ लोग इस दौर की दावत को एक खुफ़िया (underground) तहरीक से ताबीर करते हैं मगर यह दुरुस्त नहीं। ऐलाने नबुवत के बाद आप صلی اللہ علیہ وسلم की सीरत में कोई दिन भी ऐसा नहीं आया जिसमें आप صلی اللہ علیہ وسلم ने अपनी इस दावत को खुफ़िया रखा हो, मगर ऐसा ज़रूर है कि आप صلی اللہ علیہ وسلم की दावत फ़ितरी और तदरीजी अंदाज़ में आगे बढ़ी और आहिस्ता-आहिस्ता इरतका पज़ीर हुई।

इस दावत का आगाज़ घर से हुआ, फिर आप صلی اللہ علیہ وسلم ताल्लुक़ और क़राबत दारी की बुनियाद पर मुख़्तलिफ़ अफ़राद को इन्फ़रादी अंदाज़ में दावत देते रहे और फिर तक़रीबन तीन साल के बाद आप صلی اللہ علیہ وسلم को हुक्म हुआ कि अब आप صلی اللہ علیہ وسلم अलल ऐलान यह दावत देना शुरू कर दें। इस हुक्म के बाद आप صلی اللہ علیہ وسلم ने एक दिन अरब के रिवाज़ के मुताबिक़ कोहे सफ़ा पर चढ़ कर लोगों को ऊँची आवाज़ से अपनी तरफ़ बुलाना शुरू किया। अरब में रिवाज़ था कि किसी अहम ख़बर का ऐलान करना होता तो एक आदमी अपना पूरा लिबास उतारता, बिल्कुल नंगा होकर किसी ऊँची जगह पर चढ़ जाता और “वा-सबाहा” का नारा लगाता, कि हाय वो सुबह जो आया चाहती है! यानि मैं तुम लोगों को आने वाली सुबह की ख़बर देने वाला हूँ! उस ज़माने में ऐसी ख़बर आमतौर पर किसी मुख़ालिफ़ क़बीले के शबखून मारने के बारे में होती थी कि फ़लाँ क़बीला आज सुबह-सवेरे तुम पर हमलावर होना चाहता है। ऐसे शख्स को “नज़ीर-ए-उरयाँ” कहा जाता था। इस रिवाज़ के मुताबिक़ (लिबास उतारने की बेहुदा रस्म को छोड़ कर) आप صلی اللہ علیہ وسلم ने कोहे सफ़ा पर खड़े होकर “वा-सबाहा” का नारा लगाया। जिस जिसने आप صلی اللہ علیہ وسلم की आवाज़ सुनी वो भागम-भाग आप صلی اللہ علیہ وسلم के पास आ पहुँचा कि आप صلی اللہ علیہ وسلم कोई अहम ख़बर देने वाले हैं। जब सब लोग इकठ्ठे हो गये तो आप صلی اللہ علیہ وسلم ने उनके सामने अल्लाह का पैग़ाम पेश किया, जिस के जवाब में आपके बदबख़्त चचा अबु लहब ने कहा: يَا لَيْلَىٰ إِنَّكَ الْهَٰذِلَةُ الْهَٰجِلَةُ “तुम्हारे लिए हलाकत हो (नऊज़ुबिल्लाह) इस काम के लिये तुमने हमें जमा किया था?”⁽¹²⁾ दावत को डंके की चोट बयान करने इस हुक्म और इस वाक़िये से मालूम होता है कि यह सूरत नबुवत के इब्तदाई ज़माने में नाज़िल हुई थी।

आयत 95

“हम आप صلی اللہ علیہ وسلم की तरफ़ से काफ़ी हैं इन इस्तहज़ा करने वालों (से निपटने) के लिए।”

إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ﴿٩٥﴾

आप صلی اللہ علیہ وسلم इनकी मुख़ालफ़त की परवाह ना करें, हम इनसे अच्छी तरह निपट लेंगे। यह लोग आप صلی اللہ علیہ وسلم का बाल भी बाँका नहीं कर सकेगें।

आयत 96

“जो अल्लाह के साथ दूसरे मअबूद गढे बैठे हैं। तो अनकरीब उन्हें मालूम हो जायेगा।”

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ

⑨

ऐसे लोगों को बहुत जल्द मालूम हो जायेगा कि असल हकीकत क्या थी और वो किन गुमराहियों में पड़े हुए थे।

आयत 97

“और हम जानते हैं कि आप ﷺ का सीना तंग होता है उनकी बातों से।”

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ۝

अलल ऐलान दावत की वजह से मुखालफत का एक तूफान आप ﷺ पर उमड़ आया था। पहले मरहले में यह मुखालफत अगरचे ज़बानी तअन व तशनीअ और बद् गोई तक महदूद थी मगर बहुत तकलीफ़ देह थी। किसी ने मजनून और काहिन कह दिया, किसी ने शायर का खिताब दे दिया। कोई दूर की कौड़ी लाया कि आप ﷺ ने घर में एक अजमी गुलाम छुपा रखा है, उससे मालूमात लेकर हम पर धौंस जमाते हैं। कुछ ऐसे लोग भी थे जो वाकई समझते थे कि आप ﷺ पर आसेब वगैरह के असरात हो गये हैं। ऐसे लोग अज़राहे हमदर्दी ऐसी बातों का इज़हार करते रहते थे। एक दफ़ा उतबा बिन रबीहा ने इसी तरह आप ﷺ से इज़हारे हमदर्दी किया। वह कबीले का मामूर बुजुर्ग था। उसने कहा: ऐ मेरे भतीजे, बड़े-बड़े आमिलों और काहिनों से मेरे ताल्लुकात हैं, आप ﷺ कहें तो मैं उनमें से किसी को बुला लाऊँ और आपका इलाज कराऊँ? इन सब बातों से आपको बहुत तकलीफ़ होती थी और आपकी इसी तकलीफ़ और दिल की घुटन का यहाँ तज़क़िरा किया जा रहा है कि ऐ नबी ﷺ इन लोगों की बेहुदा बातों से आपको जो तकलीफ़ होती है वह हमारे इल्म में है। यह मज़मून सूरतुल अन्आम की आयत 33 में भी गुज़र चुका है।

आयत 98

“बस आप तस्बीह कीजिए अपने रब की हम्द के साथ और सज्दा करने वालों में से हो जायें।”

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ السَّاجِدِينَ ۝

आप अपने रब की तस्बीह व तहमीद में मशगूल रहें। उसी के आगे झुके रहें और इस तरह अपने ताल्लुक मअ अल्लाह को मज़ीद मज़बूत करें। अल्लाह से अपने इस क़ल्बी और ज़हनी रिश्ते को जितना मज़बूत करेंगे उसी क़द्र आप ﷺ के दिल को सुकून व इत्मिनान मिलेगा और सन्न व इस्तक्रामत के रास्ते पर चलना और इन सख़्तियों को झेलना आप ﷺ के लिए आसान होगा।

आयत 99

“और अपने रब की बंदगी में लगे रहें यहाँ तक कि यक़ीनी शय वक़ूअ पज़ीर हो जाये।”

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ۝

आम तौर पर यहाँ “यक़ीन” से मौत मुराद ली गई है। यानि अपनी ज़िन्दगी की आखरी घड़ी तक उसकी बंदगी में लगे रहिये और इस सिलसिले में लम्हा भर के लिए भी शफ़लत ना कीजिए:

ता दमे आख़िर दमे फ़ारग मुबाश

अंदरे रह मे तराश व मे ख़राश!

बाज़ लोग यहाँ “यक़ीन” से अल्लाह तआला की नुसरत भी मुराद लेते हैं कि कुफ़्रार के खिलाफ़ अल्लाह का फ़ैसला आ जाये, उसकी मदद अहले हक़ के शामिले हाल हो जाये और उन्हें कुफ़्रार पर ग़लबा हासिल हो जाये।

بَارِكْ اللهُ لِي وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيمِ وَنَفَعْنِي وَآيَاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ۔



सूरतुन्नहल

तम्हीदी कलिमात

सूरह युनुस से शुरू होने वाले मक्की सूरतों के तवील सिलसिले की अब तक हम छः सूरतों का मुताअला कर चुके हैं। इन छः सूरतों को भी हमने तीन-तीन सूरतों के मज़ीद दो ज़ेली ग्रुप्स में तक्सीम किया था। पहले ग्रुप में शामिल तीन सूरतें (युनुस, हूद और युसूफ़) निस्बतन तवील हैं, जबकि दूसरे ग्रुप की सूरतें (अल रअद, इब्राहीम और अलहिज़्र) निस्बतन छोटी हैं। दूसरे ग्रुप की इन सूरतों में पहली दो यानि सूरतुल रअद और सूरह इब्राहीम में निस्बते जौज़ियत है जबकि सूरतुल हिज़्र बिल्कुल मुनफ़रिद नौइयत की सूरत है। अब सूरतुल नहल से मक्की सूरतों के इस तवील सिलसिले के तीसरे ज़ेली ग्रुप का आगाज़ हो रहा है। इस ग्रुप में सूरतुल नहल, सूरह बनी इसराइल और सूरतुल कहफ़ शामिल हैं। यह तीनों सूरतें भी निस्बतन तवील हैं। इनमें सूरतुल नहल मुनफ़रिद है जबकि सूरह बनी इसराइल और सूरतुल कहफ़ में जोड़े का ताल्लुक है। सूरतुल नहल का ज़माना-ए-नुज़ूल मक्के का आखरी दौर मालूम होता है। इस सूरत की ख़ास अहमियत यह है कि इसमें अल्लाह की नेअमतों का ज़िक्र बहुत जामियत के साथ हुआ है और इसके मज़ामीन की सूरतुल अनआम और सूरतुल रूम के मज़ामीन के साथ गहरी मुशाबहत पाई जाती है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

आयात 1 से 9 तक

أَتَىٰ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ① يُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْذِرُوا أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ② خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ تَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ③ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ تُظْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ④ وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنْفَعٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ⑤ وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ وَحِينَ تَسْرَحُونَ ⑥ وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ لَّمْ تَكُونُوا بِلَاغِيهِ إِلَّا بَشِقِ الْإِنْفُسِ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَّءُوفٌ رَحِيمٌ ⑦ وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ⑧ وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَائِرٌ وَلَوْ شَاءَ لَهْدَكُمْ أجمعين ⑨

आयात 1

“अल्लाह का हुकूम आ पहुँचा है, पस तुम जल्दी मत मचाओ।”

أَتَىٰ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ

जब हमने अपना रसूल भेज दिया और उस पर अपना कलाम भी नाज़िल करना शुरू कर दिया है तो गोया फ़ैसलाकुन वक़्त आ पहुँचा है। अब मामला सिर्फ़ मोहलत के दौरानिये का है कि हमारे रसूल और हमारे पैग़ाम का इंकार करने वालों को मशियते इलाही के मुताबिक़ किस क़दर मोहलत मिलती है। बहरहाल अब जल्दी मचाने की ज़रूरत नहीं। अल्लाह का अज़ाब बस अब आया ही चाहता है, इसके लिये अब बहुत ज़्यादा वक़्त नहीं रह गया।

“वह पाक और बुलंद व वाला है उस शिर्क से जो वह करते हैं।”

سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ①

आयत 2

“वह उतारता है फ़रिश्तों को अपने अम्र की रूह के साथ अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है, कि खबरदार कर दो (मेरे बन्दों को) कि मेरे सिवा कोई मअबूद नहीं है पस तुम मेरा ही तकवा इख्तियार करो।”

يُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْذِرُوا أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ②

‘बिल रूही मिन अमरिही’ से मुराद अल्लाह की वही है। यानि हज़रत मोहम्मद صلی اللہ علیہ وسلم को अल्लाह ने अपनी वही के लिये चुन लिया और आप صلی اللہ علیہ وسلم की तरफ़ हज़रत जिब्राइल अलै. वही लेकर आए। यहाँ पर लफज़ “अम्र” की वज़ाहत भी ज़रूरी है। सूरतुल आराफ़ में फ़रमाया गया: {إِلَٰهُ الْخَلْقِ وَالْأَمْرِ} (आयत 54) “आगाह हो जाओ, उसी के लिये खल्क है और उसी के लिये अम्र।” यानि आलम-ए-खल्क और आलम-ए-अम्र दो अलग-अलग आलम हैं। आलमे अम्र का मामला यह है कि उसमें वक्त्र का आमिल बिल्कुल कार फ़रमा नहीं। इस आलम में किसी काम के करने या कोई वाक़िया वकूअ पज़ीर होने में वक्त्र दरकार नहीं होता। बस अल्लाह तआला का इरादा होता है और उसके “कुन” फ़रमाने से वह काम हो जाता है। जैसा कि सूरह यासीन में फ़रमाया गया: {إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ} “उसका अम्र तो यही है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो बस यही होता कि वह उसे कहता है कि हो जा तो वह हो जाती है।”

इसके बरअक्स आलमे खल्क में किसी काम के पाया-ए-तकमील तक पहुँचने में वक्त्र दरकार होता है। जैसे कुरान में मुतअद्दिद बार फ़रमाया गया कि अल्लाह ने ज़मीन व आसमान छ: दिनों में तख्लीक किये। इसी तरह दुनिया का सारा निज़ाम आलमे खल्क के असूलों पर चल रहा है। मसलन आम की गुठली से कौपलें फूटती हैं, फिर बढ़ती हैं और फिर आहिस्ता-आहिस्ता एक तनावर दरख़्त बन जाता है। इस सारे अमल में वक्त्र दरकार होता है।

यहाँ पर रूह के ज़िक्र के हवाले से यह बात अहम है कि रूह का ताल्लुक आलमे अम्र से है। आलमे अम्र की सिर्फ़ तीन चीज़ें ही हमारे इल्म में हैं। मलाएका, रूह और वही। कुरान में मलाएका को भी रूह कहा गया है। जैसे हज़रत जिब्राइल अलै. के लिये रूहुल कुदुस और रूहुल आमीन के अल्फ़ाज़ आए हैं। सूरतुल शौरा में फ़रमाया गया: {كَذَٰلِكَ يَدْعُو الْوَحُّ الْآمِينَ} (आयत 193) जबकि सूरतुल बक्ररह की आयत 87 में इरशाद हुआ: {وَأَنذِرْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ}। इसी तरह कुरान में वही को भी रूह कहा गया है, और यह वही नाज़िल भी रूह पर होती है। जब मोहम्मद रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم पर वही नाज़िल होती तो आप صلی اللہ علیہ وسلم उसका इदराक़ तबई हवास-ए-खम्सा (five senses) से नहीं करते थे, बल्कि वही बराहेरास्त आप صلی اللہ علیہ وسلم के क़ल्बे मुबारक पर नाज़िल होती थी। इसलिये कि क़ल्बे मोहम्मदी रूहे मोहम्मदी صلی اللہ علیہ وسلم का मसकन था: {كَذَٰلِكَ يَدْعُو الْوَحُّ الْآمِينَ} {عَلَىٰ قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ} (अल शौअरा, आयत 193-194) चुनाँचे वही भी रूह है, इसको लाने वाले जिब्राइल अमीन भी रूह हैं और इसका नुज़ूल भी रूहे मोहम्मदी صلی اللہ علیہ وسلم पर हो रहा है। इस सिलसिले में जिगर मुरादाबादी का यह शेर उनकी किसी ख़ास कैफ़ियत का मज़हर मालूम होता है:

नगमा वही है नगमा कि जिसको, रूह सुने और रूह सुनाए!

आयत 3

“उसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ। वह बहुत बुलंद है ऊस शिर्क से जो वह करते हैं।”

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ تَعَالٰی عَمَّا يُشْرِكُوْنَ

③

आयत 4

“उसने पैदा किया इंसान को गंदे पानी के बूंद से, फिर यकायक वह बन गया खुला झगड़ा।”

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ تُظْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ٢٠

इंसान अपने खुदसाख्ता नज़रियात के हक़ में ख़ूब बहस करता है, अक़ली व नक़ली दलीलें देता है और ज़ोरे खिताबत से ज़मीन व आसमान के क़लाबे मिला देता है।

आयत 5

“और चौपायों को भी उसने पैदा किया, उनमें तुम्हारे लिये गरमी का सामान और कई दूसरे फायदे भी हैं, और उनमें से तुम खाते भी हो।”

وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ٥

बाज़ जानवरों की ऊन से तुम लोग लिबास बुनते हो, जो सर्दी के मौसम में तुम्हें गरमी पहुँचाता है, बाज़ जानवरों के बालों से बहुत सी दूसरी चीज़ें बनाते हो। इसी तरह यह जानवर और भी बहुत सी सूरतों में तुम्हारे लिये मुफ़ीद और मददगार होते हैं, हत्ता कि तुम्हारी खुराक की बेशतर ज़रूरियात भी इन्हीं से पूरी होती हैं।

आयत 6

“और तुम्हारे लिये इनमें बड़ी शान व शौकत है जब तुम शाम को इन्हें चरा कर लाते हो और जब (सुबह के वक़्त) चराने के लिये ले जाते हो।”

وَلَكُمْ فِيهَا بَٰعٌ حِينَ تَرِجُونَ وَحِينَ تَسْرَحُونَ ٦

देहाती माहौल में मवेशियों की हैसियत बहुत कीमती सरमाये की सी होती है, इसी लिये इन्हें माल-मवेशी कहा जाता है। यह जानवर जब सुबह चरने के लिये जाते हैं या शाम के वक़्त जंगल से चर कर वापस आ रहे होते हैं तो उनके मालिकों के लिये यह बड़ा खुशकुन मंज़र होता है। जानवरों का गल्ला या रेवड़ जितना बड़ा होगा, उसके मालिक की हैसियत और शान व शौकत उसी क़दर ज़्यादा समझी जाएगी।

आयत 7

“और वह तुम्हारे बोझ उठा कर ले जाते हैं ऐसी बस्तियों की तरफ़ जिन तक तुम नहीं पहुँचने वाले होते मगर जान तोड़ कर।”

وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ لَّمْ تَكُونُوا الْبَالِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنْفُسِ ٧

इनमें ऐसे जानवर भी हैं जो साज़ो-सामान के नक़ल व हमल (loading-unloading) में तुम्हारे काम आते हैं और उनके बग़ैर तुम यह भारी चीज़ें उठा कर दूर-दराज़ इलाक़ों तक नहीं पहुँचा सकते।

“यक़ीनन तुम्हारा रब शफ़क्कत फ़रमाने वाला, मेहरबान है।”

إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَّءُوفٌ رَّحِيمٌ ٨

आयत 8

“और (उसी ने पैदा किये) घोड़े और खच्चर और गधे, कि तुम उन पर सवारी करो और (तुम्हारे लिये है उनमें) ज़ीनत भी।”

وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً ٨

इन मवेशियों से इंसान को बहुत से फ़ायदे भी हासिल होते हैं और यह इसके लिये बाइसे ज़ेब व ज़ीनत भी हैं। ख़ुसूरी तौर पर घोड़ा बहुत हसीन और कीमती जानवर है और इसका मालिक इसे अपने लिये बाइसे फ़ख़्र व तमक्कुनियत (खेती) समझता है।

“और (ऐसी चीज़ें भी) वह पैदा करता है जिनका तुम्हें इल्म ही नहीं।”

وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ①

यानि ये तो चंद वह चीज़ें हैं जिनके बारे में तुम लोग जानते हो, मगर अल्लाह तआला तो बेशुमार ऐसी चीज़ें भी तखलीक फ़रमाता है जिनके बारे में तुम्हें कुछ भी इल्म नहीं।

आयत 9

“और अल्लाह तक पहुँचाने वाला सीधा रास्ता है और उनमें कुछ टेढ़े भी हैं।”

وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَائِرٌ ②

यह सीधा रास्ता तौहीद का रास्ता है। यहाँ इस रास्ते को “क़सद उल सबील” का नाम दिया गया है। कुरान में इसे सिराते मुस्तक़ीम भी कहा गया है और सवा अस्सबील भी। यही एक रास्ता है जो इंसान को अल्लाह तक पहुँचाता है, मगर बहुत से लोग इस रास्ते से भटक कर टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियों पर मुड़ जाते हैं जो उन्हें गुमराही के गड़बड़ों में गिरा देती हैं।

“और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको हिदायत दे देता।”

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَهَدَيْكُمْ أَجْمَعِينَ ③

अल्लाह अगर चाहता तो सब इंसानों को इसी एक सीधे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ और समझ-बूझ दे देता।

आयात 10 से 23 तक

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ④ يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ⑤ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِ رَبِّ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ⑥ وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ⑦ وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاجِرَ فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ⑧ وَالْقَى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَانْهَارًا وَسُبُلًا لَعَلَّكُمْ يَهْتَدُونَ ⑨ وَعَلَيْتُ وَالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ⑩ أَفَمَنْ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ⑪ وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ⑫ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَسْرُونَ وَمَا تَعْلَنُونَ ⑬ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ⑭ أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ⑮ إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُنْكَرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ⑯ لَا جَرَمَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسْرُونَ وَمَا يَعْلَنُونَ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ⑰

आयत 10

“वही है जिसने उतारा है आसमान से तुम्हारे लिये पानी, उसी से है (तुम्हारा) पीना और उसी से हैं दरख्त (नबातात वगैरह), जिनमें तुम (अपने जानवरों) को चराते हो।”

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ

وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ④

अल्लाह तआला ही बारिश और बर्फ की सूरत में बादलों से पानी बरसाता है जिस पर इंसानी ज़िन्दगी का बराहेरास्त इन्हसार है और फिर यही पानी बेशुमार नबाताती और हैवानी मख्लूकात को ज़िन्दगी बख़्शता है जो इंसान ही के लिये पैदा की गई हैं।

आयत 11

“वह उगाता है तुम्हारे लिये इस (पानी) से खेती और ज़ैतून और खजूरें और अंगूर और हर क्रिस्म के फ़ल।”

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ
وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ

“यक्रीनन इसमें निशानी है उन लोगों के लिये जो गौर व फ़िक्र करते हैं।”

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

अल्लाह तआला की शाने खल्लाकी के बेशुमार अंदाज़ हैं, उसकी तखलीक में लामहदूद तनूअ, बूकलमूनी और रंगा-रंगी है। चुनाँचे अब एक दूसरे पहलु से अल्लाह तआला की नेअमतों का ज़िक्र होने जा रहा है:

आयत 12

“और उसने मुसख़र कर दिया तुम्हारे लिये रात और दिन को”

وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ

इंसान की इफ़रादी और इज्तमाई ज़िन्दगी में रात अपनी जगह अहम है और दिन की अपनी अहमियत है। रात में मजमुई तौर पर एक सुकून है। यह इंसानों और दूसरे जानदारों के लिये बाइसे राहत है, इसमें वह आराम करते हैं, सोते हैं और सुबह ताज़ा दम होकर उठते हैं। दूसरी तरफ़ दिन में भाग-दौड़, मेहनत, जद्दो-जहद और मुख्तलिफ़ अलनौ इंसानी सरगर्मियाँ मुमकिन होती हैं। अगर इस पहलु से दुनिया के इज्तमाई निज़ाम को देखा जाए तो यह पूरा निज़ाम रात और दिन के वजूद का मरहूने मन्नत नज़र आता है। नबाताती निज़ाम को ही ले लीजिये। इसके लिये रात और दिन दोनों ही नागुज़ीर (अनिवार्य) हैं। दिन को सूरज की रौशनी और तमाज़त से नबातात के लिये Photosynthesis का अमल मुमकिन होता है जो उनकी नशो नुमा के लिये नागुज़ीर है। फ़सलों और फलों को भी पकने के लिये सूरज की रौशनी और हरात की ज़रूरत होती है। दूसरी तरफ़ रात को नबातात respiration के अमल के ज़रिये से ऑक्सीजन हासिल करते हैं। गोया रात और दिन के बग़ैर नबातात का वजूद मुमकिन ही नहीं है और इंसानी ज़िन्दगी में नबातात के अमल व दखल का तस्सवुर करें तो इस एक मिसाल से ही यह हकीक़त समझ में आ जाती है कि अल्लाह तआला का दिन और रात को इंसान के लिये मुसख़र कर देना कितनी बड़ी नेअमत है।

“और सूरज और चाँद को, और सितारे भी मुसख़र हैं उसी के हुकुम से।”

وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِ

पूरा निज़ामे शम्सी और तमाम अजरामे फ़लकी अल्लाह तआला के हुकुम से इंसान की नफ़ा रसानी में मसरूफ़ हैं।

“यक्रीनन इसमें निशानियाँ हैं अक़ल वालों के लिये।”

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

आयत 13

“और जो चीज़ें उसने फैला दी हैं तुम्हारे लिये ज़मीन में उनके मुख्तलिफ़ रंग हैं।”

وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ

अल्लाह तआला ने इंसान के लिये ज़मीन में रंगा-रंग क्रिस्म के हैवानात, नबातात और जमादात पैदा किये हैं।

“यक्रीनन इसमें भी निशानी है उन लोगों के लिये जो नसीहत अखज़ करें।”

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٣﴾

आयत 14

“और वही है जिसने समुन्दर को तुम्हारी ज़रूरियात पूरी करने में लगा दिया है ताकि तुम खाओ उससे ताज़ा गोश्त”

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَأْكُلُوا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا

समुन्दरी खुराक हमेशा से इंसानी ज़िन्दगी में बहुत अहम रही है। दौरे जदीद में इसकी अफ़ादियत (उपयोगिता) मज़ीद नुमाया होकर सामने आई है जिसकी वजह से इसकी अहमियत और भी बढ़ गई है।

“और ताकि तुम निकालो उसमें से बनाव श्रृंगार का सामान जो तुम पहनते हो।”

وَتَسْتَخْرِجُوا مِنْهُ حَبِيَّةً تَلْبَسُونَهَا

समुन्दर से मोती और बहुत सी दूसरी ऐसी अश्या (चीज़ें) निकाली जाती हैं जिनसे ज़ेवरात और आराईश व ज़ेबाईश का सामान तैयार होता है।

“और तुम देखते हो कश्तियों को कि पानी को चीरती हुई चलती हैं उस (समुन्दर) में”

وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاجِرَ فِيهِ

“और ताकि तुम उसका फ़ज़ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो।”

وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٤﴾

आयत 15

“और उसने ज़मीन में लंगर डाल दिये हैं कि तुम्हें लेकर लुढ़क ना जाए और उसमें (नदियाँ बहा दी हैं) और रास्ते (बना दिये हैं) ताकि तुम अपनी मंज़िलों तक पहुँचा करो।”

وَالْفَى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا

وَسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥﴾

यहाँ وَاسْبِلًا के इकट्ठे ज़िक्र के हवाले से अगर देखा जाए तो अमली तौर पर भी इनका आपस में गहरा ताल्लुक है। पहाड़ी सिलसिलों में आम तौर पर नदियों की गुज़रगाहों के साथ-साथ ही रास्ते बनते हैं। इसी तरह पहाड़ों के दरमियान कुदरती वादियाँ इन्सानों की गुज़रगाहें भी बनती हैं और पानी के रेलों को रास्ते भी फ़राहम करती हैं।

आयत 16

“और दूसरी अलामतें भी हैं। और वह सितारों से भी रहनुमाई हासिल करते हैं।”

وَعَلَّمَتْهُمُ الْوَالِدَاتُ وَالْجَمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ﴿١٦﴾

अल्लाह तआला ने इंसानों की मदद के लिये ज़मीन में तरह-तरह की अलामतें बनाई ताकि मुख्तलिफ़ इलाक़ों और रास्तों की पहचान हो सके। इसी तरह आसमान के सितारों को भी सिम्तों (दिशाएँ) और रास्तों के तअय्युन का एक ज़रिया बना दिया। पुराने ज़माने में समुन्दरी और सहराई सफ़र रात के वक़्त सितारों की मदद से ही मुमकिन होते थे।

आयत 17

“तो क्या जो (ये सब कुछ) पैदा करता है उनकी तरह है जो (कुछ भी) पैदा नहीं करते? तो क्या तुम नसीहत हासिल नहीं करते?”

أَفَمَنْ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٧﴾

मुशरिकीने अरब ने मुख्तलिफ़ नामों से जो बुत बना रखे थे उनके बारे में उनका अक़ीदा था कि वह अल्लाह के यहाँ उनकी सफ़ारिश करेंगे। सूरह युनुस की आयत 18 में उनके इस अक़ीदे का ज़िक्र इन अल्फ़ाज़ में किया गया है: {وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا}

{عِنْدَ اللَّهِ} “और वह कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारशी हैं।” अल्लाह के बारे में उनका मानना था कि वह कायनात और इसमें मौजूद हर चीज़ का खालिक है और वह यह भी तस्लीम करते थे कि उनके मअबूदों का इस तखलीक में कोई हिस्सा नहीं और ना ही वह कोई चीज़ तखलीक कर सकते हैं। कुरान में उनके इस अक़ीदे का भी बार-बार ज़िक्र आया है: {وَلَيْن سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ} (लुक़मान:25) “अगर आप इनसे पूछेंगे कि किसने पैदा किया आसमानों और ज़मीन को तो लाज़िमन यही कहेंगे कि अल्लाह ने!” उन लोगों के इसी अक़ीदे की बुनियाद पर यहाँ यह सवाल पूछा गया है कि तुम्हारे ये खुद साख़ता मअबूद, जो कुछ भी तखलीक करने की कुदरत नहीं रखते, क्या उस अल्लाह की मानिन्द हो सकते हैं जो इस कायनात और इसमें मौजूद हर चीज़ का खालिक है? और अगर तुम तस्लीम करते हो कि इस सवाल का जवाब नफ़ी में है तो क्या फिर भी तुम लोग नसीहत नहीं पकड़ते हो?

आयत 18

“और अगर तुम अल्लाह की नेअमतों को गिनो तो उनका अहाता नहीं कर सकोगे।”

وَأِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا

अल्लाह की नेअमतों की गिनती तो कज़ा उसकी बेशुमार नेअमतें ऐसी हैं जिनसे इंसान फ़ैज़याब तो हो रहा है लेकिन उन तक इंसान के इल्म और शऊर की अभी पहुँच ही नहीं।

“यक़ीनन अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।”

إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝۱۸

आयत 19

“और अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो।”

وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسْرُؤْنَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۝۱۹

आयत 20

“और जिनको यह पुकारते हैं अल्लाह के सिवा वह कुछ पैदा नहीं करते, बल्कि वह तो खुद पैदा किये गए हैं।”

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ۝۲۰

अम्बिया व रुसुल हों, मलाइका हों या औलिया अल्लाह, सब मख़लूक हैं, खालिक सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात है।

आयत 21

“मुर्दा हैं, ज़िन्दा नहीं हैं। और वह नहीं जानते कि कब उठाए जायेंगे।”

أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَاءٍ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝۲۱

जिन औलिया अल्लाह के नामों पर इन्होंने बुत बना रखे हैं वह अब इस दुनिया में नहीं हैं, वह फ़ौत हो चुके हैं और उन्हें कुछ मालूम नहीं कि क़यामत कब बरपा होगी और कब उन्हें दोबारा उठाया जाएगा।

आयत 22

“तुम्हारा मअबूद एक ही मअबूद है।”

إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ

“तो वह लोग जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुन्किर हैं और वह तकबुर करते हैं।”

فَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُنْكَرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿٢٣﴾

इस नुक्ते को अच्छी तरह समझने की ज़रूरत है कि जिन लोगों के दिलों में आखिरत का यक़ीन नहीं है वह हक़ बात को क़बूल करने से क्यों झिझकते हैं और उनके अन्दर इस्तक़बार क्यों पैदा हो जाता है। इस सिलसिले में कुरान का फ़लसफ़ा यह है कि जो शख्स फ़ितरते सलीमा का मालिक है उसके अन्दर अच्छाई और बुराई की तमीज़ मौजूद होती है। उसका दिल इस हकीक़त का क़ायल होता है कि अच्छाई का अच्छा बदला मिलना चाहिये और बुराई का बुरा “गन्दुम अज़ गन्दुम बरवीद, जौ ज़े जौ!”

यही फ़लसफ़ा या तस्सवुर मन्तक़ी तौर पर ईमान बिल आखिरत की बुनियाद फ़राहम करता है। मगर दुनिया में जब पूरी तरह नेकी की जज़ा और बुराई की सज़ा मिलती हुई नज़र नहीं आती तो एक साहिबे शऊर इंसान लाज़िमन सोचता है कि आमाल और इसके नताइज के ऐतबार से दुनियावी ज़िन्दगी अधूरी है और इस दुनिया में इन्साफ़ की फ़राहमी कमा हक़ मुमकिन ही नहीं। मसलन एक सत्तर साला बूढ़ा एक नौजवान को क़त्ल कर दे तो इस दुनिया का क़ानून उसे क्या सज़ा देगा? वैसे तो यहाँ इन्साफ़ तक पहुँचने के लिये बहुत से कठिन मराहिल तय करने पड़ते हैं, लेकिन अगर यह तमाम मराहिल तय करके इन्साफ़ मिल भी जाए तो क़ानून ज़्यादा से ज़्यादा उस बूढ़े को फाँसी पर लटका देगा। लेकिन क्या इस बूढ़े की जान वाक़ई उस नौजवान मक़तूल की जान के बराबर है? नहीं, ऐसा हरगिज़ नहीं है। वह नौजवान तो अपने ख़ानदान का वाहिद सहारा था, उसके छोटे-छोटे बच्चे यतीम हुए, एक नौजवान औरत बेवा हुई, खानदान का मआशी सहारा छिन गया। इस तरह उसके लवाहिक्कीन (उत्तरजीवी) और खानदान के लिये इस क़त्ल के असरात कितने गंभीर होंगे और कहाँ-कहाँ तक पहुँचेंगे, इसका अंदाज़ा लगाना मुश्किल है। दूसरी तरफ़ वह बूढ़ा शख्स जो अपनी तबई उम्र गुज़ार चुका था, जिसके बच्चे खुद मुख़्तार ज़िंदगियाँ गुज़ार रहे हैं, जिसकी कोई मआशी ज़िम्मेदारी भी नहीं है, उसके फाँसी पर चढ़ जाने से उसके पसमाँदगान पर वैसे असरात मुरत्तब नहीं होंगे जैसे उस नौजवान की जान जाने से उसके पसमाँदगान पर हुए थे। ऐसी सूरत में दुनिया को कोई क़ानून मज़लूम को पूरा-पूरा बदला दे ही नहीं सकता। ऐसी मिसालें अक़ली और मन्तक़ी तौर पर साबित करती हैं कि यह दुनिया ना-मुकम्मल है। इस दुनिया के मामलात और अफ़आल का अधूरापन एक दूसरी दुनिया का तकाज़ा करता है जिसमें इस दुनिया के तशना तकमील रह जाने वाले मामलात पूरे इन्साफ़ के साथ अपने-अपने मन्तक़ी अंजाम को पहुँचे। अब एक ऐसा शख्स जो फ़ितरते सलीमा का मालिक है, उसके शऊर में नेकी और बदी का एक वाज़ेह और ग़ैर मुबहम (unclear) तस्सवुर मौजूद है, वह लाज़मी तौर पर आखिरत के बारे में मज़कूरा मन्तक़ी नतीजे पर पहुँचेगा और फिर वह कुरान के तस्वूरे आखिरत को क़बूल करने में भी पसो-पेश नहीं करेगा, मगर इसके मुक़ाबले में एक ऐसा शख्स जिसके शऊर में नेकी और बदी का वाज़ेह तस्सवुर मौजूद नहीं, वह कुरान के तस्वूरे आखिरत पर भी दिल से यक़ीन नहीं रखता और फ़िक़रे आखिरत से बेनियाज़ होकर गुरूर और तक्कबुर में भी मुबतला हो चुका है, उसका दिल पैगामे हक़ को क़बूल करने से भी मुन्किर होगा। ऐसे शख्स के सामने हकीमाना दर्स और आलिमाना वआज़ (बयान) सब बेअसर साबित होंगे।

आयत 23

“कोई शक़ नहीं कि अल्लाह ताअला ख़ूब जानता है जो कुछ वह ज़ाहिर करते हैं और जो कुछ वह छुपाते हैं।”

لَا جَرَمَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ

“यक़ीनन वह तक्कबुर करने वालों को पसंद नहीं करता।”

إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ﴿٢٤﴾

आयात 24 से 32 तक

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَاذَا أُنْزِلَ رُبُّكُمْ قَالُوا أَصَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ لِيُحِبُّوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّوهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ إِلَّا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ۝ قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهُ بُنْيَانَهُمْ مِنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۝ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تُشَاقُّونَ فِيهِمْ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝ الَّذِينَ تَتَوَفَّيهِمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ فَأَلْقَوْا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوءٍ بَلَى إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا فَلَئْسَ مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ ۝ وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا خَيْرٌ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ۝ جَنَّتٌ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُجْرَوْنَ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ كَذَلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ تَتَوَفَّيهِمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

आयत 24

“और जब उनसे पूछा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या नाज़िल किया है?”

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَاذَا أُنْزِلَ رُبُّكُمْ

नबी अकरम صلی اللہ علیہ وسلم की दावत का चर्चा जब मक्का के ऐतराफ़ व अकनाफ़ (चारो तरफ़) में होने लगा तो लोग अहले मक्का से पूछते कि मोहम्मद (صلی اللہ علیہ وسلم) जो कह रहे हैं कि मुझ पर अल्लाह का कलाम नाज़िल होता है, तुम लोगों ने तो यह कलाम सुना है, चुनाँचे तुम्हारी इसके बारे में क्या राय है? इसके मज़ामीन क्या हैं?

“वह कहते हैं कि पहले लोगों के क्रिस्से हैं।”

قَالُوا أَصَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

कि यह कलाम तो बस पुराने क्रिस्से कहानियों पर मुश्तमिल है। यह सब गुज़िश्ता क्रौमों के वाक़ियात हैं जो इधर-उधर से सुन कर हमें सुना देते हैं और फिर हम पर धौंस जमाते हैं कि यह अल्लाह का कलाम है।

आयत 25

“ताकि यह उठाये अपने (गुनाहों के) बोझ पूरे के पूरे क़यामत के दिन”

لِيُحِبُّوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ

यूँ इनके दिल हक़ की तरफ़ माइल नहीं हो रहे और इसका नतीजा यह निकलेगा कि रोज़े क़यामत वह अपनी इस गुमराही और सरकशी के वबाल में गिरफ़्तार होंगे।

“और कुछ उन लोगों के बोझ भी जिन्हें ये गुमराह कर रहे हैं ला-इल्मी में।”

وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّوهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ

यानि क़यामत के दिन वह ना सिर्फ़ अपनी गुमराही का खामियाज़ा भुगतेंगे, बल्कि बहुत से दूसरे लोगों की गुमराही का वबाल भी इन पर डाला जाएगा जिन्हें अपने नाम निहाद, दानिशवराना मशवरों से इन्होंने गुमराह किया होगा। जैसे क़र्ब व जवार के लोग जब अहले मक्का से इस कलाम के बारे में पूछते थे या मक्का के आम लोग कुरान से मुतास्सिर होकर अपने सरदारों से पूछते थे कि उनकी इस कलाम के बारे में क्या राय है? ऐसी सूरत में ये लोग अपने अवाम को यह कह कर

गुमराह करते थे कि हाँ हमने भी ये कलाम सुना है, इसमें कोई खास बात नहीं है, बस सुनी-सुनाई बातें हैं और पुराने लोगों की कहानियाँ हैं।

“आगाह रहो! बहुत बुरा होगा जो बोझ वह उठाए होंगे।”

الْأَسَاءَ مَا يَرْثُونَ ﴿٢٥﴾

आयत 26

“इसी तरह की) चालें चली थीं उन्होंने भी जो इनसे पहले थे”

قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ

इनसे पहले भी मुख्तलिफ़ अक्रवाम के लोगों ने हमारे अम्बिया व रसूल की मुखालफ़त की थी और उनकी दावत को नाकाम करने के लिये तरह-तरह के हरबे आजमाए थे और साज़िशें की थीं।

“तो अल्लाह हमलावर हुआ उनके क़िलों पर बुनियादों से, फिर गिर पड़ीं उन पर छतें उनके ऊपर से”

فَأَتَى اللَّهُ بُنْيَانَهُمْ مِنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ

مِنْ فَوْقِهِمْ

जब अल्लाह तआला का फ़ैसला आया तो मुखालफ़ीन की तमाम साज़िशों को जड़ों से उखाड़ फेंका गया और उनकी बस्तियों को तलपट कर दिया गया। सदुम और आमूरा की बस्तियों के बारे में हम सूरह हूद की आयत 82 में पढ़ आए हैं: {فَلَمَّا جَاءَ} {أَمْزَنَّا جَعَلْنَا عَلَيْهِمْ سَافِلَهَا} “फिर जब आ गया हमारा हुक्म तो हमने कर दिया उसके ऊपर वाले हिस्से को उसका नीचे वाला।” यानि उसको तह व बाला कर दिया। इस सिलसिले में कुरान हकीम के अन्दर तो सिर्फ़ उन्हीं चंद अक्रवाम का ज़िक्र आया है जिनसे अहले अरब वाकिफ़ थे, वरना रसूल तो हर इलाक़े और हर क़ौम में आते रहे हैं, अज़रए अल्फ़ाज़-ए-कुरानी: {وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ} (रअद:7) “और हर क़ौम के लिये एक रहनुमा है।”

खुद हिन्दुस्तान के इलाक़े में भी बहुत से अंबिया व रसूल के मबऊस होने के आसार मिलते हैं। हरियाणा, ज़िला हिसार, जिस इलाक़े में मेरा बचपन गुज़रा, वहाँ मुख्तलिफ़ मक़ामात पर स्याह रंग की राख के बड़े-बड़े टीले मौजूद थे, जिनकी खुदाई के दौरान बस्तियों के आसार मिलते थे। ऐसे मालूम होता है जैसे ये अपने ज़माने की पुर-रौनक बस्तियाँ थीं, इनके बाशिंदों ने अपने रसूलों की नाफ़रमानियाँ कीं और इन्हें अज़ाबे खुदावन्दी ने जला कर भस्म कर डाला, जिस तरह पोम्पाई पर लावे की बारिश हुई और पूरी बस्ती जलते हुए लावे के अन्दर दब गई। इस इलाक़े में दरिया-ए-सरस्वती बहता था जो हिन्दुस्तान का एक बहुत बड़ा दरिया था और इसे मुक़द्दस माना जाता था (दरिया-ए-गंगा बहुत बाद के ज़माने में वजूद में आया।) आज दरिया-ए-सरस्वती का कुछ पता नहीं चलता कि ये कहाँ-कहाँ से गुज़रता था और माहिरीने आसारे क़दीमिया इसकी गुज़रगाह तलाश कर रहे हैं। ये सब आसार बताते हैं कि हिन्दुस्तान के अन्दर मुख्तलिफ़ ज़मानों में अंबिया व रसूल आए और उनकी नाफ़रमानियों के सबब उनकी क़ौमें अल्लाह के अज़ाब का शिकार हुईं। इन आसार की शहादतों के अलावा कुछ ऐसे मकाशफ़ात (खुलासे) भी हैं कि मशरिक्की पंजाब के जिस इलाक़े में शेख़ अहमद सरहंदी रहमतुल्लाह का मदफ़न है उस इलाक़े में तीस अंबिया मदफ़न हैं। वल्लाह आलम!

“और उन पर अज़ाब वहाँ से आया जहाँ से उन्हें गुमान तक ना था।”

وَأَتَتْهُمْ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

आयत 27

“फिर क़यामत के दिन अल्लाह उन्हें रसवा करेगा और कहेगा: कहाँ हैं मेरे वह शरीक जिनकी हमियत में तुम झगड़ते थे?”

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ

الَّذِينَ كُنْتُمْ تُشَاقُّونَ فِيهِمْ

क़यामत के दिन उन्हें मज़ीद रुसवा करने के लिये उनसे पूछा जाएगा कि आज तुम्हारे वह मनघडत मअबूद कहाँ हैं जिनकी हिमायत और हमियत की वजह से तुम बड़ी-बड़ी जंगें लड़ने पर तैयार हो जाते थे?

“कहेंगे वह लोग जिनको इल्म दिया गया है कि यक़ीनन आज के दिन रुसवाई और बदबख्ती काफ़िरों ही के लिये है।”

قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ
عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٢٧﴾

आयत 28

“जिन (की रूहों) को क़ब्ज़ करते हैं फ़रिश्ते इस हाल में कि वह अपनी जानों पर जुल्म करने वाले थे”

الَّذِينَ تَتَوَفَّيْهُمْ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ

ऐसे लोग जिन्हें अपनी ज़िन्दगी में अल्लाह याद है ना आख़िरत, नेकी की रगबत है ना बुराई से नफ़रत, बस अपनी ऐश-कोशी और नफ्सपरस्ती में मग्न हैं। इसी हालत में जब फ़रिश्ते उनके पास परवाना-ए-मौत लेकर आ धमकेंगे:

“तो (उस वक़्त) वह अताअत पेश करेंगे कि हम तो कोई बुरे काम नहीं कर रहे थे।”

فَالْقُوا السَّلَامَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوءٍ

“(तो फ़रिश्ते कहेंगे) क्यों नहीं, अल्लाह ख़ूब जानता है उसे जो कुछ तुम कर रहे थे।”

بَلَىٰ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾

मौत के फ़रिश्तों में सामने वह सरे-तस्लीम ख़म करते हुए अपने इस्लाम और अताअत का इज़हार करेंगे और इस तरह उनके सामने भी झूठ बोलने की कोशिश करेंगे।

आयत 29

“अब तुम दाख़िल हो जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में, इसी में हमेशा-हमेश रहने के लिये।”

فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا

“पस क्या ही बुरा ठिकाना है मुतकब्बरीन का!”

فَلَيْسَ مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٢٩﴾

आयत 30

“और (जब) पूछा जाता है अहले तक़वा से कि यह क्या नाज़िल किया है तुम्हारे रब ने?”

وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ

दूसरी तरफ़ वह लोग हैं जो अल्लाह से डरने वाले हैं, जिनके दिलों में अख़लाक़ी हिस्स बेदार और जिनकी रूहें ज़िन्दा हैं, जब उनसे पूछा जाता है कि मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ जो कलाम आप लोगों को सुनाते हैं वह क्या है?

“वह कहते हैं भलाई।”

قَالُوا خَيْرٌ

यानि ये कलाम ख़ैर ही ख़ैर है और हमारी ही भलाई के लिये नाज़िल हुआ है।

“जिन लोगों ने नेकी की रविश इख़्तियार की उनके लिये इस दुनिया में भी भलाई है, और आख़िरत का घर तो कहीं बेहतर है। और क्या ही अच्छा है वह घर मुत्ताक़ियों का!”

لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَلَدَارُ

الْآخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾

आयत 31

“बागात हमेशा रहने वाले जिनमें वह दाखिले होंगे, उनके दामन में नदियाँ बहती होंगी, उनके लिये वहाँ हर वह शय होगी जो वह चाहेंगे।”

جَنَّاتٍ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ

“इसी तरह अल्लाह बदला देगा अपने मुत्तकी बन्दों को।”

كَذَلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣١﴾

आयत 32

“उन (की रूहों) को फ़रिश्ते कब्ज़ करते हैं दर हालाँकि वह पाक होते हैं”

الَّذِينَ تَتَوَفَّيهِمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ

जिनकी रूहें पाकीज़ा और जिनकी ज़िंदगियाँ तक्रवा की आइनादार होती हैं, जब उनके पास मौत के फ़रिश्ते आते हैं तो:

“कहते हैं सलाम हो आप पर, दाखिल हो जाइये जन्नत में अपने आमाल के बदले में।”

يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٢﴾

आयात 33 से 40 तक

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرٌ رَبِّكَ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٤﴾ وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَمْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ فَمِنْهُمْ مَنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُمْ مَنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٦﴾ إِنَّ تَحْرِيصَ عَلَى هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٣٧﴾ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مِنْ يَمُوتٍ بَلَى وَعَدَا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِينَ يُخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَذِبِينَ ﴿٣٩﴾ إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾

आयत 33

“अब ये लोग किस शय के मुन्तज़िर हैं सिवाय इसके कि आ धमके इन पर फ़रिश्ते या आ जाए फ़ैसला आपके रब का!”

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرٌ رَبِّكَ

गुज़िश्ता बारह बरस से रसूल अल्लाह ﷺ कुरेशे मक्का को दावत दे रहे हैं, दो तिहाई के करीब कुरान भी अब तक नाज़िल हो चुका है। चुनाँचे इन लोगों को अब मज़ीद किस चीज़ का इंतज़ार है? अब तो बस यही मरहला बाक़ी रह गया है कि फ़रिश्ते अल्लाह का फ़ैसला लेकर पहुँच जाएँ और वह नक़्शा सामने आ जाए जिसकी झलक सूरह अल फ़ज्र में इस तरह दिखाई गई है: {وَجَاءَ رُبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا} (आयत 22-23) “और आएगा आपका रब और फ़रिश्ते सफ़-ब-सफ़। और लाई जायेगी उस दिन जहन्नम, उस दिन होश आएगा इंसान को, मगर क्या फ़ायदा होगा तब उसे उस होश का!”

“यही रविश इख़्तियार की थी उन्होंने भी जो इनसे पहले थे। और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया, बल्कि वह खुद अपनी जानों पर जुल्म करते रहे।”

كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾

जिन गुज़िश्ता अक़्वाम के इबरतनाक अंजाम के बारे में तफ़सीलात कुरान में बताई जा रही हैं उन्हें उनके अपने करतूतों की सज़ा मिली थी। अल्लाह तआला की तरफ़ से उन पर क़तअन जुल्म नहीं हुआ था।

आयत 34

“फिर उन पर वाक़ेअ होकर रहीं वो बुराईयाँ जो वह करते थे और घेर लिया उनको उसी ने जिसका वह इस्तेहज़ा करते थे।”

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٤﴾

आयत 35

“और कहते हैं यह मुशरिक लोग कि अगर अल्लाह चाहता तो अल्लाह के सिवा किसी की पूजा ना करते, ना हम और ना हमारे आबा व अजदाद”

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا

उनकी दलील यह थी कि इस दुनिया में तो जो अल्लाह चाहता है वही कुछ होता है, वह अला कुल्ली शयइन क़दीर है। अगर वह चाहता कि हम कोई दूसरे मअबूद ना बनायें और उनकी परस्तिश ना करें, तो कैसे मुमकिन था कि हम ऐसा कर पाते? चुनाँचे अगर अल्लाह ने हमें इससे रोका नहीं है तो इसका वाज़ेह मतलब ये है कि इसमें उसकी मर्ज़ी शामिल है और उसकी तरफ़ से हमें ऐसा करने की इजाज़त है।

“और ना हराम क़रार देते हम उसके (हुक्म के) बग़ैर किसी भी चीज़ को। इसी तरह किया था उन लोगों ने भी जो इनसे पहले थे।”

وَلَا حَرَمْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ

“पस नहीं है रसूलों पर कुछ ज़िम्मेदारी सिवाय वाज़ेह तौर पर पहुँचा देने के।”

فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٣٥﴾

हमारे रसूल इस क्रिस्म की कटहुज्जती और कज बहशी में नहीं उलझते। उनकी ज़िम्मेदारी हमारा पैग़ाम वाज़ेह तौर पर पहुँचा देने की हद तक है और यह ज़िम्मेदारी हमारे रसूल हमेशा से पूरी करते आए हैं। पैग़ाम पहुँच जाने के बाद उसे तस्लीम करना या ना करना मुतआलक्का क़ौम का काम है, जिसके लिये उनका एक-एक फ़र्द हमारे सामने जवाब देह है।

आयत 36

“और हमने तो हर उम्मत में एक रसूल भेजा (इस पैगाम के साथ) कि अल्लाह ही की बंदगी करो और तागूत से बचो।”

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ
وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ

तागूत का लफ्ज़ 'तगा' से मुश्तक है जिसके मायने सरकशी के हैं। लिहाज़ा जो कोई अल्लाह की बंदगी और इताअत से सरकशी और सरताबी कर रहा हो, वह तागूत है, चाहे वह इंसान हो या जिन, किसी रियासत का कोई इदारा हो, आइन (क़ानून) हो या खुद रियासत हो। बहरहाल जो भी अल्लाह की इताअत से सरताबी करके उसकी बंदगी से बाहर निकलने की कोशिश करेगा, वह गोया अल्लाह के मुक़ाबले में हाकिमियत का दावेदार होगा और इसी लिये तागूत के ज़ुमरे (category) में शुमार होगा। तागूत से किनारा कशी का हुक्म सूरतुल बक्ररह की आयत नम्बर 256 में इस तरह आया है: {مَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا} “जिस किसी ने कुफ़्र किया तागूत से और ईमान लाया अल्लाह पर तो यक़ीनन उसने थाम लिया एक मज़बूत हल्का जिसको टूटना नहीं है।”

“तो उनमें कुछ ऐसे भी थे जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दे दी, और कुछ वह भी थे जिन मुसल्लत हो गई गुमराही।”

فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ
الضَّلَالَةُ

“तो तुम घूमो-फिरो ज़मीन में और देखो कि झुठलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ!”

فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٧﴾

तुम अपने तिजारती क़ाफ़िलों के साथ असहाबे हिज़्र की बस्तियों से भी गुज़रते हो, तुमने क़ौमे समूद के महलात के खंडरात भी देखे हैं। तुम क़ौमे मदयन के अंजाम से भी वाकिफ़ हो और तुम्हें यह भी मालूम है कि सदुम और आमूरह की बस्तियों के साथ क्या मामला हुआ था। यह तमाम तारीख़ी हक़ाइक तुम्हारे इल्म में हैं और तुम ये भी जानते हो कि इन सबको किस जुर्म की सज़ा भुगतना पड़ी थी।

आयत 37

“(ऐ नबी ﷺ) अगर आपको बहुत ख्वाहिश है इनकी हिदायत की तो यक़ीनन अल्लाह हिदायत नहीं देता उसे जिसको वह गुमराह कर देता है, और इनके लिये नहीं होंगे कोई मददगार।”

إِنْ تَحْرِضْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن
يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نَّاصِرِينَ ﴿٣٨﴾

इस सिलसिले में अल्लाह का क़ानून अटल है। अल्लाह की तरफ़ से लोगों तक हक़ की दावत पहुँचाने का पूरा बंदोबस्त किया जाता है, उन पर हिदायत मुन्कशिफ़ की जाती है और बार-बार उन्हें मौक़ा दिया जाता है कि वह सीधे रास्ते पर आ जाएँ। लेकिन अगर कोई शख्स हक़ को वाज़ेह तौर पर पहचान लेने के बाद हर बार उसे रद्द कर दे तो उससे हिदायत की तौफ़ीक़ सल्ब कर (छीन) ली जाती है। फिर वह हक़ को पहचानने की सलाहियत से महरूम हो जाता है और उसकी गुमराही पर मोहर तस्दीक़ सव्त हो जाती है। ऐसे लोगों ही के मुताल्लिक़ सूरतुल बक्ररह की आयत नम्बर 7 में फ़रमाया गया है: {حَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ} “अल्लाह ने मोहर लगा दी है उनके दिलों और उनके कानों पर, और उनकी आँखों पर परदा (पड़ चुका) है।” चुनाँचे इसी क्रिस्म के लोगों के बारे में आयत ज़ेरे नज़र में फ़रमाया जा रहा है कि ऐ नबी ﷺ! आपकी शदीद ख्वाहिश है कि ये लोग ईमान लाकर राहे हिदायत पर आ जाएँ, मगर चूँकि ये हक़ को अच्छी तरह पहचान लेने के बाद उससे रू-गरदानी कर चुके हैं इसलिये इनकी गुमराही के बारे में अल्लाह तआला का फ़ैसला सादर हो चुका है, और अल्लाह का अटल क़ानून है कि वह ऐसे गुमराहों को हिदायत नहीं देता। सूरतुल क़सस की आयत नम्बर 56 में इसी असूल को वाज़ेह तर अंदाज़ में इस तरह बयान फ़रमाया गया है: {إِنَّكَ لَا يَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ}

{مَنْ يَشَاءُ} (ऐ नबी ﷺ) बेशक आप हिदायत नहीं दे सकते जिसको आप चाहें बल्कि अल्लाह हिदायत देता है जिसको वह चाहता है।”

आयत 38

“और वह अल्लाह की कसमें खा कर कहते हैं, अपनी पक्की कसमें कि अल्लाह हरगिज़ नहीं उठाएगा उसको जो मर जाएगा।”

وَأَقْسَمُوا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَمُوتُ

मुशरिकीने मक्का अगरचे अमूमी तौर पर मरने के बाद दूसरी ज़िंदगी के कायल थे मगर उनका इस सिलसिले में अक्रीदा ये था कि जिन बुतों की वह पूजा करते हैं वह क़यामत के दिन अल्लाह के सामने उनके सिफ़ारशी होंगे और इस तरह रोज़े हथ की तमाम सख्तियों से वह उन्हें बचा लेंगे। लेकिन उनके यहाँ एक तबक्का ऐसा भी था जो बाअसे बाद अल मौत का मुन्किर था। उन लोगों के इस अक्रीदे का तज़क़िरा कुरान में मुतअद्दिद बार हुआ है। सूरतुल अनआम की आयत 29 में उन लोगों का क़ौल इस तरह नक़ल किया गया है: {وَقَالُوا إِنَّمَا الْحَيَاتُ الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ} “और वह कहते हैं कि नहीं है ये हमारी ज़िन्दगी मगर सिर्फ़ दुनिया की और हम (दोबारा) उठाए नहीं जायेंगे।”

“क्यों नहीं, ये वादा है उसके ज़िम्मे सच्चा (कि तुम ज़रूर उठाए जाओगे) लेकिन अक्सर लोग इल्म नहीं रखते।”

بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

आयत 39

“ताकि वह वाज़ेह कर दे उन पर वह तमाम चीज़ें जिनमें वह लोग इख़्तिलाफ़ करते थे और इसलिये भी कि कुफ़्फ़ार जान लें कि वही झूठे थे।”

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الْآيَاتِ الَّتِي يَخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَذِبِينَ ﴿٣٩﴾

अल्लाह तआला पूरी नौए इंसानी के एक-एक फ़र्द को दोबारा उठाएगा और उन्हें एक जगह जमा करेगा। फिर उनके तमाम इख़्तिलाफ़ी नज़रियात व अक्काएद के बारे में हल्मी तौर पर उन्हें बता दिया जायेगा। चुनाँचे उस वक़्त तमाम मुन्करीने हक़ को इक्क़रार किये बग़ैर चारा ना रहेगा कि उनके ख़्यालात व नज़रियात वाक़ई झूठ और बातिल पर मबनी थे।

आयत 40

“हमारा क़ौल तो किसी चीज़ के बारे में बस ये होता है, जब हम उसका इरादा करते हैं कि हम फ़रमाते हैं उसे हो जा तो वह हो जाती है।”

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾

इस नुक्ते को अच्छी तरह समझ लेना ज़रूरी है कि ये हुक्म आलमे अम्र के बारे में है, जबकि आलमे खल्क में यूँ नहीं होता (आलमे अम्र और आलमे खल्क के बारे में वज़ाहत इस सूरत की आयत 2 और सूरतुल आराफ़ की आयत 54 के ज़िम्न में गुज़र चुकी है)। आलमे अम्र में किसी वाक़िये या किसी चीज़ के ज़हूर पज़ीर होने के लिये असबाब, वसाएल और वक़्त दरकार नहीं, बल्कि अल्लाह तआला इरादा फ़रमा कर कुन फ़रमाते हैं तो वह चीज़ वजूद में आ जाती है। आलमे खल्क में भी कुल्ली इख़्तियार तो अल्लाह ही का है मगर इस आलम को आम तबई क़वानीन के मुताबिक़ चलाया जाता है। चुनाँचे आलमे खल्क में किसी चीज़ को वजूद में आने और मतलूबा मैयार तक पहुँचने के लिये असबाब, वसाएल और वक़्त की ज़रूरत पेश आती है। ये कायनात अपने तमाम तबई मौजूदात के साथ आलमे खल्क का इज़हार है। आयत ज़ेरे नज़र के

मौजू की मुनासबत से यहाँ मैं कायनात की तखलीक के आगाज़ से मुताल्लिक अपनी सोच और फ़िक्र की वज़ाहत ज़रूरी समझता हूँ।

कायनात की तखलीक के बारे में एक तरफ़ तो पुराने फ़लसफ़ियाना तसव्वुरात हैं और दूसरी तरफ़ ज़दीद साइन्सी नज़रियात (theories)। फ़लसफ़ियाना तसव्वुरात के मुताबिक़ सबसे पहले वजूदे बारी तआला से अक़ले अव्वल वजूद में आई। अक़ले अव्वल से फ़िर फ़लक-ए-अव्वल और फिर फ़लक-ए-अव्वल से फ़लक-ए-सानी वगैरह। ये मशार्इन के फ़लसफ़े हैं जो अरस्तु और उसके शागिर्दों के नज़रियात के साथ दुनिया में फैले और हमारे यहाँ भी बहुत से मुतकल्लिमीन इनसे मुतास्सिर हुए। बहरहाल ज़दीद साइन्सी इन्क़शाफ़ात के ज़रिये इनमें से किसी भी नज़रिये की कहीं कोई तार्ईद व तस्दीक़ नहीं हुई।

दूसरी तरफ़ ज़दीद फ़िज़िक्स के मैदान में आला इल्मी सतह पर इस सिलसिले में जितने भी नज़रियात (theories) हैं उनमें “अज़ीम धमाके” (Big Bang) का तसव्वुर पाया जाता है। इस तसव्वुर के तहत Big Bang के नतीजे में अरब-ह-अरब दर्जा-ए-हरारत के हामिल बेशुमार ज़र्रात वजूद में आए। ये ज़र्रात तेज़ी से हरकत करते हुए मुख्तलिफ़ forms में इकट्ठे हुए तो कहकशाएँ (galaxies) वजूद में आई और छोटे-बड़े बेशुमार सितारों का एक जहान आबाद हो गया। इन्हीं सितारों में एक हमारा सूरज भी था, जिसके अन्दर मज़ीद टूट-फूट के नतीजे में इसके सय्यारे (planets) वजूद में आए। सूरज के इन सय्यारों में से एक सय्यारा हमारी ज़मीन है जो वक़्त के साथ-साथ ठंडी होती रही और बिलआख़िर इस पर नबाताती और हैवानी ज़िंदगी के लिये साज़गार माहौल वजूद में आया। आज की साइंस फ़िलहाल “बिग बैंग” से आगे कोई नज़रिया क़ायम करने से क़ासिर है। इस नज़रिये से जो मालूमात साइंस ने अख़ज़ की है वह उन तमाम हक़ाएक़ के साथ मुताबक़त (corroboration) रखती हैं जिनका इल्म इस मौजू पर हमें कुरान से मिलता है। इससे पहले माह्दे के बारे में साइंस क़ानून बक़ाए माद्दा (law of conservation of mass) की क़ायल थी कि माद्दा हमेशा से है और हमेशा रहेगा, मगर नये नज़रिये को अपना कर साइंस ने ना सिर्फ़ Big Bang को कायनात का नुक्ता-ए-आगाज़ तस्लीम कर लिया है बल्कि ये भी मान लिया है कि माद्दा एक ख़ास वक़्त तक के लिये है और एक ख़ास वक़्त के बाद ख़त्म हो जाएगा।

जहाँ तक कायनात की तखलीक के आगाज़ के बारे में मेरी अपनी सोच का ताल्लुक़ है उसका खुलासा ये है कि इसकी तखलीक़ अल्लाह तआला के एक अम्र “कुन” से हुई (अल्लाह के हुक्म से, ना कि उसकी ज़ात से)। फिर इस अम्रे “कुन” का ज़हूर एक ख़ुनक नूर या ठन्डी रौशनी की सूरत में हुआ (ये ख़ुनक नूर हरफ़े कुन का ज़हूर था ना कि ज़ाते बारी तआला का)। इस रौशनी में हरारत नहीं थी, गोया ये माद्दी रौशनी (material light) के वजूद में आने से पहले का दौर था। आज जिस रौशनी को हम देखते या पहचानते हैं इसमें हरारत होती है और इसी हरारत की वज़ह से ये material light है।

अम्रे “कुन” से ज़हूर पाने वाले इस ख़ुनक नूर से पहले मरहले पर मलाएका (फ़रिश्तों) की पैदाइश हुई। जैसे कि मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा से हदीस मरवी है कि अल्लाह तआला ने मलाएका को नूर से पैदा किया। इसी नूर से इंसानी अरवाह पैदा की गई, और सबसे पहले रूहे मोहम्मदी ﷺ पैदा की गई, जैसा कि हदीस में अल्फ़ाज़ आए हैं: ((وَأَوَّلُ مَا خَلَقَ اللَّهُ تَوْرِي))⁽¹³⁾ यानि अल्लाह तआला ने सबसे पहले मेरा नूर पैदा किया। “नूरी” और “रूही” गोया दो मुतरादिक़ अल्फ़ाज़ हैं, क्योंकि रूह का ताल्लुक़ भी नूर से है। बहरहाल ये कायनात की तखलीक़ का मरहला-ए-अव्वल है जिसमें फ़रिश्तों और इन्सानी अरवाह की तखलीक़ हुई।

इसके बाद किसी मरहले पर इस ख़ुनक नूर में किसी नौइयत का ज़ोरदार धमाका (explosion) हुआ जिसको आज की साइंस “बिग बैंग” के नाम से पहचानती है। इस धमाके के नतीजे में हरारत का वह गोला वजूद में आया जो बहुत छोटे-छोटे ज़र्रात पर मुश्तमिल था। इस ज़र्रात का दर्जा-ए-हरारत नाक़ाबिल-ए-तस्सवुर हद तक था। ये गोया तबई दुनिया (physical world) का नुक्ता-ए-आगाज़ था। इसी दौर में इस आग की लपट से जिन्नात पैदा किये गए और इन्ही इन्तहाई गर्म ज़र्रात से कहकशाएँ, सितारे और सय्यारे वजूद में आए।

इन सय्यारों में से एक सय्यारा या कुरा हमारी ज़मीन है, जो इब्तदा में इन्तहाई गरम थी। इसके ठंडा होने पर इसके अन्दर से बुखारात निकले जो इसके गिर्द एक हाले की शक़्ल में जमा हो गए। इन बुखारात से पानी वजूद में आया जो हज़ार-हा बरस तक ज़मीन पर बारिश की सूरत में बरसता रहा। इसके नतीजे में तमाम रूए ज़मीन पर हर तरफ़ पानी ही पानी फैल गया। इस वक़्त तक ज़मीन पर पानी के अलावा और कुछ नहीं था। यही वह दौर था जिसका ज़िक़्र कुरान में बा-अल्फ़ाज़ किया गया है: {وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْبَاءِ} (सूरह हूद:7) “कि उसका अर्श (उस वक़्त) पानी पर था।” फिर ज़मीन जब मज़ीद ठंडा होने पर सुक़ड़ी तो इसकी सतह पर नशेब व फ़राज़ (उतार-चढ़ाव) नमूदार हुए। कहीं पहाड़ वजूद में आए तो

कहीं सनुन्दर। इसके बाद नवाताती और हैवानी हयात का आगाज़ हुआ। इस हयात के इरताकाअ (विकास) के बुलंदतरीन मरहले पर इंसान की तखलीक हुई और हज़रत आदम अलै. की रूह उनके वजूद को सौंपी गई। हज़रत आदम अलै. की ताजपोशी का यही वाकिया है जहाँ से कुरान आदम अलै. की तखलीक का तज़क़िरा करता है। इस लिहाज़ से इंसान अल्लाह तआला की तखलीक का आलातरीन शाहकार भी है और इस पूरी कायनात की तखलीक का असल मक़सूद व मतलूब भी।

यहाँ एक नुक्ता ये भी समझ लें कि आलमे खल्क और आलमे अम्र बिल्कुल अलग-अलग नहीं हैं। यानि यँ नहीं कहा जा सकता कि यहाँ तक तो आलमे खल्क है और यहाँ से आगे आलमे अम्र है। ऐसा हरगिज़ नहीं है, बल्कि ये दोनों आलम एक-दूसरे के साथ खलत-मलत और बाहम गुंथे हुए हैं। मसलन इस आलमे खल्क में तमाम इंसानों की अरवाह मौजूद हैं, जिनका ताल्लुक आलमे अम्र से है: {وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي} (बनी इसराइल:85) ये आयत वाज़ेह करती है कि रूह का ताल्लुक आलमे अम्र से है। शाह वलीउल्लाह देहलवी रहमतुल्लाह ने अपनी मशहूर किताब “हुज़तुल्लाहिल बलागा” में लिखा है कि अल्लाह तआला अपने बाज़ नेक बन्दों की अरवाह को फरिश्तों के तबका-ए-असफ़ल (rank) में शामिल कर लेते हैं, चुनाँचे ये नेक अरवाह उन फरिश्तों के साथ सरग़रमे अमल रहती हैं जो अल्लाह के अहकाम की तामील व तन्फ़ीज़ में मसरूफ़ हैं। इस तरह फ़रिश्ते जो कि आलमे अम्र की मख्लूक हैं वह भी यहाँ आलमे खल्क में हमारे इर्द-गिर्द मौजूद हैं। दो-दो फ़रिश्ते तो हम में से हर इंसान के साथ बतौर निगरान मुक़रर किये गए हैं। हज़रत अबु हुरैरा रज़ि. रिवायत करते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

مَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ اللَّهِ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَيَتَذَكَّرُونَ سُورَتَهُ بَيْنَهُمْ إِلَّا نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةُ وَغَشِيَتْهُمْ الرَّحْمَةُ وَحَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ وَذَكَرَهُمُ اللَّهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ

“अल्लाह के घरों में से किसी घर में कुछ लोग किताबुल्लाह की तिलावत और उसको समझने और समझाने के लिये जमा नहीं होते मगर ये कि उनके ऊपर सकीनत नाज़िल होती है, अल्लाह की रहमत उन्हें ढाँप लेती है, फ़रिश्ते उनको घेर लेते हैं और अल्लाह तआला अपने मुक़ररबीन (मला-ए-आला) में उनका ज़िक्र करता है।”⁽¹⁴⁾

इस हदीस की रू से दरसे कुरान की इस महफ़िल में यक़ीनन फ़रिश्ते मौजूद हैं, वह आलमे अम्र की शय हैं, हम ना उन्हें देख सकते हैं ना उनसे ख़िताब कर सकते हैं। ये भी मुमकिन है कि अहले ईमान जिन्नात भी मौजूद हों और कुरान सुन रहे हों। चुनाँचे अरवाह, फ़रिश्ते और वही तीनों का ताल्लुक अगरचे आलमे अम्र से है मगर इनका अमल-दखल आलमे खल्क में भी है। इस तरह आलमे खल्क और आलमे अम्र को बिल्कुल अलग-अलग नहीं किया जा सकता।

यहाँ मैं मिर्ज़ा अब्दुल कादिर बेदिल के एक मशहूर शेर का हवाला देना चाहता हूँ जो तखलीक-ए-कायनात और तखलीक-ए-आदम के इस फ़लसफ़े को बहुत खूबसूरती से वाज़ेह करता है:

हर दो आलम खाक शुद ता बस्त नक्रशे आदमी
ऐ बहारे नीस्ती अज़ क़दरे खुद होशियार बाश!

मिर्ज़ा अब्दुल कादिर बेदिल हिन्दुस्तान में औरंगज़ेब आलमगीर के ज़माने में थे। वह अज़ीम फ़लसफ़ी और फ़ारसी के बहुत बड़े शायर थे। उनका शुमार दुनिया के चोटी के फ़लसफ़ियों में होता था। उनकी शायराना अज़मत के सामने मिर्ज़ा ग़ालिब भी पानी भरते और उनकी तर्ज़ को अपनाने में फ़ख्र महसूस करते नज़र आते हैं:

तर्ज़े बेदिल में रेख़ता लिखना
असदुल्लाह खां क़यामत है!

मौजू की अहमियत के पेशे नज़र यहाँ मिर्ज़ा बेदिल के मंदरजा बाला शेर की वज़ाहत ज़रूरी है। इस शेर में वह फ़रमाते हैं “हर दो आलम खाक शुद” यानि दोनों आलम खाक हो गए। शायर के अपने ज़हन में इसकी वज़ाहत क्या थी इसके बारे में शायर खुद जानता है या अल्लाह तआला। लेकिन मैं इससे ये नुक्ता समझा हूँ कि अल्लाह तआला ने आलमे अम्र को तनज़्जुल के मुख्तलिफ़ मराहिल से गुज़ार कर आलमे खल्क की शकल दी। फिर इसके मज़ीद तनज़्जुलात के नतीजे में ज़मीन (मिट्टी) पैदा की गई। गोया दोनों ज़हानों ने खाक की सूरत इख्तियार कर ली, तब जाकर कहीं हयाते अर्ज़ी का सिलसिला शुरू हुआ और फिर इस सिलसिले में इरतकाअ का वह बुलंदतरीन मरहला आया: “ताबस्त नक्रशे आदमी!” जब आदमी का नक्श बनना शुरू हुआ।

दूसरे मिसरे में (ऐ बहारे नीस्ती अज़ क़दरे खुद होशियार बाश!) “नीस्त” के फ़लसफ़े को भी अच्छी तरह समझने की ज़रूरत है। “वहदतुल वजूद” के फ़लसफ़े के मुताबिक़ हकीक़ी वजूद सिर्फ़ अल्लाह का है, बाक़ी जो कुछ भी हमें नज़र आता

है इसमें से किसी चीज़ का वजूद हकीक़ी नहीं है। गोया अल्लाह के अलावा इस कायनात की हर चीज़ “नीस्त” है “हस्त” नहीं है:

كُلُّ مَا فِي الْكُونِ وَهُمْ أَوْ خَيَالٌ أَوْ عَكُوسٌ فِي الْمَرَايَا أَوْ ظِلَالٌ

यानि अल्लाह के वजूद के अलावा जो वजूद भी नज़र आते हैं वह वहम हैं या ख्याली तसवीरें। इस तरह यह तमाम आलम गोया “नीस्त” है और इस आलमे नीस्त की “बहार” इंसान है, जिसके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया {خَلَقْتُ بَيْدَى} (सूरह सआद:75) कि मैंने इसे अपने दोनों हाथों से बनाया है। अल्लाह का एक हाथ गोया आलमे अम्र और दूसरा हाथ आलमे खल्क है। इस तरह इंसान अल्लाह तआला के अमल-ए-तख़्नीक का climax, मस्जूद-ए-मलाइक और खलीफ़तुल्लाह है। चुनाँचे मिर्ज़ा बेदिल फ़रमाते हैं (ऐ बहारे नीस्ती अज़ क़द्रे खुद होशियार बाश!) कि ऐ इंसान! ऐ इस आलमे नीस्ती की बहार! ज़रा अपने मक़ाम व मरतबे को पहचानो! तुम्हें वजूद में लाने के लिये अल्लाह तआला ने हर दो आलम को ना जाने तनज़ुलात की किन-किन मनाज़िल से नीचे उतार कर खाक़ किया, तब कहीं जाकर तुम्हारा नक्श बना।

आयात 41 से 50 तक

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا لَنَبُوْنَهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَا جُزْءَ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾
الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رَجَالًا نُوحِي إِلَيْهِمْ فَسَلُّوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾ بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۖ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٤﴾ أَفَأَمِنْ
الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٥﴾ أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي
تَقْلِبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٤٦﴾ أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٤٧﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ
شَيْءٍ يَتَفَتَّيْوْنَ ظُلُمَهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِلَّهِ وَهُمْ ذَاخِرُونَ ﴿٤٨﴾ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
مِنْ دَابَّةٍ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾ يَخَافُونَ رَبَّهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٥٠﴾

आयत 41

“और जिन लोगों ने अल्लाह के लिये हिजरत की, इसके बाद कि उन पर जुल्म किया गया, हम उन्हें दुनिया में भी ज़रूर अच्छी जगह देंगे।”

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا
لَنَبُوْنَهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً

“और (उनके लिये) आखिरत का अज़ तो बहुत ही बड़ा है। काश कि उनको मालूम होता।”

وَلَا جُزْءَ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

आयत 42

“यह वह लोग हैं जिन्होंने सब्र किया और वह अपने रब पर तवक्कुल करने वाले हैं।”

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾

आयत 43

“और (ऐ नबी ﷺ!) हमने नहीं भेजा आपसे पहले मगर मर्दों ही को (रसूल बना कर) जिनकी तरफ हम वही किया करते थे”

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ

यानि आप ﷺ पहले नबी या रसूल नहीं हैं बल्कि आप ﷺ से पहले हम बहुत से रसूल भेज चुके हैं। वह सब के सब आदमी ही थे और उनकी तरफ हम इसी तरह वही भेजते थे जिस तरह आज आपकी तरफ वही आती है।

“तो तुम लोग अहले जिक्र से पूछ लो, अगर तुम खुद नहीं जानते हो।”

فَسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾

यानि ऐ अहले मक्का! अगर तुम लोगों को इस बारे में कुछ शक है तो तुम्हारे पड़ोस मदीने में वह लोग आबाद हैं जो सिलसिला-ए-वही व रिसालत से खूब वाकिफ हैं, उनसे पूछ लो कि अब तक जो अम्बिया व रसूल अलै. इस दुनिया में आए हैं वह सब के सब इंसान थे या फ़रिश्ते?

आयत 44

“(हमने उन्हें भेजा) खुली निशानियों और किताबों के साथ।”

بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ

“और हमने नाज़िल किया आपकी तरफ अज्ज़िक्र, ताकि आप वाज़ेह कर दें लोगों के लिये जो कुछ नाज़िल किया गया है उनकी जानिब और ताकि वह गौर व फ़िक्र करें।”

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٣٤﴾

यहाँ कुरान के लिये फिर लफ़्ज़ “अल ज़िक्र” इस्तेमाल हुआ है, यानि ये कुरान एक तरह की याद दिहानी है। ये आयत मुनकरीने सुन्नत व हदीस के खिलाफ़ एक वाज़ेह दलील फ़राहम करती है। इसकी रू से कुरान की “तबईन” रसूल का फ़र्ज़े मंसबी है। कुरान के असरार व रमूज़ को समझाना, इसमें अगर कोई नुक्ता मुज्मल है तो उसकी तफ़सील बयान करना, अगर कोई हुक्म मुब्हम है तो उसकी वज़ाहत करना रसूल अल्लाह ﷺ का फ़र्ज़े मंसबी था। ये फ़र्ज़े इस आयत की रू से खुद अल्लाह तआला ने आप ﷺ को तज़वीज़ किया है, मगर मुनकरीने सुन्नत आज आप ﷺ को ये हक्क देने के लिये तैयार नहीं हैं। उनकी राय के मुताबिक़ ये अल्लाह की किताब है जो अल्लाह के रसूल ने हम तक पहुँचा दी है, अब हम खुद इसको पढ़ेंगे, खुद समझेंगे और खुद ही अमल की जहत्तें (dimensions) मुतअय्यन करेंगे। हुज़ूर ﷺ के समझाने की अगर कुछ ज़रूरत थी भी तो वह अपने ज़माने की हद तक थी।

आयत 45

“तो क्या बेखौफ़ हो गए हैं वह लोग जिन्होंने बुरी चालें चलीं इस बात से कि अल्लाह उन्हें ज़मीन में धंसा दे”

أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ

ये लोग हमारे रसूल के खिलाफ़ साज़िशों के जाल बुनने में मग्न हैं और हक्क की दावत का रास्ता रोकने के लिये तरह-तरह के हथकंडे इस्तेमाल कर रहे हैं। क्या ये डरते नहीं कि अगर अल्लाह चाहे तो इन्हें इस जुर्म की पादाश में ज़मीन में धंसा दे?

“या (इन्हें ये खौफ़ भी नहीं रहा कि) उन पर आ धमके कोई अज़ाब जहाँ से इन्हें गुमान तक ना हो।”

أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٣٥﴾

आयत 46

“या वह इन्हें पकड़ ले इनकी चलत-फिरत में, फिर वह (अल्लाह को) आजिज़ करने वाले नहीं हैं।”

أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقْلُبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٣٩﴾

यूँ भी हो सकता है कि इनकी रोज़मर्रा ज़िन्दगी में, मामूल की सरगर्मियों के दौरान ही इनकी पकड़ का हुक्म आ जाए और फिर अल्लाह के इस हुक्म के मुकाबले में इनकी कोई तदबीर भी कामयाब ना हो सके।

आयत 47

“या इन्हें पकड़े खौफ़ दिलाकर। हकीकत ये है कि तुम्हारा रब बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।”

أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَى تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٤٠﴾

﴿٤०﴾

अगरचे अल्लाह तआला अपने नाफ़रमानों को अचानक भी पकड़ सकता है, मगर चूँकि वह बहुत शफ़ीक़ और निहायत रहम फ़रमाने वाला है, इसलिये उसका अज़ाब यूँही बेख़बरी में नहीं आता बल्कि मुतालका क्रौम को पहले पूरी तरह आगाह किया जाता है, उन पर इत्मामे हुज्जत के तमाम तक्काज़े पूरे किये जाते हैं, तब कहीं जाकर अज़ाब का फ़ैसला होता है। जैसे सूरह बनी इसराईल में फ़रमाया गया: {وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا} (आयत 15) “और हम अज़ाब देने वाले नहीं हैं जब तक कि हम रसूल ना भेजें।” यानि हमेशा ऐसा होता रहा है कि लोगों की हिदायत के लिये रसूल भेजा गया, जिसने उन पर हक़ का हक़ होना और बातिल का बातिल होना ख़ूब अच्छी तरह वाज़ेह कर दिया, यहाँ तक कि मुतालका क्रौम पर हुज्जत तमाम होने में कोई कसर बाक़ी ना रही। इसके बाद भी जो लोग कुफ़्र और जुल्म पर अड़े रहे, उन पर गिरफ़्त की गई और अज़ाब के ज़रिये उन्हें नेस्तोनाबूद कर दिया गया।

आयत 48

“क्या ये देखते नहीं हैं अल्लाह की पैदा की गई हर शय की तरफ़, कि झुकते हैं उसके साये दाएँ और बाएँ अल्लाह को सज्दा करते हुए और वह सब आजिज़ी (की कैफ़ियत) में होते हैं।”

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ يَتَفَيَّؤُا ظِلَّهٖ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴿٤٨﴾

इस आयत में हमारे इर्द-गिर्द की अशया (चीज़ों) से पैदा होने वाले माहौल की तस्वीर कशी की गई है जिसे देखते हुए हम अल्लाह की किबरियाई का एक नक्शा अपने तस्सवुर में ला सकते हैं। जब सूरज निकलता है तो तमाम चीज़ों के साये ज़मीन पर बिछे हुए अल्लाह को सज्दा करते हुए नज़र आते हैं। फिर सूरज के बुलंद होने के साथ ही साथ ये साये सिमटते चले जाते हैं। सूरज के ढलने के साथ दूसरी सिम्ट (दिशा) में फैलते हुए ये साये फिर अल्लाह के हुज़ूर सज्दा रेज़ हो जाते हैं।

आयत 49

“और अल्लाह ही को सज्दा करते हैं आसमानों और ज़मीन में जितने जानदार हैं और फ़रिश्ते भी, और वह तकब्बुर से काम नहीं लेते।”

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾

आयत 50

“वह डरते रहते हैं अपने ऊपर अपने रब से और वही कुछ करते हैं जिसका उन्हें हुक्म दिया जाता है।”

يَخَافُونَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ

الصفحة
٥٠

यह खुसूसी तौर पर फ़रिश्तों के बारे में फ़रमाया गया है। जैसे कि सूरतुल तहरीम में फ़रमाया गया: { لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ } “वह अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं करते जो हुक्म वह उन्हें देता है और वही करते हैं जो हुक्म उन्हें दिया जाता है।”

आयत 51 से 60 तक

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ۝٥١ وَلَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصِبًا أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّقُونَ ۝٥٢ وَمَا بِكُمْ مِنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْرُونَ ۝٥٣ ثُمَّ إِذَا كُشِفَ الضُّرُّ عَنْكُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ۝٥٤ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَمْتَعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝٥٥ وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَاتِ سُبْحَنَهُ وَلَهُمْ مَا يَشْتَهُونَ ۝٥٦ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنْثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ۝٥٧ يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ مَا بُشِّرَبِهِ أَيُمْسِكُهُ عَلَىٰ هُونٍ أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝٥٨ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ وَلِلَّهِ الْمِثْلُ الْأَعْلَىٰ ۝٥٩ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝٦٠

आयत 51

“और अल्लाह ने फ़रमाया है कि दो मअबूद मत बनाओ, यक़ीनन वह तो एक ही मअबूद है, पस तुम मुझ ही से डरो।”

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ
وَاحِدٌ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ۝٥١

आयत 52

“और उसी के लिये है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और उसी के लिये इताअत है हमेशा-हमेश, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और का तक्रवा इख्तियार करते हो?”

وَلَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصِبًا
أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّقُونَ ۝٥٢

आयत 53

“और जो नेअमत भी तुम्हें मयस्सर है वह अल्लाह ही की तरफ़ से है, फिर जब तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो उसी के सामने तुम फ़रियाद करते हो।”

وَمَا بِكُمْ مِنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ
فَإِلَيْهِ تَجْرُونَ ۝٥٣

तकलीफ़ की कैफ़ियत में तुम अल्लाह को ही याद करते हो, उसी की जनाब में गिडगिडाते, आहवज़ारी करते, और दुआएँ माँगते हो। इस हालत में तुम्हें कोई दूसरा मअबूद याद नहीं आता।

आयत 54

“फिर जब वह तुमसे तकलीफ़ दूर कर देता है तो जब ही तुम में से एक गिरोह अपने रब के साथ शिर्क करना शुरू कर देता है।”

ثُمَّ إِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾

आयत 55

“ताकि नाशुक्री करें उन (नेअमतों) की जो हमने उनको दी हैं। तो चंद रोज़ा मज़े उड़ा लो, पस अनक़रीब तुम जान लोगो।”

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَبْتَغُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾

कुछ दिनों की बात है दुनिया में तुम लोग मज़े उड़ा लो। बहुत जल्द असल हक़ीक़त खुल कर तुम्हारे सामने आ जाएगी।

आयत 56

“और वह बना देते हैं उनके लिये जिनके बारे में उन्हें कोई इल्म ही नहीं, एक हिस्सा उसमें से जो रिज़क़ हमने उन्हें दिया है।”

وَيَجْعَلُونَ لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ

अल्लाह तआला ही के अता करदा रिज़क़ में से वह लोग अल्लाह के उन शरीकों के लिये भी हिस्से निकालते थे जिनके बारे में कोई इल्मी सनद या वाज़ेह दलील भी उनके पास मौजूद नहीं थी। ये मज़मून सूरतुल अनआम की आयत 136 में भी आ चुका है कि वह लोग अपनी खेतियों की पैदावार और जानवरों में से जहाँ अल्लाह के लिये हिस्सा निकालते थे वहाँ अपने झूठे मअबूदों के हिस्से के लिये भी ख़ास अहतमाम करते थे।

“अल्लाह की क़सम! ज़रूर सवाल किया जायेगा तुमसे इस बारे में जो इफ़तरा तुम लोग करते थे।”

تَاللّٰهِ لَتَسْأَلَنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُونَ ﴿٥٦﴾

आयत 57

“और वह बनाते हैं अल्लाह के लिये बेटियाँ, वह पाक है (इससे), और खुद उनके लिये वह कुछ जो उन्हें पसंद है।”

وَيَجْعَلُونَ لِلّٰهِ الْبَنَاتِ سُبْحَنَهُ وَلَهُمْ مَا يَشْتَهُونَ ﴿٥٧﴾

अल्लाह तआला की औलाद के तौर पर वह लोग उससे बेटियाँ मंसूब करते हैं जबकि खुद अपने लिये वह बेटे पसंद करते हैं। उन्होंने अल्लाह के लिये औलाद तजवीज़ भी की तो बेटियाँ तजवीज़ कीं, जो खुद अपने लिये पसंद नहीं करते।

आयत 58

“और जब इनमें से किसी को बेटी की खुश ख़बरी दी जाती है तो उसका चेहरा सियाह पड़ जाता है और वह (अन्दर ही अन्दर) रंज व ग़म से घुटता रहता है।”

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٥٨﴾

आयत 59

‘वह लोगों से छिपता फिरता है उस बुरी ख़बर की वजह से जो उसे दी गई।’

يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ مَا بُشِّرَبِهِ

जब उसे खुशखबरी दी जाती है कि वह एक बेटी का बाप बन गया है तो उसे एक मनहूस खबर ख्याल करता है और यूँ महसूस करता है कि अब वह किसी को मुँह दिखाने के काबिल नहीं रहा। शर्म के मारे लोगों से छिपता फिरता है और हर वक़्त इसी शशो-पंज में रहता है कि:

“क्या वह इसे ज़िल्लत के बावजूद रोके रखे या मिट्टी में दफ़न कर दे?”

أَيْمِسْكُهُ عَلَى هُونٍ أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ

“आगा रहो, बहुत ही बुरा है जो कैसला वह करते हैं।”

أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٥٩﴾

आयत 60

“उन लोगों के लिये जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते बुरी मिसाल है।”

لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السَّوِّءِ

“और अल्लाह की सिफ़त निहायत बुलंद है। और वह ज़बरदस्त है कमाले हिकमत वाला।”

وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٠﴾

अक़ीदा-ए-आख़िरत के हवाले से ये हकीकत लायक़-ए-तवज्जो है कि यह अक़ीदा दुनियावी ज़िन्दगी में इंसानी आमाल पर तमाम अवामिल से बढ़ कर असर अंदाज़ होता है। यही वज़ह है कि कुरान में आख़िरत और ईमान बिल आख़िरत के बारे में बहुत तकरार पाई जाती है।

आयत 61 से 65 तक

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَإِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٦١﴾ وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ أَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنَىٰ لَا جَرَءَ أَنْ لَهُمُ النَّارَ وَأَتَاهُمْ مُّفْرَطُونَ ﴿٦٢﴾ تَاللَّهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَرَزَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانَ أَغْمَا لَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمْ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ وَمَا أُنزِلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوا فِيهِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٦٤﴾ وَاللَّهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿٦٥﴾

आयत 61

“और अगर अल्लाह (फ़ौरन) पकड़ करता लोगों की उनके गुनाहों के सबब तो ना छोड़ता इस (ज़मीन) पर कोई भी जानदार, लेकिन वह मोहलत देता है उन्हें एक वक़्ते मुअय्यन तक।”

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى

ये अल्लाह की खास रहमत है कि वह लोगों के जुल्म व मअसियत (नाफ़रमानी) की पादाश में फ़ौरी तौर पर उनकी गिरफ़्त नहीं करता, बल्कि ढील देकर उन्हें इस्लाह (सुधरने) का पूरा-पूरा मौक़ा देता है।

“फ़िर जब उनका वक़्ते मुअय्यन आ जाएगा तो ना वह उससे एक साअत पीछे हट सकेंगे और ना आगे बढ़ सकेंगे।”

فَإِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا

يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٦١﴾

आयत 62

“और वह ठहराते हैं अल्लाह के लिये जो वह खुद पसंद नहीं करते”

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ

यानि इनमें से कोई भी खुद बेटी का बाप बनना पसंद नहीं करता, मगर अल्लाह के साथ बेटियाँ मंसूब करते हुए ये लोग ऐसा कुछ नहीं सोचते।

“और इनकी ज़बाने झूठ बयान कर रही हैं कि इनके लिये यक़ीनन भलाई है।”

وَتَصِفُ السِّتْنَتَهُمُ الْكَذِبَ أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنَىٰ

ये लोग इस ज़अम (खयाल) में हैं कि दुनिया में इन्हें इज्जत, दौलत और सरदारी मिली हुई है, तो ये दलील है इस बात की कि अल्लाह इनसे खुश है और इन्हें ये खुशफ़हमी भी है कि अगर उसने इन्हें ये सब कुछ दिया है तो आख़िरत में भी वह ज़रूर इन्हें अपनी नेअमतों से नवाज़ेगा। चुनाँचे दुनिया हो या आख़िरत इनके लिये तो भलाई ही भलाई है।

“इसमें कोई शक नहीं कि इनके लिये आग है और ये कि वह बढ़ाये जा रहे हैं।”

لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَأَنَّهُمْ مُّفْرَطُونَ ﴿٦٢﴾

दुनिया में इनकी रस्सी दराज़ करने का मक़सद ये है कि वह अल्लाह की नाफ़रमानी में जिस हद तक जुर्मी होकर आगे बढ़ सकते हैं बढ़ते चले जाएँ।

आयत 63

“अल्लाह की क़सम! हमने भेजा (अपने रसूलों को) बहुत सी उम्मतों की तरफ़ आपसे पहले, लेकिन शैतान ने उनके लिये उनके अमाल को मुज़य्यन किये रखा”

تَاللّٰهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ

शैतान के बहकावे के सबब वह लोग इस खुशफ़हमी में रहे कि उनका कल्चर, उनकी तहज़ीब और उनकी रिवायात सबसे आला हैं।

“तो आज वही इनका साथी है और इनके लिये दर्दनाक अज़ाब है।”

فَهُوَ وَلِيُّهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾

आयत 64

“और नहीं उतारी (ऐ मोहम्मद ﷺ) हमने आप पर ये किताब मगर इसलिये कि आप वाज़ेह कर दें इनके लिये वह सब कुछ जिसमें इन्होंने इख़्तिलाफ़ किया”

وَمَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوا فِيهِ

“और ये हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिये जो ईमान लाने वाले हैं।”

وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٦٤﴾

इस आयत को पढ़ते हुए सूरह युनुस की ये दो आयात भी ज़हन में रखिये:

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ مَوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٢﴾ قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ

وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٣﴾

“ऐ लोगों! आ गई है तुम्हारे पास नसीहत तुम्हारे रब की तरफ़ से और तुम्हारे सीनों (के जो रोग हैं उन) की शिफ़ा और हिदायत और अहले ईमान के हक़ में (बहुत बड़ी) रहमत। (ऐ नबी ﷺ! इनसे) कह दीजिये कि ये (कुरान) अल्लाह के फ़ज़ल और उसकी रहमत से (नाज़िल हुआ) है, तो चाहिये कि लोग इस पर खुशियाँ मनाएँ, वह बेहतर है उन चीज़ों से जो वह जमा करते हैं।”

आयत 65

“और अल्लाह ही ने आसमान से पानी उतारा, फिर उससे ज़िन्दा कर दिया ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद।”

وَاللّٰهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا

“यक़ीनन इसमें निशानी है उन लोगों के लिये जो सुनते हैं।”

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ٦٥

ये निशानी उन लोगों के लिये है जिनका सुनना हैवानों का सा सुनना ना हो, बल्कि इंसानों का सा सुनना हो। अल्लामा इक़बाल ने “ज़बूरे अज़म” में क्या खूब कहा है:

दम चीस्त? पयाम अस्त, शनैदी, नशनैदी!
 दर खाके तू यक जलवा-ए-आम अस्त नदैदी?
 दीदन दीगर आमोज़! शनैदन दीगर आमोज़!

यानि साँस जो तुम लेते हो ये भी अल्लाह का एक पैग़ाम है, ये अलग बात है कि तुम इस पैग़ाम को सुनते हो या नहीं सुनते हो। ये दुरुस्त है कि तुम खाक से बने हो, मगर तुम्हारे इसी खाकी वजूद के अन्दर एक नूर और जलवा-ए-रब्बानी भी मौजूद है। यह रूहे रब्बानी जो तुम्हारे वजूद में फूँकी गई है यह जलवा-ए-रब्बानी ही तो है, जिसे तुम देखते ही नहीं हो। तुम्हें अंदाज़ा ही नहीं है कि तुम्हारे अन्दर क्या-क्या कुछ मौजूद है: {وَوَيْلٌ لِّلْأَنفُسِ الْفَالِئِئِيَّةِ} (अल ज़ारियात:21) “और तुम्हारे अन्दर (क्या कुछ है), क्या तुम देखते नहीं हो?” ज़रा दूसरी तरह का देखना और दूसरी तरह का सुनना सीखो! ऐसा देखना सीखो जो चीज़ों की असलियत को देख सके और ऐसा सुनने की सलाहियत हासिल करो जिससे तुम्हें हकीकत की पहचान नसीब हो। अगर ऐसा नहीं तो फिर ये देखना और ये सुनना महज़ हैवानों का सा देखना और सुनना है।

ऐ अहले नज़र जोक़-ए-नज़र खूब है लेकिन
 जो शय की हकीकत को ना देखे वह नज़र क्या!

इस सूरत में तकरार के साथ अहले फ़िक्र व दानिश को दावत दी गई है कि वह अल्लाह की निशानियों को देख कर, सुन कर और समझ कर सबक़ हासिल करने की कोशिश करें। (आयते ज़ेरे नज़र के अलावा मुलाहिज़ा हों आयात 11, 12, 67, 69 और 79)

आयात 66 से 70 तक

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۚ نُسْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهِ مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِلشَّارِبِينَ ٦٦
 ثُمَّ رَتَّ النَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ٦٧
 النَّخْلَ أَنْ اتَّخِذُوا مِنْ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ٦٨
 ذُلًّا ۚ يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ٦٩
 خَلَقَكُمْ ثُمَّ يُتَوَفَّيْكُمْ وَمِنْكُمْ مَنْ يُؤَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لَكُمْ لَا يَعْلَمُ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ٧٠

आयत 66

“और यक्रीनन तुम्हारे लिये चौपायों में भी इबरत है।”

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً

चौपायों की तखलीक में भी तुम्हारे लिये बड़ा सबक है। इनको देखो, गौर करो और अल्लाह की हिकमतों को पहचानो!

“हम पिलाते हैं तुम्हें उसमें से जो उनके पेटों में होता है, गोबर और खून के दरमियान से खालिस दूध, पीने वालों के लिये निहायत खुशगवार।”

نُسْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهِ مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِلشَّارِبِينَ ﴿٦٦﴾

आयत 67

“और खजूरों और अंगूरों के फलों से भी, उनसे तुम नशाआवर चीज़ें भी बनाते हो और अच्छा रिज़क भी।”

وَمِنْ مَّمْرٍ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا

“यक्रीनन इसमें निशानी है उन लोगों के लिये जो अक़ल से काम लें।”

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾

आयत 68

“और आपके रब ने वही की शहद की मक्खी की तरफ़, कि घर बना पहाड़ों में, दरख्तों में और लोग (अंगूरों की बेलों के लिये) जो छतरियाँ बनाते हैं उनमें।”

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ﴿٦٨﴾

यानि शहद की मक्खी की फ़ितरत में यह चीज़ वदीयत कर दी गई है।

आयत 69

“फिर हर तरह के मेवों में से खा और अपने रब के हमवार किये हुए रास्तों पर चलती रहा।”

ثُمَّ كُلِي مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا

“निकलती है इनके पेटों से पीने की एक शय (शहद), जिसके रंग मुखतलिफ़ होते हैं, इसमें लोगों के लिये शिफ़ा है।”

يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ

शहद की मक्खी जिन-जिन जड़ी-बूटियों और पौदों के फूलों का रस चूसती है उनके ख्वास (गुण) और उनकी तासीरात को गोया वह कशीद करती (खींचती) है। इस तरह शहद में मुखतलिफ़ अदवियात (दवाओं) के असरात भी शामिल हो जाते हैं और यही वजह है कि इसमें बहुत सी बीमारियों के लिये शिफ़ा है।

“यक्रीनन इसमें निशानी है उन लोगों के लिये जो गौर व फ़िक्र करते हैं।”

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٦٩﴾

आयत 70

“और अल्लाह ही ने तुम्हें पैदा किया, फिर वही तुम्हें वफ़ात देगा, और तुम में से कुछ ऐसे भी हैं जो नाकारा उम्र को लौटा दिये जाते हैं”

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ وَمِنْكُمْ مَنْ يُرَدُّ اِلَىٰ
اَرْدٰلِ الْعُبْرِ

ऐसी उम्र जिसमें आदमी नाकारा होकर दूसरों पर बोझ बन जाता है।

“कि ना जाने इल्म रखने के बाद कुछ भी। यकीनन अल्लाह जानने वाला, कुदरत वाला है।”

لٰكِي لَا يَعْلَمُ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝

बुढ़ापे में अक्सर लोगों की कुव्वते फ़िक्क मुतास्सिर हो जाती है और ज़्यादा उम्र रसीदा लोगों को तो dementia हो जाता है जिससे ज़हनी सलाहियतें ख़त्म हो जाती हैं और याददाश्त जवाब दे जाती है। इस कैफ़ियत में बड़े-बड़े फ़लसफ़ी और दानिशवर बच्चों जैसी बातें करने लगते हैं।

आयात 71 से 76 तक

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضُكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ فَمَا الَّذِيْنَ فَضَّلُوْا اِبْرَادِيْ رِزْقِهِمْ عَلَىٰ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَاءٌ ۝
اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝ ٧١ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً ۝
وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبٰتِ اَفْبٰلْبٰطِلٍ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ۝ ٧٢ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ
لَهُمْ رِزْقًا مِنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْئًا وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝ ٧٣ فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا
تَعْلَمُوْنَ ۝ ٧٤ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًَا لَا يَقْدِرُ عَلَىٰ شَيْءٍ وَمَنْ رَزَقْنٰهُ مِمَّا رَزَقْنَا حَسَنًا فَهُوَ يَنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا
وَّجَهْرًا هَلْ يَسْتَوِيْنَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ ٧٥ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَا اَبْكَمٌ لَا يَقْدِرُ عَلَىٰ
شَيْءٍ وَهُوَ كَلٌّ عَلَىٰ مَوْلٰهٖ اَيْنَمَا يُوْجِهُهُ لَا يٰتُ بِخَيْرٍ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ ٧٦

٧٦

आयत 71

“और अल्लाह ने तुम में से बाज़ को बाज़ पर रिज़क में फज़ीलत दी है।”

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضُكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ

रिज़क से मुराद सिर्फ़ माद्री असबाब व वसाएल ही नहीं बल्कि इसमें इंसान की जिस्मानी व ज़ेहनी सलाहियतें भी शामिल हैं। माद्री वसाएल की कमी-बेशी के बारे में कोई सोशलिस्ट या कम्युनिस्ट ऐतराज़ कर सकता है कि यह ग़लत तक्रसीम और ग़लत निज़ाम का नतीजा है, जिसका ज़िम्मेदार खुद इंसान है, मगर ये अम्र अपनी जगह अटल हक़ीक़त है कि हर इंसान की ज़ेहनी इस्तेदाद और जिस्मानी ताक़त एक सी नहीं होती। जींस (genes) के ज़रिये विरासत में मिलने वाली तमाम सलाहियतें भी सब इंसानों में बराबर नहीं होतीं, फिर इसमें किसी के इख़्तियार व इन्तेखाब को भी कोई दखल नहीं है। चुनाँचे अल्लाह तआला ने माद्री असबाब व वसाएल के अलावा ज़ाती सलाहियतों में भी मुख्तलिफ़ इंसानों को मुख्तलिफ़ ऐतबार से एक-दूसरे पर फज़ीलत दी है।

“तो नहीं हैं वह लोग जिन्हें (रिज़्क में) फज़ीलत दी गई है लौटाने वाले अपना रिज़्क अपने गुलामों को कि वह हो जाएँ इसमें बराबर।”

فَمَا الَّذِينَ فَضَّلُوا بِرَآءِي رَزَقَهُمْ عَلَىٰ مِمَّا مَلَكَتْ
أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ

यानि ऐसा तो नहीं होता कि उमराअ अपनी दौलत और जायदादें अपने गुलामों में तकसीम कर दें और उन्हें भी अपने साथ उन जायदादों का मालिक बना लें। तो अगर तुम लोग अपने गुलामों को अपने साथ अपनी मिल्कियत में शरीक नहीं करते तो क्या अल्लाह तुम्हारे झूठे मअबूदों को अपने बराबर कर लेगा? और ये जो इन लोगों का खयाल है कि एक बड़ा खुदा है और कुछ छोटे-छोटे खुदा हैं और ये छोटे खुदा बड़े खुदा से इनकी सिफ़ारिश करेंगे तो क्या अल्लाह पर इनमें से किसी की धौंस चल सकेगी या अल्लाह इनमें से किसी को यह इख्तियार देगा कि वह उससे अपनी कोई बात मनवा ले?

“तो क्या ये लोग अल्लाह की नेअमत का इन्कार कर रहे हैं?”

أَفَبِعِنتَةِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٤١﴾

आयत 72

“और अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी ही नौअ से बीवियाँ बनाईं”

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا

अरबी में “ज़ौज” शरीके हयात (spouse) को कहते हैं और यह लफ़्ज़ बीवी और खाविंद दोनों के लिये इस्तेमाल होता है। औरत के लिये मर्द ज़ौज है और मर्द के लिये औरत।

“और बनाए तुम्हारे लिये तुम्हारी बीवियों से बेटे और पोते, और रिज़्क दिया तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों से।”

وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَنِينَ وَحَفَدَةً وَرَزَقَكُمْ
مِّنَ الطَّيِّبَاتِ

“तो क्या ये लोग बातिल पर ईमान रखते हैं और अल्लाह की नेअमत का वह इन्कार करते हैं?”

أَفِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِعِنتَةِ اللَّهِ هُمْ يَكْفُرُونَ ﴿٤٢﴾

यानि कुफ़्राने नेअमत करते हैं। यहाँ यह अहम बात लायक-ए-तवज्जो है कि इस सूरत में अल्लाह की नेअमतों का ज़िक्र बहुत तकरार के साथ आ रहा है।

आयत 73

“और ये परस्तिश करते हैं अल्लाह के सिवा उनकी जिन्हें कुछ इख्तियार नहीं उनके लिये किसी रिज़्क का, ना आसमानों से और ना ज़मीन से, और ना वह इसकी कुदरत ही रखते हैं।”

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٤٣﴾

मुशरिकीने अरब अय्यामे जाहिलियत में जो तलबिया पढ़ते थे उसमें तौहीद के इक्रार के साथ-साथ शिर्क का अस्वात भी मौजूद था। उनका तलबिया यह था: اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ اِلَّا شَرِيْكًا مِّلْكُهُ وَمَا مَلَكَ يٰنِیْ मैं हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह! मैं हाज़िर हूँ। मैं हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नहीं है, मैं हाज़िर हूँ। सिवाय उस शरीक के कि उसका और जो कुछ उसका इख्तियार है सबका मालिक तू ही है। यानि बिलआखिर इख्तियार तेरा ही है और तेरा कोई शरीक तुझ से आज़ाद होकर खुद मुख्तार (autonomous) नहीं है। चुनाँचे जिस तरह ईसाईयों ने तौहीद को तसलीस में बदला और फिर तसलीस को तौहीद में ले आए (One in three and three in one) इसी तरह मुशरिकीने अरब भी तौहीद में शिर्क पैदा करते और फिर शिर्क को तौहीद में लौटा देते थे।

आयत 74

“तो अल्लाह के लिये मिसालें बयान ना किया करो।”

فَلَا تَضْرِبُوا لِلَّهِ الْأَمْثَالَ

कबूल अज़ इसी सूरत (आयत 60) में हम पढ़ चुके हैं: {وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ} “और अल्लाह की मिसाल सबसे बुलंद है” लेकिन इसका तर्जुमा बिलउमूम यूँ किया जाता है: “अल्लाह की सिफ़्त बहुत बुलंद है।” या “अल्लाह की शान बहुत बुलंद है।” इसलिये कि अल्लाह के लिये कोई मिसाल बयान नहीं की जा सकती। इंसानी सतह पर बात समझने और समझाने के लिये कुछ ना कुछ तम्सीली अल्फ़ाज़ तो इस्तेमाल करने पड़ते हैं, मसलन अल्लाह का चेहरा, अल्लाह का हाथ, अल्लाह का तख़्त, अल्लाह की कुर्सी, अल्लाह का अर्थ वगैरह, लेकिन ऐसे अल्फ़ाज़ से हम ना तो हकीकत का इज़हार कर सकते हैं और ना ही अल्लाह की सिफ़ात और उसके अफ़आल की हकीकत को जान सकते हैं। इसी लिये मना कर दिया गया है कि अल्लाह की मिसालें बयान ना किया करो। इसकी मन्तक़ी वजह यह है कि हम अगर उस हस्ती के लिये कोई मिसाल लायेंगे तो आलमे खल्क से लायेंगे, जिसकी हर चीज़ महदूद है। या फिर ऐसी कोई मिसाल हम अपने ज़हन से लायेंगे, जबकि इंसानी सोच, कुव्वते मतखीला (गंभीरता) और तस्सवुरात भी सब महदूद हैं। दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला की ज़ात मुतलक़ (Absolute) है और उसकी सिफ़ात भी मुतलक़ है। चुनाँचे इंसान के लिये यह मुम्किन ही नहीं कि ऐसी मुतलक़ हस्ती के लिये कोई मिसाल बयान कर सके। इसी लिये सूरतुल शौरा की आयत 11 में दो टूक अंदाज़ में फ़रमा दिया गया: {لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ} कि उसकी मिसाल की सी भी कोई शय मौजूद नहीं।

“बेशक अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।”

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٧٤﴾

आयत 75

“अल्लाह ने मिसाल बयान की है एक गुलाम ममलूक की, जो इख्तियार नहीं रखता किसी चीज़ पर भी”

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا مَمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ عَلَىٰ شَيْءٍ

अल्लाह तआला इनके शिर्क के नफ़ी के लिये यह मिसाल बयान कर रहा है कि एक बंदा वह है जो किसी का गुलाम और ममलूक है, उसका कुछ इख्तियार नहीं, वह अपनी मरज़ी से कुछ भी नहीं कर सकता।

“और (एक वह है) जिसको हमने अपने पास से बहुत अच्छा रिज़क दिया है, और वह उसमें से खर्च करता है छुप कर भी और ऐलानिया भी।”

وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِمَّا رَزَقْنَا حَسَنًا فَهُوَ يَنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا

وَجَهْرًا

रिज़क में माल, इल्म और सलाहियतें सब शामिल हैं। यानि वह शख्स माल भी खर्च कर रहा है, लोगों को तालीम भी दे रहा है, और कई दूसरे तरीक़ों से भी लोगों को मुस्तफ़ीद कर रहा है।

“क्या ये (दोनों) बराबर हैं? कुल तारीफ़ और शुक्र अल्लाह के लिये है, लेकिन इनकी अक्सरियत इल्म नहीं रखती।”

هَلْ يَسْتَوْنَ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

एक तरफ़ अल्लाह का वह बंदा है जो उसके दीन की ख़िदमत में मसरूफ़ है, अम्र बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर के फ़राइज़ सरअंजाम दे रहा है, लोगों में दीन की तालीम को आम कर रहा है, या अगर साहिबे सरवत (मालदार) है तो अपना माल अल्लाह के दीन की सरबुलंदी के लिये खर्च कर रहा है और मोहताजों की मदद कर रहा है। जबकि दूसरी तरफ़ एक ऐसा शख्स है जिसके पास कुछ इख्तियार व कुदरत नहीं है, वह अपनी मरज़ी से कुछ कर ही नहीं सकता। ये दोनों बराबर कैसे हो सकते हैं?

आयत 76

“और अल्लाह ने (अब एक और) मिसाल बयान की दो अश्वास की, इनमें से एक गूंगा है, वह कुदरत नहीं रखता किसी भी चीज़ पर और वह अपने आक्रा पर बोझ है”

وَصَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا زَّجْلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكُمُ لَا يَقْدِرُ
عَلَى شَيْءٍ وَهُوَ كُلٌّ عَلَى مَوْلَاهُ

“जहाँ कहीं भी वह (आक्रा) इसे भेजता है, वह कोई खैर लेकर नहीं आता।”

أَيْنَمَا يُوجِّهُهُ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ

एक शख्स के दो गुलाम हैं। एक गुलाम गूंगा है, किसी काम की कोई सलाहियत नहीं रखता, उल्टा अपने मालिक पर बोझ बना हुआ है। काम वगैरह कुछ नहीं करता, सिर्फ़ रोटियाँ तोड़ता है। अगर इसका आक्रा इसे किसी काम से भेज दे तो वह काम खराब करके ही आता है।

“क्या बराबर होगा वह, और वह जो हुक्म देता है अदल का, और वह सीधी राह पर कायम है?”

هَلْ يَسْتَوِي هُوَ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ عَلَى
صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ٧٧

अल्लाह तआला ने यहाँ एक शख्स के दो गुलामों के हवाले से दो तरह के इन्सानों की मिसाल बयान फ़रमाई है कि सब इंसान मेरे गुलाम हैं। लेकिन मेरे इन गुलामों की एक किस्म वह है जो मेरी नेअमतों से लुत्फ़ अन्दोज़ हो रहे हैं मगर मेरा कोई काम नहीं करते, मेरे दीन की कुछ ख़िदमत नहीं करते, मेरी मख़लूक के किसी काम नहीं आते। ये लोग उस गुलाम की मानिन्द हैं जो अपने आक्रा पर बोझ हैं। दूसरी तरफ़ मेरे वह बंदे और गुलाम हैं जो दिन-रात मेरी रज़ा जोई के लिये जह्द-जहद कर रहे हैं, नेकी का हुक्म दे रहे हैं और बुराई से रोक रहे हैं, मेरे दीन को कायम करने की जह्द-जहद में अपने तन, मन और धन की कुरबानियाँ पेश कर रहे हैं। तो क्या ये दोनों तरह के इंसान बराबर हो सकते हैं?

आयात 77 से 83 तक

وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ٧٧ وَاللَّهُ
أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ٧٨ أَلَمْ
يَرْوِ إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِي جَوِّ السَّمَاءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ٧٩ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ
مِّنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُمُ مِنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ وَمِنْ
أَصْوَافِهَا وَأَوْبَارَهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَاثًا وَمَتَاعًا إِلَى حِينٍ ٨٠ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّمَّا خَلَقَ ظِلَالًا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْجِبَالِ
أَكْنَانًا وَجَعَلَ لَكُم سَرَابِئِلَ تَقِيكُمْ الْحَرَّ وَسَرَابِئِلَ تَقِيكُمْ بِأَسْكُمُ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ٨١
فَإِنْ تَوَلَّوْا فَمَا عَلَيكَ الْبَلُغُ الْمُبِينُ ٨٢ يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ الْكَافِرُونَ ٨٣

आयत 77

“और आसमानों और ज़मीन की सारी छिपी बातें अल्लाह ही के लिये है।”

وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ

“और क़यामत का मामला तो ऐसे है जैसे निगाह का लपकना, या (मुमकिन है) वह इससे भी करीब तर हो। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।”

وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ إِنَّ
اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٤﴾

आयत 78

“और अल्लाह ने तुम्हें निकाला तुम्हारी माँओं के पेटों से जबकि तुम कुछ नहीं जानते थे”

وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ
شَيْئًا

नौज़ाएदा (नवजात) बच्चा अक़ल व शऊर और समझ-बूझ से बिल्कुल आरी होता है, बल्कि हकीकत तो यह है कि इंसान का बच्चा तमाम हैवानात के बच्चों से ज़्यादा कमज़ोर और ज़्यादा मोहताज (dependent) होता है।

“और तुम्हारे लिये समाअत, बसारत और अक़ल बनाई।”

وَجَعَلْ لَكُمْ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ

عَفْء का तरज़ुमा आमतौर पर “दिल” किया जाता है, मगर मेरे नज़दीक इससे मुराद अक़ल और शऊर है। इस पर तफ़सीली गुफ़्तगू इंशा अल्लाह सूरह बनी इसराईल की आयत 36 {إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا} के ज़िम्न में होगी। आयत ज़ेरे नज़र में कानों और आँखों का ज़िक्र इंसानी हवास (senses) के तौर पर हुआ है और इन हवास का ताल्लुक अक़ल (عَفْء) के साथ वही है जो कंप्यूटर के input devices का इसके प्रोसेसिंग यूनिट के साथ होता है। जिस तरह कंप्यूटर का प्रोसेसिंग यूनिट मुख्तलिफ़ ज़राए से हासिल होने वाली मालूमात (डाटा) को प्रासेस करके उससे कोई नतीजा अख़ज़ करता है इसी तरह हवासे खम्सा से हासिल होने वाली मालूमात से इंसानी दिमाग़ सोच-विचार करके कोई नतीजा निकालता है। इंसान की इसी सलाहियत को हम अक़ल कहते हैं और मेरे नज़दीक عَفْء से मुराद इंसान की यही अक़ल है।

“ताकि तुम शुक्र करो।”

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٤٥﴾

ये तमाम सलाहियतें इंसान के लिये अल्लाह तआला की नेअमत हैं और अल्लाह ने ये नेअमतें इंसान को इसलिये अता की हैं कि वह इन पर अल्लाह का शुक्र अदा करे, और इस सिलसिले में अल्लाह के शुक्र का तक्राज़ा यह है कि इंसान इन नेअमतों का इस्तेमाल दुरुस्त तौर पर करे और इनसे कोई ऐसा काम ना ले जिससे अल्लाह तआला की नाफ़रमानी का कोई पहलु निकलता हो।

आयत 79

“क्या ये देखते नहीं परिंदों को कि वह आसमान की फ़ज़ा में मुसख़्खर हैं, इन्हें नहीं थामा हुआ किसी ने सिवाय अल्लाह के।”

الْمَیْرُوا إِلَى الطَّیْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِی جَوِّ السَّمَاءِ مَا
یُمْسِكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ

यानि अल्लाह तआला के हुक्म और उसके क़ानून के मुताबिक़ ये परिंदे फ़ज़ा में तैर रहे हैं।

“यक़ीनन इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हों।”

إِنَّ فِی ذَٰلِكَ لَآیَاتٍ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُونَ ﴿٤٦﴾

आयत 80

“और अल्लाह ने तुम्हारे घरों में तुम्हारे लिये सकूनत की जगह बनाई है”

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا

“और उसने बना दिये तुम्हारे लिये चौपायों की खालों से ऐसे घर (खेमें) जिन्हें तुम बहुत हल्का-फुल्का पाते हो अपने कूच और क्रयाम के दिन”

وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا

يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ

जानवरों की खालों से बनाये गए खेमे बहुत हल्के-फुल्के होते हैं। चुनाँचे दौराने सफ़र भी इन्हें उठाना आसान होता है, और इसी तरह जब और जहाँ चाहें इन्हें आसानी से गाड़ कर आरामदेह क्रयाम गाह बनाई जा सकती है।

“और (उसने बनाया तुम्हारे लिये) उन (भेड़ों) की ऊन से और उन (ऊँटों और बकरियों) के बालों से सामान और बरतने की चीज़ें एक खास वक़्त तक के लिये।”

وَمِنْ أَصْوَافِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَاثًا وَمَتَاعًا

إِلَى حِينٍ ۝

क्रबल अज़ आयत 5 में जानवरों के बालों की अफ़ादियत के हवाले से “رِفْءٌ” का लफ़्ज़ का इस्तेमाल हुआ था, जिसमें सर्दी की शिद्दत से बचने के लिये कपड़ा तैयार करने की तरफ़ इशारा था। यहाँ इस सिलसिले में वज़ाहत से बताया गया है कि मुख्तलिफ़ जानवरों की ऊन और उनके बालों की सूरत में अल्लाह ने तुम्हारे लिये कुदरती रेशा (fiber) पैदा कर दिया है जिससे तुम लोग कपड़े बुनते हो और दूसरी बहुत सी मुफ़ीद अशया बनाते हो। एक मुद्दत तक इंसान के पास कपड़ा बनाने के लिये जानवरों से हासिल होने वाले इस रेशे के अलावा और कोई चीज़ नहीं थी। कपास की दरयाफ्त बहुत बाद में हुई। मौजूदा ज़माने में इस मक़सद के लिये अगरचे मसनूई रेशे की रंगारंग अक्रसाम मौजूद हैं मगर इस कुदरती रेशे की अहमियत व अफ़ादियत से आज भी इन्कार नहीं किया जा सकता।

आयत 81

“और अल्लाह ही ने बनाया तुम्हारे लिये अपनी पैदा करदा चीज़ों से साया”

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلًّا

अल्लाह ने दरख्तों और बहुत सी दूसरी चीज़ों से साये का निज़ाम वज़अ फ़रमाया है जो इंसानी ज़िन्दगी के लिये बहुत मुफ़ीद है।

“और उसी ने बनाएँ तुम्हारे लिये पहाड़ों के अन्दर पनाह गाहें”

وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ الْكُنَاثَ

पहाड़ों के अन्दर कुदरती गारें पाई जाती हैं जिनमें लोग तूफानी हवाओं वगैरह की शिद्दत से बचने के लिये पनाह ले सकते हैं। पुराने ज़माने में तो इस हवाले से इन गारों की बहुत अहमियत थी।

“और बनाए तुम्हारे लिये ऐसे लिबास जो तुम्हें बचाते हैं गरमी से और ऐसे लिबास (ज़िरहें) जो तुम्हें बचाते हैं तुम्हारी लड़ाई में”

وَجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيلَ تَقِيكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ

تَقِيكُمُ بَأْسَكُمْ

“इसी तरह वह इत्माम फ़रमाता है अपनी नेअमत का तुम पर ताकि तुम इताअत की रविश इख्तियार करो।”

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ۝

जैसा कि क्रबल अज़ भी इशारा किया गया है, इस सूरत में अल्लाह तआला की नेअमतों के ज़िक्र की तकरार बहुत ज़्यादा है। (मज़ीद मुलाहिज़ा हों आयत 18, 35, 71, 72, 83 और 114)।

आयत 82

“तो (ऐ नबी ﷺ) अगर ये लोग अपने मुँह फेर लें तो आप पर तो सिर्फ साफ़-साफ़ पहुँचा देने की ज़िम्मेदारी है।”

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَمَا عَلَيْنَا الْبَلُغُ الْمُبِينُ ﴿٨٧﴾

आयत 83

“ये लोग अल्लाह की नेअमत को पहचानते हैं, फिर मुन्कर हो जाते हैं और इनमें अक्सर ना शुक्रे हैं।”

يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٨﴾

आयत 84 से 89 तक

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٨٩﴾ وَإِذَا رَأَوْا الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٩٠﴾ وَإِذَا رَأَوْا الَّذِينَ أَشْرَكُوا شَرَّكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَؤُلَاءِ شَرَّكَائُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا مِنْ دُونِكَ فَأَلْقُوا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٩١﴾ وَالْقَوَا إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَامُ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٩٢﴾ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ذُنُوبُهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿٩٣﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَى هَؤُلَاءِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَى لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٩٤﴾

आयत 84

“और जिस दिन हम उठाएंगे हर उम्मत में से एक गवाह”

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا

शहादत-ए-हक़ का यह मज़मून इस सूरत में दो मरतबा (मज़ीद मुलाहिज़ा हो आयत 89) आया है, जबकि क़बल अज़ सूरतुल बक्ररह की आयत 143 और सूरह निसा आयत 41 में भी इसका ज़िक्र है। आयत ज़ेरे नज़र में हर उम्मत में से जिस गवाह का ज़िक्र है वह उस उम्मत का नबी या रसूल होगा। जैसा कि सूरतुल आराफ़ में फ़रमाया गया है: {فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْأَلَنَّ الْمُرْسَلِينَ} (आयत 6) “हम ज़रूर पूछेंगे उनसे जिनकी तरफ़ रसूल भेजे गए और हम रसूलों से भी पूछेंगे।” रोज़े महशर हर उम्मत की पेशी के वक़्त उस उम्मत का रसूल अदालत के सरकारी गवाह (prosecution witness) की हैसियत से गवाही देगा कि ऐ अल्लाह! तेरी तरफ़ से जो पैग़ाम मुझे इस क़ौम के लिये मिला था वह मैंने बे कम-ओ-कास्त इन तक पहुँचा दिया था। अब ये लोग जवाबदेह हैं, इनसे मुहासबा हो सकता है। इस तरह तमाम अम्बिया व रसूल अलै. अपनी-अपनी उम्मत के ख़िलाफ़ गवाही देंगे।

“फिर काफ़िरो को ना (बोलने की) इजाज़त मिलेगी और ना ही उनको उज़्र पेश करने का मौक़ा दिया जाएगा।”

ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٩٥﴾

उस वक़्त उन्हें ऐसा मौक़ा फ़राहम नहीं किया जाएगा कि वह उज़्र तराश कर अपने आप को बचाने की कोशिश कर सकें।

आयत 85

“और जब ये ज़ालिम देख लेंगे अज़ाब को तो फिर उसे इनसे हल्का नहीं किया जाएगा और ना ही इन्हें कोई मोहलत दी जाएगी।”

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفِّفُ عَنْهُمْ
وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٨٥﴾

आयत 86

“और जब मुशरिक लोग देखेंगे अपने (बनाए हुए) शरीकों को तो कहेंगे कि ऐ हमारे रब! यही हैं हमारे वह शरीक जिन्हें हम तेरे सिवा पुकारा करते थे।”

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شَرَّكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَؤُلَاءِ
شُرَكَائُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا مِنْ دُونِكَ

“तो वह फेंक देंगे ये बात उन्हीं की तरफ कि तुम लोग यकीनन झूठ बोल रहे हो।”

فَالْقُوا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٨٦﴾

शिरक का इरतकाब करने वाले ये लोग महशर में जब उन मुक़द्दस हस्तियों को देखेंगे जिनके नाम की वह दुनिया में दुहाई दिया करते थे तो पुकार उठेंगे कि ऐ अल्लाह! ये हैं वह हस्तियाँ जिन्हें हम पुकारा करते थे आपको छोड़ कर। मसलन हज़रत अब्दुल क़ादिर जिलानी रहमतुल्लाह के नाम की दुहाई देने वाले जब वहाँ आपको बुलंद मरातब पर फ़ाइज़ देखेंगे तो आप रहि. को पहचान कर ऐसे कहेंगे। और हज़रत ईसा अलै. को अल्लाह का शरीक ठहराने वाले जब आप अलै. को देखेंगे तो पुकार उठेंगे कि ये हैं ईसा इब्ने मरियम जिन्हें हम अल्लाह का चहेता बेटा समझते थे और हमारा अक़ीदा था कि वह सूली पर चढ़ कर हमारे तमाम गुनाहों का कफ़ारा अदा कर चुके हैं।

ये तमाम मुक़द्दस हस्तियाँ वहाँ मुशरिकीन के मुशरिकाना अक्राएद से इज़हारे बराअत करेंगी कि हमारा तुम लोगों से कोई ताल्लुक नहीं है और हमें कुछ मालूम नहीं है कि तुम लोग दुनिया में हमारी इबादत किया करते थे और अल्लाह के सिवा हमें पुकारा करते थे। क़बल अज़ यह मज़मून सूरह युनुस की आयत 28 और 29 में भी गुज़र चुका है।

आयत 87

“और वह (सब के सब) उस रोज़ अल्लाह के हुज़ूर आजिज़ी पेश करेंगे और गुम हो जायेंगे उनसे वह (अक्राएद) जो वह गढ़ा करते थे।”

وَالْقُوا إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَامَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا
يَفْتَرُونَ ﴿٨٧﴾

ऐसी मुक़द्दस हस्तियों के बारे में जो अक्राएद और नज़रियात इन्होंने गढ़ रखे थे कि वह इन्हें अज़ाब से बचा लेंगे और अल्लाह की पकड़ से छुड़ा लेंगे, ऐसे तमाम खुदसाख़्ता अक्राएद में से उस दिन इन्हें कुछ भी याद नहीं रहेगा और अज़ाब को देख कर इनके हाथों के तोते उड़ जायेंगे।

आयत 88

“वह लोग जिन्होंने क़फ़ किया और रोकते रहे (दूसरों को) अल्लाह के रास्ते से, हम उनके अज़ाब पर अज़ाब का इज़ाफ़ा करते जायेंगे, बसबब उस फ़साद के जो वह करते थे।”

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ذُنُوبُهُمْ
عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿٨٨﴾

उन लोगों का अज़ाब बतदरीज बढ़ता ही चला जाएगा जिन्होंने ना सिर्फ़ हक़ को झुठलाया बल्कि उसके ख़िलाफ़ साज़िशें कीं और लोगों को वरगला कर अल्लाह के रास्ते से रोकते रहे।

आयत 89

“और (ज़रा तसव्वुर करो उस दिन का) जिस दिन हम हर उम्मत में खड़ा करेंगे एक गवाह उन पर उन ही में से”

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ

ये वही अल्फ़ाज़ हैं जो हम आयत 84 में पढ़ आए हैं। क़यामत के दिन तमाम रसूल अपनी-अपनी उम्मत पर गवाह होंगे। सूरतुल अहज़ाब में रसूल ﷺ के बारे में इस हवाले से फ़रमाया गया: {يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَهِيدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا} (आयत 45-46) “ऐ नबी! यक़ीनन हमने आपको भेजा है गवाही देने वाला, खुशख़बरी देने वाला और ख़बरदार करने वाला बनाकर, और बुलाने वाला अल्लाह की तरफ़ उसके हुक़म से और एक रौशन चिराग़।” इसी तरह सूरतुल मुज़म्मिल आयत 15 में हुज़ूर ﷺ के बारे में फ़रमाया: {إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَهِيدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا} “यक़ीनन हमने भेजा है तुम्हारी तरफ़ एक रसूल, गवाही देने वाला तुम पर जैसे हमने भेजा था फ़िरऔन की तरफ़ एक रसूल।”

“और आपको खड़ा करेंगे गवाह (बना कर) इनके खिलाफ़।”

وَجُنَّائِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ هَؤُلَاءِ

क़बूल अज़ हम सूरतुन्निसा में भी इससे मिलती-जुलती ये आयत पढ़ चुके हैं: {كَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجُنَّائِكَ عَلَىٰ هَؤُلَاءِ} (आयत 41) “फिर क्या हाल होगा जब हम लायेंगे हर उम्मत में से एक गवाह और आपको लायेंगे इन पर गवाह।” यहाँ ﷺ के लफ़्ज़ में कुरैशे मक्का की तरफ़ इशारा है जिन तक हुज़ूर ﷺ ने बराहेरास्त अल्लाह की दावत पहुँचा दी थी। लिहाज़ा क़यामत के दिन आप उनके खिलाफ़ गवाही देंगे कि ऐ अल्लाह मैंने आपका पैग़ाम बे-कम-ओ-कास्त इन तक पहुँचा दिया था और इसमें किसी शक व शुबह की गुंजाईश नहीं छोड़ी थी। मैंने इस ज़िम्न में बरस-हा-बरस तक इनके दरमियान हर तरह की मुशक्कत उठाई। इन्हें तन्हाई में फ़र्दन-फ़र्दन भी मिला और अलल ऐलान इज्जतमाई तौर पर भी इनसे मुखातिब हुआ। मैंने इस सिलसिले में कोई दक्तीका फ़रो-गुज़ाशत नहीं किया था।

रसूल अल्लाह ﷺ ने अल्लाह का ये पैग़ाम अहले अरब तक बराहेरास्त पहुँचा दिया और बाक़ी दुनिया तक क़यामत तक के लिये ये पैग़ाम पहुँचाने की ज़िम्मेदारी आप ﷺ ने उम्मत को मुन्तक़िल फ़रमा (transfer कर) दी। अब अगर उम्मत इस फ़र्ज़ में कोताही करेगी तो लोगों की गुमराही का बवाल अफ़रादे उम्मत पर आयेगा। चुनौचे ये बहुत भारी और नाज़ुक ज़िम्मेदारी है जो उम्मते मुस्लिमा के अफ़राद होने के सबब हमारे कन्धों पर आ पड़ी है। सूरतुल बक्ररह की आयत नम्बर 143 में उम्मते मुस्लिमा की इस ज़िम्मेदारी का ज़िक्र तहवीले क़िब्ला के ज़िक्र के फ़ौरन बाद इस तरह फ़रमाया गया: {وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا} “इसी तरह हमने तुम्हें एक उम्मते वसत बनाया है ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और रसूल तुम पर गवाह बने।” इस भारी ज़िम्मेदारी की अदायगी के दौरान बहुत मुश्किल और जाँ-कसल मराहिल का आना नागुज़ीर है। इस तरह के मुश्किल मराहिल से गुज़रने का तरीक़ा सूरतुल बक्ररह ही में आगे चल कर इस तरह वाज़ेह किया गया है: {يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ} “ऐ अहले ईमान तुम मदद तलब करो नमाज़ और सब्र के साथ, यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।” और फिर इस राह में जान की बाज़ी लगाने वाले खुशनसीब अहले ईमान की दिलजोई (बक्ररह:154 में) इस तरह फ़रमाई गई: {وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ} “और मत कहो उन्हें मुर्दा जो अल्लाह के रस्ते में क़त्ल कर दिये जाएँ, बल्कि वह ज़िन्दा हैं मगर तुम्हें (उनकी ज़िन्दगी का) शऊर नहीं है।”

“और (ऐ नबी ﷺ!) हमने उतार दी है आप पर यह किताब वज़ाहत करती हुई हर शय की, और यह हिदायत, रहमत और बशारत (बन कर आई) है मुसलमानों के लिये।”

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تَبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ

यानि हयाते इंसानी के तमाम मसाइल का हल कुरान में मौजूद है। कुरान उन लोगों के लिये हिदायत, रहमत और बशारत है जो मुस्लिम यानि अल्लाह की फ़रमाबरदारी करने वाले हैं।

आयात 90 से 100 तक

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَائِي ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾ وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩١﴾ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَقَضَتْ غَزَاهُمْ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَارًا تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ إِنَّمَا يَبْلُغُ اللَّهُ بِهِ وَلِيُبَيِّنَ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٩٢﴾ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَلِتَسْأَلَنَّ عَنْمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾ وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا الشُّوْءَ بِمَا صَدَدْتُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٩٤﴾ وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩٥﴾ مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ وَلَنَجْزِيَنَ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيَوةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٧﴾ فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿٩٨﴾ إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطَانٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٩٩﴾ إِنَّمَا سُلْطَانُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِينَ هُمْ بِهِ مُشْرِكُونَ ﴿١٠٠﴾

आयत 90

“यक्तीनन अल्लाह हुक्म देता है अदल का, अहसान का और क़राबतदारों को (उनके हुक्म) अदा करने का”

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَائِي ذِي
الْقُرْبَىٰ

“और वह रोकता है बेहयाई, बुराई और सरकशी से।”

وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ

“वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम सबक़ हासिल करो।”

يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾

यह आयत इस लिहाज़ से बहुत मशहूर है कि अक्सर जुमातुल मुबारक के खुतबात में शामिल की जाती है। यह बहुत ही जामेअ आयत है और इसमें अम्र बिल मारुफ़ और नहि अनिलमुन्कर के अंदाज़ में तीन चीज़ों का हुक्म दिया गया है और तीन चीज़ों से मना किया गया है। पहला हुक्म अदल का है और दूसरा अहसान का। अदल तो यह है कि जिसका जिस क़दर हक़ है ऐन उसी क़दर आप उसे दे दें, लेकिन अहसान एक ऐसा अमल है जो अदल से बहुत आला व अरफ़अ है। यानि अहसान यह है कि आप किसी को उसके हक़ से ज़्यादा दें और यह अमल अल्लाह तआला को बहुत पसंद है। चुनाँचे अल्लाह मोहसिनीन को महबूब रखता है। तीसरा हुक्म क़राबतदारों के हुक्म का खयाल रखने के बारे में है, यानि उनसे हुस्ते सुलूक से पेश आना, सिला रहमी के तक्राज़े पूरे करना और इन्फ़ाके माल के सिलसिले में उनको तरज़ीह देना। ये तीन अहक़ाम उन आमाल के बारे में हैं जो एक अच्छे मआशरे की बुनियाद का काम देते हैं।

जिन चीजों से यहाँ मना फ़रमाया गया है उनमें सबसे पहली बेहयाई है। हया गोया इंसान और हर बुरे काम के दरमियान परदा है। जब तक यह परदा कायम रहता है इंसान अमली तौर पर बुराई से बचा रहता है, और जब यह परदा उठ जाता है तो फिर इंसान बेशर्म होकर आज़ाद हो जाता है। फिर वह “बेहया बाश व हरचे ख्वाही कुन!” का मिस्दाक़ बन कर जो चाहे करता फिरता है। बेहयाई के बाद मुन्कर से मना किया गया है। मुन्कर हर वह काम है जिसके बुरे होने पर इंसान की फ़ितरत गवाही दे। तीसरा नापसन्दीदा अमल या ज़ब्बा अल बगा यानि सरकशी है। यह सरकशी अगर अल्लाह के खिलाफ़ हो तो बगावत है और यँ कुफ़्र है, और अगर यह इंसानों के खिलाफ़ हो तो इसे “उदवान” कहा जाता है यानि जुल्म और ज़्यादती। बहरहाल इन दोनों सतहों पर यह इन्तहाई नापसन्दीदा और मज़मूम ज़ब्बा है।

अगली चंद आयात मुश्किलातुल कुरान में से हैं। इनकी तफ़सीर के बारे में बहुत सी आरा (रायें) हैं जो सबकी सब यहाँ बयान नहीं की जा सकती। मैं यहाँ सिर्फ़ वह राय बयान करूँगा जिससे मुझे इत्तेफ़ाक़ है। मेरी राय के मुताबिक़ इन आयात में रुए सुखन अहले किताब की तरफ़ है। मक्की सूरतों में अगरचे अहले किताब से “या बनी इसराईल” या “या अहले किताब” के अल्फ़ाज़ से बराहेरास्त ख़िताब नहीं किया गया, लेकिन सूरतुल अनआम और इसके बाद (मक्की दौर के आख़री सालों में) नाज़िल होने वाली सूरतों में अहले किताब को बिल वास्ता अंदाज़ में मुखातिब करने का सिलसिला शुरू हो चुका था। इसकी वजह ये थी कि इस वक़्त तक मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ के दावा-ए-नबुवत के बारे में ख़बरें मदीना पहुँच चुकी थीं और यहूदे मदीना इन ख़बरों को सुन कर बहुत मुतजस्साना अंदाज़ में मज़ीद मालूमात की टोह में थे। उनमें से कुछ लोग तो नबी आखिरुज्ज़मान ﷺ को पहचान भी चुके थे और वह इस इंतेज़ार में थे कि मज़ीद मालूमात से आप ﷺ की नबुवत की तस्दीक़ हो जाए तो वह आप ﷺ पर ईमान ले आएँ। दूसरी तरफ़ यहूदे मदीना ही में से कुछ लोगों के दिलों में आप ﷺ के खिलाफ़ हसद की आग़ भड़क चुकी थी। इस क्रिस्म के लोग आप ﷺ की मुख़ालफ़त के लिये कुरैशे मक्का से मुसलसल राबते में थे और आपकी आज़माइश के लिये कुरैशे मक्का को मुख़्तलिफ़ क्रिस्म के सवालात भेजते रहते थे। इन सवालात में एक अहम सवाल ये भी था कि हज़रत इब्राहीम अलै. और हज़रत इस्हाक़ अलै. तो फ़लस्तीन में आबाद थे लेकिन उनकी औलाद यानि बनी इसराईल के लोग वहाँ से मिस्र कैसे पहुँचे? इनका यही सवाल था जिसके जवाब में पूरी सूरह युसुफ़ नाज़िल हुई थी। चुनाँचे यह वह मअरूज़ी (objective) सूरते हाल थी जिसकी वजह से मक्की दौर की आख़री सूरतों में कहीं-कहीं अहले किताब का ज़िक़्र भी मौजूद है और बिल वास्ता तौर पर उनसे ख़िताब भी है। इस पसमंज़र में मेरी राय यही है कि आइन्दा आयात में रुए सुखन अहले किताब की तरफ़ है।

आयत 91

“और अल्लाह के अहद को पूरा करो जबकि तुम अहद कर चुके हो”

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ

यहाँ बनी इसराईल का वह वादा मुराद है जिसकी तफ़सील बाद में मदनी सूरतों में आई। मदनी सूरतों में इनके इस अहद का बार-बार ज़िक़्र किया गया है: {وَأَذْكُرُوا مِيثَاقَكُمْ} (बक्ररह:63) यहाँ पर इस अहद की तफ़सील में जाए बग़ैर सिर्फ़ इसका तज़क़िरा कर दिया गया कि “आक़िलाँ रा इशारा काफ़ी अस्त।” मक़सद ये था कि बनी इसराईल के साहबाने इल्म व बसीरत बात को समझना चाहें तो समझ लें।

“और अपनी क़समों को मत तोड़ो मज़बूती से बाँधने के बाद, जबकि तुम अल्लाह को अपने ऊपर गवाह ठहरा चुके हो।”

وَلَا تَنْقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا

“यक़ीनन अल्लाह जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।”

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩١﴾

यानि यह अहद तुमने अल्लाह को गवाह बना कर और अल्लाह की क़समें खा कर बांधा हुआ है।

आयत 92

“और मत हो जाओ उस (दीवानी) औरत की मानिन्द जिसने अपना सूत तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला, मज़बूती (से कातने) के बाद।”

وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ
أَنكَاثًا

देखो तुम तो एक मुद्दत से नबी आखिरुज्जमान صلی اللہ علیہ وسلم के मुंतज़िर चले आ रहे थे और अहले अरब को इस हवाले से धमकाया भी करते थे कि नबी आखिरुज्जमान आने वाले हैं, जब वह तशरीफ़ ले आए तो हम उनके साथ मिलकर तुम लोगों पर ग़ालिब आ जायेंगे। अब जबकि वह नबी आ गए हैं तो तुम लोगों को क्या हो गया है कि तुम उनको झुठलाने के लिये बहाने ढूँढ रहे हो! तो क्या अब तुम लोग अपने मंसूबों और इफ़कार व नज़रियात के ताने बाने खुद अपने ही हाथों तार-तार कर देने पर तुल गए हो? क्या उस दीवानी औरत की तरह तुम्हारी भी मत मारी गई है जो बड़ी मेहनत और मशक्कत के साथ काते हुए अपने सूत की तार-तार उधेड़ कर रख दे?

“तुम अपनी क़समों को अपने माबैन दख़ल देने का ज़रिया बनाते हो ताकि ना हो जाए एक क़ौम बड़ी हुई दूसरी क़ौम से।”

تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ
أَرْبُ مِنْ أُمَّةٍ

यानि तुमने तो इस मामले को गोया दो क़ौमों का तनाज़ाअ बना लिया है। यह जानते हुए भी कि यह वही नबी صلی اللہ علیہ وسلم हैं जिनकी बशारत तुम्हारी किताब में मौजूद है, तुम आपस में अहद व पैमान कर रहे हो, क़समें खा रहे हो कि हम हरगिज़ आप صلی اللہ علیہ وسلم पर ईमान नहीं लायेंगे। तुम्हारी इस हठधर्मी की वजह इसके सिवा और कोई नहीं कि तुम क़ौमी अस्वियत में मुब्तला हो चुके हो। चूँकि इस आख़री नबी صلی اللہ علیہ وسلم का ताल्लुक बनी इस्माईल यानि उम्मिय्यीन से है, इसलिये तुम लोग नहीं चाहते कि बनी इस्माईल अब वैसी ही फज़ीलत हासिल हो जाए जो पिछले दो हज़ार साल से तुम लोगों को हासिल थी।

“यक़ीनन अल्लाह तुम्हें आज़मा रहा है इसके ज़रिये से।”

إِنَّمَا يَبْتَلُواكُمُ اللَّهُ بِهِ

इसमें तुम्हारी आज़माइश है। अल्लाह तआला देखना चाहता है कि तुम लोग हक़परस्त हो या नस्लपरस्त? अगर तुम लोग इस मामले में नस्लपरस्ती का सबूत देते हो तो जान लो कि अल्लाह से तुम्हारा कोई ताल्लुक नहीं और अगर हक़परस्त बनना चाहते हो तो तुम्हें सोचना चाहिये कि एक मुद्दत तक अल्लाह तआला ने नबुवत तुम्हारी नस्ल में रखी और अब अल्लाह तआला ने बनी इस्माईल के एक फ़र्द को इसके लिये चुन लिया है। लिहाज़ा इसे अल्लाह का फ़ैसला समझते हुए कुबूल कर लेना चाहिये। तुम्हें यह भी सोचना चाहिये कि बनी इस्माईल भी तो आख़िर तुम्हारी ही नस्ल में से हैं। वह भी तुम्हारे ज़द्दे अमजद हज़रत इब्राहीम अलै. ही की औलाद हैं मगर तुम लोग हो कि तुमने इस मामले को बाहमी मुखासमत और ज़िद {بَغْيًا بَيْنَكُمْ} की भेंट चढ़ा दिया है और इस तरह तुम लोग अल्लाह की इस आज़माइश में नाकाम हो रहे हो।

“और वह ज़रूर ज़ाहिर करेगा तुम पर क़यामत के दिन वह सब कुछ जिसमें तुम लोग इख़िलाफ़ करते थे।”

وَلَيَبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ

(9)

आयत 93

“और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक ही उम्मत बना देता”

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً

अल्लाह तआला यह भी कर सकता था कि पूरी इंसानियत को एक ही उम्मत बना देता ताकि नस्लों और क़ौमों की ये तफ़रीक़ ही ना होती और ना ही एक उम्मत को माज़ूल (सुस्पेंड) करके दूसरी उम्मत को नवाज़ने की ज़रूरत पेश आती। फिर जिस अल्लाह ने बख़्तनसर के हाथों तुम्हारी बरबादी के बाद हज़रत उज़ैर अलै. की दावते तौबा के ज़रिये तुम्हारी नशाअत-ए-सानिया की थी, वह यह भी कर सकता था कि एक दफ़ा फिर किसी इस्लाही तहरीक के ज़रिये तुम्हें अपनी

हिदायत और रहमत से नवाज़ देता। इस तरह आखरी नबी भी तुम ही में आते और ये कुरान भी तुम ही को मिलता। अगर अल्लाह को मंज़ूर होता तो ये सब कुछ मुमकिन था।

“लेकिन वह गुमराह करता है जिसे चाहता है और हिदायत देता है जिसे चाहता है।”

وَلَكِنْ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ

आयत के इस हिस्से का एक तर्जुमा ये भी है कि “वह गुमराह करता है उसे जो (गुमराही) चाहता है और हिदायत देता है उसे जो (हिदायत) चाहता है।”

“और तुमसे ज़रूर पूछा जाएगा उस बारे में जो कुछ तुम करते थे।”

وَلَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾

यानि इस वक़्त तुम लोग एक बहुत बड़े इम्तिहान से दो-चार हो। तुम्हारे पास नबी आखिरुज्ज़मान صلی اللہ علیہ وسلم के बारे में वाज़ेह निशानियों के साथ इल्म आ चुका है और तुम अल्लाह की किताब के वारिस भी हो। इसके बावजूद अगर तुमने हमारे नबी صلی اللہ علیہ وسلم की तस्दीक ना की और आपको झुठलाने पर तुले रहे तो इस बारे में तुमसे ज़रूर जवाब तलबी होगी।

अब जरा सूरतुल बक्ररह की इन आयात तो ज़हन में ताज़ा कीजिये:

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰتَيْنَا الْكِتٰبَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِ اللّٰهِ الَّتِيْ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ اُوْفٍ بِعَهْدِكُمْ ۖ وَاٰتٰى فَاَرْهَبُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَاٰتٰى فَاَرْهَبُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَمَا اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْا اَوَّلَ كٰفِرٍ بِهٖ ۚ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا وَاٰتٰى فَاَتَّقُوْنَ ﴿٩٧﴾ وَلَا تَلْبِسُوْا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾

“ऐ बनी इसराईल! याद करो तुम मेरी वो नेअमत जो मैंने तुम पर ईनाम की, और पूरा करो मेरा अहद, मैं पूरा करूंगा तुम्हारे (साथ किये गए) अहद को और मुझ ही से डरो। और ईमान लाओ उस किताब पर जो मैंने नाज़िल की है, जो तस्दीक करते हुए आई है उस किताब की जो तुम्हारे पास है, और मत हो जाओ तुम ही सबसे पहले इसका कुफ़्र करने वाले, और मत बेचो मेरी आयात तो थोड़ी सी कीमत के एवज़ और मेरा ही तक्रवा इख्तियार करो। और ना मिलाओ हक़ को बातिल के साथ और ना छुपाओ हक़ को जानते बूझते।”

इन आयात को पढ़ कर यही महसूस होता है कि यहाँ सूरतुल नहल में जो बात से शुरू हुई है यह गोया तम्हीद है उस मज़मून की जो सूरतुल बक्ररह की मन्दर्जा वाला आयात की शक़ल में मदीना जाकर नाज़िल होने वाला था।

आयत 94

“और मत बनाओ अपनी क़समों को अपने दरमियान धोखे का ज़रिया कि फ़िसल जाए कोई क़दम पुख़्तगी के बाद”

وَلَا تَتَّخِذُوا اٰیْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَرِلَ قَدَمٌ

بَعْدَ ثُبُوْتِهَا

देखो हक़ीक़त ये है कि तुम हमारे नबी صلی اللہ علیہ وسلم को अच्छी तरह पहचान चुके हो: {يَعْرِفُوْنَہٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اٰیْمَانَهُمْ} (सूरतुल बक्ररह 146) अब इस हालत में अगर तुम फिसलोगे तो याद रखो सीधे जहन्नम की आग में जाकर गिरोगे: {فَاَنْهَارٍۭہٗ فِیْ نَارٍ}

{جَهَنَّمَ} (सूरह तौबा:109)

“और तुम्हें अज़ाब का मज़ा चखना पड़े बसबब इसके कि तुमने (लोगों को) रोका अल्लाह के रास्ते से, और तुम्हारे लिये (इसकी पादाश में) बहुत बड़ा अज़ाब है।”

وَتَذُقُوْا الشَّوْءَ بِمَا صَدَدْتُمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَكُمْ

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٩٩﴾

तुम्हें तो चाहिये था कि सबसे पहले खड़े होकर गवाही देते कि हमने मोहम्मद صلی اللہ علیہ وسلم को अपनी किताब में दी गई निशानियों से ठीक-ठीक पहचान लिया है, आप صلی اللہ علیہ وسلم वाकई अल्लाह के रसूल हैं। और तुम्हें नसीहत भी की गई थी: {وَلَا تَكُوْنُوْا اَوَّلَ كٰفِرٍ بِهٖ} (सूरतुल बक्ररह: 41) “और तुम इसके पहले मुन्किर ना बन जाना।” इस सब कुछ के बावजूद तुम लोग इस

गवाही को छुपा रहे हो: {وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ} (सूरतुल बक्ररह:140) “और उस शख्स से बढ़ कर कौन ज़ालिम होगा जिसने छुपाई वह गवाही जो उसके पास है अल्लाह की तरफ़ से!”

आयत 95

“और अल्लाह के उस अहद को हक़ीर सी कीमत के एवज़ फ़रोख़्त ना करो।”

وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا

“यक़ीनन अल्लाह के पास जो कुछ है वह बहुत बेहतर है तुम्हारे लिये अगर तुम इल्म रखते हो।”

إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩٥﴾

तुम्हें दुनिया के छोटे-छोटे मफ़ादात बहुत अज़ीज़ हैं और इन हक़ीर मफ़ादात के लिये तुम लोग अल्लाह की हिदायत को ठुकरा रहे हो, मगर तुम्हें मालूम होना चाहिये कि अगर तुम लोग इस हिदायत तो कुबूल कर लोगे तो अल्लाह के यहाँ उखरवी ईनामात से नवाज़े जाओगे। अल्लाह के यहाँ जन्नत की दाइमी नेअमतें तुम्हारे इन मफ़ादात के मुक़ाबले में कहीं बेहतर हैं जिनके साथ तुम लोग आज चिमटे हुए हो।

आयत 96

“जो तुम्हारे पास है वह ख़त्म हो जाएगा और जो अल्लाह के पास है वह बाक़ी रहने वाला है।”

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ

“और हम लाज़िमन देंगे सब्र करने वालों को उनका अज़्र उनके बेहतरीन अमाल के मुताबिक़।”

وَلَنَجْزِيَنَّهُ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا

يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

हर नेकोकार शख्स के तमाम आमाल एक दर्जे के नहीं होते, कोई नेकी आला दर्जे की होती है और कोई निस्वतन छोटे दर्जे की। मगर जिन लोगों से अल्लाह तआला खुश हो जायेंगे, उनकी आला दर्जे की नेकियों को सामने रख कर उनके अज़्र व सवाब का तअय्युन किया जाएगा।

आयत 97

“जिस किसी ने भी नेक अमल किया, ख़वाह वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि हो वह मोमिन तो हम उसे (दुनिया में) एक पाकीज़ा ज़िंदगी बसर करायेंगे।”

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ

فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيٰوةً طَيِّبَةً

ऐसे लोग बेशक दुनिया में रूखी-सूखी खाकर गुज़ारा करें मगर इन्हें सुकूने क़ल्ब की दौलत नसीब होगी, इन लोगों के दिल गनी होंगे, क्योंकि हुज़ूर ﷺ का फ़रमान है: ((الْغِنَى غِنَى النَّفْسِ))⁽¹⁵⁾ कि असल अमीरी तो दिल की अमीरी है। अगर इंसान का दिल गनी है तो इंसान वाक़िअतन गनी है और अगर ढेरों दौलत पाकर भी दिल लालच के फंदे में गिरफ़्तार है तो ऐसा शख्स दरअसल गनी या अमीर नहीं, फ़क़ीर है। चुनाँचे नेकोकार इंसानों को दुनयवी ज़िन्दगी में ही गिना और सुकूने क़ल्ब की नेअमत से नवाज़ा जाएगा, क्योंकि ये नेअमत तो समरह (फल) है अल्लाह की याद का: {الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ تَظَاهِيرُ الْقُلُوبِ} (सूरह रअद 28) “आगाह रहो! दिल तो अल्लाह के ज़िक़्र ही से मुत्मईन होते हैं।” ऐसे लोगों का शुमार अल्लाह के दोस्तों और औलिया में होता है। इनके साथ खुसूसी शफ़क़त का मामला फ़रमाया जाता है और इन्हें हुज़्न व मलाल के सायों से महफूज़ रखा जाता है: {الَّذِينَ أُؤْتُوا اللَّهَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ} (युनुस 62) “आगाह रहो! यक़ीनन औलिया अल्लाह पर ना कोई ख़ौफ़ होगा और ना वह ग़मगीन होंगे।”

“और (आखिरत में) हम उन्हें जरूर देंगे उनके अज्र, उनके बेहतरीन आमाल के मुताबिक।”

وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٧﴾

आयत 98

“तो जब आप कुरान पढ़ें तो अल्लाह की पनाह तलब कर लीजिये शैताने मरदूद से।”

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ

الرَّجِيمِ ﴿٩٨﴾

इस हुक्म की रू से कुरान की तिलावत शुरू करने से पहले अऊज़ुबिल्लाही मिनाशशयतानिर्रजीम पढ़ना जरूरी है।

आयत 99

“उसका कुछ भी ज़ोर नहीं चलता उन लोगों पर जो ईमान लाए हैं और जो अपने रब पर तवक्कुल करते हैं।”

إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطَانٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَى رَبِّهِمْ

يَتَوَكَّلُونَ ﴿٩٩﴾

आयत 100

“उसका ज़ोर तो उन्हीं लोगों पर चलता है जो उससे दोस्ती करते हैं और जो उसको (अल्लाह के साथ) शरीक ठहराने वाले हैं।”

إِنَّمَا سُلْطَانُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِينَ هُمْ بِهِ

مُشْرِكُونَ ﴿١٠٠﴾

शैतान का ज़ोर उन्हीं लोगों पर चलता है जो उसको अपना रफ़ीक़ और सरपरस्त बना लेते हैं और अल्लाह की इताअत के बजाए उसकी इताअत करते हैं। गोया उसको अल्लाह के साथ शरीक ठहरा लेते हैं, या उसके बहकाने से दूसरी हस्तियों को अल्लाह का शरीक बना लेते हैं।

आयात 101 से 111 तक

وَإِذَا بَدَّلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنْزِلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتَرٍ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾ قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ
الْقُدُسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَى لِلْمُسْلِمِينَ ﴿١٠٢﴾ وَلَقَدْ عَلَّمَهُ إِنَّمَا يَعْلَمُهُ
بَشَرٌ لِّسَانُ الَّذِي يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْجَبِي وَهَذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُبِينٌ ﴿١٠٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمْ
اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾ إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْكَذِبُونَ ﴿١٠٥﴾ مَنْ كَفَرَ
بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أَكْرَهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ
وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٦﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿١٠٧﴾
أُولَئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَصَمَّوْهُمْ وَأَبْصَارِهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٠٨﴾ لَا جَرَمَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمْ
الْخَسِرُونَ ﴿١٠٩﴾ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا فُتِنُوا ثُمَّ جَاهَدُوا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١٠﴾
يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَفْسِهَا وَتُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١١١﴾

आयत 101

“और जब हम बदलते हैं एक आयत की जगह दूसरी आयत”

وَإِذَا بَدَّلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ

कबल अज़ यह मज़मून सूरतुल बक्ररह (आयत : 106) में बयान हो चुका है: {مَا نُنَسِّخُ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِنْهَا أَوْ مِثْلٍهَا}। चुनाँचे सूरतुल बक्ररह के मुताअले के दौरान इस आयत के तहत इस मज़मून की वज़ाहत भी हो चुकी है।

“और अल्लाह ख़ूब जानता है जो वह नाज़िल करता है”

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنْزِلُ

कुरान का नुज़ूल अल्लाह तआला की हिकमत और मशियत के ऐन मुताबिक़ हो रहा है। अगर कोई मखसूस हुक्म किसी एक दौर के लिये था और फिर बदले हुए हालात में उस हुक्म में तब्दीली की ज़रूरत है तो यह सब कुछ अल्लाह के इल्म के मुताबिक़ है और किसी ख़ास ज़रूरत और हिकमत के तहत ही किसी हुक्म में तब्दीली की जाती है। मगर ऐसी तब्दीली को देखते हुए:

“ये (मुशरिकीन) कहते हैं कि आप खुद ही (इसे) गढ़ने वाले हैं”

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتَرٍ

कि पहले यूँ कहा गया था, अब इसे बदल कर यूँ कह रहे हैं। अगर यह अल्लाह का कलाम होता तो इसमें इस तरह की तब्दीली कैसे मुमकिन थी?

“बल्कि इनमें से अक्सर इल्म नहीं रखते।”

بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

हक्कीकत ये है कि इनकी अक्सरियत इल्म से आरी है।

आयत 102

“आप कहिये कि इसे नाज़िल किया है रुहुल कुदुस ने आपके रब की तरफ़ से हक़ के साथ”

قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ

यहाँ पर रुहुल कुदुस का लफ़्ज़ हज़रत ज़िबराईल अलै. के लिये आया है कि एक पाक फ़रिश्ता इस कलाम को लेकर आया है।

“ताकि वह साबित क़दम रखे अहले ईमान को”

لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا

सूरतुल फुरक़ान (आयत 32) में यही मज़मून इस तरह बयान किया गया है: {كَذَلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنَاهُ تَرْتِيلًا} “ताकि हम मज़बूत करें इसके साथ आपके दिल को और (इसी लिये) हमने पढ़ सुनाया इसे ठहर-ठहर कर।”

“और ये हिदायत और खुशख़बरी हो फ़रमाबरदारों के लिये।”

وَهُدًى وَبُشْرَى لِلْمُسْلِمِينَ ۝

जैसे-जैसे हालात में तब्दीली आ रही है, वैसे-वैसे इस कुरान के ज़रिये मुसलमानों ले लिये हिदायत व रहनुमाई का अहतमाम किया जा रहा है। मसलन क्रिस्सा आदम व इब्लीस जब पहली दफ़ा बयान किया गया तो इसमें वह तफ़सीलात बयान की गई जो उस वक़्त के मखसूस मअरूज़ी हालात में हुज़ूर ﷺ और मुसलमानों के लिये जानना ज़रूरी थीं। फिर जब हालात में तब्दीली आई तो यही क्रिस्सा कुछ मज़ीद तफ़सीलात के साथ फिर नाज़िल किया गया इसी असूल और ज़रूरत के तहत इसका नुज़ूल बार-बार हुआ ताकि हर दौर के हालात के मुताबिक़ अहले हक़ इसमें से अपनी रहनुमाई के लिये सबक़ हासिल कर सकें।

आयत 103

“और हमें खूब मालूम है कि वह कहते हैं कि इसको तो एक इंसान सिखाता है।”

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ

मुशरिकीन रसूल अल्लाह ﷺ पर एक इल्ज़ाम यह लगा रहे थे कि आपने किसी अज्मी गुलाम को या अहले किताब में से किसी आदमी को अपने घर में छुपा रखा है, जो तौरात का आलिम है। उससे आप ये सारी बातें सीखते हैं और फिर वही के नाम पर हमें सुनाते हैं और हम पर धौंस जमाते हैं।

“ये लोग जिसकी तरफ़ गलत तौर पर मंसूब कर रहे हैं उसकी ज़बान तो (इनके बक्रौल) अज्मी है और यह (कुरान) फ़सीह अरबी ज़बान है।”

لِسَانَ الدِّمِيِّ يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ عَجَبٌ وَهَذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ

مُبَيِّنٌ ﴿١٠٣﴾

चुनाँचे यह इल्ज़ाम लगाते हुए इनको खुद सोचना चाहिये कि कोई अज्मी ऐसी फ़सीह व बलीग़ अरबी ज़बान कैसे बोल सकता है!

आयत 104

“यक्रीनन जो लोग अल्लाह की आयात पर ईमान नहीं रखते, अल्लाह उन्हें हिदायत नहीं देगा और उनके लिये दर्दनाक अज़ाब है।”

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ

وَأَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾

अल्लाह का यह तरीक़ा नहीं कि किसी को ज़बरदस्ती खींच कर हिदायत की तरफ़ ले आए।

आयत 105

“झूठ तो वही लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयात पर ईमान नहीं रखते, और वही लोग हैं जो झूठे हैं।”

إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ

وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَذِبُونَ ﴿١٠٥﴾

आयत 106

“और जो कोई कुफ़्र करे अल्लाह का अपने ईमान लाने के बाद”

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ

इसका इतलाक़ ईमान की दोनों कैफ़ियतों पर होगा। एक यह कि दिल में ईमान आ गया, बात पूरी तरह दिल में बैठ गई, दिल में यक्रीन की कैफ़ियत पैदा हो गई कि हाँ यही हक़ है मगर ज़बान से अभी इक़्रार नहीं किया। ईमान की दूसरी कैफ़ियत ये है कि दिल भी ईमान ले आया और ज़बान से ईमान का इक़्रार भी कर लिया। चुनाँचे इन दोनों दर्जों में से किसी भी दर्जे में अगर इंसान ने हक़ को हक़ जान लिया, दिल में यक्रीन पैदा हो गया मगर फिर किसी मस्लहत का शिकार हो गया और हक़ का साथ देने से कन्नी कतरा गया तो इस पर इस हुक्म का इतलाक़ होगा।

“सिवाय इसके कि कोई शख्स मजबूर कर दिया गया हो और उसका दिल ईमान पर जमा हुआ हो”

إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ

किसी की जान पर बनी हुई थी और इस हालत में कोई कलमा-ए-कुफ़्र उसकी ज़बान से अदा हो गया, मगर उसका दिल ब-दस्तूर हालाते ईमान में मुत्मईन रहा तो ऐसा शख्स अल्लाह के यहाँ माज़ूर समझा जाएगा।

“मगर जिसने खोल दिया कुफ़्र के साथ (अपना) सीना तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का गज़ब है, और उनके लिये बहुत बड़ा अज़ाब है।”

وَلَكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٧﴾

ऊपर बयान किये गए इस्तशना के मुताबिक मजबूरी की हालत में तो कलमा-ए-कुफ़्र कहने वाले को तो माफ़ कर दिया जाएगा (बशर्ते कि उसका दिल ईमान पर पूरी तरह मुत्मईन हो) मगर जो शख्स किसी वजह से पूरे शरह-ए-सद्र के साथ कुफ़्र की तरफ़ लौट गया, वह अल्लाह के गज़ब और बहुत बड़े अज़ाब का मुस्तहिक़ हो गया।

आयत 107

“ये इसलिये कि इन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी को महबूब रखा आख़िरत के मुक़ाबले में”

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ

“और ये (अल्लाह का कायदा है) कि अल्लाह ऐसे काफ़िरों को हिदायत नहीं दिया करता।”

وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿١٠٨﴾

आयत 108

“ये वह लोग हैं जिनके दिलों, कानों और आँखों पर अल्लाह ने मोहर कर दी है।”

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ

“और यही लोग हैं जो गाफ़िल हैं।”

وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٠٩﴾

आयत 109

“अब इसमें कोई शक नहीं कि यही लोग हैं जो आख़िरत में खसारे वाले होंगे।”

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخَسِرُونَ ﴿١١٠﴾

ये वह लोग हैं जो दुनियावी ज़िन्दगी की मोहब्बत में हक़ से मुहँ मोड़ कर ग़फलत में डूबे हुए हैं। अब इनके इस तर्ज़े अमल का मन्तक़ी नतीजा यह होगा कि आख़िरत की भलाइयों में इनके लिये कोई हिस्सा नहीं होगा।

अगली आयत में फिर हिजरत का ज़िक्र आ रहा है, जो इससे पहले आयत 41 में भी आ चुका है।

आयत 110

“फिर यक़ीनन आपका रब इनके हक़ में जिन्होंने हिजरत की, इसके बाद कि इन्हें तकलीफ़ पहुँचाई गई, फिर इन्होंने जिहाद किया और सन्न किया, यक़ीनन आपका रब इस (सब कुछ) के बाद बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।”

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِن بَعْدِ مَا فُتِنُوا ثُمَّ جَاهَدُوا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ

﴿١١١﴾

जिन मोमिनीन पर मक्के में मसाएब (मुसीबतों) के पहाड़ तोड़े गए, इन हालात में उन्होंने हिजरत की, फिर वह जिहाद भी करते रहे, इस तरह राहे हक़ में आने वाली आज़माइशों के तमाम मराहिल उन्होंने कमाल सन्न से तय किये, अल्लाह तआला

उन्हें उनकी इन कुर्बानियों और सरफरोशियों का ज़रूर अज्र देगा। उन्हें बख्शीश अता फ़रमाएगा और उनकी तरफ़ नज़रे रहमत फ़रमाएगा।

आयत 111

“जिस दिन आएगी हर जान अपनी तरफ़ से मदाफ़अत (बचाव) करते हुए”

يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ مُّجَادِلٌ عَنْ نَفْسِهَا

रोज़े क़यामत हर शख्स चाहेगा कि किसी ना किसी तरह जहन्नम की सज़ा से उसकी जान छूट जाए। लिहाज़ा इसके लिये वह मुख्तलिफ़ उज़्र पेश करेगा।

“और (बदले में) पूरा-पूरा दिया जाएगा हर जान को जो कुछ उसने कमाया होगा और उन पर ज़रा भी जुल्म नहीं किया जाएगा।”

وَتُؤْفَىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١١١﴾

आयत 112 से 119 तक

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُّطَهَّرَةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١١٢﴾ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١١٣﴾ فَكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِمْ إِذَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۖ وَاشْكُرُوا لِنِعْمَتِ اللَّهِ إِنَّ كُفْرَ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١١٤﴾ إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۖ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١٥﴾ وَلَا تَقُولُوا الْبَاطِلَ تَصِفُ السِّنْتَ كُفْرًا ۚ هَذَا حَلَلٌ ۖ وَهَذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿١١٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١٧﴾ وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٨﴾ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا الشُّوْءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١٩﴾

आयत 112

“और अल्लाह ने मिसाल बयान की है एक बस्ती की जो बिल्कुल अमन व इत्मिनान की हालत में थी, आता था उसके पास उसका रिज़क बा-फ़रागत हर तरफ़ से”

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُّطَهَّرَةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِنْ كُلِّ مَكَانٍ

“तो उसने नाशुकरी की अल्लाह की नेअमतों की, तो उसे चखा (पहना) दिया अल्लाह ने लिबास भूख और खौफ़ का, उनके करतूतों की पादाश में।”

فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١١٢﴾

इस तम्सील के बारे में मुख्तलिफ़ आराअ हैं। एक राय तो ये है कि यह एक आम तम्सील है और किसी ख़ास बस्ती के मुताल्लिक़ नहीं। कुछ मुफ़्फ़सरीन का ख़याल है कि ये क़ौमे सबा की मिसाल है जिसके बारे में तफ़सील आगे चल कर सूरह सबा में आएगी। एक तीसरी राय ये है कि इस मिसाल के आईने में मक्का और अहले मक्का का ज़िक्र है कि ये शहर हमेशा से अमन व सुकून का गह्वारा चला आ रहा था और यहाँ अहले मक्का की तिजारती सरगरमियों और हज़ व उमरे के इज्जताआत

के बाइस खुशहाली और फ़ारिगुल बाली भी थी। दुनिया भर से अनवाअ व अक़साम का रिज़क़ फ़रावानी से इनके पास चला आता था, मगर हुज़ूर ﷺ की बेअसत के बाद आपकी दावत का इन्कार करने की पादाश में इस शहर के बाशिंदों पर क़हत का अज़ाब मुसल्लत कर दिया गया था। मक्का में ये क़हत उसी क़ानूने खुदावन्दी के तहत आया था जिसका ज़िक़्र सूरतुल अनआम की आयत 42 और सूरतुल आराफ़ की आयत 94 में हुआ है। इस असूल या क़ानून के तहत हर रसूल की बेअसत के बाद मुतालक़ा क़ौम पर छोटे-छोटे अज़ाब आते हैं ताकि उन्हें ख़्वाबे ग़फ़लत से जागने और संभलने का मौक़ा मिल जाए और वह रसूल पर ईमान लाकर बड़े अज़ाब से बच जाएँ।

तावीले ख़ास के ऐतबार से इस मिसाल में यक़ीनन मक्का ही की तरफ़ इशारा है मगर इसकी अमूमी हैसियत भी मद्दे नज़र रहनी चाहिये कि कोई बस्ती भी इस क़ानूने खुदावन्दी की ज़द में आ सकती है। जैसे पाकिस्तान के उरुसुल बिलाद कराची के हालात की मिसाल हमारे सामने है। एक वक़्त वह था जब कराची में अमन व अमान, वासाइले रिज़क़ की फ़रावानी और खुशहाली की कैफ़ियत मुल्क भर के लोगों के लिये बाइसे क़शिश थी, मगर फिर देखते ही देखते ये शहर वही नक़शा पेश करने लगा जिसकी झलक इस आयत में दिखाई गई है। यानि कुफ़्राने नेअमत की पादाश में अल्लाह तआला ने इसके बाशिंदों को भूख और ख़ौफ़ का लिबास पहना दिया।

आयत 113

“और आया इनके पास एक रसूल इन्ही में से तो इन्होंने उसको झुठला दिया, पस आ पकड़ा इन्हें अज़ाब ने और वह खुद ही ज़ालिम थे।”

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١١٣﴾

आयत 114

“पस (ऐ अहले ईमान) तुम खाया करो उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें रिज़क़ दिया है हलाल और पाकीज़ा चीज़ें”

فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا

“और अल्लाह की नेअमत का शुक्र अदा करो अगर तुम वाक़िअतन उसी की बन्दगी करते हो।”

وَأَشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿١١٤﴾

नोट कीजिये कि अल्लाह की नेअमतों का ज़िक़्र मुख्तलिफ़ अंदाज़ में बार-बार इस सूरत में आ रहा है।

आयत 115

“उसने तो बस हराम किया है तुम पर मुर्दार, खून, खंज़ीर का गोश्त और वह चीज़ जिस पर नाम पुकारा जाए अल्लाह के सिवा किसी और का।”

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ

“फिर जो कोई मजबूर हो जाए, (लेकिन) ना वह तालिब हो, ना हद से बढ़ने वाला, तो यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।”

فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١٥﴾

यानि इन्तहाई मजबूरी की हालत में, जान बचाने के लिये वक़्ती तौर पर बक़द्रे ज़रूरत इन हराम अशिया को इस्तमाल में लाकर जान बचाई जा सकती है, मगर ना तो दिल में इनकी तलब हो, ना अल्लाह से सरकशी का इरादा, और ना ही ऐसी हालत में वह चीज़ ज़रूरत से ज़्यादा खाई जाए।

आयत 116

“और मत कहो जिसके मुताल्लिक तुम्हारी ज़बानें झूठ गढ़ती हैं कि ये हलाल है और ये हाराम है”

وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هَذَا حَلَلٌ
وَهَذَا حَرَامٌ

हलाल और हाराम का फैसला करने का हक सिर्फ़ अल्लाह तआला को है। यह एक संजीदा मामला है, इसलिये इस बारे में ग़ैर-मोहतात रवैया इख्तियार नहीं करना चाहिये कि बग़ैर इल्म, दलील और सनद के जो मुहँ में आया कह दिया।

“ताकि तुम अल्लाह की तरफ़ झूठ मंसूब करो।”

لِيَتَفَتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ

“यक़ीनन जो लोग अल्लाह की तरफ़ झूठ मंसूब करते हैं वह फ़ला नहीं पायेंगे।”

إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿١١٧﴾

आयत 117

“बरतने का सामान है (दुनियावी ज़िंदगी में) थोड़ा सा, और फिर इन लोगों के लिये दर्दनाक अज़ाब है।”

مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١٨﴾

आयत 118

“और उन लोगों पर जो यहूदी हुए हमने हाराम की थीं (वह चीज़ें) जो हम बयान कर चुके हैं आप पर इससे पहले।”

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَمًا مَّا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ
قَبْلُ

इस बारे में तफ़सील सूरह आले इमरान 93, निसा 140 और अल अनआम 146 में गुज़र चुकी है। हज़रत याक़ूब अलै. ने अपनी मर्ज़ी से अपने ऊपर ऊँट का गोश्त हाराम कर लिया था, जिसकी तामील बाद में वह पूरी क़ौम करती रही। इसके अलावा मुख्तलिफ़ हैवानात की चर्बी भी बनी इसराइल पर हाराम कर दी गई थी।

“और हमने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वह खुद अपनी जानों पर जुल्म ढहाते रहे।”

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٩﴾

आयत 119

“फिर यक़ीनन आपका रब इन लोगों के हक़ में जो जहालत से कोई बुरा काम कर बैठें, फिर इसके बाद वह तौबा कर लें और इस्लाह कर लें, तो यक़ीनन आपका रब इसके बाद बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है।”

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِنْ
بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿١٢٠﴾

जो लोग जज़्बात की रू में बहकर या नादानी में कोई गुनाह कर बैठें, फिर तौबा करके अपनी इस्लाह कर लें और ग़लत रविश से बाज़ आ जाएँ तो ऐसे लोगों के हक़ में अल्लाह तआला ज़रूर गफ़ूर व रहीम है।

आयात 120 से 128 तक

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ شَاكِرًا لِأَنْعُمِهِ إِجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَاتَّبَعَهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ۝ ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ إِمَّا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ أَدْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝ وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِلصَّابِرِينَ ۝ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَلَالٍ مِمَّنْ يَمْكُرُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ ۝

आयत 120

“यक्रीनन इब्राहीम एक उम्मत थे, अल्लाह के लिये फ़रमाबरदार और यक्सु, और आप अलै. मुशरिकीन में से नहीं थे।”

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

उम्मत के लुग्वी मायने क़सद करने के हैं। सूरह युसुफ़ (आयत 45) में उम्मत का लफज़ वक़्त और मुद्दत के लिये भी इस्तेमाल हुआ है {وَأَذْكُرْ بَعْدَ ذَلِكَ}। वक़्त और ज़माने के भी हम पीछे चलते हैं तो गोया इसका क़सद करते हैं। इसी तरह रास्ते पर चलते हुए भी इंसान इसका क़सद करता है। इस हवाले से लफज़ उम्मत वक़्त और रास्ते के लिये भी इस्तेमाल होता है। इसी तरह जब बहुत से लोग एक नज़रिये का क़सद करके इकट्ठा हो जाएँ तो उन्हें भी उम्मत कहा जाता है, यानि हम-मक़सद लोगों की जमात। चुनाँचे इसी मायने में सूरह बकरह में फ़रमाया गया है: {وَكُذِّبَكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ} (आयत 143)। इस लिहाज़ से आयत ज़ेरे नज़र में उम्मत का मफ़हूम ये होगा कि हज़रत इब्राहीम अलै. एक रास्ता बनाने वाले, और एक रेत डालने वाले थे, और इस तरह आप अपनी ज़ात में गोया एक उम्मत थे। जब दुनिया में कोई मुसलमान ना था और पूरी दुनिया कुफ़्र के रास्ते पर ग़ामज़न थी तो आप तने-तन्हा इस्लाम के अलम्बरदार थे।

आयत 121

“शुक्रगुज़ार थे उसकी नेअमतों के। अल्लाह ने उनको पसंद कर लिया था और उनको हिदायत दी थी सीधी राह की तरफ़।”

شَاكِرًا لِأَنْعُمِهِ إِجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

(121)

आयत 122

“और उनको हमने दुनिया में भी भलाई अता की थी, और यक्रीनन आख़िरत में भी वह नेक बन्दों में से होंगे।”

وَاتَّبَعَهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ۝

आयत 123

“फिर (ऐ मोहम्मद ﷺ) हमने वही की आपकी तरफ़ कि पैरवी कीजिये मिल्लते इब्राहीम की यक्सु होकर, और वह हरगिज़ मुशरिकीन में से ना थे।”

ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٤﴾

आयत 124

“हफ़्ते का दिन तो उन्हीं लोगों के लिये मुअययन किया गया था जिन्होंने इसमें इख़्तिलाफ़ किया था।”

إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ

दरअसल बनी इसराईल के लिये अल्लाह तआला ने इबादत के लिये जुमे का दिन ही मुकरर फ़रमाया था, मगर उन्हीं ने अपनी शरारत की वजह से इसकी नाक़द्री की और इसे छोड़ कर हफ़्ते का दिन इख़्तियार कर लिया। चुनाँचे बाद में अल्लाह तआला ने उनके लिये इस हैसियत में हफ़्ते का दिन ही मुकरर कर दिया।

“और यक़ीनन आपका रब उनके माबैन फ़ैसला करेगा क़यामत के दिन उन चीज़ों में जिनमें वह इख़्तिलाफ़ करते थे।”

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٢٥﴾

आयत 125

“आप दावत दीजिये अपने रब के रास्ते की तरफ़ दानाई और अच्छी नसीहत के साथ”

ادْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ

ये दावत इलल हक़ का तरीक़ा और इसके आदाब का ज़िक़र है, जैसा कि सूरह यूसुफ़ में फ़रमाया गया है: {قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي أَدْعُوُا} (आयत 108) “(ऐ नबी ﷺ) आप कह दीजिये कि ये मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ़ बुला रहा हूँ पुरी बसीरत के साथ, मैं खुद भी और मेरे पैरोकार भी (इस रास्ते पर गामज़न हैं)।”

“और इनसे बहस कीजिये बहुत अच्छे तरीक़े से।”

وَجَادِلْهُمْ بَالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ

“यक़ीनन आपका रब ख़ूब वाकिफ़ है उनसे जो उसके रास्ते से भटक गए हैं और वह ख़ूब जानता है उनको भी जो राहे हिदायत पर हैं।”

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١٢٦﴾

अपने मौजू के हवाले से ये बहुत अज़ीम आयत है। इसमें इंसानी मआशरे के अन्दर इंसानों की तीन बुनियादी अक़साम के हवाले से दावते दीन के तीन मदारज बयान किये गए हैं, मगर आमतौर पर इस आयत का तरजुमा और तशरीह करते हुए इस पहलु को उजागर नहीं किया जाता।

किसी भी मआशरे में इल्म व दानिश की बुलंद तरीन सतह पर वह लोग होते हैं जिन्हें उस मआशरे का दानिशवर तबक्रा (intelligentsia) या ज़हीन अक़लियत (intellectual minority) कहा जाता है। इस तबक़े की हैसियत उस मआशरे या क़ौम के दिमाग़ की सी होती है। ये लोग अगरचे तादाद के लिहाज़ से बहुत छोटी अक़लियत पर मुश्तमिल होते हैं मगर किसी मआशरे की मज्मुई सोच और उसके मिज़ाज का रुख़ मुतअय्यन करने में उनका किरदार या हिस्सा फ़ैसलाकुन हैसियत का हामिल होता है। इन लोगों को ज़ज़्बाती तक्रारीर और खुशकुन वअज़ मुतास्सिर नहीं कर सकते, बल्कि ऐसे लोग किसी सोच या नज़रिये को कुबूल करते हैं तो मुसद्क़ा इल्मी व मन्तक़ी दलील से कुबूल करते हैं और अगर रद्द करते हैं तो ऐसी ही ठोस दलील से रद्द करते हैं।

आयत ज़ेरे नज़र में बयान करदा पहला दर्जा ऐसे ही लोगों के लिये है और वह है “हिकमत।” यह इल्म व अक़ल की पुख्तगी की बहुत आला सतह है। सूरतुल बक्ररह की आयत 269 में अल्लाह तआला ने हिकमत को “खैर कसीर” क़रार

दिया है {وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا}। कुरान में तीन मक्कामात (बक्राह 129, आले इमरान 164 और जुमा 2) पर इन मराहिल और दरजात का जिक्र किया गया है जिनके तहत हुजूर عليه وسلم ने अपने सहाबा रज़ि. की तरबियत फरमाई। इनमें बुलंद तरीन मरहला या दर्जा हिकमत का है। हिकमत के सबब किसी इंसान की सोच और इल्म में पुख्तगी आती है, उसकी गुफ्तगू में जामियत पैदा होती है और उसकी तजज़ियाती अहलियत बेहतर हो जाती है। इस तरह वह किसी से बात करते हुए या किसी को दीन की दावत देते हुए मारुज़ी सूरते हाल, मुखातब के ज़हनी रुझान और तरजीहात का दुरुस्त तजज़िया करने के बाद अपनी गुफ्तगू के निकाल और दलाइल को तरतीब देता है। उसे खूब अंदाज़ा होता है कि किस वक़्त उसे क्या पेश करना है और किस अंदाज़ में पेश करना है। कौनसा नुक्ता बुनियादी हैसियत का दर्जा रखता है और कौनसी दलील सानवी अहमियत की हामिल है। बहरहाल किसी भी मआशरे के वह लोग जो इल्म, अक्ल और शऊर में ग़ैर मामूली अहलियत के हामिल हों, उनको दावत देने के लिये भी किसी ऐसे दाई की ज़रूरत है जो खुद भी इल्म व हिकमत के आला मक्काम पर फ़ाइज़ हो और उनसे बराबरी की सतह पर खड़े होकर बात कर सके। क्योंकि जब कुरान अपने मुखालफ़ीन को चैलेंज करता है {هَآؤِاْ اِيْهَآنْكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صَٰدِقِيْنَ} (सूरतुल बक्राह 111)। “अपनी दलील लाओ अगर तुम वाकई सच्चे हो।” तो ऐसी सूरत में हमारे मुखालफ़ीन को भी हक़ है कि वह भी हमसे दलील माँगें और हमारा फ़र्ज़ है कि हम अक्ल और मन्तक की आला से आला सतह पर उनकी तसल्ली व तशफ़ी का सामान फ़राहम करें। लिहाज़ा आयत ज़ेरे नज़र में दावत व तब्लीग़ का पहला दर्जा हिकमत बयान किया गया है जिसका हक़ अदा करने के लिये दाई का साहिबे हिकमत और हकीम होना लाज़मी है।

हिकमत के बाद दूसरा दर्जा “मौअज़ा-ए-ह’सना” का है, यानि अच्छा खूबसूरत वअज़। यह दर्जा अवामुन्नास के लिये है। किसी भी मआशरे में अक्सरियत ऐसे लोगों पर मुश्तमिल होती है जिनके ज़हनो में अक्ल और मन्तिक की छलनियाँ नहीं लगी होतीं। चुनाँचे ऐसे लोगों के लिये मन्तकी मुबाहि़स और फ़लसफ़ियाना तक्रारीर “तकलीफ़ मा ला यताक़” के मुतरादिफ़ हैं। इनके दिल खुली किताब और ज़हन साफ़ सलेट की मानिंद होते हैं, आप इन पर जो लिखना चाहें लिख लें। ऐसे लोगों को दावत देने के लिये उनके जज़्बात को अपील करने की ज़रूरत होती है। ये पुर तासीर वअज़ और खुलूस व हमदर्दी से की गई बात से मुतास्सिर हो जाते हैं। इनको अहसास हो जाता है कि दाई हम पर अपने इल्म का रौब नहीं डालना चाहता, हम पर धौंस नहीं जमाना चाहता, वह हमसे इज़हारे नफ़रत नहीं कर रहा, हमारी तहकीर नहीं कर रहा, बल्कि इसकी पेशेनज़र हमारी खैरखाही है। चुनाँचे दाई के दिल से निकली हुई बात “अज़ दिल खैज़द, बर दिल रैज़द” के मिस्दाक़ सीधी इनके दिलों में उतर जाती है।

दावते हक़ का तीसरा दर्जा {وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ} उन अनासिर के लिये है जो किसी मआशरे में खल्क-ए-खुदा को गुमराह करने के मिशन के अलम्बरदार होते हैं। आज-कल बहुत सी तंज़ीमों की तरफ़ से बाक्रायदा पेशावाराना तरबियत से ऐसे लोग तैयार करके मैदान में उतारे जाते हैं। ये लोग खुलूस व इख़लास से की गई बात को किसी क्रीमत पर मानने के लिये तैयार नहीं होते। हर हाल में अपने नज़रिये और मौक़फ़ की तरफ़दारी करना इन लोगों की मजबूरी होती है, चाहे वह किसी इल्मी व अक्ली दलील से हो या हठधर्मी से। ऐसे लोगों को मुस्कित जवाब देकर लाजवाब करना ज़रूरी होता है, वरना बाज़ अवकात अवामी सतह के इज्जमाआत में उनकी बहस बराए बहस की पालिसी बहुत ख़तरनाक हो सकती है, जिससे अवामुन्नास के ज़हन मनफ़ी तौर पर मुतास्सिर हो सकते हैं। ऐसे लोगों से बहस व मुबाहि़सा के अमल को हमारे यहाँ “मुनाज़रा” कहा जाता है, जबकि कुरान ने इसे “मुजादला” कहा है। बहरहाल कुरान ने अपने पैरोकारों के लिये इसमें भी आला मैयार मुकरर कर दिया है कि मुखालफ़ीन से मुजादला भी हो तो अहसन अंदाज़ में हो। अगर आपका मुखालिफ़ किसी तौर से घटियापन का मुज़ाहि़रा भी करे तब भी आपको जवाब में अच्छे अख़लाक़ का दामन हाथ से छोड़ने की इजाज़त नहीं, जैसा कि सूरतुल अनआम की आयत नम्बर 108 में हुक्म दिया गया: {وَلَا تَسُبُّواْ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّواْ اللّٰهَ} “और जिनको ये (मुशरिक) अल्लाह के सिवा पुकारते हैं इन्हें बुरा-भला ना कहो कि कहीं ये भी बग़ैर सोचे समझे मुखालफ़त में अल्लाह को बुरा-भला कहने लग जाएँ।” आज-कल मुख्तलिफ़ मज़ाहिब की तंज़ीमें मसलन इसाई मिशनरीज़ बाक्रायदा मंसूबा बंदी के तहत इस्लाम को हदफ़ बनाने के लिये कुछ ख़ास मौजूआत और मसाइल को एक मख्सूस अंदाज़ में पेश करती हैं। ये लोग ऐसे मौजूआत व मसाइल पर मुनाज़रे करने के लिये बाक्रायदा ट्रेनिंग के ज़रिये स्पेशलिस्ट (specialist) तैयार करते हैं। ऐसे पेशावाराना लोगों के मुक्काबले और मुजादले के लिये दाईयाने हक़ को खुसूसी तालीम व तरबियत देने की ज़रूरत है।

आयत 126

“और (ऐ मुसलमानों!) अगर तुम बदला लो तो इसी क्रदर जिस क्रदर तुम्हें तकलीफ दी गई हो।”

وَأِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ

“और अगर तुम सब्र करो तो ये सब्र करने वालों के हक में बेहतर है।”

وَلَيْنُ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِلصَّابِرِينَ ﴿١٢٦﴾

आयत 127

“और (ऐ नबी ﷺ!) आप सब्र कीजिये और आपका सब्र तो अल्लाह ही के सहारे पर है”

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ

ये हुक्म बराहेरास्त रसूल अल्लाह ﷺ के लिये है और आप ﷺ की वसातत से तमाम मुसलमानों के लिये भी। इस सिलसिले में हकीकत ये है कि अल्लाह पर जिस क्रदर ऐतमाद होगा, जैसा उस पर तवक्कुल होगा, जितना पुख्ता उसके वादों पर यकीन होगा, इसी अंदाज़ में इंसान सब्र भी कर सकेगा।

“और आप इन पर गम ना करें, और ना आप तंगी में पड़ें, इस बारे में जो साज़िशें ये लोग कर रहे थे।”

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٧﴾

ये लोग अपने करतूतों के सबब अज़ाब के मुस्तहिक हो चुके हैं। चुनाँचे आप इनके अंजाम के बारे में बिल्कुल रंजीदा और फ़िक्रमन्द ना हों और ना ही इनकी साज़िशों और घटिया मआन्दाना सरगर्मियों के बारे में सोच कर आप अपना दिल मैला करें।

आयत 128

“यकीनन अल्लाह अहले तकवा और नेकोकारों के साथ है।”

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ ﴿١٢٨﴾

जो लोग तकवे की रविश इख्तियार करते हुए दर्जा-ए-अहसान पर फ़ाइज़ हो गए हैं, अल्लाह की मईयत (साथ), नुसरत और ताईद उनके शामिले हाल रहेगी। चुनाँचे जब अल्लाह तआला आप लोगों के साथ होगा तो ये मुशरिकीन आपको कुछ गज़न्द नहीं पहुँचा सकते।

क्या डर है अगर सारी खुदाई है मुखालिफ़
काफ़ी है अगर एक खुदा मेरे लिये है!

بَارَكَ اللَّهُ لِي وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيمِ وَنَفَعْنِي وَأَيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ۔



सूरह बनी इस्राईल

तम्हीदी कलिमात

सूरह बनी इस्राईल और सूरतुल कहफ़ दोनों मिलकर एक हसीन व जमील जोड़ा बनाती हैं। कुरान अज़ीम के वस्त (बीच) में यह दो सूरतें हिकमते कुरानी के दो अज़ीम खजाने हैं। इन दोनों के माबैन (दरम्यान) कई हवालों से मुशाबिहत भी पाई जाती है और कई पहलुओं से इनकी आपस में निस्वते ज़ौजियत भी ज़ाहिर होती है। यह दोनों सूरतें किस-किस ऐतबार से complementary हैसियत रखती हैं यह बात इनके मुताअले के दौरान वाज़ेह हो जायेगी, ताहम इस सिलसिले में अहम निकात दर्ज ज़ेल हैं:

- (1) सूरह बनी इस्राईल का आगाज़ अल्लाह की तस्बीह {سُبْحَانَكَ يَا إِلَهَ الْوَدَّاعِ} से होता है, जबकि सूरतुल कहफ़ भी अल्लाह की तहमीद {الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي} से शुरू होती है। इन दोनों कलिमात का बाहमी ताल्लुक इस हदीस से वाज़ेह होता है जिसमें हुज़ूर अक़दस ﷺ ने फ़रमाया है: ((الْتَّسْبِيحُ نِصْفُ الْبَيِّنَاتِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ يَمْلُؤُهَا))⁽¹⁶⁾ “तस्बीह निस्फ़ मीज़ान है और अलहम्दुलिल्लाह उसे भर देता है।” यानि सुब्हान अल्लाह कहने से मअरफ़ते खुदावंदी की मीज़ान आधी हो जाती है और अलहम्दु-लिल्लाह कहने से यह मीज़ान मुकम्मल तौर पर भर जाती है। गोया यह दोनों कलिमात मिल कर किसी इंसान के दिल में अल्लाह तआला की मअरफ़त के असासे की तक्मील करते हैं। आगे चल कर अल मुसबिहात (वो सूरतें जिनका आगाज़ अल्लाह की तस्बीह से होता है) के मुताअले के दौरान इस मज़मून पर तफ़सील से रौशनी डाली जायेगी।
- (2) सूरह बनी इस्राईल की पहली आयत में मज़कूर है कि “अल्लाह अपने बन्दे को ले गया” जबकि सूरतुल कहफ़ की पहली आयत में फ़रमाया कि “अल्लाह ने अपने बन्दे पर किताब उतारी।” गोया दोनों मक़ामात की बाहम मुतलाज़िम (reciprocal) निस्वत है।
- (3) दोनों सूरतों की इब्तदाई आयत में नबी अकरम ﷺ के लिए रसूल के बजाय अब्द का लफ़ज़ इस्तेमाल हुआ है।
- (4) सूरह बनी इस्राईल की आखरी दो आयत का आगाज़ लफ़ज़ “कुल” से होता है और इसी तह सूरतुल कहफ़ की आखरी दो आयत भी लफ़ज़ “कुल” से शुरू होती हैं। नेज़ इन दोनों मक़ामात की दो-दो आयत के मज़ामीन में बाहम मुतलाज़िम (reciprocal) निस्वत है।
- (5) यह दोनों सूरतें रेल के डिब्बों की तरह आपस में जुड़ी हुई (inter locked) हैं। वो इस तरह कि सूरह बनी इस्राईल की आखरी आयत एक हुक्म पर ख़त्म हो रही है: {وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي} “और कहिये कि कुल हम्द और कुल तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है....” जबकि सूरतुल कहफ़ की पहली आयत के मज़मून से यूँ लगता है जैसे यह इस हुक्म की तामील में नाज़िल हुई है: {... الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي}

मज़मून और मौजू के ऐतबार से सूरह बनी इस्राईल का पहला रुकूअ बहुत अहम और अज़ीम है। इस रुकूअ में बनी इस्राईल की तारीख़ के उन चार अदवार का तज़क़िरा है जो हुज़ूर ﷺ की बेअसत तक गुज़र चुके थे। यहाँ बनी इस्राईल की दो हज़ार सालह तारीख़ को चार आयत के अंदर समो कर गोया उम्मते मुस्लिमा के लिये एक आईना फ़राहम कर दिया गया है। इस आईने को सामने रख कर हम अपने माज़ी, हाल और मुस्तक़बिल का जायज़ा ले सकते हैं। इसकी वज़ाहत इस हदीसे नबवी ﷺ में मिलती है जिसमें हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया: ((لَيَأْتِيَنَّ عَلَى أُمَّتِي مَا أَتَى عَلَى بَنِي إِسْرَءِيلَ حَتَّى يَخْلَوْا النَّعْلَ بِالنَّعْلِ...))⁽¹⁷⁾ “मेरी उम्मत पर भी वो तमाम हालात वारिद होकर रहेंगे जो बनी इस्राईल पर वारिद हुए, बिल्कुल उसी तरह जैसे एक जूती दूसरी जूती के मुशाबेह होती है....” इस हदीस में जूती के दोनों पाँवों की मुशाबिहत की यह मिसाल उस अटल हक़ीक़त की तरफ़ इशारा करती है कि उरूज व ज़वाल के जो चार अदवार बनी इस्राईल पर गुज़र चुके हैं बिल्कुल ऐसे ही चार अदवार उम्मते मुस्लिमा पर भी वारिद होंगे। इस पहलू से देखा जाये तो सूरह बनी इस्राईल की इन चार आयत (4 से 7) में इल्म व मअरफ़त और मालूमात का एक ख़ज़ाना पोशीदा है, जबकि मज़कूरा बाला हदीस इस ख़ज़ाने की चाबी

है। मुझे अल्लाह तआला के फ़ज़ल और उसकी तौफ़ीक़ से इस चाबी की मदद से इस ख़ज़ाने तक रसाई मिली है, जिसके नतीजे में मेरे लिए इन बेश बहा इल्मी व तारीख़ी मालूमात को ज़ब्त तहरीर में लाना मुमकिन हुआ है। चुनाँचे इस मौज़ू पर मेरा एक मुख़्तसर किताबचा “तंज़ीमे इस्लामी का तारीख़ी पस मंज़र” के नाम से और एक मुफ़स्सल किताब “साबक़ा और मौज़ूदा मुसलमान उम्मतों का माज़ी, हाल और मुस्तक़बिल” के उन्वान से दस्तयाब हैं।

इन दोनों मतबुआत के इंग्लिश तराजिम भी Rise and Decline of the Muslim Ummah और Lessons from History के उन्वानात से तबअ होते हैं। (इस मौज़ू को समझने के लिये इन कुतुब का मुताअला मुफ़ीद होगा।)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

आयात 1 से 10 तक

سُبْحَنَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ① وَآتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ إِلَّا تَنَجُّدُوا مِن دُونِي وَكَيْلًا ② ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ③ وَقَضَيْنَا إِلَى بَنِي إِسْرَءِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا ④ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَاهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَا أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلَالَ الدِّيَارِ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ⑤ ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَاكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَكُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ⑥ إِنَّ أَحْسَنَ مَا أَحْسَنْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَلَوْا تَتْبِيرًا ⑦ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يَرْحَمَكُمْ وَإِنْ عُدتُّمْ عَدْنَا وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ⑧ إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ⑨ وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ⑩

आयत 1

“पाक है वह ज़ात जो ले गई रातों-रात अपने बंदे (ﷺ) को मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़सा (दूर की मस्जिद) तक”

سُبْحَنَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا

यह रसूल अल्लाह ﷺ के सफ़र-ए-मैराज के पहले मरहले की तरफ इशारा है जो मस्जिदे हराम (मक्का मुकर्रमा) से मस्जिदे अक़सा (बैतुल मक़दस) तक के ज़मीनी सफ़र पर मुश्तमिल था। “सुब्हान” तन्ज़िये का कलिमा है, यानि अल्लाह तआला की ज़ात हर नुक़्स व ऐब से पाक व मन्ज़ा है। इस कलिमे से बात का आगाज़ करना खुद दलालत करता है कि यह कोई बहुत बड़ा खर्क़े आदत वाक़िया था जो अल्लाह तआला की ग़ैर महदूद कुदरत से रू नुमा हुआ। यह महज़ एक रुहानी तजुर्बा ना था, बल्कि एक जिस्मानी सफ़र और ऐनी मुशाहिदा था जो अल्लाह तआला ने नबी अकरम ﷺ को कराया।

“जिसके माहौल को हमने बा-बरकत बनाया”

الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ

इस इलाक़े की बरकत दुनियावी ऐतबार से भी है और रूहानी ऐतबार से भी। दुनियावी ऐतबार से यह इलाक़ा बहुत जरख़ैज़ है और यहाँ की आब-ओ-हवा ख़ुसूसी तौर पर बहुत अच्छी है। रूहानी ऐतबार से देखें तो यह इलाक़ा बहुत से जलीलुल क़द्र अंबिया अलै. का मसकन रहा है और हज़रत इब्राहीम अलै. समेत बहुत से अंबिया यहाँ मदफून हैं। हैकल-ए-सुलेमानी बनी इस्राईल की मरकज़ी इबादत गाह थी। इस लिहाज़ से ना मालूम अल्लाह के कैसे-कैसे नेक बंदे किस-किस अंदाज़ में यहाँ इबादत करते रहे होंगे। इसके अलावा बैतुल मक़दस को बनी इस्राईल के क़िब्ले की हैसियत भी हासिल थी। चुनाँचे माद्री व रूहानी दोनों ऐतबार से इस इलाक़े को अल्लाह तआला ने बहुत ज़्यादा बरकतों से नवाज़ा है।

सफ़र-ए-मैराज के पहले मरहले में रसूल अल्लाह ﷺ को मक्का मुकर्रमा से येरुशलम ले जाया गया, वहाँ बैतुल मक़दस में तमाम अंबिया की अरवाह को जमा किया गया, उन्हें जसद (जिस्म) अता किए गये (हमारे हवास इस कैफ़ियत का इदराक करने से क़ासिर हैं) और वहाँ हज़ूर ﷺ ने तमाम अंबिया की इमामत फ़रमाई। हज़ूर ﷺ के सफ़र-ए-मैराज के इस हिस्से का ज़िक्र जिस अंदाज़ में यहाँ हुआ है इसकी एक ख़ुसूसी अहमियत है। यह गोया ऐलान है कि नबी आख़िरुज्ज़माँ ﷺ और आपकी उम्मत को तौहीद के इन दोनों मराकिज़ (बैतुल्लाह और बैतुल मक़दस) का मुतवल्ली बनाया जा रहा है। इस हवाले से आप ﷺ को पहले बैतुल मक़दस ले जाया गया और फिर वहाँ से आप ﷺ के आसमानी सफ़र का मरहला शुरू हुआ। सफ़र-ए-मैराज के इस दूसरे मरहले का ज़िक्र बहुत इख़्तिसार के साथ सूरतुन्नज्म में किया गया है।

“ताकि हम दिखाएँ उस (बंदे मुहम्मद ﷺ) को अपनी निशानियाँ
यक़ीनन वही है सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला।”

لُرِيَّهٖ مِنْ اٰیٰتِنَاۙ اِنَّهٗ هُوَ السَّبِيْعُ الْبَصِيْرُ ①

बनी इस्राईल के अहम तरीन तारीख़ी मक़ाम का ज़िक्र करने के बाद अब आइंदा आयात में बात को आगे बढ़ाते हुए उनकी तारीख का हवाला दिया जा रहा है।

आयत 2

“और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी और हमने उसे हिदायत बनाया
बनी इस्राईल के लिए”

وَ اٰتَيْنَا مُوسٰى الْكِتٰبَ وَ جَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيۡ
اِسْرَآءِیْلَ

यहाँ तख़सीस कर दी गई कि तौरात तमाम बनी नौए इंसान के लिए हिदायत नहीं थी, बल्कि दरहक़ीक़त वो सिर्फ़ बनी इस्राईल के लिए एक हिदायत नामा थी।

“कि तुम मत बनाओ मेरे सिवा किसी को कारसाज़।”

اَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِیْ وَ کِیْلًا ②

यानि तौरात तौहीद का दर्स देती थी। इसकी तालीमात का लुब्बे-लुबाब यह था कि अल्लाह के सिवा किसी भी दूसरी हस्ती या ज़ात को अपना कारसाज़ मत समझो, उसे छोड़ कर किसी दूसरे पर भरोसा या तवक्कुल ना करो।

आयत 3

“ऐ उन लोगों की औलाद जिन्हें हमने सवार कराया था नूह अलै. के
साथ। यक़ीनन वह हमारा बहुत ही शुक्रगुज़ार बंदा था।”

ذُرِّیَّةٖۙ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍۙ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَکُوْرًا ③

हज़रत नूह अलै. के तीन बेटे साम, हाम और याफ़िस थे जिनसे बाद में नस्ले इंसानी चली। उनमें से हज़रत साम की नस्ल में हज़रत इब्राहीम अलै. पैदा हुए, जिनकी औलाद को यहाँ बनी इस्राईल के तौर पर मुखातिब किया जा रहा है। उन्हें याद दिलाया जा रहा है कि हज़रत नूह अलै. के साथ जिन लोगों को हमने बचाया था उन्हीं में से एक की औलाद तुम हो और नूह हमारा बहुत ही शुक्रगुज़ार बंदा था।

आयत 4

“और हमने मुतनब्बा (खबरदार) कर दिया था बनी इस्राईल को किताब में कि तुम ज़मीन में दो मरतबा फ़साद मचाओगे और बहुत बड़ी सरकशी करोगे।”

وَقَضَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَآءِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا ﴿٥٠﴾

यानि तुम पर दो अदवार (वक़्त) ऐसे आयेंगे कि तुम ज़मीन में सरकशी करोगे, फ़साद बरपा करोगे, दीन से दूर हो जाओगे, लहव व लअब में मुव्तला हो जाओगे, और फिर इसके नतीजे में अल्लाह की तरफ़ से तुम पर अज़ाब के कोड़े बरसेंगे।

यहाँ पर बैयनल सतूर यह इशारा भी है कि इससे पहले बनी इस्राईल पर एक बेहतर दौर भी आया था जिसमें अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी रहमतों और नेअमतों से नवाज़ा था। सूरतुल बक्ररह में उनके इस अच्छे दौर की कुछ तफ़्सीलात हम पढ़ आये हैं। याद दिहानी के तौर पर अहम वाक़ियात इख़्तसार के साथ यहाँ फिर ताज़ा कर लें। हज़रत मूसा अलै. 1400 क़ब्ल मसीह में बनी इस्राईल को मिस्र से लेकर निकले थे। सहारा-ए-सीना में जबल (पहाड़) तूर के पास पड़ाव के ज़माने में आपको तौरात अता की गई। वहाँ से फिर शिमाल मशरिक की तरफ़ कूच करने और फ़लस्तीन पर हमलावर होने का हुक्म दिया गया। जिहाद के इस हुक्म से इंकार की पादाश में बनी इस्राईल को सहारा नूरदी की सज़ा मिली। इस दौरान में हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलै. दोनों का यके बाद दीगरे (एक के बाद एक) इन्तेक़ाल हो गया। सहारा नूरदी के दौरान परवान चढ़ने वाली नस्ल बहादुर और जफ़ाकश थी। उन्होंने हज़रत मूसा अलै. के खलीफ़ा हज़रत यूशा बिन नून की सरक़र्दगी में जिहाद किया जिसके नतीजे में फ़लस्तीन फ़तह हो गया। फ़लस्तीन का जो शहर सबसे पहले फ़तह हुआ वो अरीहा (Jericho) था। फ़लस्तीन की फ़तह के बाद एक बुनिदी गलती यह हुई कि एक मज़बूत मरकज़ी हुक्मत बनाने के बजाय यह इलाक़ा बनी इस्राईल के बारह क़बीलों ने आपस में बाँट लिया और हर क़बीले ने अपनी हुक्मत कायम कर ली। यह छोटी-छोटी हुक्मतें ना सिर्फ़ बैरूनी दुश्मनों के मुक़ाबले में बहुत कमज़ोर थीं बल्कि बहुत जल्द उन्होंने आपस में भी लड़ना-झगड़ना शुरू कर दिया, जिसके नतीजे में उनके ज़ेरे तसल्लुत (supermacy) इलाक़े बहुत जल्द इंतशार और तवायफ़ल मलूकी का शिकार हो गये। इन हालात को देखते हुए शाम और उरदन के हमसाया इलाक़ों में बसने वाली मुशरिक अक़वाम ने उन पर तसल्लुत हासिल करके उनकी बेशतर आबादी को उस इलाक़े से निकाल बाहर किया।

इस हालत को पहुँचने पर उन्होंने अपने नबी हज़रत सुमोईल अलै. से मुतालबा किया कि उनके लिए एक बादशाह या सिपहसालार मुक़र्रर कर दें ताकि उसकी क़यादत में तमाम क़बीले इकठ्ठे होकर जिहाद करें। इस मुतालबे के जवाब में अल्लाह तआला की तरफ़ से हज़रत तालूत को उनका बादशाह मुक़र्रर किया गया। हज़रत तालूत ने दुश्मन अफ़वाज के खिलाफ़ लश्करकशी की, जिनका सिपहसालार जालूत था। इस जंग में हज़रत दाऊद अलै. भी शामिल थे। आप (हज़रत दाऊद अलै.) ने जालूत को क़त्ल कर दिया, जिसके नतीजे में दुश्मन लश्कर पर बनी इस्राईल को फ़तह नसीब हुई और वो इलाक़े में एक मज़बूत हुक्मत कायम करने में कामयाब हो गये। हज़रत तालूत के बाद हज़रत दाऊद अलै. उनके जानशीन हुए और हज़रत दाऊद के बाद आपके बेटे हज़रत सुलेमान अलै. बादशाह बने।

हज़रत यूशा बिन नून की क़यादत में फ़लस्तीन के फ़तह होने से लेकर तालूत और जालूत की जंग तक तीन सौ साल का वक़फ़ा है। हज़रत सुलेमान का अहदे हुक्मत इस तीन सौ साला दौर का का नुक्ता-ए-उरूज था। हज़रत तालूत, हज़रत दाऊद और हज़रत सुलेमान अलै. का दौर-ए-इक़तदार तक्ररीबन एक सौ साल के अर्से पर मुहीत था। सोलह बरस तक हज़रत तालूत ने हुक्मत की, इसके बाद 40 बरस तक हज़रत दाऊद और फिर 40 बरस तक ही हज़रत सुलेमान बरसर इक़तदार रहे। यह दौर गोया बनी इस्राईल की खिलाफ़ते राशिदा का दौर था जो हमारे दौरे खिलाफ़ते राशिदा से मुमासलत (similarity) रखता है। अगरचे उनकी पहली तीन खिलाफ़तें एक सौ वर्ष के अर्से पर मुहीत थीं और हमारी उम्मत की पहली तीन खिलाफ़तों का अरसा चौबीस बरस था, लेकिन जिस तरह उनके पहले खलीफ़ा का दौरे इक़तदार मुख़्तसर और बाद के दोनों ख़ुल्फ़ाअ का दौर निस्बतन तवील था इसी तरह हमारे यहाँ भी हज़रत अबुबक्र रज़ि. का दौरे खिलाफ़त मुख़्तसर, जबकि हज़रत उमर और हज़रत उस्मान रज़ि. का दौर निस्बतन तवील था। इसके बाद हज़रत अली रज़ि. की खिलाफ़त को अमीर माविया रज़ि. ने कुबूल नहीं किया था, चुनाँचे शाम और मिस्र के इलाक़े अलैहदा रहे थे, बिल्कुल इसी तरह बनी इस्राईल की मम्लकत भी हज़रत सुलेमान अलै. की वफ़ात के बाद आपके दो बेटों के दरमियान तक्रसीम हो गई। शिमाली मम्लकत का नाम इस्राईल था जिसका दारुल ख़िलाफ़ा सामरिया था, जबकि जुनूबी मम्लकत का नाम यहूदिया था और इसका दारुल ख़िलाफ़ा येरुशलम था।

इस अज़ीम सल्तनत की तक्रसीम के बाद भी मादी ऐतबार से एक अर्से तक बनी इस्राईल का उरूज बरकरार रहा, लेकिन रफ़ता-रफ़ता अवाम में मुशरिकाना अक्काइद, अवहाम परस्ती और हवस-ए-दुनिया जैसी नज़रियाती व अखलाक़ी बीमारियाँ पैदा हो गईं, और अहक़ाम-ए-शरीअत का इस्तहज़ाअ (मज़ाक उड़ाना) उनका इज्जतमाई वतीरा बन गया। चुनाँचे अखलाक़ व किरदार का यह ज़वाल मन्तक़ी तौर पर उनके मादी ज़वाल पर मुन्तज हुआ। बनी इस्राईल का यह अहदे ज़वाल भी तक्ररीबन तीन सौ साल ही के अर्से में अपनी इन्तहा को पहुँचा। सबसे पहले आसूरियों के हाथों उनकी शिमाली सल्तनत “इस्राईल” (सात-आठ सौ क़ब्ल मसीह के लगभग) तबाह हुई। उसके बाद 587 क़ब्ल मसीह में इराक़ के नमरूद बख़्तेनसर (Nebukadnezar) ने उनकी जुनूबी सल्तनत “यहूदिया” पर हमला किया और पूरी सल्तनत को तहस-नहस करके रख दिया। येरुशलम को इस तरह तबाह व बर्बाद किया गया कि किसी इमारत की दो ईंटें भी सलामत नहीं रहने दी गयीं। हैकल-ए- सुलेमानी को मस्मार करके उसकी बुनियादें तक खोद डाली गयीं। उस दौरान बख़्तेनसर ने छः लाख यहूदियों को क़त्ल किया जबकि छः लाख मर्दों, औरतों और बच्चों को जानवरों की तरह हॉकता हुआ बाबुल (इराक़) ले गया, जहाँ ये लोग सवा सौ साल तक असीरी (captivity) की हालत में रहे। ज़िल्लत व रुसवाई के ऐतबार से यह उनकी तारीख़ का बदतरीन दौर था।

बनी इस्राईल के दूसरे दौरे उरूज का आगाज़ हज़रत उज़ैर अलै. की इस्लाही कोशिशों से हुआ। आपको बनी इस्राईल की निशाते सानिया (Renaissance) के नक़ीब की हैसियत हासिल है। 539 क़ब्ले मसीह में ईरान के बादशाह के-खोरस (Cyrus) या जुलकर नैन ने इराक़ (बाबुल) फ़तह किया और उसके दूसरे ही साल उसने बनी इस्राईल को अपने वतन वापस जाने और वहाँ दोबारा आबाद होने की आम इजाज़त दे दी। चुनाँचे यहूदियों के क़ाफ़िले फ़लस्तीन जाने शुरू हो गये और यह सिलसिला मुद्दतों जारी रहा। 458 क़ब्ले मसीह में हज़रत उज़ैर अलै. भी एक ज़िला वतन गिरोह के साथ येरुशलम पहुँचे और उस शहर को आबाद करना शुरू किया और हैकल-ए- सुलेमानी की अज़सर नौ तामीर की। इससे क़ब्ल हज़रत उज़ैर अलै. को अल्लाह तआला ने सौ बरस तक सुलाए भी रखा। अल्लाह तआला ने उन पर एक सौ साल के लिए मौत तारी कर दी थी और फिर उन्हें ज़िन्दा किया और उन्हें ब-चश्मे-सर उनके मुर्दा गधे के ज़िन्दा होने का मुशाहिदा कराया, जिसके बारे में हम सूरतुल बक्ररह (आयत 259) में पढ़ आए हैं। बहरहाल हज़रत उज़ैर अलै. ने तौबा की मुनादी के ज़रिये एक ज़बरदस्त तजदीदी और इस्लाही तहरीक चलाई जिसके नतीजे में उनके नज़रियात और आमाल व अखलाक़ की इस्लाह होना शुरू हुई। हज़रत उज़ैर अलै. ने तौरात को भी याददाशतों की मदद से अज़सरे नौ मुरत्तब किया जो बख़्तेनसर के हमले के दौरान गुम हो गई थी।

ईरानी सल्तनत के ज़वाल, सिकंदर मक़दूनी की फ़तूहात और फिर यूनानियों के उरूज से यहूदियों को कुछ मुद्दत के लिए शदीद धचका लगा। यूनानी सिपहसालार एंटोकस सालिस ने 198 क़.म. में फ़लस्तीन पर क़ब्ज़ा कर लिया। यूनानी फ़ातेहीन ने पूरी जाबराना ताक़त से काम लेकर यहूदी मज़हब व तहज़ीब की बीखकुनी (जड़ ख़त्म) करना चाही, लेकिन बनी इस्राईल इस ज़बर से मग़लूब ना हुए और उनके अंदर एक ज़बरदस्त तहरीक उठी जो तारीख़ में “मक्काबी बगावत” के नाम से मशहूर है। यह हज़रत उज़ैर अलै. की फूँकी हुई रूहे दीनदारी का असर था कि उन्होंने बिल्आख़िर यूनानियों को निकाल कर अपनी एक अज़ीम आज़ाद रियासत क़ायम कर ली जो “मक्काबी सल्तनत” कहलाती है। बनी इस्राईल के दूसरे दौरे उरूज में क़ायम होने वाली यह सल्तनत 170 क़.म. से लेकर 67 क़.म तक पूरी शान व शौकत के साथ क़ायम रही। मक्काबी सल्तनत अपने वक़्त की मालूम दुनिया के तमाम इलाक़ों पर मुहीत थी। चुनाँचे रक़बे के ऐतबार से यह हज़रत सुलेमान अलै. की सल्तनत से भी वसीअ थी। उस ज़माना-ए-उरूज में फिर से उनकी नज़रियाती व अखलाक़ी हालत बिगड़ने लगी। मुशरिकाना आक्काइद समेत बहुत सी अखलाक़ी बुराईयाँ फिर से उन में पैदा हो गईं, जिनके नतीजे में एक दफ़ा फिर यह क़ौम अज़ाबे खुदावंदी की ज़ाद में आ गई।

मक्काबी तहरीक जिस अखलाक़ी व दीनी रूह के साथ उठी थी वो बतदरीज फ़ना होती चली गई और उसकी जगह ख़ालिस दुनिया परस्ती और बेरूह ज़ाहिरदारी ने ले ली। आख़िरकार उनके दरमियान फूट पड़ गई और उन्होंने खुद रूमी फ़ातह पोम्पई को फ़लस्तीन आने की दावत दी। चुनाँचे पोम्पई ने 63 क़.म. में बैतुल मक़दस पर क़ब्ज़ा करके यहूदियों की आज़ादी का ख़ात्मा कर दिया। रोमियों ने फ़लस्तीन में अपने ज़ेरे साया एक देसी रियासत क़ायम कर दी जो बिल्आख़िर 40 क़.म. में हीरूद नामी एक होशियार यहूदी के क़ब्जे में आई। यह शख़्स हीरूद आज़म के नाम से मशहूर है और इसकी फ़रमारवाई पूरे फ़लस्तीन और शरके उरदन पर 40 से 4 क़.म. तक रही। इस शख़्स ने रोमी सल्तनत की वफ़ादारी का ज़्यादा से ज़्यादा मुज़ाहि करके कैसर की खुशनुदी हासिल कर ली थी। इस ज़माने में यहूदियों की दीनी व अखलाक़ी हालत

गिरते-गिरते ज़वाल की आखरी हद को पहुँच गई थी। हीरूद आज्रम के बाद उसकी रियासत उसके तीन बेटों के दरमियान तकसीम हो गई। लेकिन 6 ई. में कैसर आगस्टस ने हीरूद के बेटे अरखलाउस को माज़ूल करके उसकी पूरी रियासत अपने गर्वनर के मातहत कर दी और 41 ई. तक यही इंतेज़ाम कायम रहा। यही ज़माना था जब हज़रत मसीह अलै. बनी इस्राईल की इस्लाह के लिए उठे तो यहूदियों के तमाम मज़हबी पेशवाओं ने मिल कर उनकी मुख़ालफ़त की और उन्हें वाजिबुल क़त्ल करार देकर रोमी गर्वनर पोन्टस पिलातिस से उनको सज़ा-ए-मौत दिलवाने की कोशिश की और अपने ख़याल के मुताबिक़ तो उनको सूली पर चढ़वा ही दिया।

रोमियों ने 41 ई. में हीरूद आज्रम के पोते “हीरूद अगरपा” को इन तमाम इलाक़ों का हुक्मरान बना दिया जिन पर हीरूद आज्रम अपने ज़माने में हुक्मरान था। इस शख़्स ने बरसर इक़तदार आकर मसीह अलै. के पैरोकारों पर मज़ालिम की इन्तहा कर दी। कुछ ही अर्से बाद यहूदियों और रोमियों के दरमियान सख़्त कशमकश शुरू हो गई और 64 ई. से 66 ई. के दौरान यहूदियों ने रोमियों के खिलाफ़ खुली बगावत कर दी, जो उनके उरूज सानी के खात्मे पर मुन्तज हुई। यहूदियों की बगावत का क़लअ-क़मअ (खात्मा) करने के लिए बिल्आख़िर रूमी सल्तनत ने एक सख़्त फ़ौज़ी कार्रवाई की और 70 ई. में टायटस (Titus) ने बज़ोर-ए-शम्शीर येरुशलम को फ़तह कर लिया। हैकले सुलेमानी एक दफ़ा फिर मस्मार कर दिया गया। ज़र्नल टायटस के हुक्म पर शहर में क़त्लेआम हुआ। एक दिन में एक लाख 33 हज़ार यहूदी क़त्ल हुए, जबकि 67 हज़ार को गुलाम बना लिया गया। इस तरह रोमियों ने पूरे शहर में कोई मुतनफ़ि़स बाक़ी ना छोड़ा। इसके साथ ही अरज़े फ़लस्तीन से बनी इस्राईल का अमल-दख़ल मुकम्मल तौर पर ख़त्म हो गया। बीसवीं सदी के शुरू तक पूरे दो हज़ार बरस यह लोग जिला वतनी और इंतशार (Diaspora) की हालत में ही रहे। ज़र्नल टायटस के हाथों 70 ई. में हैकल सुलेमानी मस्मार हुआ तो आज तक तामीर ना हो सका। हुज़ूर ﷺ की पैदाईश (571 ई.) के वक़्त इसे मस्मार हुए पाँच सौ बरस गुज़र चुके थे।

यह खुलासा है उस क़ौम की दास्ताने इबरत का जो अपने वक़्त की उम्मत मुस्लिमा थी। जिसके अंदर चौदह सौ बरस तक मुसलसल नबुवत रही। जिसको तीन इल्हामी किताबों से नवाज़ा गया और जिसके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया: {يٰۤاَيُّهَاۤ اِسْرَآءِیْلُ اٰذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اَنْعَمْتُ عَلَیْكُمْ وَاَنْیُّ فَضَّلْتُكُمْ عَلَی الْعٰلَمِیْنَ} (बक़रह:47) “ऐ बनी इस्राईल याद करो मेरी वह नेअमत जो मैंने तुम लोगों को अता की और यह की मैंने तुम्हें फ़ज़ीलत दी तमाम ज़हान वालों पर।”

आख़िरकार बनी इस्राईल को उम्मत मुस्लिमा के मन्सब से माज़ूल करके मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की उम्मत को इस मसनदे फ़ज़ीलत पर मुतमक्कन किया गया। हुज़ूर ﷺ ने अपनी उम्मत के बारे में फ़रमाया कि तुम लोगों पर भी ऐन वही हालात वारिद होंगे जो बनी इस्राईल पर हुए थे। चुनाँचे ऐसा ही हुआ। मुसलमानों को पहला उरूज अरबों के ज़ेरे क़यादत नसीब हुआ। इसके बाद जब ज़वाल आया तो सलेबियों की यलगार की सूरत में उन पर अज़ाब के कोड़े बरसे। फिर तातारियों ने हलाकू ख़ान और चंगेज़ ख़ान की क़यादत में आलमे इस्लाम को ताख़्त व ताराज किया। इसके बाद कुदरत ने आलमे इस्लाम की क़यादत अरबों से छीन कर उन्हीं तातारियों के हाथों में दे दी, जिन्होंने लाखों मुसलमानों का खून बहाया था।

*है अयाँ फ़ितना-ए-तातार के अफ़साने से
पासबाँ मिल गये काबे को सनम खाने से*

चुनाँचे तुर्कों की क़यादत में इस उम्मत को एक दफ़ा फिर उरूज नसीब हुआ। तुर्काने तैमूरी, तुर्काने सफ़वी, तुर्काने सल्जूक़ी और तुर्काने उस्मानी ने दुनिया में अज़ीमुश्शान हुक्मतें कायम कीं। इसके बाद उम्मत मुस्लिमा पर दूसरा दौरे ज़वाल आया। बनी इस्राईल पर दूसरा दौरे अज़ाब यूनानियों और रोमियों के हाथों आया था जबकि उम्मत मुस्लिमा पर दूसरा अज़ाब अक्रवामे यूरोप के तसल्लुत की सूरत में आया और देखते ही देखते अंग्रेज़, फ़्रान्सीसी, इतालवी, हस्पानवी और वलंदीज़ी (Dutch) पूरे आलमे इस्लाम पर क़ाबिज़ हो गये। बीसवीं सदी के आगाज़ में अज़ीम उस्मानी सल्तनत का खात्मा हो गया।

यह उन हालात और वाक़ियात का खुलासा है जिनको अल्लाह तआला ने अपनी तरफ़ मन्सूब करते हुए आयत ज़ेरे नज़र में फ़रमाया कि हमने तो पहले ही बनी इस्राईल के बारे में कह दिया था कि तुम लोग अपनी तारीख़ में दो दफ़ा फ़साद मचाओगे और सरकशी दिखाओगे।

“फिर जब उन दोनों में से पहले वादे का वक़्त आ गया तो हमने तुम पर मुसल्लत कर दिये अपने सख़्त जंगजू बंदे तो वो तुम्हारी आबादियों में घुस गये, और (यूँ हमारा) जो वादा था वो पूरा होकर रहा।”

فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَٰئِهِمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَا
أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلَالَ الدِّيَارِ وَكَانَ وَعْدًا
مَّفْعُولًا ۝

यानि अल्लाह तआला की तरफ़ से जो तुम पर वाज़ेह किया गया था कि जब तुम लोग दीन से बरग़श्ता हो (भटक) जाओगे, जब तुम अल्लाह की किताब और उसके अहक़ाम को हँसी-मज़ाक बना लोगे तो तुम ज़रूर अल्लाह के अज़ाब का निशाना बनोगे। चुनौचे उनके दीन से बरग़श्ता हो जाने के बाद आशूरियों और इराक़ के बादशाह बख़्तनसर के हाथों उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसा, जिसके नतीजे में दोनों इस्त्राईली सल्तनतें ख़त्म हो गईं, येरुशलम मुकम्मल तौर पर तबाह हो गया, हैकले सुलेमानी मस्मार कर दिया गया, छः लाख यहूदी क़त्ल हो गये जबकि छः लाख को गुलाम बना लिया गया।

आयत 6

“फिर हमने तुम्हारी बारी लौटाई उन पर”

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ

यानि इसके बाद अल्लाह तआला ने एक मर्तबा फिर तुम्हें सहारा दिया और उन पर ग़ल्बे का मौक़ा अता कर दिया। इस सहारे का बाइस ईरानी बादशाह कैख़ोरस (Cyrus) या ज़ुलकरनैन बना। उसने इराक़ (बाबुल) पर तसल्लुत हासिल कर लेने के बाद तुम्हें आज़ाद करके वापस येरुशलम जाने और उस शहर को एक दफ़ा फिर से आबाद करने की इजाज़त दे दी। फिर जब तुमने वापस आकर येरुशलम को आबाद किया तो हमने एक दफ़ा फिर तुम्हारी मदद की:

“और हमने मदद की तुम्हारी माल व दौलत और बेटों के ज़रिये से और बना तुम्हें कसीर तादाद (वाली क़ौम)।”

وَأَمَدَدْنَكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَكُمْ أَكْثَرَ تَفِيرًا

④

हमने तुम्हें माल व औलाद में बरक़त दी और तुम्हारी तादाद पहले से बढ़ा दी। तुम लोग ख़ूब फले-फूले और जल्द ही एक मज़बूत क़ौम बन कर उभरे।

आयत 7

“अगर तुमने कोई भलाई की तो खुद अपने ही लिए की, और अगर कोई बुराई कमाई तो वो भी अपने ही लिए कमाई।”

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا

तुम्हारे नेक आमाल का फ़ायदा भी तुम्हें हुआ और तुम्हारी बुराईयों और नाफ़रमानियों का वबाल दुनिया में भी तुम पर आया और इसका वबाल आख़िरत में भी तुम पर पड़ेगा।

“फिर जब दूसरे वादे का वक़्त आया”

فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ

जब दोबारा तुमने अल्लाह के दीन से सरकशी इख़्तियार की, तुम्हारे ऐतकादात, नज़रियात और अख़लाक़ फिर से मस्बू हो गये तो वादे के ऐन मुताबिक़ तुम पर अज़ाब के दूसरे मरहले का वक़्त आ पहुँचा।

“ताकि वो तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें”

لِيَسْوَءَ وَجُوهَكُمْ

इस सिलसिले में पहले यह अल्फ़ाज़ आये थे: {يَعْتَذِرُ عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَا أُولَٰئِكَ شِدْدِنَا} (आयत 5) कि हमने तुम पर अपने बंदे मुसल्लत कर दिए जो सख्त जंगजू थे। इस फ़िक्ररे का मफ़हूम यहाँ भी पाया जाता है, लेकिन यहाँ दोबारा इसे दोहराया नहीं गया। चुनाँचे इस फ़िक्ररे को यहाँ महज़ूफ़ समझा जायेगा और आयत का मफ़हूम यँ होगा कि हमने फिर तुम पर अपने सख्त जंगजू बंदे मुसल्लत किए ताकि वो तुम्हारे हीले बिगाड़ दें।

“और वो दाख़िल हो जायें मस्जिद में जैसे कि दाख़िल हुए थे पहली मर्तबा”

وَلْيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوا أَوَّلَ مَرَّةٍ

यहाँ इशार्द है बैतुल मक़दस और हैकले सुलेमानी की बारे दीगर बेहुरमती की तरफ़। जैसे 587 क़ब्ले मसीह में बख़्तनसर ने बैतुल मक़दस और हैकले सुलेमानी को मस्मार किया था, वैसे ही रूमी जर्नल टायटस ने 70 ई. में एक दफ़ा फिर उनके तक्रद्दुस को पामाल किया।

“और तबाह व बर्बाद करके रख दें (हर उस शय को) जिसके ऊपर भी उन्हें कब्ज़ा हासिल हो जाये।”

وَلْيَتَبَرَّؤْا مَا عَلُوا تَنْبِيْرًا

इन आयात में बनी इस्राईल की दो हज़ार सालाह तारीख के नशेब-ओ-फ़राज़ की तफ़्सीलात को समो दिया गया है। इस अरसे में उन्होंने दो मर्तबा उरूज देखा और दो दफ़ा ही ज़वाल से दो-चार हुए। नबी आखिरुज्ज़मान ﷺ की बेअसत के ज़माने में इन आयात के नुज़ूल के वक़्त उनके दूसरे दौरे ज़वाल को शुरु हुए पाँच सौ बरस होने को आये थे। इस सयाक़ व सबाक़ में उन्हें मुतनब्बा (ख़बरदार) किया जा रहा है कि:

आयत 8

“हो सकता है कि अब तुम्हारा रब तुम पर रहम करे, और अगर तुमने वही रविश इख़्तियार की तो हम भी वही कुछ करेंगे।”

عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يَرْحَمَكُمْ وَإِنْ عُذْتُمْ عُنَدَنَا

अगर तुमने पहले की तरह हमारी नाफ़रमानियों और अहकामे शरीअत से ऐराज़ की रविश इख़्तियार की तो हम भी उसी तरह फिर तुम्हें सज़ा देंगे।

“और हमने जहन्नम को काफ़िरो के लिये कैदख़ाना बना रखा है।”

وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيْرًا

नाफ़रमानियों की सज़ा दुनिया में तो मिलेगी ही, जबकि जहन्नम का अज़ाब इसके आलावा होगा। जिस तरह जानवरों को घेर कर बाड़े में बंद कर दिया जाता है इसी तरह आख़िरत में अल्लाह के नाफ़रमानों को इकठ्ठा करके जहन्नम के कैद खाने में धकेल दिया जायेगा। (اللَّهُمَّ لَا تَجْعَلْنَا مَعَهُمْ!)

आयत 9

“यक़ीनन यह कुरान रहतुमाई करता है उस राह की तरफ़ जो सबसे सीधी है”

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ

याद रखो! अब राहे हिदायत वही होगी जिसकी निशानदेही यह किताब करेगी जिसे हम अपने आख़री रसूल ﷺ पर नाज़िल कर रहे हैं। अब अल्लाह के क़सरे रहमत में दाख़िल होने का “शाहदरह” एक ही है और वो है यह कुरान। अब अगर तुम अल्लाह के दामने रहमत में पनाह लेना चाहते हो तो इस कुरान के रास्ते से होकर आओ। अगर ऐसा करोगे तो अल्लाह की रहमत के दरवाज़े एक बार फिर तुम्हारे लिए खुल जायेंगे और जो रफ़अतें और बरकतें इस आख़री नबी ﷺ की उम्मत के लिए लिखी गई हैं तुम भी उनमें हिस्सेदार बन जाओगे।

“और बशारत देता है उन अहले ईमान को जो नेक अमल भी करें कि उनके लिए बहुत बड़ा अज़्र है।”

وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ۝

आयत 10

“और यह कि जो लोग ईमान नहीं रखते आखिरत पर, उनके लिए हमने तैयार कर रखा है एक दर्दनाक अज़ाबा।”

وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

यहाँ यह नुक्ता काबिले गौर है कि जहाँ कहीं भी आमाल की खराबी की बात होती है वहाँ ईमान बिल्आखिरत का तज़क़िरा ज़रूर होता है।

इस रुकूअ के हवाले से यह बात बहुत अहम है कि यहाँ बनी इस्राईल के उरूज व ज़वाल के आईने में जो तस्वीर दिखाई गई है उसमें हमारे लिए एक दावते फ़िक्र है। अल्हम्दुलिल्लाह! आज हम (उम्मत मुहम्मद ﷺ) उम्मत मुस्लिमा हैं, लेकिन हमें मालूम होना चाहिए कि एक ज़माने में बनी इस्राईल भी उम्मत मुस्लिमा ही थे। वो ब-हैसियते नस्ल आज भी एक क्रौम के तौर पर मौजूद हैं मगर उन्हें उम्मत मुस्लिमा के मन्सब से माज़ूल कर दिया गया है। अब उन लोगों की हैसियत साबक़ा उम्मत मुस्लिमा की है और पिछले दो हज़ार बरस से यह लोग बहुत ज़्यादा सख़्तियों का शिकार रहे हैं। हमें इनकी क्रौमी तारीख के नशेब व फ़राज का जायज़ा लेकर यह मालूम करने की कोशिश करनी चाहिए कि वो कौन से अवामिल थे और उनके अक्राइद व आमाल की वो कौनसी खराबियाँ थीं जिनके बाइस वो लोग अल्लाह के यहाँ मग़ज़ूब व मअतूब ठहरे।

यहाँ दूसरा नुक्ता यह ज़हननशीन करने के लायक़ है कि साबक़ा और मौजूदा उम्मतों के दरमियान मुक़ाबले के लिए मैदान तेज़ी से तैयार हो रहा है और यूँ समझिये कि दो पतंगे ऊपर चढ़ रही हैं, जिनके दरमियान पेच पड़ने वाला हैं। बनी इस्राईल अपने इंतहाई ज़वाल को पहुँचने के बाद ब-हैसियत एक क्रौम के पिछले एक सौ साल से माद्दी लिहाज़ से रू-बा तरक्की हैं। उनकी पतंग 1917 ई. में बालफ़ोर (Balfor) डिक्लेरेशन की मंजूरी से ऊपर चढ़ना शुरु हुई और 1948 ई. में इस्राईल की रियासत मअरिज़े वुजूद में आ गई। 1966 ई. में उसकी मज़ीद तौसीअ अमल में आई और उसके तहफ़्फ़ुज़ को यक़ीनी बनाने के लिए ग़ैर-मामूली अक्रदामात किए गये। अरब दुनिया का वाहिद मुल्क इराक़ था जिससे इस्राईल को ख़तरा हो सकता था, उसे बाक़ायदा एक मंसूबे के तहत तबाह व बर्बाद कर दिया गया है। इसके बाद उस पूरे ख़ित्ते में अब कोई ऐसा मुल्क नहीं जो इस्राईल की ताक़त चैलेंज करने की सलाहियत रखता हो।

दूसरी तरफ़ देखा जाये तो मुस्लिम दुनिया भी अपने ज़वाल की आख़री हदों को छूने के बाद अब बेदारी की तरफ़ माईल है और इस उम्मत के अंदर नई ज़िन्दगी पैदा होने का वक़्त करीब नज़र आता है। पहली जंगे अज़ीम के बाद 1924 ई. में ख़िलाफ़ते उस्मानिया का ख़ात्मा गया हमारे ज़वाल की इन्तहा थी। उसके बाद आलमे इस्लाम में आज़ादी की तहरीकें चलीं और मुतअद्दिद मुस्लिम मुमालिक यूरोपी अक्रवाम के तसल्लुत से आज़ाद हो गये। मज़ीद बरौं उम्मत मुस्लिम में बहुत सी अहयाई तहरीकें उठीं, मसलन पाक व हिन्द में जमाते इस्लामी, मिस्त्र में इख़वानुल मुस्लिमून^{(18)*}, ईरान में फ़िदाई तहरीक और इंडोनेशिया में मस्जूमि पार्टी वगैरह, और इस तरह इसकी नशाते सानिया के अमल का आग़ाज हो गया। चुनौचे पिछली सदी से उम्मत मुस्लिमा की सफ़ों में ज़वाल और अहयाई अमल पहलु-ब-पहलु चल रहे हैं। जैसे सूरह रहमान में मुतवाज़ी चलने वाले दो दरियाओं की मिसाल दी गई है: {مَرْجَ الْبَحْرِ يَلْتَقِي} {يَتَّبِعُ الْبَحْرَ لَا يُلَاقِي} (आयात 19-20) “उसने दो दरिया रवां किए जो आपस में मिलते हैं। दोनों में एक आड़ है कि (उससे) तजावुज़ नहीं कर सकते।” अब सूरते हाल यह है कि साबक़ा और मौजूदा उम्मत मुस्लिमा की सूरत में दो पतंगें फ़िज़ा में तैर रही हैं और इनका आपस में किसी वक़्त भी पेंच पड़ सकता है।

यह तमाम तफ़सिलात उन लोगों के इल्म में होनी चाहिए जो दीन की ख़िदमत में मसरूफ़ हैं। उन्हें ज़मान व मकान के ऐतबार से दुरुस्त अदराक़ होना चाहिए कि वो कहाँ खड़े हैं, उनके दायें-बायें क्या हालात हैं? माज़ी में क्या होता रहा है, अभी सामने क्या कुछ है और मुस्तक़बिल में क्या इम्कानात हैं?

आयात 11 से 22 तक

وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَكَانَ الْإِنْسَانُ مَجْغُولًا ۝
 وَجَعَلْنَا آيَةَ الْتَهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ ۚ وَكُلُّ شَيْءٍ فَضْلُنُهُ
 تَفْصِيلًا ۝
 وَكُلُّ إِنْسَانٍ لَّزَمْنَهُ طَبْعُهُ فِي عُنُقِهِ ۚ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مِنْشُورًا ۝
 اِقْرَأْ كِتَابَكَ ۖ كَفَىٰ
 بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ۝
 مَن اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۚ وَمَن ضَلَّٰ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ
 وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ۝
 وَإِذَا أَرَدْنَا أَن نُّهْلِكَ قَرْيَةً ۖ قَرَّبْنَا بَثْمَافِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا فَحَقَّ
 عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا ۝
 وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِن بَعْدِ نُوحٍ ۚ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا
 بَصِيرًا ۝
 مَن كَانَ يَرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَن نُّرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ يَصْلَاهَا مَذْمُومًا مَّدْحُورًا ۝
 وَمَن أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُورًا ۝
 كُلًّا مِّدْهُوَ لَاءٌ وَهُوَ لَاءٌ مِّنْ
 عَطَاءِ رَبِّكَ ۚ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ۝
 أَنْظِرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلَآ خِرَةُ الْكِبَرِ دَرَجَاتٍ ۚ وَالْكِبَرُ
 تَفْصِيلًا ۝
 لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا مَّخْذُومًا ۝

आयत 11

“और इंसान शर माँग बैठता है (अपने नज़दीक) भलाई माँगते हुए।”

وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ

यानि इंसान अल्लाह से दुआ कर रहा होता कि ऐ अल्लाह! मेरे लिए यूँ कर दे, यूँ कर दे। हालाँकि उसे कुछ मालूम नहीं होता कि जो कुछ वह अपने लिए माँग रहा है वह उसके लिये मुफ़ीद (फ़ायदेमन्द) है या मुज़र (ख़तरनाक)। इस तरह इंसान अपने लिए अक्सर वो कुछ माँग लेता है जो उसके लिए उल्टा नुक़सान देह होता है। सूरह अल बक्ररह (आयत 216) में फ़रमाया गया है: {وَعَلَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَعَلَىٰ أَنْ تُحِبُّوا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ} “मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को नापसंद करो और वो तुम्हारे लिए बेहतर हो, और मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को पसंद करो और वो तुम्हारे लिए शर हो, अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।” चुनाँचे बेहतर लाइहा अमल यह है कि अल्लाह पर तवक्कुल करते हुए इंसान अपने मामलात उसके हवाले कर दे कि ऐ अल्लाह! मेरे मामलात तेरे सुपुर्द हैं, क्योंकि मेरे नफ़ा व नुक़सान को तू मुझसे बेहतर जानता है:

सुपुर्दम बुतों माया-ए-ख़वीश रा

तू दानी हिसाबे कम वबीश रा!

दुआ-ए-इस्तख़ारा में भी हमें तफ़ीज़े अम्र का यही अंदाज़ सिखाया गया है:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَغِيْزُكَ بِعِلْمِكَ وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيمِ ۖ فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ
 وَأَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ

“ऐ अल्लाह! मैं तेरे इल्म की बदौलत तुझसे ख़ैर चाहता हूँ और तेरी कुदरत की बरकत से ताक़त माँगता हूँ और तुझसे सवाल करता हूँ तेरे फ़जले अज़ीम का, बेशक तू हर चीज़ पर कुदरत रखता है और मेरे इख़्तियार में कुछ भी नहीं, तू सब कुछ जानता है और मैं कुछ भी नहीं जानता, और तू हर किस्म के ग़ैब को जानने वाला है।”(19)

बहरहाल इंसान का अमूमी रवैया यही होता है कि वह अल्लाह पर तवक्कुल करने के बजाय अपनी अक्ल और सोच पर इहंसार (भरोसा) करता है और इस तरह अपने लिए ख़ैर की जगह शर की दुआएँ करता रहता है।

“और इंसान बहुत जल्दबाज़ है।”

وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ۝

अपनी इस जल्दबाज़ी और कोताह नज़री की वजह से वो शर को ख़ैर और ख़ैर को शर समझ बैठता है।

आयत 12

“और हमने बनाया रात और दिन को दो निशानियाँ, तो तारीक (अंधेर) कर दिया हमने रात की निशानी को और रौशन बना दिया हमने दिन की निशानी को, ताकि तुम तलाश करो अपने रब का फ़ज़ल”

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ فَمَحَوْنَا آيَةَ اللَّيْلِ
وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ

दिन को रौशन बनाया ताकि उसकी रौशनी में तुम लोग आसानी से कसबे मआश के लिए दौड़-धूप कर सको।

“और ताकि तुम जान लो सालों की गिनती और (निज़ामुल अवक़ात का) हिसाब, और हर चीज़ को हमने खोल-खोल कर बयान कर दिया है।”

وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ وَكُلُّ شَيْءٍ
فَصَلْنَاهُ تَفْصِيلًا ۝

यह दिन और रात का उलट-फेर ही है जो निज़ामुल अवक़ात का बुनियादी ढाँचा फ़राहम करता है और दिनों से हफ्ते, महीने और फिर साल बनते हैं।

आयत 13

“और हर इंसान की किस्मत चिपका दी है हमने उसकी गर्दन में।”

وَكُلُّ إِنْسَانٍ لِّزَمْنِهِ لَظِيْرَةٌ فِي عُنُقِهِ

ظ़ि़ का लफ़्ज़ अरबी में आमतौर पर शगुन, नहसत और बदकिस्मती के लिए बोला जाता है, लेकिन यहाँ पर खुशबख़्ती और बदबख़्ती दोनों ही मुराद हैं। यानि किसी इंसान का जो भी मक़सूम (अपॉइंटमेंट) व मुक़द्दर है, ज़िन्दगी में अच्छा-बुरा जो कुछ भी उसे मिलना है, जैसे भी अच्छे-बुरे हालात उसे पेश आने हैं, इस सब कुछ के बारे में उसका जो खाता “उम्मुल किताब” में मौजूद है उसका हासिल उसकी गर्दन में चिपका दिया गया है। गर्दन में चिपकाने के अलफ़ाज़ का इस्तेमाल मुहावरतन भी हो सकता है और यह भी मुमकिन है कि इसकी कुछ माद्दी हकीकत भी हो। यानि हो सकता है कि अल्लाह तआला ने इंसान की गर्दन में किसी gland की सूरत में वाक़ई कोई माइक्रो कम्प्युटर नसब कर रखा हो। वल्लाहु आलम!

“और हम निकाल लेंगे उसके लिए क़यामत के रोज़ (उसे) एक किताब (की शक़ल में), वो पायेगा उसे खुली हुई।”

وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنشُورًا ۝

इन अलफ़ाज़ से तो ऐसा ही महसूस होता है कि इंसानी जिस्म के अंदर ही कोई ऐसा सिस्टम लगा दिया गया है जिसमें उसके तमाम आमाल व अफ़आल रिकॉर्ड हो रहे हैं और क़यामत के दिन एक चिप की शक़ल में उसे उसके सामने रख दिया जायेगा। इस चिप के अंदर उसकी ज़िन्दगी की सारी फिल्म मौजूद होगी, एक-एक हरकत जो उसने की होगी, एक-एक लफ़्ज़ जो उसने मुँह से निकाला होगा, एक-एक ख़याल जो उसके ज़हन में पैदा हुआ होगा, एक-एक नीयत जो उसके दिल में परवान चढ़ी होगी, सब डेटा पूरी तफ़्सील के साथ उसमें महफूज़ होगा। रोज़े क़यामत इस चिप को खोल कर खुली किताब की तरह उसके सामने रख दिया जायेगा और कहा जायेगा:

आयत 14

“पढ़ लो अपना आमाल नामा! आज तुम खुद ही अपना हिसाब कर लेने के लिए काफ़ी हो।”

إِقْرَأْ كِتَابَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ﴿١٧﴾

तुम्हारी ज़िन्दगी की किताब का एक-एक वरक़ इस क़द्र तफ़सील से तुम्हारे सामने मौजूद है कि तुम खुद ही अपना हिसाब कर सकते हो। तुम्हारा सारा debit/credit तुम्हारे सामने है।

आयत 15

“जिस किसी ने हिदायत की राह इख़्तियार की तो उसने अपने ही (भले के) लिये हिदायत की राह इख़्तियार की, और जो कोई गुमराह हुआ तो उसकी गुमराही का वबाल उसी पर है।”

مَنْ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا

“और कोई जान किसी दूसरी जान का बोझ उठाने वाली नहीं बनेगी।”

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ

रोज़े क़यामत हर किसी को अपनी बद् आमालियों का बोझ ज़ाती तौर पर खुद ही उठाना होगा। इस सिलसिले में कोई किसी की कुछ मदद नहीं कर सकेगा। सब अपने-अपने आमाल का अम्बार अपने-अपने कंधों पर उठाए होंगे।

“और हम अज़ाब देने वाले नहीं हैं जब तक कि किसी रसूल को ना भेज दें।”

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ﴿١٥﴾

यह अल्लाह तआला की सुन्नत रही है कि किसी भी क़ौम पर अज़ाबे इस्तेसाल उस वक़्त तक नहीं भेजा गया जब तक कि उस क़ौम की हिदायत के लिए और हक़ व बातिल का फ़र्क़ वाज़ेह कर देने के लिए कोई रसूल मबऊस नहीं कर दिया गया। अलबत्ता छोटे-छोटे अज़ाब इस क़ानून से मशरूत (अधिनियम में) नहीं। कुरान में क़ौमे नूह, क़ौमे हूद, क़ौमे सालेह अलै. वगैरह की मिसालें बार-बार बयान की गई हैं जिनसे इस असूल की वाज़ेह निशानदेही होती है कि किसी क़ौम को अज़ाब के ज़रिये उस वक़्त तक मुकम्मल तौर पर तबाह व बर्बाद नहीं किया जाता जब तक अल्लाह का मबऊस करदा रसूल उस क़ौम के लिए हक़ का हक़ होना बिल्कुल वाज़ेह ना कर दे और इस सिलसिले में उस क़ौम पर इत्मा मे हुज्जत ना हो जाये। यही मज़मून सूरह निसा में इस तरह बयान हुआ है: {رُسُلًا مُّبْتَلَيْنَ وَمُنْذِرِينَ لِّئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ} (आयत 165) “(उसने भेजे) रसूल खुशखबरी देने वाले और खबरदार करने वाले ताकि ना रहे लोगों के लिए अल्लाह के मुक़ाबले में कोई हुज्जत रसूल के बाद।”

आयत 16

“और जब हम इरादा करते कि तबाह कर दें किसी बस्ती को तो हम उसके खुशहाल लोगों को हुक्म देते और वो उसमें खूब ना-फ़रमानियाँ करते”

وَإِذَا أَرَدْنَا أَنْ نُهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا

“पस साबित हो जाती उस पर (अज़ाब की) बात, फिर हम उसको बिल्कुल नेस्तो-नाबूद कर देते।”

فَحَقَّقَ عَلَيْهَا الْقَوْلَ فَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا ﴿١٦﴾

यहाँ किसी बस्ती पर अज़ाबे इस्तेसाल के नाज़िल होने का उसूल बताया जा रहा है कि किसी भी मआशरे में इसका सबब वहाँ के दौलतमंद और खुशहाल लोग बनते हैं। यह लोग अलल ऐलान अल्लाह तआला के अहक़ाम की नाफ़रमानियाँ करते हैं। इस सिलसिले में उनकी दीदा दिलेरी के सबब उनकी रस्सी मज़ीद दराज़ की जाती है, यहाँ तक कि वो अपनी अय्याशियों और मनमानियों में तमाम हदें फ़लाँग़ कर पूरी तरह अज़ाब के मुस्तिहक़ हो जाते हैं, अवाम उन्हें उनके करतूतों से बाज़ रखने के लिए कोई किरदार अदा नहीं करते, बल्कि एक वक़्त आता है जब वो भी उनके साथ ज़राइम में शरीक हो जाते हैं

और यूँ ऐसा मआशरा अल्लाह के अज़ाब की लपेट में आ जाता है। ऐसे में सिर्फ़ वही लोग अज़ाब से बच पाते हैं जो नहीं अनिल मुन्कर का फ़रीज़ा अदा करते रहे हों।

आयत 17

“और कितनी ही क्रौमों को हमने हलाक किया नूह के बाद। और काफ़ी है आपका रब अपने बंदों के गुनाहों से बाख़बर रहने और उनको देखने के लिए।”

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ بَعْدِ نُوحٍ وَكَفَىٰ
بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿١٧﴾

आयत 18

“जो कोई आजला का तलबगार बनता है हम उसको जल्दी दे देते हैं उसमें से जो कुछ हम चाहते हैं, जिसके लिए चाहते हैं”

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ
نُرِيدُ

यहाँ पर “दुनिया” के बजाय “आजला” का लफ़्ज़ आया है। यह दोनो अलफ़ाज़ मुअन्नस हैं। “अदना” क़रीब की चीज़ को कहा जाता है, इसकी मुअन्नस “दुनिया” है जबकि “आजिल” के मायने जल्दी वाली चीज़ के हैं और इसकी मुअन्नस “आजला” है। यह दुनिया नक़द का सौदा है, यहाँ पर राहत भी फ़ौरन आसूदगी देती है और इसकी तकलीफ़ भी फ़ौरी तौर पर खुद को महसूस कराती है। इसी लिए इसे “आजला” कहा गया है। आजला के मुक़ाबले में आयत ज़ेरे नज़र में “आख़िरत” का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है जो कि कुरान हकीम में अक्सर “दुनिया” के मुक़ाबले में भी आता है। दुनिया आजला के मुक़ाबले में आख़िरत को आख़िरत इसलिए कहा जाता है कहा जाता है कि इसका सवाब व अज़ाब बाद में आने वाली चीज़ है।

आयत ज़ेरे नज़र में जो उसूल बयान हुआ है उसकी वज़ाहत यह है कि जो शख्स दुनिया की ऐश व दुनिया की दौलत व शौहरत हासिल करने का ख़्वाहिशमंद हो और सिर्फ़ उसी के लिए मन्सूबाबंदी, मेहनत और दौड़-धूप करे, उसकी मेहनत और दौड़-धूप को अल्लाह किसी ना किसी दर्जे में कामयाब कर देता है, मगर ज़रूरी नहीं कि जिस क़दर कोई दुनिया समेटना चाहे उसी क़दर उसे मिल भी जाये। और यह भी ज़रूरी नहीं कि जो कोई भी इस “आजला” को पाने की दौड़ में शामिल हो, कामयाब ठहरे, बल्कि हर किसी को वही कुछ मिलेगा जो अल्लाह चाहेगा, और सिर्फ़ उसी को मिलेगा जिसके लिए वो चाहेगा। बहुत से लोग ऐसे भी होते हैं जो असूले दुनिया के लिए सारी उम्र अपने आपको हलकान कर देते हैं, मगर दुनिया फिर भी हाथ नहीं आती। चुनाँचे यह अल्लाह का फैसला है कि जिसको वो चाहता है और जिस क़दर चाहता है दुनिया में उसकी मेहनत का सिला दे देता है।

“फिर हम मुक़रर कर देते हैं उसके लिए जहन्नम। वो दाख़िल होगा उसमें मलामत ज़दा, धुत्कारा हुआ।”

ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ يَصْلُهَا مَذْمُومًا مَذْحُورًا ﴿١٨﴾

उस शख्स की ख़्वाहिश और मेहनत सब दुनिया के लिए की थी, चुनाँचे दुनिया किसी ना किसी क़दर उसे दे दी गई। आख़िरत के लिए उसने ख़्वाहिश की थी और ना मेहनत, लिहाज़ा आख़िरत में सिवाय जहन्नम के उसके लिए और कुछ नहीं होगा।

आयत 19

“और जो कोई आख़िरत का तलबगार हो, और उसके लिए उसके शायाने-शान कोशिश करे और वो मोमिन भी हो”

وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ

यानि उसकी यह तलब सिर्फ़ ज़बानी दावा तक महदूद ना हो, बल्कि हसूले आख़िरत के लिये वो ठोस और हक़ीक़ी कोशिश भी करे, जैसा कि कोशिश करने का हक़ है। और फिर यह भी ज़रूरी है कि वह अहले ईमान में से हो, क्योंकि ईमान के बग़ैर अल्लाह के यहाँ बड़ी से बड़ी नेकी भी क़ाबिले कुबूल नहीं है।

“तो यही लोग होंगे जिनकी कोशिश की क़दर अफ़ज़ाई की जायेगी।”

فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُورًا ۝١٩

اللهم ربنا اجعلنا منهم۔ यह आयत हम में से हर एक के लिए लिट्मस टेस्ट है। इस टेस्ट की मदद से हर शख्स ठीक से मालूम कर सकता है कि वो अपनी ज़िंदगी के किस मोड़ पर है, किस हैसियत से खड़ा है? चुनाँचे हर इंसान को चाहिए कि वो अपनी मन्सूबा बंदियों और शबों-रोज़ भाग-दौड़ की तरजीहात का तजज़िया करके अपना अहतसाब करे कि वो किस क़दर दुनिया का तालिब है और किस हद तक फ़लाहे आख़िरत को पाने का ख़्वाहिशमंद? बहरहाल दुनिया पर आख़िरत को तरजीह देना और फिर अपने क़ौल व फ़अल से अपनी तरजीहात को साबित करना एक कठिन और दुश्वार काम है। अल्लाह तआला हम में से हर एक को इसकी अहमियत और तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन!

आयत 20

“हम सबको मदद पहुँचाए जा रहे हैं, इनको भी और उनको भी, आप صلی اللہ علیہ وسلم के रब की अता से।”

كُلًّا تُمِدُّ هَؤُلَاءِ وَهَؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ۝

यह दुनिया चूँकि दारुल इस्तिहान है इसलिए जब तक इंसान यहाँ मौजूद हैं, उनमें से कोई मुजरिम हो या इताअत गुज़ार, हर एक की बुनियादी ज़रूरयात पूरी हो रही हैं। यह अल्लाह तआला की खुसूसी नवाज़िश है जिसमें से वो अपने नाफ़रमानों और दुश्मनों को भी नवाज़ रहा है।

“और आपके रब की अता रुकी हुई नहीं है।”

وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ۝

दुनिया में अल्लाह तआला की यह अता और बख़्शिश आम है। इसमें दोस्त और दुश्मन के इस्तियाज़ की बुनियाद पर कोई क़दगन या रोक-टोक नहीं हैं।

आयत 21

“देखो कैसे हमने बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है!”

أُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ ۝

अल्लाह तआला ने इस दुनिया में बाज़ लोगों को माल व असबाब, ज़हनी व जिस्मानी सलाहियतें, शक्ल व सूरत और मक़ाम व मर्तबे में बाज़ दूसरों पर फ़ज़ीलत दे रखी है। यह उसकी मर्ज़ी और मशीयत का मामला है।

“लेकिन आख़िरत की ज़िन्दगी दर्जात और फ़ज़ीलत में इससे बहुत बढ़ कर होगी।”

وَلَا خِرَّةَ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأكْبَرُ تَفْضِيلًا ۝

दुनिया में तो दर्जात व फ़ज़ाइल जैसे भी हों, जितने भी हों, महदूद ही होंगे, मगर आख़िरत की नेअमतें और नवाज़िशें ऐसी ला महदूद और ला मुतनाही होंगी कि उनका मुवाज़ना व मुक़ाबला दुनिया की किसी चीज़ से मुमकिन ही नहीं होगा। यहाँ एक शख्स बीस-पच्चीस साल कुटिया में रह लेगा और एक दूसरा शख्स इतना ही अरसा महल में रह लेगा तो क्या फ़र्क़ वाक़ेअ हो जायेगा? आख़िरकार तो दोनों को यहाँ से जाना है लेकिन आख़िरत के आराम व आसाइश अब्दी होंगे। वहाँ के नेअमतों के बागात की अपनी ही शान होगी: {فَرُوحٌ وَرِجَانٌ وَجَنَّتْ نَعِيمٌ} (अल् वाक़िआ:89) “तो (उसके लिए) आराम और खुशबुदार फूल और नेअमत के हैं।”

आयत 22

“अल्लाह के साथ किसी और को मअबूद ना बनाओ, कि फिर बैठे रह जाओगे मज़मूम व बेसहारा होकर।”

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَقْعَدَ مَذْمُومًا مَّخْذُومًا

﴿٢٢﴾

आइंदा दो रकूक इस लिहाज़ से बहुत अहम हैं कि उनमें तौरात के अहकामे अशरह (Ten Commandments) को कुरानी असलूब में बयान किया गया है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. के नज़दीक इन अहकाम के अंदर तौरात की तालीमात का निचोड़ है। इन अहकाम का खुलासा हम सूरहतुल अन्आम के आखरी हिस्से में भी पढ़ आये हैं। यहाँ पर वही बातें ज़रा तफ़सील से बयान हुई हैं।

आयात 23 से 40 तक

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۚ إِنَّكَ بِلَدُنِّكَ الْكَبِيرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا آفٍ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ﴿٢٣﴾ وَخُفِضَ لَهُمَا جَنَاحُ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا ﴿٢٤﴾ رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ ۚ إِنَّ تَكُونُوا صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّابِينَ غَفُورًا ﴿٢٥﴾ وَابْتَغِ الْوَعْدَ الْحَقَّ ۚ إِنَّهُ كَانَ الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تَبْذُرْ تَبْذِيرًا ﴿٢٦﴾ إِنَّ الْمُبْذِرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ ۚ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ﴿٢٧﴾ وَإِذَا تَعَرَّضْتُمْ عَنْهُمْ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ﴿٢٨﴾ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعَدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ﴿٢٩﴾ إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٣٠﴾ وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ ۚ إِنَّكُمْ إِذَا قُتِلْتُمْ كَانَتْ خَطَايَا كَبِيرًا ﴿٣١﴾ وَلَا تَقْرُبُوا الرِّزْقَ الَّذِي كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ﴿٣٢﴾ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ وَمَن قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لَوْلِيٍّ سُلْطَانًا فَلَا يُسْرِفُ فِي الْقَتْلِ ۚ إِنَّهُ كَانَ مَنْصُورًا ﴿٣٣﴾ وَلَا تَقْرُبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۚ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ﴿٣٤﴾ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ ۚ إِذَا كِلْتُمَا بِالْقِسْطِ الْمُسْتَقِيمِ ۚ ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٣٥﴾ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۚ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ﴿٣٦﴾ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۚ إِنَّكَ لَن تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَن تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ﴿٣٧﴾ كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِندَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ﴿٣٨﴾ ذَلِكَ مِمَّا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۚ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتُلْقَىٰ فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَّدْحُورًا ﴿٣٩﴾ أَفَأَصْفُكُمْ رَبُّكُم بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا ۚ إِنَّكُمْ لَتَفْقَهُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ﴿٤٠﴾

आयात 23

“और फ़ैसला कर दिया है आप ﷺ के रब ने कि मत इबादत करो किसी की सिवाय उसके, और वालिदैन् के साथ हुस्ने सुलूक करो।”

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ

إِحْسَانًا

अल्लाह के हुक्म के फौरन बाद वालिदैन के हुक्म अदा करने की ताकीद इससे पहले हम सूरतुल बक्ररह की आयत 83 और सूरतुन्निसा की आयत 36 में भी पढ़ आये हैं। इसके बाद सूरह लुकमान की आयत 14 में यही हुक्म चौथी मर्तबा आयेगा।

“अगर पहुँच जायें तुम्हारे पास बुढ़ापे को उनमें से कोई एक या दोनों”

إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا

“तो उन्हें उफ़्र तक मत कहो और ना उन्हें झिड़को, और उनसे बात करो नर्मी के साथ।”

فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا

كَرِيمًا ﴿٢٣﴾

अगर कभी वालिदैन की बात को टालना भी पड़ जाये तो हिकमत और नर्मी के साथ ऐसा किया जाये। अक्ल और मन्तिक के बल पर सीना तान कर यूँ जवाब ना दिया जाये कि उनका दिल दुखे।

आयत 24

“और झुकाए रखो उनके सामने अपने बाजू आजिज़ी और नियाज़मंदी से”

وَاحْفَظْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ

जब भी अपने वालिदैन के सामने आओ तो तुम्हारी चाल-ढाल और गुप्तगू के अंदाज़ से आजिज़ी व इंकसारी और अदब व अहताराम का इज़हार होना चाहिए।

“और दुआ करते रहो: ऐ मेरे रब इन दोनों पर रहम फ़रमा जैसे कि इन्होंने मुझे बचपन में पाला।”

وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا ﴿٢٤﴾

अल्लाह तआला के हुज़ूर हर वक़्त उनके लिए दुआ गोह रहना चाहिए कि ऐ अल्लाह जब मैं ज़ईफ़, कमज़ोर और मोहताज था तो इन्होंने मेरी ग़िज़ा, मेरे आराम और मेरी दूसरी ज़रूरतों का इन्तज़ाम किया। मेरी तकलीफ़ को अपनी तकलीफ़ समझा और मेरे लिए अपने आराम व आराईश को कुर्बान किया। अब मैं तो इनके इन अहसानात का बदला नहीं चुका सकता। इसलिए मैं तुझी से दरख़वास्त करता हूँ कि तू उन पर रहम फ़रमा और अपनी खुसूसी शफ़क़त और मेहरबानी से उनकी ख़ताओं को माफ़ फ़रमा दे।

आयत 25

“तुम्हारा रब ख़ूब वाकिफ़ है उससे जो तुम्हारे दिलों में है। अगर तुम वाकई नेक होगे तो वो (अपनी तरफ़) रुज़ूअ करने वालों के लिए बड़ा बख़्शने वाला है।”

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ إِنَّ تَكُونُوا صَالِحِينَ

فَإِنَّهُ كَانَ لِلَّهِ وَأَيُّنَ غَفُورًا ﴿٢٥﴾

बूढ़े वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक के हुक्म पर कमा-हक्का अमल करना आसान काम नहीं। बुढ़ापे में इंसान पर “अरज़ले उम्र” का मरहला भी आता है, जिसके बारे में हम पढ़ आये हैं: {لَيْلًا يَغْلَمُ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا} (अल् नहल:70)। ऐसी कैफ़ियत में कभी बच्चों की सी आदतें लौट आती हैं और उनकी बहुत सी बातें नाक्राबिले अमल और अक्सर अहकाम नाक्राबिले तामील होते हैं। कहीं उन्हें समझाना भी पड़ता है और कभी रोकने-टोकने की नौबत भी आ जाती है। इन सब मराहिल में कोशिश के बावजूद कहीं ना कहीं कोई ग़लती हो ही जाती है और कभी ना कभी कोई कोताही रह ही जाती है। यहाँ उस सयाक़ व सबाक़ में बताया जा रहा है कि अल्लाह तआला सिर्फ़ तुम्हारे ज़ाहिरी अमल और रवैय्ये ही को नहीं देखता बल्कि वो तुम्हारे दिलों की नीयतों को भी जानता है। चुनाँचे अगर बंदे के दिल का रुज़ूअ अल्लाह की तरफ़ हुआ और नी उसकी नाफ़रमानी की ना हो तो छोटी-मोटी लगज़िशों को वह माफ़ फ़रमाने वाला है।

आयत 26

“और हक अदा करो क़राबत दारों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों का और फ़ज़ूल में माल मत उड़ाओ।”

وَاتِذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تَبْذُرْ تَبْذِيرًا ۝۱

तब्ज़ीर के मायने बिला ज़रूरत माल उड़ाने के हैं और यह इसराफ़ से बड़ा जुर्म है। इसराफ़ तो यह है कि किसी ज़रूरत में ज़रूरत से ज़ायद खर्च किया जाये। मसलन खाना खाना एक ज़रूरत है और यह ज़रूरत दो रोटियों और थोड़े से सालन से बखूबी पूरी हो जाती है, मगर इसी ज़रूरत के लिए कई-कई खानों पर मुश्तमिल दस्तरख्वान सजा दिये जायें तो यह इसराफ़ है। इसी तरह कपड़ा इंसान की ज़रूरत है जिसके लिए एक-दो जोड़े काफी हैं। अब अगर अलमारियों की अलमारियाँ तरह-तरह के जोड़ों, सूटों और पोशाकों से भरी पड़ी रहें हैं तो यह इसराफ़ के जुमरे में आयेगा। इसराफ़ के मुकाबले में तब्ज़ीर से मुराद ऐसे बेतहासा अखराजात हैं जिनकी सिरे से ज़रूरत ही ना हो, मसलन शादी ब्याह की रस्मों पर बेहिसाब खर्च करना और नाम व नमूद के लिए तरह-तरह के मौक़े पैदा करके उन पर माल व दौलत को ज़ाया करना तब्ज़ीर है।

आयत 27

“यक़ीनन माल को फ़ज़ूल उड़ाने वाले शयातीन के भाई हैं।”

إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ

यहाँ पर मुबज्ज़रीन को जो शयातीन के भाई करार दिया गया है, इसकी मन्तिक और बुनियाद क्या है? यह बात जब मेरी समझ में आई तो मुझ पर कुरान के ऐजाज़ का एक नया पहलु मुन्कशिफ़ हुआ। सूरह मायदा में अल्लाह तआला का फरमान है: {إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخُبْرِ وَالْمَيْسِرِ} (आयत 91) “शैतान तो यही चाहता है कि तुम्हारे दरमियान दुश्मनी व बुग़ज़ पैदा करे शराब और जुए के ज़रिए से....” इस आयत के मज़मून पर ग़ौर करने से यह हकीक़त समझ में आती है कि शराब और जुआ शैतान के वो ख़तरनाक हथियार हैं जिनकी मदद से वो इंसानों के दरमियान बुग़ज़ व अदावत की आग को भड़का कर अपने एजेंडे की तकमील चाहता है। चुनाँचे अगर शैतान का हदफ़ इंसानों के दिलों में एक-दूसरे के खिलाफ़ बुग़ज़ और अदावत के जज़्वात पैदा करना है तो उसका यह हदफ़ तब्ज़ीर के अमल से भी बखूबी पूरा हो जाता है और यूँ “मुबज्ज़रीन” इस मक्र व एजेंडे की तकमील के लिए शैतान के कंधे से कंधा और उसके क़दम से क़दम मिलाये सरग़में अमल नज़र आते हैं। इस तलख़ हकीक़त को एक मिसाल से समझें। ज़रा तसव्वुर करें कि एक सेठ साहब की बेटी की शादी के मौक़े पर उसकी कोठी बक्का-ए-नूर बनी हुई है, खूब धूम-धड़ाका है और महज़ नमूद व नुमाईश के लिए माल व दौलत को बेदरीग़ लुटाया जा रहा है। दूसरी तरफ़ इसी सेठ साहब का एक मुलाज़िम है जो सिर्फ़ अपनी गुरबत के सबब अपनी बेटी के हाथ पीले नहीं कर पा रहा और सेठ साहब के यह तमाम तब्ज़ीरी चलन अपनी आँखों से देख रहा है। यह सब कुछ देखते हुए लाज़िमी तौर पर उस गरीब के दिल में नफ़रत, बुग़ज़ और दुश्मनी का लावा जोश मारेगा। अब अगर उसे मौक़ा मिले तो यह आतिश फ़शाँ पूरी शिद्दत से फटेगा और वो गरीब मुलाज़िम अपने मालिक का पेट फाड़ कर उसकी दौलत हासिल करने की कोशिश करेगा। इसी तरह फ़ज़ूल लुटाई जाने वाली दौलत की नुमाईश से अमरा के खिलाफ़ मआशरे के महरूम लोगों के दिलों में बुग़ज़ व अदावत और नफ़रत की आग़ भड़कती है और यूँ शैतान के एजेंडे की तकमील होती है। इसी शैतानी एजेंडे की तकमील के लिए मुआवनीन का किरदार अदा करने के बाइस मुबज्ज़रीन को यहाँ इख़वानुशयातीन करार दिया गया है।

“और यक़ीनन शैतान अपने रब का बहुत ही नाशुक्रा है।”

وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ۝۲

आयत 28

“और अगर तुम्हें ऐराज करना ही पड़ जाये उनसे अपने रब की रहमत के इंतज़ार में जिसकी तुम्हें उम्मीद है”

وَأَمَّا نَعْرَضَنَّهُمْ عَنْهُمْ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِّن رَّبِّكَ تَرْجُوهَا

कभी यूँ भी होता है कि कोई मोहताज अपनी किसी हाजत बरआरी के लिए ऐसे मौके पर आपके पास आता है जब आपके पास भी उसे देने के लिए कुछ नहीं होता। आपको अल्लाह तआला से अच्छे दिनों और फ़राखदस्ती की उम्मीद तो है मगर वक़्ती तौर पर आप साइल की हाजत से ऐराज करने पर मज़बूर हैं और चाहते हुए भी उसकी मदद नहीं कर सकते। अगर तुम्हें किसी वक़्त ऐसी सूरतेहाल का सामना हो:

“तो उनसे कहो नर्म बाता।”

فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ﴿٢٨﴾

ऐसे मौके पर साइल को झिड़को नहीं, बल्कि मतानत और शराफ़त से मुनासिब अल्फ़ाज़ में उससे माज़रत कर लो।

आयत 29

“और ना बाँध लो अपने हाथ को अपनी गर्दन के साथ”

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ

यह इस्तआरा है बुख़ल और कंजूसी का। यानि आप अपने हाथ को अपनी गर्दन के साथ बाँध कर किसी को कुछ देने से खुद को माज़ूर ना कर लें।

“और ना उसे बिल्कुल ही खुला छोड़ दो”

وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ

बाज़ अवक़ात इंसान के अंदर नेकी का ज़ब्बा इस क़दर जोश खाता है कि वो अपना सब कुछ अल्लाह की राह में लुटा देना चाहता है।

“कि फिर बैठे रहो मलामत ज़दा हारे हुए।”

فَتَقْعَدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ﴿٢٩﴾

ऐसा ना हो कि एक वक़्त में तो ज़ब्बात में आकर इंसान सारा माल कुर्बान कर दे मगर बाद में पछताए कि यह मैंने क्या कर दिया? अब क्या होगा? अब मेरी अपनी ज़रूरियात कहाँ से पूरी होंगी? चुनाँचे इंसान को हर हाल में ऐतदाल की रविश इख़्तियार करनी चाहिए।

आयत 30

“यक़ीनन तुम्हारा रब कुशादा करता है रिज़क़ जिसके लिए चाहता है और तंग करता है (जिसके लिए चाहता है)।”

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ

बाज़ अवक़ात अल्लाह का कोई बंदा चाहता है कि मैं कोशिश करके अपने फ़लों नादार रिश्तेदार के हालात बेहतर कर दूँ, मगर उसकी पूरी कोशिश के बावजूद उसके हालात नहीं सुधरते। ऐसी कैफ़ियत के बारे में फ़रमाया गया कि किसी के रिज़क़ की तंगी और फ़राखी का फैसला अल्लाह तआला करता है, इसमें तुम लोगों को कुछ इख़्तियार नहीं। लिहाज़ा तुम लोग अपनी सी कोशिश करते रहो और नताइज अल्लाह पर छोड़ दो।

“यक़ीनन वो अपने बंदों की ख़बर रखने वाला (और उनके हालात को) देखने वाला है।”

إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٣٠﴾

आयत 31

“और अपनी औलाद को क़त्ल ना करो मुफ़्लिसी के अंदेशे से।”

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ

कदीम ज़माने में क़त्ले औलाद का मुहरक (प्रोत्साहन) इफ़्लास (गरीबी) का खौफ़ हुआ करता था। आज-कल हमारे यहाँ बर्थ कंट्रोल और अबादी के मन्सूबे बंदी के बारे में जो इज्जतमाई सोच पाई जाती है और उस सोच के मुताबिक़ इफ़रादी और इज्जतमाई सतह पर जो कोशिशें हो रही हैं उनकी कई सूरतें भी इस आयत के हुक्म में आती हैं। इस सिलसिले में मज्मूई तौर पर कोई एक हुक्म नहीं लगाया जा सकता। इसकी तमाम सूरतें हराम मुतलक़ नहीं, बल्कि बाज़ सूरतें जायज़ भी हैं, जबकि बाज़ मकरूह और बाज़ हराम। मगर ऐसी सोच को एक इज्जतमाई तहरीक की सूरत में मुनज्ज़म करना बहरहाल ईमान और तवक्कुल अल्लल्लाह की नफ़ी है। इस कोशिश का सीधा और साफ़ मतलब यह है कि इंसान को अल्लाह के राज़िक़ होने पर ईमान व यक़ीन नहीं और वो खुद अपनी जमा तफ़रीक़ से हिसाब पूरा करने की कोशिश करना चाहता है। दरअसल इंसान अल्लाह के ख़ज़ानों और वसाइल की वुसअतों का कुछ अंदाज़ा नहीं कर सकता और उसे अपनी इस कोताही और माज़ूरी का अदराक़ होना चाहिए। मसलन कुछ अरसा पहले तक इंसान को अंदाज़ा नहीं था कि समुद्र के अंगर इंसानी गिज़ा के किस क़द्र वसीअ ख़ज़ाने पोशीदा हैं और उसे यह भी मालूम नहीं था कि समुद्री गोश्त {حَيَاطِيّ} (नहल:14 और फ़ातिर:12) की अफ़ादियत इंसानी सेहत के लिए red meat के मुक़ाबले में किस क़द्र ज़्यादा है।

इस ज़िम्न में एक अहम बात यह जानने की है कि मुख़्तलिफ़ मानाअ हमल तरीक़ों और कोशिशों पर “क़त्ले औलाद” के हुक्म का इतलाक़ नहीं होता, लेकिन बाक़ायदा हमल ठहर जाने के बाद उसे ज़ाया करना बहरहाल क़त्ल के जुमरे में ही आता है।

“हम उसको भी रिज़क़ देंगे और तुम्हें भी।”

نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ

तुम यह समझते हो कि तुम्हें जो रिज़क़ मिल रहा है वो तुम्हारी अपनी मेहनत और मन्सूबा बंदी का नतीजा है। ऐसा हरगिज़ नहीं, तुम्हारे हक़ीक़ी राज़िक़ हम हैं और जैसे हम तुम्हें रिज़क़ दे रहे हैं उसी तरह तुम्हारी औलाद के रिज़क़ का बंदोबस्त भी हमारे ज़िम्मे है।

“यक़ीनन उनको क़त्ल करना बहुत बड़ी ख़ता है।”

إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْأً كَبِيرًا ۝

आयत 32

“और ज़िना के क़रीब भी मत जाओ”

وَلَا تَقْرُبُوا الزَّانِيَ

यहाँ “ज़िना मत करो” के बजाय वो हुक्म दिया जा रहा है जिसमें इंतहाई अहतियात का मफ़हूम पाया जाता है कि ज़िना के क़रीब भी मत फ़टको। यानि हर उस मामले से खुद को महफूज़ फ़ासले पर रखो जो तुम्हें ज़िना तक ले जाने या पहुँचाने का सबब बन सकता हो।

“यक़ीनन यह बहुत बेहयाई का काम है, और बहुत ही बुरा रास्ता है।”

إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ۝

आयत 33

“और मत क़त्ल करो उस इंसानी जान को जिसे अल्लाह ने मोहतरम ठहराया है मगर हक़ के साथ।”

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۝

यहाँ “हक़” से मुराद चंद वो सूरतें हैं जिनमें इंसानी जान का क़त्ल जायज़ है। उनमें खून का बदला खून, इस्लामी रियासत में मुर्तद की सज़ा मौत, शादी शुदा ज़ानी और ज़ानिया का रज्म और हर्बी काफ़िर का क़त्ल शामिल है।

“और जिसे क़त्ल कर दिया गया मज़्लूमी में, तो उसके वली को हमने इख़्तियार दिया है”

وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لَوَلِيِّهِ سُلْطَانًا

इस्लामी क़ानून में मक़तूल के वुरसा को इख़्तियार है कि वो जान के बदले जान की सज़ा पर इसरार करें या माफ़ कर दें या फिर खून बहा ले लें। यह तीनों इख़्तियारात मक़तूल के वुरसा ही को हासिल हैं। किसी अदालत या सरबराहे मम्लकत को इसमें कुछ इख़्तियार नहीं।

“तो वो भी क़त्ल में हद से तजावुज़ ना करे।”

فَلَا يُسْرِفُ فِي الْقَتْلِ

यानि जान के बदले जान का फ़ैसला हो तो उसमें तजावुज़ करने की इजाज़त नहीं है। ऐसा ना हो कि एक आदमी के बदले मुख़ालिफ़ फ़रीक़ के ज़्यादा लोग क़त्ल कर दिए जायें, तरीक़ा-ए-क़त्ल में किसी क्रिस्म की ज़्यादती की जाये या किसी भी अंदाज़ में अपने इस इख़्तियार का नाजायज़ इस्तेमाल किया जाये।

“उसकी मदद की जायेगी।”

إِنَّهُ كَانَ مَنصُورًا ﴿٣٤﴾

क्रातिल को पकड़ने, उस पर मुक़दमा चलाने और इंसाफ़ दिलाने तक के तवील और पेचीदा अमल में हर मरहले पर मक़तूल के वुरसा की मदद करना रियासत की ज़िम्मेदारी है। इस सिलसिले में एक अहम नुक्ता यह है कि क़त्ल के मुक़दमात में रियासत या हुकूमत मुद्दई नहीं बनेगी, बल्कि मक़तूल के वुरसा ही मुद्दई होंगे। हमारे यहाँ जो “सरकार बनाम फ़लाँ” के उन्वान से मुक़दमा बनता है वो मामला सरासर ग़ैर इस्लामी है।

आयत 34

“और मत क़रीब जाओ यतीम के माल के मगर अहसन तरीक़े से”

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ

यह आयत क़बूल अजें हम सूरतुल अन्आम (आयत 152) में भी पढ़ चुके हैं। यानि यतीम के माल को हड़प करने, उससे नाजायज़ फ़ायदा उठाने या उसे ज़ाया करने की कोशिश ना करो, बल्कि उसकी हिफ़ाज़त करो और उसे हर तरह से सम्भाल कर रखो:

“यहाँ तक कि वो अपनी जवानी को पहुँच जाये”

حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ

“और अहद को पूरा करो, यक़ीनन अहद के बारे में बाज़-पुर्स होगी।”

وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ﴿٣٥﴾

आयत 35

“और जब तुम नापो तो पैमाना पूरा भरो, और वज़न को सीधी तराज़ के साथ।”

وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزَنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ

“यही बेहतर है और अंजाम के ऐतबार से भी खूबतर है।”

ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٣٥﴾

अगर तुम नाप-तौल पूरा करते हो और लेन-देन के तमाम मामलात दयानत दारी से सरअंजाम देते हो तो हज़रत शोऐब अलै. के फ़रमान के मुताबिक़: {يَقِيْتُ اللَّهَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ} (हूद:86) “अल्लाह का दिया हुआ मुनाफ़ा ही तुम्हारे लिए

बेहतर है अगर तुम ईमान वाले हो।" दयानतदारी से कमाया हुआ मुनाफ़ा थोड़ा भी होगा तो अल्लाह तआला उसमें बरकत अता करेगा।

आयत 36

"और मत पीछे पड़ो उस चीज़ के जिसके बारे में तुम्हें इल्म नहीं।"

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ

बहैसियत अशरफ़ुल मख़्लूक़ात इंसान का तर्ज़े अमल ख़ालिस इल्म पर मन्नी होना चाहिए। उसे ज़ेब नहीं देता कि वो अपने किसी अमल या नज़रिये की बुनियाद तोहमतों पर रखे या ऐसी मालूमात को लायक़-ए-ऐतनाअ समझे जिनकी कोई इल्मी सनद ना हो। मगर सवाल पैदा होता है कि खुद इंसानी इल्म की बुनियाद और उसका मिम्बा क्या है? इस सिलसिले में हम जानते हैं कि बुनियादी तौर पर इंसानी इल्म की दो अक़साम हैं। एक इक़तसाबी इल्म (acquired knowledge) और दूसरा इल्हामी इल्म (revealed knowledge)। इक़तसाबी इल्म की बुनियाद वही इल्मुल अस्माअ है जो अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलै. को सिखाया था और जिसका ज़िक्र हम सूरतुल बक्ररह के चौथे रकूअ में पढ़ आये हैं। इस इल्म का ताल्लुक़ इंसानी हवास और ज़हन से है। इंसान अपने हवास की मदद से यह इल्म हासिल करके अपने ज़हन में महफूज़ करता रहता है। ज्यों-ज्यों इंसान के तजुर्वे और मुशाहिदे का दायरा फैलता है इस इल्म में भी तौसीअ होती जाती है और यूँ यह इल्म कुर्रा-ए-अर्ज़ पर इंसानी ज़िन्दगी के रोज़े अब्बल से लेकर आज तक मुसलसल इरतकाअ पज़ीर है। दूसरी तरफ़ इल्हामी इल्म है जिसका इंसान के हवास से क़तअन कोई ताल्लुक़ नहीं। इस इल्म के तमाम ज़राय मसलन वही (जली या ख़फ़ी) "इल्हाम" कश्फ़ और रुअया-ए-सादका (सच्चे ख़्वाब) का ताल्लुक़ इंसान के हैवानी वजूद के बजाय उसके रूहानी वजूद से है। इंसानी रूह इस इल्म को बराहेरास्त मौसूल करती है और इसका मसकन व मरकज़ इंसानी क़ल्ब है। इस सिलसिले में दूसरा अहम नुक्ता यह है कि अंबिया अलै. पर नाज़िल होने वाली वही, चाहे जली हो या ख़फ़ी, नुबुवत का हिस्सा है और इल्मी लिहाज़ से एक क़तई दलील या बुरहाने क़ातअ है। लेकिन किसी आम शख्स को वही ख़फ़ी, इल्हाम या कश्फ़ के ज़रिए मिलने वाला इल्म दूसरों के लिए कोई इल्मी दलील फ़राहम नहीं करता। ऐसा इल्म सिर्फ़ मुताल्का शख्स के लिए दलील हो सकता है और वो भी सिर्फ़ उस सूरत में जब वह खिलाफ़े शरीअत ना हो। इस हवाले से देखा जाये तो आयत ज़ेरे नज़र में इंसान का इक़तसाबी इल्म ज़ेरे बहस है।

"यक़ीनन समाअत, बसारत और अक़ल सभी के बारे में बाज़पुर्स की जायेगी।"

إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَئِكَ كَانَ عَنْهُ

مَسْئُولًا ﴿٣٦﴾

अल्लाह तआला ने इंसान को इल्म के इक़तसाब व इस्तेमाल के लिए हवासे ख़म्सा (जिनमें से दो अहमतरिन हवास का ज़िक्र यहाँ किया गया है) और अक़ल से नवाज़ा है और इस लिहाज़ से उसकी इन सलाहियतों का अहतसाब भी होगा। यहाँ पर लफ़्ज़ फ़ुआद बहुत अहम है जिसकी वज़ाहत ज़रूरी है। आम तौर पर इस लफ़्ज़ का तर्जुमा "दिल" किया गया है, मगर इस तर्जुमे के लिए कोई लुग्वी बुनियाद मौजूद नहीं। इस लफ़्ज़ का माद्दा वही है जिससे लफ़्ज़ फ़ायदा मुश्तक़ है और लफ़्ज़ फ़ायदा के मायने किसी चीज़ के उस जौहर या लुब्बे-लुबाब के हैं जो उस चीज़ में असल मक़सूद होता है। पुराने दौर की कुतुब (किताबों) में यह अंदाज़ आम मिलता है कि कोई हिकायत या रिवायत बयान करने के बाद उसका नतीजा बयान करने के लिए लफ़्ज़ फ़ायदा या सिर्फ़ "फ़" लिख दिया जाता था। इससे यह वाज़ेह होता है कि किसी तफ़्सील के खुलासे या किसी काम के नतीजे को फ़ायदा कहा जाता है। लफ़्ज़ "फ़ईद" भी इसी माद्दे से मुस्तक़ है। अरबी में "फ़ईद" किसी सबज़ी या गोश्त वग़ैरह की भुजिया को कहा जाता है और इस लफ़्ज़ (फ़ईद) में भी नतीजा या खुलासा वग़ैरह का मफ़हूम पाया जाता है। यानि गोश्त वग़ैरह को उबालने व भूनने से जब उसका फ़ालतु पानी खुशक हो जाता है तब उसमें से बहुत थोड़ी मिक्कदार में वो चीज़ हासिल होती है जिस पर लफ़्ज़ फ़ईद का इतलाक़ होता है।

इस लुग्वी वज़ाहत के बाद लफ़्ज़ "फ़ुआद" के मफ़हूम और इंसानी हवास के साथ इसके ताल्लुक़ को समझने में आसानी होगी। हवासे इंसानी अपने-अपने ज़राय से मालूमात हासिल करके दिमाग तक पहुँचाते हैं। दिमाग का कंप्यूटर उन मालूमात को process करता है, पहले से मौजूद अपने ज़ख़ीरा-ए-मालूमात के साथ उनका तताबुक़ (tally) या तक्राबुल

अल्लामा इक़बाल ने इसी हवाले से अपने खुत्बात में फ़रमाया है: The inner core of the western civilization is Quranic” कि मौजूदा मगरबी तहज़ीब का अंदरूनी महवर (axis) ख़ालिस क़ुरानी है, क्योंकि उसकी बनियाद साइंस

पर है और साइंसी उलूम की तरफ़ इंसान की तबज्जोह कुरान ने मब्ज़ूल (आकर्षित) करवाई है। बहरहाल कुरान इंसान को हर क्रिस्म के तोहमात, रमल, नज़ूम पामिस्ट्री वगैरह से बेज़ार करके अपने मामलात और नज़रियात की बुनियाद ठोस इल्मी हकाइक़ पर रखने की हिदायत करता है।

इंसानी ज़िन्दगी के सफ़र में तवाज़ुन रखने के लिए मज़कूरा दोनों क्रिस्म के उलूम (इकतसाबी और इल्हामी) अपने-अपने दायरा-ए-अमल में निहायत अहम हैं। दोनों की अहमियत इससे भी वाज़ेह होती है कि हज़रत आदम अलै. की पैदाइश के फ़ौरन बाद आपको इल्मुल अस्माअ (यह वही इल्म है जिसका ताल्लुक़ इंसानी हवास से है और वक़्त के साथ-साथ जिसका दायरा वसीअ होता जा रहा है) से भी नवाज़ दिया गया था और आपको ज़मीन पर भेजते वक़्त इल्हामी इल्म की इत्तेबाअ (following) की हिदायत भी कर दी गई थी: {فَإِنَّمَا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنِّي هُدًى مِّن تَبِعَ هَدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ} (बकरह:38) “फिर अगर आये तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत, तो जिसने पैरवी की मेरी हिदायत की तो उनको ना कोई ख़ौफ़ होगा और ना ही वो ग़मगीन होंगे।”

यूरोपी मआशरा इस सिलसिले में बहुत बड़ी कोताही का मुरतकिब हुआ है कि उस मआशरे में सारी तबज्जोह इकतसाबी इल्म पर मरकूज़ करके इल्हामी इल्म से बिल्कुल ही सफ़े नज़र कर लिया गया। गोया अल्लाह तआला ने इंसान को दो आँखें दी थीं, उनमें एक इकतसाबी इल्म की आँख थी और दूसरी इल्हामी इल्म की। यूरोप में एक आँख को मुकम्मल तौर पर बंद करके हर चीज़ को देखने और परखने के लिए दूसरी अकेली आँख पर ही इन्हसार कर लिया गया। नतीजतन ना तो इंसान की सोच में ऐतदाल रहा ना अमल में तवाज़ुन, और यूँ इस पूरे मआशरे ने यक चश्मी दज्जालियत की शक़ल इख़्तियार कर ली।

आयत 37

“और ज़मीन में अकड़ कर ना चलो, ना तो तुम ज़मीन को फाड़ सकोगे और ना ही पहाड़ों की बुलंदी को पहुँच सकोगे।”

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَن تَخْرِقَ الْأَرْضَ
وَلَن تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ﴿٣٧﴾

तुम जिस क़द़ चाहो ताक़तवर हो जाओ, और हमारी ज़मीन पर जितना भी अकड़-अकड़ कर और पाँव मार-मार कर चल लो, तुम अपनी ताक़त से ज़मीन को फाड़ नहीं सकते, और जिस क़द़ चाहो गर्दन अकड़ा लो और तुरा व दस्तार से सर बुलंद कर लो, तुम क़द़ में हमारे पहाड़ों के बराबर तो नहीं हो सकते।

आयत 38

“इन सब बातों की बुराई (का पहलु) तेरे रब को बहुत ना पसंद है।”

كُلُّ ذَلِكْ كَانَ سَبِيئُهُ عِندَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ﴿٣٨﴾

यानि यह जितने भी अहक़ाम हैं इनमें अवामिर (Do's) भी हैं और नवाही (Don'ts) भी। जहाँ किसी काम के करने का हुक्म है वहाँ उसे ना करना बुराई है और जहाँ किसी काम से रोका गया है वहाँ उसमें मुलव्विस होना बुराई है। और नाफ़रमानी और बुराई अल्लाह तआला को हर सूरत में ना पसंद है।

आयत 39

“यह है जो (ऐ मुहम्मद ﷺ) आपके रब ने आपकी तरफ़ वही की है हिक्मत में से।”

ذَلِكَ مِمَّا أَوْحَى إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ

यह अहक़ाम नौए इंसानी के लिए ख़जाना-ए-हिक्मत हैं। इंसानी तहज़ीब व तमद्दुन, सक़ाफ़त और इज्तमाइयत के इन उसूलों पर कारबंद होकर इंसान इसी दुनिया में अपनी इज्तमाई ज़िन्दगी को जन्नत बना सकता है।

“और मत ठहराओ अल्लाह के साथ कोई दूसरा मअबूद, वरना तुम झोंक दिये जाओगे जहन्नम में मलामत ज़दा, धुत्कारे हुए।”

وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتُلْقَىٰ فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَّدْحُورًا ٣٩

यहाँ क़ाबिले गौर नुक्ता यह है कि इन अहकाम में अब्बल व आखिर तौहीद का हुक्म दिया गया है। आगाज़ में {وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِلَٰهًا} के अल्फाज़ आये थे, जबकि आखिर में इसी मज़मून को {وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ} के अल्फाज़ में फिर दोहराया गया है।

आयत 40

“तो क्या तुम्हें तो मुन्तख़ब कर लिया है तुम्हारे रब ने बेटों के साथ और अपने लिए बना ली हैं फरिश्तों में से बेटियाँ?”

أَفَأَصْفُكُمْ رَبُّكُم بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا

यह अहले अरब के उस अक्कीदे का जवाब है कि फरिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं। यह लोग बेटों पर फ़ख़ करते थे और बेटियों को अपने लिए बाइसे आर समझते थे। उनकी इसी सोच की बुनियाद पर उनसे सवाल किया गया है कि जिस चीज़ को अपने लिए आर (शर्म) समझते हो उसे आखिर किस मन्तिक के मुताबिक़ अल्लाह से मन्सूब करते हो?

“यह तो तुम बहुत बड़ी (गुस्ताख़ी की) बात कहते हो!”

إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ٤٠

आयत 41 से 52 तक

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ٤١ قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذَا أُتْبِعُوا إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ٤٢ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ٤٣ تَسْبِيحُ لَهُ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ٤٤ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُورًا ٤٥ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِذَا ذُكِّرْتُ بِرَبِّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَّوْا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ٤٦ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَبِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَبِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ٤٧ أَنْظِرْ كَيْفَ صَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ٤٨ وَقَالُوا إِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاءًا إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ٤٩ قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ٥٠ أَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ فَسَيَقُولُونَ مَنْ يُعِيدُنَا قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هُوَ قُلْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ٥١ يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ٥٢

आयत 41

“और हमने फेर-फेर कर बयान किया है इस कुरान में (अपनी आयात को) ताकि यह सबक हासिल करें।”

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا ۝

इनकी नसीहत के लिए हमने कुरान में असलूब बदल-बदल कर हक़ को वाज़ेह किया है। इस सूरह मुबारक के बारे में एक ख़ास बात यह है कि इसमें कुरान का लफ़्ज़ और ज़िक्र बार-बार आया है। गोया इस सूरत के मज़ामीन का ताना-बाना कुरान से मुताल्लिक है। इससे पहले आयत 9 में फ़रमाया गया: {إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَذِّكُّ لِلنَّاسِ أَنْفُسَهُمْ} आयत ज़ेरे नज़र में भी कुरान का ज़िक्र है और यह ज़िक्र इस अंदाज़ में आइंदा आयात में भी बार-बार आयेगा।

“मगर यह नहीं बढ़ाता इन्हें मगर नफ़रत ही में।”

وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۝

यह उन लोगो की बदबख़्ती है कि कुरान में गोना-गों असलूबों में हक़ वाज़ेह हो जाने के बावजूद उनकी बेज़ारी और नफ़रत ही में इज़ाफ़ा हो रहा है और वो हक़ से और ज़्यादा दूर भागे जा रहे हैं।

आयत 42

“आप ﷺ कहिए कि अगर उसके साथ कुछ दूसरे मअबूद भी होते, जैसा कि ये कहते हैं, तब तो वो ज़रूर तलाश करते साहिबे अर्श की तरफ़ कोई रास्ता।”

قُلْ لَوْ كَانَ مَعَ إِلَهَةٍ كَمَا يَقُولُونَ إِذَا الْأَبْتَعُوا إِلَىٰ

ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ۝

अगर वाकई अल्लाह के साथ-साथ दूसरे मअबूदों का भी कोई वजूद होता तो वो ज़रूर सरकशी और बगावत करते हुए उसके मुक़ाबले में आने की कोशिश करते। जिस तरह छोटे-छोटे राजाओं की फ़ितरी ख़्वाहिश होती है कि वो किसी ना किसी तरह कोशिश करके महाराजा की कुर्सी तक पहुँच जायें, और अपनी इस ख़्वाहिश की तक्मील के लिए वो बगावत तक का ख़तरा मोल ले लेते हैं, इसी तरह अगर अल्लाह के भी शरीक होते तो वो भी अल्लाह के मुक़ाबले में ज़रूर मुहिम जोई करते और अगर ऐसा होता तो इस कायनात का सारा निज़ाम दरहम-बरहम होकर रह जाता।

आयत 43

“वो पाक है और बहुत ही बुलंद व बरतर है उन बातों से जो ये कह रहे हैं।”

سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ۝

आयत 44

“उसकी तस्बीह में लगे हुए हैं सातों आसमान और ज़मीन और (वो तमाम मख़्लूक भी) जो उनमें है।”

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ

इस कायनात की एक-एक चीज़, चाहे जानदार हो या बज़ाहिर बेजान, वो अल्लाह की तस्बीह करती है। तस्बीह की एक सूरत तो यह है कि कायनात की हर चीज़ अपने वजूद से गोया अपने ख़ालिक की ख़ल्लाक़ी और अपने सानेअ (बनाने वाले) की सन्नाई का ऐलान कर रही है। जैसे एक तस्वीर अपने मुसव्विर के मैयार-ए-फ़न का इज़हार करती है, लेकिन तमाम मख़्लूक़ात का एक तर्ज तस्बीह क़ौली भी है। अल्लाह तआला ने हर चीज़ को ज़बान अता कर रखी है और वो अपनी ज़बान ख़ास से अल्लाह की तस्बीह में मसरूफ़ है।

“और कोई चीज़ नहीं मगर यह कि वो तस्बीह करती है उसकी हम्द के साथ, लेकिन तुम नहीं समझ सकते उनकी तस्बीह को।”

وَأَنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ

تَسْبِيحَهُمْ ۝

“यक्रीनन वो बहुत तहम्मूल वाला, बहुत बख्शने वाला है।”

إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝

हर चीज़ का यही अंदाज़े तस्बीह है जिसका इदराक इंसान नहीं कर सकते। सूरह हामीम सज्दा की आयत 21 में अल्लाह की इस कुदरत का ज़िक्र है कि उसने हर चीज़ को कुव्वते नात्का (भाषा) अता की है। रोज़े महशर जब इंसानों के अपने अज़ाअ उनके खिलाफ़ शहादत देंगे तो वो हैरान होकर अपनी खालों से पूछेंगे कि यह सब क्या है? {قَالُوا أَنْظَفْنَاهُ الَّذِي أَنْطَقَ} “उनके चमड़े जवाब में कहेंगे कि हमें उस अल्लाह ने कुव्वते गोयाई अता की है जिसने हर चीज़ को बोलना सिखाया है।”

आयत 45

“और जब आप ﷺ कुरान पढ़ते हैं तो हम आपके और उन लोगों के दरमियान जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते, एक मछली पर्दा हाइल कर देते हैं।”

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مِّنْهُنَّ ۝

इस आयत में एक दफ़ा फिर कुरान का ज़िक्र आया है। यहाँ एक ग़ैर मरई परदे का ज़िक्र है जो मुन्करीने आखिरत और हिदायत के दरमियान हाइल हो जाता है। इसलिए कि ऐसे लोगों के हर अमल का मैयार व मक़सूद सिर्फ़ और सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगी है। वो ना तो आखिरत की ज़िन्दगी के क़ायल हैं और ना ही वहाँ के अज़्रो सवाब के बारे में संजीदा। दुनिया में वो “बाबर बा ऐश कोश कि आलम दोबारा नीस्त” के नज़रिये पर ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं और कुरान को या हिदायत की किसी भी बात को तवज्जोह से नहीं सुनते। ऐसे लोगों को उनके इसी रवैय्ये की बिना पर हिदायत से मुस्तक़लन महरूम कर दिया जाता है। और चूँकि यह अल्लाह का क़ानून है इसलिए आयत ज़ेरे नज़र में अल्लाह तआला ने इसे अपनी तरफ़ मन्सूब किया है कि जब आप ﷺ उन्हें कुरान पढ़ कर सुनाते हैं तो उनके ग़ैर-संजीदा रवैय्ये की बिना पर हम आप ﷺ के और उनके दरमियान एक ग़ैर मरई पर्दा हाइल कर देते हैं।

आयत 46

“और उनके दिलों पर भी हम पर्दे डाल देते हैं कि वो इसे समझ ना सकें, और उनके कानों में सक़ल (पैदा कर देते हैं)।”

وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمُ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۝

“और जब आप ﷺ कुरान में तन्हा अपने रब ही का ज़िक्र करते हैं तो यह अपनी पीठें मोड़ कर चल देते हैं नफ़रत के साथ।”

وَإِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَّوْا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ نُفُورًا ۝

यह लोग अपने तअस्सुब की वजह से अकेले अल्लाह का ज़िक्र बतौर मअबूद बर्दाश्त ही नहीं कर सकते। वो चाहते हैं कि अल्लाह के साथ-साथ उनके मअबूदों का भी कभी कभार ज़िक्र हुआ करे और ऐसा ना होने की सूरत में वो अकेले अल्लाह का ज़िक्र सुनने को तैयार नहीं हैं। चुनाँचे वो बिदक कर नफ़रत के साथ पीठ मोड़ कर चले जाते हैं।

आयत 47

“हम ख़ूब जानते हैं जिस गर्ज से वो तवज्जोह से सुनते हैं इस (कुरान) को जब वो कान लगाए बैठे होते हैं आप ﷺ की तरफ़”

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ ۝

कुरैशे मक्का की इस चाल का ज़िक्र पहले भी हो चुका है। उनके बाज़ बड़े सरदार अपने अवाम को धोखा देने के लिए रसूल अल्लाह ﷺ की मजलिस में आते और बज़ाहिर बड़े इन्हाक से सब कुछ सुनते। फिर वापस जाकर कहते कि लो जी हम तो बड़े खुलूस और इश्तयाक़ के साथ गये थे मुहम्मद (ﷺ) की महफ़िल में कि वो जो कलाम पेश करते हैं उसको सुनें और समझें, मगर अफ़सोस कि हमें तो वहाँ से कुछ भी हासिल नहीं हुआ। इस तरह वो कोशिश करते कि उनके अवाम भी

उनके हमनवा बन जायें और उनमें भी यह सोच आम हो जाये कि यह बड़े-बड़े सरदार आखिर समझदार हैं, बात की तह तक पहुँचने की सलाहियत रखते हैं, मुहम्मद (ﷺ) की बात सुनने और समझने के लिए मुख़लिस भी हैं और इसी इख़लास में वो खुसूसी तौर पर आप (ﷺ) की मजलिस में भी जाते हैं। अगर इस नए कलाम में कोई ख़ास बात होती तो वो ज़रूर इनकी समझ में आ जाती। अब जब ये लोग वहाँ जाकर और उस कलाम को सुन कर कह रहे हैं कि उसमें कुछ भी ख़ास बात नहीं है तो यकीनन ये लोग सच ही कह रहे हैं।

“और जब वो अलैहदगी में सरगोशियाँ करते हैं, जब यह ज़ालिम (एक दूसरे से) कह रहे होते हैं कि तुम नहीं पैरवी कर रहे हो मगर एक सहरज़दा शख्स की।”

وَإِذْ هُمْ نَجْوَىٰ إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِنَّا تَتَّبِعُونَ إِلَّا
رَجُلًا مِّنْهُمْ ۖ فَاتَّبَعُوهُ ۗ

उनमें से किसी के दिल पर जब कुरान की कोई आयत असर करती है और वो उसका इज़हार अपने साथियों के साथ करता है कि हाँ भई मुहम्मद (ﷺ) ने आज जो फ़लाँ बात की है उसमें बहुत वज़न है, इस पर हमें संजीदगी से ग़ौर करना चाहिए तो ऐसी सूरत में वो फ़ौरन उसका तोड़ करने के लिए अपने उस साथी को समझाना शुरू कर देते हैं कि जी छोड़ो! तुम कहाँ एक सहरज़दा आदमी के पीछे चल पड़े। उन (ﷺ) की बातों पर कोई संजीदा तबज्जोह देने की ज़रूरत नहीं।

आयत 48

“देखिए कैसे बयान करते हैं ये लोग आप (ﷺ) के लिए मिसालें”

أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ

कभी वो आपको सहरज़दा आदमी कहते हैं, कभी काहिन और कभी शायर! देखें कैसी-कैसी बेहूदा बातें करते हैं और उसमें भी किसी एक राय पर इत्तेफ़ाक़ नहीं कर सकते।

“चुनाँचे वो भटक गये हैं और अब राहयाब नहीं हो सकेंगे।”

فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝

आयत 49

“और वो कहते हैं कि क्या जब हम हो जायेंगे हड्डियाँ और चूरा-चूरा, तो क्या हम उठाये जायेंगे एक नई तख़लीक़ में?”

وَقَالُوا إِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرَفَاتًا إِنَّا نَبْعُثُوهُنَّ

خَلْقًا جَدِيدًا ۝

यह लोग आप से बड़ी हैरत से सवाल करते हैं कि आप (ﷺ) जो इंसानों की दोबारा ज़िन्दगी की बात करते हैं यह कैसे मुम्किन है? जब हमारी हड्डियाँ रेज़ा-रेज़ा हो जायेंगी और गोश्त गल-सड़ जायेगा, तो उसके बाद हमें फिर से नई ज़िन्दगी कैसे मिल सकती है? गोया उनकी सोच के मुताबिक़ ऐसा होना बिल्कुल महाल और नामुम्किन है।

आयत 50

“(उनसे) कहिए कि ख़्वाह तुम पत्थर बन जाओ या लोहा।”

قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ۝

आयत 51

“या ऐसी मख़्लूक़ (बन जाओ) जो तुम्हारे दिलों में इनसे भी सख़्त हो।”

أَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ ۝

ऐ नबी ﷺ इनसे कहिए कि आप तो हड्डियों की बात करते हो और अपने जिस्मों के रेज़ा-रेज़ा होकर ख़त्म हो जाने का तसव्वुर लिए बैठे हो। तुम अगर पत्थर और लोहा भी बन जाओ या अपनी सोच के मुताबिक़ इससे भी बढ़ कर किसी अजीब मख़्लूक़ का रूप धार लो, तब भी तुम्हें अज़ सरे नौ उठा लिया जायेगा।

“फिर कहेंगे कि कौन हमें दोबारा लौटायेगा?”

فَسَيَقُولُونَ مَنْ يُعِيدُنَا

“आप ﷺ कहिए कि वही जिसने पहली मर्तबा तुम्हें पैदा किया था।”

قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ

“फिर वो आपके सामने अपने सरो को मटकायेंगे और कहेंगे कि यह कब होगा?”

فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَى هُوَ

लाजवाब होकर अपने सरो को मटकाते हुए बोलेंगे कि चलो मान लिया कि यह सब कुछ मुम्किन है, मगर यह तो बताइये कि ऐसा होगा कब?

“आप ﷺ कहिए कि हो सकता है (इसका वक़्त) करीब ही हो।”

قُلْ عَسَى أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ۝

अजब नहीं कि तुम्हारी शामत की वो घड़ी आया ही चाहती हो, ज़्यादा दूर ना हो।

आयत 52

“जिस दिन वो तुम्हें पुकारेगा तो तुम (उसकी पुकार पर) लव्वैक कहोगे उसकी हम्द करते हुए”

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ

जब वो घड़ी आयेगी और तुम्हारा ख़ालिक़ तुम्हें क़ब्रों से बाहर आने के लिए बुलायेगा तो तुम्हारी हड्डियाँ और तुम्हारे जिस्मों के बिखरे ज़रत सब सिमट कर फिर से ज़िन्दा इंसानों का रूप धार लेंगे और तुम उसकी हम्द करते हुए उसकी पुकार की तामील में भागे चले जा रहे होंगे।

“और तुम गुमान करोगे कि तुम नहीं रहे मगर बहुत थोड़ा (अरसा)।”

وَتَذُنُّونَ إِنَّ لَبِئْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۝

उस वक़्त तुम्हें दुनिया और आलमे बरज़ख़ (क़ब्र) में अपना बीता हुआ ज़माना ऐसे लगेगा जैसे कि चंद घड़ियाँ ही तुम वहाँ गुज़ार कर आये हो।

आयात 53 से 60 तक

وَقُلْ لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ بَيْنَهُمْ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا ۝
رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ إِنَّ يَسْأَلُكُمْ أَوْ إِنْ يَسْأَلُكُمْ عَنْكُمْ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝
وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ عَلَى بَعْضٍ وَآتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ۝
قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ۝
أُولَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ۝
وَأَنْ مِنْ قَرِيْبَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَمَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۝

كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ ۖ وَآتَيْنَا مُؤَدَّ الثَّاقَةِ مُبَصَّرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۖ وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخْوِيفًا ۝^{٥٩} وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ وَنُخَوِّفُهُمْ ۖ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ۝^{٦٠}

आयत 53

“और आप मेरे बंदों से कह दीजिए कि वही बात कहें जो बहुत अच्छी हो।”

وَقُلْ لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ

यहाँ वो नुक्ता ज़हन में ताज़ा कर लीजिए जिसके क़बूल अज़े वज़ाहत हो चुकी है कि मक्की सूरतों में अहले ईमान को बराहेरास्त मुखातिब नहीं किया गया। उनसे बराहेरास्त तखातब का सिलसिला {या अय्युहल्लाज़ीना आमनु} तहवीले किब्ला के बाद शुरु हुआ, जब उन्हें बाक़ायदा उम्मत मुस्लिमा के मन्सब पर फ़ायज़ कर दिया गया। उससे पहले अहले ईमान को रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم की वसातत से ही मुखातिब किया जाता रहा। चुनाँचे इसी उसूल के तहत यहाँ भी हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم से फ़रमाया जा रहा है कि आप मेरे बंदों (मोमिनीन) को मेरी तरफ़ से यह बता दें कि वो हर हाल में खुश अख़लाक़ी का मुज़ाहरा करें और गुफ़्तगू में भी तरशी और तल्ख़ी ना आने दें। इस तरह आपस में भी शीर व शक्कर बन कर रहें और मुख़ालफ़ीन के सामने भी बेहतर अख़लाक़ का नमूना पेश करें। अक़ामते दीन के इस मिशन को आगे बढ़ाने के लिए मोमिनीन के सामने बहुत ज़्यादा रुकावटें हैं। उनके मुख़ातबीन ज़हालत की दलदल में फंसे हुए हैं। उनके जाहिलाना ऐतकादात नस्लों से चले आ रहे हैं। इसी तरह उन्हें अपने रस्मों रिवाज़, सियासी व मआशी मफ़ादात और ग़ैरत व हमीयत के ज़ब़ात बहुत अज़ीज़ हैं। उन्हें इस सब कुछ का दिफ़ा करना है और इसके लिए वो हर तरह की कुर्बानियाँ देने को तैयार हैं। इन हालात में दाईयाने हक़ व तहम्मूल, बुर्दबारी और बुर्दाशत का मुज़ाहिरा करना चाहिए। ऐसा ना हो कि वो इश्तआल में आकर (उत्तेजित होकर) आला अख़लाक़ का दामन हाथ से छोड़ बैठें।

“यक़ीनन शैतान उनके दरमियान झगड़ा डालेगा। यक़ीनन शैतान इंसान का खुला दुश्मन है।”

إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ بَيْنَهُمْ ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلنَّاسِ عَدُوًّا مُّبِينًا ۝^{٥٣}

आयत 54

“तुम्हारा रब तुमसे ख़ूब वाकिफ़ है। अगर वो चाहेगा तो तुम पर रहम फ़रमायेगा, या अगर चाहेगा तो तुम्हें अज़ाब देगा।”

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ۖ إِنَّ يَشَاءُ يَرْحَمْكُمْ أَوْ إِنَّ يَشَاءُ يُعَذِّبْكُمْ

“और (ऐ नबी صلی اللہ علیہ وسلم) हमने आपको उन पर दरोगा बना कर नहीं भेजा।”

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝^{٥٤}

हिदायत को कुबूल करना या ना करना हर शख्स का ज़ाती मामला और ज़ाती इन्तखाब है। आप صلی اللہ علیہ وسلم उन तक पैग़ाम पहुँचाने के ज़िम्मेदार हैं, उन्हें हिदायत पर लाने के मुकल्लफ़ नहीं।

आयत 55

“और आपका रब ख़ूब जानता है उसको जो कोई है आसमानों और ज़मीन में।”

وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ

“और हमने बाज़ अम्बिया को बाज़ पर फ़ज़ीलत व ख़शी है”

وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ عَلَى بَعْضٍ

यहाँ इस फ़िक्रे के सयाक़ व सबाक़ को अच्छी तरह समझने की ज़रूरत है। सूरह बनी इस्राईल मक्की दौर के आखरी बरसों में नाज़िल हुई और उसका आगाज़ भी बनी इस्राईल की तारीख़ से हुआ। इस सूरह के नुज़ूल से पहले नबी अखिरुज्ज़मान صلی اللہ علیہ وسلم की बेअसत और कुरान के बारे में तमाम ख़बरें मदीना पहुँच चुकी थीं और यहूदे मदीना एक-एक बात और एक-एक ख़बर का बारीक बीनी से जायज़ा ले रहे थे। फिर अनक़रीब हज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم खुद भी मदीना तशरीफ़ लाने वाले थे। इन हालात में जब मुसलमानों का यहूदियों के साथ अक्काइद व नज़रियात के बारे में तबादला ख़यालात होना था तो अम्बिया किराम के फ़ज़ाइल के बारे में सवालात का उठना नागुज़ीर था, कि अगर मुहम्मद (صلی اللہ علیہ وسلم) नबी हैं तो आप صلی اللہ علیہ وسلم और मूसा अलै. में से अफ़ज़ल कौन हैं? या यह मसला कि मुहम्मद صلی اللہ علیہ وسلم अफ़ज़ल हैं या ईसा अलै.? चुनाँचे इस हवाले से यहाँ एक बुनियादी और उसूली बात बयान फ़रमा दी गई कि अल्लाह तआला ज़मीन व आसमान में मौजूद अपनी तमाम मख़लूक के अहवाल व कैफ़ियात से खूब वाकिफ़ हैं और उसने अपने बाज़ अम्बिया को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है। सूरतुल बक्ररह की आयत 253 में यही बात यूँ बयान फ़रमाई गई है: {تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ} “यह रसूल हैं इनमें से हमने बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है।” ऐसा ना हो कि इस बहस में पड़ कर आप लोग अपने नबी صلی اللہ علیہ وسلم की फ़ज़ीलत इस तरह बयान करें कि मुख़ालफ़ीन के मन्फ़ी जज़्बात को हवा मिले और वो तअस्सुब से मग़लूब होकर आपकी बात ही सुनने से इंकार कर दें।

यह बहुत नाज़ुक मसला है और इसकी नज़ाकत को समझने की ज़रूरत है। हम मुसलमानों का अक्कीदा है कि हमारे नबी صلی اللہ علیہ وسلم तमाम अम्बिया किराम से अफ़ज़ल हैं और इसमें कोई शक नहीं कि आप صلی اللہ علیہ وسلم सबसे अफ़ज़ल हैं, मगर मौक़ा व महल देखे बग़ैर अपने इस अक्कीदे का इस तरह से चर्चा करना दुरुस्त नहीं कि इससे दूसरे मुश्तइल (उग्र) हों और उनके मुख़ालफ़ाना जज़्बात व ख़यालात को इन्ग़ख़ैत मिले। इस ज़िमन में हज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की वाज़ेह हदीस है कि ((لَا تَفْضَلُوا بَيْنَ أَنْبِيَائِ)) ((لَا يَنْبَغِي لِلْعَبْدِ أَنْ يَقُولَ أَنَا خَيْرٌ مِنْ يُوسُفَ)) आपने मज़ीद फ़रमाया: ((20)) “अल्लाह के नबियों के माबैन दर्जाबंदी ना किया करो।” आपने मज़ीद फ़रमाया: ((21)) “किसी शख्स के लिए रवा नहीं है कि वो यूँ कहे कि मैं (मुहम्मद صلی اللہ علیہ وسلم) युनुस बिन मत्ता से अफ़ज़ल हूँ।” आप صلی اللہ علیہ وسلم ने यहाँ हज़रत युनुस का ज़िक्र शायद इसलिये फ़रमाया कि हज़रत युनुस अलै. वाहिद नबी हैं जिनकी अल्लाह तआला के यहाँ कुछ गिरफ्त हुई है। बहरहाल आप صلی اللہ علیہ وسلم ने वाज़ेह तौर पर इससे मना फ़रमाया है कि दूसरे अम्बिया पर आप صلی اللہ علیہ وسلم की फ़ज़ीलत का प्रचार किया जाये।

“और हमने दाऊद को ज़बूर अता की थी।”

وَأَتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ۝۵۵

इस सयाक़ व सबाक़ की मुनास्बत से यहाँ बनी इस्राईल के एक नबी का तज़क़िरा फ़रमा दिया और आपकी फ़ज़ीलत भी बयान फ़रमा दी कि हज़रत दाऊद अलै. को हमने ज़बूर जैसी जलीलुल क़द्र किताब अता फ़रमाई थी। यहाँ पर यह इशारा मिलता है कि मौक़ा व महल के मुताबिक़ अल्लाह तआला अपने अम्बिया व रसूल के फ़ज़ाइल और आला मरातिब के ज़िक्र से उनकी इज्ज़त अफ़ज़ाई करता है।

आयत 56

“आप कहिए कि उनको पुकार देखो जिनको तुमने उसके सिवा (मअबूद) गुमान कर रखा है, तो ना उन्हें कुछ इख्तियार हासिल है तुमसे कोई तकलीफ़ दूर करने का और ना ही (तुम्हारी हालत) बदलने का।”

قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ رَعَيْتُمْ مِنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ
كُشْفَ الضَّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْيَا ۝۵۶

आयत 57

“वो लोग जिन्हें ये पुकारते हैं वो तो खुद अपने रब के कुर्ब के मुतलाशी हैं कि उनमें से कौन (उसके) ज़्यादा करीब है”

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ
أَيُّهُمْ أَقْرَبُ

लफ़्ज़ “वसीला” बमायने कुर्ब इससे पहले हम सूरतुल मायदा (आयत 35) में पढ़ चुके हैं। मुराद यह है कि जिस तरह इस दुनिया में अल्लाह के बंदे अल्लाह के यहाँ अपने दर्जात बढ़ाने की फ़िक्र में रहते हैं उसी तरह आलमे ग़ैब या आलमे अम्र में भी तक्करूब इलल्लाह की यह दर्जाबंदी मौजूद है। जैसे फ़रिश्तों में तबक्का-ए-असफ़ल के फरिश्ते, फिर दर्जा-ए-आला के फ़रिश्ते और फिर मलाइका-ए-मुकर्रबीन हैं।

अल्लाह की शरीक ठहराई जाने वाली शख़्सियात में से कुछ तो ऐसी हैं जो बिल्कुल ख़्याली हैं और दरहक़ीक़त में उनका कोई वुजूद नहीं। लेकिन उनके अलावा हर ज़माने में लोग अम्बिया, औलिया अल्लाह और फ़रिश्तों को भी अल्लाह तआला के इख़्तियारात में शरीक समझते रहे हैं। ऐसी ही शख़्सियात के बारे में यहाँ फ़रमाया जा रहा है कि वो चाहे अम्बिया व रुसुल हों, या औलिया अल्लाह, या फ़रिश्ते, वो तो आलमे अम्र में खुद अल्लाह की रज़ाजोई के लिए कोशिशें और उसके कुर्ब के मुतलाशी हैं। इसके अलावा कुरान हकीम में मुतअद्दिद बार ज़िक्र हुआ है कि ऐसी तमाम शख़्सियात जिन्हें दुनिया में मुख्तलिफ़ अंदाज़ में अल्लाह के सिवा पुकारा जाता था क़यामत के दिन अपने अक़ीदतमंदों के मुशरिकाना नज़रियात से इज़हारे बेज़ारी करेंगी और साफ़ कह देंगी कि अगर यह लोग हमारे पीछे हमें अल्लाह शरीक ठहराते रहे थे तो हमें इस बारे कुछ ख़बर नहीं।

“और वो उम्मीदवार हैं उसकी रहमत के और डरते रहते हैं उसके अज़ाब से। वाकिअतन आप ﷺ के रब का अज़ाब चीज़ ही डरने की है।”

وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ
كَانَ مَحْذُورًا ۝

आयत 58

“और नहीं है कोई बस्ती मगर हम उसे हलाक करके रहेंगे रोज़े क़यामत से क़ब्ल या हम अज़ाब देंगे उसे बहुत ही शदीद अज़ाब।”

وَأَنَّ مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَمَةِ
أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۝

यह इशारा है उस बहुत बड़ी तबाही की तरफ़ जो क़यामत से पहले इस दुनिया पर आने वाली है। सूरतुल कहफ़ की दूसरी आयत में इसका ज़िक्र इस तरह किया गया है: {يُنْزِلُ السَّيْلَ مِنْ لَدُنْهُ}। सूरह बनी इस्राईल और सूरह कहफ़ का आपस में चूँकि ज़ौजियत का ताल्लुक है इसलिए यह मज़मून इन दोनों आयात को मिला कर पढ़ने से वाज़ेह होता है। अहादीस में “मल्हमातुल उज़मा” के नाम से एक बहुत बड़ी जंग की पेशनगोई की गई है जो क़यामत से पहले दुनिया में बरपा होगी। आयत ज़ेरे नज़र में उसी तबाही का ज़िक्र है जिससे रुए ज़मीन पर मौजूद कोई बस्ती महफूज़ नहीं रहेगी। सूरतुल कहफ़ में ज़्यादा सराहत के साथ इसका तज़क़िरा आयेगा।

इस वक़्त दुनिया में एटमी जंग झिड़ने का इम्कान हर वक़्त मौजूद है। अगर खुदा ना ख्वास्ता किसी वक़्त ऐसा सानेहा (युद्ध) रूनुमा हो जाता है तो एटमी हथियारों की वजह से दुनिया पर जो तबाही आयेगी उसको तसव्वुर में लाना भी मुश्किल है। इन हालात में मल्हमातुल उज़मा के बारे में पेशनगोईयाँ आज मुजसम सूरत में सामने खड़ी नज़र आती हैं।

“यह (अल्लाह की) किताब में लिखा हुआ है।”

كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۝

यानि यह तयशुदा अमूर में से है। एक वक़्ते मुअय्यन पर यह सब कुछ होकर रहना है।

आयत 59

“और हमें नहीं रोका (किसी और बात ने) कि हम निशानियाँ भेजें, सिवाय इसके कि उनको झुठला दिया था पहले लोगों ने।”

وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ

अल्लाह तआला ने हिस्सी मौअज्जात दिखाने सिर्फ़ इसलिए बंद कर दिये हैं कि साबक्रा क्रौमों के लोग ऐसे मौअज्जात को देख कर भी कुफ़्र पर डटे रहे और ईमान ना लाये। यह यही मज़मून है जो सूरतुल अन्आम और उसके बाद नाज़िल होने वाली मक्की सूरतों में तसलसुल से दोहराया जा रहा है।

“और हमने क्रौमे समूद को ऊँटनी दी आँखें खोल देने वाली निशानी (के तौर पर) तो उन्होंने उसके साथ भी जुल्म किया।”

وَإِنِّيْنَا مُمُودَ النَّاقَةِ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا

क्रौमे समूद को उनके मुतालबे पर ऊँटनी का बसीरत अफ़रोज़ मौअज्जा दिखाया गया मगर उन्होंने इस वाज़ेह मौअज्जे को देख लेने के बाद भी हज़रत सालेह अलै. पर ईमान लाने के बजाय उस ऊँटनी ही को मार डाला। इसी तरह हज़रत ईसा अलै. को मिट्टी से ज़िन्दा परिंदे बनाने और “कुम बिइज़िल्लाह” कह कर मुर्दों को ज़िन्दा करने तक के मौअज्जात दिये गये, मगर क्या उन्हें देख कर वो लोग ईमान ले आये?

“और हम नहीं भेजते निशानियाँ मगर सिर्फ़ डराने के लिए।”

وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخْوِيفًا

निशानियाँ या मौअज्जे भेजने का मक़सद तो लोगों को खबरदार करना होता है, सो यह मक़सद कुरान की आयात बखूबी पूरा कर रही हैं। इसके बाद अब और कौनसी निशानियों की ज़रूरत बाक़ी है? अगली आयत में यही बात तीन मिसालों से मज़ीद वाज़ेह की गई है कि यह लोग किस तरह कुरान की आयात के साथ बहस बराए बहस और इंकार का रवैय्या अपनाए हुए हैं और यह कि अल्लाह ने हिस्सी मौअज्जात दिखाना क्यों बंद कर दिये हैं।

आयत 60

“और जब हम आप ﷺ से कहते हैं कि आप ﷺ के रब ने लोगों का अहाता किया हुआ है।”

وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ

कुरान हकीम की बहुत सी ऐसी आयात हैं जिनमें अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि वो लोगों का अहाता किए हुए है, मसलन: {وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ} (अल् बुरूज:20) “और अल्लाह इनका हर तरफ़ से अहाता किए हुए है।” यह लोग जब ऐसी आयात सुनते हैं तो डरने की बजाय फ़ज़ूल बहस पर उतर आते हैं कि इसका क्या मतलब है? कहाँ है अल्लाह? हमारा अहाता क्योंकर हुआ है?

अगर फ़लसफ़ियाना पहलु से देखा जाये तो इस आयत में “हक़ीक़त व माहियते वजूद” के मौजू से मुताल्लिक़ इशारा पाया जाता है जो फ़लसफ़े का मुश्किल तरीन मसला है और आसानी से समझ में आने वाला नहीं है, यानि एक वजूद ख़ालिक़ का है, वो हर जगह, हर आन मौजूद है, और एक वजूद मख़लूक़ यानि इस कायनात का है। अब ख़ालिक़ व मख़लूक़ के माबैन रब्त क्या है? इस सिलसिले में कुछ लोग “हमाऊस्त” (Pantheism) के क्रायल हो गये। उनके ख़याल के मुताबिक़ यह कायनात ही खुदा हैं, खुदा ने ही कायनात का रूप धार लिया है, जैसे खुदा खुद ही इंसानों का रूप धार कर “अवतार” की सूरत में ज़मीन पर आ जाता है। यह बहुत बड़ा कुफ़्र और शिर्क़ है। दूसरी तरफ़ अगर यह समझे कि अल्लाह का वजूद इस कायनात में नहीं है तो इसका मतलब यह होगा कि उसका वजूद कहीं अलग है और वो नज़ुबिल्लाह कहीं महदूद होकर रह गया है। बहरहाल यह मसला आसानी से समझ में नहीं आता। हमें बस इस क़द्र समझ लेना चाहिए कि अल्लाह का वजूद मुत्लक़ (absolute) है। वो हदूद व क़ुयूद, ज़मान व मकान, किसी सिम्त या जहत के तसव्वुर से मा-वराअ, वराउल वराअ, सुम्मा वराउल वराअ है।

“और नहीं बनाया हमने इस मुशाहिदे को जो हमने आप ﷺ को दिखाया था मगर एक फ़ितना लोगों के लिए।”

وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ

यहाँ पर लफ़्ज़ “रुअया” ख़्वाब के मायने में नहीं आया बल्कि इससे रुइयत बसरी मुराद है। इंसान अपनी आँखों से जो कुछ देखता है उस पर भी “रुअया” का इत्लाक़ होता है। अल्लाह तआला ने शबे मेराज में हुज़ूर ﷺ को जो मुशाहिदात कराए थे और जो निशानियाँ आप ﷺ को दिखाई थीं उनकी तफ़सील जब कुफ़्फ़ारे मक्का ने सुनी तो यह मामला उनके लिए एक फ़ितना बन गया। वो ना सिर्फ़ खुद इसके मुन्किर हुए, बल्कि इसकी बुनियाद पर वो मुसलमानों को उनके दीन से बरग़श्ता करने की कोशिश में लग गये। इस वाक़िये को बुनियाद बना कर उन्होंने पूरी शद्दो-मद से यह प्रचार शुरू कर दिया कि मुहम्मद ﷺ पर जुनून के असरात हो चुके हैं (मआज़ अल्लाह, सुम्मा मआज़ अल्लाह)। उस ज़माने में जब मक्के से बैतुल मुक़द्दस पहुँचने में पन्द्रह दिन लगते थे, यह दावा इन्तहाई ना-क्राबिले यक़ीन मालूम होता था कि कोई शख्स रातों-रात ना सिर्फ़ बैतुल मुक़द्दस से हो आया है बल्कि आसमानों की सैर भी कर आया है। चुनाँचे उन्होंने मौक़ा गनीमत समझ कर इस मौजू को ख़ूब उछाला और मुसलमानों से बढ-चढ कर बहस मुबाहिसे किए। इस तरह ना सिर्फ़ यह बात कुफ़्फ़ारे के लिए फ़ितना बन गई बल्कि मुसलमानों के लिए भी एक आजमाईश क़रार पाई।

जब यही ना-क्राबिले यक़ीन बात उन लोगों ने हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ि. से की और आपसे तबसरा चाहा तो आपने बिला तौक़फ़ जवाब दिया कि अगर वाक़ई हुज़ूर ﷺ ने ऐसा फ़रमाया है तो यक़ीनन सच फ़रमाया है, क्योंकि जब मैं यह मानता हूँ कि आप ﷺ के पास आसमानों से हर रोज़ फ़रिश्ता आता है तो मुझे आप ﷺ का यह दावा तस्लीम करने में आख़िर क्यों कर ताम्मुल होगा कि आप ﷺ रातों-रात आसमानों की सैर कर आये हैं! इसी बिला ताम्मुल तस्दीक़ की बिना पर उस दिन से हज़रत अबुबक्र रज़ि. का लक़ब “सिद्दीक़-ए-अक़बर रज़ि.” क़रार पाया।

“और उस दरख़्त को भी जिस पर कुरान में लानत वारिद हुई है।”

وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ

इसी तरह जब कुरान में ज़क़ूम के दरख़्त का ज़िक़्र आया और उसके बारे में यह बताया गया कि इस दरख़्त की जड़ें जहन्नम की तह में होंगी (अस्सफ़ात 64) और वहाँ से यह जहन्नम की आग में परवान चढ़ेगा तो यह बात भी उन लोगों के लिए फ़ितने का बाइस बन गई। बजाय इसके कि वो लोग इसे अल्लाह की कुदरत समझ कर तस्लीम कर लेते, उलटे इस बात पर तमस्ख़र और इस्तेहज़ा करने लगे कि आग के अंदर भला दरख़्त कैसे पैदा हो सकते हैं? उन्हें क्या मालूम कि यह उस आलम की बात है जिसके तबई क़वानीन इस दुनिया के तबई क़वानीन से मुख़्तलिफ़ होंगे और जहन्नम की आग की नौइयत और कैफ़ियत की भी हमारी दुनिया की आग से मुख़्तलिफ़ होगी।

“और (इन बातों से) हम तो उन्हें तम्बीह करते हैं मगर यह तम्बीह उनकी सरकशी ही में इज़ाफ़ा किए जा रही है।”

وَنُحَوِّفُهُمْ ۖ مَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ۝

कुरान में यह सब बातें उन्हें ख़बरदार करने के लिए नाज़िल हुई हैं, मगर यह उन लोगों की बदबख़्ती है कि अल्लाह की आयात सुन कर डरने और ईमान लाने के बजाय वो मज़ीद सरकश होते जा रहे हैं और उनकी सरकशी में रोज़-बरोज़ मज़ीद इज़ाफ़ा होता जा रहा है।

आयात 61 से 65 तक

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلٰٓسَ ۖ قَالَ اَسْجُدْ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ۙ ۝ قَالَ اَرَاۤءَيْتَ هٰذَا الَّذِي كَرَّمْتُ عَلٰٓى لَدِيْنٍ اٰخَرْتَنِيْۤ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا تُحْتٰنِكُنْ ۖ ذُرِّيَّتَةٌ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ ۝ قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ۙ ۝ وَاسْتَغْفِرْ مَنْ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعَدْهُمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمْ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ۙ ۝ اِنَّ عِبَادِيْ لَیْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ وَّكَفٰی بِرَبِّكَ وَكِیْلًا ۝

“और याद करो जब हमने कहा था फ़रिश्तों से कि सज्दा करो आदम अलै. को तो उन सबने सज्दा किया मगर इब्लीस ने (नहीं किया)।”

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا
إِبْلِيسَ

“उसने कहा कि क्या मैं उसे सज्दा करूँ जिसे तूने पैदा किया है मिट्टी से?”

قَالَ اسْجُدْ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ۝

हज़रत आदम अलै. और इब्लीस का यह किस्सा यहाँ चौथी मर्तबा बयान हो रहा है। इससे पहले सूरतुल बक्ररह रकूअ 4, सूरतुल आराफ़ रकूअ 12 और सूरतुल हिज़ रकूअ 3 में इस किस्से का ज़िक्र हो चुका है।

आयत 62

“उसने (मज़ीद) कहा कि ज़रा देख तो उसको जिसको तूने मुझ पर फ़ज़ीलत दी है, अगर तू मुझे मोहलत दे दे क़यामत के दिन तक, तो मैं उसकी पूरी नस्ल को क़ाबू में करके छोड़ूँगा, सिवाय बहुत थोड़े से लोगों के।”

قَالَ أَرَأَيْتَكَ هَذَا الَّذِي كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَنْ يَخُزَنِي
إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ لَا خُتَنَ لَكَ دَرِيَّتَهُ إِلَّا قَلِيلًا ۝

आयत 63

“अल्लाह ने फ़रमाया: जाओ (दफ़ा हो जाओ!) उनमें से जो भी तेरी पैरवी करेंगे तो यक़ीनन तुम सबकी सज़ा जहन्नम होगी, वाफ़र सज़ा।”

قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَاءُكُمْ
جَزَاءً مَوْفُورًا ۝

आयत 64

“और तू फ़िसला ले जिस पर तेरा बस चलता है उनमें से अपनी आवाज़ से”

وَاسْتَفْزِرْ مَنْ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ

अरबी में बकरी के ऐसे नवजात बच्चों को “फ़ज़ज़” कहते हैं जो अभी ठीक से चलने के क़ाबिल ना हुआ हो और खड़ा होने की कोशिश में उसकी टाँगें लड़खड़ाती हों। इस मुनास्बत से यह लफ़ज़ मुहावरतन उस शख्स के लिए बोला जाता है जिसकी टाँगें किसी मामले में लड़खड़ा जायें, क़दम डगमगा जायें और हिम्मत जवाब दे दे।

“और चढ़ा ला उन पर अपने सवारों और प्यादों को और शरीक बन जा उनका मालों में और औलाद में, और उनसे (जो चाहे) वादे कर!”

وَأَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي
الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعَدْهُمْ ۝

“और नहीं वादा करता उनसे शैतान मगर धोखे का।”

وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ۝

आयत 65

“यक़ीनन मेरे बंदों पर तुझे कोई इख़्तियार नहीं होगा।”

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ

तुम इंसानों को बहकाने और फिसलाने के लिए जो कुछ कर सकते हो कर लो, उनके दिलों में वसवसे डालो, उनसे झूठे-सच्चे वादे करो और उन्हें सब्ज़ बाग दिखाओ। यह तमाम हरबे तो तुम इस्तेमाल कर सकते हो, लेकिन तुम्हें यह इख्तियार हरगिज़ नहीं होगा कि तुम मेरे किसी बंदे को उसकी मर्ज़ी के खिलाफ़ गुमराही के रास्ते पर ले जाओ।

“और काफ़ी है तेरा रब बतौर कारसाज़।”

وَكْفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ١٥

वो बन्दे जो शैतान से बचना चाहेंगे अल्लाह उनकी मदद करेगा, और जिस किसी का मददगार और कारसाज़ अल्लाह हो उसे किसी और सहारे की ज़रूरत नहीं रहती, वही उसके लिए काफ़ी होता है।

आयात 66 से 72 तक

رَبُّكُمُ الَّذِي يُزَيِّجُ لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ١٦ وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِلَٰهًا فَلَمَّا نَجَّيْكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ١٧ أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يُخْصِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكِيلًا ١٨ أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُعِيدَ كُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِنَ الرِّيحِ فَيَغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ١٩ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَىٰ كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ٢٠ يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ فَمَنْ أُوِّيَ كِتَابُهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ٢١ وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ٢٢

आयत 66

“तुम्हारा रब वो है जो चलाता है तुम्हारे लिए कश्तियों को समुद्र में ताकि तुम उसका फ़ज़ल तलाश कर सको।”

رَبُّكُمُ الَّذِي يُزَيِّجُ لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ

“यक़ीनन वो तुम पर बहुत ही ररहीम है।”

إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ١٦

आयत 67

“और जब तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचती है समुद्र में”

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ

जब कश्ती तूफ़ान में घिर जाती है और मौत सामने नज़र आने लगती है तो:

“गुम हो जाते हैं वो सब जिन्हें तुम पुकारते हो, सिवाय उस (एक अल्लाह) के।”

ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِلَٰهًا

उस वक़्त तुम्हें अपने उन मअबूदों में से कोई भी याद नहीं रहता जिन्हें तुम आम हालात में अपना मददगार समझते हो। उस आड़े वक़्त में तुम सिर्फ़ अल्लाह ही को मदद के लिए पुकारते हो। यह मज़मून कुरान में मुतअद्दिद बार आ चुका है।

“फिर जब वो तुम्हें बचा लाता है खुशकी की तरफ तो तुम मुहँ मोड़ लेते हो। और इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है।”

فَلَمَّا نَجَّيْكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ الْإِنْسَانُ
كَفُورًا ﴿٤٧﴾

आयत 68

“तो क्या तुम इस बात से बेखौफ हो गये हो कि वो धँसा दे तुम्हें कहीं खुशकी में ही?”

أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يُخَسِّفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ

जब तुम जान बचा कर समुद्र से खुशकी पर आते हो तो फिर अल्लाह की नाशुकी करते हुए उससे मुँह मोड़ लेते हो। क्या तुम्हें इस बात से खौफ नहीं आता कि अगर अल्लाह चाहे तो तुम्हें खुशक ज़मीन ही के अंदर धँसा दे? क्या खुशकी पर लोगों को मौत नहीं आती?

आसूदा साहिल तू है मगर शायद यह तुझे मालूम नहीं साहिल से भी मौजें उठती हैं, खामोश भी तूफ़ान होते हैं!

“या वो तुम पर भेज दे कंकर बरसाने वाली तेज़ हवा, फिर तुम ना पाओ अपने लिए कोई बचाने वाला!”

أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا الْكُمْ وَكِيلًا

﴿٤٨﴾

तुम्हें मालूम होना चाहिए कि अल्लाह चाहे तो संगरेज़ों वाली खौफ़नाक आँधी से भी तुम्हें हलाक कर सकता है।

आयत 69

“या तुम बेखौफ हो गये हो इससे कि वो फिर ले जाये तुम्हें उसी (समुद्र) में दूसरी मर्तबा, फिर भेज दे तुम पर हवा का ज़ोरदार झटका”

أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُعِيدَ كُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَى فَيُرْسِلَ
عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيحِ

“सो तुम्हें गर्क कर दे तुम्हारे कुफ़र की पादाश में, फिर तुम ना पाओ अपने लिए हमारे खिलाफ़ उसकी वजह से कोई तअक्कुब करने वाला!”

فَيُغَرِّقْكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوا الْكُمْ عَلَيْنَا بِهِ

تَبِيْعًا ﴿٤٩﴾

फिर ऐसा नहीं कि कोई हमसे बाज़पुर्स कर सके कि हमने उन लोगों के साथ ऐसा मामला क्यों किया?

आयत 70

“और हमने बड़ी इज़्ज़त बख़्शी है औलादे आदम अलै. को”

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ

यह आयत बहुत वाज़ेह अंदाज़ में उस हकीकत का इज़हार कर रही है कि अल्लाह तआला की तख़लीक की मेराज (climax) इंसान है। इस फ़लसफ़े की वज़ाहत सूरतुल नहल की आयत 40 की तशरीह के ज़िम्न में हो चुकी है। वहाँ मैंने बहुत तफ़सील से कायनात और इंसान की तख़लीक के बारे में अपनी राय का इज़हार किया है। इस तफ़सील का खुलासा यह है कि इस कायनात का नुक्ता-ए-आज़ाज़ अल्लाह तआला का अमर-ए-कुन है। हरफ़े कुन से ख़नक नूर का ज़हूर हुआ, इस नूर से मलाइका और इंसानी अरवाह की तख़लीक हुई, फिर बिग-बैंग के नतीजे में हरारत का गोला वजूद में आया, जिसके मुतहर्रिक ज़र्रात से कहकशाएँ, सितारे और सय्यारे बने। इसी दौर में इस हरारत से जिन्नात की तख़लीक हुई। दूसरे बेशुमार सितारों और सय्यारों की तरह हमारी ज़मीन भी इब्तदा में बहुत गर्म थी। यह आहिस्ता-आहिस्ता ठंडी हुई। फिर इस पर

हज़ारों बरस मुसलसल बारिश बरसती रही, जिससे ज़मीन पर हर तरफ़ पानी फैल गया। उसके बाद ज़मीन पर नबाताती और हैवानी हयात का आगाज़ हुआ। इसके बाद फिर तमाम मख्लूक के बादशाह “इंसान” की तख़लीक़ अमल में आई। इस पूरे फ़लसफ़े को मिर्ज़ा बैदिल ने अपने इस शेर में बड़ी ख़ूबसूरती से बयान किया है:

हर दो आलम खाक शुद ता बस्त नक़्शे आदमी
ऐ बहारे नीस्ती अज़ क़द्रे खुद होशयार बाश

इस ख़ूबसूरत शेर का मफ़हूम व मतलब भी सूरतुल नहल की मज़क़ूर आयत की तशरीह के तहत बयान किया गया है।

“और हम उठाए फिरते हैं उन्हें खुशकी और समुन्दर में”

وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ

यहाँ “हम” से अल्लाह तआला का निज़ामे कुदरत मुराद है, जिसके तहत बहरो-बर में इंसानों की मुख्तलिफ़ नौइयत की सरगर्मियाँ मुमकिन बना दी गई हैं और यूँ लगता है जैसे यह मआवन और दोस्ताना माहौल इंसान को अपनी गोद में उठाए हुए है।

“और हमने उन्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़क़ अता किया और उन्हें फ़ज़ीलत दी अपनी बहुत सी मख्लूक़ पर, बहुत बड़ी फ़ज़ीलत।”

وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى كَثِيرٍ مِّمَّنْ
خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ۝

आयत 71

“जिस दिन हम बुलायेंगे तमाम इंसानों को उनके सरदारों के साथ।”

يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمَامِهِمْ

फिर ज़रा उस दिन का ख़याल करो जिस दिन तमाम इंसानों को अल्लाह तआला के हुज़ूर पेशी के लिए इस तरह बुलाया जायेगा कि हर गिरोह अपने रहनुमा या लीडर के साथ हाज़िर होगा। पिछली आयत में तमाम मख्लूक़ पर इंसान की फ़ज़ीलत का ज़िक़्र किया गया है। चुनौचे जब इंसान को इस कायनात में इस क़द्र आला मक़ाम और मर्तबे से नवाज़ा गया है तो फिर इसका मुहासबा भी होना चाहिए: “जिनके रुतबे हैं सवा, उनकी सवा मुश्किल है!”

“तो जिसको दिया जायेगा उसका आमाल नामा उसके दाहिने हाथ में तो ऐसे लोग पढ़ेंगे अपने आमाल नामा को (खुशी के साथ) और उन पर जुल्म ना किया जायेगा धागे के बराबर भी।”

فَمَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونُ كِتَابَهُمْ
وَلَا يَظْلُمُونَ فِتْنًا ۝

आयत 72

“और जो कोई इस दुनिया में अँधा रहा वो आख़िरत में भी अँधा होगा, और राहेरास्त से बहुत दूर भटका हुआ।”

وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ أَعْمًى فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمًى وَأَضَلُّ
سَبِيلًا ۝

जिस शख्स ने इस दुनिया में अपनी पूरी ज़िन्दगी हैवानों की तरह गुज़ार दी, जिसका देखना और सुनना हैवानों का सा देखना और सुनना था, जिसने ना तो अनफ़ुस व आफ़ाक़ में बिखरी हुई अल्लाह तआला की अनगिनत निशानियों को चश्मे बसीरत से देखा ना उनके ज़रिये से अपने ख़ालिक व मालिक को पहचाना, उसने अपनी ज़िन्दगी गोया अंधेपन में गुज़ार दी। ऐसे शख्स को क़यामत के दिन ऐसी हालत में उठाया जायेगा कि वो अँधा होगा। इसी अंधेपन से बचने के लिए अल्लामा इक़बाल ने क्या ख़ूब नसीहत की है: दीदन दीगर आमोज़, शनीदन दीगर आमोज़!

आयात 73 से 84 तक

وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُوكَ عَنِ الذِّمِّيِّ أَوْ حَيْنًا إِلَيْكَ لِتَفْتَرِي عَلَيْنَا غَيْرَةً وَإِذَا لَا تَتَّخِذُوكَ خَلِيلًا ۝ وَلَوْلَا أَنْ تَبَيَّنَّاكَ لَقَدْ كِدْتُمْ تَرَكُنَ إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا ۝ إِذَا لَا أَذَقْنَاكَ ضِعْفَ الْحَيَاةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ۝ وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفِزُّوكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ مِنْهَا وَإِذَا لَا يَلْبِثُونَ خِلْفَكَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ سُنَّةَ مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ۝ أَقِمِ الصَّلَاةَ لِذُلُوكِ الشَّمْسِ إِلَى غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَكَ عَسَى أَنْ يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَحْمُودًا ۝ وَقُلْ رَبِّ ادْخُلْنِي مَدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مَخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَلْ لِي مِنْ لَدُنْكَ سُلْطَانًا نَصِيرًا ۝ وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ۝ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ۝ وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأِجِنَابِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَكُوسًا ۝ قُلْ كُلُّ يَعْمَلْ عَلَى شَاكِلَتِهِ فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدَى سَبِيلًا ۝

आयत 73

“और (ऐ नबी ﷺ) यह लोग तो इस बात पर तुले हुए थे कि आपको फितने में डाल कर उस चीज़ से हटा दें जो हमने आपकी तरफ़ वही की है ताकि आप उसके अलावा कोई और चीज़ गढ़ कर हमसे मन्सूब कर दें”

وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُوكَ عَنِ الذِّمِّيِّ أَوْ حَيْنًا إِلَيْكَ لِتَفْتَرِي عَلَيْنَا غَيْرَةً

यह आयत उस बेपनाह दबाव की तरफ़ इशारा कर रही है जिसका जिसका सामना रसूल ﷺ को कुरैश की तरफ़ से मक्के में था। एक तरफ़ तो कुरैश मक्का आप ﷺ पर मुसलसल दबाव डाल रहे थे कि आप ﷺ कुरान के ग़ैर लचकदार अहकाम में कुछ नमी पैदा करें, इस कलाम में कुछ तरमीम कर लें, कुछ अपनी बात मनवाएँ और कुछ हमारी मानें। यह मज़मून इससे पहले सूरह युनुस आयत 15 में भी आ चुका है: {اِنَّ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَذَا اَوْبَدِلْهُ} (ऐ मोहम्मद ﷺ) आप इसके अलावा कोई दूसरा कुरान पेश करें या फिर इसमें कुछ रद्दो-बदल कर लें।”

दूसरी तरफ़ वो मुसलसल यह मुतालबा भी किए जाते थे कि अगर आप अल्लाह के रसूल हैं तो निशानी के तौर पर हमें कोई मौअज्ज़ा दिखाएँ। उनका यह मुतालबा उनके आवाम तक में बहुत मक़बूल हो चुका था। यही वजह थी कि हुज़ूर ﷺ की अपनी ख़्वाहिश भी यही थी कि उन्हें कोई मौअज्ज़ा दिखा दिया जाये, मगर इस बारे में अल्लाह तआला का फ़ैसला था कि इन्हें कोई हिस्सी मौअज्ज़ा नहीं दिखाया जायेगा। इससे पहले सूरतुल अन्आम (आयत 35) में हम अल्लाह तआला का दो टूक फ़ैसला बायें अल्फ़ाज़ पढ़ आये हैं: {وَإِنْ كَانَ كِبَرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنْ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلْبًا فِي السَّمَاءِ} “और अगर आप पर उनकी ये बे ऐतनाई गिराँ गुज़रती हैं तो अगर आप ﷺ इस्तताअत रखते हैं तो ज़मीन में कोई सुरंग खोदें या आसमान में कोई सीढ़ी लगायें और ले आयें उनके लिए कोई मौअज्ज़ा!” चुनाँचे इन दोनो पहलुओं से हुज़ूर ﷺ को शदीद दबाव का सामना था, और इसी दबाव का इज़हार इस आयत में नज़र आ रहा है।

“और अगर आप ﷺ ऐसा करते तब तो यह लोग आपको अपना गाढ़ा दोस्त बना लेते।”

وَإِذَا لَا تَتَّخِذُوكَ خَلِيلًا ۝

तारीख के सफ़हात गवाह हैं कि इस नौइयत की मदाह्नत (compromise) के एवज़ वह लोग आप ﷺ को अपना बादशाह भी तस्लीम करने के लिए तैयार थे।

आयत 74

“और अगर हम आपको साबित क़दम ना रखते तो ऐन मुम्किन था कि आप صلی اللہ علیہ وسلم उनकी तरफ़ कुछ ना कुछ झुक ही जाते।”

وَلَوْلَا أَنْ تَبَيَّنَّاكَ لَقَدْ كِدْتَ تَرْكُنَ إِلَيْهِمْ شَيْئًا
قَلِيلًا ﴿٢٥﴾

यह बहुत नाज़ुक और अहम मज़मून है। हज़रत यूसुफ़ अलै. के बारे में सूरह यूसुफ़ में इसी तरह फ़रमाया गया था: {وَلَقَدْ كُودُوا بِهِ لَوَارِثًا فَتَلَقَّاهُ مِنْ دُونِ الْعَيْنِ فَذُوقُوا صَوْلَاتَهُ فَدَجَّرَتْ فِي سَفَرٍ} (आयत 24) यानि अज़ीज़ मिस्र की बीबी ने तो क़सद कर ही लिया था, और यूसुफ़ अलै. भी क़सद कर लेते अगर वो अल्लाह की बुरहान ना देख लेते। यानि यह इम्कान था कि बरबनाए तबअ बशरी वो भी इरादा कर बैठते, मगर अल्लाह ने उन्हें इससे महफूज़ रखने का अहतमाम फ़रमाया। हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم के लिए भी यहाँ इसी तरह फ़रमाया कि अगर हमने आपके पाँव जमा कर आप صلی اللہ علیہ وسلم के दिल को अच्छी तरह मज़बूत ना कर दिया होता तो क़रीब था कि आप صلی اللہ علیہ وسلم किसी ना किसी हद तक उनकी तरफ़ माइल हो जाते। बहरहाल इन अल्फ़ाज़ से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم पर इस दौर में कुरैश मक्का की तरफ़ से किस क़द्र शदीद दबाव था।

आयत 75

“(अगर ऐसा हो जाता) तब हम आप صلی اللہ علیہ وسلم को दुगनी सज़ा देते ज़िन्दगी में और दुगनी सज़ा देते मौत पर”

إِذَا لَاقَيْتَكَ ضِعْفَ الْحَيَاةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ

الرَّبُّ رَبُّ رَبِّ وَإِنْ تَكُ لَ وَالْعَبْدُ عَبْدٌ وَإِنْ تَكُ لَ

“रब तो आखिर रब है जितना भी तनज्जुल फ़रमा ले और बंदा बहरहाल बंदा ही है जिस क़द्र भी तरक्की पा ले!”

“फिर ना पाते आप صلی اللہ علیہ وسلم अपने लिए हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार।”

ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ﴿٢٦﴾

आयत का मज़मून बहुत नाज़ुक है। बहरहाल मैंने अल्फ़ाज़ के मुताबिक़ तर्जुमा करने की कोशिश की है, लेकिन मौक़ा-महल और सयाक़ व सबाक़ की नज़ाकत को देखते हुए असल मफ़हूम को दक़्त नज़री से समझने की ज़रूरत है। अगरचे यह ख़िताब नबी अकरम صلی اللہ علیہ وسلم से है मगर सख़्ती का ख़ूब उन लोगों की तरफ़ है जिन्होंने अपनी ज़िद्द और हठधर्मी से आप صلی اللہ علیہ وسلم के मुक़ाबले में ऐसे हालात पैदा कर रखे थे। इन अल्फ़ाज़ में उन लोगों को सुनाया जा रहा है कि बदबख़्तों! तुम जो चाहो कर लो, हमारे नबी صلی اللہ علیہ وسلم तुम्हारे इस दबाव में आकर तुम्हारे मुतालबात मानने वाले नहीं हैं।

आयत 76

“और यह तुले हुए हैं कि आप صلی اللہ علیہ وسلم के क़दम उखाड़ दें इस ज़मीन से, ताकि आप صلی اللہ علیہ وسلم को यहाँ से निकाल बाहर करें, और (अगर ऐसा हुआ तो) तब वो खुद भी नहीं ठहरेंगे आप صلی اللہ علیہ وسلم के बाद मगर थोड़ा अरसा।”

وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفِزُّوكَ مِنَ الْأَرْضِ لَيُخْرِجُوكَ

مِنْهَا وَإِذَا لَا يَلْبِثُونَ خِلْفَكَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٢٧﴾

यह मक्की दौर के आखरी अय्याम के उन हालात की झलक है जब इस कशमकश की शिद्दत इन्तहा को पहुँच चुकी थी और हालात बेहद नाज़ुक ख़ूब इख़्तियार कर चुके थे। यहाँ पर रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم को (मआज़ अल्लाह) मक्के से निकालने के लिए कुरैश की मन्सूबाबन्दी का सिर्फ़ ज़िक़्र किया गया है, मगर इसकी नफ़ी करने के बजाय यह पेशनगोई की गई है कि अगर ऐसा हुआ तो आप صلی اللہ علیہ وسلم के बाद वो खुद भी यहाँ पर ज़्यादा अरसा नहीं रह सकेंगे। चुनाँचे ऐसा ही हुआ। कुरैश के अक्सर सरदार तो हिजरत के दूसरे बरस ही जंगे बदर में क़त्ल हो गये जबकि सिर्फ़ आठ साल बाद मक्का शहर पर आप صلی اللہ علیہ وسلم का बाक़ायदा तसल्लुत भी क़ायम हो गया।

आयत 77

“यही (हमारा) तरीका रहा उनके बाब में जिन्हें हमने आप صلی اللہ علیہ وسلم से पहले भेजा अपने रसूलों में से”

سُنَّةً مِّنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا

यानि आप صلی اللہ علیہ وسلم से पहले जितने भी रसूल आये उनके बारे में हमारा क़ायदा और क़ानून यही रहा है कि रसूल की हिजरत के बाद मुतालका क़ौम पर से अल्लाह की अमान उठा ली जाती है और उसके बाद वह क़ौम बहुत जल्द अज़ाब की गिरफ्त में आ जाती है।

“और आप हमारे तरीके में कोई तब्दीली नहीं पायेंगे।”

وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ۝

आयत 78

“नमाज़ क़ायम रखिये सूरज के ढलने से लेकर रात के तारीक होने तक, और कुरान का पढ़ा जाना फ़ज़ के वक़्त।”

اقِمِ الصَّلَاةَ لِلدُّلُوكِ الشَّمْسِ إِلَى غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ ۖ

यह हुक्म पँचगाना नमाज़ के बारे में है। सूरज के ढलने के साथ ही ज़ौहर की नमाज़ का वक़्त हो जाता है। फिर अस्त्र, मगरिब और इशा की नमाज़ों का एक सिलसिला है जो रात गये तक जारी रहता है। पाँचवीं नमाज़ यानि फ़ज़ को यहाँ पर “कुरानुल फ़ज़” से ताबीर किया गया है, क्योंकि इसमें तवील क़िरात की जाती है। वाज़ेह रहे कि नमाज़ पँचगाना के अवक़ात के बारे में यह हुक्म अमूमी नौइयत का है, जबकि हर नमाज़ के वक़्त की खुसूसियत के साथ निशानदेही बाद में हज़रत जिब्रील अलै. ने की जिसकी तफ़सील कुतुब अहादीस में मिलती है।

“यक़ीनन फ़जर के वक़्त कुरान का पढ़ा जाना मशहूद है।”

إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ۝

गोया फ़ज़र का वक़्त नमाज़ और क़िरात के ऐतबार से खुसूसी अहमियत का हामिल है। रात भर जिस्मानी और ज़हनी आराम के बाद फ़ज़ के वक़्त इंसान ताज़ा दम होता है। इस वजह से नमाज़ में उसकी हुज़ूरी-ए-क़ल्ब की कैफ़ियत भी बेहतर होती है। इसके अलावा फ़जर का वक़्त फ़रिश्तों की हाज़री के ऐतबार से भी अहम है। दुनिया के मामलात की निगरानी करने वाले फ़रिश्तों की ड्युटियाँ सुबह और अस्त्र के अवक़ात में तब्दील होती हैं। चुनाँचे इन दोनों नमाज़ों में दोनों जमाअतों के फ़रिश्ते मौजूद होते हैं। ड्युटी से फ़ारिग होकर जाने वाले फ़रिश्ते भी और आइंदा ड्युटी का चार्ज लेने वाले भी। लिहाज़ा फ़रिश्तों की इस हाज़री की वजह से भी नमाज़े फ़ज़ खुसूसी अहमियत की हामिल है।

आयत 79

“और रात के एक हिस्से में आप صلی اللہ علیہ وسلم जागिये इस (कुरान) के साथ”

وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ

यहाँ लफ़्ज़ “बिही” में वही अंदाज़ है जिसकी तक़रार इससे पहले हम सूरतुल अन्आम में देख चुके हैं। (اُنْذِرْ بِهِ ذُرِّيَّهٖ) यानि इन्ज़ार, तज़कीर, तब्थीर, तब्लीग़ सब कुरान के ज़रिये से हो। चुनाँचे यहाँ पर रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم को तहज्जुद का हुक्म दिया गया तो फ़रमाया गया कि रात का एक हिस्सा आप कुरान के साथ जागिये। तहज्जुद की नमाज़ आप कुरान के साथ पढ़ें। गोया तहज्जुद का मक़सद और उसकी असल रूह यही है कि इसमें ज़्यादा से ज़्यादा कुरान पढ़ा जाये। छोटी-छोटी सूरतों के साथ रकअतों की मखसूस तादाद पूरी कर लेने से यह मक़सद पूरा नहीं होता।

“यह इज़ाफ़ी चीज़ है आपके लिए, उम्मीद है कि आपका रब आपको मक़ामे महमूद पर फ़ायज़ फ़रमायेगा।”

نَافِلَةٌ لَّكَ عَسَىٰ أَن يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ۝

“मक़ामे महमूद” बहुत ही आला और अरफ़ा मक़ाम है जिस पर आँ हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم को मैदाने हश्र में और जन्नत में फ़ायज़ किया जायेगा। हम इस मक़ाम की अज़मत और कैफ़ियत का अंदाज़ा अपने तसव्वुर से नहीं कर सकते।

आयत 80

“और दुआ कीजिए कि ऐ मेरे रब मुझे दाखिल कर इज्जत का दाखिल करना और मुझे निकाल इज्जत का निकालना”

وَقُلْ رَبِّ ادْخُلْنِيْ مَدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ

صِدْقٍ

यह हिजरत की दुआ है। जब हिजरत का इज्जत आया तो साथ ही यह दुआ भी तालीम फ़रमा दी गई कि ऐ अल्लाह! तू मुझे जहाँ भी दाखिल फ़रमाए यानि यस्त्रिब (मदीने) में, इज्जत व तकरीम के साथ दाखिल फ़रमा, वहाँ पर मेरा दाखिला सच्चा दाखिला हो, और यहाँ मक्के से मुझे निकालना है तो बाइज्जत तरीक़े से निकाल। याद कीजिए कि सूरह युनुस की आयत 93 में बनी इस्राईल को अच्छा ठिकाना अता किए जाने का ज़िक्र भी “مَبُوءًا صِدْقٍ” के अल्फ़ाज़ से हुआ है।

“और मुझे ख़ास अपने पास से मददगार कुव्वत अता फ़रमा।”

وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ۝۱۰

यानि मदीने में जिस नए दौर का आगाज़ होने वाला है उसमें अपने दीन के ग़लबे के अस्बाब पैदा फ़रमा, और मुझे वो ताक़त, कुव्वत और इक़तदार अता फ़रमा जिससे दीन की अमली तन्फ़ीज़ का काम आसान हो जाये। इस दुआ में रसूल अल्लाह ﷺ को बिल्कुल वही कुछ माँगने की तलक़ीन की जा रही है जो अन्क़रीब आप ﷺ को मिलने वाला था। चुनाँचे तारीख़ ग़वाह है कि मदीने में आपका इस्तक़बाल एक बादशाह की तरह हुआ। औस और ख़ज़रज के क़बाइल ने आपको अपना हाकिम तस्लीम कर लिया। यहूदियों के तीनों क़बाइल एक मुआहिदे के ज़रिए आप ﷺ की मर्ज़ी के ताबे अ हो गये और यूँ आप ﷺ मदीने में दाख़िल होते ही वहाँ के बेताज़ बादशाह बन गये।

आयत 81

“और आप कह दीजिए कि हक़ आ गया और बातिल भाग गया।”

وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبٰطِلُ

बज़ाहिर तो अभी इस इन्क़लाब के आसार नमुदार नहीं हुए थे, अभी आठ साल बाद जाकर कहीं मक्का फ़तह होने वाला था, लेकिन आलमे अम्र में चूँकि इसका फैसला हो चुका था लिहाज़ा अभी से आप ﷺ की ज़बान मुबारक से हक़ की आमद और बातिल के फ़रार का ऐलान कराया जा रहा है।

“यक़ीनन बातिल है ही भाग जाने वाला।”

إِنَّ الْبٰطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝۱۱

बातिल को सबात नहीं। जब भी इसका हक़ के साथ मआरका होगा तो हक़ के मुक़ाबले में बातिल हमेशा पसपाई इख़्तियार करने पर मजबूर हो जायेगा।

आयत 82

“और हम कुरान से वो कुछ नाज़िल करते हैं जो शिफ़ा और रहमत है अहले ईमान के हक़ में।”

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ

यहाँ पर फिर कुरान का लफ़ज़ मुलाहिज़ा हो। नोट कीजिए कि खुद कुरान का ज़िक्र इस सूरत में जितनी मर्तबा आया है किसी और सूरत में नहीं आया। इस आयत में कुरान के अहक़ाम को अहले ईमान के लिए शिफ़ा और रहमत क़रार दिया गया है। इससे क़ब्ल यही मज़मून सूरह युनुस में इस तरह बयान हुआ है: {وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ} “ऐ लोगो! आ गई है तुम्हारे पास नसीहत तुम्हारे रब की तरफ़ से और तुम्हारे सीनों (के अमराज़) की शिफ़ा और अहले ईमान के लिए हिदायत और रहमत।” यानि कुरान एक मोमिन के सीने को तमाम आलाईशों और बीमारियों (मसलन कुफ़्र, शिर्क, तकब्बुर, हसद, हुब्बे माल, हुब्बे जान, हुब्बे औलाद वगैरह) से साफ़ और पाक कर देता है।

“लेकिन यह ज़ालिमों को नहीं बढ़ाता मगर ख़सारे ही में।”

وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ﴿٨٣﴾

जैसा कि सूरतुल बक्ररह की आयत नम्बर 56 में फ़रमाया गया है:
}।

يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ {

आयत 83

“और जब हम इंसान को नेअमतों से नवाज़ते हैं तो वो ऐराज़ करता है और (हमसे) कव्ची कतराने लगता है।”

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأْبِحَانِيهِ

“और जब उस पर कोई तकलीफ़ आ पड़ती है तो मायूस होकर रह जाता है।”

وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوسًا ﴿٨٤﴾

आयत 84

“आप कह दीजिए कि हर शख्स काम करता है अपने शाकिला के मुताबिक़।”

قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلَى شَاكِلَتِهِ

“शाकिला” से मुराद हर इंसान की शख्सियत का मखसूस साँचा है, जैसे आपको किसी धातु से कोई शय बनानी है तो पहले उसका एक साँचा (pattern) बनाते हैं और उस धातु को पिघला कर उसमें डाल देते हैं तो वो धातु वही मखसूस शकल इख्तियार कर लेती है। इंसानी शख्सियत के मखसूस साँचे की तश्कील में इंसान की मौरूसी genes और उसका ख़ारजी माहौल बुनियादी किरदार अदा करते हैं। गोया मौरूसी अवामिल और माहौलयाती अवामिल के हासिल ज़र्ब से इंसान की शख्सियत का जो हयूला बनता है वही उसका शाकिला है। किसी शख्स ने नेकी और बुराई के लिए जो भी मेहनत और कोशिश करनी है वो अपने इस शाकिले के अन्दर रह कर ही करनी होगी। गोया किसी इन्सान का शाकिला उसके दायरा-ए-अमल की हुदूद का तअय्युन करता है। वो ना तो इन हुदूद से तजावुज़ कर सकता है और ना ही इनसे बढ़ कर अमल करने का वह मुकल्लफ़ है। जैसे अँग्रेज़ी में कहा जाता है: One cannot grow out of his skin यानि किसी ने मोटा होने की जितनी भी कोशिश करनी है अपनी खाल के अंदर रह कर ही करनी है। वह अपनी खाल से बाहर बहरहाल नहीं निकल सकता। चुनाँचे हर शख्स अपने शाकिला के मुताबिक़ अमल करता है और अल्लाह को खूब इल्म है कि उसने किसको किस तरह का शाकिला दे रखा है। और वो हर शख्स से उसके शाकिला की मुनास्बत से ही हिसाब लेगा। (इस मज़मून की मज़ीद वज़ाहत के लिए मुलाहिज़ा हो बयानुल कुरान, जिल्द अब्वल, सूरतुल बक्ररह, तशरीह आयत 286)

“पस आपका रब खूब जानता है उसे जो ज़्यादा सीधे रास्ते पर है।”

فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ مِمَّنْ هُوَ أَهْدَى سَبِيلًا ﴿٨٥﴾

इस मज़मून की वज़ाहत करते हुए रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: ((الْأَنْسَاءُ مَعَانِي)) (22) कि इंसान मादनियात की तरह हैं। मादनियात में से हर एक की अपनी-अपनी खुसूसियात (properties) होती है। सोने की ore चाँदी की ore से बिल्कुल मुख्तलिफ़ खुसूसियात की हामिल है। इसी तरह हर इंसान की अपनी-अपनी खुसूसियात हैं और अल्लाह तआला हर एक की खुसूसियात से खूब वाकिफ़ है।

आयात 85 से 93 तक

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٨٥﴾ وَلَيْنَ شِئْنًا لَتَذْهَبَنَّ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا ﴿٨٦﴾ إِلَّا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ﴿٨٧﴾ قُلْ لِّئِنْ

اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ فَأَبَى أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ۝ وَقَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّى تَنْفِرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَنْبُوعًا ۝ أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِنْ نَخِيلٍ وَعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْأَنْهَارَ خِلَالَهَا تَفْجِيرًا ۝ أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسْفًا أَوْ تَأْتِي بَالِغًا مِنَ الْمَلَائِكَةِ قَبِيلًا ۝ أَوْ يَكُونُ لَكَ بَيْتٌ مِنْ زُخْرَفٍ أَوْ تَرْفَى فِي السَّمَاءِ وَلَنْ نُؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتَّى تُنْزِلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَقْرُؤُا قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيَ هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَسُولًا ۝

आयत 85

“(ऐ नबी ﷺ) यह लोग आपसे पूछते हैं रूह के बारे में।”

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ

“आप फ़रमा दीजिए कि रूह मेरे रब के अम्र में से है और तुम्हें नहीं दिया गया इल्म मगर थोड़ा सा।”

قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ۝

रूह के बारे में यह सवाल उन तीन सवालात में से था जो एक मर्तबा मदीने के यहूदियों ने कुरैशे मक्का के ज़रिए रसूल अल्लाह ﷺ से पूछ भेजे थे। उनमें से एक सवाल अस्थाबे कहफ़ के बारे में था और दूसरा जुलक्रनैन के बारे में। इन दोनों सवालात के तफ़सीली जवाबात सूरह कहफ़ में दिए गये हैं, मगर रूह के मुताल्लिक सवाल का इन्तहाई मुख़्तसर जवाब इस सूरत में दिया गया है।

इस बारे में यहाँ सिर्फ़ इतना बताया गया है कि रूह का ताल्लुक आलमे अम्र से है और आलमे अम्र चूँकि आलमे ग़ैब है इसलिए उसके बारे में तुम लोग कुछ नहीं जान सकते। इंसान के इल्म का ज़रिया उसके हवास हैं और अपने इन हवास के ज़रिए वो सिर्फ़ आलमे ख़ल्क की चीज़ों के बारे में जान सकता है, आलमे ग़ैब (आलमे अम्र) तक उसका इल्म रसाई हासिल नहीं कर सकता। चुनाँचे आलमे ग़ैब की बातों को उसे वैसे ही मानना होगा जैसे कुरान और रसूल के ज़रिए से बताई गई हों। इसी का नाम ईमान बिल् ग़ैब है, जिसका ज़िक्र कुरान मजीद के आगाज (सूरह बक्ररह, आयत 3) में ही कर दिया गया है: {الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ} कबल अज़े सूरतुल आराफ़ की आयत 154 और सूरह नहल की आयत 40 की तशरीह के ज़िम्न में आलमे ख़ल्क और आलमे अम्र के बारे में तफ़सीली बहस की जा चुकी है। वहाँ यह भी बताया जा चुका है कि फ़रिश्तों, इंसानी अरवाह और वही का ताल्लुक आलमे अम्र से है।

आयत 86

“और (ऐ नबी ﷺ!) अगर हम चाहें तो ले जायें इस (कुरान) को जो हमने वही किया है आपकी तरफ़, फिर आप ना पायेंगे अपने लिए इस पर हमारे मुक़ाबले में कोई मददगार।”

وَلَيْنَ شِئْنَا لَنَرْبِيَنَّ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا ۝

आयत 87

“मगर यह तो रहमत है आप ﷺ के रब की तरफ़ से। इसमें कोई शक नहीं कि उसका फ़ज़ल आप ﷺ पर बहुत बड़ा है।”

إِلَّا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ۝

यह कुरान का ख़ास असलूब है जिसके मुताबिक़ बज़ाहिर ख़िताब तो हुज़ूर ﷺ से है मगर असल में लोगों को यह बावर कराना मक़सूद है कि आप ﷺ का असल मक़ाम मर्तबा क्या है। इसी मक़सद के लिए आप ﷺ से बार-बार اکابر مِّنكُمْ

का ऐलान कराया गया है कि ऐ लोगो! मैं तुम्हारी तरह एक इंसान हूँ, मुझ पर अल्लाह की तरफ़ से वही आती है। यहाँ इसी बात की ताकीद के लिए यह असलूब इख़्तियार किया गया है कि यह हमारी अता और मेहरबानी है कि हमने ब-ज़रिया-ए-वही आप पर यह अज़ीमुश्शान कलाम नाज़िल किया है। अगरचे इसका हरगिज़-हरगिज़ कोई इम्कान नहीं था, मगर महज़ एक उसूली बात समझाने के लिए फ़रमाया गया कि जिस तरह हमने यह कलाम नाज़िल किया है इसी तरह हम इसे वापस भी ले सकते हैं, इसे सल्ब भी कर सकते हैं। यह कलाम ना तो आप صلی اللہ علیہ وسلم का खुदसाख़्ता है और ना ही आप صلی اللہ علیہ وسلم इसे अपने पास रखने पर क़ादिर हैं। यह तो सरासर अल्लाह की मेहरबानी और उसकी रहमत का मज़हर है और वही इसे आप صلی اللہ علیہ وسلم के सीने में जमा करके महफूज़ फ़रमा रहा है।

आयत 88

“आप صلی اللہ علیہ وسلم कह दीजिए कि अगर जमा हो जायें तमाम इंसान और तमाम ज़िन्न इस बात पर कि वो इस कुरान की मानिंद ले आयें तो वो नहीं ला सकेंगे इसकी मानिंद, अगरचे वो एक-दूसरे के मददगार भी बन जायें।”

قُلْ لِّیْنَ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰی اَنْ یَّاتُوْا
بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا یَاتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانْ بَعْضُهُمْ
لِبَعْضٍ ظَهِیْرًا ﴿۸۸﴾

इस मौजू पर कुरान का अपने मुखातबीन से यह सबसे पहला मुतालबा है जिसमें उनसे पूरे कुरान का जवाब देने को कहा गया है।

आयत 89

“और हमने फेर-फेर कर बयान की हैं लोगों के लिए इस कुरान में हर तरह की मिसालें”

“लेकिन अक्सर लोग इंकार (और कुफ़ाने नेअमत) ही पर अड़े हुए हैं।”

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ
فَاَبٰی اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا کُفُوْرًا ﴿۸۹﴾

आयत 90

“और उन्होंने कहा कि हम हरगिज़ आप صلی اللہ علیہ وسلم की बात नहीं मानेंगे”

“यहाँ तक कि आप صلی اللہ علیہ وسلم जारी कर दें हमारे लिए ज़मीन से एक चश्मा।”

وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ

حَتّٰی تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ یَنْبُوْعًا ﴿۹۰﴾

मुशरिकीने मक्का की तरफ़ से इस तरह के मुतालबात बार-बार किये जाते थे कि जब तक आप صلی اللہ علیہ وسلم हमें कोई मौअज़्ज़ा नहीं दिखायेंगे हम आप صلی اللہ علیہ وسلم को रसूल नहीं मानेंगे।

आयत 91

“या आप صلی اللہ علیہ وسلم के लिए बन जाये खज़ूरों और अंगूरों का एक बाग, फिर आप जारी कर दें उसके अंदर नहरें।”

اَوْ تَكُوْنُ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِیْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرُ الْاَنْهَارَ
خِلَالَهَا تَفْجِیْرًا ﴿۹۱﴾

आयत 92

“या आप ﷺ गिरा दें आसमान हम पर टुकड़े-टुकड़े करके जैसा कि आप दावा करते हैं”

أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسْفًا

यानि आप ﷺ हमें क़यामत के हवाले से ख़बरें सुना-सुना कर जो डराते रहते हैं कि उस वक़्त आसमान फट जायेगा और पहाड़ रेज़ा-रेज़ा हो जायेंगे, तो आप ﷺ आसमान का कोई टुकड़ा अभी हम पर गिरा कर दिखा दें।

“या आप ले आयें अल्लाह को और फ़रिश्तों को (हमारे) सामने।”

أَوْ تَأْتِي بِاللّٰهِ وَالْمَلَائِكَةِ قَبِيلًا ﴿٩٣﴾

आयत 93

“या आप ﷺ के लिए सोने का एक महल (तामीर) हो जाये, या आप आसमान में चढ़ जायें”

أَوْ يَكُونْ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ ذُرْهُ تُرْقِي فِي السَّمَاءِ

“और हम आप ﷺ के (आसमान में) चढ़ने को भी नहीं मानेंगे यहाँ तक कि आप ﷺ उतार लायें एक किताब जिसे हम खुद पढ़ें।”

وَلَنْ نُؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتَّىٰ تُنْزِلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَّقْرُؤُهُ

उन लोगों के इन तमाम मुतालबात के जवाब में सिर्फ़ एक बात फ़रमाई गई:

“आप ﷺ कह दीजिए कि मेरा रब पाक है, मैं नहीं हूँ मगर एक बशर रसूल।”

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَّسُولًا ﴿٩٤﴾

यानि मैं भी तुम्हारी तरह का एक इंसान हूँ। मैं भी उसी तरह पैदा हुआ हूँ जिस तरह तुम सब लोग पैदा हुए हो। मैं तुम्हारी ही तरह खाता-पीता हूँ, दुनिया के काम-काज करता हूँ, बाज़ारों में चलता-फिरता हूँ और मैंने हर सतह पर कारोबार भी किया है। मैं तुम्हारे दरमियान एक उम्र गुज़ार चुका हूँ और मेरी सीरत और अख़लाक व किरदार रोज़े रौशन की तरह तुम्हारे सामने है। मुझमें और तुम में बुनियादी फ़र्क़ यह है कि मेरे पास अल्लाह की तरफ़ से वही आती है, और अल्लाह का वह पैग़ाम जो ब-ज़रिया-ए-वही मुझ तक पहुँचता है वो मैं तुम लोगों तक पहुँचाने पर मामूर हूँ।

अगरचे सीरत व किरदार और मर्तबा-ए-रिसालत व नुबुवत के ऐतबार से आम इंसानों से नबी अकरम ﷺ की कोई मुनास्बत नहीं, मगर आम बशरी तक्ज़ाज़ों के हवाले से उन्हें यह जवाब दिया गया कि मैं भी एक इंसान ही हूँ।

आयात 94 से 100 तक

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَّسُولًا ﴿٩٤﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ
مَلَكَةٌ يَّمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمُ مِنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَّسُولًا ﴿٩٥﴾ قُلْ كَفَىٰ بِاللّٰهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾ وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضِلِلْ فَلَن تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ
الْقِيَمَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمِيًّا وَبُكْمًا وَصُمًّا مَّا وَهَمُّهُمْ جَهَنَّمُ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا ﴿٩٧﴾ ذَلِكَ جَزَاءُ هُمُ بِآثَمِهِمْ
كَفَرُوا بِآيَاتِنَا وَقَالُوا إِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرَفَاتًا إِنَّا لَبَعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَا رَيْبَ فِيهِ فَأَبَى الظَّالِمُونَ إِلَّا كُفُورًا ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّوْ
أَنْتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا لَّأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ﴿١٠٠﴾

आयत 94

“और नहीं रोका लोगों को ईमान लाने से जबकि उनके पास हिदायत आ गई, मगर इस बात ने कि उन्होंने कहा: क्या अल्लाह ने भेजा है एक बशर को रसूल बना कर!”

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَى إِلَّا
أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَسُولًا ﴿٩٥﴾

उनका कहना था कि इस काम के लिए उनकी तरफ कोई फ़रिश्ता भेजा जाता तो भी कोई बात थी। अब वो अपनी ही तरह के एक इंसान को आखिर क्योंकर अल्लाह का रसूल मान लें? उनके इस ऐतराज़ के जवाब में जो दलील दी जा रही है वह बहुत अहम है:

आयत 95

“आप ﷺ फ़रमायें कि अगर ज़मीन में फ़रिश्ते (आबाद होते और वो) इत्मिनान से चलते-फिरते होते तो हम ज़रूर उन पर आसमान से किसी फ़रिश्ते ही को रसूल बना कर भेजते।”

قُلْ لَوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَمْشُونَ مُطْمَئِنِّينَ
لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَسُولًا ﴿٩٥﴾

रसूल का काम है अल्लाह के पैग़ाम को इंसानों तक पहुँचाना, उसकी एक-एक बात को समझाना और फिर अल्लाह के अहक़ाम के मुताबिक़ अमल करके अपनी ज़िन्दगी को उनके सामने बतौर नमूना पेश करना। अब ज़ाहिर है इंसानों के लिए तो नमूना तो एक इंसान ही हो सकता है, फ़रिश्ता तो उनके लिए नमूना नहीं बन सकता। चूनाँचे अगर उनके पास एक फ़रिश्ता रसूल बन कर आ जाता तो यही लोग कहते कि यह तो फ़रिश्ता है, इसकी कोई ख़्वाहिश है ना ज़रूरत, ना रिश्ता है ना नाता, ना जज़्बात है ना अहसासात, हमारी इससे क्या निस्बत? हमारी तो घर गृहस्थी है, अहलो अयाल हैं, मजबूरियाँ हैं, ज़रूरतें हैं, तरह-तरह के जंजाल हैं, हम इसकी सीरत और इसके किरदार की पैरवी कैसे कर सकते हैं? अलबत्ता अगर ज़मीन में फ़रिश्ते बसते होते और उनकी तरफ़ रसूल भेजना होता तो ज़रूर किसी फ़रिश्ते ही को इस काम पर मामूर किया जाता, मगर अब मामला चूँकि इंसानों का है लिहाज़ा उन पर हुज्जत कायम करने के लिए लाज़िमन किसी इंसान ही को बतौर रसूल भेजा जाना चाहिए था, सो ऐसा ही हुआ।

आयत 96

“आप कह दीजिए कि अल्लाह काफ़ी है गवाह मेरे और तुम्हारे दरमियान।”

قُلْ كَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ

रद्दो-क़दह बहुत हो चुकी। अब मैं यह मामला अल्लाह तआला के सुपुर्द करता हूँ, जो मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह है। अब वही फ़ैसला करेगा।

“यक़ीनन वो अपने बंदों से बा-ख़बर और उन पर नज़र रखने वाला है।”

إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿٩٦﴾

आयत 97

“और जिसे अल्लाह हिदायत देता है बस वही हिदायत याफ़्ता होता है”

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ

“और जिसे वो गुमराह कर दे तो हरगिज़ नहीं पायेंगे आप ऐसे लोगों के लिए कोई मददगार उसके सिवा।”

وَمَنْ يُضِلِّ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ

“और हम उन्हें जमा करेंगे क़यामत के दिन उनके मुँहों के बल (चलाते हुए), अंधे, गूंगे और बहरे।”

وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عَلَى وُجُوهِهِمْ عُمِّيًّا وَبُكْمًا
وَصُمًّا

“उनका ठिकाना जहन्नम है। जब भी उसकी आग धीमी होने लगेगी हम उसे उनके लिए मज़ीद भड़का दिया करेंगे।”

مَا لَهُمْ جَهَنَّمَ كُلًّا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا ﴿٤٧﴾

आयत 98

“यह सज़ा है उनकी इस बिना पर कि उन्होंने हमारी आयात के साथ कुफ़ किया”

ذَلِكَ جَزَاءُ هُم بَأْتَهُمْ كَفَرُوا بَايْتَنَا

“और उन्होंने कहा कि क्या जब हो जायेंगे हम हड्डियाँ और चूरा-चूरा, तो क्या हम दोबारा उठा लिए जायेंगे एक नई मख़्लूक की सूरत में?”

وَقَالُوا إِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا إِنَّا لَبَعُوثُونَ
خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾

आयत 99

“क्या उन्होंने ग़ौर नहीं किया कि वो अल्लाह जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया वो इस पर कादिर है कि उन जैसे फिर पैदा कर दे”

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
قَادِرٌ عَلَى أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ

जब तुम्हें उसने एक दफ़ा पैदा किया है तो अब तुम्हारी तरह के इंसानों को दोबारा पैदा करना उसके लिए क्योंकर मुश्किल होगा?

“और उसने मुकर्रर किया है कि उनके लिए एक वक्त्र मुअय्यन जिसमें कोई शक नहीं, मगर इन ज़ालिमों ने इंकार ही किया सिवाय कुफ़ (और कुफ़ाने नेअमत) के।”

وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَا رَيْبَ فِيهِ فَأَبَى الظَّالِمُونَ إِلَّا
كُفُورًا ﴿٩٩﴾

उन्होंने अल्लाह के हर हुक्म और उसकी हर आयत से कुफ़ और इंकार की रविश अपनाए रखी।

आयत 100

“आप ﷺ कहिये कि अगर तुम्हें इख़्तियार होता मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों पर”

قُلْ لَّوْ أَنْتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي

“तब भी तुम ज़रूर रोक रखते (उन्हें) खर्च हो जाने के डर से।”

إِذَا لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ

अगर अल्लाह की रहमत के बेहिसाब ख़ज़ाने तुम्हारे इख़्तियार में होते तो तुम लोग अपने फ़ितरी बुख़ल के सबब उनके दरवाज़े भी बंद कर देते कि कहीं खर्च होकर ख़त्म ना हो जाये।

“और इंसान बहुत ही तंग दिल है।”

وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ﴿١٠٠﴾

आयात 101 से 111 तक

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَمَسَّئِلَ بَنِي إِسْرَءِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يُمُوسَى مَسْحُورًا ۝ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا أَنْزَلَ هَؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِصَآئِرٍ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يُفِرُّعُونَ مَثْبُورًا ۝ فَأَرَادَ أَنْ يَنْتَفِرْهُمْ مِنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ جَمِيعًا ۝ وَقُلْنَا مَنْ بَعْدَهُ لِبَنِيِّ إِسْرَءِيلَ اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ۝ وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝ وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى مُكُتٍ وَنَزَّلْنَاهُ تَنْزِيلًا ۝ قُلْ آمِنُوا بِهِ أَوْ لَا تُؤْمِنُوا إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَى عَلَيْهِمْ يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ۝ وَيَقُولُونَ سُبْحَنَ رَبِّنَا إِن كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ۝ وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَسْكُونُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ۝ قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوْ ادْعُوا الرَّحْمَنَ أَيًّا مَا تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى وَلَا تَجْهَرُوا بِصَلَاتِكُمْ وَلَا تَخَافُوهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذَّلِيلِ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ۝

आयत 101

“और हमने मूसा को वाज़ेह निशानियाँ अता की थीं”

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ

इनमें से तो दो निशानियाँ वो थीं जो आपको इब्तदा में अता हुई थीं, यानि असा का अज़दाह बन जाना और यदे बैयज़ा (सफ़ेद हाथ)। इनके अलावा सात निशानियाँ वो थीं जिनका ज़िक्र सूरतुल आराफ़ की आयत 130 और 133 में हुआ है। यह अल्लाह तआला की तरफ़ से मुख्तलिफ़ किस्म के अज़ाब थे (क्रहत साली, फ़लों और फ़सलों का नुक़सान, तूफ़ान, टिड्डी दल, चीटियाँ, मेंढक और खून) जो मिस्र में क्रौमे फ़िरऔन पर मुख्तलिफ़ औक्रात में आते रहे। जब वो लोग अज़ाब की तकालीफ़ से तंग आते तो उसे टालने के लिए हज़रत मूसा अलै. से दुआ की दरख्वास्त करते और हज़रत मूसा अलै. की दुआ से वो अज़ाब टल जाता।

यहाँ यह नुक्ता लायक-ए-तवज्जोह है कि सूरत के आगाज़ में भी हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र हुआ था और अब आखिर में भी आपका ज़िक्र होने जा रहा है। यह असलूब हमें कुरान हकीम की उन सूरतों में मिलता है जो एक ख़ुत्बे के तौर पर एक ही तंज़ील में नाज़िल हुई हैं। ऐसी सूरतों की इब्तदाई और आख़री आयात ख़ुसूसी अहमियत और फ़ज़ीलत की हामिल होती हैं और इनके मज़ामीन में एक ख़ास रब्त पाया जाता है। सूरत के आगाज़ (सूरह बनी इस्राईल आयत नम्बर 2) में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की हयाते मुबारका के उस दौर का ज़िक्र किया गया है जब आप मिस्र से निकल कर सहराए सीना में आ चुके थे और वहाँ से आपको कोहे तूर पर बुला कर तौरात अता की गई थी: {وَآتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ} “और हमने मूसा को किताब (तौरात) दी और हमने उसे बना दिया हिदायत बनी इस्राईल के लिए, कि तुम मत बनाओ मेरे सिवा किसी को कारसाज़।” अब आखिर में बनी इस्राईल के ज़माना-ए-मिस्र के हालात के हवाले से फिर हज़रत मूसा अलै. का ज़िक्र किया जा रहा है:

“तो ज़रा पृष्ठें बनी इस्राईल से (उस ज़माने का हाल) जबकि मूसा उनके पास आये तो फ़िरऔन ने उनसे कहा कि ऐ मूसा मैं तो तुम्हें एक सहरज़दा आदमी समझता हूँ।”

فَسَّئِلَ بَنِي إِسْرَءِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ

إِنِّي لَأَظُنُّكَ يُمُوسَى مَسْحُورًا ۝

देखिए जो अल्फ़ाज़ फ़िरऔन ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहे थे ऐन वही अल्फ़ाज़ हुज़ूर ﷺ के लिये आपके मुख़ालफ़ीन की तरफ़ से इस्तेमाल किए गये हैं। इसी सूरत में हम पढ़ आये हैं कि कुरैश मक्का आप ﷺ के बारे में कहते थे:

{إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا} (आयत 47) “तुम नहीं पैरवी कर रहे मगर एक सहरज़दा शख्स की।”

आयत 102

“मूसा अलै. ने कहा: तुझे ख़ूब मालूम है कि नहीं नाज़िल किया इन (निशानियों) को मगर आसमानों और ज़मीन के रब ने आँखें खोल देने के लिए।”

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا أَنْزَلَ هَؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ بِصَآئِرٍ

“और ऐ फ़िरऔन! मैं तो तुम्हें हलाकत ज़दा समझता हूँ।”

وَإِنِّي لَا أَظُنُّكَ يُفْرِعُونَ مُتَّبِعُونَ ۝۱۰۲

एक तो हज़रत मूसा अलै. का मिज़ाज जलाली था, दूसरे आप बचपन से उस फ़िरऔन के साथ पले-बढ़े थे, इस तरह उसकी हैसियत आपके छोटे भाई की सी थी। चुनाँचे आपने बड़े बा-रौब अंदाज़ में बिला झिझक जवाब दिया कि तुम्हें तो मुझ पर जादू के असर का गुमान है मगर मैं समझता हूँ कि तू रब्बे कायनात की बसीरत अफ़रोज़ वाज़ेह निशानियों को झुठला कर अपनी हलाकत और बर्बादी को यक़ीनी बना चुका है।

आयत 103

“तो उसने इरादा किया कि उन्हें उखाड़ फेंके ज़मीन से”

فَأَرَادَ أَنْ يَنْسِفَهُمْ مِنَ الْأَرْضِ

फ़िरऔन बाक़ायदा मन्सूबा बंदी के तहत बनी इस्राईल की नस्लकशी कर रहा था। वो उनके लड़कों को क़त्ल करवा देता और लड़कियों को ज़िन्दा रहने देता था। और किसी भी क़ौम के मुकम्मल इस्तेसाल का इससे ज़्यादा मुअस्सर तरीक़ा भला और क्या हो सकता है!

“लेकिन हमने गर्क कर दिया उसको और जो उसके साथ थे सबको।”

فَاغْرَقْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ جَمِيعًا ۝۱۰۳

आयत 104

“और उसके बाद हमने बनी इस्राईल को हुक्म दिया कि तुम लोग ज़मीन में आबाद हो जाओ”

وَقُلْنَا مِنْ بَعْدِهِ لِبَنِي إِسْرَءِيلَ اسْكُنُوا الْأَرْضَ

“फिर जब आयेगा पिछले वादे का वक़्त तो हम ले आयेंगे तुम सबको समेट कर।”

فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ۝۱۰۴

अक्सर व बेशतर मुफ़्स्सीन ने وَعْدُ الْآخِرَةِ से आख़िरत यानि क़यामत मुराद ली है। यानि जब क़यामत आयेगी तो तुम लोग जहाँ कहीं भी होगे सबको इकठ्ठा करके हम मैदाने हश्र में ले आयेंगे। लेकिन मेरे ख़याल में इन अल्फ़ाज़ में यह इशार्द भी मौजूद है कि जब आख़िरत का वक़्त करीब आयेगा तो बनी इस्राईल को हर कहीं से इकठ्ठा करके एक जगह जमा कर लिया जायेगा। यह लोग हज़रत ईसा अलै. की तकज़ीब करके बहुत बड़े जुर्म के मुरतकिब हो चुके थे। उसके बाद नबी आख़िरुज़्ज़मान ﷺ की रिसालत को झुठला कर इन्होंने अपने इस जुर्म की मज़ीद तौशीक़ भी कर दी। चुनाँचे अब अल्लाह तआला के नज़दीक इस क़ौम की हैसियत उस क़ैदी की सी है जिसको उसके जुर्म की सज़ा सुनाई जा चुकी हो, मगर उस सज़ा की तामील (execution) अभी बाक़ी हो।

इस सूरत के नुज़ूल के वक़्त बनी इस्राईल के दौरे इन्तशार (Diaspora) यानि फ़लस्तीन से बेदख़ल हुए साढ़े पाँच सौ साल हो चुके थे। पिछली सदी तक भी इनकी कैफ़ियत यह थी कि ये लोग पूरी दुनिया में बिखरे हुए थे। चूँकि किसी इज्जतमाई सज़ा या अज़ाब के लिए उनका एक जगह इकठ्ठा होना ज़रूरी था इसलिए कुदरत की तरफ़ से इस्राईल की रियासत का क़याम अमल में लाया गया और आयत ज़ेरे नज़र के अल्फ़ाज़ के ऐन मुताबिक़ दुनिया के कोने-कोने से तमाम यहूदियों को इकठ्ठा करके यहाँ आबाद किया गया। अपने ज़अम में तो इन लोगों ने अज़ीम तर इस्त्राईल (Greater Israel) का मन्सूबा और नक्शआ तैयार कर रखा है और ऐन मुस्किन है इनका यह मन्सूबा पूरा भी हो जाये, मगर बिल्आख़िर यह अज़ीम तर इस्त्राईल इनके लिए अज़ीमतर क़ब्रिस्तान साबित होगा (वल्लाहु आलम!) आख़री ज़माने में हज़रत ईसा अलै. दोबारा इस दुनिया में तशरीफ़ लायेंगे और आप ही के हाथों इस क्रौम की हलाक़त होगी।

अब आख़री आयात में फिर से कुरान मजीद का ज़िक्र बड़े अज़ीमुश्शान अंदाज़ में आ रहा है:

आयत 105

“और इस (कुरान) को हमने हक़ के साथ नाज़िल किया है और यह हक़ के साथ नाज़िल हुआ है।”

وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ

यहाँ “हक़” का लफ़ज़ खुसूसी अहमियत का हामिल है और इस लफ़ज़ की मायनवी तासीर को वाज़ेह करने के लिए ज़रूरी है कि इसे दोनों दफ़ा ख़ास तौर पर ज़ोर देकर और वाज़ेह करके पढ़ा जाये। इस आयत का अंदाज़ बिल्कुल वही है जो सूरह अत्तारिक़ की आयात में पाया जाता है: {وَمَا هُوَ إِلَّا نَزْلٌ} (आयत 13,14) “यक़ीनन यह (कुरान) क्रौले फ़ैसल है और यह कोई हसी मज़ाक़ नहीं है।” इस मफ़हूम की वज़ाहत हमें हज़रत उमर रज़ि. से मरवी इस हदीसे नबवी में मिलती है: ((إِنَّ اللَّهَ يَرْفَعُ بِهَذَا الْكِتَابِ أَقْوَامًا وَيَضَعُ بِهِ الْآخَرِينَ)) (23) “यक़ीनन अल्लाह इस किताब की बदौलत कई क्रौमों को उठायेगा और कई दूसरी क्रौमों को गिरायेगा।” चुनाँचे कुरान की बरक़त से अल्लाह तआला ने मुसलमानों को उरूज बख़्शा और जब हम इसके तारिक़ (छोड़ने वाले) हुए तो इसी जुर्म की पादाश में हमें ज़मीन पर पटक दिया गया:

ख़वार अज़ महज़ूरी कुराँ शुदी
शिकवा संजे गर्दिशे दौराँ शुदी
ऐ चूँ शबनम बर ज़मीं इफ़तन्दा-ए
दर बगल दारी कितावे ज़िन्दा-ए

(इक़बाल)

“और (ऐ नबी ﷺ) नहीं भेजा हमने आप ﷺ को मगर बशारत देने वाला और ख़बर-दार करने वाला।”

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝

आयत 106

“और कुरान को हमने टुकड़े-टुकड़े (करके नाज़िल) किया है, ताकि आप ﷺ इसे लोगों को ठहर-ठहर कर सुनाएँ।”

وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَى مُكْثٍ

“और हमने इसको उतारा है थोड़ा-थोड़ा करके!”

وَنُزْلًا تَنْزِيلًا ۝

कुरान के मुख़्तलिफ़ अहक़ाम हालात के ऐन मुताबिक़ मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर नाज़िल किए जाते रहे ताकि जिन आयात या अहक़ाम की जिस वक़्त ज़रूरत हो वही लोगों को पढ़ कर सुनाये जायें। जैसे-जैसे रसूल अल्लाह ﷺ की तहरीक़ और दावत आगे बढ़ती गई वैसे-वैसे कुरान के अहक़ाम के ज़रिए उसके लिए फ़िक़्री रहनुमाई मुहैया की जाती रही। यही वजह है कि पूरा कुरान यक़बारगी (एक बार में) नाज़िल नहीं किया गया।

आयत 107

“आप कह दीजिए कि तुम इस पर ईमान लाओ या ना लाओ!”

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا

“यक्रीनन वो लोग जिन्होंने इससे पहले इल्म दिया गया था जब यह (कुरान) उनको पढ़ कर सुनाया जाता है तो वो अपनी ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं।”

اِنَّ الدِّیْنَ اَوْتُوْا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِہٖ اِذَا یُنْتَلٰی عَلَیْہِمْ

یَحْزُوْنَ لِلاَذْقَانِ سَجْدًا ﴿١٠٨﴾

इस आयत में यहूद के बाज़ उल्मा की तरफ इशारा है।

आयत 108

“और वो कहते हैं कि पाक है हमारा रब, यक्रीनन हमारे रब का वादा तो पूरा होना ही था।”

وَيَقُولُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَا اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿١٠٩﴾

जब कुरान कह रहा है तो इसका मतलब है कि उल्माए यहूद में लाज़िमन कुछ लोग ऐसे होंगे जो इस तरह के ख्यालात के शामिल होंगे। हिजरत से क़ब्ल रसूल अल्लाह ﷺ की नुबूवत के बारे में इत्तलाआत तो यहूदे मदीना को मिलती रहती थीं। उसके साथ ही कुरान की कुछ आयत भी उन तक ज़रूर पहुँच चुकी होंगी। इस पसमंज़र में हो सकता है कि उनके बाज़ अहले इल्म ना सिर्फ़ कुरान को पहचान कर अल्लाह के हुज़ूर सज्दे में गिरे हों बल्कि उनकी ज़बानों पर बे-इख़्तियार यह अल्फ़ाज़ भी आ गये हों कि अल्लाह ने जो आख़री नबी भेजने का वादा कर रखा था वो तो आख़िर पूरा होना ही था। यह अल्लाह तआला के उस वादे की तरफ़ इशारा है जो बाइबिल की किताब इस्तसना के अठारहवें बाब की आयत 18 और 19 में इन अल्फ़ाज़ में आज भी मौजूद है कि ऐ मूसा मैं इनके भाईयों (बनी इस्राईल के भाई यानि बनु इस्राईल) में तेरी मानिन्द एक नबी उठाऊँगा और उसके मुँह में अपना कलाम डालूँगा और वो लोगों से वही कुछ कहेगा जो मैं उसे बताऊँगा।

आयत 109

“और वो गिर पड़ते हैं अपनी ठोड़ियों के बल रोते हुए और यह (कुरान) इज़ाफ़ा करता है उनके खुशूअ में।”

وَيَحْزُوْنَ لِلاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَیَزِیْدُہُمْ خُشُوْعًا ﴿١١٠﴾

अब वो दो आख़री आयत आ रही हैं जिनके मुताल्लिक आज़ाज़ में बताया गया था कि वो मआरफ़ते खुदावंदी और तौहीदे रब्बानी के अज़ीम ख़ज़ाने हैं। इसके बाद सूरतुल कहफ़ के आख़िर में भी दो आयत आयेंगी जो इन आयत की तरह बहुत अज़ीम हैं।

आयत 110

“आप ﷺ कह दीजिए कि तुम अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान कह कर।”

قُلْ اَدْعُوا اللّٰهَ اَوْ اَدْعُوا الرَّحْمٰنَ

“जिस नाम से भी तुम पुकारो सब अच्छे नाम उसी के हैं।”

اِیَّا مَا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰی

हर ख़ैर, हर ख़ूबी, हर भलाई, हर हुस्न, हर कमाल, हर जमाल, जिसका तुम तसव्वुर कर सकते हो, वह ब-तमाम व कमाल अल्लाह तआला की ज़ात में मौजूद है।

“और मत बुलंद करो आवाज़ अपनी नमाज़ में और ना ही बहुत पस्त रखो उसमें, बल्कि उसके बैन-बैन रविश इख्तियार करो।”

وَلَا تَجْهَرُ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتُ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۝

तुम्हारी नमाज़ें और दुआएँ ना तो बहुत ज़्यादा जेहरी हों ना बिल्कुल ही सिरी, बल्कि इनके बैन-बैन की राह इख्तियार करो।

आयत 111

“और कह दीजिए कि कुल हम्द और कुल शुक्र अल्लाह ही के लिए है”

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ

यह आयत अपने मज़मून के ऐतबार से सूरह इख़लास की हमवज़न है। इसमें पाँच मुख्तलिफ़ अंदाज़ में अल्लाह तआला की अज़मत और तौहीद का बयान है। इस ज़िम्न में ये पहली बात है, यानि हुज़ूर ﷺ की ज़बान मुबारका से यह ऐलान कि तमाम तारीफ़ें और हर क्रिस्म का शुक्र अल्लाह ही के लिए है।

“जिसने नहीं बनाई कोई औलाद”

الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا

यह दूसरी बात है, जिसे सूरह इख़लास में {الْمَلِئِكُ وَالْمَلُؤُودُ} के अल्फ़ाज़ में बयान किया गया है।

“और नहीं है उसका कोई शरीक बादशाही में”

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ

तीसरी बात इक़तदार व इख्तियार से मुताल्लिक है। अल्लाह तआला तन्हा हर चीज़ का मालिक व मुख्तार और मालिकुल मुल्क है। उसके अलावा किसी के पास किसी क्रिस्म का कोई इख्तियार नहीं।

“और ना ही उसका कोई दोस्त है कमज़ोरी की वजह से”

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ وَلِيٌّ مِنَ الذَّلِيلِ

यह चौथी बात है कि अल्लाह तआला की दोस्ती को अपनी दोस्तियों पर क़यास ना करो। तुम तो दोस्तियाँ इसलिए पालते हो कि तुम अपने दोस्तों के मोहताज होते हो। इंसान दोस्त इसलिए बनाता है कि वो ज़रूरत के वक़्त काम आयेगा। बाज़ दफ़ा इंसान अपने किसी दोस्त की इन्तहाई नाजायज़ बात सिर्फ़ इसलिए मानने पर मजबूर होता है कि कल वो मेरी भी कोई ज़रूरत पूरी करेगा। इंसान की यही कमज़ोरी उसे दोस्त बनाने और दोस्ताना ताल्लुक़ निभाने पर मजबूर करती है, मगर अल्लाह तआला की ज़ात ऐसी तमाम कमज़ोरियों से पाक है। वो किसी का मोहताज नहीं बल्कि सब उसके मोहताज हैं। चुनाँचे अल्लाह की दोस्ती किसी ज़रूरत की बुनियाद पर नहीं होती और ना ही अल्लाह का कोई दोस्त उससे अपनी कोई बात ज़बरदस्ती मनवा सकता है। पाँचवी और आख़री बात बहुत अहम है:

“उसकी तकबीर करो जैसे कि तकबीर करने का हक़ है।”

وَكَبِّرْهُ تَكْبِيرًا ۝

यह तर्जुमा (तकबीर करो) बहुत अहम और तवज्जोह तलब है। सिर्फ़ ज़बान से “अल्लाहु अकबर” कह देने से अल्लाह की तकबीर नहीं हो जाती, इसके लिए अमली तौर पर भी बहुत कुछ करने की ज़रूरत है। ज़बान से अल्लाहु अकबर कहना तो तकबीर का पहला दर्जा है कि किसी ने ज़बान से इक्रार कर लिया कि अल्लाह सबसे बड़ा है। उसके बाद अहम और कठिन मरहला अपने तमाम इफ़रादी और इज्तमाई मामलात में अल्लाह को अमली तौर पर बड़ा करने का है। यह मरहला तब तय होगा जब हमारे घर में भी अल्लाह बड़ा तस्लीम किया जायेगा और घर के तमाम मामलात में उसी की बात मानी जायेगी, जब हमारी पारलियामेंट में भी उसकी बड़ाई को तस्लीम किया जायेगा और कोई क़ानून उसकी शरीयत के ख़िलाफ़ नहीं बन सकेगा, जब हमारी अदालतों में भी उसकी बड़ाई का डंका बजेगा और तमाम फ़ैसले उसी के अहकामात की रौशनी में किए जायेंगे। गर्ज़ जब तक हर छोटे-बड़े मामले में और हर कहीं उसका हुक्म आख़री हुक्म के तौर पर तस्लीम

नहीं किया जायेगा, अल्लाह की तकबीर का हक़ अदा नहीं होगा। अल्लाह के अहक़ाम को अमली तौर पर नाफ़िज़ करने वालों के लिए सूरतुल मायदा का यह हुक्म बहुत वाज़ेह है: {... فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ} {وَمَنْ لَّمْ يُخِمْ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ} {... فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ} आज हमने अल्लाह को (नऊज़ु बिल्लाह) अपने तैं मस्जिदों में बंद कर दिया है कि ऐ अल्लाह आप यहीं रहें, यहीं पर आकर आपकी तकबीर के तराने गायेंगे, आप की तस्बीह व तहमीद करेंगे। लेकिन मस्जिद से बाहर हमारी मजबूरियाँ हैं। क्या करें मार्केट में माली मफ़ादात के हाथों मजबूर हैं, घर में बीबी बड़ी है, किसी और जगह कोई और बड़ा है। ऐसे हालात में हमारे यहाँ अल्लाह की तकबीर का मफ़हूम ही बदल कर रह गया है और अब तकबीर फ़क़त दो अल्फ़ाज़ (अल्लाहु अकबर) पर मुश्तमिल एक कलमा है, जिसे ज़बान से अदा कर दें तो गोया अल्लाह की बड़ाई का हक़ अदा हो जाता है।

بارك الله لي ولكم في القرآن العظيم ونفعني وإياكم بالآيات والذكر الحكيم۔



सूरतुल कहफ़

तम्हीदी कलिमात

सूरतुल कहफ़ और सूरह बनी इसराइल का आपस में जोड़े और ज़ौजियत का ताल्लुक है। दोनों सूरतों के बारह-बारह रुकूअ हैं और आयात की तादाद भी तक्ररीबन बराबर है। दोनों के ऐन वस्त में हज़रत आदम अलै. और इब्लीस का वाक़िया बयान हुआ है और इस ज़िमन में इस हद तक मुशाबेहत है कि ना सिर्फ़ दोनों सूरतों के सातवें रुकूअ का आगाज़ इस वाक़िये से होता है बल्कि दोनों जगहों पर वाक़िये की इब्तदा भी एक ही आयत से हो रही है। इनकी निस्बते ज़ौजियत से मुताल्लिक अहम निकाल का ज़िक्र सूरह बनी इसराइल के आगाज़ में भी हो चुका है, जबकि मेरी किताब “कुरान हकीम ले सूरतों के मज़ामीन का इज्माली तजज़िया” में इस मज़मून को मज़ीद जामियत के साथ पेश करने की कोशिश की गई है। सूरह बनी इसराइल की आख़री आयत और सूरतुल कहफ़ की इब्तदाई आयत में एक ख़ास रब्त व ताल्लुक है, जिससे ज़ाहिर होता है कि दोनों सूरतें एक साथ कुरान में वारिद हुई हैं और रेल के डिब्बों की तरह बाहम inter locked हैं। सूरह बनी इसराइल की आख़री आयत का आगाज़ {وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي....} के अल्फ़ाज़ से हो रहा है, यानि इसमें अल्लाह तआला की हम्द का हुक्म दिया जा रहा है, जबकि सूरतुल कहफ़ का आगाज़ {الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي....} के अल्फ़ाज़ से हो रहा है। गोया यहाँ इस हुक्म की तामील हो रही है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

आयात 1 से 8 तक

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ① قَسِيمًا لِّيُنذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِّمَّنْ لَدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ② مَا كَثِيرِينَ فِيهِ أَبدًا ③ وَيُنذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ④ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِابْنِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ إِنْ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ⑤ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَفْسَكَ عَلَى آثَارِهِمْ إِنْ لَمْ يُؤْمِنُوا بِهَذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا ⑥ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لِّهَا لِيَنْبَلُوهُمْ آيُهُمْ أَحْسَنَ عَمَلًا ⑦ وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُؤًا ⑧

आयात 1

“कुल हम्द व सना और कुल शुक्र अल्लाह ही के लिये है जिसने नाज़िल की अपने बन्दे पर किताब”

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ

रसूल अल्लाह ﷺ को अल्लाह तआला के साथ जो ताल्लुक और निस्बत है उसे यहाँ लफ़्ज़ “अब्द” से नुमायाँ फ़रमाया गया है।

“और इसमें उसने कोई कज़ी नहीं रखी।”

وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ①

आयात 2

“(ये किताब) बिल्कुल सीधी है, ताकि वह खबरदार करे एक बहुत बड़ी आफ़त से उसकी तरफ़ से”

قِيْلَ لِيُنْذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِّنْ لَّدُنْهُ

यानि नबी अकरम صلی اللہ علیہ وسلم पर नुज़ूले कुरान के मक्कासिद में से एक मक़सद यह भी है कि आप लोगों को एक बहुत बड़ी आफ़त के बारे में खबरदार कर दें। यहाँ लफ़ज़ **بَأْسًا** बहुत अहम है। यह लफ़ज़ वाहिद हो तो इसका मतलब जंग होता है और जब बतौर जमा आए तो इसके मायने सख्ती, मुसीबत, भूख, तकलीफ़ वगैरह के होते हैं। जैसे सूरतुल बक्ररह में यह लफ़ज़ बतौर वाहिद भी आया है और बतौर जमा भी: {وَالطَّيْرِ فِي الْبِئْسَاءِ وَالطَّوَارِ وَأَوْحَيْنَ الْبِئْسَاءِ} (आयतुल बिर्, 177) चुनाँचे वहाँ दोनों सूरतों में इस लफ़ज़ के मायने मुख्तलिफ़ हैं: ‘**الْبِئْسَاءِ**’ के मायने फ़क्र व तंगदस्ती और मसाएब (मुसीबतें) व तकालीफ़ के हैं जबकि ‘**وَحَيْنَ الْبِئْسَاءِ**’ से मुराद जंग का वक़्त है।

बहरहाल आयत ज़ेरे नज़र में ‘**بَأْسًا شَدِيدًا**’ से एक बड़ी आफ़त भी मुराद हो सकती है और बहुत शदीद किस्म की जंग भी। आफ़त के मायने में इस लफ़ज़ का इशारा उस दज्जाली फ़ितने की तरफ़ है जो क़यामत से पहले ज़ाहिर होगा। हदीस में है कि कोई नबी और रसूल ऐसा नहीं गुज़रा जिसने अपनी क़ौम को दज्जाल के फ़ितने से खबरदार ना किया हो, क्योंकि यह फ़ितना एक मोमिन के लिये सख्त तरीन इम्तिहान होगा और पूरी इंसानी तारीख़ में इस फ़ितने से बड़ा कोई फ़ितना नहीं है।

दूसरी तरफ़ इस लफ़ज़ (**بَأْسًا شَدِيدًا**) को अगर ख़ास तौर पर जंग के मायने में लिया जाए तो इससे ‘अल मलहमतुल उज़मा’ मुराद है और इसका ताल्लुक़ भी फ़ितना-ए-दज्जाल ही से है। कुतुब अहादीस (किताबुल फ़ितन, किताब आसारुल क़यामत, किताबुल मलाहिम वगैरह) में इस ख़ौफ़नाक जंग का ज़िक्र बहुत तफ़सील से मिलता है। ईसाई रिवायात में इस जंग को ‘हर मजदौन’ (Armageddon) का नाम दिया गया है। बहरहाल हज़रत मसीह अलै. के तशरीफ़ लाने और उनके हाथों दज्जाल के क़त्ल के बाद इस फ़ितने या जंग का ख़ात्मा होगा।

बहुत सी अहादीस में हमें यह वज़ाहत भी मिलती है कि दज्जाली फ़ितने के साथ सूरतुल कहफ़ की एक ख़ास मुनासबत है और इस फ़ितने के असरात से महफूज़ रहने के लिये इस सूरत के साथ ज़हनी और क़ल्बी ताल्लुक़ क़ायम करना बहुत मुफ़ीद है। इस मक़सद के लिये अहादीस में जुमे के रोज़ सूरतुल कहफ़ की तिलावत करने की तल्कीन फ़रमाई गई है, और अगर पूरी सूरत की तिलावत ना की जा सके तो कम अज़ कम इसकी इब्तदाई और आख़री आयात की तिलावत करना भी मुफ़ीद बताया गया है।

यहाँ पर दज्जाली फ़ितने की हकीक़त के बारे में कुछ वज़ाहत भी ज़रूरी है। ‘दजल’ के लफ़ज़ी मायने धोखा और फ़रेब के हैं। इस मफ़हूम के मुताबिक़ ‘दज्जाल’ ऐसे शख्स को कहा जाता है जो बहुत बड़ा धोखेबाज़ हो, जिसने दूसरों को धोखा देने के लिये झूठ और फ़रेब का लिबादा ओढ़ रखा हो। इसलिये नबुवत के झूठे दावेदारों को भी दज्जाल कहा गया है। चुनाँचे नबी अकरम صلی اللہ علیہ وسلم ने जिन तीस दज्जालों की पैदाइश की ख़बर दी है उनसे झूठे नबी ही मुराद हैं।

दज्जालियत के इस अमूमी मफ़हूम को मदेनज़र रखा जाए तो आज के दौर में माद्दापरस्ती भी एक बहुत बड़ा दज्जाली फ़ितना है। आज लोगों के अज़हान व कुलूब, नज़रियात व अफ़कार और अख़लाक़ व अक़दार पर माद्दियत का इस क़दर ग़लबा हो गया है कि इंसान अल्लाह को भूल चुका है। आज वह मुसव्वबुल असबाब को भूल कर माद्दी असबाब पर तवक्कुल करता है। वह कुरान (आले इमरान:185) के इस फ़रमान को यक़सर फ़रामोश कर चुका है कि: {وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ} यानि दुनियावी ज़िंदगी महज़ धोखे का सामान है, जबकि असल ज़िंदगी आख़िरत की ज़िंदगी है। आख़िरत की ज़िंदगी पर पड़े हुए दुनिया और उसकी माद्दियत के परदे से धोखा खाकर इंसान ने दुनियावी ज़िंदगी ही को असल समझ लिया है, लिहाज़ा इसकी तमाम दौड़-धूप इसी ज़िंदगी के लिये है। इसी ज़िंदगी के मुस्तक़बिल को सँवारने की इसको फ़िक्र है, और यूँ वह माद्दापरस्ती के दज्जाली फ़ितने में गिरफ़्तार हो चुका है।

इसके अलावा दज्जाल और दज्जाली फ़ितने का एक ख़ुसूसी मफ़हूम भी है। इस मफ़हूम में इससे मुराद एक मख़सूस फ़ितना है जो क़रीब क़यामत के ज़माने में एक ख़ास शख्सियत की वजह से ज़हूर पज़ीर होगा। इस बारे में कुतुबे अहादीस में बड़ी तफ़सीलात मौजूद हैं, लेकिन बाज़ रिवायात में कुछ पेचीदगियाँ भी हैं और तज़ादात भी। इनको समझने के लिये आला इल्मी सतह पर गौर व फ़िक्र की ज़रूरत है, क्योंकि ज़ाहिरी तौर पर नज़र आने वाले तज़ादात में मुताबक़त के पहलुओं को तलाश करना अहले इल्म का काम है। बहरहाल यहाँ उन तफ़ासील का ज़िक्र और उन पर तबसिरा करना

मुमकिन नहीं। इस मौजू के बारे में यहाँ सिर्फ़ इस क़दर जान लेना ही काफ़ी है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने करीब क़यामत के ज़माने में दज़्जाल के ज़ाहिर होने और एक बहुत बड़ा फ़ितना उठाने के बारे में ख़बरें दी हैं। जो हज़रात इस हवाले से तफ़्सीली मालूमात चाहते हों वह मौलाना मनाज़िर अहसन गिलानी की किताब “तफ़्सीर सूरतुल कहफ़” का मुताअला कर सकते हैं। इस मौजू पर “दुनिया की हक़ीक़त” के उन्वान से मेरी एक तक्ररीर की रिकॉर्डिंग भी दस्तयाब है, जिसमें मैंने सूरतुल कहफ़ के मज़ामीन का ख़ुलासा बयान किया है।

“और (ताकि) वह बशारत दे उन अहले ईमान को जो नेक अमल करते हों कि उनके लिये होगा बहुत अच्छा बदला।”

وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ۝

आयत 3

“वह उसमें रहेंगे हमेशा-हमेशा।”

مَّا كَثِيرٌ فِيهِ أَبَدًا ۝

आयत 4

“और ख़बरदार कर दे उन लोगों को जिन्होंने कहा कि अल्लाह ने बेटा बनाया है।”

وَيُنذِرُ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۝

दौरे हाज़िर की दज़्जालियत की असल जड़ मौजूदा मसीहियत है जिसकी बुनियाद तसलीस पर रखी गई है और अब इसे मसीहियत के बजाय Paulism कहना ज़्यादा दुरुस्त है। इसमें सबसे पहले हज़रत मसीह अलै. को अल्लाह का बेटा क़रार दिया गया। फिर इसमें कफ़्फ़ारे का अक़ीदा शामिल किया गया कि जो कोई भी हज़रत मसीह अलै. पर ईमान लाएगा उसे तमाम गुनाहों से पेशगी माफ़ी मिल जाएगी। इसके बाद शरीअत को साक़ित करके इस सिलसिले में तमाम इख़्तियारात पाप को दे दिये गए, कि वह जिस चीज़ को चाहे हलाल क़रार दे और जिसको चाहे हराम। इन तहरिफ़ात की वजह से यूरोप में आम लोगों को लफ़्ज़ “मज़हब” से ही शदीद नफ़रत हो गई। फिर जब ह्स्पानिया में मुसलमानों के ज़ेरे असर जदीद उलूम को फ़रोग़ मिला तो फ़्रांस, इटली, जर्मनी वगैरह के बेशुमार नौजवानों ने क़रतबा, गरनाता और तलियतला की यूनिवर्सिटियों में दाखला लिया। ये नौजवान हुसूल तालीम के बाद जब अपने-अपने मुमालिक में वापस गए तो यूरोप में इनकी नई फ़िक्र की वजह से इस्लाहे मज़हब (Reformation) और अहयाए उलूम (Renaissance) की तहरीकात शुरू हुईं। इनकी वजह से यूरोप के आम लोग जदीद उलूम की तरफ़ राग़िब तो हुए मगर मआशरे में पहले से मौजूद मज़हब मुखालिफ़ जज़्बात की वजह से मज़हब दुश्मनी खुद-ब-खुद इस तहरीक में शामिल हो गई। नतीजतन जदीद उलूम के साथ मज़हब से बेज़ारी, रुहानियत से ला-ताल्लुकी, आख़िरत से इन्कार और खुदा के तस्सवुर से बेग़ानगी जैसे ख़यालात भी यूरोपी मआशरे में मुस्तक़िलन जड़ पकड़ गए, और यह सब कुछ ईसाईयत में की जाने वाली मज़कूरा तहरिफ़ात का रद्दे अमल था। आयत ज़ेरे नज़र में उन्हीं लोगों की तरफ़ इशारा है जिन्होंने ये अक़ीदा ईजाद किया था कि मसीह अलै. (नाउज़ुबिल्लाह) अल्लाह का बेटा है।

आयत 5

“इन्हें इसके बारे में कुछ भी इल्म नहीं और ना ही इनके आबा व अजदाद को था।”

مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِآبَائِهِمْ ۝

इन्होंने ये जो अक़ीदा ईजाद किया है इसकी ना तो इनके पास कोई इल्मी सनद है और ना ही इनके आबा व अजदाद के पास थी।

“बहुत बुरी बात है जो इनके मुँहों से निकल रही है।”

كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۝

ये लोग अल्लाह तआला से औलाद मंसूब करके उसकी शान में बहुत बड़ी गुस्ताखी का इरतकाब कर रहे हैं।

“वह नहीं कहते मगर सरासर झूठा।”

إِنْ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ⑤

आयत 6

“तो (ऐ नबी ﷺ!) आप शायद अपने आपको गम से हलाक कर लेंगे उनके पीछे, अगर वह ईमान ना लाये इस बात (कुरान) पर।”

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَفْسِكَ عَلَىٰ آثَارِهِمْ إِنْ لَمْ يُؤْمِنُوا
بِهَذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا ⑥

तसलीस जैसे ग़लत अक्काइद के जो भयानक नताइज मुस्तक़बिल में नस्ले इंसानी के लिये मुतवक्क़ो थे उनके तस्सवुर और इदराक से रसूल अल्लाह ﷺ पर शदीद दबाव था। आप खूब समझते थे कि अगर ये लोग कुरान पर ईमान ना लाए और अपने मौजूदा मज़हब पर ही क़ायम रहे तो इनके ग़लत अक्काइद के सबब दुनिया में दज़ालियत का फ़ितना जन्म लेगा, जिसके असरात नस्ले इंसानी के लिये तबाहकुन होंगे। यही गम था जो आपकी जान को घुलाए जा रहा था।

आयत 7

“यक़ीनन हमने बना दिया है जो कुछ ज़मीन पर है उसे उसका बनाव सिंघार”

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا

यहाँ ये नुक्ता ज़हन नशीन कर लीजिये कि लफ़्ज़ “ज़ीनत” और दुनियावी आराइश व ज़ेबाइश का मौज़ू इस सूरत के मज़ामीन का अमूद है। यानि दुनिया की रौनक, चमक-दमक और ज़ेब व ज़ीनत में इन्सान इस क़दर खो जाता है कि आख़िरत का उसे बिल्कुल ख़याल ही नहीं रहता। दुनिया की ये रंगीनियाँ अमेरिका और यूरोप में इस हद तक बढ़ चुकी हैं कि उन्हें देख कर अक़ल दंग रह जाती है और इंसान इस सब कुछ से मुतास्सिर हुए बग़ैर नहीं रह सकता। यही वजह है कि आज हम अमेरिकी और यूरोपी अक्वाम की इल्मी तरक्की से मुतास्सिर और उनके माद्दी असबाब व वसाइल से मरऊब हैं। अपनी इसी मरऊबियत के बाइस हम उनकी ला-दीनी तहज़ीब व सक्काफ़त के भी दिलदादाह हैं और उनके तर्ज़े मआशरत को अपनाने के भी दर पे हैं।

“ताकि उन्हें हम आज़मायें कि उनमें कौन बेहतर है अमल में।”

لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ⑦

दुनिया के ये ज़ाहिरी ठाठ-बाठ दरअसल इंसान की आज़माइश के लिये पैदा किये गए हैं। एक तरफ़ दुनिया की यह सब दिलचास्पियाँ और रंगीनियाँ हैं और दूसरी तरफ़ अल्लाह और उसके अहक़ाम हैं। इंसान के सामने ये दोनों रास्ते खुले छोड़ कर दरअसल यह देखना मक़सूद है कि वह इनमें से किसका इंतखाब करता है। दुनिया की रंगीनियों में खो जाता है या अपने ख़ालिक व मालिक को पहचानते हुए उसके अहक़ाम की तामील को अपनी ज़िंदगी का असल मक़सूद समझता है। इस सिलसिले में किसी शायर का ये शेर अगरचे शाने बारी तआला के लायक तो नहीं मगर इस मज़मून की वज़ाहत के लिये बहुत खूब है:

रख-ए-रौशन के आगे शमा रख कर वह यह कहते हैं
इधर आता है देखें या उधर परवाना जाता है!

अब जिस परवाने (इंसान) को इस शमा की ज़ाहिरी रौशनी और चमक अपनी तरफ़ खींच ले गई तो वह {فَقَدْ خَسِرَ خُسْرًا} (निसा:119) के मिस्दाक़ तबाह व बरबाद हो गया और जो इसकी ज़ाहिरी और वक्ती चकाचौंद को नज़रअंदाज़ करके हुस्ने अज़्ली और अल्लाह के जलाल व कमाल की तरफ़ मुतवज्जह हो गया वह हक़ीक़ी कामयाबी और दाइमी नेअमतों का मुस्तहिक्क़ ठहरा।

आयत 8

“और यक़ीनन हम बना कर रख देंगे जो कुछ इस (ज़मीन) पर है उसे एक चटियल मैदान।”

وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۝۸

क़यामत बरपा होने के बाद इस ज़मीन की तमाम आराइश व ज़ेबाइश ख़त्म करके इसे एक साफ़ हमवार मैदान में तब्दील कर दिया जाएगा। ना पहाड़ और समुन्दर बाक़ी रहेंगे और ना यह हसीन व दिलकश इमारात। उस वक़्त ज़मीन की सतह एक ऐसे खेत का मंज़र पेश कर रही होगी जिसकी फ़सल कट चुकी हो और इसमें सिर्फ़ बचा-खुचा सूखा चूरा इधर-उधर बिखरा पड़ा हो।

आयात 9 से 16 तक

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ۝۹ إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۝۱۰ فَضَرَبْنَا عَلَى آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۝۱۱ ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ أَحْصَى لِمَا لَبِئُوا أَمَدًا ۝۱۲ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ۝۱۳ وَرَبَطْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَنْ نَدْعُو مِنْ دُونِهِ إِلَهًا لَقَدْ قُلْنَا إِذَا شَطَطًا ۝۱۴ هَؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِم بِسُلْطَانٍ بَيِّنٍ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝۱۵ وَإِذْ اعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأَوْا إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِنْ أَمْرٍ كُمْ مِرْفَقًا ۝۱۶

आयत 9

“क्या तुम समझते हो कि ग़ार और रक़ीम (तख्ती) वाले असहाब हमारी बहुत अजीब निशानियों में से थे?”

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ

آيَاتِنَا عَجَبًا ۝۹

अब असहाबे कहफ़ के मुताल्लिक़ उस सवाल के जवाब का आज़ाज़ हो रहा है जो यहूदे मदीना ने कुरैशे मक्का के ज़रिये हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم से पूछा था। कहफ़ के मायने ग़ार के हैं और रक़ीम से मुराद वह तख्ती है जिस पर असहाबे कहफ़ के हालात लिख कर उसे ग़ार के दहाने पर लगा दिया गया था। इस निस्बत से उन्हें असहाबे कहफ़ भी कहा जाता है और असहाबे रक़ीम भी। मुराद यह है कि तुम लोग असहाबे कहफ़ के वाक़िये को एक बहुत ग़ैर मामूली वाक़िया और हमारी एक बड़ी अजीब निशानी समझते हो, मगर तुम्हें मालूम होना चाहिये कि हमारी तख्तीक़ और सन्नाई में तो इससे भी बड़े-बड़े अजाइबात मौजूद हैं।

इस किस्से के बारे में अब तक जो ठोस हक्काइक़ हमारे सामने आए हैं उनका खुलासा यह है: हज़रत मसीह अलै. की फ़लस्तीन में बेअसत के वक़्त बज़ाहिर यहाँ एक यहूदी बादशाह की हुक्मरानी थी मगर उस बादशाह की हैसियत एक कठपुतली से ज़्यादा ना थी और अमली तौर पर यह पूरा इलाक़ा रोमन एम्पायर ही का हिस्सा था। रोमी हुक्मरान मज़हबी बुतपरस्त थे जबकि फ़लस्तीन के मक्कामी बाशिंदे अहले किताब (यहूदी) थे। हज़रत मसीह अलै. के रफ़अ-ए-समावी का वाक़िया 30 और 33 ईस्वी के लगभग पेश आया। इसके बाद यहूदियों की एक बग़ावत के जवाब में रोमी जनरल टाईटस ने 70 ईस्वी में येरुशलम पर हमला करके इस शहर को बिल्कुल तबाह व बरबाद कर दिया, हेकले सुलेमानी मस्मार कर दिया गया, यहूदियों का क़त्ले आम हुआ और जो यहूदी क़त्ल होने से बच गए उन्हें मुल्क बदर कर दिया गया। मक्कामी ईसाइयों को अगरचे इलाक़े से बेदख़ल तो ना किया गया मगर हज़रत ईसा अलै. के पेरोकार और मुवहिहद होने की वजह से उन्हें रोमियों की तरफ़ से अक्सर जुल्म व सितम का निशाना बनाया जाता रहा। इसी हवाले से रोमी बादशाह दक्रयानूस

(Decius) के दरबार में चंद रासिखुल अक्रीदा मुवहिहद नौजवानों की पेशी हुई। बादशाह की तरफ़ से उन नौजवानों पर वाज़ेह किया गया कि वह अपने अक्काइद को छोड़ कर बुतपरस्ती इख्तियार कर लें वरना उन्हें सूली पर चढ़ा दिया जाएगा। बादशाह की तरफ़ से उन्हें इस फ़ैसले के लिये मुनासिब मोहलत दी गई। इसी मोहलत के दौरान उन्होंने शहर से निकल कर किसी ग़ार में पनाह लेने का फ़ैसला किया। जब यह लोग ग़ार में पनाह गुज़ी हुए तो अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से उन पर ऐसी नींद तारी कर दी कि वह तक्ररीबन तीन सौ साल तक सोते रहे। (सूरतुल बक्ररह आयत 259 में भी इसी नौइयत के एक वाक़िये का ज़िक्र है कि हज़रत उज़ेर अलै. को उनकी मौत के सौ साल बाद ज़िन्दा कर दिया गया) और उनकी नींद के दौरान उनकी करवटें बदलने का भी बाक़यदा अहतमाम रहा। जिस ग़ार में असहाबे कहफ़ सो रहे थे वह ऐसी जगह पर वाक़ेअ थी जहाँ लोगों का आना-जाना बिल्कुल नहीं था। उस ग़ार का दहाना शिमाल की जानिब था जिसकी वजह से उसके अंदर रौशनी मिनअक्स होकर तो आती थी, लेकिन बराहेरास्त रौशनी या धूप नहीं आती थी। इस तरह के ग़ारों का एक सिलसिला अफ़सस शहर (मौजूदा तुर्की) के इलाक़े में पाया जाता है जबकि हिन्दुस्तान में (अजन्ता) में भी ऐसे ग़ार मौजूद हैं।

बादअज़ा कुस्तन्तीन (Constantine) नामी फ़रमानरवा ने ईसाइयत कुबूल कर ली और उसकी वजह से पूरी रोमन एम्पायर भी ईसाई हो गई। फ़िर 400 ईस्वी के लगभग Theodosius के अहदे हुकूमत में अल्लाह तआला ने असहाबे कहफ़ को जगाया। जागने के बाद उन्होंने अपने एक साथी को चाँदी का एक सिक्का देकर खाना लेने के लिये शहर भेजा और साथ हिदायत की कि वह मोहतात रहे, ऐसा ना हो उनके ग़ार में छिपने की ख़बर बादशाह तक पहुँच जाए। (वह अपनी नींद को मामूल की नींद समझ रहे थे और उनके वहम व गुमान में भी नहीं था कि वह तीन सौ साल तक सोये रहे थे।) बहरहाल खाना लाने के लिये जाने वाला उनका साथी अपनी तीन सौ साल पुरानी वज़अ-क़तअ और करन्सी की वजह से पकड़ा गया और यूँ उनके बारे में तमाम मालूमात लोगों तक पहुँच गई। जब लोगों को हक़ीक़त हाल का इल्म हुआ तो हम मज़हब होने की वजह से ईसाई आबादी की तरफ़ से उनकी बहुत इज़ज़त अफ़ज़ाई की गई। इसके बाद वह लोग ग़ार में फ़िर से सो गए या अल्लाह तआला ने उन पर मौत तारी कर दी। उन लोगों की तबई मौत के बाद ग़ार के दहाने को बंद कर दिया गया और एक तख्ती पर उन लोगों का अहवाल लिख कर उसे उस जगह पर नसब कर दिया गया। असहाबे कहफ़ का यह क्रिस्सा गबन की किताब The Decline and fall of Roman Empire में भी Seven Sleepers के उन्वान से मौजूद है। इस क्रिस्से का ज़िक्र चूँकि रोमन लिटरेचर में था और यहूदी इन तमाम तफ़सीलात से आगाह थे, इसलिए उन्होंने यह सवाल हुज़ूर ﷺ से इस्तेहानन पूछ भेजा था।

आयत 10

“जबकि उन नौजवानों ने ग़ार में पनाह ली और उन्होंने कहा: ऐ हमारे रब! तू हमें अता फ़रमा अपने पास से रहमत और आसान फ़रमा दे हमारे लिये हमारे मामलात में आफ़्रियत का रास्ता।”

إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۝

अपने ख़ास खज़ाना-ए-फ़ज़ल से हमारे लिये रहमत का बंदोबस्त फ़रमा दे।

आयत 11

“तो हमनी थपकी दे दी उनके कानों पर ग़ार में कई साल के लिये।”

فَضَرَبْنَا عَلَىٰ آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۝

यानि हमने ग़ार के अंदर मुतअद्दिद साल तक उन्हें सुलाए रखा। यहाँ पर यह बहस नहीं छेड़ी गई कि कितने साल तक उन्हें नींद की हालत में रखा गया।

आयत 12

“फ़िर हमने उन्हें उठाया ताकि हम देखें कि दो गिरोहों में से किसको बेहतर मालूम है कि कितना अरसा वह वहाँ रहे थे।”

ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِئْتُوهُ
أَمَدًا ۝١٢

इन दो गिरोहों से कौन लोग मुराद हैं, इसका ज़िक्र आगे आएगा।

आयत 13

“हम सुना रहे हैं आपको उनका क्रिस्सा हक़ के साथ।”

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِأَحْقِّ

यह वाक़िया जैसे वकुअ पज़ीर हुआ था बिल्कुल वैसे ही हम आपको बिला कम व कास्त सुनाने जा रहे हैं।

“वह चंद नौजवान थे जो ईमान लाए अपने रब पर और हमने ख़ूब बढ़ाया था उन्हें हिदायत में।”

إِنَّهُمْ فَتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ۝١٣

आयत 14

“और हमने मज़बूत कर दिया उनके दिलों को जब वह (बादशाह के सामने) खड़े हुए”

وَرَبَطْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا

“तो उन्होंने कहा कि हमारा रब तो वह है जो आसमानों और ज़मीन का रब है, हम हरगिज़ नहीं पुकारेंगे उसके सिवा किसी और को मअबूद, (अगर ऐसा हुआ) तब तो हम बहुत गलत बात कहेंगे।”

فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِهَا اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَا اِذَا شَطَطًا ۝١٤

जिस तरह हज़रत इब्राहीम अलै. ने नमरूद के दरबार में डट कर हक़ बात कही थी वैसे ही इन नौजवानों ने भी अलल ऐलान कहा कि हम रब्बे कायनात को छोड़ कर किसी देवी या देवता को अपना रब मानने को तैयार नहीं हैं।

आयत 15

“हमारी इस क़ौम ने बना लिये हैं उसके सिवा दूसरे मअबूद।”

هُوَ لَا يَأْتِيَنَا اتِّخَذُوا مِنْ دُوْنِ الْاِلٰهَةِ

“तो क्यों नहीं पेश करते वह उनके बारे में कोई वाज़ेह दलील?”

لَوْ لَا يَأْتِيَنَا عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍ بَيِّنٍ

अल्लाह तआला की तरफ़ से नाज़िल शुदा कोई दलील या सनद वह अपने इस दावे के साथ क्यों पेश नहीं करते?

“तो उस शख्स से बढ़ कर कौन ज़ालिम होगा जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा!”

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝١٥

शाही दरबार में इस तुंद व तेज़ मकालमे के बाद जब उन्हें चंद दिन की मोहलत के साथ अपना दीन छोड़ने या मौत का सामना करने के बारे में फ़ैसला करने का इख्तियार दे दिया गया तो वह आपस में यूँ मशवरा करने लगे:

आयत 16

“और अब जबकि तुमने खुद को उन लोगों से और जिनकी वह अल्लाह के सिवा परस्तिश करते हैं, उनसे अलैहदा कर लिया है तो अब किसी ग़ार में पनाह ले लो, तुम्हारा रब फैला देगा तुम्हारे लिये अपनी रहमत और तुम्हारे मामले में तुम्हारे लिये सहूलत का सामान पैदा फ़रमा देगा।”

وَإِذْ اَعَزَّ لَتْخُمُوهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأَوَّا إِلَى
الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ
مِنْ أَمْرِكُمْ مَرْفَقًا ۝۱۷

आयात 17 से 26 तक

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَزُورُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِنْهُ ذَلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضِلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُرْشِدًا ۝۱۸ وَتَحْسَبُهُمْ آيِقًا ظَا وَهُمْ رُقُودٌ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَلَمْلَمْتَ مِنْهُمْ رُعبًا ۝۱۹ وَكَذَلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ قَالُوا الْبَيْتَاءُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ فَابْعَثُوا أَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هَذِهِ إِلَى الْبَيْتَةِ فَلْيَنْظُرْ آيَهَا أَزْكَى طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ۝۲۰ إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا إِذَا أَبَدًا ۝۲۱ وَكَذَلِكَ أَعَزَّنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا رَبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَى أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا ۝۲۲ سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَابِعُهُمْ كُذِّبُوا وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كُذِّبُوا رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كُذِّبُوا قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ بِعَدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۝۲۳ وَلَا تَقُولَنَّ لِشَائٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَلِكَ غَدًا ۝۲۴ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ وَادْكُرْ رَبَّكَ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَى أَنْ يَهْدِيَنَّ رَبِّي لِأَقْرَبٍ مِنْ هَذَا ارْشَدًا ۝۲۵ وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تِسْعًا ۝۲۶ قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا لَهُ غَيْبُ السُّلُوتِ وَالْأَرْضُ أَبْصَرُ بِهِ وَاسْمِعْ مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا

(२१)

आयत 17

“और तुम सूरज लो देखते कि जब वह तुलूअ होता तो उनकी ग़ार से दाहिनी तरफ़ हट जाता”

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَزُورُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ
الْيَمِينِ

“और जब वह गुरुब होता तो बाएँ जानिब उनसे कन्नी कतरा जाता”

وَإِذَا غَرَبَتْ تَقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ

यानि उस ग़ार का मुँह शिमाल की तरफ़ था जिसकी वजह से सूरज की बराहेरास्त रौशनी या धूप उसमें दिन के किसी वक़्त भी नहीं पड़ती थी। हमारे यहाँ भी धूप और साए का यही असूल कारफ़रमा है। सूरज किसी भी मौसम में शिमाल की तरफ़ नहीं जाता। इसी असूल के तहत कारखानों वगैरह की बड़ी-बड़ी इमारात में यहाँ north light shells का अहतमाम किया जाता है ताकि ऐसे shells से रौशनी तो बिलडिंग में आए मगर धूप बराहेरास्त ना आए।

“और वह उसकी खुली जगह में (लेटे हुए) थे।”

وَهُمْ فِي فُجُوةٍ مِّنْهُ

यानि ग़ार अंदर से काफ़ी कुशादा थी और असहाबे कहफ़ उसके अंदर खुली जगह में सोए हुए थे।

“यह अल्लाह की निशानियों में से है।”

ذَٰلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ

“जिसे अल्लाह हिदायत देता है वही हिदायत याफ़ता होता है, और जिसे वह गुमराह कर दे तो उसके लिये तुम नहीं पाओगे कोई मददगार राह पर लाने वाला।”

مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضِلِّ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ
وَلِيًّا مَّرْشِدًا ۝١٢

आयत 18

“और (अगर तुम उन्हें देखते तो) तुम समझते कि वह जाग रहे हैं हालाँकि वह सो रहे थे, और हम उनकी करवटें भी बदलते रहे दायें और बायें”

وَتَحْسَبُهُمْ آيْقَاطًا وَهُمْ رُقُودٌ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ
الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ

गोया अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को उनकी देख-भाल के लिये नर्सिंग झूटी पर मामूर कर रखा था, जो वक़फ़े-वक़फ़े से उनकी करवटें बदलते रहे ताकि सालहा-साल तक एक ही पहलु पर लेटे रहने से वह bed sores जैसी किसी तकलीफ़ से महफूज़ रहें।

“और उनका कुत्ता अपने दोनों हाथ फैलाए हुए (बैठा) था देहलीज़ पर”

وَكَانَ لَهُمُ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ

इस दौरान उनका कुत्ता अपनी अगली दोनों टाँगें सामने फैला कर कुत्तों के बैठने के मखसूस अंदाज़ में ग़ार के दहाने पर बैठा रहा।

“अगर तुम उन पर झाँकते तो उनसे पीठ फेर कर भाग जाते और तुम पर उनकी तरफ़ से हैबत तारी हो जाती।”

لَوْ اِطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوُيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَلَمُلِئْتَ
مِنْهُمْ رُعبًا ۝١٩

एक वीराने में अँधेरी ग़ार और उसके सामने अपने बाजू फैलाए बैठा हुआ एक खौफ़नाक कुत्ता! यह एक ऐसा मंज़र था जिसे जो भी देखता डर के मारे वहाँ से भागने में ही आफ़्रियत समझता।

आयत 19

“और इसी तरह हमने उन्हें उठाया ताकि वह आपस में एक-दूसरे से पूछें।”

وَكَذَٰلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ

“उनमें से एक कहने वाले ने कहा कि तुम कितना अरसा यहाँ रहे होगे?”

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ

“कुछ बोले कि हम रहे हैं एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा। कुछ (दूसरे) बोले कि तुम्हारा रब ख़ूब जानता है तुम कितना अरसा रहे हो!”

قَالُوا لَبِئْسَ مَا أَوْبَعُصَ يَوْمٍ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ
بِمَا لَبِئْتُمْ

जब कुछ साथियों ने अपनी राय का इज़हार किया कि उन्होंने एक दिन या उससे कुछ कम वक़्त नींद में गुज़ारा है तो उनके जवाब पर कुछ दूसरे साथी बोल पड़े कि इस बहस को छोड़ दो, अल्लाह को सब पता है कि तुम लोग यहाँ कितना अरसा सोए रहे हो।

“अब तुम भेजो अपने में से एक (साथी) को अपने इस चाँदी के सिक्के के साथ शहर की तरफ़”

فَاتَّبِعُوا أَحَدَكُمْ يَورِقُكُمْ هَذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ

“तो वह देखे कि शहर के किस हिस्से से ज़्यादा पाकीज़ा खाना मिलता है और वह वहाँ से तुम्हारे लिये कुछ खाना ले आए।”

فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَى طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِنْهُ

ज़ाहिर है कि अपने ऐतकाद और नज़रिये के मुताबिक़ उन्हें पाकीज़ा खाना ही चाहिए था।

“और वह नरमी का मामला करे”

وَلْيَتَلَطَّفْ

यानि जो साथी खाना लेने के लिये जाए वह लोगों से बात-चीत और लेन-देन करते हुए ख़ुसूसी तौर पर अपना रवैय्या नरम रखे। ऐसा ना हो कि वह किसी से झगड़ पड़े और इस तरह हम सबके लिये कोई मसला खड़ा हो जाए।

यहाँ पर नोट कर लीजिए कि कुरान के हुरूफ़ की गिनती के ऐतबार से लफ़ज़ وَلْيَتَلَطَّفْ की “ت” पर कुरान का निस्फ़े अव्वल पूरा हो गया है और इसके बाद लफ़ज़ “و” से निस्फ़े सानी शुरू हो रहा है।

“और वह आगाह ना कर दे तुम्हारे बारे में किसी को।”

وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ۝

आयत 20

“क्योंकि अगर उन्होंने तुम पर क़ाबू पा लिया तो वह तुम्हें संगसार कर देंगे या तुम्हें वापस ले जायेंगे अपने दीन में, और तब तो तुम कभी भी फ़लाह नहीं पा सकोगे।”

إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعِيدُوكُمْ فِي
مِلْحَةٍ ۝ وَلَنْ تَفْلِحُوا إِذَا أَبَدًا ۝

अगर उन्होंने तुम्हें मजबूर कर दिया कि तुम फ़िर से उनका दीन कुबूल कर लो तो ऐसी सूरत में तुम हमेशा के लिये हिदायत से दूर हो जाओगे।

आयत 21

“और इस तरह हमने मुत्तलाअ कर दिया (लोगों को) उन पर”

وَكَذَلِكَ أَعْتَرْنَا عَلَيْهِمْ

चुनाँचे असहाबे कहफ़ का एक साथी जब खाना लेने के लिये शहर गया तो अपने लिबास, हुलिये और करन्सी वगैरह के बाइस फ़ौरी तौर पर पहचान लिया गया कि वह मौजूदा ज़माने का इंसान नहीं है। फ़िर जब उससे तफ़तीश की गई तो सारा राज़ खुल गया। उस वक़्त अगरचे इस वाक़िये को तीन सौ साल से ज़ाएद का अरसा गुज़र चुका था मगर इसके बावजूद यह बात अभी तक लोगों के इल्म में थी कि फ़लां बादशाह के डर से इस शहर से सात आदमी कहीं रूपोश हो गए थे और पूरी ममलिकत में तलाश बसयार के बावजूद कहीं उनका सुराग ना मिल सका था। इसी तरह यह बात भी लोगों के इल्म में थी कि इस पूरे वाक़िये को एक तख्ती पर लिख कर रिकॉर्ड के तौर पर शाही खज़ाने में महफूज़ कर लिया गया

था। लिहाज़ा असहाबे कहफ़ के साथी से मिलने वाली मालूमात की तस्दीक़ के लिये जब मज़कूरह तख्ती रिकॉर्ड से निकलवाई गई तो उस पर इस वाक़िये की तमाम तफ़सीलात लिखी हुई मिल गई और यूँ ये वाक़िया पूरी वज़ाहत के साथ लोगों के सामने आ गया।

“ताकि वह जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और यह कि क़यामत के बारे में हरगिज़ कोई शक नहीं।”

لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا

ये वाक़िया गोया बाअसे बाद अल मौत के बारे में एक वाज़ेह दलील था कि जब अल्लाह तआला ने तीन सौ साल तक इन लोगों को सुलाए रखा और फिर उठा खड़ा किया तो उसके लिये मुर्दों का दोबारा ज़िन्दा करना क्यों कर मुमकिन नहीं होगा?

“जब वह लोग आपस में झगड़ रहे थे उनके मामले में”

إِذْ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرُهُمْ

इसके बाद असहाबे कहफ़ तो अपनी ग़ार में पहले की तरह सो गए और अल्लाह तआला ने उन पर हकीक़ी मौत बारिद कर दी, लेकिन लोगों के दरमियान इस बारे में इख़्तलाफ़ पैदा हो गया कि उनके बारे में हतमी तौर पर क्या मामला किया जाए।

“चुनाँचे कुछ लोगों ने कहा कि तामीर कर दो इन पर एक इमारत (बतौर यादगार), इनका रब इनसे बेहतर वाक़िफ़ है।”

فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا رَبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ

कुछ लोगों ने राय दी कि इस मामले की अहमियत के पेशे नज़र यहाँ एक शानदार यादगार तामीर की जानी चाहिये।

“जो लोग ग़ालिब आए अपनी राय के ऐतबार से उन्होंने कहा कि हम बनाएँगे इन (की ग़ार) पर एक मस्जिद।”

قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ

مَسْجِدًا ﴿٢١﴾

आयत 22

“अब यह लोग कहेंगे कि वह तीन थे, उनका चौथा उनका कुत्ता था, और कुछ लोग कहेंगे कि वह पाँच थे, उनका छठा उनका कुत्ता था, ये सब तीर तुक्के चला रहे हैं अँधेरे में, और कुछ लोग कहेंगे कि वह सात थे और उनका आठवाँ उनका कुत्ता था।”

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ
سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ
وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ

“आप कहिये: मेरा रब बेहतर जानता है उनकी तादाद को, नहीं जानते (उनके मामले) को मगर बहुत थोड़े लोग।”

قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ بِعَدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ

कुरान मजीद में उनकी तादाद के बारे में सराहत तो नहीं की गई मगर अक्सर मुफ़स्सरीन के मुताबिक़ बैनुल सतूर में आख़री राय के दुरुस्त होने के शवाहिद मौजूद हैं। इसमें एक नुक्ता तो ये है कि पहले फ़िक़रे {ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ} और दूसरे फ़िक़रे {خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ} के दरमियान में “و” नहीं है, जबकि तीसरे फ़िक़रे में {سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ} के दरमियान में “و” मौजूद है। चुनाँचे पहले दो कलिमात के मुक्काबले में तीसरे कलमे के बयान में “و” की वजह से ज़्यादा ज़ोर है।

इस ज़िमन में दूसरा नुक्ता यह है कि जब वह लोग जागे थे तो उनमें से एक ने सवाल किया था: {كَمْ لَيْتُهُمْ} (आयत 19) कि तुम यहाँ कितनी दर सोए रहे हो? इस सवाल का जवाब कुरान हकीम में बा-अल्फ़ाज़ नक़ल हुआ है: {قَالُوا لَيْتَنَّا بِيَوْمِ} (आयत 19) उन्होंने कहा कि हम एक दिन या एक दिन से कुछ कम अरसा तक सोए रहे हैं। यहाँ पर قَالُوا चूँकि जमा का सीगा है इसलिये यह जवाब देने वाले कम अज़ कम तीन लोग थे, जबकि इस सवाल के जवाब में उनके जिन साथियों ने दूसरी राय दी थी वह भी कम अज़ कम तीन ही थे, क्योंकि उनके लिये भी قَالُوا जमा का सीगा ही इस्तेमाल

हुआ है: {قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَيْسَ بِكُمْ} इस तरह उनकी तादाद सात ही दुरुस्त मालूम होती है। यानि एक पूछने वाला, तीन लोग एक राय देने वाले और उनके जवाब में तीन लोग दूसरी राय का इज़हार करने वाले।

इसके अलावा क़दीम रोमन लिट्रेचर में भी जहाँ इनका ज़िक्र मिलता है वहाँ इनकी तादाद सात ही बताई गई है। क़ब्ल अज़ ग़बन की किताब का हवाला भी दिया जा चुका है जिसमें Seven Sleepers का ज़िक्र है। लेकिन यहाँ जिस बात की तरफ़ ख़ास तौर पर तव्वजो दिलाई गई है वह यह है कि इस मामले में बहस करने और झगड़ने की ज़रूरत ही नहीं है:

“तो ऐ (नबी ﷺ!) आप इनके बारे में झगड़ा मत करें सिवाय सरसरी बहस के, और ना ही आप पूछिए इनके बारे में इनमें से किसी से।”

فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿٢٣﴾

यानि जो बात दावते दीन और इक़ामते दीन के हवाले से अहम ना हो उसमें बे-मक़सद छान-बीन करना और बहस व नज़ाअ में पड़ना, गोया वक़्त ज़ाया करने और अपनी जद्दो-जहद को नुक़सान पहुँचाने के मुतरादिफ़ है।

आयत 23

“और किसी चीज़ के बारे में कभी ये ना कहा करें कि मैं ये काम कल ज़रूर कर दूँगा।”

وَلَا تَقُولَنَّ لِيْ اِنِّىْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٤﴾

इस आयत में एक बहुत अहम वाक़िये का हवाला है। जब अहले मक्का ने रसूल अल्लाह ﷺ से सवालात किए तो आपने फ़रमाया कि मैं आप लोगों को इन सवालात के जवाबात कल दे दूँगा। इस मौक़े पर आप ﷺ ने सहवन “इंशा अल्लाह” नहीं फ़रमाया। इसके बाद कई रोज़ तक वही ना आई। ये सूरते हाल आपके लिए इन्तहाई परेशान कुन थी। मुखालफ़ीन खुशी में तालियाँ पीट रहे होंगे, आपको नाकामी के ताने दे रहे होंगे और आपको ये सब कुछ बरदास्त करना पड़ रहा होगा। इससे अंदाज़ा होता है कि अल्लाह तआला अपने महबूब को कैसी-कैसी सख़्त आजमाइशों से दो-चार करता है: “जिनके रुतबे हैं सवा उनकी सवा मुश्किल है!”

आम लोग अपनी रोज़मर्रा की गुफ्तगू में कैसी-कैसी ला-यानि बातें करते रहते हैं लेकिन अल्लाह के यहाँ उनकी पकड़ नहीं होती, इसलिये कि वह अल्लाह की यहाँ अहम नहीं होते, मगर यहाँ एक इन्तहाई मुक़र्रब हस्ती से सहवन एक कलमा अदा होने से रह गया तो बावजूद इसके कि मामला बेहद हस्सास था, वहि रोक ली गई। बिलआख़िर कई रोज़ के बाद जब अल्लाह को मंज़ूर हुआ तो हज़रत ज़िब्राइल अलै. सवालात के जवाबात भी लेकर आए और साथ ये हिदायत भी कि कभी किसी चीज़ के बारे में यूँ ना कहें कि मैं कल ये करूँगा:

आयत 24

“मगर ये कि अल्लाह चाहे!”

اِلَّا اَنْ يَّشَاءَ اللّٰهُ

यानि मुस्तक़बिल के बारे में जब भी कोई बात करें तो “इंन्शा अल्लाह” ज़रूर कहें कि अगर अल्लाह ने चाहा तो मैं यूँ करूँगा। अल्लाह तआला का मुसलमानों पर ये खुसूसी फ़ज़ल है कि उन्हें अपनी मआशरती ज़िंदगी में रोज़मर्रा के मामुलात के लिये ऐसे कलिमात सिखाए गए जिनमें तौहीद कूट-कूट कर भरी हुई है। आपने कोई खूबसूरत चीज़ देखी जिससे आपका दिल खुश हुआ, आपने कहा: सुव्हान अल्लाह! गोया आपने इक़रार किया कि ये इस चीज़ का कमाल नहीं और ना ही ये चीज़ ब-ज़ाते खुद लायक़-ए-तारीफ़ है बल्कि तारीफ़ तो अल्लाह की है जिसने ये खूबसूरत चीज़ बनाई। आपकी कोई तकलीफ़ दूर हुई तो मुँह से निकला: अल्हम्दुलिल्लाह! यानि जो भी मुश्किल आसान हुई अल्लाह की मदद, उसकी मेहरबानी और उसके हुक्म से हुई, लिहाज़ा शुक्र भी उसी का अदा किया जाएगा। आप अपने घर में दाख़िल हुए, अहलो अयाल को खुश व ख़ुरम पाया, आपने कहा: माशा अल्लाह! कि इसमें मेरा या किसी और का कोई कमाल नहीं, ये सब अल्लाह की मर्ज़ी और मशीयत से है। इसी तरह मुस्तक़बिल में किसी काम के करने के बारे में इज़हार किया तो साथ इंशाअल्लाह कहा। यानि मेरा इरादा तो यूँ है मगर सिर्फ़ मेरे इरादे से क्या होता है, हक़ीक़त में ये काम तभी होगा और मैं इसे तभी कर पाऊँगा

जब अल्लाह को मंज़ूर होगा, क्योंकि अल्लाह की मशीयत और मर्ज़ी के बगैर कुछ नहीं हो सकता। गोया इन कलिमात के ज़रिये क़दम क़दम पर और बात-बात में हमें तौहीद का सबक़ याद दिलाया जाता है। अल्लाह के इल्म, उसके हुक्म, उसके इख़्तियार व इक़तदार, उसकी कुदरत, उसकी मशीयत के मुताल्लिक और फ़ाएक़ होने के इक़रार की तरगीब दी जाती है। इनमें से ज़्यादा तर कलिमात (अल्हम्दुलिल्लाह, इंशाअल्लाह, माशा अल्लाह) इस सूरत में मौजूद हैं।

“और अपने रब को याद कर लिया कीजिये जब आप भूल जायें”

وَادْكُرْ رَبَّكَ إِذَا نَسِيتَ

अगर किसी वक़्त भूल जायें तो याद आने पर दोबारा अल्लाह की तरफ़ अपना ध्यान लगा लीजिये।

“और कहिये: हो सकता है कि मेरा रब मेरी रहनुमाई करदे इससे बेहतर भलाई की तरफ़।”

وَقُلْ عَسَى أَنْ يَهْدِيَنِي رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَذَا رَشَدًا

②

यानि किसी भी काम के लिये कोशिश करते हुए इंसान को “तफ़वीज़ुल अम्र इलाल्लाह” की कैफ़ियत में रहना चाहिये कि अगर अल्लाह को मंज़ूर हुआ तो मैं इस कोशिश में कामयाब हो जाऊँगा, वरना हो सकता है मेरा रब मेरे लिये इससे भी बेहतर किसी काम के लिये अस्बाब पैदा फ़रमा दे। गोया इंसान अपने तमाम मामलात हर वक़्त अल्लाह तआला के सुपुर्द किये रखे:

सुपुर्दम बतो माया-ए-ख़वीश रा, तू दानी हिसाबे कम व बेशरा!

आयत 25

“और वह रहे अपनी ग़ार में तीन सौ बरस और इसके ऊपर नौ बरस।”

وَلَبِثُوا فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَارْدَاذًا

تِسْعًا ③

यानि ग़ार में उनके सोने की मुद्दत शम्सी कैलेंडर में तीन सौ साल जबकि क़मरी कैलेंडर के मुताबिक़ तीन सौ नौ साल बनती है।

आयत 26

“आप कहिये कि अल्लाह बेहतर जानता है उसमें जितना (अरसा) वह रहे”

قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوا

यानि इस बहस में भी पड़ने की ज़रूरत नहीं कि वह ग़ार में कितना अरसा सोए रहे। इसका जवाब भी आप इनको यही दें कि इस मुद्दत के बारे में भी अल्लाह ही बेहतर जानता है।

“उसी के लिये है आसमानों और ज़मीन का ग़ैब। क्या ही ख़ूब है वह उसको देखने वाला और क्या ही ख़ूब है वह सुनने वाला!”

لَهُ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ

“उसके सिवा उनका कोई मददगार नहीं, और वह शरीक़ नहीं करता अपने हुक्म में किसी को भी।”

مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ

أَحَدًا ④

उसके सिवाए उनका कोई साथी, कारसाज़, मददगार, हिमायती और पुश्त पनाह नहीं है। लफ़ज़ “वली” इन सब मायनों का इहाता करता है।

वह अपने इख्तियार और अपनी हाकिमियत के हक़ में किसी दूसरे को शरीक नहीं करता। यह तैहिदे हाकिमियत है। इस बारे में सूरह युसुफ़ (आयत 40, 67) में इस तरह इरशाद हुआ: {إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ} “इख्तियारे मुतलक़ तो सिर्फ़ अल्लाह ही का है।” जबकि सूरह बनी इसराइल की आख़री आयत में यूँ फ़रमाया गया: {وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ} “और उसका कोई शरीक नहीं है बादशाहत में।”

आयात 27 से 31 तक

وَآتِلْ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝
يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ وَلَا تَعْدُ عَيْنُكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الدُّنْيَا وَلَا تُطِيعُ مَنْ
أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ وَكَانَ أَمْرُهُ فُرْطًا ۝
فَلْيَكْفُرْ ۖ إِنَّا أَخَذْنَا بِالظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۖ وَإِنْ يَسْتَعِيضُوا يَغَاثُوا ۖ بَمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ ۚ بِئْسَ
الشَّرَابُ ۖ وَسَاءَتْ مَرْتَفَعًا ۝
لَهُمْ جَذْتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ
وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۖ نِعَمَ الثَّوَابِ ۖ وَحَسُنَتْ مَرْتَفَعًا ۝

आयत 27

“और (ऐ नबी ﷺ) आप तिलावत कीजिये जो आपकी तरफ़ वही की गई है आपके रब की किताब में से।”

وَآتِلْ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ

यानि इस वक़्त आप बहुत मुश्किल सूरते हाल का सामना कर रहे हैं। इस कैफ़ियत में आपको सब्र व इस्तक्रामत की सख़्त ज़रूरत है: {وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ} (सूरह नहल: 127) “और (ऐ नबी ﷺ) आप सब्र कीजिये और आपका सब्र तो अल्लाह के सहारे पर ही है।” यह सहारा आपको अल्लाह के साथ अपना क़ल्बी ताल्लुक़ और ज़हनी रिश्ता अस्तवार करने से मयस्सर होगा और ये ताल्लुक़ मज़बूत करने का सबसे मौअस्सर ज़रिया कुरान मजीद की तिलावत है। तमस्सक बिल कुरान का ये मज़मून सूरतुल अनकबूत में (इक्कीसवें पारे के आगाज़ में) दोबारा आएगा। हक़ व बातिल की कशमकश में जब भी कोई मुश्किल वक़्त आया तो रसूल अल्लाह ﷺ को खुसूसी तौर पर तमस्सक बिल कुरान की हिदायत की गई, और आपकी वसातत से तमाम मुसलमानों को हुक़म दिया गया कि वह कुरान की तिलावत को अपना मामूल बनायें, कुरान के साथ अपना ताल्लुक़ मज़बूत बनाने के लिये ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त इसके साथ सर्फ़ करें। इसी तरह वह मुश्किलात व शदाइद को बरदाश्त करने और अपने दुश्मनों का मुक़ाबला करने के क़ाबिल हो सकेंगे।

“उसकी बातों को बदलने वाला कोई नहीं है, और आप नहीं पायेंगे उसके सिवा कोई जाए पनाह।”

لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝

यक़ीनन यह रास्ता बहुत कठिन है और इस रास्ते के मुसाफ़िरों ने सख्तियों को बहरहाल बरदाश्त करना है। ये अल्लाह का क़ानून है जो किसी के लिये तब्दील नहीं किया जाता। इस मुहिम में वाहिद सहारा अल्लाह की मदद और नुसरत है। चुनाँचे अगर आपको कहीं पनाह मिलेगी तो अल्लाह ही के दामन में मिलेगी, उस दर के सिवा कोई जाए पनाह नहीं है। अल्लामा इक़बाल ने इसी मज़मून की तर्जुमानी अपने इस शेर में की है:

ना कहीं जहाँ में अमाँ मिली, जो अमाँ मिली तो कहाँ मिली
मेरे जुर्म खाना ख़राब को, तेरे अफ़व बन्दा नवाज़ में!

आयत 28

“और अपने आपको रोके रखिये उन लोगों के साथ जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह व शाम”

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدْوَةِ
وَالْعَشِيِّ

यह बिलाल हब्शी, अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम, अम्मार बिन यासिर और खब्बाब रज़ि. जैसे लोग अगरचे मुफ़लिस और नादार हैं मगर अल्लाह की नज़र में बहुत अहम हैं। आप इन लोगों की रफ़ाक़त तो गनीमत समझिये, और अपने दिल को इन लोगों की मईयत (साथ) पर मुतमईन कीजिये।

“वह अल्लाह की रज़ा के तालिब हैं और आपकी निगाहें उनसे हटने ना पायें, (जिससे लोगों को ये गुमान होने लगे कि) आप दुनियावी ज़िंदगी की आराईश व ज़ेबाईश चाहते हैं!”

يُرِيدُونَ وَجْهَهُ وَلَا تَعْدُ عَيْنُكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

इन गुलामों और बे-आसरा लोगों से आपकी तबज्जो हट कर कहीं मक्का के सरदारों और अमराअ की तरह ना होने पाए, जिससे लोगों को ये गुमान हो कि आप भी दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत ही को अहमियत देते हैं। लिहाज़ा वलीद बिन मुगीराह बज़ाहिर कितना ही बा-असर और साहिबे सरवत सही, आप अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम रज़ि. को नज़रअंदाज़ करके उसे हरगिज़ अहमियत ना दें। तर्जुमे के ऐतबार से ये आयत मुश्किल आयात में से है। यहाँ अल्फ़ाज़ के ऐन मुताबिक़ तर्जुमा मुमकिन नहीं। हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की ये शान हरगिज़ ना थी कि आप صلی اللہ علیہ وسلم की नज़रें गुरबाअ से हट कर अमराअ की तरफ़ उठतीं। चुनाँचे इन अल्फ़ाज़ से यही मफ़हूम समझ में आता है कि दरअसल आपको ये बताना मक़सूद है कि आप दावत व तबलीग़ की गर्ज से भी इन अमराअ की तरफ़ इस अंदाज़ में इलतफ़ात ना फ़रमाएँ जिससे किसी को मुग़ालता हो कि आप صلی اللہ علیہ وسلم की निगाह में दुनियावी माल व असबाब की भी कुछ वक़अत और अहमियत है। सूरतुल हिज़ में यही मज़मून इस तरह बयान हुआ है: {لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَى مَا مَتَّعْتُنَا فِيْهِ آَزْوَاجًا مِنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَخَفَضْنَا حَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ} “आप आँख उठा कर भी ना देखें उस माल व मताअ की तरफ़ जो हमने इनके मुख्तलिफ़ गिरोहों को दे रखा है और आप इन (अमराअ) के बारे में फ़िक्रमंद ना हों और अहले ईमान के लिये अपने बाज़ू झुका कर रखें!”

किसी भी दाई-ए-हक़ के लिये ये मामला बहुत नाज़ुक होता है। मआशरे के ऊँचे तबक़े के लोगों का बहरहाल अपना एक हल्का असर होता है। उनमें से अगर कोई अहले हक़ की सफ़ में शामिल होता है तो वह अकेला बहुत से अफ़राद के बराबर शुमार होता है और उसकी वजह से कई दूसरे लोग खुद-ब-खुद खिंचे आते हैं और पहले से मौजूद लोगों के लिये भी ऐसे शख्स की शमूलियत तक्रवियत और इत्मिनान का बाइस होती है। जैसे हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने अल्लाह तआला से अपनी इस ख्वाहिश का इज़हार किया था कि उमर बिन खत्ताब रज़ि. या उमर बिन हश्शाम (अबु जहल) में से किसी एक को ज़रूर मेरी झोली में डाल दे! इस दोनों में से कोई एक ईमान ले आए। ज़ाहिर है कि इन जैसी बा-असर शख्सियात में से किसी का ईमान लाना इस्लाम के लिये बाइसे तक्रवियत होगा और उसकी रफ़ाक़त से इन कमज़ोर मुसलमानों को सहारा मिलेगा जिन पर क्राफ़िया-ए-हयात तंग हुआ जा रहा है। और फिर वाक़िअतन ऐसा हुआ भी कि हज़रत उमर और हज़रत हमज़ा रज़ि. के ईमान लाने के बाद मक्का में कमज़ोर मुसलमानों पर कुरैश के जुल्म व तअदी में काफ़ी हद तक कमी आ गई।

बहरहाल इस सिलसिले में मअरूज़ी हक्काएक (objective truth) किसी भी दाई को इस तरफ़ रागिब करते हैं कि मआशरे के मतमूल तबक़ों और अरबाबे इख्तियार व इक़तदार तक पैग़ामे हक़ तरजीही बुनियादों पर पहुँचाया जाए और उन्हें अपनी तहरीक में शामिल करने के लिये तमाम मुमकिना वसाइल बरवेकार लाए जाएँ। मगर दूसरी तरफ़ इस हिकमते अमली से तहरीक के नादार और आम अरकान को ये तअस्सुर मिलने का अंदेशा होता है कि उन्हें कम हैसियत समझ कर नज़र अंदाज़ किया जा रहा है और इस तरह उनकी हौसला शकनी होने का इम्कान पैदा होता है। इस मामले का एक पहलु ये भी है कि जब कोई दाई-ए-हक़ असर व रसूख के हामिल अफ़राद की तरफ़ तरजीही अंदाज़ में मुतवज्जा होगा तो अवाम में उसकी ज़ात उसकी तहरीक के बारे में ये तअस्सुर उभरने का अंदेशा होगा कि ये लोग भी अमराअ और अरबाबे इख्तियार से मरऊब हैं और इनके यहाँ भी दुनियावी ठाठ-बाठ को ही तरजीह दी जाती है। चुनाँचे दौलत मंद और असर व रसूख के

हामिल अफ़राद तक दीन की दावत को फैलाने की कोशिश के साथ-साथ इस सिलसिले में मज़क़ूरा बाला दो अवामिल के मनफ़ी असरात से बचना भी निहायत ज़रूरी है। चुनाँचे हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم को इस आयत में हुक्म दिया जा रहा है कि आप इस सिलसिले में अहतियात करें, कहीं लोग ये तअस्सुर ना ले लें कि मोहम्मद (صلی اللہ علیہ وسلم) के यहाँ भी दौलतमंद लोगों ही को ख़ुसूसी अहमियत दी जाती है।

“और मत कहना मानिये ऐसे शख्स का जिसका दिल हमने अपनी याद से गाफिल कर दिया है और जो अपनी ख्वाहिशात के पीछे पड़ा है और उसका मामला हद से मुतजाविज़ हो चुका है।”

وَلَا تُطْعَمَنَّ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ
وَكَانَ أَمْرُهُ فُرُطًا ۝۲۸

ये बात मुतअद्दिद बार बयान हो चुकी है कि कुफ़ारे मक्का रसूल अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم के साथ मदाहनत पर असर थे और वह आपके साथ कुछ दो और कुछ लो कि बुनियाद पर मुज़ाकरात करना चाहते थे। इस सिलसिले में सरदाराने कुरैश की तरफ़ से आप पर शदीद दबाव था। इस पसमंज़र में यहाँ फिर मुतनब्बा (ख़बरदार) किया जा रहा है कि जिन लोगों के दिलों को हमने अपनी याद से गाफिल और महरूम कर दिया है आप ऐसे लोगों की बातों की तरफ़ ध्यान भी मत दीजिए।

आयत 29

“और आप कह दीजिये कि यही हक़ है तुम्हारे रब की तरफ़ से, तो अब जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे कुफ़र करे।”

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَاءَ
فَلْيُكْفُرْ

कुफ़ारे मक्का की तरफ़ से कोई दरमियानी रास्ता निकालने की कोशिशों के जवाब में यहाँ हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की ज़बाने मुबारक से वाज़ेह और दो टूक अंदाज़ में ऐलान कराया जा रहा है कि तुम्हारे रब की तरफ़ से जो हक़ मेरे पास आया है वह मैंने तुम लोगों के सामने पेश कर दिया है। अब तुम्हारे सामने दो ही रास्ते हैं, इसे मन-व-अन कुबूल कर लो या इसे रद्द कर दो। लेकिन याद रखो इसमें कुछ लो और कुछ दो के असूल पर तुमसे कोई सौदेबाज़ी मुमकिन नहीं। ये वही मज़मून है जो सूरतुल दहर (आयत नम्बर 3) में इस तरह बयान हुआ है: {إِنَّا هَدَيْنَا السَّبِيلَ إِنَّمَا شَأْنُكُمْ إِنَّمَا كُفُورًا} यानि हमने इंसान के लिये हिदायत का रास्ता वाज़ेह कर दिया है और उसको इख्तियार दे दिया है कि अब चाहे वह शुक्रगुज़ार बने और चाहे नाशुक्रा।

“हमने ज़ालिमों के लिये आग तैयार कर रखी है, उसकी क़नातें उनका अहाता कर लेंगी।”

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا

जहन्नम की आग़ क़नातों की शक़ल में होगी और वह अल्लाह के मुनकरीन और मुशरिकीन को घेरे में ले लेगी।

“और अगर वह पानी के लिये फ़रयाद करेंगे तो उनकी फ़रयादरसी ऐसे पानी से की जाएगी जो (ख़ौलते हुए) तेल की तलछट जैसा होगा, जो चेहरों को भून डालेगा।”

وَأَن يَّسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ

“बहुत ही बुरी चीज़ होगी पीने की, और वह (जहन्नम) बहुत ही बुरी जगह है आराम की।”

بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۝۲۹

“مُهْل” का तर्जुमा तेल की तलछट के अलावा लावा भी किया गया है और पिघला हुआ ताँबा भी। सूरह इब्राहीम की आयत 16 में जहन्नमियों को पिलाये जाने वाले पानी को “مَاءٌ صَدِيدٌ” कहा गया है जिसके मायने ज़ख़मों से रिसने वाले पीप के हैं। बहरहाल ये सयाल माद्दा जो उन्हें पानी के तौर पर दिया जाएगा इस क़दर गरम होगा कि उनके चेहरों को भून कर रख देगा। अब आइन्दा आयात में फ़ौरी तक्राबुल के लिये अहले जन्नत का ज़िक्र आ रहा है।

आयत 30

“यक्रीनन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किये तो हम नहीं ज़ाया करेंगे अज़ उस शख्स का जिसने अच्छा अमल किया।”

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ
مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۖ

आयत 31

“उन्हीं लोगों के लिये हैं रहने के ऐसे बाग़ात जिनके दामन में नदियाँ बहती होंगी”

أُولَئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ

“उन्हें पहनाए जायेंगे उसमें सोने के कंगन और वह पहनेंगे सब्ज़ रंग के कपड़े बारीक रेशम के और मोटे रेशम के”

يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا
خُضْرًا مُسْتَبْرَقًا ۖ

यानि उनका ऊपर का लिबास बारीक रेशम का होगा जबकि नीचे का लिबास मोटे रेशम का होगा।

“टेक लगाए बैठे होंगे तख्तों पर।”

مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۖ

“क्या ही अच्छा बदला होगा (उनके लिये) और क्या ही खूब आरामगाह होगी!”

نِعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۖ

आयत 32 से 44 तक

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا رَجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زُرْعًا ۖ كِلْتَا
الْجَنَّتَيْنِ اتَتْ أَكْلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِنْهُ شَيْئًا وَفَجَّرْنَا خِلْفَهُمَا نَهْرًا ۖ وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا
أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ نَفَرًا ۖ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ قَالَ مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هَذِهِ أَبَدًا ۖ وَمَا أَظُنُّ
السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِنْ رُودْتُ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِنْهَا مُنْقَلَبًا ۖ قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي
خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّكَ رَجُلًا ۖ لَكِنَّا هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ۖ وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ
جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ إِنْ تَرَىٰ أَنَا أَقْلَ مِنْكَ مَالًا وَلَوْلَا ۖ فَعَسَىٰ رَبِّي أَنْ يُؤْتِيَنَّ خَيْرًا مِنْ
جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِنَ السَّمَاءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا زَلَقًا ۖ أَوْ يُصْبِحَ مَاءً غَورًا فَلَنْ تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ۖ
ۚ وَأُحِيطَ بِشَمْرِهِ فَاصْبَحَ يَقْلَبُ كَفْيِهِ عَلَىٰ مَا أَنْفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ يَلَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّي
أَحَدًا ۖ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ۖ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا
وَخَيْرٌ عُقْبًا ۖ

इस रुकूअ में दो अश्खास के बाहमी मकालमे की तफ़सील बयान हुई है। इनमें से एक शख्स को अल्लाह तआला ने माल व दौलत और बहुत सी दूसरी दुनियावी नेअमतों से नवाज़ रखा था। वह शख्स अपनी खुशहाली में इस क़दर मग्न हुआ कि उसकी निगाह अल्लाह से हट कर माद्दी वसाएल पर ही जम कर रह गई और उन्हीं असबाब व वसाएल को वह अपने

तवक्कुल और भरोसे का मरकज़ बना बैठा। उसके साथ एक दूसरा शख्स था जो दुनियावी लिहाज़ से खुशहाल तो नहीं था मगर उसे अल्लाह की मअरफ़त हासिल थी। उसने उस दौलतमंद शख्स को नसीहत की कि अल्लाह ने तुम्हें बहुत सी नेअमतों से नवाज़ा है मगर तुम उसे बिल्कुल ही भूले हुए हो। तुम्हें चाहिये कि तुम अल्लाह का शुक्र अदा करो। दौलतमंद शख्स ने घमंड में आकर उसकी नसीहत का बहुत तल्ख़ जवाब दिया और कहा कि मुझे तो ये सारी नेअमतें इसलिये मिली हैं कि मैं अल्लाह का चहेता हूँ जबकि मेरे मुक़ाबले में तुम्हारी कोई हैसियत नहीं। अल्लाह के इस बन्दे ने उसे फिर समझाया कि देखो अपने दुनियावी माल व असबाब पर मत इतराओ, क्योंकि अल्लाह अगर चाहे तो तुम्हारे ये सारे ठाठ-बाठ पल भर में ख़त्म करके रख दे। वह चाहे तो तुम्हारी सारी दौलत और माल व असबाब को ज़ाया कर सकता है। उसने जवाबन कहा कि ये कैसे हो सकता है? मैंने अपने माल व असबाब की हिफ़ाज़त का ख़ूब बंदोबस्त कर रखा है। अलगज़ इन तमाम नसीहतों का उस शख्स पर कुछ भी असर ना हुआ। दुनियावी असबाब के नशे ने उसको इस क्रूर अंधा कर रखा था कि उसे हक़ीक़ी मुसबबुल असबाब की कुदरत का कुछ अंदाज़ा ही ना रहा। बिलआख़िर उसके इस रवैय्ये का नतीजा ये निकला कि अल्लाह तआला ने उसका सब कुछ बरबाद करके रख दिया और वह अपने रवैय्ये पर कफ़ अफ़सोस मलता रह गया। अपनी बरबादी के बाद जब उस शख्स की आँखें खुलीं तो तब बहुत देर हो चुकी थी।

यहाँ उस दौलतमंद शख्स का वह फ़िक़रा खासतौर पर काबिले गौर है जो अपनी बरबादी के बाद पछताते हुए उसकी ज़बान से निकला था कि “काश मैंने अपने रब के साथ शिर्क ना किया होता!” देखा जाए तो इस सारे वाक़िये में किसी ज़ाहिरी शिर्क का इरतकाब नज़र नहीं आता। किसी देवी या देवता की पूजा-पाट का भी कोई हवाला यहाँ नहीं आया, अल्लाह के सिवा किसी दूसरे मअबूद का भी ज़िक्र नहीं हुआ, तो फिर सवाल पैदा होता है कि वह कौनसा अक्रदाम था जिस पर वह शख्स पछताया कि काश मैंने अपने रब से शिर्क ना किया होता! इस पहलु से आगे इस सारे वाक़िये का बारीक-बीनी से जायज़ा लिया जाए तो ये नुक्ता समझ में आता है कि यहाँ जिस शिर्क का ज़िक्र हुआ है वह “माद्दा परस्ती” का शिर्क है। उस शख्स ने अपने माद्दी असबाब व वसाएल को ही अपना सब कुछ समझ लिया था। जो भरोसा और तवक्कुल उसे हक़ीक़ी मुसबबुल असबाब पर करना चाहिये था वह भरोसा और तवक्कुल उसने अपने माद्दी वसाएल पर कर लिया था और इस तरह उन माद्दी वसाएल को मअबूद का दर्जा दे दिया था। यही रवैय्या और यही सोच माद्दा परस्ती है और यही मौजूदा दौर का सबसे बड़ा शिर्क है।

मौजूदा दौर सितारा परस्ती और बुत परस्ती का दौर नहीं। आज का इंसान सितारों की असल हक़ीक़त जान लेने और चाँद पर क़दम रख लेने के बाद इनकी पूजा क्योंकर करेगा? चुनाँचे आज के दौर में अल्लाह को छोड़ कर इंसान ने जो मअबूद बनाए हैं उनमें माद्दा परस्ती और वतन परस्ती सबसे अहम हैं। आज दौलत को मअबूद का दर्जा दे दिया गया है और माद्दी वसाएल और ज़राए को मुसबबुल असबाब समझ लिया गया है। यह मौजूदा दौर का बहुत ख़तरनाक शिर्क है और इससे महफूज़ रहने के लिये इसे बहुत बारीक-बीनी से समझने की ज़रूरत है।

आयत 32

“(ऐ नबी ﷺ) आप बयान कीजिये इनके लिये दो अश्वास की मिसाल”

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا زُجُلَيْنِ

“उनमें से एक को हमने दिये थे दो बाग़ अंगूरों के और उन दोनों का घेर दिया था हमने ख़जूरों के दरख़्तों के साथ”

جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا

بِنَخْلٍ

अंगूरों की बेलों के गिर्दा-गिर्द ख़जूरों के दरख़्तों की बाड़ थी ताकि नाज़ुक बेलें आँधी, तूफ़ान वगैरह से महफूज़ रहें।

“और हमने इन दोनों (बाग़ों) के दरमियान खेती का इंतेजाम भी कर रखा था।”

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زُرْعًا ۝

बुनियादी तौर पर वह अंगूरों के बाग़ात थे। उनके ऐतराफ़ में ख़जूरों के दरख़्त थे, जिनकी दोहरी अफ़ादियत थी। इन दरख़्तों से ख़जूरें भी हासिल होती थीं और हिफ़ाज़ती बाड़ का काम भी देते थे। दरमियान में कुछ ज़मीन काशतकारी के लिये भी थी, जिससे अनाज वगैरह हासिल होता था। गोया हर लिहाज़ से मिसाली बाग़ात थे।

आयत 33

“दोनों बाग़ात अपना फ़ल ख़ूब देते और उसमें से कुछ भी कम ना करते थे”

كُنَّا الْجَنَّتَيْنِ اِتْنِ اُكْلَاهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِنْهُ شَيْئًا

वह दोनों बाग़ात हर साल मौसम के मुताबिक़ ख़ूब फलते थे और उनकी पैदावार में कभी कोई कमी नहीं आती थी। उन बाग़ों का मालिक शख्स सालहा-साल से उनकी पैदावार से मुसलसल फ़ायदा उठाते-उठाते उन्हें दाइमी समझ बैठा और वह बिल्कुल ही भूल गया कि ये सब कुछ अल्लाह की मशीयत और इजाज़त ही से मुमकिन है।

“और हमने जारी कर दी थी उनके दरमियान एक नहर।”

وَفَجَّرْنَا خِلَالَهُمَا نَهْرًا

उन दोनों बाग़ों के बीचो-बीच एक नहर बहती थी। गोया उनकी आबपाशी का निज़ाम भी मिसाली था।

आयत 34

“और उसके लिये फ़ल भी था।”

وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ

इसका एक मफ़हूम तो यही है कि जब उन दोनों का आपस में मुकालमा हो रहा था उस वक़्त वह दोनों बाग़ात फलों से ख़ूब लदे हुए थे, जबकि दूसरा मफ़हूम जो मेरे नज़दीक़ राजेह है, ये है कि उस शख्स को अल्लाह ने औलाद भी ख़ूब दे रखी थी। इसलिये कि इंसान के लिये उसकी औलाद की वही हैसियत है जो किसी दरख़्त की लिये उसके फ़ल की होती है।

“तो कहा उसने अपने साथी से, और वह आपस में गुफ़्तगू कर रहे थे, कि मैं तुमसे बहुत ज़्यादा हूँ माल में और बहुत बड़ा हुआ हूँ नफ़री में”

فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا

وَاَعَزُّ نَفَرًا

यहाँ जिस फ़ख़्र से उस शख्स ने अपनी नफ़री का ज़िक़्र किया है उसके इस अंदाज़ से तो {وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ} का यही तर्जुमा बेहतर महसूस होता है कि उस शख्स को औलाद खुसूसन बेटों से भी नवाज़ा गया था।

आयत 35

“और वह दाख़िल हुआ अपने बाग़ में इस हाल में कि वह अपनी जान पर जुल्म कर रहा था।”

وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ

“उसने कहा: मैं नहीं समझता कि ये (बाग़) कभी भी बरबाद हो सकता है।”

قَالَ مَا أَظُنُّ اَنْ تَبِيدَ هَذِهِ اَبَدًا

यानि मेरा यह बाग़ हर लिहाज़ से मिसाली है। इसे मैंने बाक्रायदा मंसूबा बंदी के तहत हर क्रिस्म के ख़तरात से महफूज़ बना रखा है। अंगूरों की नाज़ुक बेलों के गिर्दा-गिर्द खजूरों के बुलंद व बाला दरख़्त संतरियों की तरह खड़े हर क्रिस्म के तूफ़ान और बाद-ए-सरसर के थपेड़ों से इसकी हिफ़ाज़त कर रहे हैं। आबपाशी के लिये नहर का वाफ़र पानी हर वक़्त मौजूद है। लिहाज़ा मैं नहीं समझता कि इसे कभी किसी क्रिस्म का ख़तरा लाहक़ हो सकता है।

आयत 36

“और मैं यह गुमान नहीं करता कि क़यामत क़ायम होने वाली है”

وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً

यह क़यामत वगैरह बातें सब ढ़कोसले हैं। मैं नहीं समझता कि ऐसा कोई वाक़िया हक़ीक़त में रूनुमा होने वाला है।

“और अगर मुझे लौटा ही दिया गया अपने रब की तरफ़ तो मैं लाज़िमन पाऊँगा इससे भी बेहतर पलटने की जगह।”

وَلَيْنُ رُدِّدْتُ إِلَىٰ رَبِّي لَا جِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٧﴾

क्रयामत व आखिरत का अब्बल तो मैं क़ायल ही नहीं, लेकिन क्रयामत अगर हुई भी तो मैं बहरहाल वहाँ इससे भी बेहतर ज़िंदगी पाऊँगा। इन अल्फ़ाज़ से ज़ाहिर होता है कि ये शख्स अल्लाह का मुन्किर नहीं था मगर दुनियावी माल व दौलत और माद्री असबाब व ज़राए पर भरोसा करके शिर्क का इरतकाब कर रहा था। ये शख्स यहाँ पर जो फ़लसफ़ा बयान कर रहा है वह अक्सर माद़ा परस्त लोगों के यहाँ बहुत मक़बूल है। यानि अगर मुझे दुनिया में अल्लाह तआला ने खुशहाली व फ़ारिगुल वाली से नवाज़ रखा है तो इसका मतलब ये है कि अल्लाह मुझसे खुश है। इसी लिये उसने मुझे खुसूसी सलाहियतें अता की हैं जिनकी वजह से मैंने ये असबाब व वसाएल इकठ्ठे किये हैं। चुनाँचे वह आखिरत में भी ज़रूर अपनी नेअमतों से मुझे नवाज़ेगा। और जो लोग यहाँ दुनिया में ज़ूतियाँ चटकाते फ़िर रहे हैं वह आखिरत में भी इसी तरह बेयार-ओ-मददगार होंगे।

आयत 37

“उसके साथी ने उससे कहा और वह उससे गुफ्तगू कर रहा था”

قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ

“क्या तूने कुफ़्र किया उस हस्ती का जिसने पैदा किया तुझे मिट्टी से, फिर गंदे पानी की बूंद से, फिर तुझे सही सलामत इंसान बना दिया?”

اَكْفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّاهُ رَجُلًا ﴿٣٨﴾

यहाँ ये नुक्ता बहुत अहम है कि वह शख्स बज़ाहिर अल्लाह का मुन्किर नहीं था मगर फिर भी उसे अल्लाह से कुफ़्र का मुरतक़िब बताया गया है। वह इसलिये कि इससे पहले वह आखिरत का इन्कार कर चुका था और आखिरत का इन्कार दरअसल अल्लाह का इन्कार है। गोया जो शख्स आखिरत का मुन्किर हो उसका ईमान बिल्लाह का दावा भी क़ाबिले कुबूल नहीं।

आयत 38

“लेकिन (मैं तो मानता हूँ कि) वह अल्लाह मेरा रब है और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता।”

لَكِنَّا هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ﴿٣٩﴾

आयत 39

“और जब तू अपने बाग़ में दाख़िल हुआ तो तूने यूँ क्यों ना कहा: माशा अल्लाह! (यानि ये सब अल्लाह के फ़ज़ल व करम से है।) अल्लाह के बदून किसी को कोई ताक़त हासिल नहीं।”

وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

तुझे बाग़ में हर तरफ़ खुशकुन मनाज़िर देखने को मिले और पूरा बाग़ फलों से लदा हुआ नज़र आया तो तेरी ज़बान से “माशा अल्लाह” क्यों ना निकला और तूने ये क्यों ना कहा कि ये मेरा कमाल नहीं है बल्कि अल्लाह की देन है जो असल ताक़त और इख्तियार का मालिक है, उसकी इजाज़त और मर्ज़ी के बग़ैर कुछ नहीं हो सकता। ये “माशा अल्लाह” वह कलमा है जिसमें तौहीद कूट-कूट कर भरी है, कि जो अल्लाह चाहता है वही होता है, किसी और के चाहने से या असबाब व वसाएल के होने से कुछ नहीं होता।

“मगर तू मुझे देखता है कि मैं तुमसे माल व औलाद में कम हूँ।”

إِنْ تَرَنِ أَنَا أَقَلُّ مِنْكَ مَالًا وَوَلَدًا ﴿٤٠﴾

आयत 40

“तो उम्मीद है कि मेरा रब तेरे बाग़ से बेहतर बाग़ मुझे दे दे”

فَعَلَىٰ رَبِّي أَن يُؤْتِيَنِي خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ

मुझे यक़ीन है कि मेरा रब अगर चाहे तो तुम्हारे इन बाग़ों से बेहतर नेअमतों से मुझे नवाज़ दे।

“और वह भेज दे इस (तेरे बाग़) पर कोई आफ़त आसमान से तो वह साफ़ चटियल मैदान होकर रह जाए।”

وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاءِ فَتُصْبِحُ صَعِيدًا زَلَقًا ۝

यह भी मुमकिन है कि तुम्हारे इस कुफ़्र व तकबुर के बाइस अल्लाह तआला तुम्हारे बाग़ों पर कोई ऐसी आफ़त नाज़िल कर दे कि इस क़तअ ज़मीन पर किसी दरख़्त या किसी बेल वगैरह का नामो निशान तक ना रहे।

आयत 41

“या इसका पानी गहराई में उतर जाए, फिर तुम इस (पानी) को किसी तरह हासिल ना कर सको।”

أَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَن تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ۝

अल्लाह तुम्हारे बाग़ पर कोई आसमानी आफ़त ना भी भेजे तो यूँ भी हो सकता है कि उसके हुक्म से इसका ज़ेरे ज़मीन पानी ग़ैर मामूली गहराई में चला जाए। इसके नतीजे में तुम्हारा बनाया हुआ निज़ाम आबपाशी ख़त्म होकर रह जाए और इस तरह पानी के बगैर ये बाग़ खुद-ब-खुद ही उजड़ जाए। यानि हक़ीक़ी मुसबबुल असबाब तो अल्लाह ही है। उसी मुख्तलिफ़ असबाब मुहैय्या कर रखे हैं जिससे ये कारोबारे दुनिया चल रहा है। वह जब चाहे किसी सबब को सल्ब करले या उसकी हैइयत को बदल दे और उसकी वजह से ये सारा निज़ाम दरहम-बरहम होकर रह जाए। ये मामला तो गोया शीश महल की तरह का है कि एक ही पत्थर इसको चकना चूर करके रख देगा।

आयत 42

“और उसका सारा समर (फल) समेट लिया गया”

وَأَحِيطَ بِثَمَرِهِ

उस शख्स को अल्लाह तआला की तरफ़ से जो नेअमतें दी गई थीं वह सब उससे सल्ब कर ली गईं। बाग़ भी उजड़ गया और औलाद भी छिन गई। इससे अंदाज़ा होता है कि दूसरा शख्स अल्लाह का ख़ास मुकर्रब बंदा था। मालदार शख्स ने उसे उसकी नादारी का ताना दिया था: {إِنَّا كُنَّا مِنْكَ مَلَكًا وَاعْتَرَضْنَا} कि माल व दौलत में भी मुझे तुम पर फ़ौक़ियत हासिल है और नफ़री में भी मैं तुमसे बढ कर हूँ। इस ताने से अल्लाह के उस नेक बन्दे का दिल दुखा होगा, जिसकी सज़ा उसे फ़ौरी तौर पर मिली और अल्लाह ने उससे सब कुछ छीन लिया। इस सिलसिले में एक हदीस कुदसी है: ((مَنْ عَادَىٰ لِي وَلِيًّا فَقَدْ آذَنَنِي بِالْحَرْبِ)) “जो शख्स मेरे किसी वली के साथ दुश्मनी करे तो मेरी तरफ़ से उसके खिलाफ़ ऐलाने जंग है।” (24) किसी शायर ने इस मज़मून को इस तरह अदा किया है:

तादले साहिब दिले नालद ब दर्द, हैच क़ौमे राखुदा रुसवा ना कर्द!

यानि किसी साहिबे दिल वली अल्लाह के दिल को जब ठेस लगती है तो उसके बदले में अल्लाह तआला की तरफ़ से पूरी क़ौम गिरफ़्त में आ जाती है।

“तो वह हाथ मलता रह गया उस पर जो कुछ उसने उसमें खर्च किया था”

فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَا أَنْفَقَ فِيهَا

यक्रीनन उन बागों की मंसूबा बंदी करने, पौदे लगाने और उनकी नशो-नुमा करने में उसने ज़रे केसर खर्च किया था, मुसलसल मेहनत की थी और अपना कीमती वक़्त उसमें खपाया था। इसका ये तमाम सरमाया आन की आन में नेस्तो नाबूद हो गया और वह उसकी बरबादी पर कफ़े अफ़सोस मलने के अलावा कुछ ना कर सका।

“और वह (बाग़) गिर पड़ा था अपनी छतरियों पर”

وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا

अंगूरों की बेलें जिन छतरियों पर चढ़ाई गई थीं वह सबकी सब औंधी पड़ी थीं।

“और वह कह रहा था: हाय मेरी शामत, काश मैंने अपने रब के साथ किसी को शरीक ना ठहराया होता।”

وَيَقُولُ يَلَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ۝

उस मालदार शख्स के मकालमे से ये हक़ीक़त पूरी तरह वाज़ेह हो जाती है कि उस शख्स ने अल्लाह तआला की कुदरत और उसके इख़्तियार को भुला कर ज़ाहिरी असबाब और माद्री वसाएल पर तवक्कुल कर लिया था, और यही वह शिर्क था जिसका खुद उसने यहाँ ऐतराफ़ किया है। आज की माद्दा परस्ताना ज़ेहनियत का मुकम्मल नक़शा इस रुकूअ में पेश कर दिया गया है। यह शिर्क की जदीद क्रिस्म है जिसको पहचानने और जिससे मोहतात रहने की आज हमें अशद ज़रूरत है। (इस हवाले से मेरी किताब “हक़ीक़त व अक़साम-ए-शिर्क” का मुताअला मुफ़ीद रहेगा, जिसमें शिर्क और उसकी अक़साम को तफ़सील से बयान किया गया है।)

आयत 43

“और ना हुई उसके लिये कोई जमाअत जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी मदद को आती और ना वह खुद ही इन्तेक़ाम लेने वाला बन सका।”

وَلَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ

مُنْتَصِرًا ۝

अल्लाह के मुक़ाबले में भला कौन उसकी मदद कर सकता था और इस सूरते हाल में वह किससे इन्तेक़ाम ले सकता था?

आयत 44

“यहाँ तो तमाम इख़्तियार अल्लाह ही का है जो अल हक़ है।”

هَٰذَاكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ

वलायत के मायने यहाँ हुकूमत और इक़तदार के हैं। “वाली” किसी मुल्क या इलाक़े के मालिक या हुक्मरान को कहते हैं और इसी से ये लफ़्ज़ वलायत (वाव की ज़बर के साथ) बना है। इस लिहाज़ से आयत के अल्फ़ाज़ का मफ़हूम ये है कि कुल का कुल इक़तदार व इख़्तियार अल्लाह के लिये है जो “अल हक़” है। इसी माद्दे से लफ़्ज़ “वली” भी है जिसके मायने दोस्त और पुश्तपनाह के हैं। इसी माद्दे से विलायत (वाव की ज़ेर के साथ) बना है और ये दोस्ती और मोहब्बत के मायने देता है। दर्जा ज़ेल आयात में इसी विलायत का ज़िक्र है: (अल बकरह 257) {اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ} और (युनुस 62) {إِنَّا أَوْلِيَاءُ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ}

“वही बेहतर है ईनाम देने में और वही बेहतर है आक़बत के ऐतबार से।”

هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ۝

ईनाम वही बेहतर है जो वह बख़्शे और अंजाम वही बख़ैर है जो वह दिखाए।

आयात 45 से 49 तक

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أُنْزِلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيحُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝
الْمَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الدُّنْيَا ۚ وَالْبَقِيَّةُ الصَّلَاحُ خَيْرٌ عِنْدَ

رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا ۝ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ۝
وَعَرَضْنَا عَلَى رَبِّكَ صَفًّا لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاهُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَجْعَلَ لَكُمْ مَوْعِدًا ۝
فَتَرَى الْمَجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يُوَلِّتُنَا مَالِ هَذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا
وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا ۝ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ۝

आयत 45

“और बयान कीजिये इनके लिये मिसाल दुनिया की ज़िंदगी की”

وَاحْضِرْ لَهُمْ مَثَلًا الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

“जैसे पानी कि हमने उसे उतारा आसमान से, फिर उसके साथ मिल-जुल कर निकल आया ज़मीन का सब्ज़ा”

كَمَا أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ

“फिर वह हो गया चूरा-चूरा, उड़ाए फिरती हैं उसे हवाएँ”

فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيحُ

“और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है।”

وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝

सब्ज़े के उगने, उसके नशो-नुमा पाने और फिर खुशक होकर खसो-खाशाक की शक्ल इख्तियार कर लेने के अमल को इन्सानी ज़िन्दगी की मुशाबहत की बिना पर यहाँ बयान किया गया है। बारिश के बरसते ही ज़मीन से तरह-तरह के नबातात निकल आते हैं। फिर देखते ही देखते ज़मीन सरसब्ज़ व शादाब हो जाती है। जब ये सब्ज़ा अपने जोबन (यौवन) पर होता है तो बड़ा खुश कुन मंज़र पेश करता है। मगर फिर ज़ल्द ही उस पर ज़र्दी छाने लगती है और चंद ही दिनों में लहलहाता हुआ सब्ज़ा खसो-खाशाक का ढेर बन जाता है और ज़मीन फिर से चटियल मैदान की सूरत इख्तियार कर लेती है। सब्ज़े या किसी फ़सल के उगने, बढ़ने और खुशक होने का ये दौरानिया चंद हफ़्तों पर मुहीत हो या चंद महीनों पर, इसकी असल हकीकत और कैफ़ियत बस यही है।

इस मिसाल को मद्दे नज़र रखते हुए देखा जाए तो बिल्कुल यही कैफ़ियत इन्सानी ज़िंदगी की भी है। जिस तरह नबाताती ज़िंदगी का आगाज़ आसमान से बारिश के बरसने से होता है इसी तरह रूह के नुज़ूल से इन्सानी ज़िंदगी का आगाज़ होता है। इंसानी रूह का ताल्लुक आलमे अम्र से है: {قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي} (बनी इसराइल 85) शक्कम मादर में जसद-ए-खाक़ी के अन्दर रूह फूँकी गई, बच्चा पैदा हुआ, खुशियाँ मनाई गई, जवान और ताक़तवर हुआ, तमाम सलाहियतों को उरुज मिला, फिर अधेड़ उम्र को पहुँचा, जिस्म और उसकी सलाहियतें रोज़-ब-रोज़ ज़वाल पज़ीर होने लगीं, बालों में सफ़ेदी आ गई, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गईं, मौत वारिद हुई, क़ब्र में उतारा गया और मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो गया। इस cycle का दौरानिया मुख्तलिफ़ अफ़राद के साथ मुख्तलिफ़ सही मगर इन्सानी ज़िंदगी के आगाज़ व अंजाम की हकीकत बस यही कुछ है। चुनाँचे इन्सान को ये बात किसी वक़्त नहीं भूलनी चाहिये कि दुनिया का अरसा-ए-हैयात एक वक्फ़ा-ए-इस्तिहान है जिसे हर इन्सान अपने-अपने अंदाज़ में गुज़ार रहा है।

आयत 46

“माल और बेटे दुनियावी ज़िंदगी की ज़ीनत हैं”

الْبَالُ وَالْبُتُونُ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

इस सूरत में दुनियावी ज़िन्दगी की ज़ेबो-ज़ीनत का ज़िक्र यहाँ तीसरी मर्तबा आया है। इससे पहले हम आयत सात में पढ़ आए हैं कि रूए ज़मीन की आराईश व ज़ेबाईश और तमाम रौनके इन्सानों के इस्तिहान के लिये बनाई गई हैं: {إِنَّمَا جَعَلْنَاهُمَا} تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ } फिर आयत 28 में रसूल अल्लाह ﷺ को मुखातिब करके फ़रमाया गया:

{الذُّنُيَا} कि ऐ नबी (ﷺ) कहीं इन लोगों को ये गुमान ना हो कि आपका मतलूब व मकसूद भी दुनियावी ज़िंदगी की आराईश व ज़ेबाईश ही है (मआज़ अल्लाह!)। गोया ये मौजू इस सूरत के मज़ामीन का अमूद है। लिहाज़ा ये हक़ीक़त हर वक़्त हमारे ज़हन में मुस्तहज़र रहनी चाहिये कि ये ज़िंदगी और दुनियावी माल व मताअ सब आरज़ी हैं। यहाँ के रिश्ते नाते और तमाम ताल्लुकात भी इसी चार रोज़ा ज़िंदगी तक महदूद हैं। इंसान की आँख बंद होते ही तमाम रिश्ते और ताल्लुकात मुन्क़तअ (disconnect) हो जाएँगे और अल्लाह की अदालत में हर इन्सान को तन-तन्हा पेश होना होगा: {وَكُلُّهُمْ آتِيوِيَوْمٍ} (सूरह मरियम 95) वहाँ ना बाप औलाद की मदद करेगा, ना बेटा वालिदैन् को सहारा देगा, और ना बीवी शौहर का साथ देगी। उस दिन के मुहासबे का सामना हर शख्स को अकेले ही करना होगा।

“और बाक़ी रहने वाली नेकियाँ बहुत बेहतर हैं तेरे रब के नज़दीक,
सवाब के लिहाज़ से भी और उम्मीद के ऐतबार से भी।”

وَالْبَقِيَّةُ الصَّالِحَةُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ

أَمَلًا ﴿٣٧﴾

इस मुख़्तसर ज़िन्दगी की कमाई में अगर किसी चीज़ को बक्का हासिल है तो वह नेक आमाल हैं। आख़िरत में सिर्फ़ वही काम आयेंगे। चुनाँचे दुनियावी माल व असबाब से उम्मीदें ना लगाओ, औलाद से तवक्कुआत मत वाबस्ता करो। ये सब आरज़ी चीज़ें हैं जो तुम्हारी मौत के साथ ही तुम्हारे लिये बे-वक़अत हो जाएँगी। आख़िरत का सहारा चाहिये तो नेक आमाल का तौशा जमा करो और इसी पूंजी से अपनी उम्मीदें वाबस्ता करो।

आयत 47

“और जिस दिन हम चलायेंगे पहाड़ों को और तुम देखोगे ज़मीन को
साफ़ चटियल”

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالُ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً

अब क़यामत का नक्शा खींचा जा रहा है कि उस दिन पहाड़ अपनी जगह छोड़ देंगे, ज़मीन के तमाम नशेबो-फ़राज़ ख़त्म हो जायेंगे और पूरा कुर्रा-ए-अर्ज़ एक साफ़ चटियल मैदान की शक़ल इख़्तियार कर लेगा।

“और हम सबको जमा कर लेंगे और उनमें से किसी एक को भी नहीं
छोड़ेंगे।”

وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿٣٨﴾

हज़रत आदम अलै. से लेकर आख़री इन्सान तक पैदा होने वाले नौए इन्सानी के तमाम अफ़राद को उस दिन इकठ्ठा कर लिया जायेगा।

आयत 48

“और वह पेश किये जायेंगे आपके रब के सामने सफ़े बाँधे हुए। (तब उन्हें
कहा जाएगा) आ गए हो ना हमारे पास, जैसे हमने तुम्हें पहली मरतबा
पैदा किया था!”

وَعَرَّضُوا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ
أَوَّلَ مَرَّةٍ

यहाँ “पहली मरतबा” पैदा करने से मुराद आलमे अरवाह में इन्सानी अरवाह की तख़लीक़ है, जबकि इस ज़मीन पर जिस्म और रूह के मिलाप से की जाने वाली इन्सानी तख़लीक़ दरअसल तख़लीक़-ए-सानी है। फ़र्ज़ करें इस दुनिया की उम्र पन्द्रह हज़ार बरस है, तो इन पन्द्रह हज़ार बरसों में वह तमाम इन्सान इस दुनिया में आ चुके हैं जिनकी अरवाह अल्लाह तआला ने पैदा की थीं। इन तमाम इन्सानों को क़यामत के दिन फिर से इकठ्ठा कर लिया जाएगा। चुनाँचे आयत का मफ़हूम ये है कि तमाम इन्सान जैसे आलमे अरवाह में ब-यक वक़्त एक जगह इकठ्ठे थे, इसी तरह क़यामत के दिन भी मैदाने हश्म में सबके सब बयक वक़्त मौजूद होंगे।

“बल्कि तुमने तो समझ रखा था कि हम तुम्हारे लिये वादे का कोई वक़्त
मुक़रर ही नहीं करेंगे।”

بَلْ زَعَمْتُمْ أَنَّنِي نَجْعَلُ لَكُمْ مَوْعِدًا ﴿٣٩﴾

ये उन लोगों का ज़िक्र है जो कुरान के अल्फ़ाज़ में {الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا} (वह लोग जिन्हें हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं) के जुमरे में आते हैं। ऐसे लोग जब अल्लाह के हुज़ूर पेश होंगे तो उन्हें उनका वादा-ए-अलस्त {الَسْتُ بِرَبِّكُمْ} (आराफ़ 172) भी याद दिलाया जाएगा, कि तुम लोगों ने मुझे अपना रब तस्लीम किया था, फिर तुम दुनिया की ज़िंदगी में इस हकीकत को बिल्कुल ही भूल गए कि तुमने वापस हमारे पास भी आना है। तुम्हें गुमान तक नहीं था कि हम तुम्हारे लिये अपने सामने पेशी का कोई वक़्त मुक़र्रर करेंगे।

आयत 49

“और रख दिया जाएगा आमांल नामा”

وَوُضِعَ الْكِتَابُ

ये पूरी नौए इन्सानी के एक-एक फ़र्द की ज़िन्दगी के एक-एक लम्हे और एक-एक अमल की तफ़सील पर मुश्तमिल रिकॉर्ड होगा। गोया एक बहुत बड़ा कंप्यूटर सिस्टम है जो किसी जगह पर नस्ब किया गया है और वहाँ से लाकर मैदाने हश्म में रख दिया जाएगा। आज से सौ बरस पहले तो ऐसी तफ़सीलात को तस्लीम करने के लिये सिर्फ़ ईमान बिल गैब का ही सहारा लेना पड़ता था मगर आज के दौर में इस सब कुछ पर यक़ीन करना बहुत आसान हो गया है। आज हम इन्सान के बनाए हुए कंप्यूटर के कमालात अपनी आँखों से देख रहे हैं और अपने मामलाते ज़िंदगी में इनसे इस्तेफ़ादा कर रहे हैं। आज जब हम एक बटन जितनी जसामत की चिप में मुफ़स्सल मालूमात पर मुश्तमिल रिकॉर्ड अपनी आँखों से देखते हैं तो हमें अल्लाह तआला की वज़अ करदा डेटा बेस (अल किताब) के बारे में कोई शक नहीं रह जाता कि उसमें किसी तरह एक-एक फ़र्द की एक-एक हरकत की रिकॉर्डिंग महफूज़ होगी और पलक झपकने की देर भी नहीं लगेगी कि उसका प्रिंट मुतअलक़ा फ़र्द के हाथ में थमा दिया जाएगा।

“चुनाँचे तुम देखोगे मुजरिमों को कि डर रहे होंगे उससे जो कुछ उसमें होगा”

فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ

मुजरिम लोग अपनी किताबे ज़िंदगी के अंदर अजात से लरज़ा व तरसाँ होंगे।

“और कहेंगे: हाए हमारी शामत! ये कैसा आमांल नामा है? इसने तो ना किसी छोटी चीज़ को छोड़ा है और ना किसी बड़ी को, मगर उसको महफूज़ कर रखा है।”

وَيَقُولُونَ يَوْمَئِذٍ إِنَّ هَذَا الْكِتَابَ لَا يُغَادِرُ

صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا

“और वह पायेंगे जो अमल भी उन्होंने किया होगा उसे मौजूद। और आपका रब जुल्म नहीं करेगा किसी पर भी।”

وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا ۚ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ۝

आयात 50 से 53 तक

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ ۖ أَفَتَتَّخِذُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي ۚ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا ۝ مَّا أَشْهَدُكُمْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلْقِ أَنْفُسِهِمْ ۚ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّينَ عَصَدًا ۝ وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَائِيَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَوْبِقًا ۝ وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَافِقُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرِفًا ۝

आयत 50

“और याद करो जबकि हमने फ़रिश्तों से कहा था कि सज्दा करो आदम को, तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस ने (ना किया)।”

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا
إِبْلِيسَ

यहाँ सूरह बनी इसराइल और सूरतुल कहफ़ की मुशाबेहत के सिलसिले में ये अहम बात नोट कीजिये कि सूरतुल कहफ़ के सातवें रकूअ की पहली आयत के अल्फ़ाज़ बैयन ही वही हैं जो सूरह बनी इसराइल के सातवें रकूअ की पहली आयत के हैं। हज़रत आदम अलै. और इब्लीस का ये किस्सा कुरान में सात मक्कामात पर बयान हुआ है। बाक़ी छः मक्कामात पर तो इसका ज़िक्र नहीं मगर यहाँ ये हकीक़त वाज़ेह की गई है कि इब्लीस ज़िन्नात में से था:

“वह ज़िन्नात में से था, चुनाँचे उसने ना-फ़रमानी की अपने रब के हुक्म की।”

كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ

यहाँ पर “ف” इल्लत को ज़ाहिर कर रहा है कि चूँकि वह ज़िन्नात में से था इसलिये नाफ़रमानी का मुरतकिब हुआ। वरना फ़रिश्ते कभी अपने रब के हुक्म से सरताबी नहीं करते: {لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ} (सूरह तहरीम 6) “वह (फ़रिश्ते) अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं करते वह जो भी हुक्म उन्हें दे और वह वही कुछ करते हैं जिसका उन्हें हुक्म दिया जाता है।”

“तो क्या तुम बनाते हो उसे और उसकी औलाद को दोस्त मेरे सिवा, दर हालाँकि वह तुम्हारे दुश्मन हैं?”

أَفَتَتَّخِذُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي وَهُمْ لَكُمْ
عَدُوٌّ

ऐ औलादे आदम! ज़रा सोचो, तुम मुझे छोड़ कर उस इब्लीस को अपना वली और कारसाज़ बनाते हो जिसने यूँ मेरी नाफ़रमानी की थी। तुम्हारा खालिक और मालिक मैं हूँ, मैंने तुम्हें अशरफ़ुल मख़्लूक़ात के मरतबे पर फ़ाइज़ किया, मैंने फ़रिश्तों को तुम्हारे सामने सर-नगों किया, तुम्हें खिलाफ़ते अज़्ज़ी से नवाज़ा, और तुम हो कि मेरे मुकाबले में इब्लीस और उसकी सल्बी व मअन्वी औलाद से दोस्तियाँ गाँठते फ़िरते हो, जबकि फ़िलवाक़ेअ वह तुम्हारे दुश्मन हैं।

“क्या ही बुरा बदल हैं इन ज़ालिमों के लिये!”

بُئْسَ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا ۝

अल्लाह को छोड़ कर अपने दुश्मन शैतान और उसके चेलों की रफ़ाक़त इख़्तियार करके इन ज़ालिमों में अपने लिये किस क़दर बुरा बदल इख़्तियार कर रखा है।

आयत 51

“मैंने इन्हें गवाह नहीं बनाया था आसमानों और ज़मीन की तख़लीक़ का और ना ही इनकी अपनी तख़लीक़ का”

مَا أَشْهَدُكُمْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلْقَ
أَنْفُسِهِمْ

“और मैं बहकाने वालों को अपना मददगार बनाने वाला ना था।”

وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّينَ عَصَدًا ۝

ये जो तुम शैतान और उसके गिरोह को मेरे बराबर ला रहे हो और मुझे छोड़ कर उन्हें अपना दोस्त बना रहे हो तो तुम्हें मालूम होना चाहिये कि वह ज़मीन व आसमान की तख़लीक़ और खुद अपनी तख़लीक़ के मौक़े के गवाह नहीं हैं।

आयत 52

“और जिस दिन वह कहेगा कि पुकारो मेरे उन शरीकों को जिनका तुम्हें ज़अम था”

وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَائِيَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ

“तो वह उन्हें पुकारेंगे मगर वह उन्हें कोई जवाब नहीं देंगे और हम इनके दरमियान हलाकत (की घाटी) हाइल कर देंगे।”

فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ

مَوْبِقًا ﴿٥٧﴾

ये शरीक ठहराई जाने वाली शख्सियात चाहे अंबिया हों, औलिया अल्लाह हों या फ़रिश्ते, रोज़े क़यामत इनके और इन्हें शरीक मानने वालों के दरमियान हलाकत खैज़ खलीज़ हाइल कर दी जाएगी ताकि इन्हें मालूम हो जाए कि वह इनकी मदद को नहीं आ सकते।

आयत 53

“और मुजरिम लोग आग को देखेंगे और जान जायेंगे कि वह उसमें डाले जाने वाले हैं और वह नहीं पायेंगे उससे बचने की कोई जगह।”

وَرَأَى الْبُحَيْرِ مُوْنِ النَّارِ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاقِعُوهَا وَلَمْ

يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٨﴾

आयत 54 से 59 तक

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٩﴾ وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَى وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةٌ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٦٠﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا الْيَتَىٰ وَمَا أَنْذَرُوا هُزُوعًا ﴿٦١﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدْ مَتَّ يَدًا إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ﴿٦٢﴾ وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُهم بِمَا كَسَبُوا الْعَجَلَ لَهُمُ الْعَذَابُ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَّنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْبِلًا ﴿٦٣﴾ وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَوْعِدًا ﴿٦٤﴾

आयत 54

“और हमने फ़ेर-फ़ेर कर बयान कर दी हैं इस कुरान में लोगों (की हिदायत) के लिये हर किस्म की मिसालें।”

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ

अल्फ़ाज़ के मामूली फ़र्क के साथ ये आयत सूरह बनी इसराइल में भी (आयत 89) मौजूद है।

“लेकिन इन्सान तमाम मख़लूक से बड़ कर झगलाड़ू है।”

وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٩﴾

सूरह बनी इसराइल की आयत 89 के पहले हिस्से के अल्फ़ाज़ ज्यों के त्यों वही हैं जो इस आयत के पहले हिस्से के हैं, सिर्फ़ लफ़्ज़ों की तरतीब में मामूली सा फ़र्क है। अलबत्ता दोनों आयात के आखरी हिस्सों के अल्फ़ाज़ मुख़्तलिफ़ हैं। सूरह बनी इसराइल की मज़क़ूरा आयत (नम्बर 89) का आखरी हिस्सा यून है: {فَأَبَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا} “मगर अक्सर लोग कुफ़्राने नेअमत पर ही अड़े रहते हैं।”

आयत 55

“और नहीं रोका लोगों को (किसी चीज़ ने) जब उनके पास हिदायत आ गई कि वह ईमान लायें और अपने रब से मगफिरत माँगें”

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَى
وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ

इस आयत की मुशाबेहत सूरह बनी इसराइल की आयत 94 के साथ है। दोनों आयत के पहले हिस्सों के अल्फ़ाज़ हू-ब-हू एक जैसे हैं।

“मगर ये कि उनसे पहलों का तरीक़ बरता जाए”

إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ

ये लोग जो हिदायत आ जाने के बाद भी ईमान नहीं ला रहे और अल्लाह के हुज़ूर अस्तग़फ़ार नहीं कर रहे हैं तो इसकी वजह सिवाय इसके और कुछ नहीं कि इनके लिये भी पहली क्रौमों का सा अंजाम लिखा जा चुका है।

“या अज़ाब उनके सामने आ मौजूद हो।”

أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝

आयत 56

“और हम नहीं भेजते रसूलों को मगर खुश ख़बरी देने वाले और ख़बरदार करने वाले (बनाकर)”

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ

ये मज़मून जो यहाँ सब रसूलों के मुताल्लिक़ जमा के सीगे में आया है, सूरह बनी इसराइल (आयत 105) में हुज़ूर ﷺ के लिये सीगा-ए-वाहिद में यूँ आया है: {وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا} “और (ऐ मोहम्मद ﷺ) हमने नहीं भेजा आपको मगर मुबबशिर और नज़ीर बना करा”

“और ये काफ़िर लोग झगड़ते हैं झूठ की तरफ़ से ताकि बिचला दे इसके साथ हक़ को”

وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ

ये लोग बातिल के साथ खड़े होकर हक़ को शिकस्त देने के लिये मनाज़रे और कट-हुज्जतियाँ कर रहे हैं।

“और इन्होंने मेरी आयात को और (उस चीज़ को) जिसके साथ इन्हें ख़बरदार किया गया था मज़ाक़ बना लिया है।”

وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَمَا أُنذِرُوا هُزُوًا ۝

आयत 57

“और उस शख्स से बढ कर ज़ालिम कौन होगा जिसे नसीहत की गई हो उसके रब की आयात के ज़रिये, तो उसने ऐराज़ किया उनसे और वह भूल गया कि क्या आगे भेजा है उसके दोनों हाथों ने।”

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا
وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَا

बजाए ईमान लाने के और अपने साबक़ा गुनाहों से तौबा करने के उसने अल्लाह की आयात से रूगरदानी की रविश अपनाए रखी। इस ज़िद और हठधर्मी में वह अपने आमाल के उस झाड़-झंकाड़ को भी भूल गया जो उसने अपनी आख़िरत के लिये तैयार कर रखा था।

“यक़ीनन हमने इनके दिलों पर परदे डाल दिये हैं कि वह इस (कुरान) को समझ ना पायें और इनके कानों में बोझ (डाल दिया है)।”

إِنَّا جَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ
وَقُرْءًا

ये मज़मून सूरह बनी इसराइल (आयत नम्बर 45) में इस तरह आ चुका है: {وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ} "और जब आप कुरान पढ़ते हैं तो हम आपके और आखिरत पर ईमान ना रखने वाले लोगों के दरमियान पर्दा हाइल कर देते हैं।"

"और अगरचे आप बुलायें उन्हें हिदायत की तरफ़ तब भी वह कभी हिदायत नहीं पायेंगे।"

وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَى فَلَنْ يَهْتَدُوا إِذًا أَبَدًا ۝

क्योंकि हक़ वाज़ेह हो जाने के बाद इनकी मुसलसल हठधर्मी के सबब इनके दिलों पर मोहरें लग चुकी हैं और इस तरह वह अल्लाह के क़ानूने हिदायत व ज़लालत की आख़री दफ़ा की ज़द में आ चुके हैं जिसके तहत जान-बूझ कर हक़ से ऐराज़ करने वाले को हमेशा के लिये हिदायत से महरूम कर दिया जाता है।

आयत 58

"और आपका रब बहुत बख़्शने वाला, बहुत रहमत वाला है। अगर वह मुआख़ज़ा करता इनका ब-सबब इनके आमाल के तो बहुत जल्दी भेज देता इन पर अज़ाब।"

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوا لَعَجَلَ لَهُمُ الْعَذَابُ

ये मज़मून सूरतुल नहल आयत 61 और सूरह फ़ातिर आयत 45 में भी बड़ी वज़ाहत से बयान हुआ है कि अगर अल्लाह तआला लोगों के जुल्म और बुरे आमाल के सबब उनका मुआख़ज़ा करता तो रुए ज़मीन पर कोई मुतनफ़िस ज़िन्दा ना बचता।

"बल्कि इनके लिये वादे का एक वक़्त मुअय्यन है और वह हरगिज़ नहीं पायेंगे उसके सिवा बचने की कोई जगह।"

بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَّنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْيلاً ۝

जब किसी के वादे की मुक़रर घड़ी (अज़ल) आ पहुँचेगी तो उसे कोई जाए पनाह नहीं मिलेगी और उसके लिये उससे सरक कर इधर-उधर होने की कोई गुंजाईश नहीं होगी: {فَإِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ لَا يَسْتَأْذِنُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ} (नहल 61) "फ़िर जब आ जाता है उनका वक़्त मुअय्यन तो ना वह पीछे रह सकते हैं एक लम्हा और ना आगे बढ़ सकते हैं।"

आयत 59

"और ये हैं वह बस्तियाँ जिन (के वासियों) को हमने हलाक कर दिया जब उन्होंने जुल्म इख़्तियार किया"

وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا

अहक़ाफ़ में आबाद क़ौमे आद के अफ़राद हों या इलाक़ा-ए-हिज़्र के बाशिंदे, अस्हाबुल एयका हों या आमूरा और सदुम के वासी, सब इसी क़ानूने इलाही के मुताबिक़ हलाकत से दो-चार हुए।

"और हमने मुक़रर कर दिया था उनकी हलाकत के लिये वादे का एक वक़्त।"

وَجَعَلْنَا لِبَنِي إِسْرَءِيلَ مَوْعِدًا ۝

वादे के इस तयशुदा वक़्त से पहले किसी क़ौम या बस्ती पर कभी कोई अज़ाब नहीं आया।

आयात 60 से 82 तक

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ۝ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۝ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ إِنِّي لَفُتْنَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَسَبًا ۝ قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا أَنسَيْنِيهِ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا

⑬ قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبِغُ فَارْتَدَّ عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا ⑭ فَوَجَدَا عَبْدًا مِنْ عِبَادِنَا آتَيْنَاهُ رَحْمَةً مِنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِنْ لَدُنَّا عِلْمًا ⑮ قَالَ لَهُ مُوسَى هَلْ أَتَيْتُكَ عَلَى أَنْ تُعَلِّمَنِي مِمَّا عَلَّمْتَ رُشْدًا ⑯ قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ⑰ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَى مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ⑱ قَالَ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ⑲ قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّى أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ⑳ فَأَنْطَلَقَا ㉑ حَتَّى إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا ㉒ قَالَ أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ㉓ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ㉔ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ㉕ فَأَنْطَلَقَا ㉖ حَتَّى إِذَا لَقِيَا غُلَامًا فَقَتَلَهُ قَالَ أَقْتَلْتُمْ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا ㉗ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ㉘ قَالَ إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَ هَذَا فَلَا تُصَحِّبْنِي قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا ㉙ فَأَنْطَلَقَا ㉚ حَتَّى إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطَعَا أَهْلُهَا فَأَبَوْا أَنْ يُصَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَ فَأَقَامَهُ قَالَ لَوْ شِئْتُ لَتَخَذْتُ عَلَيْهِ جَزَاءً ㉛ قَالَ هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ㉜ أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ㉝ وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبُوهُ مُؤْمِنًا فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ㉞ فَأَرَدْنَا أَنْ يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِنْهُ زَكَاةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ㉟ وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ وَمَا فَعَلْنَاهُ عَنْ أَمْرِئِ ذَلِكِ تَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ㊱

इन दो रुकुओं में हज़रत मूसा अलै. के एक सफ़र का ज़िक्र है। इस वाक़िये का ज़िक्र अहादीस में भी मिलता है और क़दीम इसराइली रिवायात में भी, जिनमें से बहुत सी रिवायात कुरान के बयान से मुताबिक़ भी रखती हैं। बहरहाल इन रिवायात से जो मालूमात हासिल होती हैं उनके मुताबिक़ अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलै. को हुक्म दिया कि आप फ़लाँ जगह जायें, वहाँ पर आपको हमारा एक साहिबे इल्म बंदा मिलेगा, आप कुछ अरसा उसके साथ रह कर उसके इल्म से इस्तफ़ादा करें। मुम्किन है ये हज़रत मूसा अलै. की नबूवत का इब्तदाई ज़माना हो और इस तरीक़े से आपकी तरबियत मक़सूद हो, जिस तरह बाज़ रिवायात से साबित है कि हुज़ूर ﷺ की तरबियत लिये एक फ़रिशता तीन साल तक मुसलसल आपके साथ रहा।

इस वाक़िये में अलाह तआला ने अपने जिस बन्दे का ज़िक्र किया है उनके बारे में क़तई मालूमात दस्तयाब नहीं। इस ज़िम्न में एक राय तो ये है कि वह एक फ़रिशता थे, जबकि एक दूसरी राय के मुताबिक़ वह इंसान ही थे जिन्हें अल्लाह तआला ने बहुत लम्बी उम्र दे रखी है। जैसे जिनों में से इब्लीस को अल्लाह तआला ने तवील उम्र अता कर रखी है ऐसे ही उसने इंसानों में से अपने एक नेक और बरग़ज़ीदा बन्दे को भी बहुत तवील उम्र से नवाज़ा है और उनका नाम हज़रत ख़िज़र है। (वल्लाह आलम!)

रिवायात से ये भी मालूम होता है कि हज़रत मूसा अलै. को किसी वक़्त ये ख़याल आया कि अल्लाह तआला ने शायद मुझे रुप ज़मीन के तमाम इंसानों से बढ़ कर इल्म अता फ़रमाया है। चुनाँचे अल्लाह तआला ने आप पर ये वाज़ेह करने के लिये कि {وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ} आपको हिदायत फ़रमाई कि आप फ़लाँ जगह हमारे एक बंदा-ए-ख़ास से मुलाक़ात करें और कुछ अरसा उसके साथ रह कर उससे इल्म व हिक़मत सीखें। इस हुक्म की तामील में आप अपने नौजवान साथी हज़रत यूशा बिन नून को साथ लेकर सफ़र पर रवाना हो गए।

आयत 60

“और याद करो जब मूसा ने अपने नौजवान (साथी) से कहा कि मैं (चलना) नहीं छोड़ूँगा, यहाँ तक कि दो दरियाओं के मिलने के मक़ाम पर पहुँच जाऊँ या मैं बरसों चलता ही रहूँगा।”

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِفَتْنِهِ لَا أْبْرُحْ حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ
الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ۝

इससे मालूम होता है कि आपको बताया गया था कि वह शख्स मज्मअ-अल-बहरीन (दो दरियाओं के संगम) पर मिलेगा। मज्मअ-अल-बहरीन के इस मक़ाम के बारे में भी मुफ़स्सरीन के यहाँ इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। इस सिलसिले में एक राय तो ये है कि बहरा-ए-अहमर (red sea) के शुमाली कोने से निकलने वाली दो खाड़ियों (खलीज स्वेज़ और खलीज उक़बा) के मुक़ामे इत्तेसाल को मज्मअ-अल-बहरीन कहा गया है, जबकि एक दूसरी राय के मुताबिक़ (और ये राय ज़्यादा सही मालूम होती है) ये मक़ाम दरिया-ए-नील पर बाक़ेअ है। दरिया-ए-नील दो दरियाओं यानि अलनील अल अज़रक़ और अल नील अल बैज़ से मिल कर बना है। ये दोनों दरिया सूडान की तरफ़ से मिस्र में दाख़िल होते हैं। एक दरिया के पानी का रंग नीला है और जबकि दूसरे का सफ़ेद है (पाकिस्तान में भी अटक के मक़ाम पर दरिया-ए-सिंध के साफ़ पानी और दरिया-ए-काबुल के गदले पानी का मिलाप ऐसा ही मंज़र पेश करता है)। चुनाँचे इस राय के मुताबिक़ जिस मक़ाम पर ये दोनों दरिया मिल कर एक दरिया (मिस्र के दरिया-ए-नील) की शक़ल इख़्तियार करते हैं उस मक़ाम को मज्मअ-अल-बहरीन कहा गया है और ये मक़ाम ख़र्तूम की सरहद के आस-पास है।

आयत 61

“फिर जब वह दोनों पहुँच गए दो दरियाओं के मिलने के मक़ाम पर”

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا

“तो वह अपनी मछली को भूल गए और उस (मछली) ने अपना रास्ता बना लिया था दरिया में सुरंग की तरह।”

نَسِيًا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۝

ये भुनी हुई मछली थी जिसको वह खाने की गर्ज़ से अपने साथ लेकर आए थे। इस मछली को अलाह तआला की तरफ़ से निशानी बनाया गया था और उन्हें हिदायत की गई थी के जिस मक़ाम पर ये मछली ज़िन्दा होकर दरिया में चली जाएगी उसी जगह मतलूबा शख्सियत से उनकी मुलाक़ात होगी। चुनाँचे मज्मअ-अल-बहरीन के करीब पहुँच कर वह मछली ज़िन्दा होकर उनके तोशेदान से बाहर आई और उसने सुरंग सी बना कर दरिया में अपनी राह ली। इस मंज़र को हज़रत यूशा बिन नून ने देखा भी मगर हज़रत मूसा अलै. से इसका तज़क़िरा करना भूल गए।

आयत 62

“फिर जब वह दोनों (वहाँ से) आगे निकल गए तो मूसा ने अपने साथी से कहा कि अब हमारा नाश्ता ले आओ, अपने इस सफ़र से तो हमें बहुत थकान हो गई है।”

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتْنِهِ آتِنَا غَدَاءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِنْ

سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا ۝

यहाँ मुफ़स्सरीन ने एक बहुत अहम नुक्ता बयान किया है कि आपको थकावट इस वजह से महसूस हुई कि आप मतलूबा मक़ाम से आगे निकल गए थे। वरना इस मक़ाम तक पहुँचने में आपको किसी किस्म की थकावट का अहसास नहीं हुआ था।

आयत 63

“उस (नौजवान) ने कहा: देखिये, जब हम ठहरे थे चट्टान के पास तो मैं भूल गया मछली को (निगाह में रखना)”

قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ
الْحُوتَ

“और नहीं मुझे भुलाए रखा मगर शैतान ने कि मैं (आपसे) इसका जिक्र करूँ, और उसने तो बना लिया था अपना रास्ता दरिया में अजीब तरह से।”

وَمَا أَنْسَيْنَاهُ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ
فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ۝

यानि उस जगह वह मछली ज़िन्दा होकर अजीब तरीके से दरिया में चली गई थी।

आयत 64

“मूसा ने कहा: यही तो था जिसकी हमें तलाश थी!”

قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ

यही तो हमें निशानी बताई गई थी कि जिस जगह मछली ज़िन्दा होकर दरिया में चली जाएगी उस जगह पर अल्लाह के उस बन्दे से हमारी मुलाकात होगी। चुनाँचे चलो अब वापस उसी जगह पर पहुँचे।

“पस वह दोनों वापस लौटे अपने नक़्शे पा (पैरों के निशान) को देखते हुए।”

فَارْتَدَّا عَلَىٰ آثَارِهِمَا قَصَصًا ۝

वापस अपने कदमों के निशानात पर चलते हुए वह ऐन उसी जगह पर आ गए जहाँ चट्टान के पास मछली ज़िन्दा होकर दरिया में कूद गई थी।

आयत 65

“तो पाया उन्होंने (वहाँ) हमारे बन्दों में से एक बन्दे को जिसे हमने रहमत अता की थी अपनी तरफ़ से और उसे सिखाया था एक इल्म खास अपने पास से।”

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَا آتَيْنَاهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا
وَعَلَّمْنَاهُ مِمَّا لَدُنَّا عَلِيمًا ۝

यानि अल्लाह तआला ने अपने पास से, अपने खास खज़ाना-ए-फैज़ से उसे खुसूसी इल्म अता कर रखा था। “इल्मे लदुन्नी” की इस्तलाह यहीं से अखज़ की गई है। लदुन के मायने करीब या नज़दीक के हैं। चुनाँचे इल्मे लदुन्नी से मुराद वह इल्म है जो अल्लाह तआला अपनी खास रहमत से किसी को अता कर दे। यानि एक इल्म तो वह है जो इन्सान अपने हवासे खम्सा के ज़रिये से बा-कायदा मेहनत व मशक्कत के अमल से गुज़र कर हासिल करता है, जैसे मदारिसे अरबिया में सर्फ़ व नहव, तफ़सीर व हदीस और फ़िक्रह वगैरह उलूम हासिल किये जाते हैं, या स्कूल व कॉलेज में मुतदावल उमरानी व साइन्सी उलूम सीखे जाते हैं, लेकिन इल्म की एक किस्म वह भी है जो अल्लाह तआला बराहेरास्त किसी इन्सान के दिल में डाल देता है और उसको उसकी तहसील के लिये कोई मशक्कत वगैरह भी नहीं उठानी पड़ती।

आयत 66

“मूसा ने उससे कहा: क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ इस शर्त पर कि आप मुझे सिखायें उसमें से जो भलाई आपको सिखाई गई है?”

قَالَ لَهُ مُوسَىٰ هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَىٰ أَنْ تُعَلِّمَني مِمَّا عَلَّمْتَ
رُسُلًا ۝

मुझे अल्लाह तआला ने बताया है कि उसने आपको खास हिकमत और दानाई अता कर रखी है। अगर आप इजाज़त दें तो मैं कुछ अरसा आपके साथ रहूँ और आप मुझे भी उस इल्मे खास में से कुछ सिखा दें।

आयत 67

“उसने कहा: मेरे साथ (रह कर) आप हरगिज़ सब्र नहीं कर सकेंगे।”

قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ①

आयत 68

“और आप कैसे सब्र करेंगे उस चीज़ पर जिसकी आपको पूरी-पूरी ख़बर नहीं!”

وَكَيفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ②

मेरे साथ रह कर आपको मेरे काम बड़े अजीब लगेंगे और आप सब्र नहीं कर पायेंगे, क्योंकि उन कामों की हक़ीक़ी गर्ज़ व ग़ायत के बारे में आपको पूरी तरह आगाही हासिल नहीं होगी। जो बातें आपके दायरा-ए-इल्म से बाहर होंगी उन पर आप कैसे सब्र कर पायेंगे!

आयत 69

“मूसा ने कहा: आप मुझे इंशाअल्लाह साबिर पायेंगे, और मैं ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करूँगा आपके किसी हुक्म की।”

قَالَ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ③

यहाँ पर एक अहम नुक्ता लायक़-ए-तवज्जो है कि जब सब्र करने की बात हुई तो इसके साथ हज़रत मूसा ने इंशाअल्लाह कहा, लेकिन नाफ़रमानी ना करने के वादे के साथ ‘इंशाअल्लाह’ नहीं कहा। चुनाँचे बाद में हम देखेंगे कि इसी वादे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी आपसे हुई जिसके साथ इंशाअल्लाह नहीं कहा गया था। इस हवाले से इसी सूरत का वह हुक्म भी ज़हन में रखिये जिसमें हुज़ूर ﷺ को मुखातिब करके फ़रमाया गया है: {وَلَا تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا} (आयत 23) {إِنَّا أَنشَاءَ اللَّهُ} {وَأَذْكُرَنَّكَ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَىٰ أَن يَهْدِيَنِّي رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا رَشَدًا} (आयत 24) “और किसी चीज़ के बारे में ये कभी ना कहा करें कि मैं कल ये करने वाला हूँ मगर ये कि अल्लाह चाहे, और अपने रब को याद कर लिया कीजिये जब आप भूल जायें और कहिये कि मुमकिन है मेरा रब मेरी रहनुमाई कर दे इससे ज़्यादा भलाई की राह की तरफ़।”

आयत 70

“उसने कहा: अगर आप मेरे साथ चलना चाहते हैं तो किसी चीज़ के बारे में मुझसे खुद ना पूछना यहाँ तक कि मैं खुद ही आपको उसके बारे में बता दूँ।”

قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ④

बस आप मेरे साथ-साथ रहें और मैं जो कुछ करूँ या मेरे साथ जो कुछ हो आप खामोशी से उसका मुशाहेदा करते रहें, मगर किसी चीज़ के बारे में मुझसे सवाल ना करें। मैं जब मुनासिब समझूँगा उन तमाम चीज़ों की हक़ीक़त और तफ़सील आपको बता दूँगा जो आपके मुशाहिदे में आई होंगी।

आयत 71

“फ़िर वह दोनों चल पड़े, यहाँ तक कि जब वह दोनों सवार हुए एक कश्ती में, तो उसने उस (कश्ती) में शगाफ़ डाल दिया।”

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا ⑤

हज़रत मूसा अलै. ने उनकी सवाल ना करने वाली शर्त तस्लीम कर ली और यूँ वह दोनों सफ़र पर रवाना हो गए। जब वह दरिया पार करने के लिये एक कश्ती में सवार हुए तो उन्होंने (उनको साहिबे मूसा कहें या हज़रत ख़िज़र कहें) बैठते ही

कश्ती का एक तख्ता उखाड़ दिया। हज़रत मूसा ने जब ये देखा तो आप कहाँ खामोश रहने वाले थे, फ़ौरन उनको टोक दिया।

“मूसा ने कहा: आपने इसे फाड़ डाला है ताकि गर्क कर दें इसके तमाम सवारों को? ये तो आपने बहुत ही गलत काम किया है।”

قَالَ أَخَرْتُهَا لِتُعْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتُ شَيْئًا إِمْرًا

④

आयत 72

“उसने कहा: मैंने कहा नहीं था कि आप मेरे साथ सब्र नहीं कर सकेंगे?”

قَالَ لَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ⑤

इस क्रिस्से में मज़कूरा तीन वाक़िआत के हवाले से एक अहम बात समझने की ये है कि अल्लाह के जिन अहकाम के मुताबिक़ इस कायनात का निज़ाम चल रहा है, उनकी हैसियत तशरीई (शरीअत के मुताल्लिक़) नहीं बल्कि तकवीनी (कायनात के इंतेज़ामी अमूर से मुताल्लिक़) है। इन अहकाम की तन्फीज़ के लिये फ़रिश्ते मुक़रर हैं। इस सिलसिले में शाह वलीउल्लाह रह. की राय ये भी है कि इस मक़सद के लिये औलिया अल्लाह की अरवाह को भी मलाएका के तबक़ा-ए-असफ़ल में शामिल कर दिया जाता है और वह भी फ़रिश्तों के साथ मिल कर अल्लाह तआला के अहकाम की तन्फीज़ में हिस्सा लेते हैं। बहरहाल इन तकवीनी अहकाम की तामील के नतीजे में जो वाक़िआत रूनुमा होते हैं हम उनके सिर्फ़ ज़ाहिरी पहलुओं को ही देख सकते हैं। किसी वाक़िये के पीछे अल्लाह की मशीयत क्या है? इसका इदराक़ हम नहीं कर सकते। ज़रूरी नहीं कि कोई वाक़िया या कोई चीज़ बज़ाहिर जैसे दिखाई दे उसकी हकीक़त भी वैसी ही हो। मुमकिन है हम किसी चीज़ को अपने लिये बुरा समझ रहे हों मगर उसके अन्दर हमारे लिये ख़ैर हो और जिस चीज़ को अच्छा समझ रहे हों, वह हकीक़त में अच्छी ना हो। सूरतुल बक्ररह में हम ये आयत पढ़ चुके हैं: {وَعَلَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَعَلَىٰ أَنْ تُحِبُّوا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ} (आयत 216) “हो सकता है तुम किसी चीज़ को बुरा समझो और वह तुम्हारे लिये बेहतर हो और हो सकता है तुम किसी चीज़ को पसन्द करो और वह तुम्हारे लिये बुरी हो, अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।” चुनाँचे एक बंदा-ए-मोमिन को तफ़वीज़ुल अम्र का रवैया अपनाना चाहिये कि ऐ अल्लाह! मेरा मामला तेरे सुपर्द है, मेरे लिये जो तू पसंद करेगा मैं उसी पर राज़ी रहूँगा, क्योंकि तेरे हाथ में ख़ैर ही ख़ैर है: {بِيَدِكَ الْخَيْرُ} (आले इमरान 26)

आयत 73

“मूसा ने कहा: आप मेरा मुआख़ज़ा ना कीजिये मेरे भूल जाने पर और ना ही मेरे मामले में ज़्यादा सख्ती कीजिए।”

قَالَ لَا تَأْخُذْ بَعَثَ فِي مِمَّا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي

عُسْرًا ⑥

मैं भूल गया था कि आपसे मैंने सवाल ना करने का वादा किया है, लिहाज़ा आप मेरी इस भूल की वजह से मेरा मुआख़ज़ा ना करें और दरगुज़र से काम लें।

आयत 74

“फ़िर वह दोनों चल पड़े, यहाँ तक कि उनकी मुलाक़ात हुई एक लड़के से तो उस (खिज़र) ने उसको क़त्ल कर दिया”

فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا لَقِيَا غُلَامًا فَقَتَلَهُ

“मूसा ने कहा: क्या आपने क़त्ल कर दिया एक मासूम जान को बग़ैर किसी जान के (बदले के)?”

قَالَ أَقْتَلْتُ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ

उसने कोई गुनाह नहीं किया था, किसी का खून नहीं बहाया था, फ़िर भी आपने उसे क़त्ल कर दिया।

“ये तो आपने बहुत ही नामाकूल हरकत की है।”

لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُّكَرًا ۝۴۱

आयत 75

“उस (खिज़र) ने कहा: क्या मैंने आपसे कहा नहीं था कि आप मेरे साथ सब्र नहीं कर सकेंगे?”

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝۴۲

आयत 76

“मूसा ने कहा: अगर मैं आपसे सवाल करूँ किसी चीज़ के बारे में इसके बाद तो आप मुझे अपने साथ ना रखियेगा।

قَالَ إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصَحِّبْنِي

एक दफ़ा फिर आप मेरी इस भूल को नज़रअंदाज़ कर दें, लेकिन अगर तीसरी मर्तबा ऐसा हुआ तब बेशक आप मुझे अपने साथ रखने से इन्कार कर दें।

“आप पहुँच चुके हैं मेरी तरफ़ से हद-ए-उज़्र को।”

قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا ۝۴۳

यानि आपकी तरफ़ से मुझ पर हुज्जत क़ायम हो चुकी है। लिहाज़ा इसके बाद आप मुझे साथ ना रखने के बारे में उज़्र कर सकते हैं।

आयत 77

“फ़िर वह दोनों चल पड़े, यहाँ तक कि जब पहुँचे एक बस्ती के लोगों के पास तो उन्होंने खाना माँगा बस्ती वालों से”

فَانْطَلَقَا ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمُوا أَهْلَهَا

कि हम मुसाफिर हैं, भूखे हैं, हमें खाना चाहिए।

“तो उन्होंने इन्कार कर दिया उन दोनों की मेहमान नवाज़ी से”

فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّفُوهُمَا

उस बस्ती के बाशिंदे कुछ ऐसे कठोर दिल थे कि पूरी बस्ती में से किसी एक शख्स ने भी उन्हें खाना खिलाने की हामी ना भरी।

“तो उन दोनों ने वहाँ एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी तो उस (खिज़र) ने उसे सीधा कर दिया।”

فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَ فَأَقَامَهُ

“मूसा ने कहा: अगर आप चाहते तो इस पर कुछ उज़रत ले लेते।”

قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ۝۴۴

ये ऐसे नाहंजार लोग हैं कि इन्होंने हमें खाना तक खिलाने से इन्कार कर दिया था और आपने बगैर किसी मुआवज़े के इनकी दीवार मरम्मत कर दी है। बेहतर होता अगर आप इस काम की कुछ उज़रत तलब करते और इसके एवज़ हम खाना ही खा लेते।

आयत 78

“उस (खिज़र) ने कहा: बस अब ये जुदाई (का वक़्त) है मेरे और आपके दरमियान, अब मैं आपको बताए देता हूँ असल हक़ीक़त उन चीज़ों की जिन पर आप सन्न ना कर सके।”

قَالَ هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنَكَ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا
لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝۷۸

आयत 79

“जहाँ तक उस कश्ती का मामला है तो वह ग़रीब लोगों की (मिलकियत) थी जो मेहनत करते थे दरिया में”

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ

वह बहुत ग़रीब और नादार लोग थे, सिर्फ़ वह कश्ती ही उनके मआश का सहारा थी। उसके ज़रिये वह लोगों को दरिया के आर-पार ले जाते और इस मज़दूरी से अपना पेट पालते थे।

“तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ, और उनके आगे एक बादशाह था जो पकड़ रहा था हर कश्ती को ज़बरदस्ती।”

فَأَرَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ
سَفِينَةٍ غَصْبًا ۝۷۹

बादशाह हर उस कश्ती को अपने कब्ज़े में ले लेता था जो सही व सालिम होती थी। उन नादार लोगों की कश्ती भी अगर बे-ऐब होती तो बादशाह उनसे ज़बरदस्ती छीन लेता। चुनाँचे मैंने उसका एक तख़्ता तोड़ कर उसे ऐबदार कर दिया। अब जब बादशाह उस ऐबदार कश्ती को देखेगा तो उसे छोड़ देगा और इस तरह उनकी रोज़ी का वाहिद सहारा उनसे नहीं छिनेगा। पूरी कश्ती छिन जाने के मुक़ाबले में एक तख़्ते का टूट जाना तो मामूली बात है। उस तख़्ते की वह लोग आसानी से मरम्मत कर लेंगे और यूँ वह कश्ती उनकी रोज़ी का ज़रिया बनी रहेगी। लिहाज़ा वह तख़्ता उन लोगों की भलाई के लिये तोड़ा गया था ना कि किसी को नुक़सान पहुँचाने के लिये।

आयत 80

“रहा वह लड़का! तो उसके वालिदैन दोनों मोमिन थे, तो हमें यह ख़दशा हुआ कि वह सरकशी और नाशुक्रि से उन पर ताअदि करेगा।”

وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا أَنْ
يُزْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۝۸۰

हज़रत खिज़र को अपने ख़ास इल्म की बिना पर मालूम हुआ होगा कि उस बच्चे के genes अच्छे नहीं हैं और बड़ा होकर अपने वालिदैन के लिये सोहाने रूह साबित होगा और सरकशी और नाशुक्रि की रविश इख़्तियार करके उनको आजिज़ कर देगा।

आयत 81

“पस हमने चाहा कि उन दोनों को बदले में दे उनका रब इससे बेहतर (औलाद) पाकीज़गी में और करीबतर शफ़क्क़त में।”

فَأَرَدْنَا أَنْ يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكَاةً وَأَقْرَبَ
رُحْمًا ۝۸۱

बच्चे के वालिदैन चूँकि नेक और सालेह लोग थे इसलिये उनके रब ने चाहा कि उस बच्चे की जगह उन्हें एक ऐसा फ़रज़न्द अता फ़रमाए जो पाकीज़ा नफ़्सी व परहेज़गारी में उससे बेहतर और मुरव्वत व दर्दमंदी में उससे बढ कर हो। चुनाँचे वक्ती तौर पर तो बच्चे के फ़ौत होने से वालिदैन पर ग़म का पहाड़ टूट पड़ा होगा लेकिन हक़ीक़त में ये सब कुछ उनकी बेहतरी के लिये ही किया गया था।

आयत 82

“और रही वह दीवार! तो वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी, और उसके नीचे खजाना था उन दोनों के लिये, और उनका बाप नेक आदमी था।”

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ
وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا

बाप ने जब देखा होगा कि मेरा आखरी वक़्त करीब आ लगा है और मेरे बच्चे अभी बहुत छोटे हैं तो उसने अपनी सारी पूँजी इकट्ठी करके दीवार की बुनियाद में दफ़न कर दी होगी, इस उम्मीद पर कि जब वह बड़े होंगे तो निकाल लेंगे। लेकिन अगर वह दीवार वक़्त के पहले ही गिर जाती तो इस बस्ती के नाहन्जार लोग जो किसी मुसाफ़िर को खाना खिलाने के भी रवादार नहीं, उन यतीमों का दफ़ीना लूट कर ले जाते।

“लिहाज़ा आपके रब ने चाहा कि वह दोनों अपनी जवानी को पहुँच जायें और निकाल लें अपना खजाना”

فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا

बाप चूँकि नेक आदमी था इसलिये अल्लाह तआला की तरफ़ से दीवार की मरम्मत का अहतमाम करके उसके कमसिन यतीम बच्चों की भलाई का सामान किया गया।

“(ये सब अमूर) आपके रब की रहमत से (तय हुए) थे, और मैंने अपनी राय से इन्हें सर अंजाम नहीं दिया।”

رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي

यानि ये तमाम अमूर अल्लाह की रहमत का मज़हर थे। ये अल्लाह ही के फ़ैसले थे और उसी के हुक्म से इनकी तन्फ़ीज़ व तामील की गई। मैंने अपनी मर्ज़ी से इनमें से कुछ भी नहीं किया। इन अमूर के सिलसिले में अल्लाह के अहक़ाम की तन्फ़ीज़ करने वाले अल्लाह के वह बन्दे हज़रत ख़िज़र थे, कोई और वली अल्लाह थे, या कोई फ़रिश्ता थे, इससे फ़र्क़ नहीं पड़ता। इस सारे वाक़िये में असल बात जो समझने की है वह ये है कि अल्लाह के ऐसे तमाम बन्दे कारकुनाने क़ज़ा व क़द्र की फौज़ के सिपाही हैं और वह लोग अल्लाह तआला के जिन अहक़ाम की तन्फ़ीज़ कर रहे हैं उनका ताल्लुक़ शरीअत से नहीं बल्कि तक्वीनी अमूर से है। दुनिया में जो वाक़िआत व हादसात रूनुमा होते हैं हम सिर्फ़ उनके ज़ाहिरी पहलु को देख कर ही उन पर खुशी का इज़हार करते हैं या दिल गिरफ़्त होते हैं। बहरहाल हमें यकीन होना चाहिये कि अल्लाह तआला की तरफ़ से जो कुछ होता है उसमें ख़ैर और भलाई ही होती है। लिहाज़ा हमें अपने तमाम मामलात में “तफ़वीज़ुल अम्र” का रवैय्या अपनाते हुए राज़ी ब-रज़ा-ए-रब रहना चाहिये कि: “हरचे साक़ी मारेख़्त ऐन अल्ताफ़ अस्त!”

“ये है असल हक़ीक़त उन बातों की जिन पर आप सब ना कर सके।”

ذَلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾

आयात 83 से 101 तक

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْقُرْنَيْنِ قُلْ سَأَتْلُوا عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾ إِنَّا مَكِّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَاتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَاتَّبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا قُلْنَا يَذَا الْقُرْنَيْنِ إِمَّا أَنْ تُعَذِّبَ وَإِمَّا أَنْ تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُكْرًا ﴿٨٧﴾ وَأَمَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءُ الْحُسْنَىٰ وَسنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَهُمْ مِنْ دُونِهَا سَبْتًا ﴿٩٠﴾ كَذَلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ

خُبْرًا ۙ ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا ۙ ۞ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ۙ ۞ قَالُوا يَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ۙ ۞ قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۙ ۞ ائْتُونِي زُبْرَ الْحَدِيدِ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا ۖ قَالَ ائْتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ۙ ۞ فَمَّا اسْطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ۙ ۞ قَالَ هَذَا رَحْمَةٌ مِنْ رَبِّي ۖ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ ۖ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ۙ ۞ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا ۙ ۞ وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرْضًا ۙ ۞ الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنْ ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ۙ ۞

इस रुकूअ में जुल्करनैन के बारे में यहूदे मदीना के सवाल का जवाब दिया गया है। बीसवीं सदी के आगाज़ तक अक्सर मुफ़्फ़सरीन जुल्करनैन से ना वाकिफ़ थे। चुनाँचे तेरह सौ साल तक आम तौर पर सिकंदर-ए-आज़म ही को जुल्करनैन समझा जाता रहा। इसकी वजह ये थी कि कुरान में जुल्करनैन की फ़तुहात का ज़िक्र जिस अंदाज़ में हुआ है ये अंदाज़ सिकंदर-ए-आज़म की फ़तुहात से मिलता-जुलता है, लेकिन हकीकत ये है कि जुल्करनैन की सीरत का वह नक्शा जो कुरान ने पेश किया है उसकी सिकंदर-ए-आज़म की सीरत के साथ सिरे से कोई मुनासिबत ही नहीं।

बहरहाल जदीद तहकीक से मालूम हुआ है कि जुल्करनैन क़दीम ईरान के बादशाह कैखोरस या साएरस का लक़ब था। ये उस ज़माने की बात है जब ईरान के ईलाक़े में दो अलग-अलग खुद मुख्तार मम्लिकतें क़ायम थीं। एक का नाम पारस था जिससे “फ़ारस” का लफ़ज़ बना है और दूसरे का नाम “मादा” था। कैखोरस या साएरस ने इन दोनों मम्लिकतों को मिला कर एक मुल्क बना दिया और यूँ सल्तनते ईरान के सुनहरे दौर का आगाज़ हुआ। दो मम्लिकतों के फ़रमाँरवा होने की अलामत के तौर पर उसने अपने ताज में दो सींग लगा रखे थे और इस तरह उसका लक़ब जुल्करनैन (दो सींगो वाला) पड़ गया।

आयत 83

“और ये लोग आपसे जुल्करनैन के बारे में पूछते हैं। आप कहिये कि अभी मैं आप लोगों को उसका हाल बताता हूँ।”

وَيَسْأَلُونَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ قُلْ سَأَتْلُو عَلَيْكُمْ

مِنْهُ ذِكْرًا ۙ ۞

जुल्करनैन के बारे में जदीद तहकीक को अहले इल्म के हल्के में मुतारिफ़ कराने का सेहरा मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह. के सिर है। उन्होंने अपनी तफ़सीर “तर्जुमानुल कुरान” में इस मौजू पर बहुत तफ़सील से बहस की है और साबित किया है कि क़दीम ईरान का बादशाह कैखोरस या साएरस ही जुल्करनैन था। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह. की तहकीक की बुनियाद उन मालूमात पर है जो शहंशाह-ए-ईरान रज़ा शाह पहलवी के दौर में एक खुदाई के दौरान दस्तयाब हुई थीं। इस खुदाई के दौरान उस अज़ीम फ़ातेह बादशाह का एक मुजस्समा भी दरयाफ़्त हुआ था और मक़बरा भी। इस खुदाई से मिलने वाली मालूमात की बुनियाद पर रज़ा शाह पहलवी ने उसकी ढाई हज़ार साला बरसी मनाने का खुसूसी अहतमाम किया था। दरयाफ़्त शुदा मुजस्समे के सिर पर जो ताज था उसमें दो सींग भी मौजूद थे जिससे ये साबित हो गया कि ईरान का यही बादशाह (कैखोरस या साएरस) था जो तारीख़ में जुल्करनैन के लक़ब से मशहूर है।

अब ये सवाल पैदा होता है कि यहूदियों ने खुसूसी तौर पर ये सवाल क्यों पूछा था और जुल्करनैन की शख़्सियत में उनकी इस दिलचस्पी का सबब क्या था? इस सवाल का जवाब हमें बनी इसराइल की तारीख़ से मिलता है। जब 87 क़ब्बल मसीह के लगभग ईराक़ के बादशाह बख़्तनसर ने फ़लस्तीन पर हमला करके येरुशलम को तबाह किया तो उस शहर की

अक्सरियत को तहे तैग़ (सर क़लम) कर दिया गया और ज़िन्दा बच जाने वालों को वह अपनी फौज़ के साथ बाबुल (Babilonia) ले गया, जहाँ ये लोग डेढ़ सौ साल तक असीरी की हालत में रहे।

जब ईरान के बादशाह कैखोरस या साएरस (आइन्दा सतूर में इन्हें “ज़ुल्करनैन ही लिखा जायेगा) ने ईरान को मुत्तहिद करने के बाद अपनी फ़तुहात का दायरा बसीअ किया तो सबसे पहले ईराक़ को फ़तह किया। मशरिक़े वुस्ता के मौजूदा नक़्शे को ज़हन में रखा जाए तो फ़लस्तीन, इसराइल, शरक़ उरदन, मगरबी किनारा और लेबनान के मुमालिक पर मुश्तमिल पूरे इलाक़े को उस ज़माने में शामे अरब या शाम और इससे मशरिक़ में वाक़ेअ इलाक़े को ईराक़े अरब या ईराक़ कहा जाता था, जबकि ईराक़ के मज़ीद मशरिक़ में ईरान वाक़ेअ था। ईराक़ पर क़ब्ज़ा करने के बाद ज़ुल्करनैन ने बाबुल में असीर यहूदियों को आज़ाद कर दिया और उन्हें इजाज़त दे दी कि वह अपने मुल्क वापस जाकर अपना तबाहशुदा शहर येरुशलम दोबारा आबाद कर लें। चुनाँचे हज़रत उज़ैर अलै. की क़यादत में यहूदियों का क़ाफ़िला बाबुल से वापस येरुशलम आया। उन्होंने अपने इस शहर को फिर से आबाद किया और हेकल सुलेमानी को भी अज़सर नौ तामीर किया। इस पसमंज़र में यहूदी ज़ुल्करनैन को अपना मोहसिन समझते हैं और इसी सबब से उनके बारे में उन्होंने हुज़ूर ﷺ से ये सवाल पूछा था।

ज़ुल्करनैन की फ़तुहात के सिलसिले में तीन मुहिम्मात (जंगों) का ज़िक़्र तारीख़ में भी मिलता है। इन मुहिम्मात में ईरान से मगरिब में बहरा-ए-रोम (Mediterranian) तक पूरे इलाक़े की तस्खीर, मशरिक़ में बलोचिस्तान और मकरान तक लश्कर क़शी और शिमाल में बहरा-ए-खज़र (Caspian Sea) और बहरा-ए-असवद (Black Sea) के दरमियानी पहाड़ी इलाक़े की फ़तुहात शामिल हैं। ज़ुल्करनैन का ये सिलसिला-ए-फ़तुहात हज़रत उमर रज़ि. के दौर ख़िलाफ़त की फ़तुहात के सिलसिले से मुशाबेह है। हज़रत उमर रज़ि. के दौर में भी जज़ीरा नुमाए अरब से मुख्तलिफ़ सिम्तों में तीन लश्करों ने पेशक़दमी की थी, एक लश्कर शाम और फिर मिस्त्र गया था, दूसरे लश्कर ने ईराक़ के बाद ईरान को फ़तह किया था, जबकि तीसरा लश्कर शिमाल में कोह क़ाफ़ (Caucasus) तक जा पहुँचा था।

क़दीम रिवायात में ज़ुल्करनैन के बारे में कुछ ऐसी मालूमात भी मिलती हैं कि इब्तदाई उम्र में वह एक छोटी सी ममलिकत के शहज़ादे थे। उनके अपने मुल्क में कुछ ऐसे हालात हुए कि कुछ लोग उनकी जान के दरपे हो गए। वह किसी ना किसी तरह वहाँ से बच निकलने में कामयाब हो गए और कुछ अरसा सहरा में रूपोश रहे। इसी अरसे के दौरान उन तक किसी नबी की तालीमात पहुँची। ये भी मुमकिन है कि ज़रतश्त ही अल्लाह के नबी हों और उन्हीं की तालीमात से उन्होंने इस्तेफ़ादा किया हो। बहरहाल कुरान ने ज़ुल्करनैन का जो किरदार पेश किया है वह एक नेक और सालेह बंदा-ए-मोमिन का किरदार है और इस किरदार की ख़ुसूसियात तारीख़ी ऐतबार से उस ज़माने के किसी और फ़ातेह हुक्मरान पर मुन्तबिक़ नहीं होतीं।

आयत 84

“हमने उसे ज़मीन में तमक्कुन अता किया था और उसे हर तरह के असबाब व वसाएल मुहैया किये थे।”

إِنَّا مَكْنَانُهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا

﴿٨٤﴾

आयत 85

“तो उसने एक (मुहिम का) सरो सामान किया।”

فَاتَّبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾

आयत 86

“यहाँ तक कि जब वह सूरज के ग़रुब होने की जगह तक पहुँचा”

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ

ये जुल्करनैन की मगरबी इलाकों पर लश्कर कशी का ज़िक्र है, जब वह पेश कदमी करते हुए बहरा-ए-रोम (Mediterranean Sea) के साहिल तक जा पहुँचे। चूँकि उस ज़माने में उन लोगों को पूरी दुनिया का नक्शा मालूम नहीं था इसलिये वह यही समझ रहे होंगे कि हम इस सिम्त में दुनिया या ज़मीन की आखरी सरहदों तक पहुँच गए हैं और इससे आगे बस समन्दर ही समन्दर है। वहाँ साहिल पर खड़े होकर उन्हें सूरज बज़ाहिर समन्दर में गुरुब होता हुआ नज़र आया और इस तरह वह इस जगह को **مَغْرِبُ الشَّمْسِ** (सूरज के गुरुब होने की जगह) समझे।

“उसने उसे गुरुब होते हुए पाया एक गदले चश्मे में”

وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ

इससे Aegean Sea मुराद है जिसका पानी बहुत गदला है।

“और उसने पाया वहाँ एक क्रौम को।”

وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا

यानि उस इलाके को जब उन्होंने फ़तह कर लिया तो वहाँ बसने वाली क्रौम उनकी रियाया बन गई।

“हमने कहा: ऐ जुल्करनैन! तुम चाहो तो इन्हें सज़ा दो और चाहो तो इन (के बारे) में हुस्ने सुलूक का मामला करो।”

قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّا اَنْ تَعَذِّبَ وَاِمَّا اَنْ تَتَّخِذَ

فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٧٩﴾

यानि आपने इस इलाके को ब-ज़ोर-ए-बाज़ू फ़तह किया है, अब यहाँ के बाशिंदे आपके रहमो-करम पर हैं, आपको इन पर मुकम्मल इख्तियार है। आप चाहें तो इन पर सख्ती करें और आप चाहें तो इनके दरमियान हुस्ने सुलूक की रिवायत क़ायम करें। आयत के अल्फ़ाज़ से ज़ाहिर होता है कि ये बात अल्लाह तआला ने बराहेरास्त जुल्करनैन को मुखातिब करके फ़रमाई, लेकिन ज़रूरी नहीं कि हकीकत में ऐसा ही हुआ हो। अगर तो वह नबी थे (वल्लाह आलम) तो ये मुमकिन भी है, वरना इससे मुराद अलक्राअ या इल्हाम भी हो सकता है। जैसे सूरतुल नहल (आयत 68) में शहद की मक्खी की तरफ़ वही किये जाने का ज़िक्र है।

आयत 87

“उसने कहा: जिसने जुल्म किया हम उसे सज़ा देंगे, फिर वह लौटाया जायेगा अपने रब की तरफ़ और वह उसे बहुत सख्त अज़ाब देगा।”

قَالَ اِمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ اِلَىٰ رَبِّهِ

فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُّكَرًا ﴿٨٠﴾

यहाँ जुल्म से मुराद कुफ़्र और शिर्क भी हो सकता है।

आयत 88

“और जो कोई ईमान लाया और उसने नेक आमाल किये तो उसके लिये है अच्छी जज़ा, और उससे हम बात करेंगे अपने मामले में नरमी से।”

وَاِمَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صٰلِحًا فَلَهٗ جَزَآءٌ اَحْسَنُ

وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِ نَارٍ سُرًّا ﴿٨١﴾

यानि इस मफ़तूहा इलाके में अपनी रियाया के अहले ईमान नेक लोगों से हम तमाम मामलात में नरमी से काम लेंगे और खराज वगैरह की वसूली के सिलसिले में उन पर सख्ती नहीं करेंगे।

आयत 89

“फिर उसने एक (और मुहिम का) सरो सामान किया।”

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا ٨٩

मगरबी मुहिम से फ़ारिग होने के बाद जुल्करनैन ने मशरक़ी इलाक़ों की तरफ़ पेश क़दमी का मंसूबा बनाया।

आयत 90

“यहाँ तक कि वह सूरज के तुलूअ होने की जगह पर पहुँच गया”

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ

इस मुहिम के सिलसिले में तारीख़ी तौर पर मकरान के इलाक़े तक जुल्करनैन की पेश क़दमी साबित है। (वल्लाह आलम!) मुमकिन है साहिल मकरान पर खड़े होकर भी उन्होंने महसूस किया हो कि वह इस सिम्त में भी ज़मीन की आख़री हद तक पहुँच गए हैं।

“उसने उसको तुलूअ होते पाया एक ऐसी क़ौम पर जिसके लिये हमने इस (सूरज) के मुक़ाबिल कोई ओट नहीं रखी थी।”

وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَهُم مِّن دُونِهَا
سِتْرًا ٩٠

उस ज़माने में ये इलाक़ा Gedrosia कहलाता था। यहाँ ऐसे वहशी क़बाइल आबाद थे जो ज़मीन पर सिर्फ़ दीवारें खड़ी करके अपने घर बनाते थे और उस ज़माने तक उनके तमद्दुन (civilization) में घरों पर छतें डालने का कोई तसव्वुर मौजूद नहीं था।

आयत 91

“(फिर) ऐसा ही हुआ।”

كَذَلِكَ

फिर यहाँ भी वैसा ही मामला हुआ जैसा कि पहली मुहिम के सिलसिले में हुआ था कि अल्लाह तआला ने उन्हें मुकम्मल फ़तह अता फ़रमाई और इलाक़े में आबाद क़बाइल के मामलात में नरमी या सख्ती करने का पूरा इख्तियार दिया। यहाँ भी जुल्करनैन ने ज़ालिम और शरीर (बद) लोगों के साथ सख्ती जबकि नेक और शरीफ़ लोगों के साथ नरमी का रवैया इख्तियार करने के अज़म का इज़हार किया।

“और हम पूरी तरह बाख़बर थे उसके अहवाल से।”

وَقَدْ أَحْطَيْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ٩١

जो कुछ जुल्करनैन के पास था और जिन हालात से उसको साबक़ा पेश आया हम उससे पूरी तरह बाख़बर थे।

आयत 92

“फिर उसने एक (और मुहिम का) सरो सामान किया।”

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا ٩٢

आयत 93

“यहाँ तक कि जब वह दो दीवारों के दरमियान पहुँचा”

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ

“सद” दीवार को कहते हैं। दो दीवारों से मुराद यहाँ दो पहाड़ी सिलसिले हैं। दाहिनी तरफ़ मशरिक् में बहीरा-ए-कैप्सियन था और दूसरी तरफ़ बहीरा-ए-असवद। इन दोनों समुन्दरों के साहिलों के साथ-साथ दो पहाड़ी सिलसिले मुतवाज़ी

(बराबर-बराबर) चलते हैं। और इन पहाड़ी सिलसिलों की दरमियानी गुज़रगाह से शिमाली इलाकों के वहशी क़बाइल (याजूज माजूज) इस इलाके पर हमलावर होते थे।

“उसने पाया उन दोनों से परे एक क्रौम (के अफ़राद) को जो कोई बात समझ नहीं सकते थे।”

وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ۝٩٢

गोया ये भी एक ग़ैर-मुत्मद्दिन (uncivilized) क्रौम थी। इस क्रौम के अफ़राद जुल्करनैन और उसके साथियों की ज़बान से क़तअन नाआशना थे और हमलावर लश्कर के लोग भी इस मफ़तूहा क्रौम की ज़बान नहीं समझ सकते थे। मगर फिर भी उन्होंने किसी ना किसी तरह से जुल्करनैन के सामने अपना मुद्दा बयान कर ही दिया:

आयत 94

“उन्होंने कहा: ऐ जुल्करनैन! याजूज और माजूज ज़मीन में बहुत फ़साद मचाने वाले लोग हैं”

قَالُوا يَا أَيُّهَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ

فِي الْأَرْضِ

“तो क्या हम आपको कुछ ख़राब अता करें कि उसके एवज़ आप हमारे और उनके दरमियान एक दीवार बना दें?”

فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَى أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ

سَدًّا ۝٩٣

यानि आप इन पहाड़ों के दरमियान वाक़ेअ इस वाहिद कुदरती गुज़रगाह को बंद कर दें ताकि याजूज व माजूज हम पर हमलावर ना हो सकें। ये वही तस्सवुर या असूल था जिसके तहत आज-कल दरियाओं पर डैम तामीर किये जाते हैं। यानि दो मुतवाज़ी पहाड़ी सिलसिलों के दरमियान अगर दरिया की गुज़रगाह है तो किसी को मुनासिब मक़ाम पर मज़बूत दीवार बना कर पानी का रास्ता रोक दिया जाए ताकि दरिया एक बहुत बड़ी झील की शक्ल इख़्तियार कर ले।

ये याजूज माजूज कौन हैं? इनके बारे में जानने की लिये नस्ले इन्सानी की क़दीम तारीख़ का मुताअला ज़रूरी है। क़दीम रिवायात के मुताबिक़ हज़रत नूह अलै. के बाद नस्ले इन्सानी आपके तीन बेटों साम, हाम और याफ़िस से चली थी। इनमें से सामी नस्ल तो बहुत मारूफ़ है। क्रौमे आद, क्रौमे समूद और हज़रत इब्राहीम अलै. सब सामी नस्ल में से थे। हज़रत याफ़िस की औलाद के लोग वस्ती एशिया के पहाड़ी सिलसिले को अबूर करके शिमाल की तरफ़ चले गए। वहाँ से उनकी नस्ल बढ़ते-बढ़ते शिमाली एशिया और यूरोप के इलाकों में फैल गई। चुनाँचे मशरिक् में चीन और हिन्द चीनी की yellow races, मगरिब में रूस और सेकंड यूनियन मुमालिक की अक़वाम, मगरबी यूरोप के एंग्लो सक्सोंस, मशरिक्की यूरोप में खुसूसी तौर पर शिमाली इलाकों और सहरा-ए-गोबी के इलाकों की तमाम आबादी हज़रत याफ़िस की नस्ल से ताल्लुक़ रखती है। तौरात में हज़रत याफ़िस के बहुत से बेटों के नाम मिलते हैं। इनमें Mosc, Tobal, Gog & Magog वगैरह क़ाबिले ज़िक़्र हैं (मुमकिन है रूस का शहर मास्को, हज़रत याफ़िस के बेटे मास्क ने आबाद किया हो)। इसी तरह Baltic Sea और Baltic States का नाम ग़ालिबन Tobal के नाम पर है। बहरहाल यूरोप की एंग्लो सैक्सन अक़वाम और तमाम Nordic Races याजूज माजूज ही की नस्ल से हैं। बुनियादी तौर पर ये ग़ैर-मुतमद्दिन और वहशी लोग थे जिनका पेशा लूट-मार और क़त्ल व ग़ारतगिरी था। वह अपने मल्हक़ा (आस-पास के) इलाकों पर हमलावर होते, क़त्ल व ग़ारत का बाज़ार गर्म करते और लूट-मार करके वापस चले जाते। उनकी इस ग़ारत-गिरी की झलक मौजूदा दुनिया ने भी देखी जब Anglo Saxons ने एक सैलाब की तरह यूरोप से निकल कर देखते ही देखते पूरे एशिया और अफ़्रीका को नौ-आबादयाती निज़ाम (न्यू वर्ल्ड ऑर्डर) के शिकंजे में जकड़ लिया। बाद अज़ा मुख्तलिफ़ अवामिल की बिना पर उन्हें इन इलाकों से बज़ाहिर पसपा तो होना पड़ा मगर हक़ीक़त में दुनिया के बहुत से मुमालिक पर बिल्वास्ता अब भी उनका क़ब्ज़ा है। आई एम एफ़ और वर्ल्ड बैंक जैसे इदारे उनकी इसी बिल्वास्ता हुक्मरानी को मज़बूत करने में उनकी मदद करते हैं।

क़रीब-ए-क़यामत में इन क्रौमों की एक और यलगार होने वाली है। इसकी तफ़सीलात अहादीस और रिवायात में इस तरह आई हैं कि क़यामत से क़ब्ल दुनिया एक बहुत होलनाक जंग की लपेट में आ जाएगी। इस जंग को अहादीस में “अल

मलहमातुल उज़्रमा” जबकि बाइबिल में Armageddon का नाम दिया गया है। मशरिके वुस्ता का इलाक़ा इस जंग का मरकज़ी मैदान बनेगा। इस जंग में एक तरफ़ इसाई दुनिया और तमाम यूरोपी अक्रवाम होंगी और दूसरी तरफ़ मुसलमान होंगे। इसी दौरान अल्लाह तआला मुसलमानों को एक अज़ीम लीडर इमाम मेहदी की सूरत में अता करेगा। इमाम मेहदी अरब में पैदा होंगे और वह मुजद्दिद होंगे। फिर किसी मरहले पर हज़रत ईसा अलै. का नुज़ूल होगा। ख़ुरासान के इलाक़े से मुसलमान अफ़वाज उनकी मदद को जाएँगी। फिर इस जंग का ख़ात्मा इस तरह होगा कि हज़रत ईसा अलै. दज्जाल को क़त्ल कर देंगे, यहूदियों का ख़ात्मा हो जाएगा और तमाम इसाई मुसलमान हो जायेंगे। यूँ इस्लाम को उरूज मिलेगा और दुनिया में इस्लामी हुकूमत क़ायम हो जाएगी। (अल्लाह तआला मुसलमाने पाकिस्तान को तौफ़ीक़ दे कि इससे पहले वह यहाँ निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त क़ायम कर लें और हमसाया इलाक़ा ख़ुरासान से जो फ़ौजें इमाम मेहदी की मदद के लिये रवाना हों उनमें हमारे लोग भी शामिल हों।)

जब हौलनाक जंग अपने अंजाम को पहुँच जाएगी तो इसके बाद याजूज माजूज की बहुत बड़ी यलगार होगी। मेरे ख़्याल में ये लोग चीन और हिन्द चीनी वगैरह इलाक़ों की तरफ़ से हमलावर होंगे। ये लोग Armageddon में हिस्सा नहीं लेंगे बल्कि इसके बाद इस इलाक़े पर यलगार करके तबाही मचाएँगे। सूरतुल अंबिया की आयत 94, 97 और 98 में उनकी इस यलगार का ज़िक्र क़रीबे क़यामत के वाक़िआत के हवाले से किया गया है।

आयत 95

“उसने कहा: जो कुछ मुझे दे रखा है उसमें मेरे ख़ब ने वह बहुत बेहतर है”

قَالَ مَا مَكْنِي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ

कि मुझे तुम्हारे ख़राज वगैरह की कोई ज़रूरत नहीं। इससे बेहतर माल तो मेरे ख़ब ने मुझे पहले ही अता कर रखा है। बहरहाल तुम्हारे इस मसले को मैं हल किये देता हूँ। इस जुमले से जुल्करनैन के किरदार की अकासी (reflection) होती है।

“अलबत्ता तुम लोग मेरी मदद करो कुव्वत (मेहनत) के ज़रिये से, मैं तुम्हारे और उनके दरमियान एक मज़बूत दीवार बना दूँगा।”

فَاعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۝

दीवार बनाने के लिये जो माद्री असबाब व वसाएल दरकार हैं वह मैं मुहैया कर लूँगा। आप लोग इस सिलसिले में मेहनत व मशक्कत और अफ़रादी कुव्वत (manpower) के ज़रिये मेरा हाथ बटाओ।

आयत 96

“लाओ मेरे पास तख्ते लोहे के।”

أَتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ ۝

“यहाँ तक कि जब उसने बराबर कर दिया दोनों ऊँचाइयों के दरमियान (की जगह) को”

حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ

जब लोहे के तख्तों को जोड़ कर उन्होंने दोनों पहाड़ों के दरमियानी दर्रे में दीवार खड़ी कर दी तो:

“उसने कहा: अब आग दहकाओ!”

قَالَ انْفُخُوا ۝

उसने बड़े पैमाने पर आग जला कर उन तख्तों को गरम करने का हुक्म दिया।

“यहाँ तक कि जब बना दिया उसने उसको आग (की मानिन्द)”

حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا ۝

जब लोहे के वह तख्ते गर्म होकर सुर्ख हो गए तो:

“उसने कहा: लाओ मेरे पास मैं डाल दूँ इस पर पिघला हुआ ताँबा।”

قَالَ اتُونِي أَفْرِغْ عَلَيْهِ قَطْرًا ۖ

और यूँ जुल्करनैन ने लोहे के तख्तों और पिघले हुए ताँबे के ज़रिये से एक इन्तहाई मज़बूत दीवार बना दी। इस दीवार के आसार बहीरा-ए-कैस्पियन के मगरबी साहिल के साथ-साथ दारयाल और दरबन्द के दरमियान अब भी मौजूद हैं। ये दीवार पचास मील लम्बी, उनत्तीस फीट ऊँची और दस फीट चौड़ी थी। आज से सैंकड़ों साल पहले लोहे और ताँबे की इतनी बड़ी (मिस्त्र के असवान डैम से भी बड़ी जिसे असदुल आला कहा जाता है) दीवार तामीर करना यक़ीनन एक बहुत बड़ा कारनामा था।

आयत 97

“अब ना तो वह (याजूज माजूज) इसके ऊपर चढ़ सकेंगे, और ना ही इसमें नक्रब (संथ) लगा सकेंगे।”

فَمَا اسْطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ۝

आयत 98

“उसने कहा कि ये रहमत है मेरे रब की”

قَالَ هَذَا رَحْمَةٌ مِنْ رَبِّي

इतना बड़ा कारनामा सरअंजाम देने के बाद भी जुल्करनैन कोई कलमा-ए-फख़्र ज़बान पर नहीं लाए, बल्कि यही कहा कि इसमें मेरा कोई कमाल नहीं, ये सब अल्लाह की मेहरबानी से ही मुमकिन हुआ है।

“और जब आ जाएगा वादा मेरे रब का तो वह कर देगा इसको रेज़ाह-रेज़ाह।”

فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ ۖ

चुनाँचे इस्तदादे ज़माना (समय गुज़रने) के सबब ये दीवार अब ख़त्म हो चुकी है, सिर्फ़ इसके आसार मौजूद हैं, जिनसे इसके मक़ाम और साइज़ वगैरह का पता चलता है।

“और मेरे रब का वादा सच्चा है।”

وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ۖ

आयत 99

“और हम छोड़ देंगे इनको उस दिन वह एक-दूसरे में गुत्थम-गुत्था हो जाएँगे।”

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ

ये क़यामत से पहले रूनुमा होने वाले जंगी वाक्किआत की तरफ़ इशारा है। क़रीबे क़यामत के वाक्किआत में से एक अहम वाक्किया याजूज व माजूज का ज़हूर भी है। अहादीस में इनके बारे में ऐसी ख़बरें हैं कि वह दरियाओं और समुन्दरों का पानी पी जाएँगे और हर चीज़ को हड़प कर जाएँगे। ऐन मुमकिन है वह आदमखोर भी हों और ज़रूरत पड़ने पर इन्सानों को भी खा जाएँ। जैसे आज हम चीनी क्रौम को देखते हैं कि वह साँप, बिच्छु, कुत्ता, बिल्ली हर चीज़ को हड़प कर जाते हैं। कसरत-ए-आबादी के लिहाज़ से भी याजूज व माजूज की बेशतर अलामात का तताबुक़ (मेल) चीनी क्रौम पर होता नज़र आता है।

याजूज व माजूज की यलगार का नक्रशा सूरतुल अम्बिया में इस तरह खींचा गया है: {وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ} (आयत 96) “और वह हर पहाड़ की ढलान से उतरते हुए नज़र आएँगे।” 1962 ई० में चीन-भारत जंग के दौरान अखबारों ने चीनी अफ़वाज के हमलों की तफ़सीलात बताते हुए भी कुछ ऐसी ही तस्वीर कशी की थी: Waves after waves of Chinese soldiers were coming down the slopes.” बहरहाल जिस तरह याजूज व माजूज आज से द्वाई हज़ार साल पहले अपने मल्हक़ा इलाक़ों की महज़ब आबादियों को ताख़्त व ताराज करते थे, इसी तरह क़यामत से पहले एक दफ़ा फिर वह दुनिया में तबाही मचाएँगे और उनका ज़हूर अपनी नौइयत का एक बहुत अहम वाक्किया होगा।

“और सूर में फूँका जाएगा, पस हम इन सबको जमा कर लेंगे।”

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا ۝

आयत 100

“और उस रोज़ हम जहन्नम को काफ़िरो के सामने ले आएँगे।”

وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرْضًا ۝

कि देख लो अपनी आँखों से, इसे हमने तुम्हारे अंजाम के लिये तैयार कर रखा है।

आयत 101

“वह लोग जिनकी निगाहें परदे में थीं मेरे ज़िक्र से, और वह सुन भी नहीं सकते थे।”

الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنْ ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ۝

वह लोग जो अंधे और बहरे होकर दुनिया समटने में लगे हुए थे, हकीक़ी मुसबबुल असबाब को बिल्कुल फ़रामोश कर चुके थे, सिर्फ़ दुनियावी अस्बाब व वसाएल पर भरोसा करते थे और दुनिया में उनकी सारी तगो-दो (struggle) माद्दी मनफ़अत के हसूल के लिये थी। यही मज़मून अगले (आख़री) रकूअ में बहुत तीखे अंदाज़ में आ रहा है।

आयात 102 से 110 तक

أَحْسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِنْ دُونِي أَوْلِيَاءَ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ۝ قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۝ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَزَنًا ۝ ذَلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا الْإِثْمَ وَرُسُلِي هُزُوًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ۝ قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مَدَادًا لَكَلِمَتِ رَبِّي لَنَفَذَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَذَ كَلِمَتِ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ۝ قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۝

इस आख़री रकूअ में बहुत वाज़ेह अल्फ़ाज़ में बता दिया गया है कि अल्लाह की नज़र में कौन लोग हकीक़ी गुमराही और कुफ़्र व दज़्ल में मुबतला हैं। अगरचे करीबे क़यामत के ज़माने में एक शख़्से मुअय्यन “दज्जाले अकबर” का फ़ितना और उसका ज़हूर अपनी जगह एक हकीक़त है (ये उसकी तफ़सील का मौक़ा नहीं) मगर अमूमी तौर पर दज्जालियत का फ़ितना यही है कि इंसान हसूले दुनिया में मशगूल होकर इस हद तक ग़ाफ़िल हो जाए कि उसे ना तो अपने दारे आख़िरत की कोई फ़िक्र रहे और ना ही अपने खालिक व मालिक की मर्ज़ी व मंशा का कुछ होश रहे। वह इस “उरुसे हज़ार दामाद” की ज़ुल्फ़े गिरहगीर का ऐसा असीर हो कि इसकी ज़ाहिरी दिलफ़रेबियों और चमक-दमक ही में खोकर रह जाए।

आयत 102

“क्या काफ़िरो ने ये समझ रखा है कि वह मेरे ही बन्दों को मेरे मुकाबले में अपने हिमायती बना लेंगे।”

أَحْسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِن
دُونِي أَوْلِيَاءَ

ये लोग जिन अम्बिया व रसूल, मलाएका और सालेहा को मेरे शरीक ठहराते हैं और अपना कारसाज़ समझते हैं वह सब मेरे बन्दे हैं। क्या इनका ख्याल है कि मेरे ये बन्दे मेरे मुकाबले में इनकी मदद और हिमायत करेंगे? ख्वाह हज़रत ईसा अलै. हो या अब्दुल क़ादिर जीलानी रहि., मेरे ये बन्दे मेरे मुकाबले में इनके हामी व मददगार और हाजत रवां साबित होंगे?

“यक़ीनन हमें तैयार कर रखा है जहन्नम को ऐसे काफ़िरो की मेहमानी के लिये।”

إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزُلًا ۝

आयत 103

“आप कहिये! क्या हम तुम्हें बतायें कि अपने आमाल के ऐतबार से सबसे ज़्यादा ख़सारे में कौन है?

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۝

ये है वह मज़मून जिसे इब्तदा में इस सूरत का अमूद करार दिया गया था, यानि दुनिया और इसकी ज़ेब व ज़ीनत! इस मज़मून के सायबान का एक खूटा सूरत के आगाज़ में नस्ब है, जबकि दूसरा खूटा यहाँ इन आयात की सूरत में। इब्तदाई आयात में वाज़ेह तौर पर बताया गया था कि दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत और रौनकों पर मुश्तमिल ये खूबसूरत महफ़िल सजाई ही इंसानों की आजमाईश के लिये गई है। इसके ज़रिये से इंसानों के रवैय्यों की परख पड़ताल करना और उनकी जह्दो-जहद की गर्ज व गायत का तअय्युन करना मक़सूद है: {إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا لِيَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا} अब यहाँ आयत ज़ेरे नज़र में उन लोगों की निशानदेही की जा रही है जो अपने आमाल, अपनी मेहनत व मशक्कत, भाग-दौड़ और सई व जहद में सबसे ज़्यादा घाटा खाने वाले हैं। और ये वह लोग हैं जो इस आजमाईश में नाकाम होकर दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत ही में खो गए हैं।

जहाँ तक मेहनत और मशक्कत का ताल्लुक है वह तो हर शख्स करता है। जैसे हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया: ((كُلُّ النَّاسِ يَغْلُو)) “हर इंसान जब सुबह करता है तो खुद को बेचना शुरू करता है, फिर या तो वह उसे आज़ाद करा लेता है या (गुनाहों) से हलाक कर देता है।” चुनाँचे हर कोई अपने आपको बेचता है। कोई अपनी ताक़त व कुव्वत बेचता है, कोई अपनी ज़हानत और सलाहियत बेचता है और कोई अपना वक़्त और हुनर बेचता है। गोया ये दुनिया मेहनत, अमल और कोशिश की दौड़ का मैदान है और हर इंसान अपने मफ़ाद के लिये ब-क़द्रे हिम्मत दौड़ में शामिल है। मगर बदक्रिस्मती से कुछ ऐसे लोग भी हैं जो अपनी पूरी कोशिश और मेहनत के बावजूद घाटे में रहते हैं। उनके लिये खुद को बेचने के इस अमल में कुछ भी नफ़ा नहीं बल्कि नुक़सान ही नुक़सान है, ख़सारा ही ख़सारा है। तो अल्लाह की नज़र में सबसे ज़्यादा ख़सारे में रहने वाले ये कौन लोग हैं?

आयत 104

“वह लोग जिनकी सई व जोहद दुनिया ही की ज़िंदगी में गुम होकर रह गई”

الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

ऐसे लोग जिन्हें आख़िरत मतलूब ही नहीं, उनकी सारी तगो-दो और सोच-विचार दुनिया कमाने के लिये है। आख़िरत के लिये उन्होंने ना तो कभी कोई मंसूबा बंदी की और ना ही कोई मेहनत। बस बराए नाम और मौरूसी मुस्लमानी का भ्रम रखने के लिये कभी कोई नेक काम कर लिया, कभी नमाज़ भी पढ़ ली, और कभी रोज़ा भी रख लिया। मगर अल्लाह को असल में उनसे मक़सूद व मतलूब क्या है? इस बारे में उन्होंने कभी संजीदगी से सोचने की ज़हमत ही गवारा नहीं की। ऐसे लोगों को उनकी मेहनत का सिला हस्बे मशियते इलाही दुनिया ही में मिल जाता है, जबकि आख़िरत में उनके लिये सिवाय जहन्नम के कुछ नहीं। इस मज़मून का ज़रवा-ए-सनाम (चोटी) सूरह बनी इसराइल की ये आयात हैं:

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ نُرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهُ جَهَنَّمَ يَصْلَاهَا مِنْ مُمْمَاتٍ مَدْحُورًا ۝ وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَشْكُورًا ۝

“जो कोई तलबगार बनता है जल्दी वाली (दुनिया) का तो हम उसको जल्दी दे देते हैं उसमें जो कुछ हम चाहते हैं, जिसके लिये चाहते हैं, फिर हम मुक़रर कर देते हैं उसके लिये जहन्नम, वह दाखिल होगा उसमें मलामत ज़दा, धुत्कारा हुआ। और जो कोई आखिरत का तलबगार हो, और कोशिश करे उसके लिये उसकी सी कोशिश और वह मोमिन भी हो, तो वही लोग होंगे जिनकी कोशिश की क़दर की जाएगी।” चुनाँचे निजाते उखरवी का उम्मीदवार बनने के लिये हर बंदा-ए-मुसलमान को वाज़ेह तौर पर अपना रास्ता मुत’अय्यन करना होगा कि वह तालिबे दुनिया है या तालिबे आखिरत? जहाँ तक दुनिया में रहते हुए ज़रूरियाते ज़िंदगी का ताल्लुक है वह तो अल्लाह की तरफ़ से नेक व बद सबकी पूरी हो रही हैं: (बनी इसराइल:20) {كَلَّا مُدْهُوْلًا وَهُوَ لَا يُعْطَىٰ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا} “हम सबको मदद पहुँचाये जा रहे हैं, इनको भी और उनको भी, आपके रब की अता से, और आपके रब की अता रुकी हुई नहीं है।” लिहाज़ा इंसान को अपनी ज़रूरियाते ज़िंदगी के हसूल के सिलसिले में अल्लाह तआला पर तवक्कुल रखना चाहिये। उसने इंसान को दुनिया में ज़िन्दा रखना है तो वह उसके खाने-पीने का बंदोबस्त भी करेगा: {وَيَزِدُّهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ} (तलाक़:3) “वह उसको वहाँ से रिज़क देगा जहाँ से उसे गुमान भी ना होगा।” चुनाँचे एक बंदा-ए-मोमिन को चाहिये कि फ़िक्र-ए-दुनिया से बेनियाज़ होकर आखिरत को अपना मतलूब व मक़सूद बनाए, और उन लोगों के रास्ते पर ना चले जिन्होंने सरासर घाटे का सौदा किया है, जिनकी सारी मेहनत और तगो-दो दुनिया की ज़िंदगी ही में गुम होकर रह गई है:

“और वह समझते हैं कि वह बहुत अच्छा काम कर रहे हैं।”

وَهُمْ يَحْسِبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝

ऐसे लोग अपने कारोबार की तरक्की, जायदादों में इज़ाफ़े और दीगर माद्दी कामयाबियों को देखते हुए समझते हैं कि इनकी मेहनतें रोज़-ब-रोज़ नतीजा खेज़ और कोशिशें बारआवर हो रही हैं।

आयत 105

“यही वह लोग हैं जिन्होंने इन्कार किया अपने रब की आयात और उसकी मुलाक़ात का”

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ

ऐसे लोग बेशक इक़्रार करते हैं कि वह अल्लाह को और कुरान को मानते हैं, लेकिन हकीकतन वह आखिरत को भुला कर दिन-रात दुनिया समेटने ही में मसरूफ़ हैं तो अपने अमल से गोया वह अल्लाह की आयात और आखिरत में उससे होने वाली मुलाक़ात का इन्कार कर रहे हैं। अल्लाह का फ़ैसला तो ये है: {وَأَنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِیَ الْحَيَوَانُ} (अन्कबूत:29) “यक़ीनन आखिरत की ज़िंदगी ही असल ज़िंदगी है।” लेकिन तालिबाने दुनिया का अमल अल्लाह की इस बात की तस्दीक़ करने के बजाय इसको झुठलाता है। इसलिये फ़रमाया गया कि यही वह लोग हैं जिन्होंने अल्लाह की आयात को और उसके सामने रोज़े महशर की हाज़री को अमली तौर पर झुठला दिया है।

“तो बरबाद हो गए इनके आमाल और हम क़ायम नहीं करेंगे इनके लिये क़यामत के दिन कोई वज़न।”

فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَزْنًا ۝

क़यामत के दिन ऐसे लोगों के आमाल का वज़न नहीं किया जाएगा। अगर इन्होंने अपने दिल की तसल्ली और ज़मीर की खुशी के लिये भलाई के कुछ काम किए भी होंगे तो ऐसी नेकियाँ जो ईमान और यक़ीन के खाली होंगी उनकी अल्लाह के नज़दीक़ कोई हैसियत नहीं होगी। चुनाँचे इनकी ऐसी तमाम नेकियाँ ज़ाया कर दी जाएँगी और मीज़ान में इनका वज़न करने की नौबत ही नहीं आएगी। इस भयानक अंजाम की बुनियादी वजह यही है कि दुनिया की आराईश व ज़ेबाईश में गुम होकर इंसान को ना अल्लाह का खयाल रहता है और ना आखिरत की फ़िक्र दामनगीर होती है। वाज़ेह रहे कि दुनिया की ज़ेबो-ज़ीनत के हवाले से ये मज़मून इस सूरत में बार-बार दोहराया गया है (मुलाहिज़ा हो: आयत 7, 27 और 46)।

आयत 106

“इनका बदला जहन्नम है बसबब इसके कि इन्होंने कुफ़्र किया और मेरी आयात और मेरे रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया।”

ذٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا الْيَتٰى
وَرُسُلِيْ هٰزِوًا ۝۱۰۶

अल्लाह की आयात और रसूलों के फ़रमूदात के मुताबिक़ तो असल ज़िंदगी आख़िरत की ज़िंदगी है और दुनियावी ज़िंदगी की कुछ अहमियत नहीं, मगर इन तालिबाने दुनिया ने समझ रखा था कि असल कामयाबी इसी दुनियावी ज़िंदगी की ही कामयाबी है। चुनाँचे इसी कामयाबी के हसूल के लिये इन्होंने मेहनत और कोशिश की और इसी ज़िंदगी को सँवारने के लिये वह खुद को हल्कान करते रहे। आख़िरत को लायक़-ए-ऐतनाअ (negligence) समझा और ना ही इसके लिये इन्होंने कोई संजीदा तगो-दो (भाग-दौड़) की। आख़िरत का ख़याल कभी आया भी तो ये सोच कर खुद को तसल्ली दे ली कि हमने फ़लाँ-फ़लाँ भलाई के काम भी तो किये हैं और फिर हम हुज़ूर عليه وسلم के उम्मती भी तो हैं। आप صلی اللہ علیہ وسلم हमारी शफ़ाअत फ़रमाएँगे और हम कामयाब व कामरान होकर जन्नत में पहुँच जाएँगे। ये अक़ीदा यहूदियों के अक़ीदे से मिलता-जुलता है। वह भी दावा करते थे कि हम अल्लाह के बेटों की मानिन्द हैं, उसके लाड़ले और चहेते हैं।

इन आयात के हवाले से एक अहम नुक्ता ये भी है तवज्जो तलब है कि यहाँ कुफ़्रार से मुराद इस्तलाही (शर्तिया) कुफ़्रार नहीं, बल्कि ऐसे लोग हैं जो क़ानूनी तौर पर तो मुसलमान ही हैं, मगर अल्लाह और उसके रसूल के अहक़ाम को पसे पुशत डाल कर सरतापा (पूरे के पूरे) दुनिया के तालिब बने बैठे हैं। इस सिलसिले में ये बात याद रखनी चाहिए कि मज़क़ूरा मफ़हूम में जो शख्स भी आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया का तालिब है वही इन आयात का मिस्दाक़ है, बज़ाहिर चाहे वह मुसलमान हो, मुसलमानों का लीडर हो, मज़हबी पेशवा हो या कोई बहुत बड़ा आलिम हो। इसी मज़मून को किसी बुज़ुर्ग ने “जो दम ग़ाफ़िल सो दम काफ़िर” के अल्फ़ाज़ में बयान किया है। चुनाँचे आख़िरत की निजात के सिलसिले में ये बात तय करना इन्तहाई ज़रूरी है कि बुनियादी तौर पर इंसान तालिबे दुनिया है या तालिबे आख़िरत!

आख़री रुकूअ की इन आयात का सूरत की इब्तदाई आयात के साथ एक ख़ास ताल्लुक़ है और दज्जाली फ़ितने से हिफ़ाज़त के लिये इनकी खुसूसी अहमियत है, चुनाँचे हदीस में इनको फ़ितना-ए-दज्जाल से हिफ़ाज़त का ज़रिया क़रार दिया गया है। इसलिये बेहतर है कि इब्तदाई दस आयात और इन आख़री आयात को हिफ़ज़ कर लिया जाए और कसरत से इनकी तिलावत की जाए। और अगर अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे तो जुमे के रोज़ पूरी सूरतुल कहफ़ की तिलावत को भी मामूल बनाया जाए।

आयत 107

“(इसके बरअक्स) वह लोग जो ईमान लाए और उन्होंने नेक आमाल किये उनकी मेहमानी के लिये फ़िरदौस के बाग़ात होंगे।”

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ
جَنَّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نَزْلًا ۝۱۰۷

जिन लोगों ने ईमान के तकाज़े भरपूर तौर पर पूरे किये और नेक आमाल करते रहे उनके लिये ठंडी छाँव वाले बाग़ात होंगे। आज हम तस्सवुर भी नहीं कर सकते कि वह बाग़ात कैसे होंगे और कहाँ होंगे। इस कायनात की वुसअत बेहद-ओ-हि़साब है और जन्नत की वुसअत भी हमारे अहाता-ए-ख़याल में नहीं समा सकती। इस कायनात में अनगिनत कहक़शायें हैं और ना मालूम अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिये कहाँ-कहाँ जन्नतें बना रखी हैं। हदीस में आता है कि निचले दर्जे वाला जन्नती ऊपर वाले जन्नती को ऐसे देखेगा जैसे आज हम ज़मीन से सितारों को देखते हैं। बहरहाल मालूम होता है कि अहले जन्नत की इब्तदाई मेहमान नवाज़ी (नुज़ुल) यहीं इसी ज़मीन पर होगी। यानि “किस्सा-ए-ज़मीन बर सर ज़मीन” ही तय किया जाएगा।

आयत 108

“वह उसमें हमेशा-हमेश रहेंगे, वहाँ से वह जगह बदलना नहीं चाहेंगे।”

خَلِيدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حَوْلًا ۝۸

यानि जन्नत ऐसी जगह नहीं है कि जहाँ रहते-रहते किसी का जी उकता जाए। दुनिया में इंसान हर वक़्त तगय्युर (परिवर्तन) व तब्दीली का ख्वाहाँ (इच्छुक) है। तब्दीली की इसी ख्वाहिश के तहत बुरी से बुरी जगह पर भी कुछ देर के लिये इंसान का दिल बहल जाता है जबकि अच्छी से अच्छी जगह पर भी मुस्तक़िल तौर पर रहना पड़े तो बहुत जल्द उसे उकताहट महसूस होने लगती है। हम कश्मीर और स्विट्ज़रलैंड को “फ़िरदौस बर रुए ज़मी” गुमान करते हैं, लेकिन वहाँ के रहने वाले वहाँ की ज़मीनी व आसमानी आफ़ात से तंग हैं। अहले जन्नत मुस्तक़िल तौर पर एक ही जगह रहने के बाइस उकाताएँगे नहीं, और वहाँ से जगह बदलने की ज़रूरत महसूस नहीं करेंगे।

अब इस सूरत की आख़री दो आयत आ रही हैं जो गोया तौहीद के दो बहुत बड़े खज़ाने हैं।

आयत 109

“(ऐ नबी ﷺ!) आप कहिये कि अगर समुन्दर रोशनाई बन जाए मेरे रब (के कलिमात को लिखने) के लिये तो यक़ीनन समुन्दर ख़त्म हो जाएगा इससे पहले कि मेरे रब के कलिमात ख़त्म हों अगरचे उसी की तरह और (समुन्दर) भी हम (उसकी) मदद के लिये ले आएँ।”

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مَدَادًا لَّكَلِمَتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ
قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ۝۹

यहाँ पर सूरह बनी इसराइल की आख़री आयत से पहले की आयत को दोबारा ज़हन में लाएँ: قُلْ ادْعُوا اللَّهَ أَدْعُوا الرِّحْمٰنَ اِيَّامًا {“आप कह दीजिये कि तुम पुकारो अल्लाह (कह कर) या पुकारो रहमान (कह कर), जिस (नाम) से भी तुम पुकारो, उसी के हैं तमाम नाम अच्छे।” सूरह बनी इसराइल की इस आयत में अल्लाह तआला के असमाअ (नामों) का ज़िक्र है, जबकि यहाँ आयत ज़ेरे नज़र में अल्लाह तआला के कलिमात का ज़िक्र है। अल्लाह के कलिमात से मुराद उसकी मुख्तलिफ़ अल नौअ मख्लूक़ात (types of creation) हैं, और उसकी हर मख्लूक़ उसके एक कलमा-ए-कुन का ज़हूर है। चुनाँचे अल्लाह तआला की जुमला-ए-मख्लूक़ात का अहाता करना किसी के बस की बात नहीं। सूरह लुक़मान में यही मज़मून इस तरह बयान हुआ है:

وَلَوْ أَنَّ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِنْ بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝۱۲

“और अगर ज़मीन के तमाम दरख़्त क़लमें बन जाएँ और समुन्दर स्याही हो, इसके बाद सात समुन्दर और हों तब भी अल्लाह के कलिमात ख़त्म नहीं होंगे। यक़ीनन अल्लाह ग़ालिब, हिकमत वाला है।”

आयत 110

“(ऐ नबी ﷺ!) आप कह दीजिये कि मैं तो बस तुम्हारी ही तरह का एक इंसान हूँ, मुझ पर वही की जाती है कि तुम्हारा मअबूद बस एक ही मअबूद है।”

قُلْ اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ اِلَيَّ اَنْمَآ الْهُكْمُ اِلَهِ
وَاحِدٌ

“पस जो कोई भी उम्मीद रखता हो अपने रब से मुलाक़ात की तो उसे चाहिये कि नेक आमाल करे और अपने रब की इबादत में किसी को भी शरीक ना करे।”

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا
يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۝۱۰

यानि इबादत खालिस अल्लाह की हो। ये तौहीदे अमली है। इस बारे में सूरह बनी इसराइल आयत 23 में यूँ फ़रमाया गया है: {وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِلَٰهًا} “और फ़ैसला कर दिया है आपके रब ने कि तुम लोग नहीं इबादत करोगे किसी की सिवाय उसके।” सूरतुल कहफ़ की इस आख़री आयत और सूरह बनी इसराइल की आख़री आयत का भी आपस में मअनवी रब्त व ताल्लुक़ है। मवाज़ना (तुलना) के लिये सूरह बनी इसराइल की आयत मुलाहिज़ा कीजिये: {وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُن لَّهُ وِثْرٌ مِنَ النَّارِ وَكَذَٰلِكَ يُكْرِمُ} “और कह दीजिये कि कुल हम्द और कुल शुक्र अल्लाह के लिये है जिसने

नहीं बनाई कोई औलाद, और नहीं है उसका कोई शरीक बादशाही में, और ना ही उसका कोई दोस्त है कमज़ोरी की वजह से और उसकी तकबीर करो जैसे कि तकबीर करने का हक़ है।” इस आयत में अल्लाह तआला का बुलंद मक़ाम और उसकी शान बयान करके शिर्क की नफ़ी की गई है। दरअसल अल्लाह के साथ शिर्क की दो सूरतें हैं। या तो अल्लाह को मरतबा-ए-अलवहियत से नीचे उतार कर मख़लूक़ात के साथ खड़ा कर दिया जाता है या फिर मख़लूक़ात की सफ़ में से किसी को उठा कर अल्लाह के बराबर बैठा दिया जाता है। चुनाँचे सूरह बनी इसराइल की आख़री आयत में अल्लाह की क़िबरियाई का ऐलान करने का हुक्म देकर शिर्क की पहली सूरत का इन्ताल (रद्द) किया गया है जबकि सूरतुल कहफ़ की आख़री आयत में शिर्क की दूसरी सूरत यानि मख़लूक़ात में से किसी को अल्लाह के बराबर करने की नफ़ी की गई है।

देखा जाए तो अल्लाह की मख़लूक़ में से उसके शरीक बनाने की रिवायत हर ज़माने में रही है। ईसाइयों ने हज़रत मसीह अलै. को खुदा का दर्जा दे दिया और अहले अरब ने फ़रिश्तों को खुदा की बेटियाँ करार दे दिया। हमारे यहाँ भी बाज़ लोगो ने हुज़ूर ﷺ को (नाउज़ू बिल्लाह) खुदा बना दिया:

वही जो मस्तवी-ए-अर्थ था खुदा होकर
उतर पड़ा वह मदीने में मुस्तफ़ा होकर!

और किसी ने हज़रत अली रज़ी. को खुदा की ज़ात से मिला दिया:

हर चंद अली की ज़ात नहीं है खुदा की ज़ात
लेकिन नहीं है ज़ाते खुदा से जुदा अली!

और मिर्ज़ा ग़ालिब तो इस सिलसिले में यहाँ तक कह गए:

ग़ालिब नदीम दोस्त से आती है बू-ए-दोस्त
मशगूल-ए-हक़ हूँ बंदगी बू तुराब में!

यानि जब मैं अबु तुराब (हज़रत अली रज़ी.) की बंदगी करता हूँ तो दर हक़ीक़त अल्लाह ही की बंदगी कर रहा होता हूँ। इसी तरह आगा खानियों के यहाँ हज़रत अली रज़ी. को “दशम अवतार” करार दिया गया। हिन्दुओं के यहाँ नौ (9) अवतार तस्लीम किये जाते थे, उन्होंने हज़रत अली रज़ी. को “दसवाँ अवतार” मान लिया। عاذنا الله من ذلك!!

بَارَكَ اللهُ لِي وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيمِ وَنَفَعَنِي وَإِيَّاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ.



फुटनोट्स

- (1) सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब बयानुल ईमान वल इस्लाम वल अहसान। (पेज 23)
- (2) रवाहू तिरमिज़ी, मिशकातुल मसाबीह, किताबुल रिक्काक़, बाबुल बकाअ वल खौफ़, अल फ़सल सानी। (पेज 36)
- (3) रवाहू रज़ीन, ब-हवाला मिशकातुल मसाबीह, किताबुल दावात, बाबुल दावात फ़िल औक्कात। (पेज 54)
- (4) अल सुननुल कुबरा लिल बयहकी 105/2, अन उम्मे सलामा हिन्द बित्ते अबी उमैय्या। (पेज 59)
- (5) सही बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुहू अज़ज़ व ज़ल्ल व नवाअहुम अन ज़ैफ़ इब्राहीम। व सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब ज़्यादतु तमानियतुल क़ल्ब बितज़ाहिरुल अद्ल। (पेज 61)
- (6) अल जामेअल सगीर लिल स्यूती, ह. 1483। अन अब्दुल्लाह बिन अबी तालिब। (पेज 102)
- (7) सहीह मुस्लिम, किताबुल ज़ौहद वरिक्काक़, बाबुल मोमिन अमरुहू कुल्लुहू खैर। (पेज 129)
- (8) सही मुस्लिम, किताबुल ज़कात, बाबुल हिस् अलल सदका वलव विशक ताम्र अव कलिमतु तय्यबा। (पेज 136)
- (9) इन अल्फ़ाज़ में यह हदीस अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब रहि. ने "किताबुल तौहीद" में निसाई के हवाले से दर्ज की है। मसनद अहमद में अल्फ़ाज़ वारिद हुए हैं: ((أَجْعَلَنِي وَاللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ)) "क्या तूने मुझे और अल्लाह को बराबर कर दिया?" (मुरत्तब) (पेज 138)
- (10) इस आयत का यह तर्जुमा "وَإِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ" में "إِنْ" को नाफ़िया मान कर किया गया है और यह हज़रत शैखुल हिन्द रहि. के तर्जुमे के मुवाफ़िक़ है। बाज़ मुफ़स्सरीन ने "إِنْ" शर्तिया और वाव असलिया मान कर तर्जुमा यूँ किया है: "अगरचे उनकी यह चालें ऐसी (ज़बरदस्त) थीं कि इनसे पहाड़ भी अपनी जगह से टल जाते।" (इज़ाफ़ा अज़ मुरत्तब) (पेज 143)
- (11) मसनद अहमद, ह. 20728, रावी हज़रत अबुदरदा रज़ि. (पेज 148)
- (12) अबु लहब के इस क़ौल के जवाब में अल्लाह तआला ने एक पूरी सूरत "सूरतुल लहब" नाज़िल फ़रमाई, जिसकी पहली आयत में ही फ़रमाया: {ثَبِّثْ يَدَ الْأَيْمَنِ لِلْهَبِّ وَتَبَّ} "अबु लहब के हाथ टूटें और वह हलाक हो।" (मुरत्तब) (पेज 167)
- (13) शरह अल मुवाफ़िक़ लिल स्यूती: 12 (पेज 182)
- (14) सही मुस्लिम, किताबुल ज़िक्र वल दुआ वत्तौबा वल इस्तग़फ़ार, बाब फ़ज़लुल इज्तामाअ अला तिलावतुल कुरान व अला ज़िक्र। (पेज 182)
- (15) हज़रत अबु हु़रैरा रज़ि. से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: ((لَيْسَ الْغُلِيُّ عَنْ كَثْرَةِ الْغَرَضِ وَلَكِنَّ الْغُلِيَّ غَيٌّ)) "दौलतमन्दी अस्वाबे दुनियवी की कसरत से नहीं होती, बल्कि असल दौलतमन्द (ग़नी) तो वह है जिसका दिल ग़नी है।" (सही बुख़ारी, किताबुल रिक्काक़, बाबुल ग़नीउल नफ़्स। व सही मुस्लिम, किताबुल ज़कात, बाब लय्सल ग़नी अन कसरतुल अज़) (पेज 201)
- (16) सुनन तिरमिज़ी, अब्बाबुल दावात। व मसनद अहमद, ह.: 21995 (पेज 211)
- (17) सुनन तिरमिज़ी, अब्बाबुल ईमान, बाब मा जाअ फ़ी इफ़तराक़ हज़िहिल आमा (पेज 211)
- (18) यहाँ यह भी मल्हूज़ खातिर रहे कि मिस्त्र के मौजूदा इन्तखाबात (2012-13 ई.) में इख्बानुल मुस्लिमून वाज़ेह अक्सरियत के साथ बरसर इक़तदार आ चुकी है। (मुरत्तब) (पेज 219)
- (19) सही बुख़ारी, किताबुल दावात, बाब अद् दुआ इन्दल इस्तख़ारा। व सुनन अल् तिरमिज़ी, अब्बाबुस्सलात, बाब मा जाअ फ़ी सलातुल इस्तख़ारा। (पेज 220)
- (20) सही बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौल अल्लाह तआला وَإِنْ يُؤْنَسْ لَبِنَ الْمُرْسَلِينَ व सही मुस्लिम, किताबुल फ़जाइल, बाब मिन फ़जाइल मूसा अलै.। (पेज 236)
- (21) सही बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौल अल्लाह तआला وَإِنْ يُؤْنَسْ لَبِنَ الْمُرْسَلِينَ व सही मुस्लिम, किताबुल फ़जाइल, बाब फ़ी ज़िक्र युनुस अलै. व क़ौलुन्नबी ﷺ لَا يَنْبَغِي لِعَبْدَانِ يَقُولُ آخِرُ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّى (पेज 236)
- (22) सही बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया व किताबुल मनाक़ब। व सही मुस्लिम, किताबुल बिरर वस्स्लात वल आदाब, बाबुल अरवाह जुनूद मुजन्नद। (पेज 246)
- (23) सही मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन व कसरहा, बाब फ़ज़ल मिन यकूम बिल कुरान व यअलमुहू। व सुनन इब्ने माजा, अल मुक़दमा, बाब फ़ज़ल मिन तालीमुल कुरान व इस्मुहू। व सुनन दारमी, किताब फ़ज़ाइलुल कुरान, बाब इन्नल्लाहा यरफ़आ बिहाज़ल कुरान अक़वामा व व यज़ाअ आखरीन। (पेज 253)
- (24) सही बुख़ारी, किताबुल रिक्काक़, बाबुल तवाज़अ। (पेज 273)
- (25) सही मुस्लिम, किताबुल तहारत, बाब फ़ज़लुल वुजू। व सुनन तिरमिज़ी, अब्बाबुल दावात। (पेज 294)

بَارِكْ اللهُ لِي وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيمِ وَنَفَعْنِي وَآيَاكُمْ بِالْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ۔

